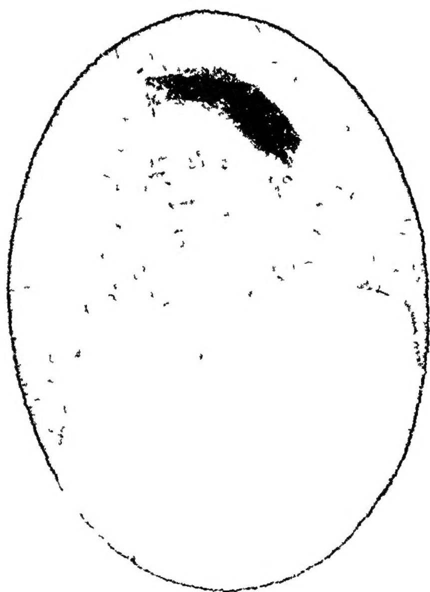
समर्पण

श्रीमान् माननयि प्रातःस्मरणीय पूज्य गुरुदेव
श्री १००८ श्री श्री श्री शार्दूलसिंहजी
म० सा० की परम पवित्र सेवा मेंः—

आपसे सीखी गुरु ! यह बाल लेखन की कला।
आपके उपकार को कैसे भुलादूं मैं भला॥
यह पुस्तिका कर कमल में स्वीकार करना दास की।
करना क्षमा गुरुदेव ! जो हो त्रुटि बाल विलास की॥

भवदीय चरणरज—

मुनि रूपचन्द्र जैन
" रजत "



जैनोपदेशक पंच फूलचन्द सुराणा।

भूमिका

श्री राम-गुण रसिक प्रिय पाठकगण !

रामायण का महत्व — अखिल संसार के तत्वों का सार, आत्म कल्याण का आधार और नर तन जीवन का निर्धार नियमतः ज्ञानी जनों ने सत्य और सदाचार ही को फरमाया है।

सत्य सदाचार ही आत्मधर्म है, सत्य सदाचार ही आध्यात्मिक कर्म है, विशेष तो क्या कहें पर सत्य सदाचार ही धर्म का मर्म हैं।

संसार में सत्य और सदाचार को जिन पुरुषों ने हृदय से धारण किया है उन्हीं महापुरुषों का आत्म-कल्याण हुआ था, होता है, और होगा। सत्य-सदाचारी पुरुषों की ही संसार में जय विजय हुआ करती है, ऋद्धियों सिद्धियों लब्धियों व शक्तियों सत्य-सदाचारी मानव के चरणारविंदों में सदैव दास दासियों की तरह नतमस्तक हो हाजिर रहा करती है और अधिक तो क्या पर सत्य-सदाचारी की देव, दानव, सुर असुर किन्नर सभी नम्रीभूत हो सेवा करते हैं। यथा—

देव दानव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा।
बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति ते॥

उत्त० अ० १६ गाथा १६

और जिस पुरुष में सत्य सदाचार की तपश्चर्या है, उस मानव में सब प्रकार की तपश्चर्या है, कहा भी है कि—"तवेसु वा उत्तमं

का निर्माण किया था। तदन्तर स्वल्पज्ञों के हितार्थ संगीतमय रामायण की कृति कवि 'केशराजजी' ने की है। अन्यान्य जैन कवियों ने भी यथाशक्ति 'रामायण' पर लेखनी चलाई परन्तु उपरोक्त कवियों की कविता जितनी प्रख्याति में आई उतनी अन्य कवियों की नहीं। अस्तु,

जैन पद्य रामायण के प्रकाशन की आवश्यकता

पाठक महाशय ! जैन पद्य रामायण का प्रकाशन क्यों किया जा रहा है और इसमें क्या अधिकता है ? इत्यादि के उत्तर में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'केशराजजी' रचित रामयश का प्रकाशन कितने ही वर्षों के पहले हुआ था, मगर उसकी इस समय उपलब्धि विशेषतः कम होती है और स्थानकवासी जैन समाज में उसकी पूर्ण आवश्यकता भी है। बस इसी की पूर्ति करने के निमित्त ही इस जैन पद्य रामायण का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें अधिकता भी रहेगी वह यह कि इस जैन पद्य रामायण में कवि केशराजजी के सिवा अन्य जैन व अजैन कवियों की प्रसंगोपात सुन्दर रचनायें भी प्रविष्ट की गई है। संशोधन का खयाल तो पूर्ण रूप से रहा ही है पर उससे भी अधिक कागज कम्पोज-साइज बाइंडिंग आदि पुस्तक का कलेवर भी पूर्ण रूप से सजाया गया है। इसमें विशेष सुविधा तो यह रही है कि पुस्तक बहुत बड़ी शानदार व सजिल्द होने पर भी स्वल्प मूल्य रख कर ग्राहकों के हाथ दी गई है।

संग्राहकजी का परिचय

इसके संग्रहकर्ता ओसवाल वंश वीशा खानदान के सुराणा जाति के जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्दजी हैं। आपका जन्म मरुधर देश पीपाड़ सीटी में सं १६४५

ब्रम्भचेरं" "सत्यं चेत्तपसा च किं" इत्यादि आर्ष वचनों से स्वयं सिद्ध ही है और सत्य सदाचार से रहित मानव कितना ही जप तप तीर्थ व्रत त्याग क्रिया कर्म करले पर आत्म-कल्याण होना महा दुष्कर है, क्योंकि सब धर्म कर्म का मर्म सत्य सदाचार ही है, इसके बिना न धर्म है न कर्म और न कल्याण है।

अग्नि का जल बना देना, जल का थल बना देना महा भयंकर शेर का श्यार कर देना, और खूंखार सर्प की फूलों की माला बना देना इत्यादि शक्तियां सत्य सदाचार के प्रताप से ही उत्पन्न हुआ करती है।

जैन-पद्य रामायण का परिचय

अब इसके उदाहरण के लिए पुरुष-पावन श्री राम और सती शिरोमणि श्री सीताजी का जीवन चरित्र ही पर्याप्त होगा, अतएव यह "जैन पद्य-रामायण" पाठकों की सेवा में पेश कर रहा हूं।

रामायण का आशय यही है कि राम+अयन यानि राम का मार्ग अर्थात् रामचन्द्रजी जिस न्याय-नीति का आश्रय लेकर चले थे अथवा जिस सदाचार के मार्ग पर प्रगति की उसका जिसमें दिग्दर्शन किया गया हो उसी का नाम रामायण है।

रामायण का महत्व जैन दर्शन व अजैन दर्शन में सर्वत्र अति आदर से माना गया है. जैनेतर दर्शन में आदि कवि बाल्मीक व श्री गोस्वामी तुलसीदासजी और राधेश्याम आदि कवियों ने रामायण की बड़ी रसीली रचना की है और जैन दर्शन में पहले पहल श्री हेमचंद्राचार्यजी ने संस्कृत भाषा में 'रामायण'

का निर्माण किया था। तदन्तर स्वल्पज्ञों के हितार्थ संगीतमय रामायण की कृति कवि 'केशराजजी' ने की है। अन्यान्य जैन कवियों ने भी यथाशक्ति 'रामायण' पर लेखनी चलाई परन्तु उपरोक्त कवियों की कविता जितनी प्रख्याति में आई उतनी अन्य कवियों की नहीं। अस्तु,

जैन पद्य रामायण के प्रकाशन का आवश्यकता

पाठक महाशय! जैन पद्य रामायण का प्रकाशन क्यों किया जा रहा है और इसमें क्या अधिकता है? इत्यादि के उत्तर में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'केशराजजी' रचित रामयश का प्रकाशन कितने ही वर्षों के पहले हुआ था, मगर उसकी इस समय उपलब्धि विशेषतः कम होती है और स्थानकवासी जैन समाज में उसकी पूर्ण आवश्यकता भी है। बस इसी की पूर्ती करने के निमित्त ही इस जैन पद्य रामायण का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें अधिकता भी रहेगी वह यह कि इस जैन पद्य रामायण में कवि केशराजजी के सिवा अन्य जैन व अजैन कवियों की प्रसगोपात सुन्दर रचनायें भी प्रविष्ट की गई हैं। संशोधन का खयाल तो पूर्ण रूप से रहा ही है पर उससे भी अधिक कागज कम्पोज-साइज बांइडिंग आदि पुस्तक का कलेवर भी पूर्ण रूप से सजाया गया है। इसमें विशेष सुविधा तो यह रही है कि पुस्तक बहुत बड़ी शानदार व सजिल्द होने पर भी स्वल्प मूल्य रख कर ग्राहकों के हाथ दी गई है।

संग्राहकजी का परिचय

इसके संग्रहकर्ता ओसवाल वंश वीशा खानदान के सुराणा जाति के जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्दजी हैं। आपका जन्म मरुधर देश पीपाड़ सीटी में सं १६७५

की साल में कार्तिक वदि चतुर्दशी (दीवाली) के दिन हुआ। आप बचपन से ही विद्यारसिक है। किन्तु आपकी बालकाल में ही चेचक (माता) की बीमारी से नजर चली गई थी, क्या किया जाय " कर्मणो गहना गतिः " कर्मों के आगे किसका जोर चल सकता है। बस आप प्रज्ञाचक्षु रहने पर भी वाणिज्य कला में पूर्ण प्रवीन बन गये और प्रत्येक कर्तव्य में आपकी कुशलता को देख कर बहुत से महाशय दंग होजाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में आपकी अच्छी गति है और वैद्यक शास्त्र में तो आपका पूरा अधिकार है, आप जैन-वैद्य हैं, इलाज भी आपका ठीक ही हुआ करता है और औषधियों का निर्माण भी आप अपने ही हाथों किया करते हैं आपको नाड़ीज्ञान में भी काफी सफलता प्राप्त हुई हैं। जैन सूत्रों का तो आपको बोध बचपन से ही है।

आपके दिल में यह भावना कितने ही अर्से से थी कि 'रामायण' का संग्रह करवा कर प्रकाशन करूं मगर आप प्रज्ञा-चक्षु रहे अतः आप लिख नहीं सकने के कारण यह भावना मन ही मन रही।

अच्छी भावना प्रत्येक प्राणी की समय पाकर हो ही जाती है, फलस्वरूप लेखकजी का भी संयोग मिल गया और पुस्तक भी तैयार होगई।

इस पुस्तक के लिखने का परिश्रम मरुस्थलीय श्रीमज्जैनाचार्य त्यागमूर्ति प्रसिद्ध पूज्य श्री श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज साहब की सम्प्रदायस्थ शान्त दान्त विमल वैरागी सकल कुवासना त्यागी यम नियम निष्ठ सकल गुण विशिष्ट स्थविर पद विभूषित श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव प्रवर्तक स्वामीजी श्री श्री 'शार्दूलसिंहजी' म० सा० के प्रधान शिष्य सरल हृदय

कवि मुनि श्री 'रूपचन्द्रजी' म० सा० ने हमारे अतीव आग्रह से आपने अपना अमूल्य समय देकर जो उदारता प्रकट की है एतदर्थ संग्राहक आपका पूर्ण आभारी है।

अब आपको यह भी मालूम कर देता हूं कि "जैन पद्य रामायण" में किन २ कवियों की रचना संग्रह की गई है।

मुख्यता में तो कवि 'केशराजजी' की मूल रामायण है, फिर पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० की सम्प्रदाय के पंडित मुनिश्री रामचन्द्रजी म० की कविता व श्री व्याख्यान वाचस्पति स्वामीजी श्री नथमल्लजी म० सा० की विशेष कविता ली गई है, आप दोनों सर्व गुण सम्पन्न व महान प्रतापी महात्मा थे, आप दोनों की कविताऐं काफी विद्यमान है।

तीसरे नम्बर में स्वामीजी श्री नथमलजी म० सा० के प्रधान शिष्य कविकुल कुमुद कलाधर स्वामीजी मन्त्री श्री चौथमल्लजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

चौथे नम्बर में स्वामीजी आत्मार्थी मुनि श्री रावत-मलजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

पांचवें नम्बर में श्रीमज्जैनाचार्य श्री अमरसिंहजी म० सा० के सम्प्रदानुयायी स्वामीजी श्री नेमीचन्दजी म० की कविता भी संकलित की गई है जोकि शांत मुनिश्री नारायण-दासजी म० सा० की कृपा से प्राप्त हुई है। श्री पूज्य प्रखर पण्डित वादीगज केसरी रेखराजजी म० के शिष्य श्री नथ-मल्लजी म० की अनुपम कविता भी इसमें डाली गई है।

छठे नम्बर में श्रीमान् दिवंगत पूज्य श्री १००८ श्री कानमलजी म० के सुशिष्य न्यायरत्न साहित्य-प्रेमी कविता कामिनीकान्त युवक हृदय पंडितरत्न श्री चैनमलजी म० की

यद्यपि बहुत साहित्य सुधार सरसित है तथापि पहिले खण्ड में हनुमानजी की उत्पत्ति के प्रसंग में थोड़ा सा अंजना का भी अधिकार केशराजजी ने अपने रामयश में लिया है तदनुसार हमने भी उस 'सती अंजना' से खास खास मौके पर गायन लिखे हैं आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं।

सातवें नम्बर पूज्य गुरुदेव श्री शार्दुलसिंहजी म० सा० के सुशिष्य मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० सा० की कविता का संकलन चारों ही खण्डों में किया गया हैं इस ग्रंथ को संशोधन करने का कष्ट आपही ने किया है। आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं वे सब एक एक से बढकर हैं।

आठवें नम्बर में श्रीमान् जैनोपदेशक वैद्य भूलचन्दजी सुराणा की सरस व अतीव उपयोगी कविता का संग्रह समग्र ग्रंथ में किया गया है।

अवशेष में श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की कविता का व राधेश्यामजी की कविता का भी प्रसंग २ पर और अमृतलालजी माथुर (जोधपुर निवासी) की कविता का भी संग्रह है जोकि ग्रंथ समाप्ति के बाद उपलब्ध होने से परिशिष्ट में लिखी गई है इत्यादि कवियों की मौलिक कविता का इस (जैन पद्य रामायण) में संग्रह किया गया है।

अब पाठकों के सम्मुख एक और शब्द कह कर इस भूमिका को यहीं समाप्त करता हूं तथा साथ ही शुद्धिपत्र जो इसके साथ दिया गया है उसकी सहायता लेते रहें और भी कोई गलती रह गई हो तो कृपया संग्रहाकजी को सूचित करें जिससे द्वितीयवृत्ति शुद्ध प्रकाशित हो सके।

आपका—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय

* श्रीमतेऽर्हते नमः *

णमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री जैन पद्य रामायण

—ः का ः—

प्रथम खण्ड

दोहा वेला-वलरागे

श्री "मुनिसुव्रत" स्वामीजी, त्रिभुवन तारण देव,
तीर्थंकर प्रभुवीशमो, सुरनरसारे सेव ॥ १ ॥
पुत्र "सुमित्र" नरेन्द्रनो, "पउमावई"[१] तसुमाय ।
जन्मभूमि जिनवर तणी, राजगृह" कहिवाय ॥ २ ॥
अवतारिया "हरिवंशमें", "हरि" साचविया चार ।
"कल्याणक" पांचेभला, नामसदा जयकार ॥ ३ ॥
चरण कमल तेहना नमी, "राम" सु "लिछमन" राय ।
"सीता" ने "रावण" तणूं, "चरित" रचूं सुखदाय ॥४॥
सुखदाई सहुलोकने. "रामकथा" अभिराम ।
श्रवण सुणन्त सरेसही, मनना वंछित काम ॥ ५ ॥
"रा" उचरतांमुखथकी, पाप पुलाई जाय ।
मतिफरि आवे तेहथी. "ममो" कमाड़ी थाय ॥ ६ ॥

---

१ पद्मावती = २ = केटलीक प्रतांमें "साचवीया" पाठान्तरे साचवीया, छे तेमनूं पूर्व भवेसिद्धगिरि नामहत तेथी हरिसिंह थी बच्या राम अर्थ थईशके ॥ ३ रा अक्षर बोलतां (मुख खुल्ली जायछे तेमाटे पेटमांथी नीकलीने) पापदूर थायछे, तेफरी पेशतुं नथी कारणकेमम्मो कमाडी थाय पटले म अक्षर कमाड़ रूप थायछे, (म बोलतां मुख बंध थायछे ॥

यद्यपि बहुत साहित्य सुधार सरसित है तथापि पहिले खण्ड में हनुमानजी की उत्पत्ति के प्रसंग में थोड़ा सा अंजना का भी अधिकार केशराजजी ने अपने रामयश में लिया है तदनुसार हमने भी उस 'सती अंजना' से खास खास मौके पर गायन लिखे हैं आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं।

सातवें नम्बर पूज्य गुरुदेव श्री शार्दुलसिंहजी म० सा० के सुशिष्य मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० सा० की कविता का संकलन चारों ही खण्डों में किया गया हैं इस ग्रंथ को संशोधन करने का कष्ट आपही ने किया है। आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं वे सब एक एक से बढकर हैं।

आठवें नम्बर में श्रीमान् जैनोपदेशक वैद्य भूलचन्दजी सुराणा की सरस व अतीव उपयोगी कविता का संग्रह समग्र ग्रंथ में किया गया है।

अवशेष में श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की कविता का व राधेश्यामजी की कविता का भी प्रसंग २ पर और अमृतलालजी माथुर (जोधपुर निवासी) की कविता का भी संग्रह है जोकि ग्रंथ समाप्ति के बाद उपलब्ध होने से परिशिष्ट में लिखी गई है इत्यादि कवियों की मौलिक कविता का इस (जैन पद्य रामायण) में संग्रह किया गया है।

अब पाठकों के सम्मुख एक और शब्द कह कर इस भूमिका को यहीं समाप्त करता हूं तथा साथ ही शुद्धिपत्र जो इसके साथ दिया गया है उसकी सहायता लेते रहें और भी कोई गलती रह गई हो तो कृपया संग्रहाकजी को सूचित करें जिससे द्वितीयवृत्ति शुद्ध प्रकाशित हो सके।

आपका—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय

* श्रीमतेऽर्हते नमः *

णमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री जैन पद्य रामायण

—: का :—

प्रथम खण्ड

दोहा वेला-चलरागे

श्री "मुनिसुव्रत" स्वामीजी, त्रिभुवन तारण देव,
तीर्थंकर प्रभुवीशमो, सुरनरसारे सेव ॥ १ ॥
पुत्र "सुमित्र" नरेन्द्रनो, "पउमावई"[१] तसुमाय ।
जन्मभूमि जिनवर तणी, राजगृह" कहिवाय ॥ २ ॥
अवतरिया "हरिवंशमें", "हरि" साचविया चार ।
"कल्याणक" पांचेभला, नामसदा जयकार ॥ ३ ॥
चरण कमल तेहना नमी. "राम" सु "लिछमन" राय ।
"सीता" ने "रावण" तणूं, "चरित" रचूं सुखदाय ॥४॥
सुखदाई सहुलोकने. "रामकथा" अभिराम ।
श्रवण सुणन्त सरेसही, मनना वंछित काम ॥ ५ ॥
"रा" उच्चरतांमुखथकी, पाप पुलाई जाय ।
मतिफारि आवे तेहथी, "ममो" कमाड़ी थाय ॥ ६ ॥

---

१ पद्मावती = २ = केटलीक प्रतांमें "साचवीया" पाठान्तरे
ाचवीया, छं तेमनू पूर्व भवेसिंहगिरि नामहतू तेथी हरिसिंह थी
रुणा नाम अर्थ थईशके ॥ ३ रा अक्षर बोलतां (मुख खुली जायछे
:माटे पेटमांथी नीकलीने) पापदूर थायछे, तेफरी पेशतुं नथी
ारणकेमम्मो कमाडी थाय एटले म अक्षर कमाड़ रूप थायछे, (म
ोलतां मुख बंध थायछे ॥

पावनमें पावनमहा, कलिमल हरण अपार ।
मोक्षपन्थनूं सम्बल्न, सज्जन जीवन सार ॥ ७ ॥
विसरामोस्थान की भल्न, क्षेम कुशलनो ठाम ।
बीजधर्म तरुवरतणूं, "रामचन्द्र" नूं नाम ॥ ८ ॥
"लिछमन" "रावण" राजीया, तीर्थंकर पदपाय ।
मुक्तिपुरी जईथायसे, सकल जगतना राय ॥ ९ ॥
सत्यवती "सीता" सती, शीलतणो अवदात ।
स्वर्ग पहूंती बारहवें, वसुधामांहि विख्यात ॥ १० ॥

तर्ज गर्व मतिकररे—ढाल प्रक्षेप ।

श्रीमत् "सिद्ध" शिरनामी, गुरुका चरण महिरपामी, मेट निज तनमन की खामी, शारदा सन्तन सुखदाई "महिर कर वरदे मुजमाई" सत्यव्रत पालो. मेरी जहान सत्य व्रतपालो, सत्यसे पाप विलय जावे, सत्य से "राम" शिवपावे. सत्यका सुरनर गुण-गावे ॥ सत्य० ॥ १ ॥

ढालपहीली तर्ज झकडी, सुण २ कन्तारे सीख सुहावणी ।

"जम्बू" द्वीपे क्षेत्र "भरतभल्न" "लंका" नगरी स्थानक निरमल्न; (उलालो) निर्मल्न स्थानक पूरी "लंका," द्वीपतो "राक्षस" जुवो ॥ "अजित" जिनवरतणे वारेभूप "धनवाहन" हुवो ॥ "महाराक्षस" सुत पाट थापी. अजित स्वामीहाथए ॥ चारित्र लेई मोक्ष पहूंच्या, घणा "मुनिवर" साथए ॥ १ ॥

मूलगी-ढालप्रक्षेप तर्ज गर्वमति कररे ।

" रूपाचल " " रत्न " पूरी राजे " भूपतिहां धनवाहन" जि " कंचनपुरी " " अशनीवेग " गाजे ॥ कन्यातसु " श्री कान्ता " भारी, वरयाजिणभूपतिदिलधारी ॥ सत्यव्रतपालो ॥२॥

द्याधर अमरससहुभरिया, " भूप " धनवाहन " नीसरीया,
अजित " जिनपायशरणचरिया । ' अभय ' जिनराज उच्चरीया
न्द्र तव भीम समजावे, भूपने लंका पहठावे ॥ सत्य० ॥३॥
क्षसी विद्याही दीधी माणक नवहार परसिद्धि, भूप ने सर्व कही
धी, परस्त्री, साधु सन्तावेगा, उन्ही से राज्य गमावेगा
सत्य व्रत पालो ॥४॥

ूलचन्दजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी-

लवण समुन्दर तिहूंदिश शोभतो, त्रिकूट गिरी इक पासोजी । क्षस द्वीप विच रलियामणो, जोयण सातसो खासोजी ॥ सुणो भवियण वल्लभ वारता ॥ टेर ॥ १ ॥ स्वर्गपूरी सम लंका हभे, सुवर्ण में शोभावेजी । पंचप्रकारे मणिना कांगरा, निरखत ृप्ति न आवेजी ॥ निसुणो ॥ २ ॥ एहवी नगरीरे आपूं तुमभणी, रिनो जोर न थावेजी । -अठ जोयण की लंका दूसरी, पूहवी ांहि कहावेजी ॥ निसुणो ॥ ३ ॥

यतः पंचपापाण प्राकाराः प्राकाराः सप्त चेष्टकाः
पुनस्ताम्रपुजः पंच, दशतेममयास्ततः ॥ १ ॥

राक्षस द्वीपको चौड़ापणो ७ योजन प्रमाण है ॥ उसमें त्रीकूट र्वत की ऊचाई नवयोजन और लम्बाई पांचसो योजन की है ॥ त्रिकूट पर्वत के नीचे तीनसो जोजन की खुली जमीन है वहां पाताल का है, जमीन में गुफाकार पाताल लंका है । पाताल लंका की लम्बाई व चडाई बीश योजन की है । त्रिकूट पर्वत के बिचले कूट में लंका नगर है, लंका के कोट का प्रमाण तीश लाख क्रोडमण लोह, ारा लाख क्रोड मण तांबा. दश लाख क्रोड़मण सोनो, कोटकी ीच में है ॥ सवैयो-पनरे योजन नीव भीत लंका की जाणो, ऊंचो ोजन साठ भीत गढ की परवाणों त्रिशत जोजन लम्ब, चोडमो हूली जाणो, आगे जोजन शत, लंका रो प परमाणो । चार हजार

(ढाल मूलगी)

राक्षस राजा राज्य करेघणूं, अवसर जाणी तपसंयम तणू, (उलालो)
अवसर जाणी पुण्यप्राणी "देवराक्षस" सुतभणी,
राज्य आपी ग्रही संयम, लही मोक्ष सुहामणी ॥
असंख्याता हुवा भूपति, समय दशमा जिनतणे
"कीर्ति धवल" नरेन्द्र नीको राय आडम्बर घणे ॥ २ ॥
इण अवसर मेरे "रूपाचल[१]" विखे "मेघाभिधापुर[२]" नगर अछे[३] अखे
अखे खग[४] "अतीन्द्र" राजा नारी तेहनी "श्रीमती"
"श्रीकण्ठ" पुत्र पवित्र पुत्री नामे "देवी" गुणवती
"पुष्पोत्तर" नृप "रत्नपुरी" पति नन्द "पद्मोत्तर" सही ।
तस अर्थे "देवी कन्यका रायमांगी ऊमही ॥ ३ ॥
खेचर सुतने परणावी नहीं, 'लंक पतिने' विवाहे गहगही ॥
गहगहि विवाहै अति उमाहै 'कीर्तिधवल' नरेन्द्र ने
'देवी' व[५] देवीसदा सुखदा शची[६] जेम सुरेन्द्र ने ॥
अति इर्ष्या थी 'रत्नपुरी' पति वहै अमरस[७] आकरो
नारी हैते क्लेश अधिको ऊपजे सुणीये खरो ॥ ४ ॥
'पुष्पोत्तर' नीं 'पद्मा कुँवरी, खग 'श्रीकण्ठे' रागे अपहरी,
अपहरी निसुणी जाम 'पद्मा' 'पुष्पोत्तर' नृप राजीयो ।
दलवल विराजी पूठे हुवो, ताम खेचर[८] भाजीयो ॥
लंक पतिनूं शरण लीधूं 'लंकपति बतका करी ।
समजावी राजा व्याव[९] कीधो पक्षतो जीते खरी ॥ ५ ॥
भाखे लंका नोपति सादरो, वास तुम्हारो इहांही करो ।
इहांही तुम्ह वास ठाणो, तिहां तुम्ह द्वेषी सहू,
कोई वेला पिशुन्यवासे[१०] लाज तोल घटे वहू ॥

१ वैताढ्य पर्वत. २ मेघपुर, ३ छै, ४ राक्षस, ५ अथवा, ६ इन्द्राणी ७ क्रोध, ८ राक्षस (श्रीकण्ठ), ९ लग्न, १० चुगलखोर (शत्रु)

द्वीप वानर त्रिशतजोजन[१] ठाम अधिक सुहामणो,
वास कीजे सुखे रहीजे, प्रेमसाचो आपणो ॥ ६ ॥
भगिनी[२] पतिनो भाषित मानीयो, पुरी किष्किंधा वास वखाणीयो,
वरवाणीयो वरवास वारु, महिल मोटा मन्दिरू,
सुन्दराकार उत्तंग 'पोषह शाल' दिसे सुन्दरू।
उत्तमाचार अपार सहु अति, धर्म कर्म समाचरे,
देव अरिहन्त सुगुरु सेवा, जन्मनें सफलोकरे ॥ ७ ॥
'वानर द्वीपे' वानर देखीये, राजा रींज्यो प्रेम विसेखीये,
विसेखिये तव प्रेम वहुलो, मारिवा को नविलहे।
अन्नपाणी दीजीये 'नृप वचन' सहुए सद्दहै,
चित्र[३] विलेखे सुछत्र खेचर रूप वानरनूं करे ॥
तेहथी अथ द्वीपनामे, जाम वानर विस्तरे ॥ ८ ॥
'श्रीकण्ठ' हीथी उपन्यो नन्दन, 'वज्रसुकण्ठ' नामे आनन्दन ॥
आनन्द कारी राय इकदिन सभामें बैठो जिसे,
द्वीप अष्ट में जात्र देते जात देख्या सुरतिसे ॥
राय चलियो 'मानुष्योत्तरगिरी' यान खलाईयो।
साधु संगे लेई संयम राय मोक्ष सिधाईयो ॥ ९ ॥
वज्र सुकण्ठादिक अनेकजी, राजा हुवाछे सुविवेकजी ॥
सुविवेकी राय हुवा वीशमां जिनने समे,
'घनो दधि' वर राय हुवो अनमता आवीनमे ॥
लंक नगरी 'तडित्केश' ज राय रूडो राजतो,
राक्षसां वानरां मांहि प्रेमनो गुण गाजतो।
नन्दन वन में लंकानो धणी, रमवा चाल्यो साथे त्रियाघणी,
त्रियासागे रायखेले वानरो इक एटले।
राय त्रियाना कुचविलूर्या, कोपीयो नृप तेटले ॥

---

१ तीन सो। २ बहिननो पति। ३ छत्रादि ऊपर वानरनो रूप चित्रने से द्वीपनो नाम वानर द्वीप हुवा।

वाणे हणीयो भांय परियो, साधु दीये नवकारए,
सद्दयूं साचूं सोई वानर हुवो उदधी कुंवारए ॥ ११ ॥
ज्ञानपयुंजी देखे देवजी, आवी ऋपिजी सारे सेवजी,
सेवसारे ताम नृपना लोप वानर मारए ।
देखी कोप्यो देववानर सैन्य अतिविस्तारए ॥
कोपीया कपि तरु शिलासूं हणे राक्षस लाखए ।
सांति ने वले सुर मनाव्यो बक्षीस अब इमभाखए ॥ १२ ॥
साधु समीपे दोई आवीया, देशना निसुणी साता पावीया ॥
पावीया साता रायपूछे कहिये ऋपि करुणा करी ।
वानर नी ने माहरीए सुनावो पूरव[१] चरी ॥
पुरी 'सावत्थी' ए मंत्री–पुत्र तूंतो 'दत्त' हुतो,
'कासिए' लुब्धक 'जीव कपीनो पापजीवी'[२] थो छतो १३॥
मुनिवर पासे ते दीक्षावरी, 'वणारसीए' आव्यो संचरी ।
संचरी आव्यो ताम 'लुब्धक' मारियो ते मुनिवरु,
माहेन्द्र[३] कल्पे देव होई तूं हुवोरे नरेश्वरू ॥
नरकना दुःख देखी लुब्धक ऊपज्यो वानर पणे,
वैरकारण भववधारण ज्ञान वले मुनिवर भणे ॥ १४ ॥
पुत्र 'सुकेशीने' पद आपीयूं, संयम माथे नृपमन थापीयू ।
थापियू संजम माथे एमन, मोक्षमारग साधियो ।
'वनोदधि' वर ग्रही संजम, मोक्षपद आराधीयो ॥
'किष्कन्धी' राजा किष्कन्धाए, 'सुकेशी' लङ्कावली ।
'केशराज' अधिकार पहिली, ढाल ए भाखी भली ॥ १५ ॥

॥ दोहा भैरव रागे ॥

गिरी वैताढ्य विशेष थी, 'रथनूपुर' पुर देख ।
'अगनीवेग' राजाभलो, पाले राज्य विशेख ॥ १ ॥

१ पूर्व भवनो चरित्र (परि चरित्र । २ पारधी । ३ देवलोक दशमो ।

‘ विजयसिंह ’ विजयीमहा, ‘ विद्युत्वेग विशेष ।
दोरदण्ड[1] दो नन्दना, पावे सोह[2] नरेश ॥ २ ॥
तिण पर्वत ‘ आदित्य ’ पुरे, ‘ मन्दिरमाली ’ राय ।
तेघर पुत्री ऊपनी, ‘ श्रीमाला ’ सुखदाय ॥ ३ ॥
स्वयम्वर मण्डप तेहने, बोलाव्या बहु भूप ।
मण्डपनी रचना रची,· आछी भांत अनूप ॥ ४ ॥
रायसहूने अति क्रमी, वरियो किष्किन्धी राय ।
‘ विजयसिंह ’ कोप्योघणूं, अमरस सह्यो न जाय ॥५॥
आगे ही ऊतारीया, पर्वतथी तुम आंहि ।
अरे छंडेला[3] छलवटो,[4] अबहु तजो न कांहि ॥ ६ ॥
कहे आपोवर मालिका, के शूरा संग्राम ।
राय सुणी कोप्यो घणूं, वानर–राक्षस स्वाम ॥ ७ ॥
‘ विजयसिंह[5] ’ ने मारियो, किष्किन्धी नृपनोभ्रात ।
अंध कहणी बदलो लीयो, विजयसिंह ने तात ॥ ८ ॥
किष्किन्धा ‘ लङ्का ’ धणी, कूटी काढ्या दोय ।
इहां पलेखो को नहीं, बलियो करे सो होय ॥ ९ ॥

ढाल दूजी तर्ज–प्रभुजी ने अङ्गी सुहावती है ।
(कड़वो रे गुड़ भेली रो)

बलियां शूं कुण लागता है, फिरी पाछा ही भागता है ॥ टेर ॥
किष्किन्धा ‘लङ्का’ ना नायक, पायालां थिती ठावता है ।
‘लङ्कपयाल’ प्रसिद्ध पृथिवी, वास कियां सुखपावता है ॥ब०॥१॥
अशनीवेगे ‘ नृपनिर्घात ’ ज. ‘ लङ्का ’ थाने थापता है ।
देशनगर पुर पाटण सहुए, यथायोग्य ने आपता है ॥बलि० ॥२॥

१ पुत्ररूपी बे भुजदण्ड। २ शोभा । ३ छोडेला । ४ कपट । ५ विजयसिंह ने किष्किंधोना नानाभाई अन्धकेमार्यो तेथी विजयसिंहना बापे अन्धकूने मारी बदलो लीधो ।

' सहश्रार ' सुतने देई पदवी, आपण संयम धारता है।
समिति गुप्ति व्रतनो प्रतिपालक, निज-पर-कारज सारता है ।।व्र०।।३।।
राय 'सुकेशी' घरे इन्द्राणी, नारि शिरोमणि नायका है।
'माली' 'सुमाली' माल्यान ए, पुत्र तिनोंकी दायका है ।व्र०।।४।।
किष्किधा पतिनी वरवनिता, नामेतो वरमाला है।
'रुक्षरज' 'आदित्यरज' दो सुतनो, माय सुविशाला है ।।व्र०।।५।।
राय किष्किधी 'मधु' पर्वतपरे[१], सुखसाता अति माणता है।
नाम 'किष्किधा' नगर निवसावी, वास विशेषे ठाणता है।।व्र०।।६।।
राय 'सुकेशी' तणा सुत कोप्या, नृप 'निर्घात' निकासीयो[२] है।
'मालि' 'लंका' पुरी 'किष्किंधा' 'खररजा'[३] नृप वासीयो है।व्र०।।७।।
नृप 'सहश्रार' तणे घरनारी, 'चित्त' सुन्दरी राजे है ।।
नन्दन 'ईन्द्र' अनोपम जायो, उपमा ईन्द्रही साजे है ।व्र० ।।८।।
'मालि' राजा इन्द्रेनिपात्यो[४], पुनरपि लंका लीधी है।
नृप 'वैश्रवण' भणीसा दीधी, खुणसनी खुणसी कीधी है ।व्र० ।।९।।
'लंकपयाल' 'सुमालि' वसन्तो, 'रत्नश्रवा' सुत तण्डियो है।
कुसुमोद्याने जय विद्यानो, साधन मोटो मण्डियो है ।व्र० ।।१०।।
खेचरनी कुंवरी मन हरणी, पासे आवी ऊभी है।
तनमन राची रहीछे साची, प्रभुजीने गुणे खोभी है ।व्र०।।११।।
निश्चलमन राखन्तो नरवरे, सूधो साधन साधियो है।
'मानव' सुन्दरी विद्यासाधी, -वानघणेरो वाधियो है ।व्र० ।।१२।।
दृष्टि पसारी जोतो देखे, पासे पद्मनी ठाढी है।
आपण कुण अछो कहै सुन्दरी, वचने कथने गाढी है ।व्र० ।।१३।।
'कोतुक मंगल' पुखर महोदू, 'व्योमविन्दू' तिहां राजा है।
'कौशिका' कैकसी वेसहोदरी, रूप कला गुणताजा है ।व्र० ।।१४।।
'कौशिका' तो 'विश्रवसा' घरे, 'वैश्रवण' सुतवंका है।

१ ऊपर । २ मारीयो । ३ आदित्यरज पाठे । ४ मार्यो ।

'इन्द्र' तणे अधिकारे अधिको, लंका राज्य निशंका है।व० ॥१५॥
निमित्तिए मुज तुमपर भाख्यो, मनसा अधिक उमाही है।
तेडी कुटुम्ब आडम्बरे राजा, सा कन्या तव व्याही है॥व०॥१६॥
पुर 'कुसुमांतर' नवूरे वसावी, वासवनो[१] सुखमाणे है।
धर्म सुकर्म करन्तां वहुलो, जन्म कृतार्थ जाणे है।व० ॥ १७॥
एक दिवस 'कैकशी' निशाए, सिंह सलूणो देखीयो है।
गजकुम्भस्थल[२] भेद करंतो, नृपने हर्ष विसेखियो है। व०॥१८॥
गर्भवती सा राणी वाणी, अति असुहाणी भाखे है।
मोडे अंग कलेश करन्ती, मानघणूं मनराखे है।व० ॥ १९ ॥
दर्पण छांडी खडगे मुख देखे, इन्द्रही आण मनावे है।
अरिशिर पाव दियूं इत्यादिक गर्भ प्रभाव जणावे है।व० ॥२०॥
प्रति[३]पखियों घर त्रास पडंतां, शुभवेला सुत जायो है।
महम[४] चतुर्दश वर्ष प्रमाणे, अविचल होई आयो है। व० ॥२१॥
'भीमेन्द्रेण'[५] पूरार्पित परगट, माणिक नव निपायो है।
हार उठाई ऊंचो लीधो, पहरी गले शोभायो है।व० ॥ २२ ॥
देखी 'कैकशी' एह तमासो, अचरिज अधिक उपायो है।
'रत्नश्रवाने एह अपूरव, राणीए ख्याल दिखायो है।व० ॥२३॥
राक्षस इन्द्रे 'घनवाहन ने' आप्योथो इम सुणियो है।
पूर्वेज जे तवअर्च्यो पूज्यो, देव तणी परे थुणियो है।व० ॥२४॥
नाग हजारे सेवित किणही, उपाड्यो नवि दीठो है।
वालक थांरो लिलाएसो, कण्ठे पहरी वैठो है।व०॥ २५॥
नव माणिक मानव मुख दीसे, दशमो सहज दिखायो है।
'दशमुख' नाम पिता तव थापे, उच्छव अधिको थायो है।व० ॥२६॥

१ इन्द्र। २ हाथीनूं कुम्भस्थल भेदतां सिंह दीठूं। ३ शत्रु। ३ चौदह हजार वर्ष (सहम-सहस्र) जैनरामायणमां साडा चारे हजार वर्षनूं प्रमाण लख्यूं छे। ५ भीमेन्द्र राजाए पूर्वे आपेलूं॥

धरती छूटे जेहनी, मान महातम जाय,
सधन थकी निर्धन हुवे, जीवित मुआ गणाय ॥७॥
अण रखवाले छेत्रने, जो जाणे सो खाय,
रखवाला बैठां थकां, कोईयन खावा पाय ॥ ८ ॥
सो दिन नयणें निरख सूं, लंका नगरी जाय,
पितामहने आसने, तुम बैसो उसराय ॥ ९ ॥
लंकाना लूंट नारने, बन्दि खाना मांहै ।
देखिस तब जाणिस सही, पुत्रवती हूं प्राहै ॥ १० ॥
एह मनोरथ माहरा, गगन[1] कुसुम समदेख,
मरुदेशे 'मरालिका' दिन २ क्षीण विशेख ॥ ११ ॥
एम वचन श्रवणे सुणी, विभीसण बोलन्त,
थाधिरी ढाढस पकड, माता मत डोलन्त ॥ १२ ॥

॥ ढाल तीजी तर्ज=पद आसावरी ॥

शकंधर[2] राजा चढतो तेज प्रतापे, तीन भुवन को कंटक कहीये।
ाणन कोई उथापे, रावण राजा चढतो० ॥ टेर ॥
ौणछे 'ईन्द्र धनद[2]' विचारा, कौणछे खेचर जाण,
हगण[3] रात्री न रात्री पतिरहै, जब ऊगे इक भाण ॥दश० ॥२॥
ावण' घर बैठां सुखपावो, 'कुम्भकरण' को जोर,
अष्टापद'[4] ऊठ्यां थी 'केहरी' भाजीजाये भोर ॥ दश० ॥ ३ ॥
ुम्भकरण' भी अलगो जावो, माहरी अधिकी टेक।
मयंगल' मातो[5] 'केहरी' आगे, पाव भरे नहीं एक ॥दश० ॥४॥
ावण' भाखे माय सुणोजी, दिओ अमनें आदेश,

आकाशना फल। २ धन+द=धन देनार धनेन्द्र वैश्रवण। देख सूर्योदय से ग्रहगण पहले तारानो समूह रात्री यानि अन्धकार ौर रात्रीपति अर्थात् चन्द्रमा रहै नहीं। ४ सिंह को मारने वाला ाणी। ५ मदोन्मत्त हाथी।

विद्या साधन साधी आवूं वाधे वान विशेप ॥ दश० ॥५॥
शुद्धा राधननें वलि साधी, विद्या एक हजार।
'सिंह' तणा ननु पाखर वैठा, हुवा अंगज अपार ॥ दश० ॥६॥
'कुम्भकर्ण' तो पांचज पामी, चार विभीपण लाधी।
क्षेम कुशलसूं तीने बंधव, आया विद्या साधी ॥ दश० ॥७॥
विद्या साधन विधि अधिकी, पद्म पुराणे वखणी।
मैं संबंध संक्षेपे कीधो, ग्रन्थ वचन्तो जाणी ॥ दश० ॥ ८ ॥
'पट्[१] उपवासे खांडो साध्यो, 'चन्द्रहास' वरदाई।
चन्द्र जिम कला नित्य चढती, वाधे अधिक वडाई ॥ दश० ॥९॥
गिरि 'वैताढ्य' दक्षिणश्रेणी, पुरवर 'सुरसंगीत'।
'मय' नृप 'केतुमतिनी'[२] जायी, 'मन्दोदरिय' पवित्त ॥दश० ॥१०॥
परणावी राजा 'रावण' ने, सन्मुख आणी कुंवारी।
जिम शचि इन्द्र घरे राणी, राय घरे ए नारी ॥ दश० ॥११॥
गिरि 'मेघरथ' खेचर पुत्री, रमति दीठी राय।
छए हजार वरी इकसाथे, पूरव पुण्य पसाय ॥ दश० ॥ १२ ॥
'पउमावई' पुत्रिनो तातज 'सुर सुन्दर' वडराजा।
अवर जनक सहु मिलीसाथे, आया लस्कर ताजा ॥ दश० ॥१३॥
वहु सहु मिली वोले स्वामी, वेगे विमान चलावो।
आया कटक विकट भट भारी, टले वैरी एम टलावो ॥ दश० ॥१४॥
'रावण' भाखे 'भामनियोंशूं' आरति कोई म आणो।
भूरी[३] भुजंगे[४] गरुड न वीहै, ए उखांणो जाणो ॥ दश० ॥१५॥
करी संग्राम सहुने जीती, नागज पासे वांधे।
नारी वचने छोडी वंधनथी, नेहघणेरो सांधे ॥ दश० ॥१६॥
'महोदर' नृप 'कुम्भ' पुराधिप, ' सुरूपनयना ' राणी।

---

१ छ-जैन रामायणां पोडस-सोले पसा है। २ हेमवतीति जैन रामायणे। ३ बहुत। ४ सर्प।

,'तडित्माला'' पुत्रीपरणी, 'कुम्भकरण'' घर आंणी ॥ ॥दश-१७॥
''ज्योतिपुर ''पति'' ''वीर नरेश्वर, नन्दवती नी जायी।
'पंकजश्री' पंकजवरनयणी, विभीपणसुखदाई॥ ॥ दश० १८॥
'मन्दोदरिये' नन्दन जायो ईन्द्र सरीसे तेजे।
'इन्द्रजीतजी' नामप्रमाणी, बोलाव्यो घणाहेजे॥ ॥दश० १९॥
मेघ सरीसो नयणां नन्दन, बीजो नन्दन जायो।
'मेघवाहन' चारू कुंवर, कर्मे तो कहवायो॥ ॥दश० २०॥
'कुम्भकरण' विभीपण भाई, लंकाने उजाडे।
'धनद' सुमालिसुं, ओलम्भो, दूत मुखे देवाडे॥ ॥दश०२१॥
रावण राजा भाई ताजा, चढिया ताम संग्रामे।
'धनद' संघाते युद्ध किया थी, 'रावणजी' जशपामे॥ ॥दश०२२॥
चरम 'शरीरी' धनद नरेश्वर, चारित्र सुं चित्त लावे॥
शत्रुमित्रसुं सम परिणांमी, 'रावण' आवी खमावे॥ ॥दश० २३
'लंका' लीधी रावण राये, 'पुष्पक' लीधू विमान।
माय मनोरथ पूरा कीधा, पुरुषों एह प्रमाण॥ ॥ दश० २४॥
'पुष्पक' विमाने बेसीने, गिरी वैताढ्ये आवे।
भुवना लंकृत हाथी साही, गजशाले बन्धावे॥ ॥ दश० २५॥
एक[१] 'विद्याधर' आवीसुनावे 'किष्किधा' नृपजाय॥
'लंकपयाल' तजी निजनगरी, लेवासारु आय॥ ॥दश० २६॥

---

१ एक विद्याधर रावण के पास आकर कहने लगा कि किष्किधा राजा के दोनों पुत्रों को यमराजा ने युद्ध में हराकर कैद में डाल दिया है और वे आपके सेवक हैं इसलिए उन्हों को आप छुडावें। ऐसा सुनकर रावण यमराज के पास जाकर यमराजा को परास्त कर दोनों पुत्रों को छुडा लाया और यमराजा रथनूपुर मां जाकर वहां का इन्द्र राजा ने अपनी मदद करने के लिये कहने पर वह तैयार हुवा तब मंत्री ने इन्कार किया फिर यम को सुरसङ्गीतक नगर देकर युद्ध करवाके लिये बुलावाये हैं।

विद्या साधन साधी आवे, वाधे वान विशेष ॥ दश० ॥५॥
शुद्धा राधननें वलि साधी, विद्या एक हजार।
'सिंह' तणा ननु पाखर बैठा, हुवा अगंज अपार ॥ दश० ॥६॥
'कुम्भकर्ण' तो पांचज पामी, चार विभीषण लाधी।
क्षेम कुशलसूं तीने बंधव, आया विद्या साधी ॥ दश० ॥७॥
विद्या साधन विधि अधिकी, पद्म पुराणे वखाणी।
मैं संबंध संक्षेपे कीधो, ग्रन्थ वधन्तो जाणी ॥ दश० ॥ ८ ॥
'पट्[1] उपवासे खांडो साध्यो, 'चन्द्रहास' वरदाई।
चन्द्र जिम कला नित्य चढती, वाधे अधिक वडाई ॥ दश० ॥९॥
गिरि 'वैताढ्य' दक्षिणश्रेणी, पुरवर 'सुरसंगीत'।
'मय' नृप 'केतुमतिनी'[2] जायी, 'मन्दोदरिय' पवित्त ॥दश० ॥१०॥
परणावी राजा 'रावण' ने, सन्मुख आणी कुंवारी।
जिम शचि इन्द्र घरे राणी, राय घरे ए नारी ॥ दश० ॥११॥
गिरि 'मेघरथ' खेचर पुत्री, रमति दीठी राय।
छए हजार वरी इकसाथे, पूरव पुण्य पसाय ॥ दश० ॥ १२ ॥
'पउमावई' पुत्रिनो तातज 'सुर सुन्दर' वडराजा।
अवर जनक सहु मिलीसाथे, आया लस्कर ताजा ॥ दश० ॥१३॥
वहु सहु मिली बोले स्वामी, वेगे विमान चलावो।
आया कटक विकट भट भारी, टले वैरी एम टलावो ॥ दश० ॥१४
'रावण' भाखे 'भामनियोंशूं' आरति कोई म आणो।
भूरी[3] भुजंगे[4] गरुड न वीहे, ए उखाणो जाणो ॥ दश० ॥१५॥
करी संग्राम सहुने जीती, नागज पासे बांधे।
नारी वचने छोडी बंधनथी, नेहघणेरो सांधे ॥ दश० ॥१६॥
'महोदर' नृप 'कुम्भ' पुराधिप, 'सुरूपनयना' राणी।

१ छ–जैन रामायणा षोडस–सोले पमा है। २ हेमवतीति जैन रामायणे। ३ बहुत। ४ सर्प।

॥ 'शूरपनखा ने'अप हरी, खर खेचर गयो संचरी
ले' घर कर्यू ए ॥ १ ॥ 'सूररजानो नन्दन,
दन. नन्दन 'सूररजा' नो मारियोए ॥ खबर
ग्नर' ऊपर दल साजीयो, साजीयो 'मन्दोदरि' ये
'लंक पयाला' नो धणी, कीधो भगनी पतिभणि
ड़ो कर थापीयोए ॥ 'चन्द्रोदर' मारयो सुणी
णी, त्राटीघणी दैव रण्डापो आपीयोए ॥ ३ ॥
ईयो, नामे "विराध" कहाईयो, कहाइयो सकल
ए । यौवननी वयपामीयो, वैरि विशोधन कामीयो.
ा ऊतावलोए ॥४॥ 'वलि' सेवा वांछतो, आणमां
तो, आतुर दूत चलावियोए ॥ 'वालि' ने पग ला-
ा अनुरागीयो, रागियो 'रावण वचन सुणावीयोए
ग्नल' थी मुजतांई, 'श्रीकण्ठ' थी तुजतांइ, तुजतांइ,
पणूंए ॥ अब अभिमान न कीजीये. जो कीजे तो
थोडामां भाखूंघणूंए॥६॥ 'वालि' कहै ए सहु खरो,
तरो, आंतरो पड्योछे मनमाहरे ए ॥ देव अने गुरु
स्तक वालिये. वालिये, नावूं हूं घर ताहरे ए ॥७॥
डरूँ, नही तो जाणूं जीम तिम करूं, तिमकरूँ
ों ए॥ जा तुजस्वामीने कहै, अबतू शीलो कां
आवी वणी सहीए ॥८॥ 'दूत' वचन जब सांभल्यो
ल्यो. परजल्यो. दलबल बहु लेई चालीयोए
आवीयो, दल बल अन्तन पावीयो. पावीयो,
लीयोए ॥ ९ ॥ द्वन्द युद्धनी स्थापना. टाले
पापना, उपायए अलगा कीयाए ॥ दोडतो

युद्धे हरावी 'यम' राजा तस बन्दी खाने ठावे ।
'रावणे' छोडाव्या' यम हरिख्ल, एम उदन्त सुणावे ॥ दश० २७॥
'लंका' लेई' किष्किधा लीधी, पुप्पक लीधू विमान ।
'सूर सुन्दर' संग्रामे हरायो, आज वडो राजान॥ ॥दश० २८॥
कोप्यो 'इन्द्र' प्रधाने निपेध्यो, देखोनीं खूं थाय, ।
'यमने' सुरसंगीतक' समर्प्यु, आघुं काढे राय ॥ दश०॥ २९॥
'सूररज' ने पुरी 'किष्किधा' प्रीतीधरी नृपआये ।
'ऋक्ष' नगरे तो 'ऋक्ष रजने', आपणड़ो करी थापे ॥ दश० ३०
भलेमूहुर्ते डिम्भ घणांसूं, 'रावण' लंका आवे ।
नारी वधावे मंगलगावे । सयणमहासुखपावे ॥ ॥दश० ३१॥
अनन्द रंग विनोद विशेषे, घर २ मंगला चार ।
'केशराज' एत्रीजी ढाले, मुख २ जय २ कार ॥ ॥दस० ३२॥

॥ दोहा रामग्रीरागे ॥

'सूररज' ने घरजाणीये 'इन्दुमालिनी' नारि ।
'वालि सुत ऊपन्यो बली, कौन सके तस वारि ॥ १ ॥
समुद्रान्त पृथिवी सहु, नित्य प्रदिक्षणादेय ।
सब विधि वातां आगलो, शूर वीर जश लेय ॥ २ ॥
पुनरपि केते आंतरे, जायो सुत सुग्रीव ।
'सुप्रभा' छे कन्या भली, शोभनीक सदीव ।
'ऋक्षरजा' घर कामनी, 'हरीकांता' सुविधान ॥
'नील' अने 'नल' नामथी, जाया पुत्र प्रधान ॥ ४ ॥
'सूररजा' 'वाली' भणी, नृप पद्वी आपन्न ।
चारित्र पाली निर्मलू, मोक्षे पहूंच्यो सन्त ॥ ५ ॥

ढाल चोथी तर्ज छठो भावनामनधरो प ।

एकदिवस 'लंका पति' क्रिडानी उपनी रति[१], उपनीरती पहूंच्यो

१ इच्छा ।

परवत मन्दरूए१ ।। 'शूरपनखा ने'अप हरी, खर खेचर गयो संचरी संचरी, 'लंकपयाले' घर कर्यू ए ॥ १ ॥ 'सूररजानो नन्दन, 'चन्द्रोदर' आनन्दन, नन्दन 'सूररजा' नो मारियोए ॥ खबर लईने राजीयो, 'खर' ऊपर दल साजीयो, साजीयो 'मन्दोदरि' ये वारियो ए ॥२॥ 'लंक पयाला' नो धणी, कीधो भगनी पतिभणि पतिभणि, आपणड़ो कर थापीयोए ॥ 'चन्द्रोदर' मारयो सुणी 'अनुराधा' त्राटीघणी, त्राटीघणी दैव रण्डापो आपीयोए ॥ ३ ॥ वनमां नन्दन जाईयो, नामे "विराध" कहाईयो, कहाइयो सकल कला गुण आगलोए। योवननी वयपामीयो, वैरि विशोधन कामीयो, कामियो कामकरण ऊतावलोए ।।४।। 'वलि' सेवा वांछतो, आणमां लेवूं इच्छतो, इच्छतो, आतुर दूत चलावियोए ॥ 'वालि' ने पग लागियो, अन्तः करण अनुरागीयो, रागियो 'रावण वचन सुणावीयोए ।। ५ ।। 'कीर्ति धवल' थी मुजतांई, 'श्रीकण्ठ' थी तुजतांइ, तुजतांइ, वाल्यूपति सेवक पणूंए।। अव अभिमान न कीजीये. जो कीजे तो खीजिये, खीजीए थोडामां भाखूंघणूंए।।६।। 'वालि' कहै ए सहु खरो, उणघरसूं नहिं आंतरो, आंतरो पच्योछे मनमाहरे ए ।। देव अने गुरु टालिये, न नमूं मस्तक वालिये. वालिये, नावूं हूं घर ताहरे ए ॥७॥ जन अपवाद थकी डरूँ, नहीं तो जाणूं जीम त्तिम करूं, तिमकरूँ कीधाथी टलसूं नहीं ए।। जा तुजस्वामीने कहै, अवतू शीलो कां वहै, कां वहै, एतो आवी वणी सहीए ।।८।। 'दूत' वचन जव सांभल्यो राजा 'रावण' परजल्यो, परजल्यो. दलवल बहु लेई चालीयोए ॥ कपिपति सामो आवीयो, दल बल अन्तन पावीयो. पावीयो, लोक उपद्रव टालीयोए ॥ ९ ॥ द्वन्द युद्धनी स्थापना, टाले उपाय ते पापना, पापना. उपायए अलगा कीयाए ॥ दोइतो

---

१ मेरु।

श्रावक भला, होईतो मति आगला, आगला, दया धर्म चित्त में लीयाए ॥ १० ॥ अस्त्र शस्त्र जो चालवे, 'वालि' तेसहु झालवे, झालवे, 'रावण' ना उमकर्म ने ए ॥ चतुर महाछे चौकसी, चोट करे अति औकसी, औकसी, हाम न मेटे धर्म ने ए ॥ ११ ॥ गिन्दुक[१] ने परे पिड़ियो, करकोटे इम भीडीयो. भीड़ीयो, चारें समुद्रे फेरीयो ए ॥ होई खिसाणो आपजी, आणे मन संतापजी, संतापजी, हारीयो 'रावण' हेरीयो ए ॥१२॥ सम्भारे अति सारजी, पूरव ना उपकारजी, उपकारजी, छोडीयो 'रावण' राजीयो ए ॥ लघुभाई स्थिर स्थापीने, राज्यतणीस्थिति आपीने, आपीने, आपण संयम साजीयो ए ॥१३॥ 'सुग्रीवे' सुविचारीयो, 'रावण' तो अधिकारियो, अधिकारीयो, 'श्रीप्रभा' परणावीयो ए । 'वाली' ऋपीश्वर संचरे, प्रतिमाधर बहु तपकरे, तपकरे, लब्धीवन्त कहावीयो ए ॥ १४ ॥ मास २ पारणूं करे, सदा सुखकारणो चरे, कारणोवरे, 'अष्टापद' गिरि आवीयो ए ॥ 'काउसग्गने' समाचरे, योग ध्यान निश्चलधरे, निश्चलधरे, जिनशासन शोभावीयो ए ॥१५॥ 'नित्यालोक' ज पुरवरु, 'नित्या लोक' नरेश्वरू, नरेश्वरू कन्यकाछे 'रयणावलीए' ॥ 'रावण' नृपजावे जाम, 'अष्टापद' आये ताम, आये ताम. आगेतो नासके चलीए ॥१६॥ दीठा तले ऋपिजी टाढो. 'रावण' रोप करे गाढो, करे गाढो, जाणूं ए पर्वत पाडें ए ॥ माथा माथे ऊपाडीयूँ, तवते पर्वत खडहड्यों, खडहड्यो, मुनिदाब्यो अंगूठड़े ए ॥ १७ ॥ त्रासकरीने[२] नामीयो. ऋपि चरणे चित्त वासीयो. वासीयो, रह्यो साधु पग अनुसरथ ए ॥ ऋपिजी ने राग न रोपजी, सहु साथे सन्तोपजी, सन्तोपजी, लब्धीपणूं देखाडीयू ए ॥ १८ ॥ साधु जुहारी युक्तीसूं जिनगुण गावे भक्ति सूं, भक्ति सूं. तब धरणेन्द्र पधारीयो ए ॥ 'अमोघ विजया' नामे भली, शक्तीरूपछे निर्मली. निर्मली विद्या-

१ दडो = २ वाली मुनिना ध्रामथी दशकधर । र व अर्थात भ्रमपाडने से उसका रावण नाम पडा =

देई सिधावीयोए ॥ १९ ॥ दश विध आराधनकरी, "वाली" ऋषी शिव गतिवरी, शिवगतिवरी, नमो २ ऋषिरायछेए ॥ चौथी ढाले चतुराई, चतुरलोकरेमनभाई, मनभाई "केशराज" गुणगायछेए ॥ २० ॥

॥ दोहा जयत श्री रागे ॥

गिरि "वैताढ्य" विशेषथी. 'ज्योती' पुर वरनाम।
विद्याधरछे" ज्वलन सिंह" राजागुण अभिराम ॥ १ ॥
नारी नामे "श्रीमती" पुत्री तो परधान,।
"तारा" तार विलोचना, कोईयन तेहसमान ॥ २ ॥
नृप "चक्रांक" तणोसही, सुत "साहसगति" जोय।
तारा दर्शनमोहियो, करे याचनासोय, ॥ ३ ॥
वानरपतिनी वांछना, तात लखिएवात।
"साहसगति" स्वल्पायुषो[1], "कपिपति" ने दीये तात ॥४॥
"तारा" उदरे ऊपन्या, अंगज आछा दोय।
"जयानन्द" "अंगद" भला, वेलीसमफलजोय ॥ ५ ॥
"साहसगति" सांसोपड्यो. झूरे रातने दीह,
अणसरजे किम पामीये. ए जिन वचननी लीह, ॥ ६ ॥
कोई दाय उपायछं, तारासंगकराऊं।
तो जीवित्व लेखेगिणूं, नहींतो सद्य मरीजाऊं ॥ ७ ॥
रूपपरावर्तनकरी, विद्यानो आरम्भ, ।
हिमवन्त परवत जई, मण्डे करवा दम्भ ॥ ८ ॥
भूचर खेचर राजवी, दलबली सबलविराज।
दिग् मात्राए चालीयो, "रावण" रूडे साज ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचवीं ॥ तर्ज—घनमाला के छोटगा ॥

"रावण" दिग्विजये चालियो, साथे सब परिवारोरे।
तेज प्रताप वाधेघणो, ऊगन्तो दिनकारोरे ॥ रा० ॥ १ ॥

(१) अल्प उमर वाला।

"लंकपायाले" आवीयो, "खर" "दूषण" मानीयोरे ।
खेचर चउद हजारसूं, साथे चलेवा वाणीयोरे ॥ रा० ॥ २॥
सरस खरो "सुग्रीवजी," चाल्यो "रावण" लारोरे ॥
अवसर ने आराधियों, उपजे प्रेम अपारोरे ॥ रा० ॥ ३ ॥
नदी "नर्वदा" आवीयो, कांठे कटक पडावोरे ।
सभा सरस भेलीकरी, बैठो "रावण" रावोरे ॥ रा० ॥ ४ ॥
अणचिन्त्यूं जलवाधीयो, "रावण" साज तणाणोरे ।
खबर करी जन आवीया, पूछे रावण राणोरे ॥ रा० ॥ ५ ॥
नगरीछे "माहिष्मती", "सहश्रांस" तिहां राजा रे ।
रायहजारे सेविये, अधिकाछे अन्दाजारे ॥ रावण० ॥ ६ ॥
सहस एक छे सुन्दरी तसु सेवक दो लाखो रे ।
पंचेन्द्री सुख भोगवे, जलसूं अति अभिलाखो रे ॥ रावण० ॥७॥
पाली बांधी पाणी में केवल नारी साथी रे ।
सेवक राखी पाखती. हर्षे रमें जिम हाथी रे ॥ रावण० ॥ ८ ॥
सुभट गया तस साहिना, सामां मार मचाई रे ।
कोई न आवे आसनो, देखी तसु सुभटाई रे ॥ रावण० ॥ ९ ॥
"रावण" जी आवी अड्या, सामो थयो शर सांधो रे ।
लडिया विविधा-युद्ध सूं, लीधो रांवणे बांधी रे ॥ रावण० ॥१०॥
आकाशथी ऊतरी चारण ऋषि इक आवे रे ।
"शतबाहु" नामें भलो. आवी सुत छोडावे रे ॥ रावण० ॥११॥
"ऋषिजी" नूं मन राखवां, मानीयो सोकरी भाई रे ।
देश अनेरो आपतां, चरण ग्रहै सुखदाई रे ॥ रावण० ॥ १२ ॥
'अन्नरण्य' नरेन्द्र सूं मित्र पणे छे वाचा रे ।
चारित्र लेसां एकठा, सगपण तो ए साचा रे ॥ रावण० ॥ १३ ॥
'दशरथ' नन्दन ने दीया, पूरी अयोध्या राजो रे ।
'अन्नरण्य' व्रत आदरी, सार्यो आतम काजो रें ॥ रावण० ॥१४॥

लात धमूकां कूटीयो, नारदे आवी पुकारयो रे ।
राजा 'रावण' पूछतां, उत्तर दीये हूं मरायो रे ॥ रावण० ॥१५॥
'राज' नगर नो राजीयो, नामे 'मरुत' कहायो रे ।
मिथ्या दृष्टि छे घणो, कुगुरुनो भरमायो रे ॥ रावण० ॥ १६ ॥
यज्ञ में हिंसाघणी, करतां में अवगणियो रे ।
विप्र विशेषे कोपीया, ते कारण हूं हणियो रे ॥ रावण० ॥ १७ ॥
'रावण' चाली आवीयो, 'मरुत' नूं मुखभंज्यो रे ।
जिनमते अधिक दृढावीयो. ऋषिजी नू मन रंज्यो रे॥रावण०१८॥
'रावण' जी सुसतोकरी, यज्ञ धणी समजायो रे ।
साचेते राचे सहूं, धर्म दया मन भायो रे ॥ रावण० ॥ १६ ॥
'नारद' ने नृपे पूछीयो, ए मत कोण चलायो रे ।
'वसु' राजाथी चालीयो, पापे पिण्ड भरायो रे ॥ रावण० ॥२०॥
'कनक प्रभा' छे कुंवरी, 'मरुत' रायनी जाई रे ।
'रावण' ने परणावतां, बांधी प्रीत सवाई रे ॥ रावण० ॥ २१ ॥
तिहां थकी नृप आवीयो, 'मथुरा' पुरी मजारो रे ।
'हरिवाहन' छे भूपति, पुत्रमधु सुविचारो रे ॥ रावण० ॥ २२ ॥
राम तणे पग लागतां, 'त्रिसुल' 'मधु' कर देखी रे ।
किहां थकी ते पामीयो, राये वात विशेखी रे ॥ रावण० ॥ २३ ॥
मधुरपणे 'मधु' बोलियो, 'चमरेन्द्रे' मुजदीधोरे ।
पूर्वभवना मित्र थी, ए उपकारज कीधो रे ॥ रावण० ॥ २४ ॥
'चमरे' कह्यो मुज आगले, धात की खण्डे जोई रे ।
क्षेत्र 'ऐरावते' भलो. 'शतद्वार' पुरी होई रे ॥ रावण० ॥ २५ ॥
राय 'सुमीत्र' सोहामणो, 'प्रभव. अछे तस मित्रो रे ।
कला अभ्यासे गुरुकने. होई पुण्य पवित्रो रे ॥ रावण० ॥ २६ ॥
घोड़ा ने खेंच्यो थको. अटवीने अवगाहे रे ।
'पल्ली पतिनो' कुंवरी. 'वनमाला' ने विवाहे रे ॥ रावण० ॥२७॥

मित्र तणो मन मोहियो, मानिनीसूं मनलावे रे ।
रहैं घणूं उदासीयूं, राम तदा बोलावे रे ॥ रावण० ॥ २८ ॥
मौन रह्यो बोले नहीं, राजा फरि २ भाखे रे ।
आरती थारा मनतणी, मत को छानी राखे रे ॥ रावण० ॥२९॥
चित्तनी आरती सांभली, हँसी नरेश्वर बोले रे ।
ए तुच्छ वातने कारणे, मित्र किस्यूं डमडोले रे ॥ रावण० ॥३०॥
मित्र तणे घरे मोकली, आवी भाखे वातोरे ।
प्राण न राखे मांगतां मुज सरसी कौण मातोरे ॥ रावण० ॥३१॥
'प्रभव' कहे हूं पापीयो, निर्लज धीट अत्यन्तोरे ।
नार न राखी मांगतां, धन्य २ म्हारो मित्तोरे ॥ रावण० ॥३२॥
आवो पधारो मातजी, बोले वारम्वारोरे ।
हूं अपराधी रायनो, फिट म्हारो अवतारोरे ॥ रावण० ॥३३॥
गुप्त रहीने निरखियो, राजा सहु विरतन्तोरे ।
राणीजी घर मोकली, छेदे कण्ठ तुरन्तोरे ॥ रावण० ॥३४॥
राजाये धसी साहिया, मित्र तणावे हाथोरे ।
करे प्रशंसा मित्रनी, हरख धरी नरनाथोरे ॥ रावण० ॥३५॥
राजाजी व्रत आदरी, पाम्यो कल्प ईशानोरे ।
चवि 'हरिवाहन' नन्दन, 'मधु' नामे प्रधानोरे ॥ रावण० ॥३६॥
मित्रभामी भवमें घणूं, 'विस्वावसु' उदारोरे ।
'ज्योतिर्मति' उपरे ऊपनो, 'श्री कुंवर' कुंवारो रे ॥रावण० ॥३७॥
तप तपी नियाणूं करी, 'चमर' हुवो हूं एहोरे ।
पूर्व स्नेहना बन्धथी, ए तुज साथे सनेहोरे ॥ रावण० ॥३८॥
देई त्रिशूल सिधावीयो, ए मुज कही अवधारोरे ।
काज करी फरी आवही, जोजन दोय हजारोरे ॥ रावण० ॥३९॥
इमनिसुणी सुखमानीयूं, मधु सूं करे सगाईरे ।
'मनोरमा' कुंवरी भली, दीधी तस परणाईरे ॥ रावण० ॥ ४० ॥

ढाल भली ए पांचवीं, पांचों रे मन भाई रे ।
'केशराज' 'रावण' तणूं, चरित्र अछे सुखदाई रे ॥ ४१ ॥

॥ दोहा सारङ्ग रागे ॥

घर छोड्यों भूपाल ने, हुवा वर्ष अढार ।
देश भलीपरे साधीने, घरने आवणहार ॥ १ ॥
फरि आयो महिमण्डले, ' नलकुबेर ' दिग्पाल ।
पुर ' दुर्लंघ्य ' तणो धणी, राज्यकरे सुविशाल ॥ २ ॥
' आगालीविद्या ' करी, शत जोजन परिमाण ।
अग्नीकोट अति आकरो, अग्नी तणो मण्डाण ॥ ३ ॥
'कुम्भकर्ण' 'घन' साथ सूं, आणी अडियो नरेश ।
अग्नीजालने देखवे, कोईयन करे प्रवेश ॥ ४ ॥
' कुम्भकर्ण ' फरिआवियो, स्वामीतणे मनसोर ।
सुभटां पगपाछापड़े, कोईयन चाले जोर ॥ ५ ॥
आरति अधिकीऊपनी, केम रहे अब लाज ।
एटले राणो रावली, पति करवाने काज ॥ ६ ॥
' रावण ' पासे दूतिका, भेजी करे अरदास ।
जो मन राखो माहरो, तो पहूँचे सब आस ॥ ७ ॥
' आसाली ' विद्यामहा, वस्यवर्तावूं आज ।
चक्र ' सुदर्शन ' सूं सही, सूंपूं सगलो राज ॥ ८ ॥
तुमसाथे मुजमनवस्यूं, इह भवे तूं भरतार ।
प्रभु तुम विच में आंतरो, सो जाणे किरतार ॥ ९ ॥
' उपरम्भा ' नी वीनती, मनमांहि अवधारि ।
उत्तरदीयो उतावलो, आतुर अतिसा नारि ॥ १० ॥

॥ ढाल छटो तर्ज-कुँवर सुभानु सुजाणजी ॥

आतुर अति जाणी करी (टेर) लघु बन्धव तब बोले रे ।
वेगे पधारो पद्मणी, तूँ इन्द्राणी तोले रे ॥ आतुर ॥ १ ॥

' रावण ' रीसवस्ये कहे, बन्धव इमकिम भाखे रे ।
पुरुषपनो तो तेहिज, परत्रियथी मन (न) राखे रे ॥आ०॥ २ ॥
कहै ' विभीषण ' दूषण, किहां हीथी होई रे ।
विष व्यवहार करे सहू, मरण तो खायाँ जोई रे ॥ आतुर ॥ ३ ॥
वात कहन्तो कामनी, वेग ही वेग म्रॅ आई रे ।
विद्यादिधी विधिकही, साधी वार न लाई रे ॥ आतुर ॥ ४ ॥
शस्त्रदीयां सुरसानीधी, कारमियां सुविशालो रे ।
नगर जीती ' नलकुबेर ' ने, लहुसाही तत्कालो रे ॥ आतुर॥५॥
'चक्रसुदर्शन' पामीयो, पाम्यो अतिघणी शोभा रे ।
' नलकुबेर ' करी आपणो, थापियो न कियो लोभा रे॥आतुर॥६॥
' उपरम्भा ' समजावीने, रायसूं प्रेम मिलायो रे ।
' रथनूपुर ' पुर ऊपरे, ' रावण ' जी चढी आयो रे ॥आतुर॥७॥
' सहश्रार ' नृप ' इन्द्र ' ज, नन्दन ने समझावे रे ।
झूठ किलेस करूं किस्युं, कोई न पूगे दावे रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
सहश्र[1] सूं नृप सेवितो, ' सहश्रांशू ' ने जीत्यो रे ।
' अष्टापद ' ने उपाडतां, वसुदा मांहि विदितो रे ॥ आतुर ॥९॥
विद्या साधन द्विपपती, गिरि वैताढ्ये चाल्यो रे ।
पौमावे[2] पति शक्तीजी, सफल तणो वर आल्योरे ॥आतुर॥१०॥
'मरुत' तणूं मुख भंजन, भंजन काल हरायो रे ।
'धनद' तणो मद मर्दन, सुग्रीव सेवकरायो रे ॥ आतुर ॥११॥
पुर 'दुर्लंघ्य' उलंघन, 'नल कुबेर' बल भंजीयो रे ।
रायां राय कहावतो, आजन जावे गंजियो रे ॥ आतुर ॥१२॥
रूपवती अति 'रूपीणी' पुत्री ने परणावी रे ।
आघृ काढीयो नन्दन, चितने लियो समजावी रे ॥ आतुर ॥१३॥
अति आकुलपणे अष्टापद, पामे छे सन्तापो रे ।

(१) हजार मनुष्य सेवा करते हैं। (२) परमावतीनो पति धरणेन्द्र शक्तिनो रावण राजाने सबल घर दियो।

धननूं कांई न विणसीयूं, प्राण तजेते आपो रे ॥ आतुर ॥१४
तात वचन नवि मानीजे, ताणे आप घणेरो रे।
धन्य हो धन्य थे तातजी. धन्य मतो ए तारो रे ॥ आतुर ॥१५
जे हणवो तस हाथेजी, सगपण केम कराय रे ?।
आज किस्यूं रे वैरतो. आगे चाली-यूं जाय रे ॥ आतुर ॥१६
'रावण' दूत पठावीयो, आयो इन्द्र ही पासे रे।
पुर घेराणूं ताहरूं, नृप अब किस्यूं विमासे रे ॥ आतुर ॥१७
भक्ती शक्ती दोई छेजी. जीव तजी रखवाली रे।
भक्ती भजो मन्मुख जाई, के लियो शक्ती सम्भालीरे॥आतुर॥१८
'दूत' प्रने 'सुरपति' कहै, रे ? तुम तो भरमाणा रे।
रांक मनावी रीझीया, पण नवि नमिया राणा रे ॥ आतुर ॥१९

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गर्व मति कर रे।

जाय तुम स्वामी ने कहीजे, गाफिल तूं जरा मति रहीजे
बाण तूं म्यारा ही सहीजे। इन्द्र इममानसे बोले. जरा दिल मां
नहीं तोले॥ भूप इम बोले मेरी जान भूप इमबोले, छत्रयों नृ
मान क्यूं सूतो. याद उण दिन ने तूंतो॥ भूप॥ १॥ टेर
दूत जब आई ने भाखे. किणी की शंक नहीं राखे, मिजाज है म
मांहै जाके, सुणी इम 'रावण पर जलियो, वचन ओ किम बो
अलीयो॥ भूप इम बोले॥ २॥ चतुरङ्गी सेन्या सिणगारि
इन्द्र पिण आयो कर त्यारी, परस्पर युद्ध मंड्यो भारी. जोधां व
जोर बाण छूटे. अरि उर आग ही ऊठे॥ भूप इम बोले॥ ३
आवीयो 'विभीषण' बलियो, मारो ही दल तो खल बलियो. इ
तब कोपे पर जलीयो. दोनों का जोर है जाजा, 'रावण' व
सुधरेला काजा॥ भूप इम बोले॥ ४॥ सेन्या हटी 'रावण' ह
देखी. सामने आयो विवेकी. निकालूं अब इणरी सेखी. सराम
बाण मेह वूठा. तुरत ही इन्द्र पग छूटा॥ भूप इम बोले॥ ५

ढाल प्रक्षेप तर्ज--पूर्ववत ।

ाकजहो आयो महिपति, माची नाम लड़ाई रे ।
ेनानी ' रावण ' तणो, भिड़ियो आगे आई रे ॥ आतुर ॥ टेर ॥
ईवे कांईक राक्षसां, पाछा पैर हटाया रे ।
'रावण' राजा मोकल्या शूर सुभट जे आया रे ॥ आतुर ॥ २ ॥
'वज्रवेग' 'हस्त' 'प्रहस्त' जी, 'मारिच' उदभयवज्रो रे ।
'शुक्र' 'घोर' 'सारण' 'गगन'' जी, 'ज्वलन' 'महाजय' 'जवरोरे ॥३॥
ए 'द्वादश' ही राजवी, वानर राक्षस पूरा रे ।
आवी 'देवन' सूं अड्या, शूर भागी गया दूरा रे ॥ आतुर ॥ ४ ॥
फौज भागी लखी इन्द्रजी, भेज्या नीका राजा रे ।
'मैघ' 'मालि' 'तडितांग' जी, 'ज्वलन तक्ष' अति ताजारे ॥आ०॥५॥
'सज्वर' 'पाचकसीद' जी, आया फौज ने आगे रे ।
ए 'पट्' ही धीरज धरे, पिण धीरज नहीं जागेरे ॥ आतुर ॥ ६ ॥
सहन सक्या सुरतेगने, वानर राक्षम भाजे रे ।
'महेन्द्रसेन' हाकोकरे, भाज्यां थी न रहे लाजेरे ॥ आतुर ॥ ७ ॥
महेन्द्र सेन वानर वंशी, राक्षस ने वड मित्रो रे ।
'प्रश्न कीर्ति' सुन तेहनो, पोखे प्रेम पवित्रो रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
मार हटाया खेचरु, अन्यदेव भट आवे रे ।
घेर लीयो 'प्रश्नकीर्ति ने, तव माल्यवान' सुत धावेरे ॥ आ ॥९॥
'श्रीमाली' नामे भलो, 'रावण' रायनो काको रे ।
बाणे अम्बर छाइयो, सुर उडिया जिम फाको रे ॥ आतुर ॥१०॥
'सुरस्थम्भन' 'सुरपति' तणो, भाणेजो चल आवे रे ।
'सिखकेशी' दण्डो ग्रही, कनक प्रवर वहुदावे रे ॥ आतुर ॥११॥
मारी कीधा पाधरा, 'माल्य' भणी जश दीधो रे ।
'सुरपति' सुण आतुर थयो, आप चढण दिल कीधोरे ॥ आ १२॥
'इन्द्र' अनुज 'जयवन्तजी', नमी चरण इम दाखे रे ।
जे अंकुर नखछेदीये, फरसीवल किम राखे रे ॥ आतुर ॥१३॥

॥ ढाल मूलगी ॥

र चढी रण आवीयो, रेणु रही नभ छाहीरे ।
त वखाणी ग्रन्थ में, तेम हुई लढाईरे ॥ आतुर ॥ २० ॥
र्यो 'इन्द्र' नरेन्द्रजी, जीत्यो 'रावण' राजा रे ।
य २ कार हुवो बहु, वाग्या जशना वाजा रे ॥ आतुर ॥ २१ ॥
ावण' 'लङ्का' आवीयो, सयण तणे मन भायोरे ।
न्द्र' दीयो कठ पिंजरे, आप कीयो फल पायो रे ॥ आ०॥२२॥
सहस्रार' नृप आवीयो, 'रावण' सूं अरदासोरे ।
ुत्रभिक्षा मुज आपीये. थापो करी निज दासो रे ॥ आ० ॥२३॥
ाय कहै सुण खेचरा, 'इन्द्र' करे ए कामो रे ।
नगर बुहारे नित्य को, आछो राखे गामो रे ॥ आतुर ॥ २४ ॥
सघली वात मनावीयो, छोडीयो 'इन्द्रज' राय रे ।
नीचूं काम करन्तजी, आरती में दिन जाय रे ॥ आतुर ॥ २५ ॥
'साधु' समीपे पूछीयो, पूर्वभव 'इन्द्र' ही आपो रे ।
नीच कर्म करवूं पडयूं, कोण कियो थो पापो रे ॥ आतुर ॥२६॥
साधु कहै नृप सांभलो, पूर्वभव भाखूं एहोरे ।
'अरिजय' पुरनो भूपती, खेचर 'मणिगुण' गेहोरे ॥ आतुर ॥२७॥
'ज्वलनसिंह' घरे नारीजी, 'वेगवती' सुविचारी रे ।
'अहिल्या' नामे सुता अछे, मात पिता'ने प्यारी रे ॥आतुर॥२८॥
'स्वयम्वर मण्डपे' तेहने, राय घणा मिली आवे रे ।
'आनन्दमालि' ने कन्याजी, वरमाला पहिरावे रे ॥ आतुर ॥२९॥
नाम 'तडितप्रभ' तूं तवजी. खीज्यो मनही मजारो रे ।
'आनन्दमालि' साथेजी, वहतो अतिघन खारो रे ॥ आतुर ॥३०॥
'आनन्दमालि' चारित्र ग्रही, करतो उग्रविहारो रे ।
ध्यानारूढ मुनीश्वरु, देख्योते इकवारो रे ॥ आतुर ॥ ३१ ॥
दीधो परिषह आकरो, साधुनो चूक्यो ध्यानो रे ।
सिंह सारिखो ना हुवो, हुओ श्वान समानो रे ॥आतुर॥३२॥

सुधारचा भवदीय ॥ हनु० ॥ खट् दर्शन में जोय ॥ हनु० ॥
ए सम अवरन कोय ॥ हनु० सु० ॥ १ ॥
सेवक 'हनुमन्त' सारिसोरे, 'राम' सरीखोरे राय ।
हुयो नहीं होसे नहीं, आजन कोई देखाय ॥ हनु० सु० ॥ २ ॥
 ; । ए बोल छे, थारो कपि उपकार ।
प्राण दियां पणना वले, शेष तणो शिर भार ॥ हनु० सु० ॥३॥
सेवक ना ए बोल छे, वानर माहरो नाम ।
शाखा थी शाखा जई, पावूं सही विश्राम ॥ हनु० सु० ॥ ४ ॥
सायर जल उलंघियूं, बाली[१] नगरी लङ्क ।
'राम' राय परसादथी, कीधा काम निशंक ॥ हनु० सु० ॥ ५ ॥
दिन-करनी पर दीपतो, पुर 'आदित्य' प्रधान । हनु०
राय 'प्रहल्लाद' सुहामणो, पाले जिनवर आण ॥ हनु० सु० ॥६॥
'केतुमति' महिमावती, सत्यवती घरनार । हनु०
प्रीतिवति लीलावती, शीलवती संसार ॥ हनु० सु० ॥ ७ ॥
शुभसुपनो अवलोकीयो, विनवीयो जई राय । हनु०
रायकहे रलियामणो, नन्दन उपज्यो आय ॥ हनु० सु० ॥ ८ ॥
शुभ वेला सुत जाईयो, गुडिया गुहिर निसाण । हनु०
घर २ वार वधामणां, घर २ अति मण्डाण ॥ हनु० सु० ॥ ९ ॥
बारस में दिन थापीयो, पवनंजय तसु नाम । हनु०
चन्द्र कला जिम वाधतो, वाधे सुत अभिराम ॥हनु० सु० ॥१०॥
बहोत्तरी बत्रीशजी, चार चार तनु मांहे । हनु०
सात अठार परिहरे, पुत्र पनो-तो प्राहे ॥ हनु० सु० ॥ ११ ॥
पुरवरछे 'माहेन्द्रजी', राय 'माहेन्द्र' उदार । हनु०
'रिदय सुन्दरी'-सुन्दरी, सुन्दर ने सुविचार ॥ हनु० सु० ॥१२॥
पुत्र एक शत ऊपरे, पुत्री हुई एक । हनु०
नामे 'अंजना' सुन्दरी, सकल गुणे सुविवेक ॥ हनु० सु० ॥१३॥

(१) पाड़ी इति पाठान्तरे ।

काय ।। ब्रह्मचारीजी ।। रांक हाथे जिम रतन ही रे लाल, कहां लगे ठहराय ।। ब्र० सी० ।। १० ।। पांच-काम गुण को तजे रे लाल, सदा रहे चित्त शान्त ।। ब्रह्मचारीजी ।। वाड़ नवनो ए कोट छे रे लाल, सीधो है शिवपुर पन्थ ।। ब्र० सी० ।। ११ ।। विप है विविध प्रकारना रे लाल, जंगम स्थावर जान ।। ब्रह्मचारीजी ।। पिण विपय-समो विपको नहीं रे लाल, हुवे अनन्ती हाण ।। ब्र० सी० ।। १२ ।। जुगवाहु-मयणरेहा-कारणे रे लाल, मणिरथ घाल्यो घाय ।। ब्र० ।। सीता ने हरतां थकां रे लाल, रावण-लंक-गमाय ।। ब्र० सी० ।। १३ ।। वाड़ सहित व्रत जे धरे रे लाल, शीयल व्रत सुख दाय ।। ब्र० ।। देव-असुर-सुर-तेहने रे लाल, नित्य प्रते नमन कराय ।। ब्र० सीता ।। १४ ।। 'धूलचन्द' जे धारसी रे लाल, व्रत यह दुद्धर धार ।। ब्र० ।। पाले आराधे शुद्ध भावसूं रे लाल, हो जावे खेवो पार ।। ब्र० सी० ।। १५ ।।



मावित्रोने वाहालीखरी, वीरानो वड़मान। हनु०
भोजाई भगिनी महा, आदर मेरु समान॥ हनु० सु०॥ १
पुत्रीने परणाववा, यौवनवन्त कुँवार।
प्रधाने प्रगट कीया, जोई केई हजार॥ हनु० सु०॥ १
वरतो दो मन मानीया, सगला मांहि देखी।
'पवनंजय' 'प्रल्हाद' नो, विद्युत्प्रभ सुविशेखी॥हनु० सु०॥
अष्टादशवर्षान्तरे, विद्युत्प्रभ शिवजाय।
प्रत्यक्षथयुछे आऊखो, कन्याकेम देवाय॥ हनु० सु०॥ १७
'पवनंजय' चिर आऊखे, पवनंजय परिमाण।
पुत्री 'पवनंजय' भणी, देवाकही राजान॥ हनु० सु०॥ १
खेचर मिलीया एकठा, नंदीश्वरनी जात।
प्रार्थना 'प्रह्लादनी', माने सगली तात॥ हनु० सु०॥ १९॥
आजथकी दिन तीसरे, मानसरोवर जाय।
विवाह करीजे वेग सुं, मेलोसहु समुदाय॥ हनु० सु०॥ २
'पवनंजय' कहे मित्र सुं, ते दीठी साचाल।
रम्भाथी अधिकी सही, रूपे झाक झमाल॥ हनु० सु०॥ २
जे-हवो आंखे देखिया, लहिये चैन अत्यन्त।
तेहवो वाचाएकरी, कोण कहै सुण मित्त॥ हनु० सु०॥ २
'पवनंजय' बोल्योहसी, वासरताएदूरी।
हूं जाणुं हमणांजाई, जोई होऊं हजूरी॥ हनु० सु०॥ २३
वाल्हाना मेलाविषे, घड़िते एक दिन थाय।
दिनतो जई मासा मिले, कहोरे केम रहिवाय॥ हनु०सु०॥२
मित्रकहै सुण स्वामीजी, आरती दूर निवार।
रात रहस्य पणेजई, देखाडुं तुजनार॥ हनु० सु०॥ २५
'पवनंजय' कुमारही, चाल्यो मित्रसमेत।
आयो अति उतावलो, नारी निरखण हेत॥हनु० सु०॥२

जिम २ निरखे नारिने, तिम २ पावे चैन ।
दैव वहै अति आकरो, सुखमांहि दुख दैन ॥ हनु० सु० ॥२७॥
बैठी सप्तमी भूमिका, वारुवात विनोद ।
रङ्ग मांहि राचीथकी, करती अधिक प्रमोद ॥ हनु० सु० ॥ २८ ॥
'वसन्ततिलका' कहै सखी, कुँवरी तुजवड़भाग ।
'पवनंजय' पतिपाईयो, जेहनो जशू सोभाग ॥ हनु०सु० ॥ २९ ॥
'मिश्रकेशी' कहै सखी, केम प्रशंस्यो ऐह ।
'विद्युत्प्रभ' वरतो भलो, जेहनो अन्तिम देह ॥ हनु० सु० ॥३०॥
'वसन्ततिलका' कहेफरी, भोली जाणे न भेद ।
'विद्युत्प्रभ' स्वल्पायुषी, तेथीनसरे उमेद ॥ हनु० सु० ॥ ३१ ॥
अपर कहे आवात में. तूँ नवि लिखे लिगार ।
चन्दन थोड़ो ही भलो, नहीं विषकेरो भार ॥ हनु० सु० ॥ ३२ ॥
'पवनंजय' परिणाम सूं, तातो थयो तिवार ।
कुँवरी तो वरजे नहीं, जोई रही वातां प्यार ॥ हनु० सु० ॥ ३३ ॥
काढी खड्ग खड़ो रयो, ए दोई संहार ।
करूँ सही उतावलो, वोले राज कुँवार ॥ हनु० सु० ॥३४॥
मित्र कहै प्रभुजी सुणो, नारी अवध्य कहाय ।
तिण में निर अपराधणी, कहो प्रभु केम हणाय ॥हनु० सु०॥३५॥
कुँवरीए निन्दा नविकरी, ए कोई ले लवाड़ ।
तुमतो गिरुवा चाहीयो, पृथ्वीनाप्रतिपाल ॥ हनु० सु० ॥ ३६ ॥
फरिआण्यो निजथानके, ते कहै न करूँ विवाह ।
प्रथमज कवले मक्षिका, आयां कुण उच्छाह ॥ हनु० सु० ॥ ३७ ॥
रांधतहीज कुहीयो, ते अन्ननी न मिठास ।
पछी कीसी परे पामिये, पिरसन्तां शावास ॥ हनु० सु० ॥ ३८ ॥
मोतीत्रूट्यां ना मिले. त्रट्यां नामिले नेह ।
ते माटे धुरही थकी, तूटणमतिद्यो तेह ॥ हनु० सु० ॥ ३९ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज़-नवीन रसीया—मत्री श्री चौथमलजी म० कृत-
म्हांने मिली कुपातर नार, खबर म्हांने पड़गई सारी आज ॥ टेर ॥
में तो जाणतो छे मुजप्यारी, होसी नहीं हरगिज दुजारी।
निजरां देखी आज, खूंटी पर धरदी सारी लाज ॥ म्हांने० ॥१॥
एवातां सुपने नहीं जाणी, करसी आ अपने मन मानी।
सारो इणरो आय गयो है, मन मांही लो माज ॥ म्हांने ॥ २ ॥
इसी जाणतो जो मैं पैली, अधविच में आ गोतो देली।
तो नहीं करतो प्यार, नार आ मिली अवगुण की जाज॥म्हांने॥३॥
में भोलो ओ काम न जान्यो, धोलो २ दूध पिछान्यो।
पडी न मांने तोल, पोल आ निकली कीयो अकाज॥म्हांने॥४॥
कोई किणरी हुई न नारी, चौथमल्ल कहै समज्यो सारी।
मने चेतायों पेली गुरुजी, 'नथमलजी' महाराज ॥ म्हांने॥५॥

॥ ढाल मूलगी ॥

मित्र कहे इम किम हुवे, आपण बोल्या बोल।
न पले तव सहु ये कहै, फिट् २ फूट्या ढोल ॥ हनु० सु० ॥ ४० ॥
सांतक में वेतालजी, उठाइया अजाण।
भङ्ग न पाड़े रङ्ग में' सज्जन नूं रे सयाण ॥ हनु० सु० ॥ ४१ ॥
सायरे शिवने आपीयूं, विपतो विश्वावीस।
नीलकण्ठ नामे रहै, अलगूं न करे ईश ॥ हनु० सु० ॥ ४२ ॥
चौंरी चढियो आय के, मित्रतणी मतिमान।
विवाहतणी विधि साचवी, नाम तणे अनुमान ॥हनु० सु० ॥४३॥

॥ ढाल प्रक्षेप तर्ज-मल्ली जिन याल ब्रह्मचारी—धूलचन्दजी कृत ॥

पवनजी तोरण पर आयारे २ सब सखियन रही देख अचम्भे आनन्द अतिपाया ॥ टेर ॥
झीणेश्वर सूँ नारीसधवा, धवल मङ्गल गाया।
आनन्द रङ्ग विनोद विशेषे, हुवा चित्त चाया ॥ पवनजी ॥ १ ॥

इन्द्रतणी पर रूप अनूपम, दीसेसवाया ।
निरखन्तां धापे नहीं नयणां, सयणां मनभाया ॥ पवनजी ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

मयङ्कल मोटा मलपता, अति ताजा तो खार ।
दीधा वरने दायजे, मणि मोती वरहार ॥ हनु० सु० ॥ ४४ ॥
लाडीने लेईकरी, घरे आयो प्रह्लाद ।
सप्तभूमिसुहामणो, दीधो वर प्रासाद ॥ हनु० सु० ॥ ४५ ॥
हुंसे मनाची हरख सूं, उचारी अखियात ।
भायग भोग-वियेसही, ए निश्चय विधिवात ॥ हनु० सु० ॥४६॥
ढाल भणी ए सातमी, 'पवनंजय' परणेत ।
'केशराज' सुखपामिये, जो होवे चित्तचेत ॥ हनु० सु० ॥ ४७ ॥

दोहा खम्भायती रागे

चोल कुवोलन वीसरं, सालसमां सालन्त ।
क्षणहि रति नविऊपजे, आगति घणी आलन्त ॥ १ ॥
नजर न मेले नाहलो, ऊपजे अति उचाट ।
आवटणूं लागेघणूं. विरहै वांकी वाट ॥ २ ॥
मात पितानी लाडली, सुसरानी शुभ दीठ ।
कंतमया विन कामिनी, ओछे देखे नीठ ॥ ३ ॥
'पवनंजय' नी पदमनी, परममहा सुखकारी ।
नाह निस्नेह निपटही, मेली माथे मारि ॥ ४ ॥

ढाल आठवीं तर्ज–भटियानी

मेली माथे मारि, 'पवनंजय' की नारी,
आरति आकरीए, आणे सा खरीए ।
लांबा लीए निस्सास, वासर जाय निराश,
दैवकिसो कीयोए, फाटे छे हीयोए ॥ १ ॥
दिन वातां में जाय, रयणी दुभरथाय,
विरह वियोगणीए, सखी हू योगणीए ॥

(ढाल प्रक्षेप तर्ज-खोटो लालचीयो, स्वा. श्री चौथमलजी म. कृ

सखी भणी कहे सुन्दरी, म्हारो मनमोहन भरतार सखि किम रूठोए
में जानूं जिम करतार, कलङ्क दीयूं झूंठोए ॥ टेर ॥
कुन भरमायो पापीये, कोई चुगलखोर चण्डाल । सखि०
म्हारे इणभव रो सही है हिवडा केरो हार ॥ सखि० ॥ १ ॥
विगर गुन्हैही छोडदी, म्हारी सगी नणद रो वीर । सखि०
हाय हिवे हूंस्यूं करूं, म्हारे लग्यो कलेजे तीर ॥ सखि० ॥ २
शीलवती सा सुन्दरी कांई बदन कीयो दिलगीर । सखि०
नीर झरे दोऊं आंख में, कांई भीनो दिखनी चीर ॥ सखि०॥३
विन इजत सूं जीवनो, कांई मरूं कटारी खाय । सखि०
वसन्तमाला इम धीरपे, कहै 'चौथू' 'नाथ' सुपसाय ॥ स० ॥४

ढाल मूलगी

बोली सखी 'वसन्त तिलका' निकट वसन्त, बाइयन रोइयेए, काठो होइयेए ॥ २ ॥ सघला दिन एक रूप, नविजावे एवं विरूप, फरिब्राहुडसेए नेह जोडसेए ॥ मांय बापते वार समझावे विचार, त्रियसूं हठइस्यए, पुत्र करें किसुंए ॥ ३ ॥ उत्तर न आपे जाम, छाना रहिया ताम, ताणि न तोडियेए, तूटथुं जोडियेए॥ ढिलूं मूँकीयू काम आप ही आवे ठाम, तूटे खेचीयूए, अधिकूं इच्छीयूए ॥ ४ ।

क्षेपक तर्ज अजनारी

पियरथी आवी रे सूखडी, वसन्त माला कर मोकली सोयतो ।
लेकर स्वामी आगे धरी, गावता गन्धर्व ने आपी छे तोय तो ॥
वस्त्र आभूषण-मोकल्या, जाणूं म्हारा स्वामीने शोभसी अंगतो ।
वस्त्र फाडी ने कटका कर्या, आभरण लेईने आपींमातङ्गतो ॥
सती में शिरोमणी अंजना ॥ टेर ॥
आणा घणा पाछा मोकल्या, इणरे आणे आवीयो वडवीर तो ।
अंजना-कहे नवि-वालीये, वस्त्र आभूषण मोकलिया चीरतो ॥

स्वामी ने मन मान्या नहीं, पीयर आवी हूं सूं करूं वात तो।
बन्धव पाछो हो थे वलो, मात पिता दुःख धरे दिन रात तो। सती।
अंजना बैठी रे गोखमें, पवनजी तुरीय खेलावण जाय तो।
आवतां जावतां निरखती, तिम २ हर्ष वधे हियमांयतो॥
पवनजी कोपे रे पर जल्यां, अंजना आणे छे अति घणी प्रीत तो।
जाणे रे नार नी हालसी, गोंखो आडी रे चुणाई छे भींततो। स.।
पांच से गांव पोते लिया, राय राणी वेहूं वर्जे छे पूत तो।
अंजणा सती रे सुलक्षणी, एहने सूंपीये निज घर सूत तो॥
म्होटा रे कुलतणी ऊपनी, राजा हो महेन्द्र तणी वहु लाज तो।
अंजना आदर कीजीये, यूं कहे केतुमति, राय-प्रहलाद तो॥ स.॥

ढाल मूलगी

आयो दूत उदार, 'रावण' नो सुविचार, भाषित कहे भलोए, प्रभुजी सांभलोए॥ 'वरुण' न माने आण, राखे अधिक गुमान, 'रावण' रावलोए, मिलीयो छे घणोए॥ ५॥ 'वरुणसुत सुविशाल, बांधिलीया तत्काल, 'खर दूषण' खराए, खेचर आकराए. तेड्यो 'रावण राय', खेचर मिलीया आय, प्रभु तुमही चलोए काम उतावलोए॥ ६॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृ० ढाल प्रक्षेप तर्ज–खबर नहीं है जुग में

दूत 'दशमुख' नृपनो आयोरे॥२॥ युद्धकरन के हेत राय प्रहलाद ने बुलवायो सहथ पुत्रां का पिता वरुण महा अभिमानी राजा।
रावण सन्मुख राड करण को, गयो बजत बाजा॥ दूत॥ १॥
चार प्रकार चमुले चालो, दूत इसी दाखे।
सुनकर राजा सन्नद्ध बद्ध हुय, सुभटों ने भाखे॥ दूत॥ २॥
हो सुभटों जल्दी से सारा, होवो हूंसीयार॥
थे म्हारी शक्तिने जोइ जो, मैं जोस्यूं थांरी॥ दूत॥ ३॥
सुन कर सुभट घणा सूंसाया, वरुण कोन वपूरो।
थो थों चनो बजे जगमांहै, कसविन जेम कपूरो॥ दूत॥ ४॥

इन पर करत ओ गाज सुभट सब, कूदे नवतालों ।
'चौथमल्ल' नथमाल मुनि शिष्य, जोडी ए ढालो ॥ दूत ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

तात निवेदी जाम, चाल्यो कुँवर जाम, 'पवनंजय' जयोए, आनंद अति थयोए ॥ हयगय रह अधिकाय, मेली जनसमुदाय, कुंवर चालीयोए, हरखे हालीयोए ॥ ७ ॥ निसुणीए विरतन्त, कटके चलन्तोकन्त, दर्शने सा चालीए, आवे उतावलीए॥ पञ्चाली जिम जोय, आगे ऊभी होय, पलकन पालटेए, प्रिय जोवूं घटेए ॥८॥ पड़वानो जेमचन्द दुर्बलदीसेमन्द, मांसन देखीयेए, चाम विसेखीयेए ॥ लुखी तालक देखाय, नहींरे विलेपनकाय, सादीसाटिकाए, तिमही ललाटिकाए ॥ ६ ॥ अण खाया तम्बोल, धूंसर अधर अमोल, काया दूबलीए, शीथलपडी वलीए ॥ नयन जल में झूली रही छै तन मन भूली, नारी निरखतोए, चाल्यो हरखतोये ॥१०॥ धसि लागी पतिपाय, सखी कहै खगराय, दासी तुमारडीए, चित्तहमारडोए॥ तिरस्कारीछे एह, में जाणीधुरेछेह, मानन मांगतांए, लहिए लागतांए ॥ ११ ॥

मन्त्री श्री चौथमलजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज-परस्नान से उतरी परी

पवन अंजनीपर रीसकरी इणविरिया कां निजरपरी ॥ टेर ॥
आपापन व्यभिचारण नारी आडी क्यों आई इण वारी
में जगरनकारन राह पकरी प० १ में देख्यो पापण को मूंडो
वणसी आगे कारज भूंडो इण पर उणरी बुद्ध विगरी प० २
पियमन तिय की परवाह नांही सातिय पिय को लेवे बधाई
या तिय पतिभर्त्ता सखरी प० ३ सति अंजना की मति मोटी
धन्यवाद है कोटान कोटी शिष्यनाथ चोथु उचरी प० ४

ढाल मूलगी

फरि आवी घरमांहि, धरणिये पडि श्राहि,
अवला नामथीए, अरु परीणामथीए ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रमीया–स्वामी श्री चौथमलजी म० कृत

म्हारा प्राण पतीजी प्रेम केम दीयो ऊंचो मेली रे ॥ टेर ॥
पंचां री साखी कर पियु मुज, लारे लेली रे ।
कांई कीयो मैं चूक करी मने, आज अकेली रे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
चाय नहीं म्हारे और चाहूं मैं दरसण डेहली रे ।
तूं जाणे जूं जाण म्हारे तो तूंहिज बेली रे ॥ म्यारा ॥ २ ॥
मन मेलारी मालूम म्हांने पडी न पेली रे ।
सतगुरु पासे जाकर मैं तो वनती चेली रे ॥ म्हारा ॥ ३ ॥
'नाथ नो चौथू' कहत जोधाणे, सति अलबेली रे ।
पियू तणी अपमानित तदपि नवल नहेली रे ॥ म्हारा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगो

दलवलनो विस्तार, चाल्यो राजकुंवार, मानसरोवरुए, वासो अनुसरुए ॥ १२ ॥ मंदिर रचना कीध, पलंकडे परसिध, सूतोसुंदरुए भोग पुरुन्दरूए ॥ दीनपणे कुरलन्त, पंखिणी शब्द सुणन्त, मनसूं जागीयोए, राय अनुरागीयोए ॥ १३ ॥

१. ढाल प्रक्षेप तर्ज नाथ कैसे गजको फन्द छुडायो

चकवी यों क्यूं शोर मचायो, क्यों चहचाट लगायो ॥ टेर ॥
गति नहीं कारण दीसत रनमें, जिससे जिय घबरायो ।
विन कारण ही क्यों कुरलावे, पूरो पतो नहीं पायो ॥चकवी ॥१॥
सुनकर सज्जन' यू मन सोचे, आछो अवसर आयो ।
जिनसे सतिको यह अपनावें, ऐसो रङ्ग लगायो ॥ चकवी ॥२॥
चकवी इण विद्ध शोर मचायो ॥ टेर ॥
चकवी कहती चतुर सुनो तुम, चित्त किनको चमकायो ।
कलंक लगाकर कीया विछोहा, जिनको विरहफल पायो ।च०।३।
सती अंजनापे रंज को कारण, सगलो भेद बतायो ।
ऐसो ढङ्ग रङ्ग दिखलाकर पवन केऽनङ्ग जगायो ॥ च० ॥ ४ ॥

---

१ सती अञ्जना से । नोट–"सती अञ्जना" कविवर पण्डित मुनि श्री चैनमलजी महाराज रचित है ।

वासर माणे भोग, रजनिनोरे वियोग.
ते कुरले घणीए, वचने दयामणीए ॥
जेहने दिन ने रात, एकज सरखी जात,
ते केम जीवहीए, आरती अति वहीए ॥ १४ ॥
परण्या पछीरेएह, साथे कीयो नहीं नेह,
सतिय शिरोमणीए, सादीधी अवगणीए ॥
जो आवीथी चाल, तोहूँ गयो मुँह टाल,
बोल सन्तोपनोए, न कहिवाणो घणोए॥ १५ ॥
आज लगेहती आश, अब तो हुई निराश,
आजमरे सहीए, एतो मे लहीए ॥
नारी हत्यानूं पाप, महोटो छे सन्ताप,
मुजने लागसेए, अपजश जागसेए ॥ १६ ॥
मित्र 'प्रहसित' बोलाय, मननी बात सुणाय,
पूछे सूं करूंए, मित्र कहै खरूंए ॥
नारी हुई निराधार, मरत न लावे वार,
साचो मोचणोए, मान विमोचणोए ॥ १७ ॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज-हांक मतिकर गर्व दियाना ॥

हां ! काम में खोटो करीयो, लोक लाज से जरा न डरियो
द्वेप सती के ऊपरे नाहकही धरीयो रे ॥ टेर ॥
मात पिता मुजने समजायो. तो पिण में नहीं रस्ते आयो ॥
मित्रतणी नहीं बात मान में, उलटो लड़ियो रे ॥ काम में ॥१॥

१ सती अञ्जना से—चैनमलजी महाराज रचित है ।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए। मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमजार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए ॥ पोयणे मारी हेम, सा तवदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे वल वलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोडतीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ राखन्त, धाई मल भाखन्त, जीवन्तां सहुए, सुख हो से वहुए ॥ ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धसीतस नारी ग्रहाय, काढे जेट लेए, भाखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे "प्रहसित" पवित्र, स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ भूंडा ? एसी हासी, कुंवरी कहै उदासी, नाम न मुज गमेए, दर्शन किम रमेए ॥ वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अलगोही रहैए, खार घणूं वहैए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी, सुण्या अपूरब बोल ।
　　बोली उत्तर में, अहो, सुण रे फूटा ढोल ॥१॥

१　　ढाल प्रक्षेप तर्ज कायथडा

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो, हांरे लम्पटी के थारो आगयो काल रे पापी म्हारा पिया परदेशां में ॥ टेर ॥
हांरेक लम्पटी वाळूं थारी जीभडी, हांरेक लम्पटी थारी चिराऊं खाल रे पापी म्हारा पिया० ॥ १ ॥ हांरे लम्पटी में ऐसी नहीं कामनी, हांरे लम्पटी राचूं थारे फन्द रे पापी म्हारा पिया० ॥२॥ हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने, हांरे लम्पटी गिणूं न इन्द्र नरेन्द्र रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल रही, लखली पवन कुंवार ।
　　प्रेम लायके पुनरपि बोल्यो वचन विचार ॥१॥

१ सती अंजना से ।

ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

ोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

तणो एदोप, करवो राग न रोस,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
नीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—पन्नजी मूंडे बोल

घर आयोए २ । सुन सती अंजना मान वढायोए ॥ टेर ॥
२ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए ।
२ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद वढायोए ।
आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
ी सती तब निज आसन से, वदन कमल विकसायोए ।
ल दुवार जोड कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गवरल ईशरजी केये तो०॥

आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो बलि-
ी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
झट ऊठी शीष नमायो, पियु दरशन से मन विकसायो,
नो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय बिछायो काज
ारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्हारो
ो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्हारी

ती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए। मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमजार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए ॥ पोयणे मारी हेम, सा तबदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे बल बलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोड़तीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ रायन्त, धाई भल भावन्त, जीवन्तां महुए, सुख हो से बहुए ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धर्मीतम नारी ग्रहाय, काढे मारखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे " " स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ कुंवरी कहे उदासी, नाम न मुज गमेए, वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अल वहेए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी,
बोली उत्तर में, अहो,

१ ढाल प्रक्षेप

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो,
काल रे पापी म्हारा पिया
हांरेक लम्पटी बाल्रूं थारी
म्हाल रे पापी म्हारा पिया० ॥ १
कामनी, हांरे लम्पटी गचूं थारं
हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने,
रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल
प्रेम लायके

१ सती अंजना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

दोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

कर्म तणो एदोष, करवो राग न रोम,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
कामनीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–पन्नजी मृढे बोल

पियू घर आयोए २। सुन सती अंजना मान बढायोए ॥ टेर ॥
बोल २ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए।
देख २ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
सुण्यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद बढायोए।
पियु आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
ऊठी सती तब निज आसन से, वदन कमल विकसायोए।
खोल दुवार जोड कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

३ ढाल प्रक्षेप तर्ज–गवरल ईशरजी फेवे तो०॥

भले आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो बलिहारी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
सती झट ऊठी शीप नमायो, पियु दरशन से मन विकसायो, अपनो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय बिछायो काज सुधारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्हारो मारो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्हारी

---

१ सती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए। मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमजार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए॥पोयणे मारी हेम, सा तवदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे चल वलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोडतीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ राखन्त, धाई भल भाखन्त, जीवन्तां सहुए, सुख हो से वहुए॥ ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धसीनस नारी ग्रहाय, काढे जेट लेए, भाखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे "प्रहसित" पवित्र. स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ भूंडा ? एसी हासी. कुंवरी कहै उदासी, नाम न मुज गमेए. दर्शन किम रमेए॥ वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अलगोही रहैए, खार घणूं वहैए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी, सुण्या अपूरब बोल।
बोली उत्तर में, अहो, सुण रे फूटा ढोल ॥१॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज कायथडा

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो, हांरे लम्पटी के थारो आगयो काल रे पापी म्हारा पिया परदेशां में ॥ टेर ॥

हांरेक लम्पटी वाल्हूं थारी जीभडो, हांरेक लम्पटी थारी चिराऊं खाल रे पापी म्हारा पिया० ॥१॥ हांरे लम्पटी में ऐसी नहीं कामनी, हांरे लम्पटी राचूं थारे फन्द रे पापी म्हारा पिया० ॥२॥ हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने, हांरे लम्पटी गिणूं न इन्द्र नरेन्द्र रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल रही, लखली पवन कुंवार।
प्रेम लायके पुनरपि बोल्यो वचन विचार ॥१॥

१ सती अंजना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

दोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

कर्म तणो एदोष, करवो राग न रोस,
कीयो आपणोए, इह-पर भव तणोए
कामनीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–पन्नजी मूंडे बोल

पियू घर आयोए २। सुन सती अंजना मान वढायोए ॥ टेर
बोल २ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए।
देख २ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
सुण्यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद वढायोए।
पियु आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
ऊठी सती तव निज आसन से, वदन कमल विकसायोए।
खोल दुवार जोड़ कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

३ ढाल प्रक्षेप तर्ज–गवरल ईशरजी कैये तो०॥

भले आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो म
हारी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
सती झट ऊठी शीष नमायो, पियु दरशन से मन विकमा
अपनो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय विछायो व
सुधारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्ह
सारो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्ह

१ सती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से

धन्य घडी धन्य भाग के लाज वधारणा हो ॥ २ ॥

दोहा—सती सरलता क्षांतिता, पतिवरता पिण और ।
लखकर मन मुदित हुवा, बोला कुंवर किशोर ॥१॥

ढाल मूलगी

भद्रे ! खम अपराध, थारो छेह न लाध,
ओछो हूं धणीए, पूरी तूं भणीए ।
दुःख सायर अगवाह, कांठे आवी नाह,
नामा धारथीए, नावा कारथीए २४ ॥
हसी रमी सुख पाय चालण लाग्यो राय,
राणी तब कहैए, गर्भ रहै सहेए ।
उत्तरनूं अहिनाण, आपो स्वामी सुजाण,
लोकां थी डरूंए, सुखमें दिन भरूंए ॥२५॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रसिया

पाछा जाता प्रियवर ! राज मायत से मिलता जाईजोजी ॥ टेर ॥
तीन रात में रह्यो महिलां में, यों फुरमाईजोजी ।
कहनो हमारो मान पति थे मत शर्माईजोजी ॥ पाछा ॥ १ ॥
बात कही में सोच समझ मत यों ही गमाईजोजी ।
भविष्य ऊजरो होय इसी पिय बात बनाईजोजी ॥ पाछा ॥ २ ॥
जंग वरुण को जीत सुजशवर लारे लाईजोजी ॥
नित की ऊडास्यूं काग कंत झट पाछा आईजोजी ॥ पाछा ॥ ३ ॥
आनन्द मंगल वर्ते नित २ धर्म वधाईजोजी ॥
"चौथ" कहै पवनंजयने नथमाल, मनाईजोजी ॥ पाछा ॥ ४॥

(ढाल मूलगी)

देई मूंदडी देव, चाली गयो ततखेव,
कट के जई मिल्योए, किणहिन अटकल्योए ।
केशराज ए ढाल, नग[१] संख्या सुविशाल,
नारी नाहलोए, मिलणं उमाहलोए ॥ २६ ॥

१ पर्वत (आठ)

दोहा (धन्या श्री रागे)

"पवनंजय" तब पाधरो, "लंका" नगरी जाय ॥
भूप भली परे भेटीयो, अति रलियायत थाय ॥ १ ॥
"रावण" रूड़े रावले, शुभ वेला सुविचार ।
वरुणो परि तत्खिण चल्यो, दल बलने अनुसार ॥२ ॥
अब तो अंजना सुन्दरी, गर्भ धरे तिण वार ।
गुप्त पणा नूं कामए, कोईयन जाणे सार ॥ ३ ॥
गर्भ तणे तब लक्षणे, गर्भ जणाणो जाम ।
"केतुमति" सासु कहे, किस्यूं कियो ए काम ॥४॥
"पवनंजय" परदेश छे, बहु वधार्यूं पेट ।
हूं जाणू के एम हुसे, सोई हुवो नेट ॥ ५ ॥

ढाल नवमी तर्ज झुमकडानी

"केतुमति" कलह कारिणीजी, काल रूपणी होई, करमगति दोहली ।
बहु किम्युं ते ए कियूंजी, लाजविया घर दोई ॥ कर्म० ॥ १ ॥
भोली अभागणी निठुरणीजी, थो मनतो उन्माद ॥ कर्म० ॥
जाण तजवाथा भलाजी, कां लीधो अपवाद ॥ कर्म० ॥ २ ॥
मरवा थी फरि जीवीयेजी, शील रह्यां संसार ॥ कर्म० ॥
शील भलो सहुने सहीजी, सुन्दरी नो सिणगार ॥ कर्म० ॥ ३ ॥
नन्दननी अब मानताजी, जाणतां सहु कोय ॥ कर्म० ॥
रण थारो असतिपणोजी, आजे जणाणो जोय ॥ कर्म० ॥ ॥४॥
ोवे राणी रावलीजी, दुःख हिये न समान ॥ कर्म० ॥

दोहा— कटुक वचन सासु तणा, सुण्या "अंजना" नार ॥
उत्तर में आतुर तदा, बोली वचन विचार ॥ १ ॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज नवीन रसीया

साची कहदूं हो सासुजी मांसूं झूंठ न बोल्यो जाय ।
झूंठ न बोल्यो जाय मांसुं साच न खोल्यो (छोडयो) जाय ॥टेर॥
झूठ बोल क्यों जन्म बिगारूं, चोर जार समजो सुत थारू ।
रया तीन इनरात सासुजी कटक सूं पाछा आय ॥ साची ॥१॥

सासू रीस करीने बोले, तूं कह भूली किण रे भोले ।
बोले क्यूं नहीं साच देवूंलां में थारी स्यान गमाय ॥ साची ॥२॥
सती कयो सासू नहीं माने, झूठी सारी वातां जाणे ।
'नाथ शिष्य चोथु' दी निसाणी ततखिणसति दिखाय ॥सा० ३॥

[१] ढाल प्रक्षेप तर्ज–तावडा धीमोमो पडजारे

लाडीजी लखण नहीं आछा हे २ खोटा करके काम अबे थे बण-
रया हो साचा ॥ टेर ॥
चोरी कर तूं लाई गहणा, वण रही साहूकार ।
जाणूं लखण में थारा सारा, तूं सेवे व्यभिचार ॥ लाडी ॥ १ ॥

(ढाल मूलगी)

देखावी सा मूंदडीजी पति आगमनी बात ॥ कर्मगत दोहीली ॥५॥
बलती वाघण वेगसूंजी, संभलावे सहु लोक ॥ कर्मगत० ॥
नाम न भावे तेहनोजी, तेहसूं स्यूं संयोग ॥ कर्मगत ॥ ६ ॥
गिरी गिराई मुंद्रड़ीजी, हाथ चडी कहीं आय ॥ कर्मगत० ॥
साची होवे सुन्दरीजी, क्यू न बोलावे ए माय ॥ कर्मगत० ॥७॥

दोहा—कूडा बोली कामणी, राखूं नहीं इक रात ।
आंख थकी अलगी करो, भाखे राणी वात ॥१॥

मंत्री स्वा० श्री चौथमलजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज–गिणगोर की–

सासूजी थे म्हारा थांरा जाया ने आवण दोजी, जाया ने आवण
दो जितरे ए वातां जावणदोजी ॥ टेर ॥
हाथ जोड ने अरज करु में बडा घरां की जाईजी ।
ऐसी वात सुणी नहीं आगे, आ कांई वात सुणाईजी ॥ सासु ॥१॥
एकलडी वनमांहे मांने, मतना मेलो सासूजी ॥
ऐठो म्याय रहूं घर मांहे, बोले म्हाखी आंसूजी ॥ सासु ॥ २ ॥
माडांणी जो वन में मेलो, साप स्यार मुझ खासीजी ।
विगर गुन्है ही मुझ मरवासो तो, थांरे हाथे कांई आसीजी ॥सासु॥३॥
सास सुमरा सेथी बोलो, कांई जोर में करसूंजी ।

१ सती अञ्जना से ।

भूखां तिरसां मरती मैं तो, विना मौत मैं मरसूंजी ॥ सासु ॥४॥
दीन वचन हुय बोले वहुयर, सासूजी थे मानोजी ।
दासी की दासी हुय रहसूं, चौथू कहै मत तानोजी ॥सासु ॥५॥

श्री. वैद्य धूलचन्दजी सुराणा कृत ढाल क्षेपक तर्ज–वधव बोल मानो

सासुजी म्हारी अरज सुणीजे हो, तुम सुत आवे ज्यां लगे घर मांही राखीजे हो ॥ टेर ॥
विगर गुन्है काढो मती, मन खांत करीजे हो ।
कटक भणी जन मोकली खबरां कर लीजे हो ॥ सासु ॥ १ ॥
अर्ज इती अव धारजो, माताजी मोरी हो ।
पछे ही पछतावसो, कहूं कर जोरी हो ॥ सासु ॥ २ ॥
गद २ वाणी बोलती नयणां जल ढलके हो ।
दुःख अपूरब सांभरें, कालेजो कलके हो ॥ सासु ॥ ३ ॥
क्रोधवसे राणी कहै, बोले किण दावे हो ।
झूठ वके मुझ आगले, जरा शर्म न आवे हो ॥ सासु ॥ ४ ॥
करम कोई बांधो मति, भवि जीवां भारी हो ।
भुगतण विरियां जीवने, नहीं लागे कारी हो ॥ सासु ॥ ५ ॥

दोहा—राणी बोली रोस भर, दो दासी ने मार ।
एह काम सब इण कीया, पकड़ो चेटी चार ॥१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयानी। धूलचन्दजी सुराणा कृत–

बाजेरे लीला ताजणा, रोवन्ती असराल सनेही ।
डील थयो चक चोल ज्यूं, छूटे रुद्रनी धार सनेही–कर्म तणी गति दोहली ॥ टेर ॥
कूटण वाली कम्पे घणी, नहीं लागे कछु जोर सनेही ।
हुकम धणीरे कारणे, काम करां ए भोर सनेही ॥ कर्म० ॥ २ ॥
सूंस करी सति भाखती, न्हाखे मुख निस्सास सनेही ।
चोरी मैं कीधी नहीं, भावे देखो मुझ पास सनेही ॥ कर्म ॥३॥

दोहा—केतुमती अति क्रोध में, सुन्या न वचन लिगार ॥
अनुचर को बुलवायकै, बोली यों ललकार ॥ १ ॥

अन्न पाणी री आखड़ी, जोलो ए नहीं जाय ॥
सति विचारे चित्त में, अब बोलीजे नाय ॥ २ ॥

क्षेपक तर्ज लावणी (लेखक)

दोनों को कालो वास तुरत पहिराया,
जो आभूषण मणीमाल तुरत उतराया ॥
कालो रथ ने काला तुरङ्ग मंगाया,
दीयो कालो स्वारथी काला हीया बनाया ॥
सती करे अरराट सखी समझावे,
रथ चाल्यो सननाट नगर बिच आवे ।
मत देना कोई आल किसी पर भाई,
भुगते हाथो हाथ हुवे दुःख दाई ॥ टेर ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आज शहर में हजा मारु सीपडे

नर नारी हो सारी जोवतीं, रोवती भर २ नेण, सुज्ञानी ।
हा हा दैव ए कांम कीयो कीसूं, भाखे इण पर वेण ॥ सु० ॥
जोइजो अवस्था सतियों में पडी ॥ टेर ॥ १ ॥
म्होटा घर में अकाज हुवा इसा, छोटांनो स्यूं थाह ॥ सु० ॥
आरत करती हो कामण अतिघणी, जोवे नगरना शाह ॥सु.जो.॥२॥
काला रथ में बैसा संचरे, धरती दुःख अपार । सु०
मुख कुमलाणों मालती फूल ज्यूं लोक घणा छै लार ॥सु जो.॥३॥
नगरी उल्लंघी हो आई वन विपे, तन में तेज न काय । सु०
मन दुःख धरतो स्वारथी बोलियो, दोवण म्हारो न माय ।सु.जो.४।
सती दुःख देखी स्वारथी इम कहे, धिक् २ पापी पेट । सु० ।
जन्म डुबोयो हो मैं इण वस पड्यो, नीच कर्म कीयो नेट ।सु.जो.५

ढाल मूलगी

निर्भ्रंछी वचने खरीजी, आरक्ष पुरुषां हाथ ॥ कर्म०
काढी नगरे बाहरेजी, सखी चाली तस साथ ॥ कर्म० ॥ ८ ॥
आरक्ष पुरुषे पावरीजी, पीहरे आणी सोय ॥ कर्म०
बाहिर मूकी बाहुव्याजी, एतो इमहिज होय ॥ कर्म० ॥ ९ ॥

रात्रे बाहीरे रहीजी, करती शोचा शोच। कर्म०
किणही ठामे पड़े नहींजी, आरतीमे आलोच ॥ कर्म ॥ १० ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज खबर नहीं है पलकी

सती में विपत पड़ी भारी रे, स०
मत कोई बांधो कर्म चतुर सब सुणजो नरनारी ॥ टेर ॥
क्यों रह्यो छे पीहर सासरो, प्रीयतम क्यों प्यारी।
अहो २ कर्म गती कुणटारे, निज कृत दुखकारी ॥ सती० ॥१॥
आक्रन्दशब्द करे दोई वनमें, रन है भयकारी।
रुदन सुनी पंखी कुरलावे, सुनत लगे खारी ॥ सती में ॥ २ ॥

१ ढाल क्षेपक तर्ज पपैया काहै मचावे शोर।

सहेली अब किम धारूँ धीर, पड़े नयन से नीर ॥ टेर ॥
परणी जद तो प्रीतम मुझपर, नाहक थे नाराज।
पिया प्रेम जब कीया मेरे से, सासु बिगाड़ी लाज ॥
कलङ्क के काले तनपर चीर ॥ सहेली ॥ १ ॥
जशजीवन अपजश है मरना, कहते नीतिकार।
इसमें श्रेय मुझे हैं मरना, मरसूं खाय कटार ॥
सुनत यों जाय कलेजा चीर ॥ सहेली ॥ २ ॥

दोहा—रात पड़ी रवि आथमीयो, प्रसरयो घोर अंधार।
सागारी अनशन कीयो, नामगुणे नवकार ॥ १ ॥

तर्ज—अंजना री—

अंजना कहै सुन सुन्दरी, दुःखमांहै दुःख मुझ ऊपन्यो आज तो।
पाणीथकी कीवी पातली, सासरा विच म्हारी नीगमी लाजतो ॥
माता ने मुख किम दाखवूं, भाई भोजायों किम करसीए नीहतो।
ज्यों लगे स्वामी आवे नहीं, किमकरी दुखभर्या नीगमू दीहतो—
सती में शिरोमणी अंजना ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' वलती कहै, जहां लगे निर्मला ऊजला आपतो।
तहां लगे स्वजन सुहामणा, हर्ष बोलावसी तुम तणो बापतो ॥

१ सती अंजना से।

माता मनोरथ पूरसी, भाई भोजाईयों मिलसी उमङ्ग तो।
जहांलगे स्वामी आवे नहीं, तहां लगे पीयर पोखजो अङ्गतो।सती।२।
१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–मैं अङ्गरेजी पढ़ रई हूं ॥
नहीं पीयरीये चालू, मुझको शर्म सताती ॥ टेर ॥
कलंक लेय किम पीयर जावूं, साच कहूं महियर शर्मावूं।
हा हा कैसे हालू ॥ मुझको० ॥ १ ॥
जोगिन बनकर अलख जगासूं, सुत होने से फिर जलजासूं।
पूरण पतिव्रत पालूं ॥ मुझको० ॥ २ ॥
दोहा–क्षेपक,–उपसर्ग सहतां ऊगियो, सहस किरणनो सूर ।
पीयर जावे पद्मणी, विकट पन्थ छै भूर ॥
॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज लावणी ॥
दोनों तो भूली बाट ऊजड में जावे,
रनवन के मांहै फिर फिर गोता खावे।
माणस मिलीयां विन रास्ता कुण दिखलावे,
सतीयन की छाती मांय दुःख नहीं मावे ॥
यों बोले अंजना सुन तूँ सखी हमारी,
कर्मों की रेख कोई टले न किनसे टारी ॥ टेर ॥
मैं पूर्व भव में पाप कीया अति खोटा,
मैं लीया अदत्तादान आल दिया म्होटा।
वलि भूख तृषा से जीव घणो घबरावे,
तो पिण पीयर की आशा मन में लावे ॥
तिहां विविध परे तो वन दुःख सहतां हारी ॥ कर्मों की० ॥२॥
दोहा—अनुक्रमें वाटे चालतां, चरण थया चक चोल ।
मन संकोचित माननी, आई नगरनी पोल ॥ १ ॥
॥ क्षेपक तर्ज—अंजनारी ॥
नगरनी सेरी हो संचरी, आधो घूंघट नीचो है मुख तो।
काला हो वेष शोभे नहीं, दीठां ऊपजे अति घणूं दुःख तो ॥

---

१ सती अजना से।

हंस गमन गति चालती, राज विछोही ए दीसे छे नार तो।
पाछल परजाहो परवरी, इण पर पहूंचीछे राज दुवारतो ।सती.।३।

॥ ढाल मूलगी ॥

दीन मुखी गाढी दुःखीजी, ऊभी राजदुवार ॥ कर्म०
प्रतिहारी ए आवीनेजी, कीधो राय जुहार ॥ कर्म० ॥ ११ ॥

॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-पन्नजी मूंडे बोल ॥

खाट हिंडोले हींचे राजा, खुल रही केसर क्यारी रे।
आनन्द रङ्ग विनोद विविध पर पालक अरज गुजारी रे॥
मत कोई बांधोरे, मत कोई बांधो कर्म शुभाशुभ लगे न सांधोरे ॥टेर॥
पोल के बारे अंजना ऊभी, एक सखी नसु लारी रे।
नगर सिणगारो नरपति बोले, करो नव २ त्यारी रे॥ मत० १ ॥
प्रच्छन्न पणे सहु सम्बन्ध सुणायो, भयो शोच अति भारी रें।
लग्यो कलेजे दाह भूप मूर्च्छो तिणवारी रे॥ मत० ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

सर्व विरतंत सुनावतांजी, राजा रोप धरन्त ॥ कर्म०
हाथ घसे शिर धूणवेजी, पश्चातांप करन्त ॥ कर्म० ॥ १२ ॥
कुलटा कर्म समाचरीजी, कुलने लीक[१] लगाय ॥ कर्म०
आवी मुख देखाड़वाजी, ए कुंण भलपण थाय ॥ कर्म० ॥ १३ ॥
घन[२] थी ऊपजे बीजलीजी, अमृतथी विप वेली ॥ कर्म०
दीवाथी जेम कालिमाजी[३], मुझ थी ए इम मेली[४] ॥ कर्म० ॥१४॥
प्रसन्न कीर्तिजी वदेजी, पापणी परहि जाय ॥ कर्म०
अंगुठो तो अहिरूपाजी[५], दसियाथी न रखाय ॥ कर्म० ॥ १५ ॥
सघलाने काने सुणीजी, कहे 'महोत्साह' मन्त्रीश ॥ कर्म०
दांते चढावी आंगुलीजी, किस्यूं कहो छो ईश ॥ कर्म० ॥ १६ ॥
रूठी बैठी पीहराजी[६], सुणो अछे आवन्त ॥ कर्म० ॥
जलथी अग्नी न ऊपजेजी, काष्ट थकी उपजन्त ॥ कर्म० ॥१७॥

१ लांछन (लीटी)। २ बरसादथी। ३ काजल। ४ अस्पष्ट। ५ सर्प
६ पीयरीए।

कुंवरी छाने राखियेजी, मेटी[1] सयल कहाव ॥ कर्म०
छड्या छड्याथी ऊजलाजी, होतो राया राव ॥ कर्म० ॥ १८ ॥
'केतुमती' नामे सुणोजी, अप कीर्ति छे आद[2] ॥ कर्म०
झूठो दोष लगाड़नेजी, बहु विगोवे वाद ॥ कर्म० ॥ १९ ॥
राजा कहे मन्त्रीशसूंजी, तूं नहीं जाणे मर्म ॥ कर्म०
सास बहु ने अवगणेजी, एतो अछे अधर्म ॥ कर्म० ॥ २० ॥
अण मिलत भरतारसूंजी, तिण ही में परदेश ॥ कर्म०
पिछे हुई गर्भणीजी, एछे कांई विशेष ॥ कर्म० ॥ २१ ॥
उहांथी उत्तर करोजी, जाजे अलगी अपार ॥ कर्म०
मुख नवि देखूं ताहरोजी, छूं ! बहुलो विस्तार ॥ कर्म० ॥ २२ ॥
दिन सूधे सूधूं सहीजी, वांका थी अति वंक ॥ कर्म०
माणमनूं मारो नहीं जी, एजिन वचन निशंक ॥ कर्म० ॥ २३ ॥
नृप आदेशे पोलीयेजी, दूर करी ते बाल ॥ कर्म०

दोहा—कही सही नृपती कही, आतुर अनुचर आय ।
कदलीदल ज्यों धरणी पे, पडी बाल मूर्च्छाय ॥१॥

[3] ॥ ढाल क्षेपक तर्ज—कोरो काजलियो ॥

'वसन्तमाला' वसने करी, कांई घाले शीत समीर ॥ पापी बाबलीयो ॥
साव चेत हुई सुन्दरी, कांई नयनों वर्षे नीर ॥ पापी० ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' बाला कहे, मोरा कालो देखी वेस ॥ पापी०
पूछ तांछ नहीं जांच की, उलटो करीयो द्वेष ॥ पापी० ॥ २ ॥
हट करके रहती नहीं, मैं कहती सुख दुःख बात ॥ पापी०
पीछे प्रभो ! पिछतावसो, कांई जद आसी जामात ॥ पापी० ॥३॥

॥ तर्ज—अञ्जनारी ॥

पोलिये आवी ऊठावीयो, तुम्ह पर रूठो विद्याधर रायतो ।
बांह साहा ने बैंसी करी, मनमांही चिन्तवे आंपणी मायतो ॥

---

१ मुर्छा (तजी)। २ आदि (प्रथमथी)। ३ सती अञ्जना से।

ख थकीरे आंसू झरे, शरीर सूनो थयो शुद्ध न सारतो।
धारें पाय पाछा पडे, इणपर पहोंतीछे माय दुआरतो॥सती में ४॥

दोहा—माता मन्दिर मांयने, करती नवा २ रङ्ग।
वारी मारग देखतां, आवे पुत्री चिरङ्ग॥ २॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी॥

ठ सूकारे खरपटी पड़ी, जीभ सूकी नहीं तालवे नीरतो।
ग पर चालती बालिका, ढींचण पगतले फाटोछे चीरतो॥
लोरे वेश शोभे नहीं, नयन झरे जांणे मोतीना बिन्दतो।
ख कुमलाणोरे कामनी, जाणेके राहु ग्रह्योछे चंदतो॥सतीमें ५॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–मैं अङ्गरेजी पढ गई हूं॥

शरणे अब आई हूं, सुन तूं मेरी मैया॥ टेर॥
री गोद में तुमने पाली, मेरे मोद मे होती काली।
वही तेरी हां जाई हूं॥ सुन०॥ १॥
सू मो शिर कलंक चढाया, काला वेष मुझे पहनाया।
जन से मै शर्माई हूं॥सुन०॥ २॥
पिता साहब ने हुकम लगाया, प्यासी ने नहीं नीर पिलाया।
ाड़ी में घबराई हूं॥ सुन०॥ ३॥

दोहा—हींडे हींचती मातने, सुनली ताम पुकार॥
लखि पुत्रीका अंजना, बोली निजर निहार॥ १॥

२ ढाल क्षेपक तर्ज आखिर नार पराई है।

जबही अन्नजल खाऊँगी, कन्या बाहर कढाऊँगी॥ टेर॥
कलङ्क लेय क्यों आई आज, इनको जरा न आवे लाज॥
में नहीं मुँह लगाऊँगी॥ कन्या०॥ १॥
बांझ प्रभु हा! क्यों नहीं कीनी, क्यों कुलटा यह कन्या दीनी॥
इनका नाक कटाऊंगी॥ कन्या०॥ २॥

दोहा—आई क्यों यहां अंजना, माता का नहीं प्रेम॥
चेड़ी नेड़ी आयके, बोली वेड़ी एम॥ १॥

१ सती अञ्जना से। २ सती अञ्जना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज वीरा लूंबां झूंबां होई आईजो ॥
म्हांरी चूरी लगावोला कांईजी, तूं क्यों पीयरीए आईजी ॥ टेर ॥
क्यों खोटा कर्म कमाया, थे कुलने चावल चढ़ायाजी ॥ म्हां० ॥
थे अब तो कुछ शर्मावो, म्हांने मूंडो मति दिखावोजी ॥म्हां०॥१॥
मत मन्दिर अन्दर आना, चले झटपट यहां से जानाजी ॥म्हां०॥
है माताजी का कहना, मत खड़े मिन्ट भर रहनाजी ॥म्हां०॥२॥
दोहा—सती आंसको लालकर, बोली यों ललकार ॥
बस बस अब खामोश हो, बोलो बचन विचार ॥१॥
२ ढाल प्रक्षेप तर्ज—नवीन रसीया ॥
पहीले कहूं विचारी बोल सखी पीछे पिछतावोगी ॥ टेर ॥
सन्मुख मुझको गाली देते, नहीं गम खाओगी ॥
जितनी बनी सैतान आज, उतनी दुःख पाओगी ॥पहीले० ॥१॥
भूखी प्यासी दासी को देख तुम दया न लाओगी ॥
जब दिन मेरे घर आवेंगे, फिर घबराओगी ॥ पहीले० ॥ २ ॥
पति पवन जब युद्ध से आसी, फिर शर्माओगी ॥
सबके मुँह में धूड पडेगी, बदन छिपाओगी ॥ पहीले० ॥ ३ ॥
(लेखक) ढाल क्षेपक तर्ज पणिहारी—
सुण माता कहे अंजना, हूँ आई है,
जानी जनम देवाल, क्रीध मनाई है ॥
मैं नविजानी मायड़ी, छेह देसी है,
निकली कीध बेहाल ॥ वैरण जैसी है ॥ १ ॥
सुख दुःखनी जे बातडी, नहीं पूछी है,
नहीं कह्यो पीले नीर ॥ चढ गई ऊँची है ॥
तूं निर्दय किम नीकली, मोरी जननी है,
इक इचरज इकपीर, म्हारे मननी है ॥ २ ॥
कमल नयन से नीर, नीझर छूटी है,
मानो मोतीयन की माल, तट के तूटीहै ॥

१ सती अञ्जना से । २ सती अञ्जना से ।

मूर्च्छित होय धरणी पड़ी, अत ही रोवे रे,
तव कहै 'वसन्तमाल' क्यों तन खोवे है ॥ ३ ॥
बाईसा रोवो मती, रहो गाढा है,
ए मावित नहीं आज, आया आडा है ॥
बांह पकर बैठी करी, झट चाली है,
अब भौजाई घरे जाय, भावज भाली है ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पनजी मूँढे बोल ॥ मन्त्री श्री चौथमलजी म० कृ

बाईसारो वेष देखने, भोजाईजी भिडकीरे ॥
दास्यांने कहै वेगो जाकर, देदो खिड़की रे ॥ ॥
भावज मूँडे बोल, बोल २ घर आई थारी नणदल बाई है ॥
खिडकी वेगी खोल, खोल २ म्हारी सावसगी तूं वाहली भोजाईहे।टेर
नीची झुक २ जालियों में, नणद बाई ने निरखे रे।
ऊंची निजरां करी अञ्जना, प्रेम परखे रे ॥ भावज० ॥ १ ॥
निरमल जल झारी भर पावो, अवरन मांगू कांई रे।
पानी पीकर वन में जास्यां, डरपो नांई रे ॥ खिड़की० ॥ २ ॥
वचन सुण्यां अणसुण्यां करने, भावज अन्दर बड़गी रे।
गोखां मायली बारीयां, वा जाती जड़गी रे ॥ खिड़की० ॥ ४ ॥
देख भावजरा भाव अंजना, गेल छोड गई आगे रे।
नाथ मुनि शिष्य 'चोथमल' कहै, सतियां सागे रे ॥ भावज ॥५॥

॥ तर्ज अजनारी ॥

अंजना घर २ हींडती, पग कुंकु वरणा कमलसम देहतो।
खुचना कांटाने कांकरा, जिग रक्त राती भूमि थई तेहतो ॥
दीन वचन मुख दाखती, नैण झरें जाणू सावण मेहतो।
भूखी तिरसा करी आकुली, भाई भोजायां सब दीनो छे छेहतो।मती.६

दोहा—ऐसे आखिर आगई, माणक चौक मझार।
नागरीक नरखे सती, फर रही एम पुकार ॥ १ ॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–तरकारी लेलो ॥

नगरी का लोकों ? कोई तो पिलावो पानी आयके ॥ टेर ॥
प्यासां मरती मरूं हाय मैं, नीर नयन में आयो।
मात पिता तो मुझ पर रूठे, पानी भी नहीं पायो रे ॥नगरी १॥
अयि ! नगरा के लोकों आवो, मतना तुम भय खावो।
दीन दुःखी अबला दुर्बल की, जरा दया दिल लावो रे ॥ नगरी, २॥

दोहा—ऐसे कहतां अंजना, दृग भर आयो नीर।
हृदय विदारक आहसे, जाय कलेजे तीर ॥ १ ॥

२ ॥ छन्द मालती ॥

सब नगर निवासी देख लाये उदासी।
अति दुखित पियासी अंजना और दासी ॥
सब जन भय खावे चित्त में दुःख पावे।
पर जल न पिलावे पास कोई न आवे ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नगरि में गरि मे चरचा यही–
सुजनता जनता अकुला रहीं ॥
जल नहीं तुं कहां अन खावनो-,
पुरभयो सघलो अण खावणो ॥ १ ॥

॥ छन्द मालती ॥

शिर पर अति चोटी हाथ सोटी लिये हैं।
जल भर कर लोटी स्नान शुद्धि किये हैं ॥
अतिकर करुणाई विप्र ने पास आई।
इम किम कुमलाई बोल तूं बोल बाई ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नृपति की पति की घटना सही।
नव कथा विकथा घटना कही ॥
जनकजी रु जहां जननी रहै।
मुझ लिये तू नहीं जन ! नीर है ॥ १ ॥

---

१ सती अंजना से। २ सती अञ्जना से।

॥ छन्द मालती ॥

सुनकर अकुलायो विप्र ने शीप नायो।
नहिं मन घबरायो धैर्य ऐसे बँधायो॥
मुझ विनय सुनीजे देर माता न कीजे।
झटपट अब लीजे नीर ठण्डा तूं पीजे॥१॥

दोहा—नीर पिऊं नहीं नगर में, सुनहु ब्राह्मण वीर।
आकर पुरने बाहरे. पायो निर्मल नीर॥ १ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

क विलाप करे घणूंजी, भूल्योरे भूपाल॥ कर्म० ॥ २४ ॥
खीं तरसी तलवले जी, आंसूं वरसे नयन॥ कर्म०
र्भांकुर पग वींधतांजी, पामे अधिक कु चयन॥ कर्म० ॥ २५ ॥
गे पगे गिर गिर पडेजी. तरु तर लीये विसराम॥ कर्म०
सन्ततिलका' साथणीजी. चाली जाये ताम॥ कर्म० ॥ २६ ॥
ाम नगर पुर पाटणेजी, नृपनी आयश कार॥ कर्म०
हिलाहिज कही आवीयाजी, को मत द्यो पेसार॥ कर्म०॥२७॥
ासो ही अण पावतीजी, धरती अति सन्ताप॥ कर्म०
ामी अटवी मोटिकीजी. करती अति ही विलाप॥ कर्म० ॥२८॥
ाग्य हीन जे भामिनीजी, सहूंनी हूं सिरदार॥ कर्म०
ह पराभव देखवाजी. कां मरजी किरतार॥ कर्म० ॥ २९ ॥
ात फर्यो माता फरीजी. फरीया भाई भूर॥ कर्म०
ाथ फर्यो थीं जग फर्योजी. मरवूं झूरी झूर॥ कर्म० ॥ ३० ॥
रवामें ओछो नहीं जी. साच तणो विश्वास॥ कर्म०
कडावे ढादस घणीजी. नृप जाया दीये त्रास॥ कर्म० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज-तूही २ याद प्रभु आवे दरद में ॥

चालो अब बाई सम्भालो विपनने, सम्भालो विपनने निभावोला
पन नें ॥टेर॥

१ सती अञ्जना से।

पीयर सासरे आसरो नांही, कसकर कमरने वसकर मननें ॥चालो॥
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ॥चालो॥२॥

ढाल अञ्जनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो॥
विखमीरे डूंगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुतणी छायतो।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो॥
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो॥सतीमें॥७॥
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो॥
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो॥
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहचो कर्म न करेरे चण्डालतो॥
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना बालतो॥सती॥८॥
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो॥
दासी कहै बाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूं कीधूं काम तो॥
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणों रागतो॥
वनमांहीं वाघ विलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो॥सती९॥
नित भोजन करती रे वापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो॥
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतने आगतो॥
अन्न पाणी किम पामस्ये, मैं तो जाणीयो कोई राखसे चीरतो॥
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो॥सती॥१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो॥
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो॥
किम कर लोकने प्रीछवूं[१] किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो॥
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो॥सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो वाप छे कर्म चण्डाल तो॥
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो॥
आंगण न राखी अववड़ी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो॥

१ पूछवूं।

वसन्तमाला बलती कहै, थारा पिहर पर पडजोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ।
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो ।
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ।
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२
नवमी ढाले सगातणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखोंनी वन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गु
ऊभाध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटसां, अब तो दुखडा टलिया ॥ मोरी १
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३

दोहा- (आशावरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीये वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, वसन्त तिलका नाम ॥
कोण कर्मना दोप थी, साचा झूठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोडा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल ये चार ॥ ३ ॥

---

१ आकाश मां उडने वाला ।

पीयर सासरे आसरो नांही, कमकर कमरने वसकर मनने ॥चालो॥
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ॥चालो॥२॥

ढाल अंजनारी—

अंजना सती इण पर कहे, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो ॥
विखमीरे डूंगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुणी छायतो।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो ॥
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो ॥सतीमें॥७॥
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो ॥
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो ॥
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहवो कर्म न करेरे चण्डालतो ॥
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना वालतो ॥सती॥८॥
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो॥
दासी कहे बाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूँ कीधू काम तो ॥
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणो रागतो ॥
वनमांहीं बाघ विलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो ॥सती९॥
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो ॥
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतने आगतो ॥
अन्न पाणी किम पामस्ये, मैं तो जाणीयो कोई राखसे चीरतो ॥
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो ॥सती॥१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो ॥
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो ॥
किम कर लोकने प्रीछवूं[१] किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो ॥
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो॥सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो ॥
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो ॥
आंगण न राखी अधघड़ी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो ॥

---

१ पृछवूं।

वसन्तमाला वलती कहै, थारा पिहर पर पड़जोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ॥
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो ॥
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ॥
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२॥
नवमी ढाले सगानणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखोंनी बन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गुरु ऊभाध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटमां, अब नो दुखडा टलिया ॥ मोरी १ ॥
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२॥
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३ ॥

दोहा- (आशावरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीये वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, बसन्त तिलका नाम ॥
कोण कर्मना दोष थी, साचा झूंठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोड़ा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल ने चार ॥ ३ ॥

[1] आकाश मां उड़ने वाल

पीयर सासरे आसरो नांही, कसकर कमरने वसकर मननें ।।चालो।।
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ।।चालो।।२।।

ढाल अञ्जनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो ।।
बिखमीरे डूंगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुतणी छायतो ।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो ।।
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो ।।सतीमें।।७।।
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो ।।
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो ।।
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहवो कर्म न कररे चण्डालतो ।।
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना बालतो ।।सती।।८।।
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो ।।
दासी कहै बाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूं कीधूं काम तो ।।
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणों रागतो ।।
वनमांहीं वाघ बिलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो ।।सती९।।
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो ।।
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहमी शीतने आगतो ।।
अन्न पाणी किम पामस्ये, में तो जाणीयो कोई राखसे वीरतो ।।
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो ।।सती।।१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो ।।
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो ।।
किम कर लोकने प्रीछवूं? किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो ।।
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो।।सती।११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो ।।
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो ।।
आंगण न राखी अधघडी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो ।।

वसन्तमाला वलती कहै, थारा पिहर पर पड़जोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ॥
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी अति पालतो ॥
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ॥
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२॥
नवमी ढाले सगातणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सज्जनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखांनी वन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गुरु ऊभाध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटसां, अब तो दुखड़ा टलिया ॥ मोरी १ ॥
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२॥
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३ ॥

दोहा- (आशावरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीयें वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, बसन्त तिलका ताम ॥
कोण कर्मना दोप थी, साचा झूठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोड़ा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल वे चार ॥ ३ ॥

---

१ आकाश मां उडने वाला ।

॥ ढाल दशवीं–तर्ज–गुरांजी थे मने गोडे न राख्यो ॥

पूर्व भव वात सुणावे स्वामी, सा निसुणे सुखसाता पामी।
जम्बू द्वीप प्रसिद्ध प्रमाण, जोजन लाख तणो मण्डाण ॥
क्षेत्र सुक्षेत्र 'भरत' भणीजे, 'मन्दर' पुरवर नगर सुणीजे।पूर्व.१।
वणिक वसे नामे 'प्रिय नंदी', नारी 'जया' नामे आनन्दी।
जायो नन्दन नीको जाम, कला तणो सागर अभिराम। पूर्व. २।
एत दिवस उद्यान सिधायो, ऋषि दर्शन देखी सुख पायो।
समकित पामी पाले नेम, साधु दान देवाम्नं प्रेम ॥ पूर्व० ॥ ३ ॥
तप संयम सुधा आराधी, ईशाने सुरपदवी लाधी।
नगर 'मृगांक' मनोहर कहीये, 'श्री हरिचन्द्र' नरेश्वर लहीये।पूर्व. ४।
'प्रीयंगु लक्ष्मी' नारी नीकी, प्यारी छे अति राजाजी की ॥
सो सुर चवि राणी उयरे आयो, 'सिंहचन्द्रजी' नाम कहायो।पूर्व.५।
धर्म करी फिर देवों मांहे, 'सिंहचन्द्रजी' उपज्यो ग्रा हे ॥
वैताढ्ये 'अरुणपुर' वारु, राय 'सुकण्ठ' अछेज्यूं उदारुं ॥ पूर्व० ६ ॥
'कनकोदरी' राणी उयरेनन्द, नामे 'सिंहवाहन' आनन्द ॥
राज्य करी चिरसोई नरेशर,' विमलनाथने' तीर्थे सुखकर ॥ पूर्व० ७ ॥
'लक्ष्मीधर' मुनि पासे पधार्यो, संजम साधी कारज सुधार्यो ॥
दुःकर तप करणी करी सोई,' लांतक' सुर लोके सुर होई ॥ पूर्व० ८ ॥
तुझ उदरे सो आवी वस्यो छे, पुण्यवन्त होवेरे तिरयो छे ॥
चरम शरीरी उत्तम प्राणी, होशेए नन्दन तुझ राणी ॥ पूर्व० ९ ॥
'कनकपुरी' नगरीनों नायक 'कनकरथ' राजा सुखदायक ॥
राणी 'कनकोदरीय' सयाणी, बीजी 'लक्ष्मीवती' ए वखाणी।पूर्व. १०
'कनकोदरीए' नन्दन जायो, रूप कला करी अधिक सुहायो ॥
'लक्ष्मी वतीए' छिपायो वालो, माताजी दुःख हुवो असरालो॥पूर्व११
वल वलती देखी नव राणी, पाडोसणी बोले तव वाणी ॥
रे भूंडी ! तें ए स्यूं कीधो, माता थी वालक चोरी लीधो ॥पूर्व १२॥
हुई खिमाणी राणी आपे, माता पासे वालक थापे ॥

देव धर्म गुरु स्रधा सेवी, स्वर्ग सुधर्मे होई देवी ॥
तिहां थकी तूं आवी सीधी. 'अंजना' सुन्दरी नाम प्रसिद्धि॥पूर्व१४॥
माता पुत्री अन्तर राखी, तेह तणां फल लेवे छे चाखी ॥
किधां कर्म न छूटे कोई, अन्तर नयणे लीजो जोई ॥ पूर्व॥ १५॥
तव तूं हूती भगनी एहनी, अनुमोदी थी करणी तेहनी ।
ते माटे दुःख पामे साथे, कीधू लाभे हाथो हाथे ॥ पूर्व० ॥१६॥
भोगवो पड्यो छे एसहु कर्म. आज थकी ऊपजसे शर्म ।
दिन २ साता वधती जासे, शील सती तूं अधिक दृढासे ।पूर्व.।१७।
आवसे ए कुंवरीनो मामो, देख्यां थी लेसो विश्रामो ।
तुमने निजघर लेई जासे, पति मेलां पण वेगो थासे । पूर्व. ।१८।

(अञ्जना चरित्र में पूर्व भव इस प्रकार है)

पूर्व भव शोक लिखमावती, अहनिश करती हो जिनतणी सेवतो।
'सिंहरथ' पुत्र छे तेहनो, तेह पाडोसन अपहर्यो लेवतो ॥
तेरे घडी लगेटलवली, जे नहीं वीहरे न्याय करी एमतो ।
जिहां लगे पुत्र देखू नहीं, तिहां लगे अन्नपाणी तणो नेमतो।सती १४।
साधवी आयने प्रीछव्यो, ताहरा मन मांही वसीयो वैरागतो ।
आपीयो पुत्र पाये नमी, मांहे मांही ऊपन्यो धर्म नो रागतो ॥
संजम साधीने तप करयो, आलोयणा विन पड्यो एकतो फेरतो ।
कीधारे कर्म नवि छूटीये, तेरे घडीना थया वर्ष तेरतो ।सती ।१५।
तिहां थकी तुमे सुरथया. सुरथकी चवी करी राजकुंवारतो ।
साथ पाडोसण दुःख सहे, कूख तुम्हारे छे पुण्यवन्त बालतो ॥
चर्म शरीरो ए जीवडो, आगल होवसी धर्म माधारतो ।
पवनजी चरण सरण भीड़ी, कुशल घर आय करसी तुम सारतो ।स.१६

॥ ढाल मूलनी ॥

एम सुणी सुख पायो गाढो, ऋषिनू वचन सदा छे टाढो ।
पर उपकारी ऋषि पांगरीयो, गगनगति गगने संचरीयो ।पूर्व० १९।

॥ तर्ज अञ्जनारी ॥

वनमांहे भमतीरे बालिका, एतले गुफामांही गूंज्यो सिंहतो ।

गासपाडी सर्व सावजां, जाणे आपाढांरो गाजीयो मेहतो ॥
अंजणा कहै अलगी रहो, वसन्तमाला कहै मरण दो मायतो ।
जाणसे पिऊ परदेशे गई, ए संदेह टालजो अम तणो जायतो ।स. १६।
'वसन्तमाला' विरखे चढी, अंजणा आसन दृढ करी ठायतो ।
नाम जपे जगनाथनो, जाणे के ध्यान चढीयो मुनिरायतो ॥
चऊं गति जीव जीव खमावती, चार शरणा चिन्तवे मनमांयतो ।
केसरी रुठा रे स्यूं करे, माहरो धर्म नहीं लेवे रे कायतो ॥ सतीमें० १७॥
'वसन्तमाला' विरपे टलवले, धाओ २ अंजना छे निराधारतो ।
बूंव पाडीने बटकाकरे, धाओ २ वन तणा रक्षपाल तो ॥
धाओ २ सज्जनजे हुवे, धाओ २ शील तणा रखवालतो ।
कुँवरीने वाव वीदारसे, इम कही रुदन करे असरालतो ।सती.१८।

॥ ढाल मूलगी ॥

सिंह एक आयो तव चाली, थर थर धूजण लागी बाली ।
आयो तव खेचर 'मणिचूड', शरभ[1] रूप कीधूं प्रतिकूल ॥पूर्व २०॥
नाठो केसरी वार न लागी, सुन्दरीनी ए आरती भागी ।
मुनि सुव्रत जिन धर्म करन्ती, वर्ते छे शुभमति अनुसरती ॥पूर्व॥२१॥

(अञ्जना-चरित्र में सिंह का हवाला इस मुताफिक है)

तिणवन व्यन्तर जक्ष रहै, वाहर जोयण तणो रखवालतो ।
यक्षणी यक्षने इम कहै, आपणे शरणे आवी छे वे बालतो ॥
'शार्दूल' 'रूप' जक्षे कर्यो, नखकरी केसरीनी छेदी छे देहतो ।
शार्दूले सिंह पराभव्यो, कूटीने काढीयो वन तणे छेहतो ।सतीमें ।१९।
देवता साहाय शीले हुवो, आनन्द शील तणा गुण गायतो ।
नारी महूमें तू निर्मली, वेकर जोडी सुर लागो छे पायतो ॥
शीले हो शिव सुख सम्पजे, शीयल हो मिलसे तिहारो कंततो ।
थान्हिहो मामाजी आवसी, तिहां लग इनवन रहो निश्चन्ततो ।स.।२०।

॥ ढाल मूलगी ॥

दिन पूरे प्रसव्यो वर पुत्र, जाणूं बांध्यूं सबलो घर सूत्र ।

---

1. अष्टापद नामक जानवर ।

कल कला लक्षण गुण पूरो, होसे ए कुंवर अति शूरो ॥ पूर्व० ॥ २२ ॥
वृती कर्म करे उत्कर्षे, 'वसन्त तिलका' सखी सुहर्षे ।
क सखी अछे समभावी, आपदमें दुःख लेवे वटावी ॥पूर्व० २३॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

तनी आठम चांदनी, पुष्प नक्षत्र ने सोमज वारतो ।
छलो पहर रयणी तणो, अंजना जायो छे हनु रे कुँवारतो ॥
णे के सूरज ऊगीयो, स्वर्ग थी सुर करे जय २ कारतो ।
क्षस रोवावण ऊपनो, रामनो सेवक धर्म नो धारतो ॥लती २१॥
हीयर पुत्र पखालीयो, निझरणे जाय पखालीयो चीरतो ।
न पोढायोरे पाखती, सीतानो वारुहओ हनुमन्त वीरतो ॥
रखतां तृप्ती पामे नहीं. मांहो मांही वेहू सखी इम करे वाततो ।
न्म महोच्छव कहो कुणकरे, कटक चालीयोछै कुंवर तणो ताततो २२

॥ ढाल मूलगी ॥

ने आरोपीरे उच्छंग१, सुन्दरी दुःख आणे बहु भंगे ।
न करन्ती मूर्च्छा आवे, दुष्ट दैव तूं इम सुख पावे ॥पूर्व २४॥
वा सुतनो तो अति महोच्छव, घरे पितातो करतोरे महोच्छव ।
अब रांकडीए सूं थाय, ! इम चिन्तवतां हैयूं भराय ॥पूर्व २५॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

नणी रात पूनम तणी, अंजना बैठी छे सुत कर धरन्ततो ।
बल चपल सुहामणो, अतिरलीयावणो बहु गुणवन्ततो ॥
बोलावेरे मायड़ी, कुंवर तणी अछै लघुवरवेयतो ।
ांने ताकेरे वाल्हो, जाणेके चांदलो झपठीने लेयतो ॥मती मे२३॥

॥ ढाल मूलगी ॥

तिसूर्य' नामे खग एक, आवीगयो मन आणी विवेक ।
न तणूने पूछे कारण, आपणपे छे दुःखनूं वारण ॥ पूर्व ॥ २६ ॥
न्त तिलका पासे कहावे, आदि अन्तथी चरित्र सुणावे ।
भाखे हूं मामो थारो, पुत्री ! आरती सकल निवारो ॥पूर्व २७॥

ोला में ।

लगन लेईने वेला साधे, वेला साधतां मन वाधे ।
ग्रह ऊंचाछे एहना जेहवा, महोटा ने जोई जेरे तेहवा ॥पूर्व० २८॥
भाणेजी सुत सखी समेत, विमाने बेसाडी सुहेत ।
निज नगरीए चाल्यो जाय, हर्ष घणो हैडे न समाय ॥पूर्व २९॥
यान[१] तणा कंकण नो नाद, काने सुणी उपज्यो अहल्लाद ।
साहावाने उदल्लसियो जाम, माय[२] गोदथी छटकीयो ताम ॥पूर्व ३०॥
पड्यो पर्वत ऊपर आई, पर्वत चोट शक्यो न सहाई ।
बालक ने भारे चूराणो, वज्र पडे जिम तिम अधिकाणो ॥पूर्व ॥३१॥
अंजना सुन्दरी आणे दुःख, मुझ दुखियारी ने शूं सुख ।
जाण्यूं ए सुत नो मुख जोवन्त, दिनभर सुहर्ष होवन्त ॥ पूर्व ॥ ३२ ॥

३ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज नवीन रसीया ॥

म्हारो लाल गिर्यो सुकुमार लार मैं भी गिरजाऊंगी ।
मैंभी गिरजावूंगी हाय मैंभी मरजाऊँगी ॥ टेर ॥
अब नहीं हरगिज जिन्दी रहूंगी, मैं दुःख पाऊँगी ॥
लकड बाल कर जालो जाल में, मैं जल जाऊंगी ॥ म्हारो ॥ १ ॥
जब तक लाल नहीं देखूंगी, अति दुःख पाऊंगी ॥
हा ? कर्मो ने यह क्या कीना, किम शान्ति मनाऊंगी ॥ म्हारो ॥ २ ।

(ढाल मूलगी)

पाछलथी मामो अति धसीयो, बालक ने देखी मन हसियो ।
आंचन आई कोई दीसे, पूण्यवन्तए बीश्वावीशे ॥ पूर्व० ३३ ॥
माताने आणी सुत आप्यो, माताए हैडे सुत थाप्यो ।
हरखन कोई पुत्र सरीखो, पुत्रहीथी नाम निरीखो ॥ पूर्व० ३४ ॥
'हनुपुर' पुरवर उच्छव ठाणे, भाणेजी ने मन्दिर आणे ।
सयल कुटुम्ब तणूं मनमानी, कुलदेवी जिम तिम सन्मानी ॥पूर्व.३५॥
मामे नाम दीधूं हनुमान[४], चन्द्रकला जिम वधतूं वान ।

१ विमान । २ माताना खोलामाथी । ३ सती अञ्जना से । ४ जन्म्यापछी तुरत ते बालक 'हनुपुर' मां आव्यो, तेथी तेना मामाए तेनूं नाम हनुमान पाड्यूं ।

ल[१] चूर वे अपर विधान, प्रगट मल्यू 'श्री शैल' प्रधान ।पूर्व.३६।
जहंस जेम क्रीड़ा करतो, वाधे अंगज आनन्द धरतो ॥
शमीढाल कही समभावे, 'केशराज' ने सांच सुहावे ॥पूर्व०३७॥

मुनि श्री रूपचंद्रजी महाराज कृत.

॥ ढाल क्षेपक तर्ज-छोटोसो बलमों मेरे आंगणा मे गिल्ली खेले ॥

छोटोसो हनुमन्त मेरे आंगणा में रिमझिम खेले ॥
इत उत दौडी जाय कुंवर माताजी झेले ॥ टेर ॥
लक्षण अंगे विराजता, उत्तम अलबेले ।
चाले चाल मराल यों ठमके पगमेले ॥ छोटोसो ॥ १ ॥
घमके घूघरीया पगमें फूठरा कानोंमें झेले ।
रुदन करे तब बाल मात गोदी में लेले ॥छोटोसो ॥ २ ॥
मुक्ता झटित मस्तक टोपली मोतियन को गेरे ।
माता लुकजावे अन्दर महिलके जब हनुमंत हेरे ॥ छोटोसो ॥३॥
पहीरणने फावे अम्बर फूटरे लपियन के घेरे ।
हँस २ रमतो बाल ख्याल कर चक्री ने फेरे ॥छोटोसो॥४॥

॥ दोहा (सोरठा रागे)

सुत मुख निरखवा हरख अति. फरि अरती अह्लोल[२] ।
साल सरीखा माल ही. जो शिर चढ्या कुबोल ॥ १ ॥
सो दिन कब ही आवसे. घर आवे भरतार ।
· लोकां मांही ऊजली. कद करसे करतार ॥ २ ॥

॥ तर्ज-अञ्जनारी ॥

ाजना' 'हनुमंत' इहांरहे, पवनजी, कटकले पहुंता सनूरतो ॥
ाकर 'रावण' से मिल्या, लेई बीडोने चालियो शूरतो ॥
धीया 'खर' 'दुखर' छोडावजो. तिहां मनावजो हमतणी आणनो ॥
टकलेई कर संचर्यो, मेघपुरी. कीयो जाय मेलाणनो ॥मती२४॥

शैल (पर्वत) ने चूरवाथी "श्री शैल" एवं प्रगट अने प्रधान (म्होटू)
ार विधान (बीजूं नाम) मल्यू । २ अत्यन्त । अतिशय—

'वरण' राजा तिहां आवीयो, सामुहो वर्षे छे बाणांनों मेहतो ॥
'पवनजी' पांव न चातरे, मांहांमाही शूर जूंजेछे तेहतो॥
वरसदिवस झगडो रयो, मांहांमांही वेहूं जणा कीधोछे मेलतो ॥
वांधीया 'खर' दुखर छोडावीया, आंण रावण तणी लीधीछे झेलतो २५

— दोहा —

'पवनंजय' परगट पणे, वरुण जीती वड राय ।
'खर' 'दुषण' छोडावीया, रावण ने सुखथाय ॥ ३ ॥
'रावण' 'लंका' आवीयो, 'पवनंजय' पगे लागी ।
घर आवणने ऊमह्यो, प्रभुनी अनुमति मांगी ॥ ४ ॥
मतपिता पग प्रणमीया, नारी निरखण नेह ।
अकुलाणो अणदेखवे, मनमें अति अन्देह[१] ॥ ५ ॥

॥ ढाल ग्यारहवीं—तर्जः—रायखेंगारना गीतनी ॥

पूछयूं हो पूछयूं कोई नारी, भाखे हो भाखे भूप प्रते भलोए ।
सुन्दरी हो सुन्दरी केरीवात, वातज हो वातज सहु तुमे सांभलोए ।१।
गर्भ हो गर्भ तणे अहिनाण[२], देखी हो देखी खीजी सासुखरीए ।
जाणी हो जाणी वात विरोध, काढी हो काढी सा घर बाहीरे ए॥२॥
आरक्ष हो आरक्ष पुरषों साथ, पीहर हो पीयरीए सा मोकलीए ।
आगे हो आगे जाणे देव, वीतकहो वीतक चितसे चलीए ॥३॥

दोहा—एह वात श्रवणेसुणी, कोप्यो पवन कुंवार ।
हा हा मायन सूं कीयो, कीजे कवण विचार ॥ १ ॥
माता धड़हड़ धूजती, आई पुत्र की लार ।
गदगद हो वाणी वदे, सुन जाया सुकुमार ॥ २ ॥

॥ ढाल चंपक तर्ज—हां मगीजी ने पेड़ा भावे ॥

हां[३] लाल ? सुन अर्ज हमारी, काया कम्पे कहतां सारी ।
क्या कहूं हा ? हकनाक सती में विपदा डारी रे ॥ टेर ॥

१ फारसी नो शब्द छे तेनो मूल शब्द अन्देशह-अन्देशो छे, तेनो अर्थ सन्देह (शक) थाय छे । २ एधाण निशानी । ३ सती अंजना से ।

गर्भ देख मैंने ललकारी, ऊँची टेर सखी को मारी ।
कहा सतीने खूब मुझे हा कर लाचारी रे ॥ लाल ॥ १ ॥
तो भी मुझे दया नहीं आई, कैसी कुमति ऊँधी छाई ।
करके काला भेष देश के वार निकाली रे ॥ लाल ॥ २ ॥
पाछल बुद्धि नार कहावे, उणमें अकल कठासूं आवे ।
हां वेगम की जात रहै नहीं गम हित कारी रे ॥ लाल ॥ ३ ॥

दोहा–पवन श्रवण कर शीघ्र ही, प्रजल्यो कोप मझार ।
पर माता को देख के, वोला वचन विचार ॥ १ ॥

१ ढाल त्तेपक तर्ज–नवीन रसिया ।
माता ! जवर जुलम कर डार्यो वनमें भेजी दो सतियों ॥ टेर ॥
अगर तुझे था निर्णय करना देनीथी पत्तियों ॥
जैसी हुई थी वैसी मैया लिखदेता वतियों ॥ माता ॥ १ ॥
मैया तूं है समझदार क्यों छाई कुमतियों ॥
सतियों की हा दया न लाई, गजव करी गतियों ॥ माता ॥ २ ॥

दोहा–यों कह चाले पवनजी, आई माता दौड ॥
हाथ पकर कर लाल का, वोली वेकर जोड़ ॥ १ ॥
भूल हमारी पुत्र भूलकर, करिये भोजन चाल ।
पीहर होसी वीनणी, लेसां सार सम्भाल ॥ २ ॥

२ ढाल त्तेपक तर्ज–पाणीड़ो भरवादे ।
मैया मत करिये लाचार, झटपट जावणदो ॥ टेर ॥
भोजन माता किस विध भावे, जीव मेरा तो अति घवरावे॥
आवे दुःख अपार ॥ झटपट ॥ १ ॥
नारी विना नहीं नीर पीऊंगा, प्यारी विना अव नहीं जीऊंगा ॥
मरसूं खाय कटार ॥ झटपट ॥ २ ॥
माता का झट हाथ छुडाकर, अपने मित्रों के महिलां आकर ॥
वोला यों ललकार ॥ झटपट ॥ ३ ॥

---

१ सती अञ्जना से । २ सखी अञ्जना से ।

१ ढाल क्षेपक तर्ज–लङ्गड़ी चाल।

जोगी धन तन रस्मी रमाऊं, प्यारी ढूंढ कर लाऊंगा।
जो न मिले नार यार में, जहर खाय मरजाऊंगा॥ टेर॥
सती विनां यह दुनियों सारी, मुझको झूंठी लखाती है॥
बिना सती के गती हमारी, दिन २ बिगड़ी जाती है॥
प्यारी बिना क्या महल अटारी, खाना सोना पीना क्या॥
बिना प्रिया के सांच कहूं में, जगत् बीच में जीना क्या॥
मरी हुई या जीती है, यह खास खबर ले आऊंगा॥जोगी॥ १॥
दोहा–मित्र कहै सुन पवन कुंवरजी. यों मत करो खयाल।
चलो शीघ्र कीजे खबर, जाकर निज सुसराल॥ १॥

तर्ज–अञ्जनारी।

पवनजी कहै मित्र ! माहरा, राय राणी ने किम करूं परणामतो।
माता ए अंजना परहरी, सासरा विच म्हारी निर्गमी मामतो॥
बरस दिवस विग्रह हुवा, राजा हो वरुण मामो थयो जुञ्जतो।
बांध्या 'खर दुषण' छोड़ाविया, तेह तणी किण आगे करस्यूरे गुञ्जतो२६
मित्र कहै मती निर्मली, अवगुण आपरा काढसी जोयतो॥
गुण तोरे परतणा शिखहै, एहवी नारी नवि दीठेरे कोयतो॥
पहिला माही नहीं जावसां, अलगा थका हो कहावो जुहारतो॥
पवनजी आणेरे आवीया. अंजना पीहर पड़ी रे पुकारतो।सती२७।
'महेन्द्र' कहै हूं पापीयो. कर्म कसाईनो कीधा तो काज तो॥
हांजीया लोक म्हारे घणा, डावो नर कोई नहीं दीसे छे आजतो॥
मीरवनी वात कोई ना कहीं, तो मन माहरी उतरती रीसतो॥
नरक नीयांणो में बांधीयो, इण कर्मे केम छूटूं जगदीशतो।सती२८।
पवनजी आणेरे आवीया, सांभल सासु उर पड़ी झालतो॥
हीयो हणे दोउ हाथ सूं, उदर आधान तूं किहां गई बालतो॥
ऊभी थकी गिर आफले, जाणे छे कर भरे लागे छे बाणतो॥

---

१ सती अञ्जना से।

पुत्रीनो दुःख साले घणो, अजहु न छूटा किम रह्या प्राणतो॥२९
सेना मेली कर संचर्या, सुसरा जमाई ने सामो जायतो ॥
अति दुःख रायने सम्भवे, मन मांही पुत्रीनो अति घणो दाहतो
घरमें न राखी रे अध घड़ो, कालो मुख थई मिलीयो नरेशतो।
पवनजी यहां रे पधारीया, महेन्द्र कहै मैं किसो उत्तर देसतो॥३०
नगरी मांही पधरावीया, मर्दनीया मर्दे छे तेल चम्पेलतो॥
निर्मल नीर अंघोलीया, जीमण वैठा छे वेजणा छेलतो॥
भोजन त्रिविध पर पुरसीया, सोवन थाल ने विछावीयो पाटतो।
पवनजी हाथ खेंची रह्या, चउदिश अंजनानी जोवे छे वाटतो॥३१
अंजना जाई रे बालिका, पुत्र जायांनी वधामणी थायतो ॥
वसन्तमाला रे दीसे नहीं, वा पण कीहां रही रे छिपायतो ॥
सासने घर पड्यो पीटणो, मांहो मांही वेऊँ मिलो इम करे वाततो।
अंजना ने सासुरे दुहवी, पीयर आवीने करी अपघाततो ।सती॥३२
साला तणी सुत नांनडो, लेई उत्संगे वेसाडी छे बालतो ॥
कह थारी फूंहो रे शूं करे, तिवारे रुदन करो कहै ततकालतो ॥
मात पिता ए वंधवा, पापीये कीधो छे कर्म चण्डालतो॥
आंगणे न राखी रे अधघडी, कलङ्क देई करी काढी छे वाग्नो॥३३

१ ढाल क्षेपक तर्ज—आखिर नार पराई है।

इक दिन फूंफी आई थी, पिता नहीं वतलाई थी ॥ टेर ॥
माता से उणकरी पुकार, फिरी फेर सो बन्धव द्वार॥
सबने वार कढाई थी ॥ इक दिन० ॥ १ ॥
फूंफी का लख काला वेष, राजा राणी करीयो द्वेष॥
प्यासीने निकलाई थी ॥ एक दिन० ॥ २ ॥
कोई मति इणने वतलावो, भोजन और पाणी मत पावो॥
एसी आण फिराई थी ॥ इक दिन० ॥ ३ ॥

१ सती अंजना से।

तर्ज—अञ्जनारी ।

चालनो वयण श्रवणे सुणी, माथा पर फेरवीने फेंकीयों थालतो ॥
महैन्द्र आवी पाए नम्यो, मंत्री कहै तुमे कर्म चण्डालतो ॥
ऊठो स्वामी क्यों बैठी रह्या, जीवती मूईनी कीजीये सारतो ॥
राजाना लोक वरजे घणा, तो पिण आया छे नगरने बारतो॥३४॥
वनमांही कुंवरजी टलवले, किहां गई दान दया तणी वेलतो ॥
किहां गई धर्मनी धूंसरी, किहां गई शील सन्तोपनी वेलतो ॥
आवोनी नार आगल रहो, ताहरा मुखतणूं जोवूँ छूं स्वरूपतो ॥
कटक थी कुशले हूं आवीयो, इम कही रुदन करे बहु भूपतो ।३५।

॥ ढाल मूलगी ॥

वज्र हो वज्र समो ए बोल, निसुणीहो निखुणी सासरड़े आव्यो सहीए ॥ सुसरोहो सुसरो बोलेएम, आवीहो आवी पण राखी नहीं ए ॥ ४ ॥ जङ्गल हो जङ्गल मांहे जाई, गिरिहो गिरि गिरि तरु तरु जोईया ए ॥ शुद्धि न हो शुद्धि न पामी कोय, आपण हो आपण उदासी होईयाए ॥ ५ ॥ मित्रजहो 'प्रहसित' नामे उदार, साथे हो साथे वदे वसुधा घणीए ॥ जाई हो जाई तूँहिज आप, बापज हो बाप अने माता भणीए ॥ ६ ॥ इमजहो इम कही तूं आव. लावीहो लाधी नहीं छे सुन्दरीए ॥ घट[१]हो ए घटकेरो होम, करवोहो वांछे प्रभु निश्चय करीए ॥ ७ ॥ सुणतांहो सुणतां ए विपरीत, माताहो माता मूर्छाणी घणीए ॥ शीतलहो शीतल करी उपचार, मूर्छांहो मेटी माताजी तणीए ॥ ८ ॥ मित्रजहो मित्र संघाते नाम, माताहो माता ओलम्भो दीए एटलोए ॥ वालो हो वालो थारो विशेष, कांईहो कांई ने वीरो मेल्यो एकलोए ॥९॥ साचोहो साचो दैव विचार, आपणहो आप कीयां फल भोगवूंए ॥ विणठी हो विणठी वात अपार, सुतनेहो सुतने क्यूं करी जोगवूंए ॥ १० ॥ रोवेहो रोवे सा असराल, नयणांहो नयण प्रनाला जिम

१ शरीर ।

हैए ॥ ए जगहो ए जग महोटो न्याय, जेहेवो हो जेछे तेहवो
ल लहैए ॥ ११ ॥ राजाहो राजा बहुले साथ, चाल्योहो चाल्यो
त्र गवेषणेए ॥ खेचर हो खेचर लेई हजार, धायाहो धाया सुत
ोधण भणीए ॥ १२ ॥ लाकडहो लाकड खडकी जाम, जम्या
ो जम्या वेछे जेटलेए ॥ पूर्वहो पूर्व पुण्य प्रमाण, तातजीहो तातजी
ायो तेटलेए ॥ १३ ॥

॥ तर्ज-अंजनारी ॥

महेन्द्र' राय तिहां आवीयो, नारी सहित आयो राय 'प्रहह्लादतो'॥
वनजीने आय बांहे धर्या, कांई रे कायर तूं मूकीछे लाजतो ॥
कर्म थी बलीयोरे को नहीं, पेट चील्हरती आई अंजनानी मायतो॥
राजाहो चरणसूं रणभडया, अति दुःख करतां ऊखड़े घायतो ॥२६॥

॥ ढाल-मूलगी ॥

साहिहो साहि राख्यो सोई, लाकडहो लाकड़ अलगा नांखीयाए॥
जीवतहो जीवतने कल्याण, हेतजहो हेत घणो कही दाखीयाए
॥ १४ ॥ अबलाहो अबलानो ए काम, सबला हो सबलातो एम
केम करेए ॥ थारीहो थारी तो एमाय, तुझविणहो तुझविण तो
निश्चय मरेए ॥ १५ ॥ खेचरहो सोधन गया था जेह, हनुपुर हो
हनुपुर वरे आवीयाए ॥ सुन्दरीहो सुन्दरीने पगेलागी, वीतकहो
वीतक सहु सुणावीयाए ॥ १६ ॥ विन्हल हो विन्हल अधिकोहोय,
घटमे हो घटमे थो प्रभु आगमेंए ॥ लिखियोहो लिखियो तुझ
भरतार, करताहो करतारे तुझ भागमेंए ॥ १७ ॥ एटलेहो एटले
आयो तात, राख्यो हो राख्यो मरचाथी तुझनायकूए ॥ चिन्ते हो
चिन्ते मनही मझार, पापिणीहो पापिणी पति दुःखदायकूए ॥१८॥
'मामाहो मामा निसुणी एह, ऊंही वने हो ऊंही वने वेगो जाईयेए॥
पति हो पति ने देई तोप, कांई हो कांई एवा ओरण धाईयेए ॥
१९ ॥ रचियूं हो रचियू ताम विमान, जाणे हो जाणे ऊग्यो दिन-
पतीए ॥ मामोहो मामोजीने आप, सुतसूं हो सुतसूं चाल्यो मा

सतीए ॥२०॥ सोधत हो सोधत वन उद्यान, भूपज हो भूपज वने आया चलीए॥ मित्रेहो मित्रे दीठो ताम विमान, भूपतिहो भूपति सूं भाखे भलीए ॥ २१ ॥ आपो हो आपो मुझने ईश, आछी हो आछी आज वधामणीए॥ नयणे हो नयणे निरखी नारी, नन्दन हो नन्दन नंद शिरोमणीए ॥ २२ ॥ अमृत हो अमृत वूठ्यो मेह, चिन्तवण हो चिन्तवण चिन्ते चाहसूंए ॥ प्रणमें हो प्रणमें सुसरा पाय, नयणां हो नयणां तेह उमाहसूंए ॥ २३ ॥ नन्दन हो नन्दन लीधो गोद, रूड़ो हो रूड़ोने रलियामणोए ॥ रह्यो हो रह्यो कण्ठ लगाय, सुन्दर हो सुन्दर ने सुहामणोए ॥ २४ ॥ वारु हो वारु वार वखाण, वहुअर हो वहुअरने मामा तणोए ॥ प्रभुजी हो प्रभु जी तुम परसाद, अमघर हो अमघर रंगवधामणोए ॥ २५ ॥ सुन्दरीहो सुन्दरी ना मा वाप, भाई हो भाई भोजाई सहुए ॥ माताहो केतुमति पण आप, साजन हो साजन आवी मिल्या बहु ए ॥ २६ ॥ हनुपुर हो हनुपर पुरवरे आय, ओच्छव हो ओच्छव अधिको मांडीयोए ॥ भोजन हो भोजन वर तम्बोल, दानेहो दाने दारिद्र खांडीयोए ॥ २७ ॥ दिन दस हो दिन दस तांई ताम, साजनहो साजन सहु ए गहगहेए ॥ पहूंता हो पहूंता निज २ गेह, प्रभुजी हो बहु सुतसूं रे तिहां रहेए ॥ २८ ॥

(अंजना चरित्र में पवनंजय का अंजना से मिलना इस प्रकार है)

आगल पवनजी चालीया, पूठे थकी आयो सहु साथतो ॥
आवतां सहियर ओलख्यो, एहछे स्वामीनी आंपणो नाथतो ॥
अंजना आई पावे पडी. खोले वेमावीयो हनुरे कुंआरतो ॥
घडीयक पुत्र मामो जुवे. घडीयक जोवेछे अंजना नारतो ॥
पवनजी आनंद पामी रह्या, एहवो सुख नहीं दीठोरे संसारतो॥३७॥
वसन्तमालाजी पाएनमी, ओटले घाली लीधी हीया मझारतो ॥
कहो वाई तुम दुःख किमसया, किमकर महो म्हारी मायनी मारतो॥
किम करी वनफल वीणीया, किमकर पर्वत रह्या निराधारतो ॥

श्रीसेठिया जैन ग्रन्थालय
बीकानेर

अंजना पुत्र किम जन्मीयो. किमकर नीगम्यो दुःखभर्यो कालतो ।स३८
जिवारे स्वामी थे कटकेगया, सासरा पीयर म्हांने दीनोंछे छेहतो ।
तिवारे ऊठीने अमें वनगया, वनफल खावरी राखीछे देहतो ॥
वनमांही मुनिवर भेटीया, देवता कीधीछे अम्ह तणी सारतो ।
धर्म करतां सुत जन्मीयो, अंजनागुण तणो नहीं लहूं पारतो ।सती ३९।
धिन मुख दीठोछे तुम्हतणो, वेऊं सखी बोलेछे मधुरीतो वाणतो ।
किम करी सैन्यमें संचर्या, किम कर सह्या राजा वरुणना बाणतो ।
'खर' 'दूषण' केम छोडावीया, पवनजी चोतक दीयो सुणाय तो ।
जुज्ज करीने ऊवर्या, अति सुख ऊपन्यो अंग न मायतो ।सती ४०।
अंजना सामीरे संचरी, सासु सुसरा तणे लागी छे पायतो ।
पीयरीया आय सहु मिल्या, हस्त वदन रह्या सहुरे खमायतो ॥
अंजना कहै सहु सांभलो, मनमांही माहरी मत करो लाजतो ।
कर्म म्हारारे हूं वनगई, हर्ष वदन थई सहु मिलो आजतो ।सती ४१
हनुरे पाटण थकी संचर्या, अंजनाने आपीछे अति घणी आथतो ।
मामाजी आया पहोंचावना, रतनपुरी लग आयो सहु साथतो ॥
सामीहो परजा हो पग्वरी, लेई पधरावीया उत्तम ठायतो ।
पवनजी पाट वैसारने. राय राणी बेहूं तत्र वन जायतो ।सती ४२।

—: ढाल मूलगी :—

कुंवरहो कुंवर आचार्यजीने पास, पढियोहो पढियो पाठ अनेकनेए ।
बहुतेरहो बहुतेरही विज्ञान. जाणेहो जाणे विनय विवेकनेए ॥२९॥
विद्याहो विद्या साधन कीध, हुवोहो हुवो अधिक मकाजजीए ।
ढालजहो ढालज इग्यारवींएह, भाखेहो भाखे मुनि केशराजजीए ।३०।

दोहा (रामग्री रागे)

वरुण प्रत्ये रावण चली. मेले कटक अपार ।
'प्रति सूरज' ने 'पवननृप' बोलाव्या तिणवार ॥१॥
दोई भूपति चालतां. नीपेधी हनुमान ।
चाल्यो आडम्बर घणे. रीझाया राजान ॥२॥
सुग्रीवादिक खेचरा, वरुण साथे संग्राम ।

रावण ने वरुणात्मज, वाज्या ताम दुदाम ॥३॥

—: तर्ज—अंजनारी :—

रावण सेना देखी करी, पुत्र सो वरुण ना आवीया सोयतो ।
आगना ऊडेरे अङ्गारीया, लोह ना वाण करी आफले दोयतो ॥
सामाहो सुभटज आवीया, खेंचोया धनुष्यने सांधीया वाणतो ।
रोस चढ्या रण आफले, जोम सहित वोले इम वाणतो ॥सती४३॥
माताहो वैरण तुमतणी, तातने अलखावणो नांनडो वालतो ।
जो मुख आवेरे वरणने, जिण दिन खूटसी ताहरो कालतो ॥
वलतोहो हनुमन्त इम कहे, वंधव सोमीली आवीया साथतो ।
बोल साचो करी मानस्यूं, जद वावरसो रणमांहि हाथतो ॥सती४४॥
वांदरी विद्या साधीकरी, वन्दर रूप कीयो तिणवारतो ।
हाक करी दल हाकवे, वार जोजन लगे वाजे धूंकारतो ॥
हाके करी सेनाहो थरहरी, वृक्ष उखेडीने नांखेछे घायतो ।
पूछ फेरी करी एकठा, पुत्रसो वांधी नांख्या रणमांयतो ॥सती ४५॥

दोहा—सेना दल लेईकरी, चढियो वरुण नरेश ॥
हनुमन्त तेपिण सज्जथयो, सेना सवल विशेष ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज खड़का—

दोनोंई कटक सटक भेला हुआ, जोयण एक नो वीच राखे ।
राग सिंधु गाईयो पोरस चढाईयो, कायर नर तिहां खाल ताखे ॥१॥
हनुमन्त वीर अति धीर रण में वणो ॥ टेर ॥
निज २ मोरचे सुभट रग रोपीया, तीर सणणाट कर मेह वरसे ॥
भलल कर वार कर खलल लोही वहे, शिर विना शूर नर लडे धरसे ॥
तिमिर वाणे करी तिमिर फेलावीयो, लावीयो हनुमन्त रोस भारी ॥
सूर्य वाणे करी तिमिर नासीगयो, तुरत उद्योत थयो जगत् जहारी ॥
वरुण नृप आय हनुमन्त साथे भडयो, लडत है विविध आयुध धारी ॥
हनुमन्त योध उद्दन्त वलवन्त अति, वरुणना धनुष्यने तोडी डारी ॥
अगन वाण मेलीयो जलधर ठेलीयो, फेलीयो कपिदल जोर करने ॥
हाक दल हाकवे नंक नहीं राखवे, आखवे अव किम जाय टरने ॥

तर्ज—अंजनारी

रथ थकी राजा हो ऊतरयो, आविने हनुमन्त दीधी छै बाथ तो।
चोटी ना बाल ते कर ग्रही, मूठीना प्रहार रु वाजे छै हाथ तो।
चपल चपेटारे वावरे, हनुमन्त ऊपरे बैठो छै रायतो।
'रावण' हनुमन्त ऊपर कीयो, वरुणने बांधी नोख्यो रथ मांयतो।

(दोहा)

नन्दन वरुण तणेघणो, खेडयो रावण जाम।
हनुमन्ते ते बांधीयो, विद्याने बले ताम ॥ ४ ॥
'हनुमन्त' ऊपर वरुणजी, आवे होई विकराल।
'रावण' रोसकरी घणो, जीत्यो ते ततकाल ॥ ५ ॥
जीत्यो वरुण विशेष थी, नृपने करे जुहार।
थाप्यो थानक तेहने, अब नहीं खुनस लगार ॥ ६ ॥
'वरुण' घेर छे कन्यका, सत्यवती तसु नाम।
परणावी हनुमन्तने, जाणी वर अभिराम ॥ ७ ॥
पुत्री शूर्पनखा तणी, अनंग कुसुमा नाम।
हनुमन्तने विवाह मही, रावण जाणी सकाम ॥ ८ ॥
'पद्मसुरागा' पुत्रिका, वानर पतिने जोई।
'नलराजा' हरिमालिनी, परणावी ए दोई ॥ ९ ॥
अनेरे विद्याधरे, पुत्री एक हजार।
परणावी हनुमन्तने, धर्मे सदा जयकार ॥ १० ॥
रावणना आदर लही, परणे नारी अमन्द।
हनुमन्त आव्यो निज घरे, मातपिता आनन्द ॥ ११ ॥

तर्ज—अंजनारी

पाछली पहर रयणी तणो, धर्म चिन्ता करे अंजना देवतो।
चारित्र लेवारे चित्त थयो, पवनजीरे पाव लागी ततखेवतो॥
जन्म मरण दुःख दोहीला, जोग विजोग संसार कलेसतो।
पवन कहै हनुमन्त नांनडो, संयम लेवजो वृद्धने वेसतो ॥स.४७
विलम्ब तो स्वामीजी जे करे, नेहने काल को हुवे विसवास तो।

विषयना सुख पूरा हुवा, संयम लेवातणी मन आसतो ॥
इम सुणी राय वैरागीयो, हनुमन्त ने कहै मत कर तूं अन्दोहतो ॥
माताना चरण झालीरया. मायतों ऊपरे है घणो मोहतो ॥स.४८॥
पुत्र समझावी संयम लीयो, अंजना राय खमावती सोयतो ।
छेड़ो छोडी करी संचर्या, हम तुम देवो लेवो नहीं कोयतो ॥
पवनजी मुनिव्रत आदर्या, तपकर पामसी शिवपुर ठामतो ।
अंजना गुरुणी पासे गई, वसन्त माला साथे थई नामतो ॥स. ४९॥
लोचकरी संयम लीयो कर्म तणी वेऊं तोडे छे कोडतो ।
आभरण लेई सुत ऊदासीयो. सुग्रीव सुता समझावे कर जोड़तो ॥
अंजना कीरीया करे घणी, माम २ तप पारणो धारतो ।
मांस ने लोही सूकी गयो, लीलडी चाम दीसे नसाजालतो । म. ।५०।
अनशन करीने अराधीया, वेहूं सती पोतीछे स्वर्ग मझारतो ।
चवनेहो मोक्ष सिधावसी, इम कहै शीयल ग्रंथे अधिकारतो ॥
एह कथारे इहांरही, आगल सांभलो सीता अधिकारतो ।
सत्यवतीरे सांची सती, जगत माताने रामनी नारतो ॥स. ॥५१॥

—' दोहा .—

अब मिथीला नगरी भली, हरिवंशी राजान ॥
'वासवकेतु' सुहामणो, 'विपुला' नारी सुजान ॥१२॥
तेज प्रतापे आगलो, जनक नामे जग जोय ॥
प्रजाने पालण भणी, जनक सारीखो होय ॥१३॥

॥ ढाल बारहवीं तर्ज—चौपाई ॥

पुरी 'अयोध्या' प्रगटे नाम, राज्य करे 'आदेश्वर' स्वाम ॥
'सुनन्दा' 'सुमङ्गला' वली, नारी निरूपम गुण आगली ॥ १ ॥
'सुमङ्गला' ना जाया नन्द, नवाणूं आनन्द ना कन्द ॥
'सुनन्दा' ए जायो एक, 'बाहुबल' तसु अविचल टेक ॥ २ ॥
सो पुत्रों में मोटो सही, पाटोधर 'भरतेसर' सही ॥
सवा कोड़ी नन्दन जेहने, 'सूर्यजशा' मुखियो तेहने ॥ ३ ॥
'सूर्यजशा' थी 'सूरजवंश', पृथिवी मांहे अधिक प्रशंस ।

पुरुष असंख्य हुवा तेटले. मुनि सुव्रत' वारे जेटले ॥ ४ ॥
'विजय' राय मोटो राजान, 'हिमचूला' तसु नारी प्रधान ॥
जाया नन्दन नीका[१] दोय' 'वज्रबाहु' 'पुरन्दर' जोय ॥ ५ ॥
नगर 'अहिपुर[२]' छे अभिराम, 'हिमवाहन[३]' राजानूं नाम ॥
'चूडामणी' नामे घर नार, 'पुत्री' 'मनोरमा' है सुविचार ॥ ६ ॥
'वज्रबाहु सूं' कीधो विवाह, मनमां आणी अति उत्साह ॥
सुन्दरी लेई चाल्यो जाम, 'उदय सुन्दर' सालो ताम ॥ ७ ॥
पोंचावणने हुवो साथ, प्राती भणो लीधो नर नाथ ॥
वाटे 'गुण सागर' ऋषिराय, दीठा दौडी लाग्यो पाय ॥ ८ ॥
वारोवार प्रशंसा करे, भव-दुःखथी आतम उद्धरे ॥
दर्शन दीठो ऋषिराजनो, धन्य धन्य हो वासर[४] आजनो ॥ ९ ॥
हांसी मिसे सालो कहे एम, घणूं घणूं प्रशंसा केम ?
जाणूं लेसो संयम भार, कुंवर कहे अम एह विचार ॥ १० ॥
सालो भाखे ढील है कांई, दिवस गयो फरी नावे प्राही[५] ॥
संयम साथे विमासण कीसी, म्हारे मन पिण एहीज वसी ॥११॥
कुंवर कहे ए सघली मही, वात विसेखे लीधी वही ॥
तूं मत चूके बोली वाच, सालो भाखे जाणों साच ॥ १२ ॥
संयम लेवा थयो होंसीयार. ऋषिने कहे नारो संसार ॥
सालो कहे कां सच्चो करो, विवाह तणा गीत मनमां धरो॥१३॥
कंकण नवि छुट्यो ताहरो, एह मनोरथ झूठो खरो ॥
तुजपियु पाख[६] एसुन्दरी, मरीजासे दुःख भारे भरी ॥ १४ ॥
कुंवर कहे कुलवन्ती एह. नाह[७] सरिखो राखे नेह ॥
तोते कां न संयम आदरे. नारी नाह करणी अनुसरे ॥ १५ ॥
तूं तारी भगनी समजाव. तूं पण संयम मारगे आव ॥

१ ए हिन्दुस्थानी शब्द छे, सरल, उत्तम । २ नागपुर (जैन रामायण) ३ इभवाहन (जैन रामायणे) । ४ दिन । ५ एनो अर्थ "पाछू फरीने" एवो थाय छे, पण आ ठेकाणे मात्र अनुप्रास मेलववा अर्थेज वापर्यो जणाय छे (प्रायः प्राये) । ६ विना । ७ मुग्धि ।

दुःख पूर्वक सांसारिक सुख, पाछू ही देखावे दुःख ॥ १६ ॥
नारी नाह ने सालो साथ, व्रत लीधां 'गुण सागर' हाथ ॥
अवरही कुंवर पणवीश, चरण ग्रहै तव वीक्षा चीश ॥ १७ ॥
हांसी थकी ऊपजीयो धर्म, धर्म थकी लेसे शिव शर्म ॥
सोही सगो जगमांहो भलो, धर्म करावे उतावलो ॥ १८ ॥
एह सुणी थी 'विजय' नरेश, वैरागे मन आणी विशेष ॥
'पुरन्दर' ने देई राज. राजाए मार्या निज काज ॥ १६ ॥
'पुरन्दर' सुत सोहामणो. जायो 'पृथिवी' राणी तणो ॥
'कीर्तिधर' ने पदवी दीध, राजाए संयम व्रत लीध ॥ २० ॥
'कीर्तिधर' नृप उदासीयो, संयम साथे मन वासीयो ॥
नकरे राज्य तणी सम्भाल. मंत्रीश्वर भाखे सुविशाल ॥ २१ ॥
जवघर ऊपजे नन्दन आय, तव तुम संयम लेवो राय ॥
भूप घणाए पाल्यू राज, तुम पगथी जावे छे आज ॥ २२ ॥
न्हानाही लोकोए सोच, तुम मन केम न करो आलोच ?॥
जेहने पाछल नहीं सन्तान, तेहना घरतो कह्या मसाण ॥ २३ ॥
एम सुणन्तां ढील्लो पड्यो, विषय सुख ऊपर मन अड्यो ॥
'महदेवी' नामे कामीनी, भाग्य वतीछे भली भामिनी ॥ २४ ॥
'सुकोशल' सुत ऊपन्यो जिसे, गुप्तपणेसो राख्यो तिसे ॥
जाण्यू नृप थासे संयमी, राजऋद्धि रमणीने वमी ॥ २५ ॥
जाण्यो राजा भेद जेचार. सुतने सोंप्यो पृथिवी भार ॥
समतारस माणे चित्तधरी, गयेवरी तव संजम सीरी ॥ २६ ॥
एह बारमीं ढाल अनूप, संयम व्रत पाले भलो भूप ॥
'केश राज' ऋषिराज वखाण, करतां थाए जन्म प्रमाण ॥ २७ ॥

—दोहा सिन्धु रागे —

भण्यो गुण्यो मति आगल्यो, करतो उग्र विहार ।
दिन केताने आंतरे, फरतो सो अणगार ॥ १ ॥
पुरि अयोध्या आवीयो. लेवा काजे आहार ।
मध्य दहाड़े तावडे, हिंडे घर घर बार ॥ २ ॥

अथामें मारवाड़ी मंत्री शांतमूर्ति श्रीचौथमलजी म. सा. विनिर्मिता कीर्तिध
चौपाई (प्रक्षेप) ढाल पहीली (प्रक्षेप) तर्ज-गर्व मति कररे—

असि आ उ सा युत ॐकारं, अलख अज अखण्ड अविकारं, अजपा जापहिये धारं, कहूंकथा 'कीर्तिधर' *मुनिकी, राणी है 'सहदेवी' उनकी ॥ १ ॥ जुलम मति कररे मेरी जान जुलम० जुलम से बहुत खराबी है, जुलम से शिव की ना भी है, पावे दुःख घात आबी है ॥ जुलम ॥ टेर ॥ 'अयोध्या' अवनी पति आछो, कीर्तिधर जाण्यो जग काचो, प्रवर्ज्या ले आयो पाछो, भूखा मुनि एक मासहूका, लेणकूं आये वहां टूका ॥ जुलम ॥ २ ॥

ढाल तेरहवीं तर्ज—देश सोरठ द्वारापुरी—

अई अई कर्म विटम्बना, राणी राजा लारोरे,
आप करे अविनय घणो, ए म्होटो अविचारोरे ॥ अई ॥ १ ॥
गोखे बेठी गोरड़ी, नगर निहालण हेतो रे,
फरतो ऋषि अवलोकीयो 'कडुआंणो[1] तसनेतोरे ॥ अई ॥ २ ॥
आप गयो मुजने तजी, लेई जासे ए पूतो रे,
वैरी विविधप्रकारनो, आयो करण कमूतो रे ॥ अई ॥ ३ ॥
पतिरे गयांथी पुत्रसूं, बांधी म्हूंछू नेहो रे,
पुत्र गयां करस्यूं किसूं, मुजमन एह अन्देहो रे ॥ अई ॥ ४ ॥
आंत तपाणी आकरी, न रही शुद्धि लगारो रे,
पुनज व्हालो पतिथकी ए जगनां व्यवहारो रे ॥ अई ॥ ५ ॥
अन्य सुलिंगी आकरा, आवी अडिया नामो रे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज-गर्व मति कररे

खिनावे राणी हलकारा, मोटेका करिये मुंड कारा, आये जहां

नोट—प्रक्षेप ढाल की अनशेर गाथाएँ ॥ गगाने बैठो महाराणी, रोते मुनि देखे अन्न पानी, पुत्र के प्रेमे घबरानी, आगे मुत्र त्यागिन्द करेगा, पति ज्योंपुत्र मूंडेगा ॥ जुलम ॥ ३ ॥ बात ए पुरजन सुन पाई, राणी के क्या दिल में आई, ऐसी करे हूरडी पिटवाई, राणी कुमनर जन धुत्कारे, मुनिने क्यों कातया बारे ॥ जुलम ॥ ८ ॥

* कीर्ति ध्वज पाठान्तरे ॥ १ क्रोधथी नेत्र राता थया ॥

चालो अनगारा, तेरे पर माजीसा डोडा, भागजा यहां से अब मोडा ॥ जुलम ॥ ४ ॥ फेर इस ग्रामे नहीं आना, आये तो हर-लेंगे प्राना, बोला में चवडे नहीं छांना ॥ हुकम नहीं रात रेणेका, हुकम तुज मार देने का ॥ जुलम ॥ ५ ॥ गई कर छोडां हो अब के, मुनिकहै परवाह नहीं हमके, मुनि तब निकरे यूं कहके ॥ करे मुनि वात याद अगली, स्वारथ की दुनियों है सगली ॥ जुलम ॥६॥ राग रु द्वेष से न्यारे, मुनि वो तिरे और तारे, सदा मुनि क्षम शम दम धारे ॥ मुनि चल वन मांही' आये, तरुतल ध्यान ही ठाये ॥ जुलम ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

काढीयो नगरी बाहिरे, जोवा मिलीयो गामो रे ॥ अई ॥ ६ ॥
फिटकारो जण जण मुखे, राणी साथे रोसो रे ।
जोर न चाले कोई नो, पण आणे अफसोसो रे ॥ अई ॥ ७ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गर्व मति कररे

धामाता सुनलो ए वातां, रानी क्यूं खोई है हाथां, संताये मुनिवर कू जातां, एसे कुन जग में हत्यारा, मारदे मुनिकूं निकारा, जुलम मति कररे ॥ ९ ॥

दोहा— रूठी मन भूठी तदा, कूटी काढ्या संत ।
ऊठी ए झूंठी नहीं, छूटी चाल्या संत ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

धाव ज्यूं आवी रोवती, राजाजी ने पासेरे, कारण पूछयूं रायजी भाखे धाव उदासेरे ॥ अई ॥ ८ ॥ नात तुम्हारो देवजी, तपकरी दुर्बल कायेरे, भिक्षा लेवा कारणे, आयो थो उच्छायेरे ॥ अई ॥९॥

ढाल दूजी प्रक्षेप तर्ज—म्हारे हाथ में नवकर वाली

धामाता तब अरजी करवा, दौड गई दरबाररे, हाथ जोड नीचो कर लटको, इनविध करी पुकाररे ॥ १ ॥ महारानी निज नोकर मेली, जुल्म करायो आजरे, आहार लेनकूं आये मुनिवर " कीरत धज " महाराजरे ॥ टेर ॥

हलकारा कूं मेल रानीसा, मुनि कू दिया निकाररे, एक मास क
मुनिवर भूखा, कीधो कर्म चण्डाररे ॥ महारानी ॥ २ ॥ धक्का दे
मुनिकूं कडवाया, क्या लेता मुनिरायरे ॥ रात रेवन की आन दिरा
एसी थांरी मायरे ॥ महारानी ॥ ३ ॥ जरा आपकू जाल सावि
की, खबर पडी न लिगाररे, काम करयो खोटो महारानी, संताय
अनगाररे ॥ महारानी ॥ ४ ॥ हाक फूटी है सब नगरी में, धुर
कारा दे लोकरे, इण लखणां स्यू शिव किम मिलसी, दोरो है
दिवलोकरे ॥ महारानी ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

राणी सेवा साचवी. तेतो कहियन जायरे, पूर्वना परिचय थकी,
ए मुज हैयू भरायरे ॥ अ. १० एम सुणन्ता वेगस्यूं, धावरीयो
भूपालोरे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज गर्व मति कररे

जुल्म यह राजाजी सुणीया, सोच कर मस्तकने धुनीया, कहो
कुन एसे हत पुनीया, उन्हीं को जूत मार लावो. कारागृह[1] मांही
पधरावो ॥ जुल्म मति कररे ॥ १० ॥ रानीसा विजनस मुनि
टाल्यो, हाय ओ मुनिवर क्यू शाल्यो, अरे ! उन मेरो उर बाल्यो
लोक सब देवे है धुरियों, लगी मुज कारजे छुरियों ॥ जुल्म मति
कररे ॥ ११ ॥ मुनि कूं कूटासी जालिम, उन्हीं की कर त्यूंगो
मालिम, भेजे तब पोलिस के आलिम, कारागृह जुल्मी को पकडी,
डारे तब घाल गोडा लकड़ी ॥ जुल्म ॥ १२ ॥

ढाल मूलगी

वन्दन करवा तातने, आय गयो तत्कालोरे ॥ अई. ॥ ११ ॥

ढाल प्रक्षेप तीजी तर्ज—नन्द पेण प्रति बुझ्यो

घोड़े चढ राजा चाल्यो, वो रहे न किण को पाल्यो, नृप छडी
असवारी हाल्यो, हो लाल १ ॥ जुल्म करयो रानी खोटो, सन्तायो
मुनिवर म्होटो, इन वाते घर में टोटो हो लाल ॥ टेर ॥

---

१ केद ।

रु तरे मुनिवर बैठा, हैं ज्ञान ध्यान में सेंठा, राजाजी ऊतरया ठा हो लाल, जु० ॥ ३ ॥ मुनिवर कूं करी सिलामी, मेरे शहर पधारो स्वामी, मैं अर्ज करूं शिरनामी हो लाल ॥ जु० ॥ ४ ॥ मेरी अर्ज मंजूरी कीजे, दुनियों ने दर्शण दीजे, थांरी दाय पडे ज्यूं कीजे हो लाल ॥ जुलम ॥ ५ ॥ तब बोल्या अन्तरजामी, मैं आस्यां अवसर पामी, म्हारे द्वेप नहीं शिव कामी हो लाल ॥ जुल्म० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पगे लागी ऊभो रह्यो, मांग्यो संयम भारोरे।
जग मे कोई केहनूं नहीं, स्वार्थीयोए संसारोरे ॥ अई. १२ ॥

ढाल प्रक्षेपक मूलगी—

मधुर ध्वनी मुनिवरजी बोल्या, जीव यह चतुर्गति डोल्या, स्वारथ का सगपन सहु भोल्या, मेरा अब कथन मान लेनी, अथिर यह जगत छोड देनी ॥ जुल्म० ॥ १३ ॥ देख रुज आंखे जल भरती मेरही मरणे वा मरती, अजीजां ईश्वर ने करती, बाकी वा सहदेवी रानी, लेने नहीं दिया आहार पानी ॥ जुल्म ॥ १४ ॥ जगत में जोरू का झगरा, कनक हेतु होते हैं रगरा, स्वपन का ख्याल जग मगरा, राज का भार छोर दीना, भार शिर संयम का लीना ॥ जुलम ॥ १५ ॥

ढाल चौथी प्रक्षेपक तर्ज—नवली चन्दनी हैक सजनी विन ऋतु वर्पे मेह—

राजाजी मुनिपे गया हैक सजनी, लोक मुखे या बात ॥ रानी सुन बिलखी थई हैक सजनी. आमन दूमन घातक ॥१॥ निगुना नेहको होक, साजन अद्भुत कौतुक एह ॥ टेर ॥ दुःख पूरित दिन आगला हैक सजनी, विन सुत काढूं केम ॥ मुज कहनो मान्यो नहीं होक राजा, काम कर्यो विन फेम ॥ निगुना ॥ २ ॥ हरगिजने छोडे नहीं हैक साजन, कांसूं बनसी सूत ॥ कोन कुमोतसूं मारसी हैक सजनी, जद आसी पाछो पूतक ॥ निगुना ॥ ३ ॥

॥ ढाल-मूलगी ॥

करजोड़ीने वीनवे, देवीं चित्रजमालारे,
सुत विन स्थिती किम चालसे, भाखो राय रसालारे ॥ अई ॥१३॥
गर्भ अछे ऊदर ताहरे, में तसुदीधो राजोरे,
अन्तराय कोई मति करो, सारण दीजो काजो रे ॥ अई ॥ १४ ॥
तात पासे थी समाचर्यो, चारित्र चोखो चायोरे,
बात सुणन्त मुई सही, तव सहदेवी मायो रे ॥ अई ॥ १५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

रानीजी महिलों से परके, ध्यान मन आरत ही धरके, सिंहनी वनमें हुई मरके, सिंहनी इधर उधर म्हाले, पशु और मिनख मार खाले ॥ जुलम ॥ १६ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कांईक आर्तध्यान में, कांईक क्रोध परिणामोरे,
वनमें हुई वाघणी, गिरी गुहिर तस ठामोरे ॥ अई ॥ १६ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

मुनि कहे जुल्मी ऊधरियो, मंत्री तव हूंकारो भरियो, साथ सहु पाछो संचरियो, बात यह सुणी राजवर्गी, जुल्म कर रानी सा मरगी ॥ जुल्म ॥ १७ ॥ रानो के प्रेत कारज कीने, जुल्मी को सचिव छोड दीने, जगत में मंत्री जस लीने, पांगूरया मुनिवर महियल में, आवे नहीं कर्महुके छल में ॥ जुलम ॥ १८ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

'कीर्तिधर' ने 'सुकोशलो', बाप पुत्र ए दोई रे,
चोखूं चारित्र पालतां, विचरे मुनिवर सोई रे ॥ अई ॥ १७ ॥
गिरी गुफा में अनुसरी, करता तप उपवासोरे,
समता रूपे विचरता, रया ऋषि चौमासोरे ॥ अई ॥ १८ ॥

॥ ढाल पांचवीं क्षेपक तर्ज-थेंदा थारी चांदनी सी रात रे ॥

मुनिवर विचरत महियल में मतिवन्तरे, कांई आयारे गढ़ नित्तोडना बाग में ॥ उतरया मुनिवर निर्वद्य स्थानक तन्तरे, कांई लेलीरेक

आज्ञा मालागारनी ॥१॥ इतरे महिनो श्रावण को आवन्तरे, कांई जलऋतुरेक देखी जग सुख पावीयो, दो कोश की अलगी छे चित्तोड़रे, कांई विचमैंरेक डर वाघन को सुनावियो ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कार्तिक पूनम कारणे, नगरभणी आवन्तारे,
एटले आवी वाघणी, ऋषि सामे धावन्तारे ॥ अई ॥ १९ ॥

॥ ढाल क्षेपक पांचवीं ॥

वहिरन खातिर जावे मुनि चित्तोड़रे, कांई विचमें रेक मिलगी इक दिन वाघनी, होले होले चाले चेलो लाररे, कांई आतीरेक अलगी देखी सिंघनी ॥ ४ ॥ नीची निजरां घाली गुरुजी जायरे, कांई उनकीरेक खबरां उनको कोयनी ॥ धीमें धीमें हेलो चेलो पाड़रे, कांई उभारेक राख्या निज गुरु जोयनी ॥ ५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

देखी इत वाघन कूं आती, क्रोधसे आंखेंही राती, हातल दे धरणी धूजाती, गुरु तब चेलाकूं बोले, नाठजा पर्वत के ओले॥जु॥१९

॥ ढाल मूलगी ॥

तातकहे सुत मांभलो, एह उपद्रव आयो रे,
होवादो मुज आगले, सुत बोलन्त सुहायो रे ॥ अई ॥ २० ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

काम कांई क्या इत डरने का, कामए मुझकूं करणे का, मुझे नहीं सोच मरने का, लारे नहीं खुणे वेसण वाली, लहूं शिव आतम उजवाली ॥ जुलम ॥ २० ॥

ढाल छट्टी क्षेपक तर्ज–ख्यालरी (गुरुजी थांरी वाणी प्यारीजी)

वाघन से मैं नहीं डरूंसरे, रविवंशी रजपूत, मुजे अगारी जानदोस में, देवूं मृगतरासूत ॥१॥ चेलाजी नहीं आगे घरवालीजी, आगे थे मतिजावो देखो आगे ऊभी पण[1]मुखवालीजी ॥ टेर ॥ कोमलतन वालो लघुमरे, तूं मुज जीवन प्रान, सुन चेलो वाल्हो घणोस तूं,

---

१ सिंहनी ।

किम कहूं आगीवान ॥ २ ॥ चेलाजी हूं जावूं मति वरजोजी, दाय पड़े ज्यूं कीजो लारे थेंतोथोंरे रति मति डरजोजी ॥ टेर ॥ हरगिज ते नहीं होंनरे सरे हुनो गरिब निमाज, आप अन्दाता किम भरोसरे, म्हारे बैठां आज ॥ ३ ॥ महाराजा मैं लेसूं शिव-पुरीजी, जाने दो अवी मने आगे मेरी करो अरज मंजूरीजी ॥टेर॥

ढाल क्षेपक छठी

उपधी भेली कीरत मुनिके तीररे, कांई आपजरे पधारया सिंहनी सामने ॥ संलेखन कर किया संथारो साररे, कांई मनमें रेक जाप जपे जिननामने ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पाछा पग न पाठवूं, क्षत्रीनो ए धर्मोरे, सही उपद्रव ए आजए, साधसूं शिव शर्मोरे ॥ अ० २१ ॥ उहांही ऊभो रह्यो, आराधन विधि साध्योरे, ममता मूकी देहनी, आतम गुण आराध्योरे ।अ.२२।

ढाल छठी क्षेपक

आती वाघन छाती में दी मचकायरे, कांई हाथलरीक मारे मुनि इन पापनी, सररररर रुद्र खाल चल जायरे, कांई न कह्योरे क अररर मुखथी आपनी ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

विद्युत्[1]पाततणीपरे, वाघणीतो विकरालोरे, आवी पड़ी मुत ऊपरे धरणी पड्यो ऋषि वालोरे ॥ अ० २३ ॥ विदारे नख अंकुशे, वाल्हा तनुनी[2] चामोरे, तरसी[3] ए वलो अति तरस्यी, पीवे लोही तामोरे ॥ अ० २४ ॥ तोडी तोडी तन तणूं, खाए तव मा मांसोरे, विल्हरी नोख्योघणूं, कीधो अधिक प्रयासोरे. ॥ अ० २५ ॥ अमृत ने कवले[4] करी, पोखीयो जे देहोरे, वैर विनाई वाघणी, तोडी

क्षेपक मूलगी ढाल की अवशेष गाथा ॥ पूज्य श्री "जयमल्ल" गच्छजोपै, साम्प्रत मुनि सोहे अवनीपै, मेरे गुरु "नथमलजी" दीपे. "चौथमल" "मोजत" मन साचे, रागयुत रामचरित्र वांचे ॥ जुलम मति कररे॥८॥

१ वीजली नूं पडवूं । २ शरीरनी । ३ तरस्युं एटले पैर लेवाने टांपी रहवुं अने तरस एटले आतुरता । ४ कोलिये ।

नोंखी तेहोरे ।। अ० २६ ।। चढ़ते परिणामे करी, पाम्यो केवल[1] नाणोरे, कुशलपणेरे सुकोशले, साध्योपद, निरवाणोरे[2] ।।अ. २७।।

—ढाल क्षेपक मूलगी—

ध्यानतो शुकलही ध्याया. मुनि तो अमरापुर पाया, लारे हिव पड़ी रही काया ।। खावे तन वाघन तसु अटकी, मुनि तव वाघन ने हटकी ।। जुलम ।। २१ ।। पुत्र क्यूं मारयो हित्यारी, गति क्या होसी हिव थारी, दशन द्युति सुन्दर नीहारी. सुजाती समरनहीं धारयो, अररर मैं नन्दन क्यों मारयो ।। जुलम ।। २२ ।। आतम की निन्दा ही करती, आंखों से आंसू ही भरती, अवे वा परभव से डरती । वाघन तव मुनिवर पे आई, 'सुकोशल' मार शर्माई ।। जुलम ।। २३ ।। सिंहनी संथारो ठावे, कल्प तव आठ में जावे, 'कीर्ति ध्वज' मुनिवर शिव पावे, नमो नमो ऐसे मुनिवर कूं, 'सुकोशल' 'कीरत' नरवर कूं ।। जुलम ।। २४ ।।

ढाल मूलगी

'कीर्तिधर' करणी बले, कर्म तणो क्षय कीधोरे ।।
मोक्षे पहूंच्यो केवली, नरभवनो फल लीधो रे ।। अई० ।। २८ ।।
तेरसमीए ढालमें, जेरस पोख्यो तेणे रे ।
'केशराज' रस एहवो, पोपाय कहो केणेरे ।। अई० ।। २९ ।।

दोहा (गोडी रागे)

'चित्रसुमाला' राणीए, जायो सुन्दर नन्द ।
'हिरण्यगर्भ' नामेभलो, शत्रु रकन्द निकंद ।। १ ।।
' हिरण्य गर्भ घरे गोरडी, 'मृगावती' अभिराम ।।
'नघूक'[3] नामे सुत जाइयो, दुःखितजन विश्राम ।। २ ।।

ढाल चवदवीं तर्ज—माई धन्य दिवस (सुखकारण भवियण)

'हिरण्यगर्भ'नृप माथे धवलो केश,देखी आलोचे[4]ए जमदूत विशेष।१
तत्क्षणने राजा ' नघूक ' कुंवरने राज, आपी आपणपे सारे आतम

१ केवल ज्ञान । २ मोक्ष । ३ नहूप (जैन रामायण) । ४ आलोचयू एटले विचार्यू ।

काज ॥ २ ॥ राजा घरे राणी 'सिंहिका' 'अभिधान', सा सबविधी जाणे शूरपणे सुविधान ॥ ३ ॥ उत्तर पंथना नृप, जीतण चाल्यो राय, दक्षिण पन्थना नृप अड्या ' अयोध्या ' आय ॥ ४ ॥

(लेखक) ढाल क्षेपक तर्ज-हिडे हालोरे ।

राणी शूरीरे २ आ शीलवती गुण हिम्मत पूरीरे ॥ टेर ॥
नृप राणी सिंहिका जाण्यो, फिर कोई दुस्मन आयारे ।
अब क्या करणी बात नाथतो, कटक सिधायारे ॥ राणी ॥ १ ॥
वचन वदे राणी दास्योंको, मर्दी वेस सब करलोरे ॥
बक्तर टोप पहर लो हाथ बाण, बंदूकों भरलोरे ॥ राणी ॥ २ ॥

मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज-हां सगीजीने पेड़ा भावे

हां अबे सुभटां ! झट चालो, ज्यूं त्यूं कर दुस्मन दल टालो,
भालो झालो हाथ अबे पाछो मत भालोरे ॥ अबे ॥ १ ॥
राणी निज परिकर कर भेली, जोध झूंझार बनी अलबेली,
ताजा तूरी मंगाय जिणीपर, झीण मण्डालोरे ॥ अबे ॥ २ ॥
त्रिय सैन्या लड़वाने ताती, रीस लाय करआंखें राती ॥
देख वीरता कायर नर कहै आघा हालोरे ॥ अबे ॥ ३ ॥
हुवो युद्ध परस्पर भारी, हार्यो नृपने जीती नारी ॥
शार्दूल शिष्य मुनि रूप कहै जेतारण है वरसालोरे ॥ अबे ॥ ४ ॥

—ढाल मूलगी—

राणीए जीत्या करी सबल संग्राम,
सिंहणी के आगे गज क्यूं न तजे ठाम ॥ ५ ॥
नृप जीती आयो निसुणी एहउदन्त,
गाढो दुःख पायो कामिनी ऊपर कन्त ॥ ६ ॥
एहछे व्यभिचारणी, नहींतर एहवूं काम,
नकरे कोई बीजी, नारी धरावी नाम ॥ ७ ॥
रहियो मन खंची, न चले चाल्यो केम,
रहु जग करतां, थाए भृङ्ग एम ॥ ८ ॥
राजाने डीले ऊपजीयो ज्वरदाह,

औषध नविमाने, आणे अस्ती[१] अगाह[२] ॥ ९ ॥
सा दोष उतारण राजा आगे राणी,
सहुने सांभलतां, प्रगटे अवसर जाणी ॥ १० ॥
मैं निज पति टाली, अवरन वंछयो कोई,
तो शासनदेवी, सानिद्ध करजो सोई ॥ ११ ॥
एम कहती राणी फरस्यूं राजा अङ्ग,
हरिवाहन[३] आयां भाजी जाय भुजंग ॥ १२ ॥
तेम वेदना नाठी दीठी देह निरोग,
राणीसूं राच्यो पंचेन्द्री सुख भोग ॥ १३ ॥
राणी उदरे ऊपनो, पुत्र भलो 'सौदास',
पट थापी आपे संजमसूं सुखवास ॥ १४ ॥
'सौदास' नरेश्वर अष्टाह्निक उच्छाह,
मंडावे गावे श्रीजिन गुण अगाह ॥ १५ ॥
तव जीवदयानो, पडहो राय वजावे,
मन्त्रीश्वर बोले एतो मुजने सुहावे ॥ १६ ॥
तव पूर्वज पुरुगे मांस न किणही खायो,
तुम ही तिम चालो जो चाहो जश पायो ॥ १७ ॥
दाक्षिण्यथी मानी, पण मन मे न सुहाणी,
जे कुवशन पडियों, तेनो पापी प्राणी ॥ १८ ॥
तव सूद[४] संघाते, गुप्तपणे कहे राय,
क्षण एकहि मैं तो मांस पखेन रहाय ॥ १९ ॥
तूं हेतु म्हारो, तो मुज ने दीए मांस,
सोध्यो नविपावे दीठो करिय प्रयाश ॥ २० ॥
एक बालक मूवो, नृपने आण खवावे,
माणमने मांसे स्वाद घणेरो आवे ॥ २१ ॥
गीध्यो[५] तव राजा, नित्ये एक मरावे,

१ दुग्ध । २ अगाध वर्णू । ३ गरुड़ । ४ रसोइयो । ५ गीधो (गृद्ध) मांसनो लोलुपी राजा नित्य एक बालक मरावतो ।

वर्ज्यो नविमाने लोक असाता पावे ॥ २२ ॥

मुनि श्रीरूपचंदजी म० कृत. ढाल चोपक तर्ज-सावड़ो धीमोसो पड़जा

सचिव ! म्हारी अर्जी सुन लेना, रायकरे अन्याय अनूठो आखिर सुख है ना ॥ टेर ॥

नगर निवासी भये उदासी भरकर जल नैना, भलां हां भर० ।
मत कोई मारो जीव राज्य में, यह था नृप कहना ॥ सचिव १ ॥
मदिरा मांसतणा जे रसिया,* लुचा लागा कान, राजारे लुचा ।
बालक मांस खावे नित्य राजा, तोड़ी सघली आन ॥सचिव २॥
वल्लभ बालक मारण सारू, किण विध खूंप्यो जाय, राजाने किण ।
आगे अनरथ हुवो न एड़ो, करे सो खत्ता खाय ॥ सचिव ३ ॥
थे समजादो भूप भणी अब,तजदे खोटी चाल ।
'रूपमुनि' कहै रैयत वदल्यां, कांई करे भूपाल ॥ सचिव ४ ॥

मंत्रीश्वर म्होटो, राज्य तणो रखवालो,
कही कही समजावे, राजा नविदीवे टालो ॥ २३ ॥
तब बांधी काठो, काढी दीधो राजा,
थापक उत्थापक, लोक सदा ही ताजा ॥ २४ ॥
' सौदास ' तणांसुत, न्यायवन्त नरेश,
'सिंहरथ' स्थिर थाप्यो, सुखदाई सुविशेष ॥ २५ ॥
भूपति अति भमतो. दक्षिण दिश चलि आवे.
देखी इक मुनिवर, गाढी साता पावे ॥ २६ ॥
पूछे तब धर्मज, मुनिवर भाखे वारु.
परहरीये मांसज, अरु परिहरीये दारू ॥ २७ ॥
ओ बीजी नरके. ओत्रीजे पहूंचावे,
एम सुणनां मन में, राजा डर अति पावे ॥ २८ ॥
पच्चखाण करे नृप, मांस अने मधुकेरो.
तब श्रावक हुवो जाणे धर्म भलेरो ॥ २९ ॥

चल: * रोल विगाड़े राजने. मोल विगाड़े माल ॥ धीरे २ सरदारजी. चुगल विगाड़े चाल ॥ १ ॥

'दर्भ[१] स्थलपुर' जाणीयेरे, 'सुकोशल' तिहां रायोरे।
राणी नामे 'अमृतप्रभारे, राजाने सुख दायोरे॥ राजा॥ २॥
पुत्रीवर 'अपराजीताजी[२]', इन्द्राणी अवतारोरे।
व्याहै[३] 'दशरथ' रायनेरे. ओछव करिया अपारोरे॥ ३॥
'सुशीला' त्रियनो पतीरे, मित्रसुभू[४]' भूपालोरे।
'सुमित्रा' पुत्री परणावेरे, 'दशरथ' ने सुविशालोरे॥ राजा ४॥
सुप्रभा अति देहनीरे, 'सुप्रभा' तस नामोरे।
राजा रंगे परणावेरे, 'दशरथ' ने अभिरामोरे॥ राजा॥ ५॥
पंचेन्द्रिय सुख भोगवेरे, पूर्व पुण्य प्रसादोरे।
पूरव पुरुष उजालीयारे, विस्तरीया जश वादोरे॥ राजा॥ ६॥
एक दिवस लङ्का धणी रे, बैठो परषदा मांहेरे।
निमित्तियाने पूछीयूं रे निज आयुबल मांहेरे॥ राजा॥ ७॥

॥ ढाल चेपक तर्ज–गर्व मति कररे॥

एक दिन 'रावण महाराजा', सोले सहश्र सामन्त ही ताजा, वाजता निशदिन ही बाजा, सभा की देख खूब त्यारी, वण्यो दिल मांही अहंकारी॥ सत्य व्रत पालो॥ २॥ 'इन्द्रजीत' मेघ-वाहन' छाजे, पुत्र पौत्रादी अति गाजे, ऋद्धि सं सुरपति पिण लाजे, पूण्यथी फते कीया काजा, बाजे नित साथे लक्ष बाजा॥ सत्यव्रत पालो॥ ३॥ 'विभीषण' कुम्भकर्ण भाई. मन्दोदरी राणी सुखदाई, चौपन सहस्र शास्त्र मे गाई. जयरहे पूर्व पूण्याई, आंण है तीन खण्ड मांही॥ सत्यव्रत पालो॥ ४॥

स्वामीजी श्रीरामचन्दजी महाराज कृत.

ढाल चेपक तर्ज–तुम चलो सखी कुछ जेज न करीये।

सहश्र विद्यात्रीखण्ड को मुक्ता, "रावण" मन मे गरभायो।
सुर नर पाय परे सब मेरे, कुणमुझसे सांमे थायो॥ स० १॥
सुरदेव तो तप रसोई. चन्द्र आप दीपक थायो।
वेमाता मुझ दले कोद्रवा. यम राजा पाणी लायो॥ स० २॥

२ कौशल्या, ३ परणावे, ४ स्वयंभु तिलक।

कोई मोक्ष पधारया, स्वर्ग पधारया कोई,
ए वंश वडेरो, चीथ वदीतो जोई ॥ ४३ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, अयोध्यानूं राज,
करतो अतिवर्ते, सारे प्रजाना काज ॥ ४४ ॥
तेहना दो नन्दन, 'अनन्तरथ' अधिकाय,
'दशरथ' दिलदरियो, शोभा कहियन जाय ॥ ४५ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, खेचरसूं मित्राई,
साथे व्रत लेस्यां, आपण एह सगाई ॥ ४६ ॥
सो 'सहस्रकिरण'[1] नृप, 'रावण' साथे लड़ाई,
लेईने हार्यो तब व्रत लीधूं धाई ॥ ४७ ॥
'अन्यरण्य' नरेशर, 'अनन्तरथ' सुतसाथ,
संजमव्रत लीधूं म्होटा मुनिवर हाथ ॥ ४८ ॥
'विद्याधर' साथे, पाली बोली वाच,
सो मुक्ती सिधाव्या, जगमें म्होटो साच ॥ ४९ ॥
'चउदशमी' भाखी, ढाल रसाल अपार,
'केशराज' वखाणे, साधु सदा सुखकार ॥ ५० ॥

दोहा (परजिया रागे)

मास एकनो थापीयो, राजा 'दशरथ' राज ॥
चन्द्रकला जिम दिन दिने, वाधे दलबल साज ॥ १ ॥
शस्त्र शास्त्र आदे करी, कला सकलनो जाण।
विनय विवेक विचार में, पण्डित पणं प्रमाण ॥ २ ॥
यौवननी वय पामीयो, शूरवीर झूझार।
दाता भोक्ता अरु गुणी, वसुधा जश विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पनरहवीं तर्ज—पांडूरी पोट लीया आ कोणरे ॥

राजा 'दशरथ' दीपतोरे, दिन दिन तेज प्रतापेरे।
अंशधणी में एहनोरे, दीसे आपो आपे रे ॥ राजा ॥ १ ॥

---

१ सहस्रांशु इति पाठान्तरे।

'महापुर' चलि आयो, शुभ कर्म नो प्रेर्यो,
सुभटे परधाने, आवीने नृपवेर्यो ॥ ३० ॥
तत्र दिव्यसू पंचे, 'महानगर' नो राजा,
सहु लोकां मान्यो, वाध्या अधिक दिवाजा ॥ ३१ ॥
तब पुरी 'अयोध्या' दूत मोकलीयो एक,
सुत सेवा[१] आवो. के तुम सहावो टेक ॥ ३२ ॥
सुतवात न माने, राजा दलबल साजे,
सुत पण सामहियो, सन्मुख आय विराजे ॥ ३३ ॥
तब तात पूत दोय, लड़िया विविध प्रकारे,
हार्यो तब नन्दन, जीत्यो तात ते वारे ॥ ३४ ॥
त्रिलखाणो देखी, राजा आंत तपाणी,
खोळे बेसाड़्यो, बालक आपणो जाणी ॥ ३५ ॥
दीधू दोनों राज्य, राजा संयम धारी,
विचरे महि मण्डल, पट्कायों हितकारी ॥ ३६ ॥
'सिंहरथ' राजानो, पुत्र श्री 'ब्रह्मरथ',
'चतुर्मुख' राजा, 'हेमरथ' 'सत्यरथ' ॥ ३७ ॥
'उदय' 'पृथु' राजा, 'वारीरथ' 'शरीरथ',
'आदित्यरथ' राजा, 'मान्धाता' समरथ ॥ ३८ ॥
नृप 'वीरसेन' जी, 'प्रत्युमन्यु' मानीनो,
नृप 'पद्मबंधुजी', 'रविमन्यु' जाणीनो ॥ ३९ ॥
सबही मनभावे, 'वसन्त' तिलक नरेश,
'कुबेरदत्तजी' नृप 'कुन्थू' 'शरभ' विसेस ॥ ४० ॥
'द्विरद' नृप नीको, 'सिंहदर्शन' दिलपाक,
नृप 'हरिण्यकशिपुजी' जेहनी जगमे धाक ॥ ४१ ॥
'पुंजस्थल' 'श्रीदो' कुकुत्स्थ' ने 'रघुराय',
ए सूरजवंशी राजा सहु सुखदाय ॥ ४२ ॥

१ वात्सां आवो ।

कोई मोक्ष पधारया, स्वर्ग पधारया कोई,
ए वंश वडेरो, वीश्व वदीतो जोई ॥ ४३ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, अयोध्यानूं राज,
करतो अतिवर्त, सारे प्रजाना काज ॥ ४४ ॥
तेहना दो नन्दन, 'अनन्तरथ' अधिकाय,
'दशरथ' दिलदरियो, शोभा कहियन जाय ॥ ४५ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, खेचरसूं मित्राई,
साथे व्रत लेस्यां, आपण एह सगाई ॥ ४६ ॥
सो 'सहश्रकिरण'[१] नृप, 'रावण' साथे लड़ाई,
लेईने हार्यो तव व्रत लीधूं धाई ॥ ४७ ॥
'अन्यरण्य' नरेशर, 'अनन्तरथ' सुतसाथ,
संजमव्रत लीधूं म्होटा मुनिवर हाथ ॥ ४८ ॥
'विद्याधर' साथे, पाली बोली वाच,
सो मुक्ती सिधाव्या, जगमें म्होटो साच ॥ ४९ ॥
'चउदशमी' भाखी, ढाल रसाल अपार,
'केशराज' वखाणे, साधु सदा सुखकार ॥ ५० ॥

दोहा (परजिया रागे)

मास एकनो थापीयो, राजा 'दशरथ' राज ॥
चन्द्रकला जिम दिन दिने, वाधे दलवल साज ॥ १ ॥
शस्त्र शास्त्र आदे करी, कला सकलनो जाण।
विनय विवेक विचार में, पण्डित पणं प्रमाण ॥ २ ॥
योवननी वय पामीयो, शूरवीर झूंझार।
दाता भोक्ता अरु गुणी, वसुधा जश विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पनरहवीं तर्ज—पांहूरी पोट लीया आ कोणरे ॥

राजा 'दशरथ' दीपतोरे, दिन दिन तेज प्रतापेरे।
अंगधणी में एहनोरे, दीसे आपो आपे रे ॥ राजा ॥ १ ॥

---

१ सहश्रांशु इति पाठान्तरे।

'दर्भ[1] स्थलपुर' जाणीयेरे, 'सुकोशल' तिहां रायोरे ।
राणी नामे 'अमृतप्रभारे, राजाने सुख दायोरे ॥ राजा ॥ २ ॥
पुत्रीवर 'अपराजीताजी[2]', इन्द्राणी अवतारोरे ।
व्याहै[3] 'दशरथ' रायनेरे, ओछव करिया अपारोरे ॥ ३ ॥
'सुशीला' त्रियनो पतीरे, मित्रसुभू[4]' भूपालोरे ।
'सुमित्रा' पुत्री परणावेरे, 'दशरथ' ने सुविशालोरे ॥ राजा ४ ॥
सुप्रभा अति देहनीरे, 'सुप्रभा' तस नामोरे ।
राजा रंगे परणावेरे, 'दशरथ' ने अभिरामोरे ॥ राजा ॥ ५ ॥
पंचेन्द्रिय सुख भोगवेरे, पूर्व पुण्य प्रसादोरे ।
पूरव पुरुष उजालीयारे, विस्तरीया जश वादो रे ॥ राजा ॥ ६ ॥
एक दिवस लङ्का धणी रे, बैठो परषदा मांहे रे ।
निमित्तियाने पूछीयू रे. निज आयुबल मांहै रे ॥ राजा ॥ ७ ॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज–गर्व मति कररे ॥

एक दिन 'रावण महाराजा'. सोले सहश्र सामन्त ही ताजा, बाजता निशदिन ही बाजा, सभा की देख खूब त्यारी, वण्यो दिल मांही अहंकारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २ ॥ 'इन्द्रजीत' मेघ वाहन' छाजे, पुत्र पोत्रादी अति गाजे, ऋद्धि सुं सुरपति पिण लाजे, पूण्यथी फते कीया काजा, बाजे नित सार्ध लक्ष बाजा ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ३ ॥ 'विभीषण' कुम्भकर्ण भाई. मन्दोदरी राणी सुन्दराई, चौपन सहस्त्र शास्त्र में गाई. ज्वरहे पूर्व पूण्याई, आंण है तीन खण्ड मांही ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ४ ॥

स्वामीजी श्रीरामचन्दजी महाराज कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज–तुम चलो सखी कुछ जेज न करीये ।

सहश्र विद्यात्रीखण्ड को भुक्ता, "रावण" मन में गरभायो ।
सुर नर पाय परे सब मेरे. कुणमुज से मांसे थायो ॥ स० १ ॥
सूर्यदेव तो तपे रसोई. चन्द्र आप दीपक थायो ।
वेमाता मुझ दले कोद्रवा, यम राजा पाणी लायो ॥ स० २ ॥

---

[1] कुशस्थल, २ कौशल्या, ३ परणावे, ४ स्वबधु तिलक ।

नवग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती उत्तरायो ।
पवनदेव नित महिल बूहारे, पार नहीं कोई पायो ॥ स० ॥ ३ ॥
मो सरिसो तो विरलो होगो, नाम थकी जग थररायो ।
कुण मुज आज अड़े हुय सामो, किणरी मा अजमो खायो ॥स०४॥
अव मुज मनमें ऐसी आवे, वार सदा मुज एरेसी ।
केवलज्ञानी वातन छानी, पिण नैमित्तक केवे कीसी ॥ स० ॥५॥
'रावण' के मन ऐसी भासी, नैमित्तक तव बुलवायो ।
'रामचन्द्र' कहै कोई गर्वन कीजो, गर्वन कोई ठहरायो ॥स०॥६॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी तर्ज–गर्व मति कररे ॥

हुवो नहीं होवेगा ऐसा, मुझसे झंग करे जैसा, सुरासुर सेवे हमेसा सुनकर सभा सकल बोले, नहीं जगमें प्रभुके तोले ॥सत्यव्रत पालो ॥ ५ ॥ तिहां इक नैमित्तिक बैठो, ज्ञान को जो रहै सेंठो, वचन यह सुनियो है धेठो ॥ मुख से वचन नहीं भाखे, देख यह रीत भूप दाखे ॥ सत्यव्रत० ॥ ६ ॥ पंडितजी ! क्यों न वचन बोलो, तुम्हारा ज्ञान ही तोलो, हीयाका भरम सभी खोलो ॥ है कोई जगत बीच ऐसा, क मुझ को मार लेवे जैसा ॥ सत्यव्रत ॥ ७ ॥ विबुध कहै सुणीये महाराजा, गर्व क्या करीये दिल आजा, आज दिन पुण्य है ताजा, जिस दिन आयुखा आवे, दुनि सब यम घर कूं जावे ॥ सत्य व्रत पालो० ॥ ८ ॥

नं० ढाल क्षेपक तर्ज–चौकरी–स्वामी श्री नथमलजी म० कृत–

अहो नरवरजी, वचन विचारीने निजमुखसूं बोलीये ॥
सुनो हितधरजी, बात ज्ञान की पूछो तो हिव खोलीये ॥ टेर ॥
हुवा अनन्त बलि अरिहन्त सारा, पिण आयु कर्म नहीं टारा ॥
हुवा प्रभुजी शिवपुरना प्यारा ॥ अहो नरवरजी ॥ २ ॥
खट् खण्ड में आज्ञा विस्तारे, सुरसहसगमे सेवा सारे ॥
पिण आयु कर्म आगे हारे ॥ अहो नरवरजी ॥ २ ॥
सुर इन्द्रादिक दीपे भारी, नव नव विध भोगतणी त्यारी ॥

सुखमाने अमर पदवीधारी, पिण एक दिवस परभव त्यारी ॥३॥
तेजे जोध जिके बलिया, पिण काल आगे सहुको कलिया ॥
इण राव रंक सगला छलिया ॥ अहो नरवरजी ॥ ४ ॥
इण कारण प्रभुने आखूं छूं, अन्तर कपट न राखूं छूं ॥
जिम ज्ञानमें तिमही दाखूं छूं ॥ अहो नवरवरजी ॥ ५ ॥

॥ ढाल चेपक मूलगी ॥

'अयोध्या' नगरी है जहारी, राय तिहां 'दसरथ' सुखकारी. 'कौशल्या' 'सुमित्रा' नारी ॥ कूखतसु उतपत धारेगा, भूपत! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ९ ॥ 'जानकी' स्वयम्बर त्यारी, सारङ्ग वो धनुप है भारी, विद्याधर मानकूं मारी ॥ युगल ही धनुप चढावेगा ॥ भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥१०॥ 'वज्रकीर्ण' राजा सोहावे, 'सिहोदर' पास फत्ते पावे. भर्त का संकट मिटावावे ॥ दण्डकी वन में आवेगा, क भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥ ११ ॥ 'संबुक' विद्या ही साधे, चन्द्रहास्य खड्ग आगधे, लिछमन कूं जिस दिन ही लाधे ॥ उसीका स्कन्ध चिदारेगा, क नरपत ! सो तुझ मारेगा ॥सत्य०॥१२॥ 'दुःखर' 'खर' 'तिखर' ही भाई, विद्याधर चउदसहश्र घाई, विजय निज मुजने उपजाई, 'वि[illegible]ध' कूं राज दिगवेगा ॥ क नरपत ! सो तुज मारेगा ॥ सत्य० ॥ १३ ॥ 'सुग्रीव' को न्यायही करसी, विविध विध भूपत सूं लरसी, अड़े सो जमगृह कूं वरसी, खण्ड त्रय आण मनावेगा ॥ क नरपत! सो तुज मारेगा ॥सत्य०॥१४॥ इसी में शङ्का मति आणो. 'राम' अरु 'जानकी' जाणो, 'जनक' की पुत्री गुण खांणो ॥ 'लिछमन' के हाथ है मरणो, नहीं है हरि[illegible] को शरणो ॥ सत्य० ॥ १५ ॥ वात सुन सभा सबे शङ्की, विबुध की वाणी है वङ्की, केवली वचन निःसंकी । भूप कहे काणो अब कांई, विबुध कहे टले नहीं आई ॥ सत्य० ॥१६॥ राय कहे भावी बल टालो, ऐसा कोई उपाय नीकालो, हुवे जिम

जगमें उजवालो ॥ विबुध कहै टले नहीं आई, जचीसो प्रभुने दरसाई ॥ सत्य० ॥ १७ ॥ 'रत्नसेन' पुत्र आनन्दा, 'रत्नदत्त' पुनिम के चंदा, 'चन्द्रावती' व्याव सुखकन्दा, लगनदिन सत्तरमो जाणो, टलेतो वांछित फल प णो ॥ सत्य० ॥ १८ ॥ राय कहै नाम ठाम दाखो, उन्हींकी उत्पत सहु भाखो, वात यह दिलमां मत राखो ॥ तसल्ली सब के दिल आवे, मेरा जो मरणा टलजावे ॥ सत्य० ॥ १९ ॥

(स्वामी श्री नथमलजी म० विरचितम्) अथ रत्नदत्त व्याख्यानक कथ्यते
(क्षेपक मिदंच)
॥ ढाल पहली तर्ज–परभव की खरची लेलो ॥

विबुध कहै सुणजो समाचार, टरे नहीं कोई होवनहार ॥ टेर ॥
चारु विशाल नगर अति चारु, 'रत्नसेन' नृप अधिक उदार ।वि०१।
प्रीतवती उर नन्दन उपज्यो, 'रत्नदत्त' कुंवर सिरदार ॥विबुध॥२॥
विद्यापढ योवन वय पायो, आयो इक दिन सभा मजार॥विबुध॥३॥
देख आकृति सब जन मोह्या, नृप कहै शादृश जोवो नार । वि०॥४॥
'मतिसार' मंत्री तब चाल्यो, चित्रपटले बहु परीवार ॥ विबुध ॥५॥
देश प्रदेश विदेश भम्यो अति, नहीं दीठी कुंवर उनिहार ॥वि०॥६॥
गङ्गा तट इक सरवर दीठो, मीठो अम्बू वृक्ष अपार ॥ विबुध ॥७॥
डेरो दीधो भोजन कीधो, जल भरिवा अपच्छर उनिहार ॥वि०॥८॥
कन्या दीठी लागे मीठी, आडो फिरियो आय तिवार ॥ वि० ॥९॥
सा भावे कारण मुज दाखो, आयो नाम गाम नृप सार॥वि०॥१०॥
सा कहै 'चन्द्रस्थल' पुरजाणो, 'चन्द्रसेन्य' नृप सौम्य दीदार ।११।
पांचसयां पदमण अति सोहै, 'चन्द्रलेखा' नामे पटनार वि०।१२।
रूपे रूड़ी सोवन चूड़ी, चन्द्रावती तस उर अवतार ।विबुध १३।
ना ईन्द्राणी ना अप्सरा है, तसु गुणको नवि पावे पार ।विबुध१४।
तेहनी दासी हूं उपवासी, ए जलसा पीवे सुखकार ।विबुध १५।
जो तुम आखो सोमे भाखी, सांभल मंत्री हुवो हुंसीयार। विबुध१६।

दोहा—कारज सरसी माहरो, इणमें मीन न मेख ।
चाली आयो उतावलो, नृप भेटण सुविशेष ॥१॥
अति आदर अवनीपती, द्ये मन्त्रीने ताम ।
कन्या सज शृंगार अति, मेली मां अभिराम ॥२॥
अवनीपति के अङ्क में, बैठी कन्या सोय ।
इण सदृश जो वर मिले, तो मुज वंछित होय ॥३॥

ढाल दूजी तर्ज-प्रभुजीने गावो रङ्गसं (महाराजाजी हथणापुर मति जावजो)

मन्त्री भाखेरे, किंन कारन इहां आवीया, मंत्री० निवसो कुण से देश, राजिन्द पूछेरे बात कहो मुज मांडने ॥ टेर ॥ मंत्री० देश देखण ने नीसरयो, मंत्री० पुर २ भम्यो अशेस ॥ रा० ॥ १ ॥ इत चल आयारे, चरण भेटीया आपग मन्त्री० आज सफल अवतार हुवो म्हारोरं अवनीपति तुम सांभलो ॥ टेर ॥ इलपति आखेरे, 'इचरज' बातको दाखवो. मन्त्री० इचरज नो नविपार ॥ मंत्री ॥ २ ॥ भूपति पभणेरं, पुरुप रूप कोई अभिनवो. कित ही देख्यो रे, कन्या वर मुज चाय. मन्त्री० रत्नाकीर्ण वसुंधरा. मन्त्री० कहतां पार न पाय ॥ मंत्री० ॥ ३ ॥ मन्त्री भाखेरे, पिण अद्भुत इक दाखवूं सुणजो सारारे, रत्नसेन सुत जान ॥ मोहनगारारे सुरगुरु सम विद्याविपे, सब जन प्यारारे, शूरवीर सुविधान ॥ मंत्री ॥ ४ ॥ रत्नदत्तरे, रूपे काम कुंवर जिसो, प्रितवती नन्दनरे, दाता मोहन वेल ॥ मन्त्री० एक जीभथी किम कहूं, मंत्री चित्रनो जोवो खेल ॥ मंत्री० ॥ ५ ॥ चित्र अति नीकोरे, देख कन्या निश्चय कीयो, ओ नर तीकोरे, इण भव यो भरतार मो मन वसी योरे, नृप कहे फिर में पूछस्यूं, राजा भाखेरे, हिव जावो इन वार ॥ मंत्री० ॥ ६ ॥ पितुपय लागीरे, कन्या गई निज महल में, प्रीती जागीरे, चित्त में कुंवर ध्यान, मं० खान पान निन्द्रा तजी, मं० विरह जग्यो असमान ॥ मं० ॥ ७ ॥ सखि पूछेरे, कवण ध्यान छे ताहरो, स० तिल्कावती तिणवार स० बात कहो सब

मांडने ॥ टेर ॥ मखि० माकिनी ग्राहित नी परे, स० के कोई नसामजार, स० ॥ ८ ॥ कन्या भाखेरे, ना कोई साकिनी मुज-ग्रही, कन्या० ना कोई अवर प्रकार ॥ कन्या-रत्नदत्त गुण सांभली क० निश्चय लीधो धार ॥ म० ॥ ९ ॥ क० मोहन मुजने नवि-मिले, क० षट्मासां के मांय। क० तो तन होमूं आगमें, क० अवर नहीं मुज चाय ॥ क० ॥ १० ॥

दोहा—तिलक वती तिण अवसरं, कही मायने जाय।
राणी सुण ते रायने, शीघ्र ही दीयो जताय ॥१॥
स्वयम्वर हूं मांडतो, मुज मन हूंती चाय।
कन्या मन जोए रुच्यो, तो देसूं परणाय ॥ २॥
तत् क्षिण तेडी मन्त्रीने, पूछे भूप तिहार।
कुंवर के कितनी कामनी, भाखो सकल विचार ॥३॥
मन्त्री कहे महिपति सुनो, अजहु न परणी कोय।
बहु नृप चाहे व्यावबा, शादश मिलिया जोय ॥४॥

॥ ढाल तीजी तर्ज—लावणी—खबर नहीं है जग में पलकी ॥

मन्त्री वचन सुणी वसुधापति, मनमें हर्षायो, तेरया गणिक भणी तिणवारे, लगनतणी चायो ॥ सुणो सहु होणहार भाईरे, ? सुणो० छल बल कोई कोड करो तो टले नहीं आई ॥ टेर ॥ अगणित द्रव्यधरी मुख आगे लगन शुद्ध कहीये, ते कहे दिन सतरमो जाणो, आगे नही लहीये ॥ सुणो ॥ २ ॥ जो ए टलेतो वर्ष युगल में, नहीं लगन आवे, भूप कहे भूमी है केती, शतयोजन थावे ॥ सुणो ॥ ३ ॥ भूप कहे मंत्री ! किम वणसी, सो कहे तिणवारो ॥ घड़ी योजन मुज सांड चले है, मति को विचारो ॥ सुणो ॥ ४ ॥ लेकर चित्र मंत्री तब चाल्यो, आय कही सारी, चित्र देख हरख्या सहु कोई, वाहा वाहा बुद्धि धारी ॥ सुणो ॥५॥ दोनूं घरां उच्छाह मंड्यो अति, अदभुत तिणवारी, इन्द्रादि आय मिले तो भाविबल टले नहीं टारी ॥ सुणो ॥ ६ ॥

दोहा—राणा ' रावण ' जी तदा, पण्डित धरियो मांय ॥
निशाचर[१] ने बुलायने, कहै 'चन्द्रस्थल' पुर जाय ॥ १ ॥
लावो बाला मुजकने, ढील न करणी रञ्च ॥
रङ्गभुवन सखिवृन्द में, बैठी दीठी सञ्च ॥ २ ॥
तत्क्षिण ग्रही तसु चालीयो, सहु करे हाहाकार ॥
पिण कछु जोर चाले नहीं, न टले होवनहार ॥ ३ ॥
पूठे सहु आक्रन्द करे, सूंपी नृपने आय ॥
'तीमङ्गला' बुलायने, समुद्र तटे तूं जाय ॥ ४ ॥
यतन करीने राखजे, जव सतरादिन होय ॥
सूंपे ज्यो मुजने सही, पिण अवर अचिन्त्यो होय ॥ ५ ॥
पेटीधर मुखमें तदा, चाली देवी ताम ॥
गङ्गा सागर संग में, आवी बैठी आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौथी तर्ज—योगी रामारी ॥

'तक्षनाग' ने ताम बोलावे, वारु विशाल ही जावो,
'रत्नदत्त' ने डंक देईने, वहिला पाछा आवो ॥ १ ॥
' रावण ' हुकमें अर्द्ध निशामें, रङ्ग महिल में आवे,
कुंवर सेजाए सुखमां सुतो, डङ्क देई ने सिधावे ॥२॥
आय 'रावण' ने सगली दाखी, दशस्कंधर हरखावे,
किम ए व्याव हूमी ए एहनो, पिण भावी प्रबल कहावे ॥ ३ ॥
प्रात हुवा नृप खबर लही है, जहर व्याप्त तन देखे ।
रे रे नन्दन मुज कुल भूषण, एह अवस्था देखे ॥ ४ ॥
मंत्री परमुख गारुडी तेड्या, कीया विविध उपचार ।
यंत्र मंत्र ओषध नवि लागे, सहु करे हाहाकार ॥ ५ ॥
पुत्र वियोगे राजा राणी, नेत्र भरी जल नांखे ।
योतिष जोई नैमित्तिक भाखे, मर्यो नहीं इमभाखे ॥६॥
आज तो उपचार न लागे, गङ्गाजल में वुहावो ।

१ राक्षस ।

हो लाल ॥ ४ ॥ उभय परम सुख पाय, साजन, वंछित करी ने भोग आनन्द अति मानीयो हो लाल ॥ पेठा पेटी मांय, साजन, आडा सूती है बाल सफल दिन जानीयो हो लाल ॥ ५ ॥ इतरे आई तेह, साजन, साद करन्तां कन्या बोली है तदा हो लाल ॥ हूं सूती निज ठौर, साजन, सुन देवो मनमांही सुख माने मुदा हो लाल ॥ ६ ॥ संध्याये सूरी सार, साजन, चाली पेटी लेय पूछे देवो इणपरे हो लाल ॥ वजन वध्यो किण काम, साजन, कन्या तव मृदु वेन क मुखथी ऊचरे हो लाल ॥ ७ ॥ खाया फलने फूल साजन, पीधोजल लागो पवन अमारे तन तणे हो लाल ॥ आप ग्रही वहु वार, साजन, इण कारण सूं भारी लागे आपने हो लाल ॥ ८ ॥

दोहा—सूंपीसा 'रावण' भणी, आप गई निजधाम ॥
पोहरो राख्यो रातरा, प्रात उदय रवितास ॥ १ ॥
सभा सबल भारी जुडी, मिलीया राणो राण ॥
राय कहे सवही सुणो, अवसर मिलीयो आंण ॥ २ ॥
सतरादिन पूरा हुवा, नहीं हुवो ए व्याव ॥
नैमित्तिकने तेडने, भाखे नृप उच्छाह ॥ ३ ॥
जोवो ज्ञान तुम्हारडो, भावी टली के नांय ॥
श्रोता एक चित्त सांभलो, वदे नैमित्तिक वाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी तर्ज—हांक मतिकर गर्व दिवाना ॥

हां कहे इम योतिपनाणी, सुणो प्रभु ए म्हारी वाणी, टलेन होवन हार कयो इम केवल नाणी रे ॥ टेर ॥ तीर्थंकर चक्री महाराया, होणहार आगे ववगाया, सम्भुमचक्री जल डवकाया, एसी भावी ज्ञान आन दिल भाख्यो ज्ञानीरे ॥ कहे ॥१॥ व्याव हुवो है दिन सतरमे, क्या जोवूं दर्पण में कर में, खोलो पेटी निकसे भरमे, देखे सगलो लोक थोक ओ मिलीयो आनीरे ॥ कहे ॥ २ ॥ नैमित्तिक ए कैसे बोले, ववक्षिण नृप पेटीने खोले, कुंवर सूतो कन्या के

ओले. चिन्ते रावण राय वाय ए सुपने न जानीरे ॥ कहै ॥ ३ ॥ विबुध कहै चवडे देखावो. सब ही जन को भर्म मिटावो, कन्या कुंवर बाहिर दिखलावो, देखे सगला लोक बात ए सत्य पीछानी रे ॥ कहै ॥ ४ ॥ राम कहै भावी बल भारी, टले नहीं है होवन हारी. नैमित्तिक ने रींजदी सारी, खेचर सामे देय मेल्या उभय निज २ थानी रे ॥ कहै ॥ ५ ॥ 'नथमल' कहै सुनजो सब भाई, नैमित्तिक ने कथा सुणाई, रामायण में हर्ष धर गाई, देसी गुरु मुखधार गायां रीजे बहुग्रानी रे ॥ कहै ॥ ६ ॥

॥ इति रत्नदत्त कथानकं समाप्तम् ॥

—ढाल मूलगी—

कहै हूं मरिस आपथी रे, के कोई मारण हारो रे ?
इन्द्रादिक सुर ना रहै रे, माणसनो शो भारो रे ॥राजा दशरथ८॥
पण्डित प्रगट पणे भणे रे, सीता हेते विनाशो रे।
'दशरथ' सुत थी थायसे रे, लोक करे तब हांसो रे ॥राजा ॥९॥
विभीषण बलियो कहे रे, झूंठो पांडु जाणो रे।
'दशरथ' 'जनक' विनाशतांरे. विबुध वचन अप्रमाणोरे ।राजा १०॥
उत्पति बीज विना नहीं रे. 'रावण' कहे ए रुड़ रे।
भरोसो भाई तणो रे. कदी ही न कहै कूड़ रे ॥ राजा ॥ ११ ॥
'नारद' बैठो थो तिहां रे, करवाने उपगारो रे।
राजा 'दशरथ' आगले रे, भाखे एह विचारो रे ॥ राजा ॥ १२ ॥
मिथुला नगरी एजई रे, 'जनक ने रे' जणावेरे.
जाणी स्वामी साचलीरे, मति अशाता पावेरे ॥ राजा० ॥ १३ ॥
एहिज भोलामण रायजी रे, मंत्रीश्वरने दीजेरे.
दोई परदेशे नीकल्यारे, जाणे जिगतिम जीजेरे ॥ राजा० ॥१४॥
मूर्ति दोई रायनीरे, लेपमयी तब कीजेरे.
'विभीषण' भरमावचारे. एह उपाव ठवीजेरे ॥ राजा० ॥१५॥
रात अंधारे आवीयोरे. 'विभीषण' विकरालोरे.
मूर्ति मस्तक छेदीयुंरे, कोप्यो जाणे कालोरे ॥ राजा० ॥ १६ ॥
कलकल शब्द हुवो घणोरे. सुभट सबदी धाईरे,

'केशराज' नन्दन नीको रे, नीको तात कहायो रे ।।राजा०।।३८।।

दोहा (कान्हडा रागे)

ब्रह्मलोक थकी चवी, महर्धिक सुर सार ।।
मान सरोवर हंसलो, उदरे लीयो अवतार ।। १ ।।
सुखमें सूती सुन्दरी, सुन्दर सेज मझार ।।
राणीजी 'अपराजिता' सुपन विलोक्या चार ।। २ ।।
सात हाथ ऊंचो सही, लांब पणे नव हाथ ।।
चौड पणे कर तीन जी, करी करणीनो नाथ ।। ३ ।।
केसरी कटी क्षीणोदरो, पञ्च मुखे प्रवेश ।।
करन्तो दीठो मध्ये, राणी ए हर्ष विशेष ।। ४ ।।
नायक तो ग्रह गणतणो, रोहणी नो भरतार ।।
ऊतरथो आकाशथी, चन्द्रमहा सुखकार ।। ५ ।।
ऊगन्तो अति रातड़ो, नहीं वापड़ो लगार ।।
सूर्य सहश्र किरणे करी, पावे शोभा अपार ।। ६ ।।
राय जगावी वीनवे, ईश सुणो अरदास ।।
एह सुपन नुं फल कहो, जिम पोहोंचे मन आश ।। ७ ।।
पियु परम सुख पाय के, भाखे सुपन विचार ।।
पुत्रपनोतो प्रसव से सहु जगनो आधार ।। ८ ।।
गर्भ दोष सहु टालतां, पोस करन्तां मार ।।
शुभ वेला सुत जाइयो, वर्त्या जय जय कार ।। ९ ।।

।। ढाल सोलहवीं तर्ज—अय त धीरो रे ।।

शुभ वेला शुभ वार कुंवर जायो रे ।।
हर्ष वधायो मंगल गायो, सब जगने रे सुहायो ।।कुंवरजायो रे।।१।।
नगर छंटायो, जल सिंचवायो, कुसुमावन वरसायो रे ।।
चोक पुरायो, कलश वधायो, इन्द्र तमासे आयो ।। कुंवरजायो।।२।।
लोक मिलायो, ढोल बजायो, गुहिर निशान गुहिरायो रे ।।
आनन्द पायो सब मन भायो, ओच्छव अति मंडायो ।। कुंवर।।३।।

रमणी आवे, केली रचावे, कुंकुम हाथ देवरावे रे ॥
रास रमावे पात्र नचावे, उचित अधिक उपावे ॥ कुंवर० ॥ ४ ॥
घर घर बारे तोरण रचना, नारी अखाणूं लावे रे ॥
दुर्वा पुष्प फलादिक आणी, मंगलाचार करावे ॥ कुंवर० ॥५॥
'चिन्तामणि' सुरतरु जिम राजा, दाने दारिद्र निवारे रे ॥
याचक नाम अयाचक कीधां, सुजश हुवो जग सारे ॥ कुंवर० ॥६॥
पदमनोरे निवास तेहथी, 'पद्म' दीधूं तस नामोरे ॥
सहु जगने अभिराम पणाथी, बीजूं नामज 'रामो' ॥ कुंवर० ॥७॥
गज१, हरि२, रवि३, शशि४, अग्नी५, जलकमला६, सायर७, सुपनां सातोरे।
देखी 'सुमित्रा' स्वामी आगे, आवी कहे ए वातो ॥ कुंवर० ॥८॥
देवलोक थकी चवि आव्यो, उत्तम जीव अपारोरे ॥
राणी उदरे निवास कीयोरे, हर्ष्यों सहु परिवारो ॥ कुंवर० ॥९॥
श्यामवर्ण सुत जायो सुन्दर, राजा मन उत्साहोरे ॥
ओच्छव विविध प्रकार करीने, लीधो लच्छी लाहो ॥ कुंवर० ॥१०॥
दश दिवसनो ओछव कीधो, छोड्या बंदी वानोरे ॥
उत्तमपुरुष ऊपजीयाथी, सहुने होय कल्याणो ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥
'नारायण' तसु नाम दीयोरे, 'लक्ष्मण' अपर विधानोरे ॥
सुरतरु कंद तणीपरे दोई, वाधे पुरुष प्रधानो ॥ कुंवर० ॥ १२ ॥
अनुक्रम वीर विशेष विशेषे, मोह घणेरो पोखेरे ॥
नीलाम्बर पीताम्बर पहीरे, साजनीया संतोखे ॥ कुंवर० ॥ १३ ॥
आचारज साखे करी सीख्या, सकल कला गुण तेहोरे ॥
जाण पणे ते सुरगुरु सारीसा, प्रत्यक्ष दीसे एहो ॥ कुंवर० ॥ १४ ॥
लीला मुष्टि प्रहार करावे, पर्वत नांखे चूरीरे ॥
शूरवीर साहसिक मांही, पावे कीर्ति पूरीरे ॥ कुंवर० ॥ १५ ॥
क्रीड़ा कारण धनुष्य ग्रहीने, जब जब पूरे बाणोरे ॥
खरज शङ्क धरीने शंके, पाडेमनि रे विमाणोरे ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥
कांइक सुजबल राय विचारयो, कांइक सुत बल जाणी रे ॥

'पुष्पवती' अभिधानो[१], सुखमाणे मेरु समाणो ॥ सुण ३ ॥
'सरसा' पिण संयम लेवी, बीजे सुरलोके देवी ॥
होई ने माने साता, सुख मांहे वासर[२] जाता ॥ सुण ४ ॥
'अनुभूतिज' आरती करतो, नारीनूं अति दुःख धरतो ॥
भवमांही भमतो होई, हंस बालक हुवो सोई ॥ सुण० ॥ ५ ॥
सिंचाणे साही नडीयो, ऋषि आगल आवी पडीयो ॥
ऋषिजीए दीधो नवकारो लीधो किन्नरनो अवतारो ॥सुण०॥६॥
दश सहश्र वरसनो आयो, भोगवतो पुण्य प्रभायो ॥
मो देव चवीने आवे, बदलो लेवे सुख पावे ॥ सुण० ॥ ७ ॥
विदग्ध नगर छे वारु, राजा छे अधिक उदारु ॥
'प्रकाशसिंह' नरनाहो 'प्रवग' रेवतीनो नाहो । सुण० ॥ ८ ॥
सहु साजनने रे सुहायो. 'कुण्डल मण्डित' सुतजायो ॥
सुत सुन्दर अधिक मलूणो. सुततेज प्रतापे दूणो ॥ सुण० ॥ ९ ॥
'कयान' भवमां भमतो, सो वादि जमारो गमतो ॥
नारी 'चक्रपुर' राजे, 'चक्रध्वज' राज विराजे ॥ सुण० ॥ १० ॥
'धूमसेन' पुरोहित[४] तेहने, 'स्वाहा' रमणी छे जेहने ॥
जायो तिहां 'पिंगल' नन्दो. उपज्यो मा-मन आणन्दो। सुण०। ११।
'अतिसुन्दरी' बेटी राजानी, खप करती अति विद्यानी ॥
श्री आचारिजजी पासे. 'पिंगल' पण पढे उल्लासे॥ सुण० ॥ १२॥
तवनो बंधाणो नेहो. 'पिंगल' ने कुँवरी तेहो ॥
संगतथी विणसे कामो, एमजोजो बहुलाठामो ॥ सुण० ॥ १३ ॥
कुँवरी ने लेई नाठो, ओ ब्राह्मणी ओ अति धाठो[५] ॥
'विदग्ध' नगर चलि आयो वसवानो मन ठहरायो॥सुण०॥ १४॥
कसब[६] न कोई जाणे, तृण लाकडी मूली आणे ॥
इमतिमतो पेट भरेवो, विण कसबज एम करेवो ॥ सुण० ॥ १५॥
ए कसब तणी अधिकाई, निजपुर में लहेरे वडाई ॥

१ नाम। २ दिन। ३ आयुष्य। ४ कुलगोर। ५ धीठो कठण हीयाने धीट। ६ कामो (कला)

ए कसब कलाए दीठो, शशि[1] रुद्र तणेशिर बैठो ॥ सुण ॥ १६ ॥
'अति सुन्दरी' सुन्दरता ए, नृप सुतने कोन बताए ॥
सा लीधी तेणे छिनाई, पिंगल रहियो मुख वाई ॥ सुण० ॥ १७ ॥
भय बाप तणो अति आणी, पर्वत में पल्ली ठाणी ॥
'कुण्डलमण्डित' तिहां वसीयो, सुख दुःख न देखे रसीयो । सुण.।१८।
नारीनो आणी वियोग, 'पिंगल' तब लीधो योग ।
चित्तथी नवि छूटे नारी, घाटी ए म्होटी भारी ॥ सुण० ॥ १९ ॥
'दशरथ' नो देश विणासे 'कुण्डलमण्डित' जन त्रासे ॥
तब 'बालचन्द्र' चढि आयो, बांधी नृप पासे लायो ॥ सुण० ॥ २० ॥
तब दीनपणुं तस देखी, करुणा नृप ने सुविशेषी ॥
छोडी दीधो तिण वारो, 'कुण्डलमण्डित' सुकुमारो ॥ सुण० ॥ २१ ॥
ते बाप-राज्य ने काजे, कुंवरजी रहै नीति साजे ॥
'मुनिचंद्र' ऋषीश्वर संगे, हुवो श्रावक अति उच्छरंगे ॥ सुण. ॥ २२ ॥
राज्य-वांछाना मांही, तस प्राणज छूट्या प्राही ॥
जनक[1] घरे अवतारो, निसुणो[2] 'सीता' सुविचारो ॥ सुण० ॥ २३ ॥
'सरसा[3]' पण भवमें भमती, माफिरे इच्छाए रमती ॥
होई पुरोहितनी कुंवारी, सा पढवे गुणवे सुभारी ॥ सुण० ॥ २४ ॥
वेगवतीरे कहाणी, सुन्दर रूप सयाणी ॥
मुनि आल देई दुःख पायो, ते सुणज्यो चित्त न्यायो ॥ सुण० ॥ २५ ॥

दोहा क्षेपक—

पाप अठारे जिनकथा, करो मति भवी जीव ॥
कीयांथी दुःख पाहुवा, नरकां खावे रीव ॥ १ ॥
हिंसा झूठ चोरी अब्रम्भ, ममता घणी विशेष ॥
क्रोधमान माया लोभ, चले राग ने दोष ॥ २ ॥

१ जनक राजाके यहां भामण्डल पुत्र पणे पैदा हुवा । २ हवे सीतानो वीचार सांभलो । ३ सरसा जे ईशान देवलोकमां देवी थई हतीं ते त्यांथी चवी घणा भवकरी वेगवती नामे ऊपनी त्यांथी दीक्षा लेई ब्रह्म लोकमां गई त्यांथी चवी जनक राजानी स्त्री 'विदेहा' ने पेटे अवतरी ।

देखाव्या वसुधाविखेरे, राजा राज कुंवार।
सारिखो संसारमेंरे, कोईयन एक लगार ॥ सीता ३ ॥
अर्धवबरदेशनारे, अंतरंग" तसनाम,
म्लेछ महामयमंतछेरे, देश उजाड़े ताम ॥ सीता ॥ ४ ॥
जनक नपोंचेतेहनेरे, दूतमोकलेएक,
राजा दशरथ पाखतीरे, बोले आणी विवेक ॥ सीता ॥ ५ ॥
सूर्य रहाम् देखीयेरे, आवे छींक जेवार ॥
मीडाणो छे भूपतीरे, आगे देव विचार ॥ सीता ॥ ६ ॥
ऊठ्यो अति आतुर थई रे, वाज्या ढोल दुमाम।
असवारी करवा भणी रे, ताम सूं बोले 'राम' ॥ सीता ॥ ७ ॥
तुमे पधारो छो सही रे, शूरां सूं संग्राम।
अमने घर बैसी रह्या रे, कीसी वध से[1] माम ॥ सीता ॥ ८ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–ख्याल की मन्त्री श्री चोथमलजी म० कृत

क्यों ? आप पधारो, हुकम करो तो जावूं जुद्ध में ॥ टेर ॥
भेडां ऊपर जावतां सरे, आछा न लागो आप।
अर्ज करूं इण कारणे सरे, बगसो आज्ञा बापजी ॥ क्यों ॥ १ ॥
नाजुक देह लघु वय थांरी, जिण सूं मेंही जावों।
जनक केसी टाबर ने मेल्या, इण सूं थे गम खावोजी ॥क्यों २॥
'रामचन्द्र' कहै सुनो पिताजी, 'लछमन' लेऊं साथ।
'जनक' रायरी मदत में सरे, जाय दिखाऊं हाथजी ॥ क्यों ३ ॥
म्हारी तर्फ रो राजा ? मनमें, जग सोच मत लावो।
जावां वेगा जुद्ध में सरे, झट आज्ञा बगसावोजी ॥ क्यों ॥ ४ ॥
लेई फौजने पञ पधारो, जुद्ध करनके तांई ॥
नवा शहरमे 'चोथमल' कहै, 'नाथ' गुरु सुपसाईजी ॥क्यो॥५ ॥

ढालमूलनी

अनु[1] ज्ञाने आगे कीरे, चाल्या 'राम' नरेश।
चतुरंगिणी सैन्या सझीरे, 'मिथीला' पुरीय प्रवेश ॥ सीता ॥ ९॥

१ होस मोत अथवा शर्म।

ढाल क्षेपक तर्ज–खडका स्वामी श्री नथमल्लजी म० कृत.

'दशरथ' नृपनो हुकमलेईचढे, 'राम' सु 'लिछमन' वीर शूरा ॥ हयगय रथ पायक दलसंचर्यो, सुभट ताजा लीया मानीपूरा ॥ चढ्या श्री 'राम' 'लिछमन', अरिजीतवा, ॥टेर॥ १ ॥ मारग अनड नमावता जावता, जनक मिथीलापुरी आय मिलीया॥ जनक सैन्या लेई साथ हुवो तदा, असुर लडवा भणी शीघ्र चलिया ॥ च. ॥२॥ म्लेछ मदमस्त अति पुष्ठ गर्भितरहै, राम, दल देखीने सजथावे ॥ वाजो त्रृणतूर नो सांभली शूरमा, केईगज अश्व रथबैठआवे ॥ च, ॥ ३ ॥ शस्त्र रवारा चले कोई पालालडे, माचीयो शोर सं ग्रामभारी ॥ केई धरणीढले, केईपाछापडे. लेय मुखत्रण केई जाय हारी ॥ च, ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

असुरशूं आवीअड्यारे, सुभट जीके झूंझार ।
उठावरणी असुरांतणीरे, सही नसकया इक वार ॥ सीता ॥ १० ॥
धनुष्य चढावी रामजीरे, करतो उठावणीआप ।
असुर मद्दअलगाथयारे. धर्मथकीजिमपाप ॥ सीता ॥ ११ ॥
'जनक' तणा जनपद तणोरे, टल्यो मयल४ कलेश ।
राजाजी सुखपामीयारे, रंग विनोद विशेष ॥ सीता ॥ १२ ॥
'सीता' दीधी रामनेरे. सारिखो संयोग ।
भलु २ भाखे वणूं हर्षे सबला लोग ॥ सीता ॥ १३ ॥
सीता रूप सोहामणूंरे. निसुणीने सुरदेव ।
निरखण हेतेआवीया. सीताघरे ततखेव ॥ सीता ॥ १४ ॥
केश नैत्र पीला खरारे, तूम्बीछत्रिकाधार ।
दण्ड पाणी कोप५ पीन खूंरे, शिरही शिख्या सुविचार ॥ सीता ॥ १५ ॥

टाल क्षेपक तर्जा ख्यालकी स्वामी श्री नथमल्लजी कृत.

एक दिवस म्हेलमें नारद' देखणने आयो जानकी ॥ टेर ॥
सीता सुन्दरतिण समेसरे. बैठी म्हैल मझार,
दर्पण आगे शोभतोसरे, प्रतिबिम्ब पर्यो तिणवारजी ॥ टेर ॥ १ ॥

आज्ञा–रजा । २ युद्ध ३ देश । ४ सवलो । ५ लंगोटी। ६ चोटी ।

ढाल मूलगी

मिथिला नगरी छे भली रे, 'जनक' तिहां भूपाल ।
'विदेहा' उदरे ऊपनी रे, 'सीता' रूप रसाल ॥ सीता ॥२२॥
अमरी[१] कुंवरी नागनी रे, मैं दीठी अवि लोय ।
वारम्बार विचारतां रे, 'सीता' सम नहीं कोय ॥ सीता ॥२३॥
जेहवी छे सा सुन्दरी रे, तेहवी लखि न जाय ।
लखि तैसी कही को सकेरे, अचरज है खग राय ॥ सी ॥२४॥
'भामण्डल' ने भामिनी रे, जड़रे मिले इक जोड ।
साचू सुख संसारनूंरे, म्हारे मन ए कोड ॥ सीता ॥ २५ ॥

ढाल चेपक पूर्ववत्

महाराजाजी हम जोगी जंगल फिरां महा० नहीं नारी में ध्यान, महा० तो घर आवे या कामनी महा० होवे परम कल्याण, म० नारदजी ॥ २ ॥ महा० दीधी 'दशरथ' नन्दने, म० इसडी सुणी में वात, म० शक्ती हुवे जो आपरी, म० तो तुमे घालजो हाथ । म० ॥ नारदजी ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

सुत वचने संतोषीयो रे, भलू करे करतार ।
विसर्जीयो ऋषि राजीयो रे, उघमनो अधिकार ॥ सीता ॥२६॥
खग[२] 'चपलगति' मोकल्यो रे, करवाने अपहार ।

दोहा चेपक

नभचर[३] उड्यो आकाश में, ऊतरयो मिथीला मांय ।
कीयो रूप हयको सही, कांहू धीरज नांय ॥ १ ॥
लोक मिली सहु जनकपे, कीधी ए अरदास ।
अश्व मण्डयो घोकल शबद, करे सबन को नाश ॥ २ ॥

सोरठा—राजा गज असवार, आयो हयने पकड़वा ।
कपट तणो बहुपार, कैसे पावे आदमी ॥ १ ॥

---

१ देवी । २ आकाश में उड़ने वाला । ३ नभ आकाश-चर-यानी फिरने वाला ।

—सवैयो—

देखो भूलोक में न भूम को चलणहार ।
ऐसो हय ताजी वाजी नट जो करतू है ॥
तातो है तुरङ्ग रङ्ग शोभित अनेक अङ्ग ।
वाजित्र मृदङ्ग खुर मनकूं हरतू है ॥
वण्यो है शृंगार जिम जडित जडाव जड्यो ।
जाकी अति शोभा दीसे ऊजल्र भरतू है ॥
ऐसो हय छूटो रवि रथ केण गाव सेती ।
ऐसो एह चंचल महा चपल पवंगू है ॥ १ ॥

—अडियल छन्द—

हय ऊपर तिणवार मुकुट शिर भूपरे, होय गयो असवार, रायते ऊपरे, हय ले चल्यो आकाश. वास तिहां जनक को, आय मुंक्यो तेह ठाम आवास शोभित तीको ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

राजा लेही आवीयो रे, किणही न जाणी सार ॥ सीता ॥२७॥
उठी आयो साहमोरे, मिलियो बांह पसार ।
कुशल वात पूछी घणी रे, प्रीती तणे रे प्रकार ॥ सीता ॥ २८ ॥
'जनक' ? तुम्हारी सांभली रे, पुत्री रत्न प्रधान ।
नारी निरूपम जेटली रे, तेहमां तिलक समान ॥ सीता ॥ २९ ॥
अच्छे अनूपम कन्यकारे, जिम तुम भाखो तेम ।
सर्व कलायुत आगली रे, पण देवाये केम ॥ सीता ॥ ३० ॥
दीधी 'दशरथ' नन्दने रे, अवरने केम देवाय ?
मणि माथे छे सापने रे, कहो किम लीधी जाय ॥ सीता ॥३१॥
जीती भणी मांगूं अछे रे, नहीं तस्तो अपहार[1] ।
करतां वेला छे कीसी रे, राखू छूं व्यवहार ॥ सीता ॥ ३२ ॥
रामने जीती रामजी रे, परणे कन्या एह ।
के 'भामण्डल' परणसे रे, एमां नहीं को संदेह ॥ सीता ॥ ३३ ॥

---

1 हरीजवूं ।

ढाल मूलगी

'वज्रावर्तज' नामथी रे, अने अरणवा वर्त ।
धनुष्य अछे घर माहेरेरे, मण्डपे आणी धरंत ॥ सीता ॥ ३४ ॥
यक्ष हजारे सेवियां रे, अतिशय वन्त अतीव ।
गौत्रज देवीनी परेरे, सेवीये रे सदीव ॥ सीता ॥ ३५ ॥
धनुष्य नमायां हमनम्यारे, रुकटी[1] करवा नेम ।
समजो सीधी वातमां रे, जेम आपणो रहै प्रेम ॥ सीता ॥ ३६ ॥
एह अचम्भो छे खरो रे, एतो प्रत्यक्ष आज ।
एकहीने[2] चढोडवे रे, सारो वछित काज ॥ सीता ॥ ३७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

धनुष्य दोय उहां लाय धरीये, कुलक्रम सेवा ही करीये, साधे सो कुंवरी ने वरीये । 'जनकने' भरियो होंकारो, विद्याधर सर्व हुवा लारो ॥ सत्य ॥ २३ ॥

—ढाल मूलगी—

खेचर 'चन्द्रगति' चालीयोरे, पुत्र अने परिवार ।
धनुष्य दोय साथे भलां रे, राजा लेई लार ॥ सीता ॥ ३८ ॥
'मिथिला' नगरी आवीयो रे, बाहिर डेरा दीध ।
वर्णन तो विद्या धरो रे, पृथिवी मांही प्रसिद्ध ॥ सीता ॥ ३९ ॥
अष्टादशमीं ढाल में रे, वस्तु भलीनी चाय ।
'केशराज' पूरो मही रे, जो होय पूण्य अगाह ॥ सीता ॥ ४० ॥

दोहा (मारू रागे)

'जनक' 'विदेहा' नारि सूं, सम्भलावी सहु वाय ।
मालममां माले सहु, कहै राणी विल्लाय ॥ १ ॥
देवन तूसो तूं हुयो, लीधो पुत्र प्रधान ।
लेवां चाहै पुत्रीका, केम राख्न सूं प्राण ॥ २ ॥
स्वेच्छाए परणेतनो, हर्ष घणो संसार ।
अण इच्छाए परणेतनो, हर्ष न होय लगार ॥ ३ ॥

---

१ योग तजवीज, इच्छा (शक्ति) । २ एक धनुष्य ने चढावयाथी ।

दैवयोगे श्री 'रामजी' धनुष्य चढावा आय ।
अवरनेरे चढावतां, अणसर्ज्यूं दुःख थाय ॥ ४ ॥
'जनक' कहै जाणे नहीं, 'राम' महा बलवंत ।
मैं दीठो संग्राम में, पौरस नो नहीं अन्त ॥ ५ ॥
समजावीसा सुन्दरी, पूजी धनुष्य उदार ।
मण्डप मांही तेडीया, राजा राज कुंवार ॥ ६ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

सहुको मिथिला ही आया। स्वयम्वर मण्डप मण्डवाया, अयोध्या दूत पठवाया । सबल बल 'रामचन्द्र' धायो, भ्रात ले मिथिलापुर आयो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २४ ॥ 'जानकी' स्वयम्वर आवे, साथ सहु सखियन सोहावे, मनमें 'रामचन्द्र' ध्यावे । दैव से अर्जी ही कीजे, क मुजने 'रघुवर' वर दीजे ॥ सत्य व्रत ॥२५॥

धूलचन्दजी कृत क्षेपक तर्ज-माली थारा बाग मे दोय नारङ्गीयां पाकीरेलो

फावे अम्बर फूटरा पहिरण पञ्चरङ्गारे लो, अहो, पहि० ॥
अंजन-मंजन आंजीया, शिर आड सुचंगारे लो. अहो. शिर०॥१॥
झलके कुण्डल जोडला, तीखा तम्बोलोरे लो. अहो. तीखा० ॥
अधर रंग्या आछीतरे, राता रङ्गरोलोरे लो. अहो. राता० ॥ २ ॥
हार-धरिया हीयापरे, नीका नवसरियारे लो. अहो. नीका० ॥
करमें कंकण-कन्यका, भली पग्वरीयारे लो. अहो. भली०॥ ३ ॥
चम्पल नयनी भामिनी वर रूप विराजेरे लो. अहो. वर० ॥
इन्द्राणीरती अप्सरा, लक्ष्मीपिन लाजेरे लो. अहो. ल० ॥ ४ ॥
इन्द्राणी जिम ओपती. मथ वेष मनूगेरे लो. अहो. मथ० ॥
शील सुरंगी सुन्दरी, पतिभक्ता पूरीरे लो. अहो. पति० ॥ ५ ॥

स्वामी श्री रावतमलजी म० कृत क्षेपक तर्ज-माता सीता की गोदी मे

आई-जनक-सुता सखि साथ. हाथ वर मालिकार ।
दीसे इन्द्राणी अवतार अनोपम बालिकार ॥ टेर ॥
सजकर सोले तन सिणगार. धार पति राम नेरे ।

आवे स्वयम्वर मण्डप मांय, विलोके भूप-रूप-तन तांय ।
इणपर बोले विस्मय पाय ॥ आई० ॥ १ ॥
अहो यह कन्याने करतार रूप किम आपीयोरे ।
पूर्व पुण्य किया जिन प्राणी, जिन्हकी होसी यह पटराणी ।
ऐसी मुख २ होरही वाणी ॥ आई० ॥ २ ॥

दोहा—दिव्या भूषण धारीने, सखियो ने परिवार ।
मण्डपे आवी जानकी, ईन्द्राणी अवतार ॥ ७ ॥
धनुष्य तणी पूजा करी, मनमें समरे राम ।
मनसा वाचा कर्मणा, अवरां सूं नहीं काम ॥ ८ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी म. कृत-ढाल चेपक तर्ज-परभव की खर्ची लेलो
'रामचन्द्र' मुजवर भावे, दूजो दाय नहीं आवे ॥ टेर ॥
'रघुवर' टाली ने वर दूजो, जनक भ्रात सम दिखलावे ।राम १।
सोहिनी सूरत मोहनी मूरत, झूरत ही अहो निशी जावे ।राम २।
चाप चढे तो कहा न चढे तो, हम दिल अवर नहीं भावे । राम ३।

—सवैया—

धनु भरी निहचे भजनी पुनि, तात हितेपन मेरो महा है ।
सुन्दर रूप सुरूप सखी, पन मोमन में रमराम रहा है ॥
मोतिन मार तो डार चूकी, उरधार चूकी अपनो दुलहा है ॥
चाप निगोडो अब जरजाह, चढ्यो तो कहा न चढे तो कहा है॥१॥

ढाल चेपक तर्ज-पूर्ववत
काच पाचके अन्तर बहुलो, अमृत तज विष कुण खावे ॥राम॥४॥
मुझ मनमें तो निश्चय करीयो, नाथ अयोध्या दिलचावे॥राम॥५॥

ढाल मूलगी चेपक
धनुष्य की पूजाही करती, राम को नाम अनुसरती, दिल विच ध्यान ही धरती, श्रोता जन सुणजो अब सारा, पहिरे कुण सिय की वरमाला ॥ मन्य० ॥ २६ ॥

ढाल उगणीशवी तर्ज-काना प्रीत लागी हो ॥
'सीता' 'रामे' गचीहो, जेम चकोरी चंदसूं ए.प्रीतज साची हो ।१।

भूधर खेचर राजवी, भरमाणा भारी हो।
भाग्य वडो ते भूपनो, जे ए पावे नारी हो ॥ सीता ॥ २ ॥
नारदे भाखी जेहवी, सा तेहवी जोई हो।
'भामण्डल' भूंई पड्यो, अति परवस्य होई हो ॥ सीता ॥ ३ ॥
'जनक' राम तिहां आयके, ए साच कहावे हो।
धनुष्य चढावे जे सही, ते ए कन्या पावे हो ॥ सीता ॥ ४ ॥
ऊठ्या केड काठीकरी, जे राय सनूरा हो।
धनुष्य चढावण कारणे, शूरामां शूरा हो ॥ सीता ॥ ५ ॥
सापां साथे वींटीया, नावे गहता ऊंहो।
फम्मी हो कोई नासके, जे गाढा ताऊंहो ॥ सीता ॥ ६ ॥
ज्वाला मूके छे घणी, दाजन्ता भाजी हो।
अधो[१] मुख अलगा रह्या, मन मांही लाजी हो ॥ सीता ॥ ७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

विद्याधर चाप पास आवे, अहि अरु अगनी दीखावे, भाग्य विन ऐसा ही थावे। कहो कुण चाप पास जावे, जावे सो शर्म रहित आवे ॥ सत्य० ॥ २७। सहुको अलगा ही नाठा, धनुष्य के आगे ही त्राठा, पूर्वभव पाप कीया माठा। रोस कर रघुवरजी उठे, सुमित्रा नन्द है पूठे। सत्य व्रत पालो ॥ २८।

—ढाल मूलगी—

इण अवसर श्री 'रामजी', लीला गति कारी हो।
धनुष्य समीपे आवीयो, आछो अवतारी हो ॥ सीता ॥ ८ ॥
'चन्द्र गत्यादिक' राजवी, करता अति हामोहो।
खेचर खेंचीनठहर्यो, एहनी शी आशोहो ॥ सीता ॥ ९ ॥
वज्र[२] पाणी जिम वज्र ने, 'राघवजी' हरसे हो।
शान्त करी अहि अग्नि ने, कर साथे फरसे हो ॥ सीता ॥ १० ॥

—ढाल क्षेपक तर्ज-लड़का—

प्रबलबली आवीयो धावीयो रघुपति', (टेर) धनुष्य महामो तिणवार आवे

१ नीचा। २ इन्द्र।

ुण्यके सन्मुख पाप अलगो हुवे, तेम सगला उपद्रव पुलावे । प्र० । १ ।
ज्रावर्त नामथी धनुष्य सूर सेवता, सहश्र गमे सानिधि देवा ।
मोरका शोर सुन सर्प अलगा हुवे, तेमने निकट कोईयन रहेवा ।प्र. २।
पूजी अर्ची करी आप सम्भावीयो, ऐंचीयो खांच कर्णान्त तांई ।

ढाल मूलगी

नेत्र१ तणी पर चालीने, प्रभु पणछ चढावे हो ।
आंख कर्णान्तक खैंचीने, टंकारव सुणावे हो ॥ सीता ॥ ११ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत्

धनुष्य टंकारथी शब्द उठ्यो इसो, जाणे के प्रलयसमो दिखाई ।प्र. ।३।
पर्वत शृङ्ग तूटी परे धरणंप, समुद्र ना जलजिहां क्षोभपावे ।
शेषपिण खलबल्या, देवपिण टलवल्या हयगय बंधन तोड़ जावे ।प्र.४।

ढाल क्षेपक पूर्ववत्

०८ यह 'चन्द्रगति' सुनिया, शोच से मस्तक ही धुनिया, अरे
'०' होगये हित पुनीया । धनुष्य निज खोय दीया दोई, आये
निज स्थान मान खोई ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २९ ॥

ढाल मूलगी

'राम' गले वरमालिका, 'सीता' पहिरावे हो ।
काज सर्यूं चित्त चिन्तव्यूं, अधिकूं सुख पावे हो ॥ सीता ॥१२॥

क्षेपक ढाल मूलगी

जानिकी अधिकी हरखावे, माल गल रघुवर के ठावे, स्त्रियां मिल
मङ्गल हो गावे । व्याव का बाजा वजवावे, अपर नृप निज निज
पुर जावे ॥ सत्य ॥ ३० ॥

ढाल मूलगी

बीजो२ 'लक्ष्मण' चढावीयो, एह विधी कीधी हो ।
अष्टा दस वर कन्य का, खग रायां दीधी हो ॥ सीता ॥ १३ ॥
विलखाणो विद्याधरु, 'भामण्डल' लेई हो ।
निज नगरे चलि आवीयो, भूमण्डले केई हो ॥ सीता ॥ १४ ॥
तेड्या दशरथ राजवी, महु मजन साथे हो ॥

१ नेतरनी सोटी । २ अर्णवा वर्त ।

—ढाल मूलगी—

रायतिहां 'दशरथ' बोलावे, हर्ष दिल मिथिला में आवे, जनक नृप सामो ही जावे। महिपति दोनों ही मिलीया, दूध में शाकर ही भिलीया ॥ सत्य ॥ ३१ ॥ वनडा की खुब करी त्यारी, शहर में आई असवारी, निरखवा आया नरनारी। मूर्ती देखी नहीं आगे, लोक कहै बनड़ो ओ सागे ॥ सत्य व्रत ॥ ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—ख्याल की

तूं चाल चंपली, वनड़ो आयो है माणक चौक में ॥ टेर ॥
झमकू चाली जोर से सरे, दोली आई दौड।
हुलासीरो हार सहेल्यां, तटके नाक्यो तोड रे ॥ तूं चाल ॥ १ ॥
हंजा हेलो पाडीयो सरे, आव ऊरी उमराव।
जमनी तो झाला करे सरे, अणची वेगी आवरे ॥ तूं चाल ॥ २ ॥
पानी रो तो पतो न लागो, वाली गमायो बोर।
चांदा चाली कर-चतुराई, सूंजी मचायो शौर रे ॥ तूं चाल ॥ ३ ॥
लाली लागी देखवा मरे, भंवरी भांगी भीड।
चुतरी तो चूडो फूटगीयो, चुनी फाड्यो चीर रे ॥ तूं चाल ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—पदरी—भूलचन्दजी कृत

वनड़ो घूमरयो छे जी, राजा 'जनकजी' रे द्वार ॥ टेर ॥ विद्याधर को मान मारीयो, असुर मनाई हार, वड़े २ भूपती ए सेवित, इण सम नहीं संसार ॥ व० ॥ १ ॥ सुरपति सरिसो रहनो, मोह रया नरनार। धन्य २ जानि की कुंवरी, भल पायो भरतार ॥ व.२ ॥

ढाल मूलगी

विवाह भलो सीता तणो कीधो नरनारी हो ॥ सीता ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपकतर्ज—सल्यरो जोर चल्योरे छिन्दनारी को
स्वामी श्रीमगलमलजी म. कृत (स्वामीजी श्रीरायचनमलजी म. से उपलब्ध)

सगुरो भाग्य भलो रे सीया नारी को, जग जश छायो रे जनक कुँवारी को ॥ टेर ॥ धन्य २ सती सीया, पूर्व पुण्य कीया, पायो पति अवतारी को ॥ सगरो ॥ १ ॥ धनुष्य नमायो भारी, प्रबल प्रताप कारी, मान मिटायो अहंकारी को ॥ सगरो ॥ २ ॥ जुग

आंसू न्हांखी भारवती, सा गद गद वाणी हो ॥ सीता ॥ २६ ॥
अवरोने जल मोकल्यू, हूं क्यूं चित न आणी हो ? ।
एटले नाजर आवीयूं, ते आयो पाणी हो ॥ सीता ॥ २७ ॥
पाणी मस्तक मूकीयू, राणी सुख मान्यू हो ।
धन्य जमारो माहरो, मैं आजज जाण्यू हो ॥ सीता ॥ २८ ॥
राजाए नाजर ने पूछीयू, केम वार लगाई हो ।
वृद्ध भणी प्रभु वेग सुं, हूं नहीं शक्यू आई हो ॥ सीता ॥ २९ ॥
शुद्धा पांव पड़े नहीं, चालन्ता पग घासुं हो ।
खुं २ करतो खांसतो, सुगालो दीसुं हो ॥ सीता ॥ ३० ॥
दांत पड्या खोखो थयो, मुख लाल पडन्ती हो ।
नारी न आवे आसनी, नविमार करन्ती हो ॥ सीता । ३१ ॥
जोर घटे तन लीलरी, काने न सुणाय हो ।
कर कम्पे शिर धूजणी, बूढापाये थाय हो ॥ सीता ॥ ३२ ।

ढाल चोहक तर्ज–धमाल–स्वामी श्री रतनचन्दजी म० कृत

मात पिता सुत बांधवा हो, सगा सनेही मित्त ।
परणी हाथरी पदमणी हो, ते पिण न देवे चित्त ॥ १ ॥
बूढापो वैरी आवीयो हो ॥ टेर ॥
बोलन्ता जीभ थडथड़ हो, कांनां सुणे नहीं वेण ।
नाकन आवे वासना हो, झरख्या दोनों नेण ॥ बूढापो ॥ २ ॥
काया पड गई जोजरी हो, पग पड़े नहीं ठाय ।
डांग पकड ऊभो रहे हो, अठी उठी पड जाय । बूढापो ॥ ३ ॥
दांत श्रेणी खोली पडी हो, टिर गया दोनों होट ।
लालां ललकी मुख थकी हो, आय पडी जगलणो पोट ॥ बू. ४ ॥
माथल बलखीणो पड्यो हो, मल पड़ गया शरीर ।
निकली हाडरी पासली हो, हूय गयो भोलो पीर ॥ बूढापो ५ ॥
सास खास वधियो घणो हो, आवे सींट अपार ।
डेहली होगई डूंगरी हो, नो कोस थयोरे बाजार ॥ बूढापो ॥ ६ ॥

वात कहै जो हिततणी हो, तो नवि माने कोय ।
साठी बुद्ध नाठी कहै हो, सुणने सोमां रह्यो जोय ॥ बूढापो ७ ॥

ढाल मूलगी

बूढापाना दोषए, राजाजी, जाणे हो ।
विषय थकी मन वाली ने, वैराग्ये आणे हो ॥ सीता ॥ ३३ ॥
'सत्यभूती' नामे भला,मुनिवर चउनाणी हो ।
वनमें आवी समोसर्या, गुरु आगम जाणो हो ॥ सीता ॥३४॥
पुत्रों सूं तव रायजी, बहुयरने साथ हो ।
वन्दन काजे आवीया, पुरलोक उल्लास हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥
देई प्रदिक्षणा साधुने, पद पंकज वन्दे हो ।
सन्मुख सेवा साचवे, भव पाप निकन्दे हो ॥ सीता ॥ ३६ ॥
'चन्द्रगति' सुत नारी सूं, खेचर परिवारे हो ।
'रथ[1] आवर्त' जपरवते, जई क्रीडा कारे हो ॥ सीता ॥ ३७ ॥
पाछ्ड़तां[2] निजरे पड्या, ऋषि राय विराजे हो ।
आवीने सेवा करे, ऋषि देशना साजे हो ॥ सीता ॥ ३८ ॥
अभिलाषी 'सीता' तणो, 'भामण्डल' दीठो हो ॥
मात पिता सुत नारीनो, भव भाख्यो मीठो हो ॥ सीता० ॥३९॥
'भामण्डल' 'सीता' सही युगलपणे जायां हो ॥
मात विदेहा जाणवी, कहीने समजाया हो ॥ सीता० ॥ ४० ॥
'पिंगल' देवे तूं हर्यो, निज वैर विचारी हो ॥
तूं राख्यो खग मन्दिरे, घरे एह कुंवारी हो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
ज्ञानी स्मरण पामीने, 'भामण्डल' देखे हो ॥
साधु वंदे साचो सहु, मनमांहे विशेषे हो ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
मूर्छाए धरणी पड्यो, ऊपाडी लीधो हो ॥
पग लाग्यो सीता तणे, में अविनय कीधो हो ॥ सीता० ॥ ४३ ॥

१ रथावर्त । २ पाछा फरता ।

क्षेपक ढाल मूलगी

मुनिपे भेदही पायो, 'भामण्डल' सुनके घबरायो, हाय में अनरथ करवायो ॥ बहिन से वंछना कीनी, नरकनी नीव मैं दीनी ॥ सत्य व्रत पालो ॥३३॥ मुनि कहै कर्मगती भारी, टरे नहीं कोई से टारी, सीता तो वेन है थारी ॥ आयने शीष ही नामे, निज कृत दोष ही खामे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३४ ॥

ढाल मूलगी—

सीता दे आशीषजी, चिरंजीवो भाई हो ॥
करे घणी पगे लागणी, मावित्र बोलाई हो ॥ सीता० ॥ ४४ ॥
धाय मिलिया 'रामजी' लीये कण्ठ लगाई हो ॥
मिश्रीथी मीठी खरी, जगमें एह सगाई हो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥
'भामण्डल' पट थापीयो, आपणपे राजा हो ॥
वैरागे व्रत आदरे, गुरु तारण जाजा हो ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
साधु नमी राजा नमी, नमी 'राघव' राया हो ॥
'भामण्डल' सीता नमी निज मन्दिरे आया हो ॥ सीता० ॥४७॥
ढाल भली ऊगणीसवीं, सीता परणावी हो ॥
'केशराज' श्री रामनी, पटनारी कहावी हो ॥ सीता० ॥ ४८ ॥

दोहा (सबाब रागे)

'सत्यभूती' मुनिवर भलो, सत्यदेव सुविशाल ॥
शाशन सोह[1] वधारणो, पट् कायां प्रतिपाल ॥ १ ॥
विधिसूं देई प्रदक्षिणा, करजोडी नरनाथ ॥
प्रश्न करे प्रगट पणे, निसुणे सघलो साथ ॥ २ ॥

—ढाल वीशवीं तर्ज—वीर नृपती अन्यदास में (हमीरीयारी)—

हमसूं भाखो एहजी, पूर्व भवान्तर वात ॥ साधुजी ॥
सुख दुःखनो अवदातजी, वांदी जमारो जात ॥ साधुजी ॥हम १॥
'सेनापुर' थो सुन्दरूं, 'भावन शाह' सुजाण ॥ साधुजी ॥
पत्नी[2] थी तसु दीपिका, सुता 'उपास्ति' अजाण ॥ सा० ॥हम २॥

---

१ शोभा वधारनार। २ स्त्रीदत्ती।

वात कहै जो हिततणी हो, तो नवि माने कोय ।
साठी बुद्ध नाठी कहै हो. सुणने सोमां रह्यो जोय ॥ बूढापो ७ ॥

ढाल मूलगी

बूढापाना दोषए, राजाजी, जाणे हो ।
विषय थकी मन वाली ने, वैरागे आणे हो ॥ सीता ॥ ३३ ॥
'सत्यभूती' नामे भला,मुनिवर चउनाणी हो ।
वनमें आवी समोसर्या, गुरु आगम जाणी हो ॥ सीता ॥३४॥
पुत्रों सूं तव रायजी, बहुयरने साथ हो ।
वन्दन काजे आवीया, पुरलोक उल्लास हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥
देई प्रदिक्षणा साधुने, पद पंकज वन्दे हो ।
सन्मुख सेवा साचवे, भव पाप निकन्दे हो ॥ सीता ॥ ३६ ॥
'चन्द्रगति' सुत नारी सूं, खेचर परिवारे हो ।
'रथ[1] आवर्त' जपरवते, जई क्रीड़ा कारे हो ॥ सीता ॥ ३७ ॥
वाहुड़तां[2] निजरे पड़या, ऋषि राय विराजे हो ।
आवीने सेवा करे, ऋषि देशना साजे हो ॥ सीता ॥ ३८ ॥
अभिलाषो 'सीता' तणो, 'भामण्डल' दीठो हो ॥
मात पिता सुत नारीनो, भव भाख्यो मीठो हो ॥ सीता० ॥३९
'भामण्डल' 'सीता' सही युगलपणे जायां हो ॥
मात विदेहा जाणवी. कहीने समजाया हो ॥ सीता० ॥ ४० ॥
'पिंगल' देवे तूं हर्यो, निज वैर विचारी हो ॥
...पे. खग मन्दिरे, घरे एह कुंवारी हो ॥ सीता० ॥ ४१
...स्मरण पामीने, 'भामण्डल' देखे हो ॥
साधु वदे साचो सहु, मनमांहे विशेषे हो ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
मूर्छाए धरणी पड़यो, उपाडी लीधो हो ॥
पगे लाग्यो सीता तणे, मैं अविनय कीधो हो ॥ सीता० ॥ ४३

1 रथावर्त । 2 पाछा फरता ।

दीपक ढाल मूलगी

मुनिपे भेदही पायो, 'भामण्डल' सुनके घबरायो, हाय में अनरथ करवायो ॥ बहिन से वंछना कीनी. नरकनी नीव में दीनी ॥ सत्य व्रत पालो ॥३३॥ मुनि कहै कर्मगती भारी, टरे नहीं कोई से टारी. सीता तो बेन है थारी ॥ आयने शीष ही नामे, निज कृत दोष ही खामे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३४ ॥

ढाल मूलगी—

सीता दे आशीषजी, चिरंजीवो भाई हो ॥
करे घणी पगे लागणी, मावित्र बोलाई हो ॥ सीता० ॥ ४४ ॥
धाय मिलिया 'रामजी' लीये कण्ठ लगाई हो ॥
मिश्रीथी मीठी खरी, जगमें एह सगाई हो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥
'भामण्डल' पट थापीयो, आपणपे राजा हो ॥
वैरागे व्रत आदरे, गुरु तारण जाजा हो ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
साधु नमी राजा नमी, नमी ' राघव ' राया हो ॥
'भामण्डल' सीता नमी निज मन्दिरे आया हो ॥ सीता० ॥४७॥
ढाल भली ऊगणीसवीं, सीता परणावी हो ॥
'केशराज' श्री रामनी, पटनागी कहावी हो ॥ सीता० ॥ ४८ ॥

दोहा (सबाव रागे)

'सत्यभूती' मुनिवर भलो, सत्यदेव सुविशाल ॥
शाशन सोह[1] वधारणो, पट् कायां प्रतिपाल ॥ १ ॥
विधिसुं देई प्रदक्षिणा, करजोडी नरनाथ ॥
प्रश्न करे प्रगट पणे, निसुणे सघलो साथ ॥ २ ॥

—ढाल वीशवीं तर्ज—वीर नृपती अन्यदास मे (हमीरोयारी)—

हमसुं भाखो एहजी, पूर्व भवान्तर वात ॥ साधुजी ॥
सुख दुःखनो अवदानजी, वांदी जमारो जात ॥ साधुजी ॥हम १॥
'सेनापुर' थो सुन्दरूं, 'भावन शाह' सुजाण ॥ साधुजी ॥
पत्नी[2] थी तसु दीपिका. सुता 'उपास्ति' अजाण ॥ सा० ॥हम २ ॥

१ शोभा वधारनार । २ स्त्रीहती ।

साधु नी निन्दा करी, भव में भमी अपार ॥ साधुजी ॥
जीव तुम्हारो ओअछे, आगे सुणो अधिकार ॥ सा० ॥ हम ३ ॥
'चन्द्रपुरी' रे सुहामणी, 'धनगिरी' सुन्दरी नार ॥ साधुजी ॥
'वरुण' नामे सुत जाईयो, वर्ते शुभ व्यवहार ॥ सा० ॥ हम ४ ॥
साधुनी सेवा करे, श्रद्धालू समभाय ॥ साधुजी ॥
सुख दुःख ना अनुसारथी, मतितो उपजे आय ॥ सा० ॥ हम५॥
धातकी खण्डे जाणीये, उत्तर कुरुवर खेत ॥ साधुजी ॥
युगल पणे तिहां ऊपन्यो, शुभ कर्मो नो हेत ॥ साधुजी ॥हम ६॥
तीन पल्यनां आऊखो, भोगवी सुर सुखसार ॥ साधुजी ॥
'पुरुखला' नामेछे पूरी' 'पुरुखलावती' मजार ॥ सा० ॥ हम ७॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, पृथ्वियो राणी होय ॥ साधुजी ॥
'नंदी वर्द्धन' नामथी, नन्दन नीको जोय ॥ सा० ॥ हम ॥ ८ ॥
'नंदी वर्द्धन' ने दीयो, राये राज्य तेवार ॥ साधुजी ॥
'यशोधर' गुरु पाखती१, आप हुवा अणगार ॥ सा० ॥ हम ९ ॥
श्रावक नां व्रत पालीयां, पंचम कल्पे देव ॥ साधुजी ॥
जय २ कार हुवो घणो, सुरवर सारे सेव ॥ सा० ॥ हम ॥१० ॥
पूर्व विदेहे जाणीये, वैताढ्ये सुवि शेष ॥ साधुजी ॥
उत्तर श्रेणीएछे भलो, 'शशीपुर' नामे देश ॥ सा० ॥ हम ११ ॥
'रत्नमाली' विद्याधरु, 'विद्युतलता' नार ॥ साधुजी ॥
'सूर्य जय' जय कारीयो, पुत्र भलो अवधार ॥ सा० ॥ हम १२॥
'रत्नमाली' नृप चालीयो, 'सिंहपुरी' नो ईश ॥ साधुजी ॥
'वज्र नयन' ने जीतवा, मनमें आणी रीस सा० ॥ हम १३ ॥
सिंहपुरी ने बालतो, चाले अवला चाल ॥ साधुजी ॥
पशु२ पंखीथी नाटले, होई रह्या विकाल ॥ सा० ॥ हम १४ ॥
पूर्व जन्म तणो भलो, पुरोहित नो जीव ॥ सा०
'उपमन्यु' ए नामथी, देव दयाल सदीव ॥ सा० ॥ हम १५ ॥
'सहश्रार' सुरलोकथी, आवी बोले एम ॥ सा०

१ पासे (पाछलथकी पासे) । २ पशु पंखीथी नहीं डरनां विकाल थई रह्यांछे

उत्कृष्ट पातिक एहवूं, तुमने सूजे केम ? ॥ सा० ॥ हम १६ ॥
'भूरीसुनन्दन' तू हतो, पूर्व जन्मांरे राय ॥ सा०
मांस तज्यो तो थे सही, विप्र खवाड्यो आय ॥ सा० ॥हम १७॥
सोही पुरोहित[1] एकदा, स्कंद हण्यो गजथाय ॥ सा०
'भूरी सुनन्दन' राजीए, घरे आण्यो गहताय ॥ सा० ॥हम १८॥
सो हाथी रण में हण्यो, 'भूरी सुनंदन' थाम ॥ सा०
गंधारी उदरे ऊपन्यों, 'अरि सुदन' तस नाम ॥ सा० ॥हम १९॥
जाति स्मरण पामीयो, लीधो संयमभार ॥ सा०
कल्प आठमें देवता, सोहै देव उदार ॥ सा० ॥ हम ॥ २० ॥
'भूरी सुनन्दन' पामीयो, अजगरनो अवतार ॥ सा०
दावानल मांही बल्यो, कर्म न चूके लार ॥ सा० हम ॥ २१ ॥
नरके पहूंच्यो दूसरे, उहांही में तुज आय ॥ सा०
समजाव्यो ते कारणे, एतूं हूवो राय ॥ सा० ॥ हम ॥ २२ ॥
मांस तलीने वापर्यूं, तेहनो ए फल लाध ॥ सा०
आज होईने आकरो, कांई करे अपराध ॥ सा० ॥ हम ॥ २३ ॥
एम सुणीने ऊबट्यो, 'कुल नन्दन' नृप कीध ॥ सा०
'सूर्यजय' साथे करी, राजा संयम लीध ॥ सा० ॥ हम ॥ २४ ॥
स्वर्ग सातमें भोगवी, सुरसुखनो विस्तार ॥ सा०
'सूर्यजय' चवी तूं हूवो, 'दशरथ' राय उदार ॥ सा० ॥ हम २५॥
'रत्नमाली' आवी हुवा, 'जनक' रायजी एह ॥ सा०
'कनक' 'जनक' भाई भलो, उपमन्यु ससनेह ॥ सा० ॥ हम २६॥
'नंदोघोष' ग्रैव्येकनां, भोगवी सुरसुख भूरी ॥ सा०
'सत्य भूती' ए हूं हुवो, सूरि शिरोमणि सूरी ॥ सा० ॥ हम २७॥
एम सुणी वैरागीया, प्रणमी गुरुना पाय ॥ सा०
राजा मंदिर आवीयो, लोक लीधा बोलाय ॥ सा० ॥ हम ॥२८॥

१ पुरोहित मरी छे गे हूँ पुरोहितनाभवे स्कन्ध राजाना मारवाथी मरीने हाथी थयो, त्यांथी मरीने भूरीनन्दन राजानी स्त्री गंधारी ना पेटे पुत्र पणे उपन्यो ।

पाछल बुद्धि नारी केरी जाणो हो, एम्हा० पाछल० रा ।
केणी सुणवी प्रभुजी दिलमें नाणोहो, एम्हा० के० रा० ॥ ३ ॥
नारी कथने बहुत अकारज हुवो हो, एम्हा० नारी० रा० ।
शास्तर गावे केता देवूं दुहा हो, एम्हा० शा० रा० ॥ ४ ॥
हरगिज राज प्रभुजी मैं नहीं लेवूं हो, एम्हा० हर० रा० ।
छाने नहीं हूं चवड़े २ केवूं हो, एम्हा० छा० रा० ॥ ५ ॥

ढाल चेपक मूलगी

राय कहै परतिज्ञा पालो, म्हारो ए ऋण ही तुम टालो, राम कहै मुजस्हामों भालो । चाय नहीं राजा की थारे, लोक सहु बैठा झक मारे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३५ ॥ विनयए बापनो करवो, भ्रात को वचन दिल धरवो, मात को विखादही हरवो । 'भरत' जल नैत्र ही न्हांखे, वचन मुख दीन ही भाखे ॥ सत्य व्रत ॥ ३६ ॥ राम का चरण ही ग्रहीया, आपके शरणे ही रहीया, बात ए मन की जे कहीया । हरगिज नहीं राज लू मैं तो, व्यर्थ ही झोड़ करो थे तो ॥ सत्य व्रत ॥ ३७ ॥

—सवैया—चेपक

भरत ? पिता की आण मानीये धर्म जाण—
मानीये न आण एतो लोक मांहीं लजिये ॥
भर्त कहे 'राम' सुनो नहीं मेरो काज एतो—
तुमहु अनीत करो मोही नाह रजिये ॥
राम ? तुमे करो राज सब ही की रहो लाज,
तुम बैठे अवर करे एतो बडी कजिये ।
कीजिये विनय जाको, मानिये हुकम ताको—
'राम' कहे कयो करे सोई दुनियां में बड़ो जश लीजिये ॥
सोरठ—जननी जणे अनेक, सो कायर किस काम का ।
पिता वचन शिर टेक, पूतवहे परमाण यह ॥ १ ॥
दोहा—पिता कहे सुण भर्त ? अब, लेहु शीघ्र तुम राज ।
पालो परजा आपणी, घणी वधारो लाज ॥ १ ॥

राज लाज मुज काम नहीं, मेरे परम सन्तोष।
हूं त्यागी संसारनो, साधू मार्ग मोक्ष ॥ २ ॥
रामोवाच—पिता वचन नहीं लोपीये, लीजे शीष चढाय।
कालपाय संयमग्रहो, वधे धर्म सुखदाय ॥ ३ ॥
रामकहै भाई भरत ? तात वचन परणाम।
सो सुबुद्धिविनीतनर, धर्मी परम सुजाण ॥ ४ ॥
भर्तोवाच—'भर्त' कहै सुण रामजी, एअनीत नहीं नीत।
पूज्यनीक तुम जगत में, करो सवन की चित्त ॥५॥

ढाल मूलगी

घणी किसीए केलवणी करो, सो वातां की एकोरे।
राम छतां हूं राजा न थाऊं, म्हारी एहिज टेकोरे ॥ एविधि १९॥
राजाजी सूं 'राम' तदाकहै, 'भरत' वचन ए साचोरे।
हूं वनवासे जावूं छूं सही, पालो तुमए वाचोरे ॥ एविधि २० ॥
आज्ञा लेईने पगे लागोयो, मूर्छांणों तव वापोरे।
भरत सुभाई रोवे छे घणूं, हाथे ग्रही शर[1] चापोरे ॥एविधि २१॥

—ढाल मूलगी चेपक—

वज्रसम वचन उच्चरियो, खाय नृप मूर्छा ही परीयो, धरण को शरणो ही वरियो। थयो नृप सचेतन त्यारे, कहै कित चले पुत्र प्यारे ॥ सत्य० ॥ ३८ ॥ नमनकर वनवासे चाल्यो, राज्य यह भर्त ने आल्यो, किणी रो नहीं रेवे पाल्यो। 'भर्तजी' मग्ल माद रोवे कहै जिन होनहार होवे ॥ सत्य० ॥ ३९ ॥

—ढाल मूलगी—

पद पंकज प्रणमी माताना, वचन वदे समनेहोरे।
तारे नन्दन हूं छूं जेहवो, तेहवो भरतज एहोरे ॥ एविधि २२ ॥
वाचा पालवा तणे कारणे, राज्य भरतने आल्योरे।
मुज बैठो तो राज्य करे नहीं, हूं वनवासे चाल्योरे ॥एविधि २३॥
माजी साहस आणजो खरो, कायरनो मत होवोरे।

---

१ धाए।

योग वियोग जग करतानो कीयो, जललेई मुख धोवोरे ।एविधि २४।
एम सुणन्तां धरतीए गीरी पड़ी, फरि २ मूर्छा पावेरे ।
शीतल ताए करावे चेतना, हैयुं घणं भरी आवेरे ॥ एविधि २५॥
हूं जीवाडी केही पापीये, मूर्छा थी मरी जातीरे ।
पुत्र वियोगथकी मरवूं भलूं, काती कापे छातीरे ॥ एविधि २६ ॥
प्रभुजी संयम मार्ग आदरे, सुत होवे वनवासीरे ।
वज्रमहीछे मही तूं कौशल्या, जीवे कांई विमासीरे ॥एविधि २७॥
'राम' तदारे मातासूं कहै, एम करे केम शाणीरे ।
कायर नारीनो एकामछे, तूं वडरायां राणीरे ॥ एविधि २८ ॥
सिंह एकाकी वनमांहे फरे, वे परवाही वीरोरे ।
निज जननी तो घर बैठी रहै, नाणे कोई अधीरोरे ॥ एविधि २९॥
बापतणे रे शिर ऋण जो रहै, तेतो सुतनो दोषो रे ।
मुज घर रहेतां ऋण नवी उतरे, आणोए संतोषो रे ॥एविधि ३०॥
एमसमजावीने पगे लागीयो, अवर मात शिर नामी रे ।
प्रभुजी वन वसवाने चालिया, हर्षघणेरो पामी रे ॥एविधि ३१॥
इकवीशमीरे ढाले रामजी, चाल्याछे वनवासेरे ।
'कवराज' 'कैकयी' राणीने, वचने करी मह त्रासेरे ॥ एविधि ३२॥

ढाल क्षेपक मूलली

आश्वासन देई 'रघुवरजी', हर्ष दिल चाल्यो हितधरजी, माता अन्य नमस्कार करजी । जानकी खबर लही जामो, चले अब [illegible] पूठे तामो ॥ मन्य० ॥ ४० ॥

दोहा (गोड़ी राग)

पतिव्रता व्रत साचवे, पतिसूं प्रेम अपार ।
ते सुन्दरी संसार में, दीसे छे दो चार ॥ १ ॥
खावे पीवे पहिरवे, करवे भोग विलास ।
सुन्दरीनो मन मादरो, जबलग पूरे आस ॥ २ ॥
सुख में आवे आसनी, दुःख में अलगी जाय ।

स्वार्थणी सा सुन्दरी, सखरा[1] में न गणाय ॥ ३ ॥
सुसराने सादरपणे, सीताजी पगे लागि।
कौशल्या प्रणमी करी, चाली अनुमति मागि ॥ ४ ॥

—ढाल बावीशमी तर्ज-विमला चल बन्दी—

खोले लीधी खांचीने, बालक नी परे तेहहो।
न्हवरावी नयनोदके[2], वाणी वदे सस नेहहो ॥ १ ॥
'राम' रसे राची घणूं, माची प्रियने प्यारहो।
साची शील शिरोमणि, सत्यवन्ती संसार हो ॥ राम० ॥ २ ॥
वहुअर ! वीराने जावादे, तूं मत जावे आप हो।
व्हालो नहींय विदेशडो, सहवो अति सन्ताप हो ॥ राम० ३ ॥
वाहन विविध प्रकारनां, तूं चयठी चालन्त हो।
दोहिलो पाये चालवो, क्यूं हर्षे हालन्त हो ॥ राम० ॥ ४ ॥
दोहिलो तृषाअरु भूखडी, दोहिलो लेवो वास हो।
दोहिलो टाढने तावडो, रहवो नित्य उदास हो ॥ राम० ॥ ५ ॥
कोमल काया ताहरी, दोहिलो धरतीए शयन[3] हो।
पीछे ही पछतावसो, पाम्याथी कुचैन हो ॥ राम० ॥ ६ ॥
प्रियने पग बंधन कही, परदेशो में नार हो।
नारी तो घरमें भली, बाहिर पड़ी विकार हो ॥ राम० ॥ ७ ॥
फलने पेखी पंखीया, तूटी पड़े ततकाल हो।
नारी नयने निरखतां, उपजे अति जंजाल हो ॥ राम० ॥ ८ ॥
मानी हमारी सीखडी मति जा प्रियने लार हो।
सासुनी सेवा कर्या प्रिय सेव्यो सो वार हो ॥ राम० ॥ ९ ॥
आई ? एहवृकां कही, मैं अलगी न रहाय हो।
नारी कही तनु छांहड़ी, साथे रहो सुख पाय हो ॥ राम० १०॥
वाला सुख संसारनूं, जेको प्रिय विण होय हो।
प्रिय साथे दुःख ही भलूं, राम भाखे सहु कोय हो ॥राम० ११॥

---

१ सखा—स्नेही। २ नयन—उदक आंखनूं पाणी। ३ सुई रहवूं।

पुरुषतणी अर्धाङ्गना, नारीनूं तो नाम हो ।
ते कहो अगली किम पड़े, प्रिय नामे विश्राम हो ॥ राम० १२॥
जेह नारी प्रिय मानीयो, तेणे मान्यो जगदीश हो ।
नारीनूं परमेश्वरु, नाथ नमूं निसदीश हो ॥ राम० ॥ १३ ॥
पियुडो आगे संचरे, नारी पूठे जाय हो ।
चरण कमल नी रेणुका[१], तन लागे सुख थाय हो ॥ राम० १४॥
प्रियनूं मुख अवि लोकतां, नयणे अमिय भराय हो ।
दुःख तो सो वर्षा तणूं एक क्षणमांहे पुलाय हो ॥ राम० १५ ॥
जलहरणे[२] पूंठे थकी, विद्युत् जेम शोभाय हो ।
तेम पियुजीनो पाखती, नारी रहे सो न्याय हो ॥ राम० १६ ॥
एम कहीने नीकली, लही सासु आशीष हो ।
आतम राम ज रामजी, मनमें एह जगीश हो ॥ राम० ॥ १७ ॥
हुई छे होसे वलि, जे पति भक्ति नारी हो ।
तिणमें आदि उदाहरणे, सत्यवती[३] अवधारी हो ॥ राम० ॥ १८ ॥
नगर तणी नारी मिली, रोवन्ती असराल हो ।
पति व्रता मांहे घणूं, सराहे[४] है सुविशाल हो ॥ राम० ॥ १९ ॥
कष्ट पड़े वनवास नो, भय नवि माने जेह हो ।
उभय कुल उजवालणी, आज अछे त्रिये[५] एह हो ॥ राम० ॥ २० ॥
हर्ष जिम्यो थयो स्वयम्बरे, तेसो ही वनराम हो ।
कोईन दीसे आंतरो, साहसी[६] तने शाबाश[७] हो ॥ राम० ॥ २१ ॥
आननतो[८] अति उजलूं, आरती नहीं लव लेस हो ।
भाग्यवतीगा भामिनी, प्रिय साथे परदेश हो ॥ राम० ॥ २२ ॥

—मूलगी टाल क्षेपक—

रामजी वनवासे जावे, सुन सुन परजा दुःख पावे, सभी को जियड़ो थरथरावे ॥ 'राम' से प्रेम हो धरता परस्पर वात यूं करता ॥

---

१ रज । २ वरसाद । ३ अवधारवूं-ध्यानमां लेवूं । ४ सराहवूं-प्रशंसा करवी । ५ त्रिया-स्त्री । ६ साहसीक-साहस करनार । ७ ए फारसी शब्द छे, तेनो अर्थ धन्य एवो थाय छे । ८ मुख ।

सत्य व्रत पालो ॥ ४१ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-तावड़ा धीमो सो पड़जा-

अकल कित गई दशरथ नृपनी २, 'राम' भणी वनवास देईने करे पूरी अपनी ॥ टेर ॥

'राम' सरीसा पूत जगत में, जननी नहीं जाया ।
जिनको दूर छांड वन भीतर, 'भरत' तखत ठाया ॥ अकल १ ॥
नहीं मीख निज मतनी पतनी, भूपति भरमायो ।
नहीं लायक है तखत 'भरत' शिशु, सब जग दरसायो ॥ अकल २॥
जासी राज 'अयोध्या' केरो, फेरो फिर देसी ।
निर्बलजानी खटपट कर कोऊ, हरसी परदेशी ॥ अकल ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

खबर तब 'लक्ष्मण' ने पाई, अबर बर हेरयो नहीं माई भरत की दशा केम आई । किसी का जोर नहीं धारूं, चिन्तित निज काज ही सारूं ॥ सत्य० ॥ ४२ ॥

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' कोपे कलकल्यो, कालो पीलो थाय हो ।
जाणे अब करियें किस्यूं, मनियन को ठहराय हो ॥ राम० २३ ॥
वर भण्डारे ए राखीने क्यूं मांगे दुःख दाय हो ।
तातती सरल स्वभावीया, कपट कारी ए माय हो ॥ राम० २४॥
ऋण उतारण शिर तणूं, तात कियो सुविचार हो ।
'भरत' भलो थो भाईयो, कां झाल्यो थो भार हो ॥ राम० २५॥
'भरत' थको उदासीने, नृप पदवी लहूं आज हो ।
'राम' रायने आपीने, सारूं वंछित काज हो ॥ राम० ॥ २६ ॥
'राम' न लेशे राज्य ने, दुःख पाम से तात हो ।
ए उतपात उठावता, करे विमासी बात हो ॥ राम० ॥ २७ ॥
दुःख मत पावो तातजी, भरत करो ए राज्य हो ।
राम चाल्या हूं घर रहूं, तोरे पामूं लाज हो ॥ राम० ॥ २८ ॥

१ ए अरबी भाषानो शब्द छे जेनो अर्थ 'चारणी' एवो थाय छे । २ माता

सेवक रूपी होई ने, रहिसूं प्रभुने साथ हो।
खिजमत१ तो करसूं सही, सुजश दीयो जगनाथ हो ॥राम. २९॥
ताततणे पगे लागीने, माजीने परणाम हो।
करीने लाग्यो चालवा, माय शीख दे ताम हो ॥ राम० ३० ॥
वत्स ? स्वस्थ मतिताहरी, खरूमत तुजमांहे हो।
साथ न तजवो भाईनो, लोक वचन ए प्राहे हो ॥ राम० ३१ ॥
जाई मिलो उतावला, कांई करो विलम्ब हो।
राम तात करी मानजो, कहे सुमित्रा अम्ब२ हो ॥ राम० ३२ ॥
'कौशल्या' पगे लागीने, चालण लाग्यो जाम हो।
'कौशल्या' कहे मायजी, लक्ष्मण साम्हे ताम हो ॥ राम० ३३ ॥
'राम' गयो तूं जाय छे, म्हारा कवण हवाल हो।
'लक्ष्मण' कहे माता सुणो, न तजूं 'राम' दुमाल हो ॥राम. ३४॥
वनवासे एकाकीयो, आप 'राम' जी जात हो।
हूं न करूं सेवकपणूं, तो लाजत मुझ मात हो राम० ॥ ३५ ॥

ढाल मूलगी क्षेपक

माता कहे सुखे २ जावो, रामकी सेवा करवावो, जिणी से वंछित ही पावो। नाय शिर सौमित्रा नन्दा, कौशल्या प्रणमे आनन्दा ॥ सत्य० ॥ ४३ ॥ मा कहे सुणो पुत्र वाणी, अनुज तूं भक्ती दिल आणी, अछे तू गुणां तणी खाणी। पुत्र ? तव ओलूं ही आसी, दुःकर यह दिवस कैसे जासी ॥ सत्य० ॥ ४४ ॥ वीर कहे सुणिये तूं माता, काया ज्यां छाया विख्याता, राम ज्यां लक्ष्मण शोभाता। जग जय ढाल नहीं कीथी, आशीस तव माताने दीधी ॥ सत्य० ॥ ४५ ॥

ढाल मूलगी

त्रण माणस चालियां, आणन्दो आनन्द हो।
मायरनी पर देखवो, स्न गयां नहीं मंद हो ॥ राम० ॥ ३६ ॥
राजा राणी आवीया, आवीयो परिवार हो।
बाल अने गोपालजी, मिलिया लोक अपार हो ॥ राम० ॥३७ ॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

पुरुष दोय नारी इक जावे. राजादिक पहोंचावण आवे, सखी मिल ओलूं ही गावे। राम के सन्मुख ही जोवे, आंसू सूं मुखडा ही धोवे ॥ सत्य० ॥ ४६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—बन्धव बोल

सहियांमांने ओलूं आवे, हो ओलूं-राघवजीनी ओलूं आवे ।।टेर।।
रात न आसी नींदड़ी, दिन धान न भावे हो।
पल २ माहे सांभरे, हीयो भरि जावे हो ॥ सहियां ॥ १ ॥
प्रभुजी ज्यां त्यां संचरे. सोही हरखावे हो।
नेत्र विना मुख ज्यूं सही, प्रभु विन हम दरसावे हो ॥ सहियां २॥
धन्य भाई 'लक्ष्मण' अछे. प्रभु सङ्ग सिधावे हो।
पति भक्ता 'सीता' सती. शोभा अधिकी पावे हो ॥ सहियां ३ ॥
समाचार प्रभु मुज भणी.वेगा वकसावे हो।
वहिला राज पधारजो, दुनि दर्शन चावे हो ॥ सहियां ४ ॥

श्री समयसुन्दरजी कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज—चान्दलीया सन्देशो रे कहीजे म्हारा कन्तनेरे

राजेश्वर वालेसर हो वेग पधारजोरे. थांरी जोवे वहुला वाट।
पल अंतरथी अलगा नवि करूंरे. हिवड़े घणूंरे उचाट ॥ राजे १ ॥
सुख सातामें पामी अन घणीरे, याद करां निन मेव।
सफल दिहाडो सो मैं जाणसोरे. सो दिन करस्यां सेव ॥ राजे २॥
सुरभी जावे वन क्रीड़ा भणीरे, वछा कररे पुकार।
तिम तुम दरशन विन हिव माहिवारे.अम्हे थावां छे निरधार ॥ राजे ३॥
मातपिता वले भ्रातजीरे, वलि वरजे बहु नरनार।
दया आणीने दिलमें साहिवारे. पाछा फिरो इणवार ॥ राजे ४ ॥
पपैयो पिऊ २ कररे, पिण घनरे नहीं चाय।
जिम तुम ऊभा ओलगेजी. मानो वचन न काय ॥ राजे ५ ॥
वारम्वारे कीधी वीनतीरे. पिण रामन माने एक।
सो जिम सेवा कीजो भरतकीरे. धारी घणा विवेक ॥ राजे ६ ॥

दोहा—गद् गद् कण्ठी होगये जलभर आयो नैन ।
रोते रोते नागरीक, वदे राम से वैन ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज—अहमद भूल न जाना

रघुवर ? भूल न जाना, विनती ख्याल में लाना ॥ टेर ॥
मायत वचन मानकर तुमने, निराधार इत छाडो हमने ।
वन को किया प्रयाना ॥ रघुवर ? भूल न जाना ॥ १ ॥
यद्यपि नहीं रहना था पुरमें, तो क्यों प्रेम लगाया धुर में ।
अधविच में छिटकाना, रघुवर ? भूल न जाना ॥ २ ॥
प्रतिपल याद आवेगी तोरी, हार्दिक विनती स्वामिन् मोरी ।
जल्दी दर्श दिलाना ॥ रघुवर० ॥ ३ ॥
हम मुख आप बड़े गुणधारी, शशी सम सौम्य सदा सुखकारी ।
मधुमय मीठी वाना ॥ रघुवर ? ॥ ४ ॥
सींच २ कर प्रेम सलिल को हराभरा किया इस उपवन को ।
आकर फिर विकसाना ॥ रघुवर ? ॥ ५ ॥
जनगण तव दर्शन का प्यासा, एक आपकी लग रही आशा ।
चित्त चरणों में लुभाना ॥ रघुवर ? ॥ ६ ॥
विरह तुम्हारा सहा न जासी, वार २ उर ओलूं आसी ।
दया भाव दिखलाना ॥ रघुवर ? ॥ ७ ॥
अवध निवासी अर्ज गुजारी, भूल हुई हो जोभी हमारी ।
भूल उन्हें तुम जाना, पर भूल हमें मत जाना ॥ ८ ॥
'रूप' कहे जनता के मनमें, राम रहे इत जावे न वन में—
यही आश मन लाना ॥ रघुवर ? ॥ ९ ॥
शार्दूल गुरुपद कज शिर नाई, 'जयतारण' में ढाल बनाई ।
रामायण में गाना ॥ रघुवर ? ॥ १० ॥

दोहा—सुनकर प्यारी प्रेम मय, परजा की अरदास ।
मधुमय मीठे वचन से, देन लगे आश्वास ॥ १ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—खेलण दो गिणगोर भँवर म्हाने

जावणदो एक दाग विपनमें जावन दो इक वार, हो म्हांरी अ

निवासी जनता जादा मत तानों इनवार ॥ टेर ॥
वचन निभास्यां वनमें जास्यां, वहां पास्यां सुख साज ।
फिर चल आस्यां वास बसास्यां, पिण जावणदो मोय आज ॥ जा.१॥

ढाल क्षेपक तर्ज—नवीन रसिया मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.

रहीजो २ हो आनन्द में प्यारे सारे ही नरनार ॥ टेर ॥
हिलमिल प्यारे पुरजन रहीजो वहीजो कुल-आचार ।
परधण परधन को तज करके कीजो प्रेम प्रचार ॥ रहिजो ॥१॥
निर्मल न्याय नीति पथ वहीजो लहीजो सुजश अपार ।
चिन्तामणि मम धर्म जैन को, तजदो मतना यार ॥ रहीजो २ ॥
मम सम भर्त भणी समजीने हुकम वहो हरवार ।
करमी माल सम्भाल निहाली नीति न्याय विचार ॥ रहिजो ३ ॥
सप्तव्यसन मद मच्छर ईर्षा कर दीजो परिहार ।
रूप मुनि कहै रघुवर की या शीक्षा लो उरधार ॥ रहिजो ४ ॥

दोहा—रघुवरमायत चरण मे,नमन कीयो तिणवार ।
हम लायक शीक्षा जनक, बात कहो धर प्यार ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.
ढाल क्षेपक तर्ज—काली कमली वाले तुमको

प्राण पियारे पुत्र हमारे क्रोडां रंगावास, तुमको क्रोडां० ॥ टेर ॥
सारा प्यारा परिकर तजकर, मानव गणका हृदय चुराकर ।
तुमतो वनकी ओर पधारे, क्रोडां रंगावास ॥ प्राण० ॥ १ ॥
क्षत्रिय धर्म को पूर्ण निभाया, नहीं लालचमें मन ललचाया ।
तुमहो वीर प्रतिज्ञा धारे, क्रोडां रंगावास ॥ प्राण ॥ २ ॥
दोनों भाई हिल मिल रहीजो, भ्रातृ वच्छल गुण हियमें गहीजो ।
सप्त व्यसन तज देना प्यारे, क्रोडां रंगावास ॥ प्राण ३ ॥
जैन धर्म निज जीवन समजो, नीच तणी थे संगति तजजो ।
दोनों ही मत होना न्यारे, क्रोडों रंगावास ॥ प्राण ॥ ४ ॥
मैंतो कार्य उचित नहीं कीना, प्यारे पुत्रों को दुःख दीना ।
'रूप' मुनि कहे हे गुण वारे, क्रोडों रंगावास ॥ प्राण ॥ ५ ॥

दोहा—राम कहै प्रभुजी सुणो, तुमचा वचन स्वीकार ।
सुखसुं संयम आदरो, निज आतम उजवाल ॥१॥

ढाल क्षेपक तर्ज—मैं अंग्रेजी पढ़ गई हूं मुनि श्री रूपचंदजी कृत.

अब हम वनको सिधाते, सुनले मेरी मैया ॥ टेर ॥
लाड प्यार कर तुमने पाले, आज आपसे हो रहे न्यारे ।
पितु वर वचन निभाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ १ ॥
दर्शन से हम परसन होते, तेरी गोद में आकर सोते ।
चरणां शीष झूकाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ २ ॥
ऐसा हम स्वपने नहीं जाना, तुम दर्शन का विरह होजाना ।
भावी प्रवल कह्यो नाथे ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ३ ॥
खैर हुवा सो होगया माता, होनहार नहीं टले टलाता ।
हितकारी कहो वातें॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ४ ॥
नीति निपुण तुम तात प्रवीना, कह नाथा सो सब कह दीना ।
एक वात कहूं भ्राते ? सुनले मेरो मैया ॥ अ० ॥ ५ ॥

—सवैया—

वणा घाट लंघणा, नदी परवतने नाला । वन है बेटा विषम, पंथ चलणा है पाला । जहर भूख काटणी, गुणे दिन किसा गिणीजे, कहै मात 'कौशल्या' श्रवण दो भ्रात सुणीजे ॥ दन्ती वाराह नाहर रहोजो तिण ठौर मावता, रे पुत्र ? घणी मिल राखजो इण जनक सुतारा जावता ॥ १ ॥

ढाल क्षेपक पूर्ववत्

जनक सुता की रक्षा कीजे, राम कहै मम कथन करीजे, सियको मम सङ्ग मत भेजीजे, नारी सङ्ग दुःख पाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ६ ॥ 'शार्दूल' शिष्य मुनि 'रूप' सुनावे, रघुपतिजी [illegible]जावे, सो आगे जतलाते ॥ सुनले ॥ ७ ॥

(गो स्वामी [illegible] कृत. रामायण में से)

— कहि प्रिय [illegible] मय, कीन्ह मातु परितोष ।

[illegible] का अर्थ—. [illegible] कहकर माताको रामचन्द्र ने [illegible] पुनः जानकी [illegible] वनमें [illegible] के गुण दोष [illegible] लगे ।

लगे प्रबोधन जानकिही, प्रगट विपिन गुण दोष ॥१॥

१ चौपाई—आपन मोर नीक जो चहहु, वचन हमार मान घर रहहु।
आयसु मोरि सासु सेवकाई, सबविधि भामिनी भवन भलाई।

—(चोपाई)—

१ मैं पुनि करी प्रणाम पितुबानी, वेगि फिरब सुन सुमुखी सयानी ॥१
दिवस जात नहीं लागहु वारा, सुन्दरी ! सिखवन सुनहु हमारा ॥२
जो हठ करहु प्रेम वश वामा, तो तुम दुःख पावहु परिणामा ॥ ३
कानन कठिन भयंकर भारी, घोर घाम हिम वारी बयारी ॥ ४ ॥

---

१ जो अपना और हमारा भला चाहो तौ हमारा वचन मानिके घर रहो। मेरी आज्ञा है सासु की सेवा करनी चाहिये, हे प्यारी! सब प्रकार से घर में रहने से भलाई होगी।

१ और मैं पिताकी आज्ञा प्रमाण करके है सुमुखी ? सयानी जल्दी लोट के आवुगा ॥ १ ॥ दिन जाते देर नहीं लगती हे सुन्दरी ? हमारा सिखाना सुनो ॥ २ ॥ जो तुम प्रेम से इस समय हठ करोगी तो परिणाम में दुःख पाओगी ॥ ३ ॥ वन कठिन और भयंकर होता है। मार्ग मे कठिन धूप जाड़ा पानी वायु से कष्ट होता है ॥ ४ ॥ मार्ग में कुश कांटे कंकर होते हैं, सवारी पर चले तोभी बनता पर सो भी नहीं, पांव २ चलना होगा, सोभी विना जूते के ॥ ५ ॥ तुम्हारे चरण कमल उज्वल और कौमल है, और मार्ग भी समान नहीं किन्तु अगम है, और बड़े २ पर्वत हैं एक तो राह कठिन दूसरा चढाव उतार ॥ ६ ॥ कन्दर पर्वत की गुफा नदी नद नाले बड़े अगाध है। जो निहारे नहीं जाते, पर्वत अगम हैं वहां जाना कठिन है ॥ ७ ॥ रीछ चीता भेडिया सिंहो के नाद सुनके धीरज नहीं रहता ॥ ८ ॥ भूमि मे सोना वृक्ष की त्वचा भोज पत्रादिक का पहरना, भोजन मूल फलकंद, कंद वर्तुलाकार मूल लम्बा सोभी क्या सदा सब दिन मिलते है ? किन्तु जब जिसका समय होगा तब मिलेंगे ॥ ९ ॥ राक्षस मनुष्यों का भक्षण करते हैं, कोटी प्रकार से कपट वेष धरते हैं ॥ १ ॥ पहाड़ का पानी बहुत लगता है, हे प्यारी वन की विपत्ती बखानी नहीं जाती ॥ २ ॥ विकराल सर्प घोर भयानक पक्षी और राक्षस बहुत से नर नारीयों को चुराने हारे होते हैं ॥ ३ ॥ धीर पुरुष भी वन की सुधि आने से डरजाते हैं. हे मृग नयनी ? तुमतो स्वाभाविक डरने हारी हो ॥ ४ ॥ हे हंसगमनी ? तुम वन के योग्य नहीं हो, सुनके लोग मुझे अपयश देंगे ॥ ५ ॥

कुश कंटक मग कंकर नाना, चलब पयादे बिनु पद त्राना ॥ ५ ॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे, मारग अगम भूमिधर भारे ॥ ६ ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे, अगम अगाध नजाहिं निहारे ॥ ७ ॥
भालु बाघ वृक केहरी नागा, करहि नाद सुनि धीरज भागा ॥ ८

दोहा—भूमि शयन वल्कल वसन, अशन कन्द फल मूल ॥
तेकि सदा सब दिन मिल हीं समय समय अनुकूल ॥१॥

—(चोपाई)—

नर आहार रजनी चर करहीं, कपट वेष विधि कोटिक धरहीं ॥१॥
लागई अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपत्ति नहीं जाय बरवानी ॥२॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा, निश्चिर निकर नारि नर चोरा ॥ ३ ॥
डरपहु धीर गहन सुधिआये, मृग लोचनी ? तुम भीरु सुभाये ॥४॥
हंसगमनी तुम नहीं वन योगू, सुनि अपयश मोहिं देहहि लोगू ॥५॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली, जियई कि लवण पयोधी मराली ॥६॥
नवरसाल वन विहरन शीला, सोहकी कोकिल विपन करीला ॥ ७ ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी, चन्द्रवदनी दुःखकानन भारी ॥ ८ ॥

(जानकीरुवाच)

दोहा—प्राण नाथ ? करुणा यतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम विन रघुकुल कुमुद विधु,? सुरपुर नरक समान ॥१॥

(चोपाई)

भोग रोग मम भूषण भारू, यमयातना सरिस संसारू ।
प्राणनाथ तुम विन जगमांही, मो कहे सुखद कहत हु कोई नांहीं ॥१॥
जिय बिनु देह नदी बिन वारी, तैसिय नाथ पुरुष बिन नारी ।
: तुम्हारे, शरद विमल विधु वदन निहारे ॥२॥
नगर वन, वल्कल विमल दुकूल ।
, पर्ण ॥ ? ॥

हो आऊंगी ।
सुख पाऊंगी ॥

थाके चरण कमल चापूंगी, श्रमभये पवन डुलाऊंगी।
नयन चकोर निमुख मयंक छवि, सादर पान कराऊंगी॥
जो हठि नाथ साथ नहीं लेहो तो सङ्ग प्राण पठाऊंगी।
तुलसीदास प्रभु विन जीवन, रहै क्यों वदन दिखाऊंगी॥१॥

मेवाड़ी मुनि चौथमलजी कृत.
ढाल चेपक तर्ज—बीड़ो मत झेलो तथा तजदीये प्राण काय०

मेरे सङ्ग मत आ, सीता बहु दुःख पावोगी॥ टेर॥

वनमें कष्ट घणो है प्यारी, फिर पाछे पछताओगी। रात अंधेरी होगी वहां पे, कौनसे जतन का प्यारी दिवला-जलाओगी॥ मेरे॥ १॥ खट्टे कडुवे वनफल मिलसी, सो कैसे तुम खाओगी। दूध दही मावा मन गमता, ये चीजां वनमें प्यारी कहो कहां से लाओगी॥ मेरे॥ २॥ यहां फूलां की सेज सुहाली, वहां पर घास बिछाओगी। शेर रिच्छ क्षुद्रिक जीवों को, जो तुम देखोगी सीता अती डरपाओगी॥ मेरे॥ ३॥ वहां नहीं म्याना और पालखी, पैदल पन्थ कटाओगी। कुश कङ्कर से पग फूटेंगे, क्षिण क्षिण त्रासित हो प्यारी रुदन मचाओगी॥ मेरे॥ ४॥ रतन जडित गहना विस्तर यहां, जो चाहो सो मंगवाओगी। भोजपत्र वहां धारण करके, कैसे इस दिलको प्यारी धीरज बंधाओगी॥ मेरे॥ ५॥ ना कोई संगमें दासी दास हैं, किनपे हुकम चला-ओगी। चक्की चूला जल झाड़न की, ऐसी मुशीबत कैसे शिरपे उठाओगी॥ मेरे॥ ६॥ यहां पर बहुत सहेलियों बिचमें, बैठी मौज उडाओगी। वहां टपरी में सदा अकेली, कैसे रह करके प्यारी दिवस विताओगी॥ मेरे॥ ७॥ माता कौशल्या संग नहीं प्यारी, किनको कष्ट सुनाओगी। यो सोची घर रहो नन्दूणी थोड़े ही दिन में पीछी मुझे मिल जाओगी॥ मेरे॥ ७॥

(जवाब श्रीमती सीताजी का—ढाल चेपक तर्ज-पूर्वोक्त)

मुझे संग लेलो, प्रभुजी पीछे मरजाऊंगी॥ टेर॥
जो जो आज्ञा आप करोगे, सो सब शीश चढाऊंगी।

कुश कंटक मग कंकर नाना, चलव पयादे विनु पद त्राना ॥ ५ ॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे, मारग अगम भूमिधर भारे ॥ ६ ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे, अगम अगाध नजाहिं निहारे ॥ ७ ॥
भालु वाघ वृक केहरी नागा, करहि नाद सुनि धीरज भागा ॥ ८ ॥

दोहा—भूमि शयन वल्कल वसन, अशन कन्द फल मूल ॥
तेकि सदा सब दिन मिल हीं समय समय अनुकूल ॥१॥

—(चोपाई)—

नर आहार रजनी चर करहीं, कपट वेष विधि कोटिक धरहीं ॥१॥
लागई अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपत्ति नहीं जाय वरवानी ॥२॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा, निशिचर निकर नारि नर चोरा ॥ ३ ॥
डरपहु धीर गहन सुधिआये, मृग लोचनी ? तुम भीरु सुभाये ॥४॥
हंसगमनी तुम नहीं वन योगू, सुनि अपयश मोहिं देहहि लोगू ॥५॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली, जियई कि लवण पयोधी मराली ॥६॥
नवरसाल वन विहरन शीला, सोहकी कोकिल विपन करीला ॥ ७ ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी, चन्द्रवदनी दुःखकानन भारी ॥ ८ ॥

(जानकीरुवाच)

दोहा—प्राण नाथ ? करुणा यतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम विन रघुकुल कुमुद विधु ? सुरपुर नरक समान ॥१॥

(चौपाई)

भोग रोग सम भूषण भारू, यमयातना सरिस संसारू ।
प्राणनाथ तुम विन जगमांही, मो कहे सुखद कहत हुं कोई नांहीं ॥१॥
जिय विनु देह नदी विन वारी, तैसिय नाथ पुरुष विन नारी ।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे, शरद विमल विधु वदन निहारे ॥२॥

दोहा—खग मृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदनसम, पर्ण शाल सुखमूल । १ ॥

—तर्ज—लावणी—

कृपा निधान सुजान प्राण पति, संङ्ग विपिन हो आऊंगी ।
गृहते कोटी भांती सुख मारग, चलत साथ सुख पाऊंगी ॥

थाके चरण कमल चापूंगी, श्रमभये पवन डुलाऊंगी।
नयन चकोर निमुख मयंक छवि, सादर पान कराऊंगी॥
जो हठि नाथ साथ नहीं लेहो तो सङ्ग प्राण पठाऊंगी।
तुलसीदास प्रभु विन जीवन, रहै क्यों वदन दिखाऊंगी॥१॥

मेवाड़ी मुनि चौथमलजी कृत.

ढाल दीपक तर्ज—वीड़ो मत झेलो तथा तजदीये प्राण काय०

मेरे सङ्ग मन आ, सीता बहु दुःख पावोगी॥ टेर॥

वनमें कष्ट घणो है प्यारी, फिर पाछे पछताओगी। रात अंधेरी होगी वहां पे, कौनसे जतन का प्यारी दिवला-जलाओगी॥ मेरे॥ १॥ खट्टे कड़ुवे वनफल मिलसी, सो कैसे तुम खाओगी। दूध दही मावा मन गमता, ये चीजां वनमें प्यारी कहो कहां से लाओगी॥ मेरे॥ २॥ यहां फूलां की सेज सुहाली, वहां पर घास विछाओगी। शेर रिच्छ क्षुद्रिक जीवो को, जो तुम देखोगी सीता अती डरपाओगी॥ मेरे॥ ३॥ वहां नहीं म्याना और पालखी, पैदल पन्थ कटाओगी। कुश कङ्कर से पग फूटेंगे, क्षिण क्षिण त्रासित हो प्यारी रुदन मचाओगी॥ मेरे॥ ४॥ रतन जड़ित गहना विस्तर यहां, जो चाहो सो मंगवाओगी। भोजपत्र वहां धारण करके, कैसे इस दिलको प्यारी धीरज बंधाओगी॥ मेरे॥ ५॥ ना कोई संगमें दासी दास है, किनपे हुकम चलाओगी। चक्की चूला जल झाड़न की, ऐसी मुशीबत कैसे शिरपे उठाओगी॥ मेरे॥ ६॥ यहां पर बहुत सहेलियो चित्तमें, चैंटी मोज उडाओगी। वहां टपरी में सदा अकेली, कैसे रह करके प्यारी दिवस विताओगी॥ मेरे॥ ७॥ माता कौशल्या संग नहीं प्यारी, किनको कष्ट सुनाओगी। यो सोची घर रहो नन्दणी थोड़े ही दिन में पीछी मुझे मिल जाओगी॥ मेरे॥ ७॥

(जवाब श्रीमती सीताजी का—ढाल दीपक. तर्ज—पूर्वोक्त)

मुझे संग लेलो, प्रभुजी पीछे मरजाऊंगी॥ टेर॥
जो जो आज्ञा आप करोगे, सो सब शीश चढाऊंगी।

किसी तरह का कष्ट पड़ेगा, मैं नहीं घबराऊं सब ही शिरपे उठाऊंगी ॥ मुझे ॥ १ ॥ प्रभु प्रसादे वनफल भी. खादिम कर खा जाऊंगी । किसी बात की हठ करके मैं, सुनीये प्राणेश्वर तुम्हको कभी न सताऊंगी ॥ मुझे ॥ २ ॥ मैं सखियन में सुख नहीं पाऊं, निश्चय कर संग आऊंगी । नाथ आपका दर्शन देखी, स्वर्ग भवनसी साता हिरदे वसाऊंगी ॥ मुझे ॥ ३ ॥ शीत ताप की सहन करूंगी, मैं विस्तर नहीं चाऊंगी । सदा हर्ष दिल होकर रहूंगी, क्षण भर भी प्रभुजी तुमसे कभी न रीसाऊंगी ॥ मु० ४॥ तीन लोक की सम्पत समझूं, जो पति देव रीझाऊंगी । मैं दुर्लक्षणी नारी नहीं हूं, जो के पल पल में पियु का कलेजा जलाऊंगी ॥ मु० ॥ ५ ॥ पल्ले लागी प्रभु ! आपके, सङ्गमें शोभा पाऊंगी । दया दृष्टि करीये चेरी पे. मेरी व्यथा की चिन्ता कभी न जताऊंगी ॥ मु० ॥ ६ ॥ प्राणनाथ के पदपंकज में, सुख से दिवस बिताऊंगी । वनही नन्दन वनमा मेरे, वस्ती क्या सुर नगरी की परवा न लाऊंगी ॥ मु० ॥ ७ ॥ उभय वंश विख्यात करन को, पतिव्रत पूर्ण निभाऊंगी । तन छाया के तीर्थ करके जग महिलाओं का सच्चा स्वरूप दिखाऊंगी ॥ मु० ॥ ८ ॥ चरण शरण की दास होयके, सदैव सेव बजाऊंगी । चौथमल्ल कहे सीता बोली, सदाही चरणमें प्रभुजी शिरको झुकाऊंगी ॥ मु० ९॥

ढाल मूलगी

पगे लागी वहो लाविया मातानी ने राय हो ।
दई दिलासा लोकने, 'रायब्रजी' वन जाय हो ॥ राम ३८ ॥
ढाल भली बावीसमीं, 'राम' हुवा वनवास हो ।
'केसराज' शुभ कर्म थी, होसे लील विलास हो ॥ राम ॥ ३९ ॥

मुनि श्री रूपचंदजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज—पपैया काहे मचावत शोर.

अवध की जनता मचावत शोर, 'राम' गये हमें छोर ॥ टेर ॥
हाय विहाय गये रघुवरजी, मानी नहीं प्रभु तनिक भी अरजी ।
करके हृदय कठोर, अवध की जनता मचावत शोर ॥ १ ॥

भ्राता भक्त लिछमनजी भारी, राज्य वैभव तज महिल अटारी।
चाले वनकी ओर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ २ ॥
सुन्दर कोमल काया वाली, सापिण सीता पियु संग चाली।
शीलवती शिरमोर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ३ ॥
मानवत्रय सहर्ष सिधाये, मनमें सोच जरा नहीं लाये।
क्षत्रिय कुल के तौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ४ ॥
अटवी कंकर कण्टक चारी, तीनों मानव पाय विहारी।
कैसे सहेंगे दुख घौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ५ ॥
कहो हमें गुन्हा क्या कीना, वतन प्रेम युगपत् तज दीना।
तीनों गये चित्त चौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ६ ॥
निर्भय निडर 'शार्दूलसिंह' जैसा, वनकर वन गये मिलना ऐसा।
होगा कब करो गोर ॥ अवध में जनता मचावत शौर ॥ ७ ॥
पाछा रघुवर जल्दी आसे, तजदो सोच 'रूप' मुनि भासे।
जाप जपो निज भौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ८ ॥

—क्षेपक ढाल मूलगी—

सकल मिल पाछा ही जावे, 'राम' का गुण मुख सब गावे, नर सब 'अयोध्या आवे, चित्त तो प्रभुजी ने आल्या, 'रघुपति' वन वासे चाल्या ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४६ ॥

दोहा (जयतशी रागे)

गांव गांव ना ग्रामपती, करे घणी अरदास।
देव ! इहां थानक करो, एछे तुम्हारो धाम ॥ १ ॥
'राम' न माने वातए, चाल्या ही वन जाय।
गांव नगर पुर पाटणा, किहां ही न रहाय ॥ २ ॥
राज्यन झाले भरतजो, आक्रोशी निजमाय ॥
'राम' अने लक्ष्मण तणो, विरह खम्यो नविजाय ॥ ३ ॥
चारित्र ने उतावल्लो, राजा 'दशरथ' नाम ॥
'सामन्त मंत्री' मोकले बोलावण श्री राम ॥ ४ ॥
पश्चिम दीसे जातां थको, आवी पहोंच्यो गृह ॥

करी घणी अरदास पिण, 'राम' नमाने तेह ॥ ५ ॥
पाछा वाले 'रामजी', ओ पाछा नचलन्त ॥
जाणे कदीही वावडे, तेहथी साथ चलन्त ॥ ६ ॥

—ढाल–तेवीशवीं–तर्ज–भकड़ीनी—

आगे जातां रे अटवी आवही, नरनवी दीसे अधिक डरावही, डरामणी अटवीए मांहे चाले नई छेरे विहामणी, उहां ऊभो होई भाखे अयोध्या पुरनो धणी, 'सामन्त मन्त्री' घरे जावो कष्ट्र छे आगे घणो, कुशल केजो माय बाप ही आजतांहीं अमतणो ॥ १ ॥ भाई 'भरतने' हम करी मानजो, तातसरीसोरे सही करी जाणजो ॥ जाणजो भाई भरतजीने, आंतरो कोई मत करो बाप जाया सहु सरिसा पाट पतीतो ए खरो ॥ सामन्त मंत्री ऊहां रहीया आंखे आंसु ढालवे, धिक् जमारो माहरोरे राम तजी घर चालवे ॥ २ ॥ तीने माणस तेही तरंगिणी, ऊतरियों रे ऊंडीथी घणी ॥ घणी ऊंडी नदी हूंती तरीने कांठो ग्रहे ॥ 'सामन्त मन्त्री' दृष्टि मांडी सामां देखीने रहे ॥ 'रामजी' आगे पधारीया दृष्टिथी अलगाटल्या, सामन्त मंत्री घरे आव्या, राय दशरथ ने मिल्या ॥ ३ ॥ 'राम' न आवे भरत बोलावीयो' राजा 'दशरथ' शिर डोलावियो ॥ डोलावीयो दशरथे मस्तक, 'भरत' सूं भाखे भलू, राज्य पालो आरति टालो, कहे नृप उतावलूं ॥ 'भरत' भाखे राज्य न करूं, कोडी वाने एक है, 'राम' आणूं प्रेम ठाणूं करूं विनय विविकए ॥ ४ ॥ राणी 'कैकेयी' आवी भाखेए, राज्य न चाले रे 'राघव' पाखेए ॥ पाखेए 'राघव' राज्य न चाले, राय सूं आवी कहे, भरत ने तो राज्य देतां वाच वरनी निरव है ॥ राज्य अर्थी भरत नहुवे, राम ·, तेही करी, राज्य आपी सुदृढ थापी आप ग्रहो संयम सिरी ॥ . ॥ अणर विमास्यो में कीयो खरो, अपयश लीधो जग अति आकरो ॥ आकरो में लीयो अपयश कानको सिरियो नहीं, तीनही त्रिय गेह सुणनां हैयु फाटे छे सही ॥ भरत सूं हूं आज जाई करूं वीनती कोडए, 'राम' लक्ष्मण सती सीता आणी सूंरे चहोडए ॥ ६ ॥

क्षेपक तर्ज-चन्द्रायण (भरतोवाच)

बुद्धि तुम्हारी मात बात में कहा करूं, कर्म उदे बलवान राज्यकूं में गहूं।
चली आवी ततकाल राम हर लेनकूं कीधो माय परमाण भरत के चैनकूं ।१

ढाल क्षेपक तर्ज-आसावरी-श्री विनयचन्दजी कृत

तेरी मत कहां गई कैकेयीमात ? हिता हित ज्ञान नहीं तिल मात ।।टेर।।
भरत रीसाय कहै सुन मैया, निपट विगारी ते बात ।
कुजस होय रहो जग सारे. कानों सुणीयो नहीं जात ॥ तेरी १ ॥
कहा कहूं तोय दोप नहीं तेरो, निठूर त्रियानी जात ।
तुं जाणे नृप करूं भर्त ने, सो हमकूं न सुहात ॥ तेरी २ ॥
राज्य धुरन्धर श्री रघुनायक, ताविन में अकुलात ।
उनकूं तें वनवासे पठायो, दहन हमारो गात ।। तेरी ३ ॥
विनय करी ल्यावू रघुपति ने, अब ही चलो हम साथ ।
विनय चन्द कहै हेतु भरत को, अजहूं लोक सरात ॥ तेरी ४ ॥

ढाल मूलगी

अनुमत दीजे मुजने आजए, अबही चालूं करवा काजए ।
काज करवा अबही चालूं, भरत ने मंत्री सरू,
साथ लेई वेग चाली जोत रावी रथ वरू ।
दिवस छठे जाई पहोंच्या देखी हो तरुवर तले,
राम लक्षमण सती सीता दूरहिथी अटकले ॥ ७ ॥

क्षेपक (चन्द्रायण)

रामचन्द्र हरि पास चले है कैकई, भरतभणी लई संग खोज उनको वही। उडती देखी गोरद जानकी कहै तने, भय ऊपज्यां मनमांय 'राम' 'हरि' सु लखे ।। १ ॥

दोहा—कहै राम सु जानकी, सावधान होय धीर ।
क्यों नवि चिन्ता आपको, आई फौज गम्भीर ।।१।।
राम उठ्यो रग मण्डले, ले हाथे हथियार ।
देख पता का भर्त की, उरमें उपज्यो प्यार ।।२।।
आई सवारी भरत की, तुरत ही वेग मनाव ।
घणी चूंप मिल वातणी, आनन्द अंग न माप ।।३

ढाल मूलगी

रथथी उतरी रे आगे आवए, वत्स वत्स करती अति सुख पावए। पावही अति सुख आवी सन्मुख, 'राम' जी पगे लागीयो, चूंबी शिर छाती लगायो, प्रेम अधिको जागीयो सुमित्रा सुत सती सीता, करे नव परणामए, हैये धरिया नेह भरिया पूछियो सुख-तामए ॥ ८ ॥ भरत भली पर पगे लागी रह्यो, श्री 'राघवजी' सुख अधिको लह्यो। सुख लह्यो अधिको बांह गलेमें, घालवे आप आपणी, आंख आली वहै चाली भरतजी भाई तणी ॥ कुशल वात विशेष विचरी पूछि ही परगट पणे, आज छे अति स्वामिजी ने सो मन निजरे निरखणे ॥ ९ ॥ अभक्तनी परे रे मुजछां डीकरी, क्यूं रे पधार्या वन में संचरी। संचरी आया वन मांहै, वेग सूं तुम रघुपति, कपट केल वणी रे मांही हूं न समझूं छूं रती ॥ गाय ब्राह्मण बाल अबला मारवानो पापए, अब मोही लागो झूठ कहूं तो भरत भाखे आपए ॥ १० ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

'भरत' पिन आग्रह अति करतो, चरण विच शीष ही धरतो, विनय को भाव अनुसरतो। पतिन की वीनती मानों, प्रभु थे वात सर्व जानो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४७ ॥

स्वामी श्री नथमलजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज–आसावरी पद

प्रभु किम जावो छिटकाई, हाथ जोडने अर्ज करूं एमी किन कहो दीनी साई ॥ टेर ॥

तुम बिन सूनी सर्व अयोध्या, बोले भरत भाई ॥
अबतो मानों हमारो केणो, केम आये छो रिसाई ॥ प्रभु ॥ १ ॥
रोवत दासी दास सर्वजन, रोवत निज माई ॥
रोवत सगरी नगरी देखो, भाखूं कर नरमाई ॥ प्रभु ॥ २ ॥
प्रभुजी पाछा ही चालो, क्यों रामायन वनमें पधार्या मो पहे दुःख घालो ॥ टेर ॥
प्रभु दर्शन बिन घड़ी षट्मासा, तुम दर्शन सुख व्हालो ॥

विरह व्यथा में साच कहूं मैं, होगयो हूं कालो ॥ प्रभु ॥ ३ ॥
राजगादी तुम विन नवि शोभे, परतङ्गा मति झालो ॥
हमको कारागृह में देकर, पादो विपको प्यालो ॥ प्रभु ॥ ४ ॥
क्यूं प्रभुजी तुम हमको छोड़ो, मैं तुमचो व्हालो ॥
जम्पे भरत नरेश्वर इणपर, मुजरो म्हारो झालो ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

—(ढाल मूलगी)—

आय अपूठोरे राज्य करीजीए, लोका केरी आरती हरीजीए। हरीजीए आरती लोककेरी, राज्य यापही परिहर्यो, तुम छतां पुत्रे राज्य छनूं भरत भाखे गह गह्यो ॥ मंत्रीश[1] लक्ष्मण-पोलिओ हूं छत्रधारक तोल हूं, राजाधिराज 'राम' राजा भोगवो पृथ्वी सहु ॥ ११ ॥ कैकेयी कहैरे राघवजी सुणो, भाई भक्तों रे भरत अछे घणो। अछे भक्तो भरतकेरो बोलतो अब मानीये, मायनी मनुहार म्होटी जाणी अधिक न ताणीए ॥ जनक दोप न दोप भरत ही दोप ए छे माहरो, त्रिया स्वभावेमें कुभावे कीधो अविनय ताहरो ॥ १२ ॥ नारी सहेजे क्लेश करी कही, परघर भंजवाने रे ऊमही। ऊमही अधिकी करण भूण्डूं, दीयो दुःख राजा भणी. अपराजीता ने सुमित्रा ने करी अति खीजामणी ॥ कुल रीति लोपी घणूं कोपी एह अवगुण मायना, होई सायर सहो सघला सुणो नन्द सुरायना ॥ १३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

राणी कहै अवगुण है मेरो. विचारो विरुध अब तेरो. अयोध्या नगर है तेरो। भर्त ए राज नहीं लेवे, लोक मुज धुरकारा देवे, ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४८ ॥

—ढाल क्षेपक तर्ज-आसावरी पद—

नंदन थे मांनो वात म्हारी, अरज करूं अति गरज दीन है स्यो चित्त में धारी ॥ टेर ॥

---

१ भरत कहे छे के —लक्ष्मण तमारो प्रधान हूं पोलीयो (द्वारपाल) अने शत्रुघ्न छत्र धारण करनारो थसे। (लः शत्रुन)।

कैकेयी कहै सुन पुत्र हमारे, काम कियो अविचारी ।
तुच्छ बुद्धि कामन की दाखी, थे छो बडे अवतारी ॥ नंदन १ ॥
राज भार तो भरत न झेले, छे आज्ञाकारी ।
फिट फिट लोक कहै सब हमने, आप जीते हूं हारी ॥ नंदन २॥

ढाल मूलगी

एम कहैतीरे आंसू नाखेए. वली वलीरे वारु भाखेए ।
भाखेए वारु वचन चारु कोन माने रामजी, तात दीधूं राज्य भरत ही माखे मुज अभिरामजी, तात जीवे हूंहीं जीवूं बोल क्यूं लोपायजी. वाप भाई कह्यो करवो सही सू सुण मायजी ॥१४॥

स्वामीजी श्री नथमलजी कृत. ढाल चेपक तर्ज–जातरी गूजरणी

राम कहै सुण भाई एम, तूं राज्य न लेवे केम, में तुझने दीधो,
राज अयोध्यानो एहटीको तो कीधो ॥ टेर ॥
प्रथम तातनो वचन लोपाय, मुझने वेला थाय ॥ में ॥ १ ॥
लक्ष्मणजी पिण इमही भाखे, आ तात मातनी साखे ॥ में ॥२॥
सीता पास मंगावे नीर, टीको करयो है वडवीर ॥ में ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

सीता आण्योरे जल सुविवेक ही, राम करेरे भलो अभिषेकही ।
अभिषेक कीधो नाम दीधो भरत भलो भूपालए, सामन्त मंत्री साख राखी मेटीयो जंजालए । पाय प्रमणी भरत भूपति भलामण परजा भणी,

ढाल चेपक तर्ज–कव्वाली

कहैं श्री 'राम' भरत तांई, भया वात सुन लीजे ।
बैठ के अवध की गादी, अदल इन्साफ ही कीजे ॥ १ ॥

यत' शिखरणी छन्दम—चेपक

'पर श्री मानेव, क्वचिदपिन लोभो परधने ।
न मर्यादा भङ्गः, क्षणमपिन नीचे स्वभि रुचिः ॥
रिपौ शौर्यं धैर्यं, विपदि विनयं मङ्गति मता–
मिमां पूज्यां पृथ्वीं, भरत ? नितरां पालय सदा ॥२॥

ढाल मूलगी

देई दक्षिण दीशे चाल्या, नहीं हाजत अरजनी ॥ १५ ॥
पूरी अयोध्यारे आयो भरतए, रामादेशेए१ राज्य करन्तए।
राज्य करवे लोक सुखीया, नहीं असुख लिगारए, धर्म कर्म चलन्त अधिका राज्य तेज अपारए। देव हरिहन्त सुगुरु सेवा दयाने प्रतिपालवे, सूर्य वंशी सुजश पायो कुल तणे अजवालवे।१६
राजा दशरथ बहु परिवार सूं, मनमां हर्ष्यो कारज सारसूं।
सारसूं कारज हवे महारूं राज्य वैठ्ठ ठामए, 'सत्यभूति' मुनिन्द आगे कहै मस्तक नामिए॥ लेई संयम कारज सार्या ढालए तेवी शमीं, 'केशराज' कहे शुद्ध नरने सुधर्म सूं मनसारमी ॥ १७ ॥

दोहा (धोरणी रागे)

चालन्तां चित्त चावसूं, आणन्ता उल्लास।
चित्रकूट दिन केटला, रहिया करीय निवास ॥ १ ॥
आगे जातां आवीयो, 'अयवन्ती' वर देश।
निर्व्यंजन थानक जई, लिये विश्राम नरेश ॥ २ ॥
सत्यवती२ थाकी खरी, वडतले विश्राम।
लक्ष्मण माथे वोलीया, ए अवसर श्रीराम ॥ ३ ॥
उज्जड थयो देखीए, अवही क्यूं ए देश।
कोई मिलेतो पूछिये, संसय छे सुविशेष ॥ ४ ॥
पंथी परगट नामथी, वातों में वाचाल।
आवी आगे नीकलीयो, पूछे तब भूपाल ॥ ५ ॥

ढाल चौवीसमी तर्ज-धोबीडा नूं धोजे मेलां लूगडां रे ॥

पन्थीडा ! वात कहो धुर छेहथीरे, केणए उज्जड देश रे।
दीसेरे दीसे छे सुहामणोरे, यारु मांहि विशेष रे ॥ पंथी ॥ १ ॥
देशारे देशा 'उजेणी' नगरीभली रे, सिंहोदर तिहां राय रे।
रूडोरे रूडो ने रलियामणो रे, कोईयन नामो थायरे ॥ पंथी ॥२॥
वज्जजरे 'वज्रकर्ण' नामे भलो रे, तेहने छे सामन्तरे।

---

१ रामना आदेशथी। २ सीताजी। ३ सोंपार।

दशांगरे 'दशांगपुर' नो राजीयो रे, गिरवोने गुणवन्त रे॥पंथी॥३॥
हिंडेरे हिंडे आहीडे घणूं रे, नगणे पाप लगार रे।
प्रीतज 'प्रीतिवर्द्धन' नामथीरे, दीठो तव अणगार रे॥ पंथी ॥४॥
ऊभोरे ऊभो कायोत्सर्ग में रे, पूछे सामन्त नाम रे।
किस्यूंरे किस्यूं करो ऊभारह्यारे,! करूं आपणो काम रे ॥पंथी॥५॥
वन में रे वन में काम किस्यो करोरे, । करूं तप उपवासरे।
जेहथीरे कर्म पड़े छे पातलारे, साधीजे शिव वासरे ॥ पंथी ॥६॥
हिंसारे हिंसा दोष वतावीयारे, समझ्यो तव भूपाल रे।
श्रावकरे श्रावक हुचो सुन्दरुरे, जीव दया प्रतिपाल रे ॥पंथी॥७॥
देवजरे देव नमूं अरिहन्तजीरे, गुरु तो श्री सुधा साधरे।
अवररे अवरने शिर नामूं नहीं रे, धर्म रतन में लाधरे॥ पंथी. ८॥
नरवररे ऋषि वांदी घर आवीयोरे, चित्त सूं चिन्ते एमरे॥
कीधोरे कीधो अभिग्रह आकरोरे. नर नमवानो नेमरे ॥पंथी. ९॥
राजारे सिंहोदर दुःख पामसेरे, कीजे कांई उपायरे।
नियमजरे नियम पले जिम आपणोरे. दुःख नवि पामे रायरे।पं.१०।
मणीनी रे मणिनी कीधी मूंदडी रे. मांहि लिखीयो नाम रे।
अरिहन्तरे अरिहन्त देवनो सहीरे, ए नियम पलवानो ठाम रे।पं.११।
माथे रे माथे चहुडी हाथने रे भलो मनावे राय रे।
मनसूं रे पग वांदे अरिहन्तनारे, आघू काळ्यां जाय रे॥ पं. १२॥
राजारे राजा गीमाणूं घणूं रे. जाण्यो जवए मर्म रे।
व्हालोरे व्हालो एहने हूं नहीं रे, व्हालो श्री जिन धर्मरे।पं. १३।
कोईरे कोई नर उपगारीयोरे, आवी भाखे एहरे।
भूपति पूछे तें किम ए लहीरे. तो फिरी भाखेतहरे ॥पंथी. १४॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राय कहे खबर केम पामी. सो कहे सुणीये हो स्वामी, साधर्मी भाई गिरनामी। बात प्रभो ? आगल में दाखूं, झूंट नहीं साच ही भाखूं सत्यव्रत पाळो ॥ ४९ ॥

ढाल मूलगी—

नगरीरे कुन्दनपुरी रलियामणीरे, तिहां वसे छे शाह रे।
यमुनारे उदरे हूं सुत ऊपन्यो रे विद्युत् अंग उच्छाहरे ॥पं. १५॥
अनुक्रमे मेरे योवननी वय पामीयो रे ,लेई किराणो सार रे।
नगरीरे 'उज्जयणी' चली आवीयो रे, करवाने व्यापार रे ।प. १६।
वेश्या रे वेश्या कामलता अछे रे, तिणसूं राच्यो सोयरे।
खाधोरे खाधो धन मघलो सहीरे, रह्यो निर्धन होयरे॥पंथी॥१७॥

ढाल क्षेपक तर्ज—जल्लो म्हारी जोड रो, उदीयापुर म्हाले रे॥

स्वजन मने वर्ज्यो घणो रे. मतजा वैश्या द्वार।
मूलन मांनी वातड़ी, अब भुगतूं दुःख अपार॥
कहै विद्युत वाणीयो, कुण्डनपुर वासी रे॥ टेर॥ १॥
निर्धनने आदर कुणदहै रे. जिणमें वैश्या जात।
कूड़ कपट री कोतली रे, सङ्ग कियां दुःख पात॥ कहै॥ २॥
वेश्या काढ्यो घर थकी रे, हूँ कह्यो जाऊँ नांय।
तिण कयो म्हारो धन विनारे, काज न चाले काय॥ कहै॥ ३॥
मैं कयो म्हारे धन नहीं रे. होसे तुझने दीध।
कामान्ध हो तव वश पड्यो. मैंतो जहर हलाहल पीध॥कहै॥४॥

— ढाल मूलगी —

राजारे राजानी पटरागीनी रे. श्रीधरा ने कान रे।
कुण्डलरे कुण्डल छे तेहवां रे, दे मुझने तूं आणरे॥ पंथी॥ १८॥
तबहीरे तब भाखे भामिनी रे, कुण्डल आवे दाम रे।
चोरीरे चोरी करवा चालियो रे, कुण्डल लेवा काम रे॥पंथी॥१९॥
राणी रे राणी राजसूं कहै रे क्यूं हो उदासी आजरे।?
दशांगरे 'दशांगपुर' नो नायकरे, मारण केरे काजरे॥पंथी॥२०॥
रजनी रे रजनी वैरण हुयरही रे, कदी पामूं परभातरे।
भाई रे भाई सुतने सह भलारे, करे सहुनो घातरे॥ पंथी॥२१॥
एहिजरे एह सतु मैं सांभल्यो रे. कुण्डल चोरी त्याजरे।
आव्यो रे आव्यो मैं कहवा भणी रे, साधर्मी निमित्ते साजरे।२२।

निसुणीरे निसुणी ए पुर राजीयोरे, कणतृण अधिक अपाररे ।
वातजरे वात कहंता आवीयारे, दल बलनो नहीं पाररे॥पंथी॥२३॥
वींट्योरे वींट्यो पुर घर चिहूं दिशेरे, चन्दनने जिम सापरे ।
आवणरे आवण जावण नकोल है रे, लोकों लाग्यो पापरे ॥२४॥
राजारे राजा दूतज मोकल्योरे, भूपति पासे तामरे ।
मुद्रारे मुद्रा मूकी मन्दिरेरे, आवी करो प्रणाम रे ॥ पंथी ॥२५॥
भूपतिरे भूपति भाखे एटलू रे, देवगुरु विण देखरे ।
मानसरे मानसने नमवो नहींरे, नियम अछे सुविशेषरे ।पंथी।२६।

ढाल चेपक मूलगी

राय कहै देवगुरु टाली, नमें नहीं मस्तक मुज ह्यारी, प्रतिज्ञा ऐसी है म्हारी । अवरको वात मुझ भाखो, किसी विध शङ्का मत राखो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ५१ ॥ धर्म की दृढता मन म्हारे, धर्म मुझ वंछित ही सारे, सुरासुर सब इनके लारे । प्रतिज्ञा लीधी सो साची , कदेही होवे नहीं काची ॥ सत्य० ॥ ५२ ॥

ढाल मूलगी

पौरुषरे पौरुष तो ए कोनहीं रे, धर्म तणो दृढावरे ।
बाकीरे बाकी कहो तिमही करूंरे, अवगन कोई कहावरे ॥ २७ ॥
धर्मज रे धर्म द्वारे मुज भणीरे, धर्म करवा जाऊंरे ।
म्हारे रे म्हारे धर्म सगाईयोरे, धर्म थकी सुखपाऊंरे ॥पंथी।२८॥
एकहीरे एकनमाने राजवीरे, आणे अति अभिमान रे ।
रोकीरे रोकी रह्यो सहु लोकनेरे, आगतितो असमानरे ॥ २९ ॥
लूंटेरे लूंटे देश दयामणोरे, रखवालो नहीं कोई रे ।
तेहथीरे तेहथी देश दयालजीरे, गयो सब उजड़ होईरे ॥ ३० ॥
हूंपणरे हूंपण लेई कुटुम्बों आपणोंरे, अलगो थयो अपाररे ।
बाल्यारे बाल्या मन्दिर मालीयारे, नाणं दया लगाररे ॥ ३१ ॥
म्हारीरे म्हारी नृपनी छापरीरे, लोके न्हांकी पहारीरे ।
जाऊंरे जाऊं लेवाने लाकडीरे, वनमें नार कुहाडीरे ॥पंथी॥३२॥

भूंडूंरे भूंडूंए भलामणी रे, दीठो दर्शन आजरे।
देवजरे देवतरुसम देवनुंरे, सरियू वंछित काजरे ॥ पंथी ॥ ३३ ॥
तेहनां रे एह वचन श्रवणे सुणीरे, आणी दया दिल मांहीरे।
दीधूंरे रत्न सुवर्णमय सूत्रजीरे, दारिद्र हरे नृप ग्राहिरे ॥ ३४ ॥
लक्ष्मण रे लक्ष्मण पुरमें मोकल्यो रे, तेह भूपतीनी पासरे।
उत्तम रे उत्तम नर अवलोकवे रे, पाम्यो अति उल्लासरे ॥ ३५ ॥
सेवारे सेवकरूपी साचवेरे, लक्ष्मण भाखे ताम रे।
वनमें रे वन में बयठो अछे रे, 'सीता' शूं श्री राम रे ॥पंथी॥३६॥
भूपतिरे 'लक्ष्मण' जी तिहां आवीया रे, आण्या घर बोलाय रे।
भोजन रे, भोजन भक्ती करी भली रे, 'राम' तदा सुखपायरे॥३७॥
लक्ष्मण रे 'लक्ष्मण' जीने मोकल्यो रे, राजा पासे तेवार रे।
जाणे रे, एह उपद्रव टालीये रे, जग म्होटो उपकार रे ॥पंथी॥३८॥

ढाल मूलगी क्षेपक

सिंहोदर पास ही आवे, भरत का दूत ही थावे. भरत का वचन सुनवावे, सुनो तुम सिंहोदर राजा, करो तुम मेरा यह काजा ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ५३ ॥

ढाल मूलगी

राजारे राजा आण मनावीयारे, 'भरत' भलो भूपाल रे।
एहजरे एह उपद्रव सांभलीरे, टालसे तत काल रे ॥ पंथी ॥३९॥
सेवकरे सेवक मूं अनुशासनारे, राजाजीनी जोई रे।
परण्यो रे परण्या पछे लाते मारवूंरे, अण परण्या स्युं होई रे ॥४०॥
एहिजरे सामन्तछे धुर माहरोरे, मुझ साथे गुमानरे।
वांकजरे काढीने सूंधू जोकररे, तो किस्यो राजानरे ॥पंथी॥४१॥
पुनरपिरे पुनरपि 'लक्ष्मण' जी कहे रे, दीसे कवण अन्याय रे।
पाले रे पाले निश्चय धर्मने रे, कहै तुम्हारो शूं जाय रे॥पंथी॥४२॥
आधूंरे आधूं तो नवि खींचिये रे, चित्तमां आण नयाणा[१] रे।
सायररे सायर अंते जाणीयेरे, 'भरत' भूपनी आणरे ॥पंथी॥४३॥

१ मज्जनपणो।

खीज्योरे खीज्यो राजा अतिघणूंरे, निगुणी भरत वखाणरे ।
लेईरे क्यूं नहीं जावे एहनेरे, पुरुषो वचन प्रमाणरे ॥पंथी॥४४॥

ढाल क्षेपक मूलगी

दूत है तुझने नहीं मारू, और का जोर नहीं धारूं, इसीका कुल ने संहारूं, धूगं लग चाक रहै म्हारो, विगारयो नहीं कारज थारो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ५४ ॥

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' रे भाखे, भूपालने रे, भोलामांही भोलरे ।
ऊठीरे उठी आव उतावलोरे, जोऊं थारो जोर रे ॥ पंथी ॥४५॥

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–अरजी सुन नेम हमारी

बोले तब 'लक्ष्मण' प्यारो, देखूं अब जोर मैं थारो ॥ टेर ॥

यह धर्म धुरन्धर, दृढतारो अधिकारो । जिणसूं कोप राजा, होस्ये तुझ मुख कारो ॥ धिक् २ तुझ जमवारो ॥ १ ॥ स्वधर्मी यह 'भरत' के कहीये, तिण सूं मदत । तिहूं खण्डाधिप 'भर्त' कहीजे, सहुको जानन हारो ॥ [illegible] नहीं चवड़े नीहारो ॥ बोले ॥ २ ॥ कोप्यो राय 'सिंहोदर' [illegible] कहे, बोले दूत ए खारो । ग्रहो २ ए दुर्बुद्धि ने, गल हत्थो दे मारो ॥ लक्ष्मण कहे को हूंसियारो ॥बोले॥३॥ 'लक्ष्मण' कहे रे ढोर शिरोमण, क्यों आयो अन्त थारो । एम कहन्ता सुभटज धाया, ग्रहि २ निज हथियारो ॥ दलबल अतुल अपारो ॥बोले॥४॥

ढाल मूलगी क्षेपक

लक्ष्मणजी कोपे परजलीयो, कोप से दल सब खलबलीयो, सिंहोदर कहे दूत ओ अकलियो, इसो नहीं देख्यो मैं आगे, जाणे कोई उमगज्ञा मागे ॥ सत्य० ॥ ५५ ॥ समरना सीकी मतवाग, उठे तब सुभट ऊंझाग, पञ्चायुध हाथ मे ल्याग, लेवे वे ढालों का ओटा, अटे अब कादेमी पोटा ॥ सत्य० ॥ ५६ ॥ दूत हो वचन कटुक भाखे, कायदो जग नहीं राखे, बोलोरा फल ओ अब चाखे कोई कहे पकड़ दे काढो, कोई कहे जमी बीच गाडो ॥सत्य॥५७॥

ढाल मूलगी

आयोरे कर आडम्बर आकरोरे, आपणपे अयाणरे।
लक्ष्मणरे ऊपाडी लीधो सहीरे, हाथीनो आलानरे ॥ पंथी ॥४६॥
त्रास्यारे त्रास्या विविध त्रासखुं रे, नाठा जावे दूर रे ।
उछलिरे गज ऊपरथी वांधीयोरे, आण्यो राम हजूर रे ॥ ४७ ॥

क्षेपक चन्द्रायण

सुनहूं सिंहोदर वात सेवकर करणकी, मन तजीये अभिमान मेट मति मरणकी । जाणो एह विचार और कछु नावने, सुख से वीते काल पाय पड इणतने ॥ १ ॥ वचन तुम्हारो शीश हुकम परवांन है, आज्ञा है अखण्ड रामकी आण है । मोकू अपनो जाण दया चित्त दीजीये. मन मोंने सी आप भोलावण कीजीये ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

राजारे 'सिंहोदर' पगे लागीनेरे, राजन सूं भाखन्तरे ।
जाण्योरे में नवि प्रभुजी तुम्ह अछोरे, कां ए फल चाखन्तरे।४८।

ढाल मूलगी क्षेपक

मनें नहीं आपरी खबर, हुतीतो लेलेतो सबर, जोरहै 'लिछमण' को जबर ॥ प्रभुके दया दिल आवे, जानकी बन्धन छुड्वावे ॥ सत्य० ॥ ५८ ॥

ढाल मूलगी

महारोरे खमजो ए अपराधजीरे, आपो अब आदेशरे ।
मांहोंरे मांहां मांहै. मन मेलव्योरे, भाखे ताम नरेशरे॥पंथी॥४९॥
बन्धनरे बन्धन खोल्या हाथसूंरे, मेलवीया नृप दोईरे ।
घरघररे घरघर वार वधामणांरे, आनन्द वर्त्यो जोईरे॥पथी॥५०॥
आधोरे राज्य दीयो सिंहोदरेरे. राघवजीनी साखरे ।
मिटिओरे मिटियो नस सेवक पणूंरे सम्मुख जाई भाखरे॥ ५१ ॥
कुण्डलरे मांगीलीया राणीकनेरे. विद्युत अङ्गने दीधरे ।
कीधोरे नगरीनो अधिकारीयोरे. पंचांमें परसिद्धरे॥ ५२
कन्यारे 'सिंहोदर' राजातणीरे. तीन सयां परिमाणरे ।

आठज रे आठ अछे भूपालने रे, विवाह तणो मण्डाण रे॥पंथी५३॥
लक्ष्मण रे 'लक्ष्मण' कहे परणूं नहीं रे, वनवासो जवतांय रे।
पछी रे पछी परणीसूं सही रे, राजा निज घर जाय रे ॥पंथी॥५४॥
ढालज रे ढाल भली चौवीशमीं रे, राजा राखी टेक रे ।
धर्मथीरे 'केशराज' प्रत्यक्षपणे, सरिया काज अनेकरे ॥पंथी॥५५॥

दोहा (आशावरी रागे)

रात रही श्री रामजी, मलया चलने जाम ।
जातां विचे आवीयो. देश सु 'निर्जल' नाम ॥ १ ॥
तृषा व्यापी सीता भणी, तरुतले ले विश्राम।
जल लेवाने कारणे, ' लक्ष्मण ' धायो ताम ॥ २ ॥
आगे एक सरोवरू, दीठुं अधिक अनूप ।
जलक्रीडा करवा भणी, आव्यो छे इक भूप ॥ ३ ॥
'कूबेरपुर' नो राजीयो, नाम 'कल्याण' सुकुमाल ।
'लक्ष्मण' ने देख्यों थकां, राच्यो रूप रसाल ॥ ४ ॥
आकारे करी ओलखी, ए छे कोई नार ।
आमंत्रण भोजन तणो. वड़ो प्राहूणो विचार ॥ ५ ॥
सो रे कहूं जिमसुं नहीं. भाई छे वनमांहि ।
मंत्रीश्वर सामन्तजे, लाया लेई उच्छाहि ॥ ६॥
स्नान करी भोजन भल्लूं. आरोगी रघुराय ।
बतलावे ते भूपने, सहज पणूं न छुपाय ॥ ७ ॥

ढाल पच्चवीशमी

तर्ज-देखी सखी प्रभु कण्ठ विराजे ।

आभलो रे सीतापति करो, जिहां जिहां संचार रे ।
तिहां तिहां ना काज समारे, करी करी उपकाररे ॥ आभलो ॥१॥
' कूबेरपुर ' पति बोलीयोरे. स्वामी सुणो सुविचार रे ।
'वालिखिल्य' राजाभलोरे, पृथिवी नो भरतार रे ॥ आभलो ॥२॥
सम्बरनी सारी हुई रे, म्लेच्छ असुर आचार रे ।
बांधी लीधो ने रायजीरे, छोडावीयो नविजाय रे ॥आभलो॥३॥

राणीए जाई पुत्रीकारे, मंत्रीए भाख्यो पुत्ररे।
पुत्र पनोताथी रह्यो रे, आगेही घर सूत्र रे ॥ आभलो ॥ ४ ॥
'सिंहोदर' सुत सांभलीरे, थापी थान प्रधान रे।
चालिखिल्य' घरे न आवेरे, तिहां लगे ए राजानरे ॥आभलो॥५॥
पुरुषवेष धारी रही रे, बालपणाथी जोई रे।
माता मंत्री बाहिरो रे, भेदन जाणे कोई रे ॥ आभलो ॥ ६ ॥
वसुधा मांहै विख्यातजीरे, भूप 'कल्याण' सुकुमालरे।
मंत्री महोटो तो कयोरे, राज्यतणो रखवालरे ॥ आभलो ॥ ७ ॥
अर्थ घणों असुरां भणीरे, आपूं छूं हूं आप रे।
अर्थ तणा अर्थी नहीं रे, असुर न छोड़े बाप रे ॥ आभलो ॥८॥
'सिंहोदर' थी राखीयोरे, 'वज्रकर्ण' नृप जेमरे।
असुरांथी ऊबारीये रे, बाप अमारो तेम रे ॥ आभलो ॥ ९ ॥
'राम' कहै तूं तुरत में रे, पर हो मत करिश वेपरे।
तात छोड़ावी ताहरो रे, आवेज्यों सुविशेषरे ॥ आभलो ॥ १० ॥
महाप्रासाद करी लियो रे, कन्या राजा रूपरे।
लक्ष्मणजी ने परणावीये रे, मंत्री कहै अनूपरे ॥आभलो ॥ ११ ॥

ढाल चेपक मूलगी

कामए प्रभुजी मुज्ज करणो, हमांने आपको शरणो, व्याहको होंकारो भरणो ॥ प्रभो मत नाकारो दीजे, भेट आ चरणां में लीजे ॥ सत्य० ॥ ५९ ॥

ढाल मूलगी

'राम' कहै वनवास में रे, होई आवुं जाम रे।
तव लग घर बैठी रहो रे, पछे सरसी काम रे ॥आभलो ॥१२॥
तहति कही दिन तीसरे रे, प्रभुजी पाछली रातरे।
आगाने ऊठी चल्यारे, नृपे जाण्यो परभात रे ॥ आभलो ॥१३॥
नदी नर्मदा आवीया रे, विन्ध्या अटवी जाई रे।
लोके ते वर्ज्या घणूंरे, जावे बेपरवाई रे ॥ आभलो ॥ १४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

कहन प्रभु किनकी नहीं माने, चालन की वातही ठाने, सिंह कहो किस का भय माने, निडर हो तिनोंही चाल्या, रह्या नहीं किणराही पाल्या ॥ सत्य० ॥ ६० ॥

—: ढाल मूलगी :—

दक्षिण नी दिशे अनुसरीरे, कण्ट की तरु भूरीरे ॥
माठो को दीसे नहींरे, जाये मार्ग रज चूरीरे ॥ आभलो ॥१५॥
शुकना शुकन नागणेरे, नागणे घाट विघाटरे ॥
दुर्वल ने एसोचनारं, वलियों उज्जड वाटरे ॥ आभलो ॥ १६॥
असुरोंनी सेनाघणीरे, दल वल नो नहीं पाररे ॥
देश घातने नीकल्यारे. मिल गया तेणी वाररे ॥ आभलो ॥१७॥
सेनामे सेनापतिरे, तरुण पणोछे तासरे ॥
सत्य वती अविलोक नारे, पायो अति उल्लासरे ॥ आभलो ॥१८॥
असु रोने नेडो कहेरे, उदालो ए वालरे ॥
धम मस करता धाईयारे, राम प्रत्ये तत कालरे ॥ आभलो ॥१९॥
लक्ष्मण भाग्वे राम मूंरे. तुम रहो सोता पासरं ॥
धनुष्यनाटंकारथीरे, असुर गया सब नाशरे ॥ आभलो ॥ २० ॥
सेना पति सामन्त सूंरे, लागो राघव पायरे ॥
चरित्र सुणावे आपणोरे, आगे ऊभो आयरे ॥ आभलो ॥ २१ ॥
"कौशाम्बी" नगरी भलीरे, "वैश्वानर" अभिधानरे ॥
ब्राह्मण 'सावित्री' घणीरे, जायो सुत अज्ञानरे ॥ आभलो ॥२२॥
'रुद्र देव' अति रुद्रजीरे, करतो करम क्रूररे ॥
चोर अन्यायीने जीररे, वाजे अपजश तूररे ॥ आभलो ॥ २३ ॥
चोरी करतां साहीयोरे, शूलीनो आदेशरे ॥
नृरे दीघो तब श्रावकेरे, छोडाव्यो सुविशेषरे ॥ आभलो ॥२४॥
शिल्यामण दीधी मुज्ज भणीरे, मतकरे एहवो कामरे ॥
पल्ली मांहे आवनारे, में पायो विश्रामरे ॥ आभलो ॥ २५ ॥
पल्ली पति एहूं हुवोरे, तेज प्रताप प्रचण्डरे ॥

कोई यन होवे सामु होरे, वर्ते आण अखण्डरे ॥ आभलो ॥२६॥
बांधू राणा राजीयारे, पाडूं सघले त्रासरे ॥
आज हुओ मुज जाणजोरे, देव ! तुम्हारो दासरे ॥ आभलो ॥२७॥
अविनय कीधो आकरोरे, खमजो मुझ अपराधरे ॥
भाग्य वडूं जे माहरुंरे, प्रभु तुम दर्शण लाधरे ॥ आभलो॥२८॥
कामतणो आदेशथी रे, द्यो मुझ प्रत्ये आजरे ।
'बालिखिल्य' ने छोड़ीदे रे, पहलो करए काजरे ॥आभलो॥२९॥
'बाली खिल्य' ने छोडी नेरे, असुरें कर्यो प्रणामरे ॥
'बालि खिल्य' करजोडीनेरे, प्रणम्यो प्रभुजी रामरे ॥ आभलो ॥३०॥
'राम' तणा आदेशथीरे, दीधो पूरी पहोंचायरे ॥
'कल्याणमाला' कूंवरीरे, देख्योंथी सुख थायरे ॥ आमलो ॥३१॥
ढाल भली पचीसमीं रे, बन्दी मोचन नाम रे ॥
'केशराज' श्री रामजी रे, काम करे अभिरामरे ॥ आभलो ॥३२॥

दोहा (सारंगरागे)

वींध्या अटवी अतिक्रमी१, मेलंतां बहुग्राम ॥
महानदी तापी तरी, उरहा आया ताम ॥ १ ॥
प्रान्त ग्राम ग्रामों विषे, 'अरुण' एहवो ग्राम ॥
निर्लज ने निर्धन घणा, लोक वसे निर्मामर२ ॥ २ ॥
'कपिल' नामे अति क्रोधियो, ब्राह्मण महा कुपात्र ॥
अग्नीहोत्र-कर्माचरे, गर्वे पूरित गात्र ॥ ३ ॥
'सुशर्मा' सुखंदायीनी, ब्राह्मण गुणनी जाम ॥
मीठी बोली भाननी, वसुधा मांहे वखाण ॥ ४ ॥
'सीता' ने तृष्णा व्यापथी, पाणी पीवा काज ॥
आवी गयाते गांवमां, वेश पन्थीनो साज ॥ ५ ॥

—(ढाल छावी समी)—
तर्ज—धन्य धन्य सतीजी आपको एसे राम ॥

'राम' पधारीयाजी, ब्राह्मण केरे गेह ॥

१ ओलंगी—हद बहार जई २ मायक बिनाना—निशानो—

दर दे अति ब्राह्मणीजी, आणी धर्म सनेह ॥ राम० ॥ १ ॥
सन मांड्या जु जु आंजी, देती अति सन्मान ॥
तल पाणी पाईयोजी, जाणे अमृत पान ॥ राम० ॥ २ ॥

—ढाल क्षेपक मूलगी—

शर्मा' करती है अर्जी, कीजिये मोपर शुभ मरजी, विराजो रात
घरजी ॥ रामजी भर्यो हौंकारो, सीता तब देवे नाकारो ॥ सत्य. ॥ ६१ ॥

यसुन्दरजी कृत–ढाल क्षेपक तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी—

युडा ? न रहीये रे मन्दिर पारके, (टेर) रहियां होत विखादो रे ॥
ापांनो वन वासो आदर्यो, छोड्या रसना स्वादो रे ॥ पियुड़ा ॥ १ ॥
ज इच्छाए रहियो अतिभलो, इण सम सुख जग नाहीं रे ॥
र इच्छाए सुख दुःख देखीये, शास्त्र वदेए प्राही रे ॥ पियुड़ा ॥ २ ॥
ाम कहे दिन थोड़ो अछे, ब्राह्मणी भक्ती अपारो रे ।
ान रहीने प्राते चालस्यों, जब उदे दिनकारो रे ॥ पियुड़ा ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

टले ब्राह्मण आवीयोजी, प्रगट पणे रे पिशाच ।
ोप करे अति क्रोधीयोजी, ताम बिखेरे बाच ॥ राम ॥ ३ ॥
रकोण मेले लूगड़ेजी, घर में घाल्या आज ।
अग्निहोत्र अपवित्रियोजी, कीधुं काज अकाज ॥ राम ॥ ४ ॥
नीकल म्हारा घर थकीजी, नहीं तर तोडूं हाड ।
भामिनीनो१ मुख भांजवाजी, आयो लेई मुगड़ ॥ राम ॥ ५ ॥
शरणे आवी सुन्दरीजी, 'सीता' राखी पूठ ।
तो पण नटले पापीयोजी, 'लक्ष्मण' आयो ऊठ ॥ राम ॥ ६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–अरणक मुनिवर०

'सीता' मान्हे रघुवर में कह्यो, नहीं रहीये इण गेहो रे ।
वनमां सुखसूं रहिनां आपणे, बृठता अमृत मेहो रे ॥ पियुड़ा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

घर माहीनो फेरीयोजी, उछालीयो आकाश ।

१ स्त्री ।

न्हांखण लाग्यो तेटलेजी, ब्राह्मण पायो त्रास ॥ ७ ॥
पाड़े अधिकी पीपडीजी, मिल्या लोक अपार ।
भेद लहीने भाखहीजी, फिट रे फिट गिमार ॥ राम ॥ ८ ॥
कीटी पर कटक एजी, करतां शोभान कोई ।
करुणा आणी रामजीजी, दीधो छोडावी सोई ॥ राम ॥ ९ ॥
तिहां थकी चाली गयाजी, बीजी अटवी मां है ।
काजल वर्णी शामलीजी, परम भयंकर थाई ॥ राम ॥ १० ॥
जलधर[१] लाग्यो बरसवाजी, आवी गयो चौमास ।
वडला तले वासो बस्योजी, आणी अति उल्लास ॥ राम ॥ ११ ॥
अधिष्ठायक देवताजी, प्रभु थी पामे त्रास ।
ए तेहने सारे नहीं जी, हुवो अधिक उदास ॥ राम ॥ १२ ॥
'ईभकर्ण' नामे भलोजी, जक्ष जक्ष सिरदार ।
जाई पुकार्यो देवनेजी, तब ते करे सुविचार ॥ राम ॥ १३ ॥
भाग्य हीन सुर पापियाजी, अवसर चूक्यो एह ।
एतो म्होटा प्राहुणाजी[२], आया छे तुम्ह गेह ॥ राम ॥ १४ ॥
वासुदेव अष्टमाजी, ए अष्टमा बलदेव ।
महापुरुष पृथिवी विशेजी, क्यूं न करो ते सेव ॥ राम ॥१५॥
नव जोजन चहुडा पणेजी, लांबी जोजन बार ।
कोट अने वर कांगुराजी, ऊंचा मन्दिर सार । राम ॥ १६ ॥
हाट भर्या बहु वस्तु सूंजी, धर्यो न धन नो पार ।
कूप वापि वारी सूंजी, शोभा विविध प्रकार ॥ राम ॥ १७ ॥
पुरी 'अयोध्या' सारिखीजी, 'राम पुरी' अभिराम ।
रात्री विषे रचना करीजी, देव तणा ए काम ॥ राम ॥ १८ ॥

स्वामी नथमलजी कृत—ढाल क्षेपक तर्ज केसर सोना की

नगरी राम की आतो तत क्षिण कीधी तैयार ॥ टेर ॥
देवतणी ऋद्धि नो विस्तार, कहतां नावे पार ॥ नगरी ॥ १ ॥
अभिनव अलकापुर अनुमांन, मानूं धरी ई स्वर्ग की आन ॥ २ ॥

---

१ वर्षा । २ महमान ।

महिल मनोहर अभिनव गोष, कर नूतन मनरी जोप ॥ ३ ॥
चहूं दिश चोहटा भरया भंडार, माल किराणा अति व्योपार ॥४॥
पोढया 'लिछमन' 'सीता' 'राम', सेज सुकोमल ठाम ॥नगरी॥५॥

ढाल मूलगी

मङ्गल शब्द सुहामणाजी, जाण्यो 'राम' नरेश ।
नगरी नयणे निरखतांजी, पायो सुख सुविशेष ॥ राम ॥ १९ ॥
विणा धार विशेषसूंजी, 'ईभकर्ण' वर यक्ष ।
दीठो ऊभो आगलेजी, सुरतरु तो प्रत्यक्ष ॥ राम ॥ २० ॥
विस्मयवंत विचारीयोजी, राजा 'राम' जेवार ।
यक्ष कहे यो मैं कियोजी, वासतणो विस्तार ॥ राम ॥ २१ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–हरखी २ रे

दिन उगेने लोग लुगाई, नगरी सोवनी देखे ।
मन्दिर माला अधिक रसाला, हर्ष घणो सुविशेषेजी ॥
नगरी खूब बनीछेजी, योंका राम धणीछेजी ॥ टेर ॥ १ ॥

श्री रामचन्दजी महाराज कृत ढाल क्षेपक तर्ज–येसर सोनाकी

नगरी 'राम' की, आतो देवता कीधी तैयार ॥ टेर ॥
पग पग प्रगटे नवे निधान, सुरनर किंकर समान ॥ नगरी ॥६॥
जहां जावे वहां हुवे आनन्द, काटे पराया फन्द ॥ नगरी ॥ ७ ॥
सोवन कोट विराजे एन, पुन्यवन्त करता चैन ॥ नगरी ॥ ८ ॥
धर्म जैन परम दयाल, गउ ब्राह्मण प्रतिपाल ॥ नगरी ॥ ९ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हरखी २ रे

कूवा वावी अधिक सरोवर, मन्दिर मोहन गाराजी ।
छक्का द्रव्य भर्या निज घरमें, वरसे कञ्चन धाराजी ॥नगरी॥ २ ॥
देवता भाखे सुणो महुजन, चिन्तामकरो कांइजी ।
वांशाल जाण प्रभुजीके, नगरी एह बनाईजी ॥ नगरी ॥ ३ ॥
नागरड नाटिक कर शोभे, कहितां पार न आवेजी ।
स्वर्ग लोक सा सुख भोगवतां, सुखसूं काल गमावेजी ।नगरी॥४॥

ढाल मूलगी

देव विशेष सेवा करेजी, आछो अवसर पामि।
हूंछूं सेवक ताहरोजी, तुम्है छो महारा स्वामी ॥ राम ॥ २२ ॥
यक्ष पुरुष सेवा करेजी, पोपे परिगल प्रेम।
राम रहै सुखमें सहीजी, पुण्य तणा फल एम ॥ राम ॥ २३ ॥
'कपिल' विप्र इन्धन भणीजी, अटवी में आयन्त।
नूतन नगरी देखतोंजी, 'इजरज' अति पावन्त ॥ राम ॥ २४ ॥
नारी रूपे यक्षणीजी, विप्रे पूछ्यूं ताम।
नीपावी नूतन पुरीजी, वास बसे श्री राम ॥ राम ॥ २५ ॥
याचक ने जलधर परेजी, वरसे कंचन धार।
एम सुणन्तां खलवल्योजी. ब्राह्मण लाग्यो लार ॥ राम ॥ २६ ॥
जन्म दारीद्री हूं अछूजी, एले जमारो जाय।
जेम हूं पामू दक्षिणाजी, भाखो सोई उपाय ॥ राम ॥ २७ ॥
सा भाखे नगरी तणाजी, द्वार अछे वर चार।
रखवाला यक्ष ही रहेजी, कौन लिये पइसार ॥ राम ॥ २८ ॥
नवकार§ भणेजे मुख थकीजी, धारे नियमजे बार।
श्रावक होई जानतांजी. कोन करे भ्रणवार ॥ राम ॥ २९ ॥
साधु समीपे आवीयोजी. आपण श्रावक होई।
घरणी कीधी श्राविकाजी, तब चाल्यां ते दोई ॥ राम ॥ ३० ॥
पूर्व कथित विधि साचवीजी, राम समिपे आय।
उभा ब्राह्मण ब्राह्मणीजी, कोई य न कहीणो जाय ॥ राम ॥ ३१ ॥

---

§ तर्ज लंगड़ी—

मंत्रों का मंत्र नवकार मंत्र तंत्रों का तंत्र हरे दुःख तन का।
जो लेवे धार हुवे पल में पार, करदे उद्धार पापी जनका ॥ टेर
पूर्वों का सार शरण आधार है गुण अपार तारण तिरण।
मंगलीक आप, जयवन्त जप, दे सुख अमाप कल्याण करन ॥
मनोरथ के पूर चिन्ता दे चूर घटे पर्म कहर भय दुःख भजन।
है यही रत्नाण नागदमण जाण पारस प्रधान करदे कंचन ॥
भाखे जिनेश रटते हमेश, टल जावे कलेश उनके मनका ॥ जो लेवे

ढाल क्षेपक मूलगी—

'लिछमण' ने देखने त्राठो, ब्राह्मण तब पाछो ही नाठो, एणे मुझ कूटयो तो काठो । 'राम' कहे स्वाधर्मी भाई, वोलावो अभयदान दाई ॥ सत्य ॥ ६२ ॥

ढाल मूलगी—

लक्ष्मण बोलावी लियोजी, तब ते देय आशीस ।
दीधी वंछित दक्षिणाजी, सफली करीय जगीश ॥ राम ॥ ३२ ॥
घरे आवी धन खरचीयूंजी, लीधो संयम भार ।
कारज सार्यों आपणोंजी, ए प्रभु नो उपकार ॥ राम ॥ ३३ ॥
अब चौमासो ऊतर्योजी प्रभुजी चालण हार ।
यक्षे दीधो रामनेजी, 'स्वयम्प्रभ' वर हार ॥ राम ॥ ३४ ॥
लक्ष्मणने तो कुण्डलेजी, ते जडिया मणि रयण ।
चूड़ामणी* सीता भणीजी, आपी उपजाव्यो चयण ॥राम॥३५॥
मनना वांछित रागनेजी, सम्भलावाने हेत ।
वीणा दीधी वेगसूंजी, सघला साज समेत ॥ राम ॥ ३६ ॥
पहोंचाडी पाछा वल्याजी, देव महा सुखदाय ।
प्रभुजी आगे चालियाजी, नगरी गई विलाय ॥ राम ॥ ३७ ॥
ढाल भली छावीशमींजी. देवकियो अनुराग ।
'केशराज' मुनि भाखीयोजी, राम तणो सोभाग ॥ राम ॥ ३८ ॥

दोहा (सिंधुड़ा रागे)

मांचरतां सुखसें सही. सांज समें सहु कोई ।
'विजय' पुरी चलि आवीया, वासो सोधे सोई ॥ १ ॥
नगरीना उद्यान में, वडलो अछे विशेष ।
मन्दिरना आकार सूं, वासो वसे नरेश ॥ २ ॥
'महीधर' महिमा नीलो, राजा पाले राज ।
'इन्द्राणी' राणी तणी. कहीये कन्थ सकाज ॥ ३ ॥
'वनमाला' पुत्री भली, बालपणाथी एम ।

* मस्तकना गहना अर्थात बोर

टेक ग्रही ' लक्ष्मण ' वरूं, अवर वरूं तो नेम ॥ ४ ॥
वनवासो श्रवणे सुणी, राजा करे विचार ।
कदी घर आवी परणसे, विवाह तणी एवार ॥ ५ ॥
मोटी पुत्री जाणिने, माय बाप परिवार ।
परणावे उतावली, राखी करे विकार ॥ ६ ॥
' ईन्द्रनगर '[1] नो राजीयो, ' वृषभ ' राय मल्हार ।
'सुरेन्द्ररूप' राजा भणी, सादीथी ते वार ॥ ७ ॥

ढाल सत्तावीशमी
तर्ज–सिधीकी देशी (गुरोंजी थे मने गोडे न राख्यो)

'वनमाला' ए निसुणी जाम, मनमांहे अकुलणी ताम ।
रात ही में वनमांहे आवे, एकाकी मरवाने दावे ॥ वन ॥ १ ॥
वनदेवीनी कीधी पूजा, लक्ष्मण टालीने वर दूजा ।
जन्मान्तरे पण मुझ मति[2] आपे, एम कहीने मरवू थापे ॥ २ ॥
तेहीज वडले आवी चाली, लक्ष्मणजी ए दीठी साथाली ।
रामसु सीता सुखमें सोवे, लक्ष्मण जागे दश दिशे जोवे॥वन॥३॥
ए कोई वनदेवी दीसे, ए वटवसणी[3] विश्वावीशे ।
वड आरोही ऊपर आई, 'लक्ष्मण' पूठे चढ्यो धाई ॥ वन ॥ ४ ॥
वनदिग् व्योमतणी सहुदेवी, मनवच काया करीने सेवी ।
सांभलजो ए बोल हमारो, मुझने देजो लक्ष्मण प्यारो ॥ वन ॥५॥
इहभव टाल्यो परभव देजो, तूं तादृशी वलिपूजा लेजो ।
एम कही नांख्यो गल पासो, 'लक्ष्मण' देखे एह तमासो ॥ ६ ॥
अविलम्बे सोचे ने तेंने, लक्ष्मणजी भाखे तस हेते ।
भद्रे ! साहस मकरो काचो, सोहं 'लक्ष्मण' जाणो साचो ॥ ७ ॥
बांहे साहो हेठी आणी, एटले जाग्या राजा राणी ।
'लक्ष्मण' सहु वृत्तान्त सुणावे, सीता राम सदा सुख पावे ॥ ८ ॥
लज्जा पामी प्रभुजी निरखी, पण सुन्दरी मनमांहे हरखी ।

१ चन्द्रनगर (जैन रामायणे) २ नहीं । ३ वडनी वसनारी ।

सीता राम तणे पगे लागी, जाणे भाग्य दशा अब जागी ॥ ९ ॥
पछी 'इन्द्राणी' नृपनी नारी, नवि देखे 'वनमाला' प्यारी ।
करुणास्वरे ऊठी पोकारी, राजाने दुःख हुवो भारी ॥ वन ॥१०॥
'वनमाला' देखण ने राजा, चाल्यो साथे सुभट ले ताजा ।
प्रभुपासे 'वनमाला' देखी, राजाने अति रीस विशेषी ॥वन॥११॥
हणो हणो कही मचायो शोर, एछे मुझ कुंवरीनो चोर ।
सामों ऊठ्यो लक्ष्मण देवो, राय सुभट त्रास्या ततखेवो ॥ १२ ॥
ओळखीयो लक्ष्मण जामाता, राजाजी पाम्यो सुख साता ।
घरही आवी चाली गङ्गा, कुंवरीनो तो कर्म सुचङ्गा ॥वन॥१३॥
लक्ष्मण को वखाने डाही, बाल पणाथकी, उत्साही ।
अब प्रभुजी ए पुत्री परणो, एहि वाते विलम्ब न करणो ॥वन॥१४
आदर अधिके मन्दिर आणे, भोजन भक्ती करी सन्माने ।
वासर१ हुवाछे बेचारो, वर्ते सुख नहीं असुख लगारो ॥वन॥१५॥
परन्दर२ पूराणी अद्भूतो, एटले एक पधार्यो दूतो ।
अति वीर्य मोकलीयो आयो, ऊपज्यो जाणो अति सन्तापो॥१६॥
'निद्यावर्त' नगरथी आयो राजाजी ए सो वतलायो ।
भरत संघाते विग्रह३ वारु, 'अतिवीर्य' नूं आज अपारु ॥ १७ ॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

लक्ष्मण कहे भरतसुं झगडो, थयो किन कारण ए रगडो, दूत कहे मुझ स्वामी जबरो । भरत की सेवा ही चावे, भरत पिण सन्मुख ही आवे ॥ मन्य० ॥ ६३ ॥

ढाल मूलगी—

'भरत' पक्षे बहु भूपति आया, खड़ियूं खेत झंझाऊ वजाया ।
'अतिवीर्ये' तुमने बोलाया पक्षथकी बल वधत मचाया ॥ १८ ॥
काम पड्यां जे मारे काम, मोटे मगो जगमें अभिराम ।
काम पड्यांथी जे दीये टालो, तेह सगानूं मुख करो कालो ॥१९॥
लक्ष्मण भाखे एहे विरुद्ध, क्यूं उपजिओ छेरे अयुद्ध ।

१ दिन । २ पुरन्दर । ३ सभा ।

दूत कहै मुझ स्वामी बलीयो, ए वातां में मैं अटकलीयो ॥२०॥
'भरत' भूपति वांछे सेवा. विग्रह कारण एह लहेवा।
कोई न हार्यां कोई न जीतो, दोई पक्षे छे सुजश विदीतो ॥२१॥
अब ही आयो मुझने जाणो, युद्ध विधि सघली ठाणो।
एम कही मोकलीयो तेहो, पिण राघवसूं आणे नेहो ॥ वन॥ २२॥
मूर्ख मर्म न कांई जाणे, भरत भूपसूं कां अति ताणे।
मुझ सहाय अधिको पामी, जीतण चाहै अयोध्या स्वामी ॥२३॥
सैन्या सघली संू हूं जावूं, मित्र न जाणे तेम करावूं।
एह हणीने पाछो आवूं, भरत भूपनी आण धरावुं ॥ वन ॥२४॥
राम कहे ए सघलो कूडो, तूं ताहरे घर बैठो रुडो।
सुत सहुने देतूं मुझ लारे, ज्यूं मुझ कह्यू काम समारे ॥वन॥२५॥
भली कही भाखी नर नाथे. सुत सगला ए दीधा साथे।
'निंद्यावर्त' नगरना पासे, आवी उतरे अति उल्लासे॥ वन ॥२६॥
देवी खेत्र तणी रखवाली, राम प्रत्ये भाखे सुविशाली।
कारज कोई मुझ फरमावो. जे तुमने छे अधिक सुहावो॥वन॥२७॥
कार्य कोई नहीं मुझ तांई देवी कहे ए साचो सांई।
तो पण कांई करी देखावूं, नाम भणो हूं लाज रहाऊं ॥वन॥२८॥
त्रियरूपे ते सघला होई. त्रियनूं राज्य होवे जेम जोई।
राम अने लक्ष्मण दो भाई, स्त्री रूपे पण सुन्दरताई ॥वन॥२९॥

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-कूवड़ाना रूपे रावत० ॥

रामा केरे रूपे राघव, नहीं किणी रे सारे।
नहीं किणीरे मारे. राघव आरती उतारे ॥ टेर ॥
मानूं अहि जिम वेणी गूंथी, चूंदड़ी अङ्गे धारे।
भाल बिंदीने चक्षुकज्जल, दीसे अधिक उदारे ॥ रामा ॥ १ ॥
नवरंग साडो भारी पेरी, पग घूघर घमकारे।
एम अनूपम घर घरणी छवि. कोन लहे तसु पारे ॥ रामा ॥ २ ॥
हाथे टुकड़ा चलि गरणाई. नौवत बजत नगारे।
बाजा अभिनय नृत्यकरंते, मधुस्वर राग उच्चारे ॥ रामा ३

पग पग लाख पसावजदेते, पोलपे आप पधारे ।
प्रतिहार्योनृप आगलआकर, पग लागीने पूकारे ॥ रामा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी,

नारी साथे लीयेरे लडाई, राजाजीनी एह लघुताई ॥
तिण हीमे त्रिय आगे हारे, ते अपजश पामे जग सारे ॥ वन ३० ॥
महिधरे एसैन्याभेजी, संग्रामे ए शूर सतेजी ॥
द्वार पालेजई वातशुणावी, अतिवीर्य नृपनेरीस अणावी ॥ वन. ३१ ॥

दोहा- 'महीधर तो मानीजतो, रचिते उलटी रीत ॥
तुझ ऊपर करवा तुरत, मेली नारी अनीत ॥ १ ॥
पोल ऊपर तेपाधरी, आय ऊभीछे अत्र ॥
रीस ल्याय भूपतिकहे, ताडो जाई तत्र ॥ २ ॥

ढाल मुलगी-

भरत' भूपनेहूं साधसूं, सुजश घणो वसुधा वाधसूं ॥
त्रियसैन्याए पाछीभेजो मन्दिर नो धूर देख्यो चेजो ॥ वन ३२ ॥
एटले एक कहे नर फांसो, महीधरेए कीधोहासो ॥
वैश्वानर जेमर्घी मीचाणो, रोमे रोमे रायतपाणो ॥ वन. ३३ ॥
रामादिक त्रियसैन्या पूरी, आवी गई नृप द्वार सनूरी ॥
राय कहे काढो गलेमाही, आया शूरा सुभट संवाही ॥ वन ३४ ॥

ढाल दीपक तर्ज पूर्ववत-

सुनत सुभट तब मांथ शर आया, बोलत विना विचारे ॥
रे रे रण्डे ? यहांक्यो आई, हट जावो थे बारे ॥ रामा ॥ ५ ॥
सुनी वेसी रघु नाम पयम्पे सुणजो सब सिरदारे ॥
तुम नृपने नारी ज्यूं जाणी, 'महीधर' राय हमारे ॥ रामा ॥ ६ ॥
तिणसे म्हा सैना कर भेजी, एम कही शरधारे ॥
हम से जो तुम रार करोगे, तो पहुंचाऊं जमद्वारे ॥ रामा ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

नारी ल्हडे नरनी वरनी की, 'अटल' टन्डीने नहीं पडे फीकी ।
द्वार्भानथो थांभी ऊठावे, हलधर हर्षे मार मचावे ॥ वन ॥ ३५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पूर्ववत्—

राघव धनु टंकार करीने, सुभटने तामनसारे।
धड २ धूजत जनधवआगे वात कहैं विस्तारे॥ रामा॥ ८॥
त्रिष सैना दे मार गजबकी, इण आगे सवहारे।
ज्यूं वजे ज्यूं निकटजआवे, तुम ची फौज संहारे। रामा॥ ९॥

ढाल मूलखी—

भाग्या लोकन लागी वारो, राजाजी हुवो असवारो।
आवे खांडोकर सम्भाली, लक्ष्मण' जी ए लीधो उदाली॥वन३६॥
केशग्रही ने बांध्यो गाढो, लक्ष्मण' नो मन हुवो ठाढो।
भरत भूपसूं मांडो आडा, गवरावो ए सुजश पवाड़ा। वन ३७॥

ढाल मूलगी क्षेपक—

घीस कर लावे है वारे, रामके चरणांहीपारे, लक्ष्मणकहै भरत चुंमारे।
भरतसम राजा नहीं दूजो, उन्हींका पगल्या नित पूजो।सत्य६४॥

ढाल मूलगी

सीता ए बांध्यो छोडायो, गहिले वांदी गुमान गमायो।
खेत्र देवी संकोची माया, जे जिमया तेतिमही कराया॥वन ३८॥
राम रु लक्ष्मण दो ही दीठा, राजा लोयण अमिय पइठा।
पगे लागीने नरवरबोले, अवरन कोई प्रभुजी तुमतोले। वन ३९॥
अष्टापद जेम मृणीयो आगे, उदकी१ उदकीने पग मागे।
तेम मुझ मांही एहिज वीती, शी चतकार२ ए भाखूं छीती। वन ४०
लाज गई निलज्जि कहाणो, लोको मांहैं लुण्ड३ कहाणो।
प्रगट पगभव३ एह सहाणो, चौर अन्यायी जेमग्रहाणो।वन४१॥
जलथी अलगो कोधो माछो, पाणी मांहैं नावे पाछो।
तड़प तड़प करतो अति तेवे, पापी कुनरियो ने नचिजीवे।वन४२॥
आंगलिये देखायो कुहलो, आपे आप मरे मनदूहलो।
दिन २ प्रत्ये नो जावे गलतो, लेई अपमान नचावे बलतो॥४३॥
नालेर जेम गल्योपाणी, एह सहिनाणी मानि मन आणी।

१ उद्धली-उद्धलीने। २ चाव। ३ गन। ४ पागल।

वाडी१ तीनकरो पासलो राखी, कोन शके तेहनो जलचाखी ।वन४४
मानगया निपटाईआया, साधु नी सेवा न सजाया ।
भाई पण जेहनाछे दीणा, परियण छे परदेशां खीणा । वन ४५॥
यौवन गयूं बूढापो भराणूं, तेहनो तो संयम नूं सराणूं ।
घणूं घणेरो कांई भाखूं, अब हूं म्हारा मननी राखूं ॥ वन ॥४६॥
राज्य तजीने संयम पालूं, जश मेलाणूं फरी अजवालूं ।
राम कहे तूं भरत सरीखो, राज्य करो हम बोल परीखो ॥ ४७ ॥
'अतिवीर्यनी' एह अधिकाई, विजयरथे थापी ठकुराई ।
'सिंहगुरु' पासे संयम लीधो, समता रूप सुधारस पीधो ॥४८॥
'विजयरथ' भगिनी सुविशाला, लक्ष्मण ने दीधी 'रतिमाला' ॥
'विजयसुन्दरी' बीजी भगिनी, 'भरत' भणी दीधी शुभ लगिनी।४९।
भरत भूपनी सेवा साधी, निज घर आयो नृप आराधी ।
'राम' 'विजयपुर' चलि आया, वनमालाने अधिक सुहाया॥५०॥
सत्तावीशमीं ढाल सुढाली, भरत भूपनी आरति टाली ।
'केशराज' कहे सारे काम, सोही सहोदर जग अभिराम ॥ ५१ ॥

दोहा (धनाश्री रागे)

महीधरने रे पूछके, राम चाल्या उजाम ।
लक्ष्मणजी सूं वीनवे, सावनमाला नाम ॥ १ ॥
प्राणदान दातारतूं, अबक्यां तजे निराश ।
माखे पूर्ण विलोचना, करे घणूं अरदास ॥ २ ॥
विवाह करी सुविशेषथी, मुझने लीजे लार ।
वनवासे साथिसूं रहूं, होई खिजमतदार ॥ ३ ॥
लक्ष्मण भाखे भामिनी, ए अवसर नहीं कोय ।
झूठो हठ नवि कीजीये हैये विमासी जोय ॥ ४ ॥
जब फिरी मन्दिर आवसूं, सेवीने वनवास ।
बोल हमारो छे सही, पहोंचाविस तुझ आस ॥ ५ ॥

१ ढाल, ...

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज–पानीड़ो भरवादे
प्रिय ! मत करला इन्कार, संग में चालण दो ॥ टेर ॥
पिया विना मैं घर नहीं रहसूं, प्राण वल्लभ सङ्ग सुख दुःख सहसूं।
मैं रहसूं प्रियतम लार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ १ ॥
महल अटारी वैभव सारा, तुम विन परिकर लागत खारा।
सूना सब संसार ॥ सङ्ग मे चालण दो ॥ २ ॥
बड़े कठिन से दर्शन पाया, आजही आपने छेह दिखाया।
वाहा वाहा आपको प्यार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ३ ॥
निशदिन मुझको विरह सतासी, ओलूं मोहन मूर्ति की आसी।
हिय उमटे अनंग अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ४ ॥
रातको नींदन भोजन भावे, तुम विन जियडो अति अकुलावे।
आवे दुःख अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ५ ॥
नवली सनेही किम छिटकावो, जरान करुणा दिलमें लावो।
करलो न्याव अवार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ६ ॥
जो मुझको पियु संगन लेसो, निराधार यहांपर तजदेसो।
मैं मरसूं खाय कटार ॥ संगमें चालण दो ॥ ७ ॥

(लक्ष्मणोवाच)

ढाल क्षेपक तर्ज–मीठो खरबूजो मुनि श्रीरूपचन्द्रजी म० कृत
सुनो सुलक्षणी नार प्यार धर यहां ही रहीजो हो, हठ मत कीजो हो ॥ टेर ॥
वनवासे संग चालण कीये, भूल नाम मत लीजो हो।
कथन हमारो मान आन, जिनवरकी वहीजो हो ॥ हठ ॥ १ ॥
पाछो वेगो आवूं प्यारी, सोच जरामत कीजो हो।
रूप कहै शुद्ध न्याय नीतिमग, मत तज दीजो हो ॥ हठ ॥ २ ॥

दोहा–सम विना जावा न दूं, रयणी भोजन पाप ॥
नावो तो तुमने अछे, मानी लीयो प्रभु आप ॥ ६ ॥

ढाल छलावीरानी तर्ज–सुधारस मुरली बाजे।
रामको सुयश घणो, स्वर्ग मृत्यु पाताल, रामको सुजश घणो ॥टे०

पाछली राते आगे चालया, ओलंध्यो वन एक।
'खेमाजल' पामी पूरी रे, दीसे शोभा अनेक ॥ राम ॥ १ ॥
ऊतरीया उद्यानमें रे, 'लक्ष्मण' वनमें जाय।
लेई आयो फल शागजी रे, पाणी पात्र भराय ॥ राम ॥ २ ॥
संस्कार सीता कियो रे आरोग्या उत्साहै।
राम तणा आदेश थीरे, 'लक्ष्मण' गयो पुरमां है ॥ राम ॥ ३ ॥
श्रवण सुणी उद्घोषणारे, सहेजे शक्ति प्रहार।
परणे पुत्री रायनीरे, नहीं सन्देह लगार ॥ राम ४ ॥
पुरुष एक तब पूछीयोरे, एछे किस्यों विचार।
शत्रु दमन राजा भलोरे, राजानों सिरदार ॥ राम ५ ॥
'कन्यका देवी' तेहनेरे, पुत्रीतो प्रधान।
'जित पद्मा' छे नामथीरे, प्रत्यक्ष पद्मा थान। राम ॥ ६ ॥
वरनू बल सुविचारवारे, मांड्यो एह उपाय।
आज लगे कोई नाबोयोरे, जेहथी काम सराय ॥ राम ७ ॥
एम सुणीने आवीयो रे, परखदा मांही देव।
नृप पूछे तूं कोण छे रे, ? तब बोले ततखेव ॥ राम ॥ ८ ॥
भरत भूपनू दूत छूं रे. जावूं करवा काज।
परणूं पुत्री ताहरी रे, इहां हूं आयो आज ॥ राम ॥ ९ ॥

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म. कृत. ढाल चेपक हां सगीजी पेड़ा भावे-
हां वान्दे यूं लिछमन प्यारो, अछूं दूत में भरत राजारो।
जातो दूजे गांव देखन आयो पुर थारो रे ॥ राम ॥ १ ॥
डंड रो सुन दूत आयो राजा ! नारी विन दुःख पाऊ जाजा।
करतां रसवर्ती धूम्र लग्यां तन बन गयो कालो रे ॥ बोले ॥ २ ॥
मेरे काम में हो रही देरी, झट परणा दे कन्या तेरी।
'रूप' देखले अनुपम मेरो इसो न दूजा रो रे ॥ बोले ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी
शक्ति घात ए. साहरो रे, कहे तू सहिस केम ?।
एक नहीं पण पंचजोरे, सहू सही सूं एम ॥ राम ॥ १० ॥

जितपद्मा अनुरागिणी रे, होई गई ततकाल।
लक्ष्मण ने अविलोक तांरे, राची रूप रसाल॥ राम॥ ११॥
पुत्री वरजे बापने रे, वह्यूं न माने रंच।
ख्याल रोप दो साचवें रे, मूके शक्ति सू पंच॥ राम॥ १२॥
दो हाथों दो बांह मेरे, एक सुदन्तों जोय।
साही लीधी शक्तिजी रे, अजब तमासो होय॥ राम॥ १३॥
जित पदमा हरखी खरी रे, पहिरावे वरमाल।
राय कहै परणो सही रे, ए कुंवरी सुविशाल॥ राम॥ १४॥
लक्ष्मण कहै उद्यान में रे. बैठा छे श्री राम।
हूं छूं सेवक तेहनो रे, करूं बताव्यू काम॥ राम॥ १५॥
'राम' 'सुलक्ष्मण' जाणीयारे, धसि गयो तिहां राय।
लेई आयो रामने रे, परम महा सुख थाय॥ राम॥ १६॥
भक्ति भाव पोषे घणूं रे, पूज्या प्रभुना पाय।
तो पण आगे चालीया रे, राजा ने समझाय॥ राम॥ १७॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूपति करता है अरजी, कन्या को व्याहो हित धरजी, उत्तर में बोल्या रघुवरजी। पाछा मे अयोध्या जासां, व्याव कर कन्या ले जासां॥ सत्यव्रत पालो॥ ६५॥

ढाल मूलगी—

वंशस्थल गिरि ऊपरे रे, 'वंशस्थल' पुरी देखी।
लोक भयानक देखनेरे, पूछ्यू पुरुष विशेषी॥ राम॥ १८॥
सो भाखे प्रभुजी सुणो रे, रात्रे अचम्भो थाय।
ध्वनी ऊठे छे आकरी रे, ते लोको न खमाय॥ राम॥ १९॥
रात्रे अनेरीजायगेरे, नासी जाए लोक।
प्रातः हुवां घर आवही रे, कष्ट तणो ए जोग॥ राम॥ २०॥
रामे लक्ष्मण मोकल्यो रे, जोई आवो एह।
काउसग्गमां है मुनि रे. दीठा दो गुण गेह॥ राम॥ २१॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया रे, नगन्ती ही विधि भाषी।

वीणा वजावे रामजी रे, यक्ष थकी जे लाधी ॥ राम ॥ २२ ॥
तान मान अनुमान सूं रे, राग तणू आलाप ।
लक्ष्मण लीलाए करे रे, अवसर जणी आप ॥ राम ॥ २३ ॥
रात जगावे रंग सूं रे, होई रह्यो विनोद ।
साधु तणी सेवा करे रे, पामे अधिक प्रमोद ॥ राम ॥ २४ ॥
'अनलप्रभ' सुर आवीयो रे, विकूर्वी वैताल ।
साधु ने संतापवारे. जाणे कोप्यो काल ॥ राम ॥ २५ ॥
'सीता' ऋषि पासवती रे, 'राम' सु लक्ष्मण दोई ।
जेटले आवे सामुहारे, नासी गयो सुरसोई ॥ राम ॥ २६ ॥
मुनिवर हुआ केवलीरे, आवे सुरवर कोडी ।
केवल महिमा साचवे रे, पायनमे कर जोडी ॥ राम ॥ २७ ॥
राम भणे प्रभुजी कहो रे, उपद्रव नूं ए हेत ।
'कुल भूषण' कहे केवली रे, निसुणो सहु सचेत ॥ राम ॥ २८ ॥
नगरी नामे पद्मनी रे, विजय पर्वत भूप ।
'अमृत स्वरं मति वन्तजीरे, एक सुदूत अनूप ॥ राम ॥ २९ ॥
'उपयोगा' तस कमिनीरे, नन्दन दोई उदार ।
उदित मुदित गुण आगलारे, कुल केरा साधार ॥ राम ॥ ३० ॥
दूत तणो इक मंत्रजी रे. ब्राह्मण छे वसुभूति ।
आसक्त उपयोगातणोरे, वात लिखी ए दूत ॥ राम ॥ ३१ ॥
मारी ने व्यभिचारिणीरे, 'अमृत स्वर' ने मारि ।
निष्कण्टक होई स्वरी रे, मान्यू सुख संसारि ॥ राम ॥ ३२ ॥
नृप आदेशे दूत विदेरे, चाल्यो मारग दूर ।
ब्राह्मण पण साथे लाग्यो रे, दूत हण्यो वलपूर ॥ राम ॥ ३३ ॥
ब्राह्मण घर आवीने मारवे रे, मुझने पाछो वाली ।
कारज करवा वेगस्जी, आप गयो सो चाली ॥ राम ॥ ३४ ॥
'उपयोगाने' दान जणावी, मन्त्र कर्यु ते सोई ।
पुत्र हण्या थी राग आपणो, कीजे तो सुख होई ॥ राम ॥ ३५ ॥

एह मतो तो ब्राह्मण केरो, रहस्य पणा थी जाणी ।
'उदित' 'मुदित' दो भाईया रे, अमरख अधिको आणि ॥राम॥३६॥
'उदिते' ब्राह्मण मारियो रे. आयो उदय कुशील ।
इपत 'नलपल्ली' विषेरे, सोमरी हुवो भील ॥ राम ॥ ३७ ॥
चारित्र लीधो रायजी रे. उदित मुदित पण संग ।
अप्रति बंध पणे तिहां रे, चाल्या ऋषि उच्छ रंग ॥ राम ॥ ३८ ॥
विचे मिल्यो सो भीलडो रे, मारे तब अणगार ।
छोडाव्या पल्ली पती रे मान लीयो उपकार ॥ राम ॥ ३९ ॥
पल्लीपति हु तो पंखीयो रे, ए हता करसण कार ।
पारधीए पंखी ग्रह्यो रे. हुओ मारण हार ॥ राम ॥ ४० ॥
इणे तब छोडावीयो रे, पंखी थयो पल्लीश ।
कीधो लाभे आपणडो रे, एतो वीश्वावीश ॥ राम ॥ ४१ ॥
उदित मुदित दो साधुजी रे, आराधी संथार ।
महाशुक्रना देवता रे, पाम्या जय जय कार ॥ राम ॥ ४२ ॥
ढाल भली अठावीशमी रे, प्रश्नतणो अधिकार ।
'केशराज' पूर्वतणो रे, साधु वदे ते सार ॥ राम ॥ ४३ ॥

दोहा—(मल्हार रागे)

ब्राह्मण तो वसुभूतिनो, जीव भमी भवमां हे ।
माणस थई तापस तणू, पामी मुओ ते ग्रा हे ॥ १ ॥
देव हुवो पण ज्योतिषी. 'धूमकेतु' अभिधान ।
मिथ्या मतिनो वाहिओ, आणे अति अभिमान ॥ २ ॥
'उदित' 'मुदित' ना जीवते. सुरपद नजी आवन्त ।
शेष पुण्यना प्रेरिया, मनुष्य गति पावन्त ॥ ३ ॥
'अरिष्ट' पुरीनो राजीयो. 'प्रियचंद' भूपाल ।
'पोमावे' राणी उदरे, ऊपन्या सुत सुविशाल ॥ ४ ॥
'रत्नसुरथ' रलियामणो, 'चित्रसुरथ' सुविशाल ।
नामथकी अति पर पड़ा. सुन्दरने सुकुमाल ॥ ५ ॥

वीणा वजावे रामजी रे, यक्ष थकी जे लाधी ॥ राम ॥ २२ ॥
तान मान अनुमान सूं रे, राग तणू आलाप ।
लक्ष्मण लीलाए करे रे, अवसर जणी आप ॥ राम ॥ २३ ॥
रात जगावे रंग सूं रे, होई रह्यो विनोद ।
साधु तणी सेवा करे रे, पामे अधिक प्रमोद ॥ राम ॥ २४ ॥
'अनलप्रभ' सुर आवीयो रे, विकूर्वी वैताल ।
साधु ने संतापवारे. जाणे कोप्यो काल ॥ राम ॥ २५ ॥
'सीता' ऋषि पारवती रे, 'राम' सु लक्ष्मण दोई ।
जेटले आवे सामुहारे, नासी गयो सुरसोई ॥ राम ॥ २६ ॥
मुनिवर हुआ केवलीरे, आवे सुरवर कोडी ।
केवल महिमा साचवे रे, पायनमे कर जोडी ॥ राम ॥ २७ ॥
राम भणे प्रभुजी कहो रे, उपद्रव नूं ए हेत ।
'कुल भूषण' कहै केवली रे, निसुणो सहु सचेत ॥ राम ॥ २८ ॥
नगरी नामे पदमनी रे, विजय पर्वत भूप ।
'अमृत स्वर' मति चन्तजीरे, एक सुदूत अनूप ॥ राम ॥ २९ ॥
'उपयोगा' तस कमिनीरे, नन्दन दोई उदार ।
उदित मुदित गुण आगलारे, कुल केरा साधार ॥ राम ॥ ३० ॥
दूत तणो इक मंत्रजी रे. ब्राह्मण छे वसुभूति ।
आशक उपयोगानणोरे, वात लिखी ए दूत ॥ राम ॥ ३१ ॥
माची ने व्यभिचारिणीरे, 'अमृत स्वर' ने मारि ।
निष्कण्टक होई खरी रे, मान्यू सुख संसारि ॥ राम ॥ ३२ ॥
नृप आदेशे दूत विषेरं, चाल्यो मारग दूर ।
ब्राह्मण पण साथे लाग्यो रे, दूत हण्यो वलपूर ॥ राम ॥ ३३ ॥
ब्राह्मण घर आवीने भाखे रे, मुझने पाछो वाली ।
कारज करवा वेगसूजी, आप गयो सो चाली ॥ राम ॥ ३४ ॥
'उपयोगाने' वात जणावी, भलू कर्यु ते सोई ।
पुत्र हण्या थी राग आपणो, कीजे तो सुख होई ॥ राम ॥ ३५ ॥

एह मतो तो ब्राह्मण केरो, रहस्य पणा थी जाणी ।
'उदित' 'मुदित' दो भाईया रे, अमरख अधिको आणि ॥राम॥३६॥
'उदिते' ब्राह्मण मारियो रे. आयो उदय कुशील ।
इपत 'नलपल्ली' विपेरे, सोमरी हुवो भील ॥ राम ॥ ३७ ॥
चारित्र लीधो रायजी रे. उदित मुदित पण संग ।
अप्रति बंध पणे तिहां रे, चाल्या ऋषि उच्छ रंग ॥ राम ॥ ३८ ॥
विचे मिल्यो सो भीलडो रे, मारे तव अणगार ।
छोडाव्या पल्ली पती रे. मान लीयो उपकार ॥ राम ॥ ३९ ॥
पल्लीपति हु तो पंखीयो रे, ए हता करसण कार ।
पारधीए पंखी ग्रह्यो रे. हुओ मारण हार ॥ राम ॥ ४० ॥
इणे तव छोडावीयो रे, पंखी थयो पल्लीश ।
कीधो लाभे आपणडो रे, एतो वीश्वावीश ॥ राम ॥ ४१ ॥
उदित मुदित दो साधुजी रे, आराधी संथार ।
महाशुक्रना देवता रे, पाम्या जय जय कार ॥ राम ॥ ४२ ॥
ढाल भली अठावीशमीरे, प्रश्नतणो अधिकार ।
'केशराज' पूर्वतणो रे, साधु वदे ते सार ॥ राम ॥ ४३ ॥

दोहा—(मल्हार रागे)

ब्राह्मण तो वसुभूतिनो, जीव भमी भवमां हे ।
माणस थई तापस तणू, पामी मुओ ते ग्राहे ॥ १ ॥
देव हुवो पण ज्योतिपी. 'धूमकेतु' अभिधान ।
मिथ्या मतिनो वाहिओ, आणे अति अभिमान ॥ २ ॥
'उदित' 'मुदित' ना जीवते. सुरपद तजी आवन्त ।
शेप पुण्यना प्रेरिया, मनुष्य गति पावन्त ॥ ३ ॥
'अरिष्ठ' पुरीनो राजीयो, 'प्रियचंद' भूपाल ।
'पोमावे' राणी उदरें, ऊपन्या सुत सुविशाल ॥ ४ ॥
'रत्नसुरथ' रलियामणो, 'चित्रसुरथ' सुविशाल ।
नामथकी अति पर वडा, सुन्दरने सुकुमाल ॥ ५ ॥

'धूमकेतु' ना जीवनो, उणही घरे अवतार ।
अपर त्रिया उदर ऊपन्यो, नामे 'अनुरद्ध' सार ॥ ६ ॥

ढाल गुणतीशवी तर्ज–जगन्नाथजी रावलो आशपूरे ॥

उध्दत अधिक सो नन्द हुओ, वडा बंधवथीरे चालन्त जुओ ।
पूर्वभव वैर नयणां जणावे, महारीसनो हेतु आणी पावे ॥ १ ॥
'रत्नसुरथ' नंदने राज्य दीधो, दोई अपर लघुनंद युवराज कीधो॥
पट् दिवसनो अणशण साधी सारो, नृपदेव हुवो कियो धन्य जन्मारो ॥ २ ॥ एक भूपने 'श्रीप्रभा' थी कुंवरी, दीधी रायने रंगसूं जाणी प्यारी ॥ 'अनुद्धर' युवरायथी वेटी मांगी, गई और ने तेहने कर न लागी ॥ ३ ॥ तब रीससूं रायना गाम मारे, करी मृत्यो सोर तो देशमारे ॥ चढ्यो रायजी रावलो लेई रूडो, सोतो बांधी आण्यो कलिकाल कूडो ॥ ४ ॥ विडम्बीपने बंधवा मेली दीधो, जई तापमां पासे व्रत नियम लीधो ॥ त्रिय संगते निष्फल योग कीधो, विषया विष अमृत जाणी पीधो ॥ ५ ॥ भवमांहे भम्यो चिरकाल सोई, लेई नर गति तापस फेरी होई ॥ करी बाल१ तप ज्योतीषीने गणेवो, सोतो एह 'अनूलप्रभ' नामदेवो ॥ ६ ॥ 'रत्नसुरथ' चित्रसुरथ' दोई भाई, ग्रही संजम वारमे स्वर्ग जाई ॥ 'महाबल' नैं अतिबल नाम पाया, हलुकर्मी या भव तणे छेह आया ॥ ७ ॥ हिवे नारी 'विमला' तणे उदरे आवी, तेणे सुस्वरे सोहती अधिक पावी ॥ 'कुलभूषण' ए कुल कुंवर एहो, एह 'देशभूषण' शुभवान देहो ॥ ८ ॥ उपाध्याय 'वरघोष' पासे पढाया, असे वरस तो यार तमघरे रहाया ॥ जब तेरमो वर्ष आवी सुहावे, नृप पासनी पण्डित लेई आवे ॥ ९ ॥ तब गोख बैठी थकी इक कुंवरी, अविलोकतां जाणीऊं एह अमरी ॥ तब दोई भाई तणो राग होवे, मुखमाहमू सामही वार जोवे ॥ १० ॥ तब चालीके आवीया राय पासे, कन्या देखतां राय पाम्यो हुल्लासे ॥

१ अज्ञान तप

तब पण्डित पूजीया शीषनामी, निजमन्दिरे आवीया हर्ष पामी।११। पगेलागीने माय सेवा विशेषी, ते कुंवरी मायने पास देखी ॥ तब पूछीयूं मायने कौन कुंवारी !, तब मांय भाखे तुम बहिन प्यारी ॥१२॥ गुरु मन्दिरे वास हूतो तुम्हारो, नब ऊपजी एह ए साच धारो॥ चित्त चित्तवे वंछीयो बहिनभोग, एम जाणी हम आदर्यो जोग ॥१३॥ तप तीव्र करन्तां एह गिरिही आया, हमे काउसग्गे रह्या तजीयकाया ॥ नहीं आशज जीववे डर न मरणे, दिनरात रहेवूं अरिहन्त शरणे ॥ १४ ॥ पिता हम तणो आणीयो दुःख गाढो, समजावतां किणही नविथाय ठाढो ॥ मुओ अण शण ग्रहीय सो गरुड इसो, 'महालोचन' सुरथयो, अति जगीसो॥१५॥ उपसर्ग हमारो तेणे ज्ञान लखीयो, इहां आवायो सोह तो प्रेम पखीयो ॥ मुनि 'अनन्तवीर्य' ने शुद्ध ज्ञानो, करण ओच्छव देव जाये प्रधानो ॥ १६ ॥ 'अनलप्रभ' देव गुरु देव सोही, सुरसाथे चाली गया ख्याल मोही॥ सुर मानव परखदा मांहे भाखे, दया धर्मज केवली कहिय दाखे ॥ १७॥ तव 'मुनिसुव्रत' मुनि पुछन्त शीष्ये, तुम पाछे केवली कौण दीसे? ॥ 'कुलभूषण' 'देशभूषण' दोई भाई, होसे केवली एह दीधा बताई ॥१८॥ 'अनलप्रभ' एह निसुणीय सारी, तवही थकी पूठ लाग्यो हमारी ॥ कांई एक मिथ्यात्वनो अधिक वाहीयो, कांई एक पूर्व वैर उमाहियो॥१९॥ दिन चार हुवा उपसर्ग करतां, एतो पाप भण्डार भरपूर भरतां ॥ तुम आवीया सो गयो देव नामी, हम ऊपज्यो ज्ञान सव जग प्रकाशी ॥ २० ॥ 'महालोचन' पाम्यो अधिक तोषो, श्री 'राम' जी स्युं करे प्रेम पोषो ॥ गुर वांछती प्रत्युपकार करणो, प्रभु भाखे तुरत भण्डार धरणो ॥ २१ ॥ 'वंशस्थल' पुर पति खबर पामे, श्री 'राम' लक्ष्मण प्रत्ये शीष नामे ॥ ध्वनि कष्ट उपद्रव एह टल्यो, किसो भय नवि आवसे फेरी वल्यो ॥ २२ ॥ श्री राम आदेशो कियो प्रसादे, ध्वज कलशने गगनसूं करेय वादे ॥ श्री 'राम–

गिरि' गिरि तणो नाम थाप्यू. कीयो उच्छव अथिया अर्थ आप्यू ॥ २३ ॥ सुरपतिने पूछिने देव आगे, जव चलीया लोक बहु पूठे लागे ॥ बोलावीया लोक सन्मानदेई, प्रभु चालिया लोक चित्त साथ लेई ॥ २४ ॥ उदण्ड अति 'दण्डकारण्य' भाखी, तिहां आवीया चित्त अडर राखी ॥ गिरिगुफा गेह समतोल लेखी, तिहां वास कीधो कई दिन विशेषी ॥ २५ ॥ अनेरे दहाड़े जब जिमण वेला, दोय चारण साधुजी पुण्य मेला ॥ 'त्रिगुप्त' 'सुगुप्त' नामे विराजे, आया आंगणे सूजता अन्न काजे ॥ २६ ॥ द्वौ मास उपवासीया दोई साधो, घणे पुण्यने प्रेरणे दर्श लाधो ॥ श्री 'राम' जी 'लक्ष्मण' सतीय सीता, भला श्रावक विश्व मांहे विदिता ॥२७॥ भलि भक्ति सूं साधुना चरण वन्दे, भव सन्तति सयलना दुःख निकन्दे ॥ सतीए निज हाथसूं हर्ष आणी, प्रति लाभीयो प्रासुक भात पाणी ॥ २८ ॥ दुःखवारणो पारणो कीध जामो, भलां पुष्प अरु वस्त्र वरसंततामो ॥ रत्न गंधाम्बुनी वृष्टि हुई, उद्घोषणा देवनी हुई जुई ॥ २९ ॥ पांच सुदिव्य हुवा वखाण्या भला दायका आज दिन सफल जाण्या ॥ एतो ढाल गुणतीसवीं जगत साची, 'केशराज' भाखे सदा वात साची ॥ ३० ॥

दोहा (रामग्री रागे)

रत्नजटी रलियामणो, ' कम्बूद्वीप ' दयाल ।
खेचर सुरस्थ अश्वसूं, आप्योने[१] सुविशाल ॥ १ ॥
गन्धाम्बूनी वृष्टिनो, गन्धवणो विस्तार ।
विस्तरीयो छे दश दिशे, सुरभि[२] महासुखकार ॥ २ ॥
'गन्धाभिध' इक पंखीयो रोगी एहवूं नाम ।
तरुथी उतरी आवीयो, गन्ध वासना पाम ॥ ३ ॥
दर्शन दीठो साधुनो, जाति स्मरण लाध ।
मूर्छाथी धरणी पड्यो ते पंखी साबाध ॥ ४ ॥
सीताए सुमनो कीयो, वन्दे ऋषिना पाय ।

१ रत्नजटी अने वे देवो ए राम ने अश्व सहित रथ आप्यो। २ सुवास।

ऋषिजी चरणे स्फर्शियो, ताम निरोगी थाय ॥ ५ ॥

ढाल च्रेपक तर्ज–कव्वाली–कर्ता धूलचन्दजी सुराणा

लगे जो रंज चरणों की, अगर तन वाय भी फरसे।
हुवे निरोगही काया, मुनिश्वर होतो ऐसा हो ॥ १ ॥ टेर ॥
मल–मूत्र–लगेजो मेल, रोम–नख–केश ही लगते।
मिटे सब जीवकी व्याधी, मुनिश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
ज्ञान–का दान ही देकर, मिटाओ तप्त दुनियों की।
हटावे कर्म–वैरी को ॥ मुनि० ॥ ३ ॥
काम––रु क्रोध–नहीं तनमें, राग–रु द्वेप––नहीं मन में।
मगन रहे सदा ही वनमें ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

— दोहा —

पांख हुई सोना समी, चंचू विद्रुम भाव[१]।
नाना रत्न सुमय तनु, पद्मराग[२] सम पाव ॥ ६ ॥
रत्नांकुरनी श्रेणीसम, माथे जटा सुहाय।
नाम 'जटायु' पंखीयो, ते दिन थी कहीवाय ॥ ७ ॥

—(ढाल तीशवीं)—

—तर्ज धन्य २ शीलवन्त नर नारी—

रे भाई ! सेवो साधु सयाणा, हेत युक्ति भल भाव बतावी, तार्या जीव अयाणारे ॥ टेर ॥
'दृढ प्रहारी' दृढ पणेरे, मेले आय प्रहारो।
परमारथ पदपाम्या प्रत्यक्ष, साधु तणा उपकारोरे ॥ भाई० ॥१॥
'चिलायती' दांदीनो बेटो, नाम 'चिलायती पूतो'।
साधु संगत कारज सार्यो, कीधी दूर कुछतोरे ॥ भाई० ॥ २ ॥
'अर्जुन माली' मारी मांरे, नर षट् एक स्त्र नारी ॥
खट्मासा लग एमकरन्ता, लीधो कारज सारीरे ॥ भाई० ॥ ३ ॥
'परदेशी' परभव नहीं माने, पाप करे अति पापी ॥
'केशी' गुरु समजावी लीधो, सुमति सदा स्थिर थापीरे ॥भाई० ॥४॥

१ परवालां। २ ए नामनो मणी।

'राघव' पूछे साधु संघाते, ए गृद्ध पंखी देखो ॥
शान्त होई तुम सेवा साधे, इचरज एह विशेषोरे ॥ भाई० ॥५॥
भगवन् ! भारी देह विकारी, रोगी में सिरदारो ॥
कंचन वर्णी काया होई, एछे कवण विचारोरे ॥ भाई० ॥६॥
साधु 'सु गुप्त' कहे सुण राजा, चरित्र तणो विस्तारो ॥
'कुम्भकारकट' पुरए हुतो, 'दण्डक राय उदारोरे ॥ भाई० ॥७॥
'सावत्थी' नगरीनो राजा, 'जितशत्रु' सुखकारो ॥
राणी धारणी ए सुतजायो, 'स्कन्दक' नाम कुंवारोरे ॥भाई० ॥८॥
पुत्री 'पुरन्दरयशा' ते, 'दण्डक' ने परणावे ॥
'पालक' ब्राह्मण दूत पणेरं, सावत्थीए आवेरे ॥ भाई० ॥९॥
'जितशत्रु' राजा धर्म परायण, गोष्टी धर्म की भावे।
नास्तिक वादी पाल कनेरं, धर्म कथान सुहावेरे ॥ भाई० ॥१०॥
'स्कन्दक' कुंवरे युक्ते जीत्यो जावे अपूठो नावे ॥
होई रीसाणो निज घर आयो, रहे कुंवरसूं दावेरे ॥ भाई० ॥११॥
'स्कन्दक' कुंवर पांच सयांसुं, 'श्री मुनि सुव्रत' पासे॥
संजम लेई शुद्धोपाले धर्म मार्ग प्रकाशेरे ॥ भाई० ॥१२॥
इक दिन वन्दन प्रभु समझावू, एह मतो चित्त ठाणी ॥
'कुम्भकार' 'कट' नगरे जावा, पूछ्यू प्रभुने आणीरे ॥ भाई० ॥१३॥
प्रभुजी भाखे कांई न राखे, मरणान्तक ए नामो ॥
उपसर्ग उपजतो दीसे, 'स्कन्दक' भाखे तामो रे ॥ भाई० ॥१४॥
हम आराधक हुवा के नाहीं, पुनरपि स्वामी भाखे ॥
तुझ विण सघलाही आराधक, जेमदेखे तेम दाखे ॥ भाई० ॥१५॥
आप विराधक होतां सघला, केरो सीजे कामो ॥
एह विचारी चाल्यो स्कन्दक, पहुंतो तेणे ठामो रे ॥भाई०॥१६॥
'पालक' पापी सुमति परामव, आणे ए अविचारो ॥
साधु सतो सता छे जिहां, गाडे बहु हथियारोरे ॥ भाई ॥ १७ ॥
राजा पासी खबर ते आगे, आवी मुनिवर वन्दे ॥

देशना सांभली निजघर आवे, मन में अति आनन्दे रे ॥ १८ ॥
'पालक' पाप घणेरो पोखे, राजाने सम्भलावे ॥
शालो तुझ मारेवा आयो, ते हथियार देखावेरे ॥ भाई ॥ १९ ॥
राजा वात न कोई विचारी, एकान्ते रीसाणो ॥
'पालक' मंत्रीने मुनिसूंप्या, करजो जेम तुम जाणोरे ॥भाई॥२०॥
पालक शीघ्र पणाथी ते म्होटो, मांडे यंत्रे[1] जेवारे ॥
'स्कन्दक' दृष्ठे साधु एके को, पीले तेह तेवारे रे ॥ भाई ॥२१॥
निर्यामक तब होई स्कन्दक, आचारजजी आपे ॥
आराधन विधि शुद्ध करावे, अप्पा[2] में मन थापे रे ॥ भाई॥२२॥
श्रेणी क्षपकनी वाटे चढतां, पामी केवल नाणो ॥
अष्ट महागुण केरा नायक, पहूंता अविचल ठाणोरे ॥ भाई ॥२३॥
चार सयां नवाणूं पील्या, एक सुचेलो बालो[3] ॥
एहनूं दुःख मने मत देखाड़े, माने नहीं चाण्डालो रे ॥भाई॥२४॥
बालकने पीलन्तां देखी, नयणे नीर प्रवाहो ॥
सहुनो काज समर्या पाछे, ऊपज्यो रोष अगाहोरे ॥ भाई ॥२५॥
'दण्डक' 'पालक' देश सहुनो, होजो हूं क्षयकारी ॥
पोते छे भवसन्तती तेहथी, कीधूं नियाणूं भारीरे ॥ भाई ॥ २६ ॥
एह नीयाणू कीधां पाछे, पीली नांख्यो सोई ॥
पावईयाने[4] पानो न चढे, एह उखाणो जोई रे ॥ भाई ॥ २७ ॥
वन्हि कुमारो[5] मांही विदितो, देव हुवो ततकालो ॥
पापी पन्थे सहु तिणहीमें, पाप महा अमरालो रे ॥ भाई ॥२८॥
दण्डकी राजा वात सांभली, सोचे तेह अपारो ॥
फिटरे कूडा पालक पापी, कीधो साधु संहारोरे ॥ भाई ॥ २९ ॥
' पुरन्दरयशा' राणी ए, मुझ सालो सुखदाई ॥
साधु तणी पदवी थी म्होटी, पाप कियो ते अथाई रे ॥भाई॥३०॥
राजा चिन्ते संयम लेऊं, मुनिसुव्रत पे जाई ॥

---

१ घाणी । २ आत्मामें । ३ छोटो । ४ नपुंसक । ५ अग्निकुमार ।

एटला मांही अग्नी प्रज्वली, वेला पूगी आई रे ॥ भाई ॥ ३१ ॥
रत्न कम्बल तंतुज पुरन्दर, यशा ए दीधोथो ॥
बहिन तणो मन राखण सारूं, बंधवजी लीधोथो रे ॥भाई॥३२॥
ओ तंतुज रजोहरणो रे, लोही खरड्यो देखो ॥
गद्दन१ एकन्ते लेई चाली, ए आहार विशेषी रे ॥ भाई ॥ ३३ ॥
भार घणे पंखीनी अकुलाणी, चांच थकी अड़चड़ीओ ॥
दैव योगे तब देवी आगे, ओघो तंतुज पड़ियो रे ॥भाई ॥ ३४ ॥
देवी भाई मार्या केरी, जाणी ए महिनाणी ॥
कन्ता ? कांई म्होटा मुनिवर, पील्या घाली घाणी रे । ३५ ॥
शोक करन्तां शासन देवी ए, पापी पुरथी लीधी ।
श्री मुनि सुव्रत पासे मूकी, स्वामी दीक्षा दीधी रे ॥ भाई ॥३६॥
'अग्नीकुंवार' अग्नी विकूर्वी, बाल्या पुरना लोको ।
'दण्डक' राजा 'पालक' पापी, ए कृत कर्म जोगो रे॥भाई॥३७॥
'दण्डकारण्य' तेहिज दिनथी, पुर नवो करि वसाणो ॥
भूंड करतां भूंडू हुवे, रूड़े रूडूं जाणो रे ॥ भाई ॥ ३८ ॥
[illegible]क राजा भवमां भमीयो, दुःख तणी संयोगी ॥
'गीधाभिध' ए पंखी हूवो तोही महातन रोगी रे ॥ भाई ॥३९॥
जाती स्मरण मुज दर्शन थी, उपन्यू एहने आजो ॥
स्पर्शोषधि लब्धी थकी रे, जाणो ए सहु साचो रे ॥ भाई । ४०॥
रोग गयो निरोगीयोरे, रत्नमयीरे शरीरे ॥
श्रावक हूवो साचलोरे, धर्म करे वा धीरेरे ॥ भाई ॥ ४१ ॥
जीवनी घाते फल नवि खाए, रात्री भोजन त्यागे ॥
चालन्ता पच्चखाण कराया, जाण्यो जेहवो रागेरे ॥ भाई० ॥४२॥
'राघवने' रे भोल्लामणी दीधी, रहजो सेवा मांही ॥
स्वामी ने वात्सल्य पणेरे, पुण्य घणेरो प्राहेरे ॥ भाई० ॥४३॥
राम कहे ए माहरे छेरे, तुम वचन थी बाकू ॥

१ पक्षीणी पाताल्यकै संपत्ती ।

सत्य यतीनी पासे रहैसे, चातुर पणेछे चारुरे ॥ भाई० ॥४४॥
एम कहीने ऋषि पांगरीया. उपकारी अणगार ॥
संजम तप करी शोभ तारे, ज्ञान तणा भण्डाररे ॥ भाई० ॥४५॥
देवदीयो रथ जोतरीरे. वैसे 'सीता' 'रामो' ॥
लक्ष्मण होवे सारथी रे, पंखो आगे तामोरे ॥ भाई० ॥४६॥
क्रिडा करतां संचरेरे, प्रबल पुण्य प्रभावो ॥
राम तिहांही अयोध्यारे. मिलीयो एह कहावोरे ॥ भाई० ॥४७॥
ढाल त्रीसमीं में कह्यो रे. पंखी प्रश्न प्रकारोरे ॥
'केशराज' ऋषि वायकमेरे, नहीं मन्देह लगारोरे ॥ भाई० ॥४८॥

दोहा केदारा गोडी रागे—

लंक पयालां राजीयो. खर नामे भूपाल ।
शूर्पनखा१ घर सुन्दरी, सुन्दर रूप रमाल ॥ १ ॥
शुभ वेला सुखकारीया, जाया नन्दन दोय ॥
शम्बुक 'सुन्द' मोहामणा. पाम्या योवन सोय ॥ २ ॥
मांय बाप ने वरजतां, 'दण्डकारण्ये' मांहे ॥
'सूर्यहास' असिसाधवा, 'शम्बुक' थयो उच्छा हे ॥ ३ ॥
हणसुं वर्जन हारने. वचन वदे विकराल ।
अभिमानी माने चढ्यो आय पहूंतो काल ॥ ४ ॥
'कोंचरवा' तीरे अछे, गन्धर्व वंश विशेष ॥
तिहांरही साधन करे, एक मने अकलेश ॥ ५ ॥
एकान्त भूमि शुद्धात्मा, जीतेन्द्रिय ब्रह्मचार ॥
पग बांधी बड मारसुं, अधो मुखो सुविचार ॥ ६ ॥
वर्ष बार दिन सातसुं. विद्या साधन सार ॥
प्रारंभ्यो परगटपणे, किस्यूं करे करतार ॥ ७ ॥
वरस बार बोली गयां. ऊपरनो दिन चार ॥
सिद्धि की सिद्धि हुवे, वरसे विद्याधार ॥ ८ ॥

---
१ चन्द्रनखा इति पाठान्तरे ।

तेजमहा सूरज तणो, गन्धर्व मांहीं ताम ॥
विस्तर्यो दीसे घणू, कुंवर हरष्यो जाम ॥ ९ ॥
क्रीडा कारण आवीयो, 'लक्ष्मण' मन उल्हास ॥
'सूर्यहास' असि देखीयो, जाणे सूर्य प्रकाश ॥ १० ॥
खांडो लीधो हाथ में, काढी सर्मे सोई ॥
अपूर्व शस्त्र विलोकतां, क्षत्री ने सुखहोई ॥ ११ ॥
तास परीक्षा कारणे, आतुर हुवो ईश ॥
वंशजाल में वाहीयो,१ शम्बुक केरो शीष ॥ १२ ॥
उतरि पड़ीयो आगले, चित्त सूं चिन्तवेराय ॥
निष्कारण ए मारीयो, फरी फरी ने पछताय ॥ १३ ॥

क्षेपक-दोहा

लक्ष्मण मन विलखोथयो, लखीयो नहीं लिगार ॥
पकियो फल पूरो पड्यो, रखियो नहीं रखवाल ॥ १४ ॥

स्वामीजी श्री रामचन्दजी कृत-ढाल क्षेपक तर्ज असी रुपैया लो कलदार

कोई नर मरियो, शिर धर परियो, करीयो लछमन हाहाकार।
भावीने कुण टालणहार टाली नहीं टले लाख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥
शरीर सुगन्धो तेज दिनंदो, चन्दो लज्जित हुवे वदन नीहार ॥२॥
राजकुंवर वर, उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार॥भावी॥३॥
क्यूं इहां आऊं, खड्ग उठाऊं, क्यूं वाऊं मैं विना विचार ॥ ४ ॥
आयोहूं भटक्यो, क्यों इहां अटक्यो, झटक्यो खड् लग्यो अनाचार॥५॥
विन अपराधन विद्या साधन, आराधन करतो लियो मार॥भावी॥६॥
इम पिछतावे शीश धुनावे, आवे न पाछो फल तरु डार ॥भावी॥७॥

दोहा–कुल्हर में जोवे जई, पडला केरी डाल।
दीठो धड़ अविलम्बियो, ताम चल्यो ततकाल ॥१५॥
राम समीपे आवीयो, संभलाव्यो विरतन्त।

---

१ वाह्यो–(वार्यो) वंशजालने कापतां शम्बुक नूं मस्तक कपाई गयूं अने ते लक्ष्मणजी ने आगल आवीने पड़यूं ने थी गव्हरमां जईने जातां वड़नी शाखाए धड़ लटकतां जोयूं।

खांडो मूक्यो आगले, भाखे राम तुरन्त ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

सियकहै देवर यहै बीज तरुवर, फर लगेगे रहो हुंसियार॥भावी॥८॥
एह सोचन काई, सुन भोजाई, लक्ष्मण कहै मुझ एक लिगार ॥ ९ ॥
मुनि 'राम' कहै भाई, टरे नहीं राई पिछताई रहै उत्तम आचार।१०।

ढाल इकतीशवी तर्ज–राजवीयांने राज पीयारो ।

हो भाई ! ते उपद्द उठायो, जस ए खांडो सो नर चांडो,
आयो के हिव आयो ॥ टेर ॥
रावण भगिनी शूर्प नखाजी, विद्या सिद्धि जाणी ।
पूजा पाणी अन्न अनूपम, आणे सा खर राणी ॥ हो भाई ॥ १ ॥

श्रावक वैद्य धूलचंदजी ढालक्षेपक तर्ज अहो २ पासजी मुझ मिलीयाहो ।

कहो ! ए सखी आज पियुघरआसी ए, आसी आसीने आनन्द थासी टेर ॥ लारे शम्बुक नीनारीरे, करे विध २ महिलनी त्यारीरे तन सकल सज्या सिणगारी ॥ कहो १ ॥ करीविकटतपस्या वनमेरे, पियु दुर्बलहोगया तनमेंरे, उनकी लगन लगी मेरामनमें ॥ क २ ॥ बारे बरस नी आशाफलमीरे, म्हांरी विरहव्यथा सहुटरसीरे म्हारा वंछित कारज सरसी ॥ कहो ॥ ३ ॥ नारी बन रही झाकदा मालारे, इमगूंथी मनोरथ मालारे, इमहर्ष मनावे बाला ॥ कहो ॥ ४ ॥ इतने दक्षिण अङ्ग फरकेरे, तब धड़ धड़ छतियों धड़केरे, कामण को कलेजो कलके ॥ कहो ॥ ५ ॥ पियु आयां आनन्द बरसेरे, मिलवाने तनमन तरसेरे, पिण विधना कहो यूं करसे ॥ कहो ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

दीठो धड़ मस्तक जब जूवो, अपि अगि देख एकामो ॥
कीधोथो अणमोल्यो अधिको, मूर्छाणी ना वामो ॥ हो भाई ॥२॥
हुई सचेतन हा वत्स ! हा वत्स !, शम्बूक शम्बूक शोई ॥
करती फरती अति आरड़ती, मरोड़े कर दोई ॥ हो भाई ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–धन्तुरो राचणो ॥

आतो आई वन्न मझार, निरख्यो नन्दनजी हांजी ।
आतो धरण पडी धसकाय, कुंवर तूं गयो कीहांजी ॥
थारी मायडी कूके वन मांय, कुँवर वेगो आवजे रे ॥ टेर ॥ १ ॥
धड मस्तक न्यारा दोय, कुण्डल झिग मिग करेजी ॥
काया कञ्चन रूप रसाल, पड्यो धरणी तलेजी ॥ थारी ॥ २ ॥
हा हा होगई अचिरज बात, महा दुःख कारीणीजी ।
आता वाल्हा खाणी भोम के. महा डरावणोजी ॥ थारी ॥ ३ ॥
थने वर्ज्यो मैं पूत ! अपार, मूल मान्यो नहींजी ।
मैं तो आश अलुद्धि नार, आय इमहीज रहीजी ॥ थारी ॥ ४ ॥
ए अरोगो पय पान. लाई तुम कारणेजी ।
सामो जोवो नयन उघाड, जावूं तुम्ह वारणेजी ॥ थारी ॥ ५ ॥
थारो किहां गयो खड्ग रतन्न क, विश्व वीहामणोजी ।
कुण पापी कियो यह काम क, दुःख लागे घणोजी ॥ थारी ॥६॥
थे तपस्या करी रे अपार, जीती वाजी हारीयोजी ।
कोई पापी नीच कुजात. चिन्तव इम मारीयोजी ॥ थारी ॥ ७ ॥
किहां जो ऊरे पुत्र दीदार, थारो नयने करीजी ।
थारो झुरसी सब परिवार के, बाल अन्ते ऊरीजी ॥ थारी ॥ ८ ॥
म्हारो फाटे हियड़ो हीरक छाती पर जलेजी ।
फिर २ मूर्च्छा गाय, क अति ही टलवलेजी ॥ थारी ॥ ९ ॥

ढाल मूलगी क्षेपक—

मरते मावडी रोवे, पुत्र ? क्यूं धरणी पर सोवे, दशोदिश वैरीने जोवे ॥ नन्दन की विरह व्यथा जागी, वैरी की निगह करन लागी ॥ मन्य व्रत पालो ॥ ८८ ॥

ढाल मूलगी

लखमवन्ती लक्ष्मण केरी. पगनी[१] पंक्ती देखे ।
मुझ सुत हंतार[२] ए रे जाणेवो. रीस घणी मुविशेषे ॥होमाटी॥ ४ ॥

१ पृथिवी पर पैर रखने के चिह्न । २ मारने वाला ।

पगने खोजे चाली आवी, 'सीता' 'लक्ष्मण' रामो।
निरखी हरखी परखे पदमनी, 'राम' रूप अभिरामो ॥ हो ॥ ५ ॥
काम बाणसूं वींधी लीधी, न रही शुद्ध लगारो।
भूली नन्दन आनन्द ऊपन्यो, करवाने भरतारो ॥ हो भाई ॥ ६ ॥

मुनि श्री प्रसन्नचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज—म्होटी जगमें मोहिणी

विह्वल थईसा भामिनी, कांई हुई अपच्छर उणिहार।
कनक वरण द्युती सोहनी, कांई मोहनी हो सवही संसार ॥ १ ॥
धिक् धिक् विषय विकारने ॥ टेर ॥
मांग भरी गजमोतीयों, मुख चावेहो सा बीडा पान ॥
नखराली चित्त चोरती, कांई राखे हो दिल अधिकी आन ॥ २ ॥
नाके नकवेसर सजी, गल पहरियो मोतियन को हार ॥
चोली पहरी चूंपसूं, पग बाजे हो झांझर झणकार ॥ धिक् ॥ ३ ॥
ठमक ठमक पगल्या ठवे, कांई चाली हो मानूं जेम मराल ॥
काणां घूंघट पट धरी, वणि षोडसहो वर्षां री बाल ॥ धिक् ॥ ४ ॥
हाव भाव करती थकी मन धरती हो वा अधिको प्रेम।
वचन सुधा सम दाखती, चित्त लागो हो चकवीने जेम ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

कुंवरी अमरीने अनुसरती, धरती रूप रसालो।
रामचंद्रने पासे आवी, ऊभी सा ततकालो ॥ हो भाई ॥ ७ ॥
पूछे प्रभुजी पद्मणि सेथी, कोण अछो तुम्ह भाखो ॥
अटवीमां एकाकी दीसो, शंका कोई मति राखो ॥ होभाई० ८ ॥
सा भाखे हूं राज कुंवारी, ऊपरी भोमे सोऊं ॥
निद्रा गत नर मुआ सरिसो, अधिक अचेतन होऊं ॥ होभाई० ९ ॥
एक विद्याधर रूपे मोयो, इहां लेई मुज आयो ॥
एटले अपर खेचर चल आयो चाहे मुज छीनायो ॥ होभाई० १० ॥
मुझने हेठी मूकी आपण, लड़वा लागा दोई ॥
लडता लडता दोई मुआ, कुव्यसन थी एम होई ॥ होभाई० ११ ॥
एकाकी हूं अबला बाला, वन में फिरूं उदासी ॥

अबमें प्रभुजीना पग पाम्या, आरती गई सब नासी ॥होभाई॥१२॥

जैनोपदेशक वैद्य सुराणा धूलचन्द्जी कृत—
ढाल क्षेपक तर्ज हां सगीजी ने पेडा भावे ॥

हां प्रभो ? सुन अरज हमारी, शरणे आई अबला नारी ॥
वेगी कीजो व्याव करोमति, ढील लिगारोरे ॥ प्रभो० ॥ १ ॥
धिन.२ दर्शन आज मे निरख्यो, म्हारोतो मन अति ही हर्ष्यो ॥
परख्यो पुरुष प्रधान, जोड मिल गई मझारी रे ॥ प्रभो० ॥ २ ॥
एह अवस्था म्हारी नीकी, आप तणीतो मुझसे अधिकी ॥
बाल पणाको भोग जोग ओ, मिलीयो भारी रे ॥ प्रभो० ॥ ३ ॥
ललितांगी करती बहु लटका, कर गूंघट से करती मटका ॥
झटका देवे काम राम मन, प्रीत तुम्हारीरे ॥ प्रभो० ॥ ४ ॥
तुम दर्शण की हो रही प्यासी, निरखत मिट गई सर्व उदासी ॥
दासी की अरदास पास कर, रखलो प्यारीरे ॥ प्रभो० ॥ ५ ॥
विरह आग थकी अकुलाणी, जिणसूं बोल रही छूं वाणी ॥
राणी कर महाराज लाज मे, तजदी सारीरे ॥ प्रभो० ॥ ६ ॥
इणपर नार अरज बहु करती, हर्षित हिये नेण जल भरती ॥
करती नखरा खूब लाज मन, नहीं लिगारीरे ॥ प्रभो० ॥ ७ ॥
लाल पाल करती बहु नारी, म्हे छूं प्रभु तुमची नारी ॥
मान कहो में म्हारी आप, अब करदो जहारीरे ॥ प्रभो० ॥ ८ ॥
में शरणे लीधो सुखकारी, कंवारी छूं राज दुलारी ॥
संबानां की एक ब्याव की, करलो त्यारी रे ॥ प्रभो० ॥ ९ ॥
धिक् धिक् धिक् धिक् काम विकारा, 'धूलचन्द' कहे सुणजो सारा
त्याग मन कर प्यार नार एह, नागण कारीरे ॥ प्रभो० ॥ १० ॥

दोहा— बोली मुहसी सुन्दरी, और न जग में कोय ॥
तुम साभो सुन्दर युवा, कहीं न दूजा होय ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज—राधेश्याम (राधेश्याम रामायण में से)

मानों हम दोनों का स्वरूप, विधिने विचार कर रक्खा है ।
चन्द्रमा बनाने वाले ने, सूरज तैयार कर रक्खा है ॥

संकोच छोड़कर वनवासी, पूरा विधिका उत्साह करो ।
मैं तुमको आज्ञा देती हूं, मुझसे गन्धर्व विवाह करो ॥

ढाल मूलगी

अवे मुझ व्याहो वार न लाहो, बाल पणानो भोगो ।
भोगवतां सुखदाई पिछे, दोहीलो ए संयोगो ॥ हो भाई ॥ १३॥
प्रभुजी ए प्रपंच विचार्यो, म्होटानी मति म्होटी ॥
कपट कुटी कलह कारी कामनी, ए सब वातां खोटी ॥ होभाई ॥ १४॥
धूता का धूताए धुरत, धूती ने पकडाई ॥
तबदीये नयणां सयण बताई, मांहो मांही भाई ॥ होभाई ॥ १५ ॥
राम कहै म्हारे एक छे नारी, बीजी केम वराये ॥
वेची निद्रा उजागर लेवे, सांसा में दिन जाये ॥ होभाई ॥ १६ ॥
पेला छडो छटक दिखावे, करसे थारो विवाहो ॥
जेहने नहीं तेने आतुरता, मनमें अति उमाहो ॥ होभाई ॥ १७ ॥
प्रार्थना लक्ष्मण सूं कीनी. लक्ष्मण कहै भलेरी ॥
माय हमारी प्रभु प्रार्थियो, भाभी? मकडीसो फेरी ॥ होभाई ॥ १८॥

जै. वै. सु. धूलचन्दजी कृत.—

ढाल क्षेपक–तर्ज गवरल ईसरजी केवेतो हंसकर बोलणाजी ॥

लक्ष्मण भाखे हे भाभी, सुन वातां मायरी ए. ॥ टेर ॥
अवसर चूक गई तू स्याणी, होका आई रघुवर राणी । तूंतो हाथां
घात गमाणी । अबतो स्यूं होवे पिछनाणी, पेला आतीतो वातां
माने तो तायरीए ॥ ल० ॥ १ ॥

—(तर्ज–राधेश्याम रामायण में से)—

लक्ष्मण से बोली–मुझे देख तुम क्यों इतने मुसकाते हो ।
वेतो व्याहे हैं लेकिन तुम नारी विहीन दिखलाते हो ॥

(कवित्त) निरखे अवरां नयण, वयण अवरां बतलावे, अवरान् अनुराग चित्त अवरां ललचावे ॥ दे अवरां शिर दोष, रोष अवरां शिर नाखे ॥ अवरां सूं अभिलाष भाग अवरां सुख भाखे । रति मेल केल अवरां करे ध्यान अवरां मन धारीणी तिनमांही दोष समजो चतुर, चरित्र एह व्यभिचारीणी ॥ १ ॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी. इनपर गाढो तो पिछतावो नारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन वन पति की. जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं. चिकने घटपरठौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे. थे मुझ कीधो कुंवर विणासे. आई खररायने पासे. आंसू न्हांखे अधिक उदासे, इसका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥३

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणी सुतमार्यो,
खरसूं खरी आय पुकारी, रीसघणो विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संग्राह्या ते वारो।
आई गया ते वात करन्ता, ऊठे 'राम' जे वारो होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, वैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहै नृप खर भणो, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणवे, छोडी अपनी आकृत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं. गई वात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे. सामन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे. लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुनम्हारी खांडो लीयो, उठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे. लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये. अवगन नीजी वात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

अच्छा तुम उनकी तरह, मुझे उत्तर देना खुर खुरा नहीं ।
तुम बने बनों में बनी बनूं, यह जोडा भी कुछ बुरा नहीं ॥
दोहा–लक्ष्मण का तो प्रकृती से, था स्वभाव ही गर्म ।
गर्मा कर कहने लगे, चलु दुष्टा बे शर्म ॥ ० ॥

॥ राधेश्याम ॥

एसी बाते करने में तुझे, ओ कुलटा[१] लाज न आती है ।
मुझसे यह कहने के पहीले, पापीनी मर नहीं जाती है ॥
पहली ही बार जिन्दगी में, एसी निर्लज्ज देखी हमने ।
है आज का दिन मनहूस बडा, इतनी निर्लज्ज देखी हमने ॥
ओ कुल कलङ्किनी पिशाचिनी, यदि हुआ विवाह नहीं तेरा ।
तो अपने संरक्षक से कह, वह करदे ठौर कहीं तेरा ॥
है आर्य्य-विवाह योग साधन, सौदा न ममझ बाजार का यह ।
आगम ऐस इसका न लक्ष्य बंधन कर्तव्य-भारका यह ॥
और अगर विवाह होचुका हो, तो जा निजपति की सेवाकर ।
वहही आराध्य देव तेरा, उससे ही सुख की आशाकर ॥
यदि हो वैधव्य अवस्था तो, पति नामकी वैरागिनी बनजा ।
देश और जाति की सेवाको, बस सच्ची सन्यासिनी बनजा ॥
बहनों का अपनी कर सुधार, यह राह है तेरी शुभ गति की ।
संसार में बस कायम करदे, यों यादगार अपने पति की ॥
वरना यों बाहिर फिरने में, क्यों अपना जन्म लजाती है ।
कुलको-समाजको-देशको भी, व्यभिचारणी दाग लगाती है ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्वोक्त

मैं तो लाज गमाई म्हारी बातां करदा सगली जहारी, म्हारी

यतः नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, न ज्ञायते दुष्ट मनोरथाश्च ।
स्त्रियाश्चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानाति कुतोमनुष्यः ॥

ऊंदर सूं डरके पकड केहर, वश आणे, डोरो देखी डरे सापदे मूंढ सिरांणे ॥ अगला पर अडवडे, चढे दूकर गिर चडहडे, पूछियां पकडे मुंन हठे स्वेच्छाए हडहडे ॥ कारमूं प्यार मांडे जुगत कन्त हुवी कलह कारिणी, चित्तमांही 'वीर' समजो चतुर चरित्र एह व्यभिचारिणी ॥ग॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी, इनपर गाढो तो पिछतावो भारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन चन पति की. जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं. चिकने घटपरठोर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे. शे मुझ कीधो कुंवर विणासे. आई खररायने पासे. आंसू न्हांखे अधिक उदासे, डुमका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥२

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणो सुतमार्यो,
खरमूं खरी आय पुकारी, रीमघणी विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संचाह्या ते वारो।
आई गया ते यान करन्ता, ऊडे 'राम' जे वारो होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, बैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहे नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणने, छोडी अपनी आकृत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई वात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे. सायन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुतम्हारो खांडो लीयो, ऊठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे. लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये, अवरन तीजी वात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

अच्छा तुम उनकी तरह, मुझे उत्तर देना खुर खुरा नहीं ।
तुम बने बनों में बनी बनूं, यह जोडा भी कुछ बुरा नहीं ॥
दोहा–लक्ष्मण का तो प्रकृती से, था स्वभाव ही गर्म ।
गर्मा कर कहने लगे, चलु दुष्टा बे शर्म्म ॥ ० ॥

॥ राधेश्याम ॥

एसी बाते करने में तुझे, ओ कुलटा१ लाज न आती है ।
मुझसे यह कहने के पहीले, पापीनी मर नहीं जाती है ॥
पहली ही बार जिन्दगी में, एसी निर्लज्ज देखी हमने ।
है आज का दिन मनहूस बडा, इतनी निर्लज्ज देखी हमने ॥
ओ कुल कलङ्किनी पिशाचिनी, यदि हुआ विवाह नहीं तेरा ।
तो अपने संरक्षक से कह, वह करदे ठौर कहीं तेरा ॥
है आर्य्य-विवाह योग साधन, सौदान समझ बाजार का यह ।
आराम ऐस इसका न लक्ष्य बंधन कर्तव्य-भारका यह ॥
और अगर विवाह होचुका हो, तो जा निजपति की सेवाकर ।
वहही आराध्य देव तेरा, उससे ही सुख की आशाकर ॥
यदि हो वैधव्य अवस्था तो, पति नामकी वैरागिनी बनजा ।
देश और जाति की सेवाको, बस सच्ची सन्यासिनी बनजा ॥
बहनों का अपनो कर सुधार, यह राह है तेरी शुभ गति की ।
संसार में बस कायम करदे, यों यादगार अपने पति की ॥
वरना यों बाहीं फिरने में, क्यों अपना जन्म लजाती है ।
कुलको-समाजको-देशको भी, व्यभिचारणी दाग लगाती है ॥

ढाल चंपक तर्ज–पूर्वोक्त

मैं तो लाज गमाई म्हारी बातां करदा सगली जहारी, म्हारी

यत नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, न ज्ञायते दुष्ट मनोरथाश्च ।
स्त्रियाश्चरित्रं, पुरुषस्य भाग्य, देवो न जानाति कुतोमनुष्यः ॥
[illegible] सूं उछके पकड़ केहर वश आणे, डोरो देख्यो डरे सापड़ै मूंत [illegible] ॥ [illegible] पर अडवड़, चढे डूंगर शि चड़हड़, पूछ्यां पकड़ै मून [illegible] ॥ [illegible] प्यार मांडे जुगत करत हुयी कलह [illegible] चरित्रमांही 'दीर' समझो चतुर चरित्र एक व्यभिचारिणी ॥ ॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी. इनपर गाढो तो पिछतावो लारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन चन पति की. जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं. चिकने घटपरटौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे. थे मुझ कीधो कुंवर विणासे. आई खररायने पासे. आंसू न्हांखे अधिक उदासे, इसका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥२

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणी सुतमार्यां,
खरमूं खरी आय पुकारी, रीसघणो विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संबाह्या ते वारो।
आई गया ते वात करन्ता, ऊठे ' राम ' जे वागे होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, बैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारो

मंत्री कहे नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणने, छोडी अपनी आकृत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई बात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे. मावन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूपणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुतम्हारी खांडो लीयो, ऊठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे, लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये. अवरन तीजी बात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

लक्ष्मण कहे श्री रामसूं, ए खर बोली गर्व ॥ राजेश्वर ।
हुकम करो तुम देवजी, तो ए म्हारुं सर्व ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

जाओ वेगा वैरी जीतो, जो जाणो ए त्रासो ।
'सिंहनाद' निज मुखती कीजो, हूं छूं थारे पासो ॥होभाई॥२२॥
धनुष बाण लई पाये लागी, 'लक्ष्मण' चाल्यो जामो ।
खेचर खेते खगही शूरा, मांड्यो अति संग्रामो ॥ हो भाई ॥ २३ ॥
गरुड तणे आगे जिम अहिवर, तेमने खेचर भाजे ।
अरण्य मांहीं अटल एकलो, लक्ष्मण वीर विराजे ॥हो भाई॥२४।
पूठ शम्बवा रावण आगे, भगनी जाय पुकारी ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दण्ड कारण्ये, आयाछे अधिकारी ॥ होभाई ॥२५॥
विद्या साधन करतां वीरो, मारी लीयो वेकाजो ॥
लक्ष्मण सूं खरदूषण अडिया, जुडियाछे जई आजो ॥ होभाई ॥२६॥
लघुभाई ना बलथी बलियो, बलियो आप अपारो ॥
बेपरवाई करतो अडरतो, नाणे मनही मझारो ॥ होभाई ॥ २७ ॥
सीता सूं सुखमाणे स्वामी सीतानो अति रूपो ॥
नारी सघली ही मोधन्ता, सीता रूप अनूपो ॥ होभाई ॥ २८ ॥
तीन लोकनी नारी जेती, तेतो जोई विमासी ॥
एक एक थी ओप अतिघण, सीता आगल दासी ॥ होभाई ॥२९॥
दश नखथी लई शिखा वणावत, सुर गुरु पार न पावे ॥
नारी एक वखाण वर्णे, मांपे किम कहिवावे ॥ होभाई ॥३०॥

* सवैया-पूज्यश्री रत्नराजजी म० के शिष्य नथमलजी म० कृत
इन्द्र की परी है कि है विधाता आप,
चन्द्रमा सूं चीर काढी सार अमीपान की ।
कंचन वर्ण तन रंच न दिखाता खोड़,
सावन की तीजमानूं बीज आसमान की ॥
लाल केरी चाट ऐसी अनूपम और ऐसी ।
कमल अंगना सेवा भूसन सुगन की ॥

स्वर्ग लोक मृत्यु लोक पाताल मांहीं।

जायदेखी नागीहून दुजी एसीजैसी नाथ जानकी॥

—(ढाल चेपक तर्ज वीरारी)—

वीरा सीता २ रूप अपार हो, वीरा ईन्द्राणी ने रद करेजी।
वीरा कहतां २ नावे पारहो, वीरा ईन्द्रादीक आशा धरेजी॥ १ ॥
वीरा थारी २ राणीयो पोई सहो, वीरा सीताने आगे पाणी भरेजी॥
वीरा थांने २ भेजी जगदीशहो, वीरा इणसूं केल क्यूं नहीं करेजी॥२॥
वीरा राम २ सु लिछमन मील हो, वीरा वांने जाय मारो सहीजी॥
वीरा सीता २ सूं कीजे लीलहो, वीरा मानोंनी म्हारी कहीजी॥३॥

ढाल मूलगी—

सायर अन्ते ५ पृथिवी मांहीं, रत्न जीके छे जाचा॥
तेतो यन्धव सघला थारा, स्वामी पणाथी साचा॥ होभाई॥३१॥
पुष्पक नामे वेसी विमाणे, आणो आणी आशो॥
वदन विलोकी ने तव मुझने, देसो म्हो शाबासो॥ होभाई॥३२॥
ढाल भली ए इकतीशवीं, रावण मांड्या कानो।
केशराज होतारथ चलीयो, आयो तस अवमानो॥ हो भाई॥३३॥

दोहा (कल्याण रागे)

वीतराग उपदेश में, चार प्रकारे धर्म।
दान शीयल तप भावना, साधे वा शिव शर्म॥ १ ॥
चित्त वित अनुसारथी, दया दान कहिवाय।
तपतो काया सोसवी, भावे भावना भाय॥ २ ॥
शील पालवो दोहीलो, नहीं मोहिन्नोलिगार।
चंचल चित्त स्थिर राखिवो, चालवो खांडा धार॥ ३ ॥
वाये भरवो कोथलो, तरवा उदधि अपार।
साचो साप खिलावणो, पालवो शीलाचार॥ ४ ॥

ढाल बत्तीशवीं तर्ज पद्मनी—

जीवरे तूं शील तणो कर संग, अवर रंग सहुकारमोरे, एह करारो रंग॥ टेर॥

लक्ष्मण कहै श्री रामसूं, ए खर बोली गर्व ॥ राजेश्वर ।
हुकम करो तुम देवजी, तो ए म्हारुं सर्व ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

जाओ वेगा वैरी जीतो, जो जाणो ए त्रासो ।
'सिंहनाद' निज मुखनी कीजो. हूं छूं थारे पासो ॥होभाई॥२२॥
धनुष बाण लई पाये लागी, 'लक्ष्मण' चाल्यो जामो ।
खेचर खेने खगही शूरा, मांड्यो अति संग्रामो ॥ हो भाई ॥ २३ ॥
गरुड तणे आगे जिम अहिवर, तेमते खेचर भाजे ।
अरण्य मांहीं अटल एकलो. लक्ष्मण वीर विराजे ॥हो भाई॥२४॥
पूठ रावचा रावण आगे. भगनी जाय पुकारी ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दण्ड कारणे, आयाछे अधिकारी ॥ होभाई ॥२५॥
विद्या साधन करतो वीरो, मारी लीयो बेकाजो ॥
लक्ष्मण सूं खरदूषण अडिया, जुडियाछे जई आजो ॥ होभाई ॥२६॥
लघुभाई ना बलथी बलियो, बलियो आप अपारो ॥
बेपरवाई करतो अडरतो, नाणे मनही मझारो ॥ होभाई ॥ २७ ॥
सीता सूं गुणमाणे स्वामी सीतानो अति रूपो ॥
नारी सघली ही सोधन्ता, सीता रूप अनूपो ॥ होभाई ॥ २८ ॥
तीन लोकनी नारी जेती, तेतो जोई विमासी ॥
एक एक थी ओप अतिघण, सीता आगल दासी ॥ होभाई ॥२९॥
पग नखथी लई सिखा वखाणन, सुर गुरु पारन पावे ॥
वाणी एक वखाण वणेरो, मांपे किम कहिवावे ॥ होभाई ॥३०॥

सवैया-पूज्यश्री रत्नराजजी म० के शिष्य नथमलजी म० कृत

इन्द्र की परी है धरि है विधाना आप,
चन्द्रमां सूं चीर काढी सीर अमीपान की ।
कंचन वर्ण तन रंच न दिखाता खोड,
मानन की तीजमानूं बीज आसमान की ॥
गात कैसो बाट ऐसी अन्तरस ओर ऐसो ।
कृष्ण अंगना सेवा भूसन सुगन की ॥

स्वर्ग लोक मृत्यु लोक पाताल मांहीं।
जायदेखी नारीहून दूजी एसीजैसी नाथ जानकी॥

—(ढाल क्षेपक तर्ज वीरारी)—

वीरा सीता २ रूप अपार हो, वीरा ईन्द्राणी ने रद करेजी।
वीरा कहतां २ नावे पारहो, वीरा ईन्द्रादीक आशा धरेजी॥ १॥
वीरा थारी २ राणीयो पोई सहो, वीरा सीताने आगे पाणी भरेजीं॥
वीरा थांने २ भेजी जगदीशहो, वीरा इणसूं केल क्यूं नहीं करेजी॥२॥
वीरा राम २ सु लिछमन मील हो, वीरा वांने जाय मारो सहीजी॥
वीरा सीता २ सूं कीजे लीलहो, वीरा मानोंनी म्हारी कहीजी॥३॥

ढाल मूलगीं—

सायर अन्ते ५ पृथिवी मांहीं, रत्न जीके छे जाचा॥
तेतो वन्धव सघला थारा, स्वामी पणाथी साचा॥ होभाई॥२१॥
पुष्पक नामे वेसी विमाणे, आणो आणी आशो॥
वदन विलोकी ने तव मुझने, देसो सही शावासो॥ होभाई॥२२॥
ढाल भली ए इकतीशवीं, रावण मांड्या कानो।
केशराज होतारथ चलीयो, आयो तस अवमानो॥ हो भाई॥२३॥

दोहा (कल्याण रागे)

वीतराग उपदेश में, चार प्रकारे धर्म।
दान शीयल तप भावना, साधे वा शिव शर्म॥ १॥
चित्त वित अनुमारथी, दया दान कहिवाय।
तपतो काया सोसवी, भावे भावना भाय॥ २॥
शील पालवो दोहीलो, नहीं मोहिलोलिगार।
चंचल चित्त स्थिर राखिवो, पालवो खांडा धार॥ ३॥
वाये भर्यो कोथलो, तरवा उदधि अपार।
माचो माप खिलावणो, पालवो शीलाचार॥ ४॥

ढाल बत्तीशावी तर्ज पदनी—

जीवरे तूं शील तणो कर संग, अवर रंग सहूकारमोरे, एह कारमो रंग॥ टेर॥

आग थकी जल ऊपजे रे, साप थकी घरमाल ।
वाघ फिटी होय हरणलोरे, अंधे पणूं लहै व्याल२ ॥ जीव ॥ १ ॥
पर्वत होवे पाव हीयो रे. विष थी अमृत होय ।
विघ्न थाने ओच्छव घणो रे, दुर्जन सज्जन होय ॥ जीव ॥ २ ॥
सायर गांव तलावड़ी रे, अटवी निजघर वार ।
चूग निके भलपण भजे रे, शील तणा उपकार ॥ जीव ॥ ३ ॥
पड़हो जगे अपयश तणो रे, गुणवने देवी आग ।
चारित्रने नीलांजली रे, तप जप जाये भाग ॥ जीव ॥ ४ ॥
साई सर्वापद तणी रे, कालो करवो गोत ।
द्वार देखाड़े नर्कनां रे. शील विना इम होत ॥ जीव ॥ ५ ॥
पग भरे नग जेटला रे. परनारी ने हेत ।
ब्राह्मण मारे तेटलारे, मार्ग अपर मत देत ॥ जीव ॥ ६ ॥
नजर मेलो नजरनो रे, होवे जेती वार ।
पलके पलके पल्योपमें रे, वसवो नरक मझार ॥ जीव ॥ ७ ॥
कुसमे नारी निरखतारे, ब्रह्म हत्यानो दोष ।
लागे लम्पटने घणो रे. पाप तणो ए पोष ॥ जीव ॥ ८ ॥
राजदण्ड अति आक्रोरे, और करे नुकसान ।
आयु विन मरणो सही रे, न वधे कोई मान ॥ जीव ॥ ९ ॥
आंख ऊंडी दोनिद्क्षये रे, क्षण २ खीणो देह ।
चन्द्र रहे नित्य चारमो रे, जेहनो परघर नेह ॥ जीव ॥ १० ॥
लाज गयां निर्लज्ज पणूं रे, कुकर केरु नाम ।
पग पग माथे ठोकरारे. शील विना ए काम ॥ जीव ॥ ११ ॥
शीलवती सीता सती रे, वसुधा मां विख्यात ।
शील न लोप्यो सुन्दरी रे, निसुणो ए अवदात ॥ जीव ॥ १२ ॥
पुष्पक नाम विमान में रे, बैठा रावण नाम ।
दण्डकारण्ये आवीया रे, बैठा दीठा श्री राम ॥ जीव ॥ १३ ॥

---

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ गाम-तलावड़ी-गामनी तलावड़ी [illegible] ।

आघा पांच पड़े नहीं रे, नवि लोपाये कार ।
सिंह न आवे आसनो रे, देखी आग अपार ॥ जीव ॥ १४ ॥
सीता तो लेवी सही रे, राम छतां न लेवाय ।
आगे हरी पाछे तटी रे, सोच घणो तव थाय ॥ जीव ॥ १५ ॥
विद्याती अवलोकनी रे, समरी तब आवन्त ।
करजोड़ी ऊभी रही रे, प्रभुजी सुख पावन्त ॥ जीव ॥ १६ ॥
सहाय करो तुम मायरी रे, पामूं सीता आज ।
फिरी गया पंचो मध्ये रे, हूं पामूं अति लाज ॥ जीव ॥ १७ ॥
शिरधूणी विद्याकहै रे, ए तो भूंडूं काम ।
सीता हरतां तुमतणूं रे, थासे जगमें कुनाम ॥ जीव ॥ १८ ॥
सतियों मांही शिरोमणी रे, 'रामचन्द्र' की नार ।
शीलथकी चूके नहीं रे, जो होवे क्रोड़ प्रकार ॥ जीव ॥ १९ ॥
'रावण' तो माने नहीं रे, देवी केरी वाय ।
म्हारे मन सीता वसी रे, एही करो उपाय ॥ जीव ॥ २० ॥
विद्या कहै रघुजी छतां रे, कीधां कोडी कलाप ।
हाथ न आवे जानकी रे, सुरपति आयां आप ॥ जीव ॥ २१ ॥
'लक्ष्मण' लड़वाने गयो रे, राम कियो संकेत ।
सिंहनाद तुझ सांभल्यां रे, आयां देखे खेत ॥जीव॥ २२ ॥
सिंहनादने हूं करूं रे, राघव ऊठी जाय ।
सीता लेनां मोहली रे, भाख्यो एह उपाय ॥ जीव ॥ २३ ॥
लड़ता था तिण दिश जई रे, विद्या कियो सिंहनाद ।
रामचंद्रजी सांभल्यो रे, आणे मन विखवाद ॥ जीव ॥ २४ ॥
नाद सुणी प्रभु चिन्तवेरे, एछे को परपंच ।
लक्ष्मण तो हारे नहींरे, संकट नो स्यूं संच ॥ जीव ॥ २५ ॥
मायन जायो एह वीरे, जीते लक्ष्मण साथ ।
खग्तो कुटेवो खरोरे, एमकही रघु नाथ ॥ जीव ॥ २६ ॥
वारम्वार वदेखरोरे, सीता आणी सनेह ।

आग थकी जल ऊपजे रे, साप थकी वरमाल।
वाघ फिटी होय हरणलोरे, अंधे पणूं लहै व्याल२ ॥ जीव ॥ १ ॥
पर्वत होवे पाव हीयो रे, विष थी अमृत होय।
विघ्न थाने ओच्छव घणो रे, दुर्जन सज्जन होय ॥ जीव ॥ २ ॥
सायर गांव तलावड़ी रे, अटवी निजघर वार।
मृग तिके भलपण भजे रे, शील तणा उपकार ॥ जीव ॥ ३ ॥
पड़हो जगे अपयश तणो रे, गुणवने देवी आग।
चारित्रने तीलांजली रे, तप जप जाये भाग ॥ जीव ॥ ४ ॥
गाई सर्वापद तणी रे, काल्लो करवो गोत।
द्वार देखाड़े नर्कनो रे, शील विना इम होत ॥ जीव ॥ ५ ॥
पग भरे नग जेटला रे, परनारी ने हेत।
ब्राह्मण मारे तेटलारे, मागे अपर मत देत ॥ जीव ॥ ६ ॥
नजर मेलो नजरनो रे, होवे जेती वार।
पलके पलके पल्योपमें रे, वसवो नरक मझार ॥ जीव ॥ ७ ॥
कुमने नारी निरखतांरे, ब्रह्म हत्यानो दोष।
लागे लम्पटने घणो रे, पाप तणो ए पोष ॥ जीव ॥ ८ ॥
राजदण्ड अति आकरोरे, और करे नुकसान।
आयु विन मरणो सहीरे, न वधे कोई मान ॥ जीव ॥ ९ ॥
आंख ऊंडी दोनिंदक्षये रे, क्षण २ खीणी देह।
चन्द्र कहै नित्य वाग्मो रे, जेहनो परघर नेह ॥ जीव ॥ १० ॥
लाज गयां निर्लज्ज पणूं रे, कुकर केरू नाम।
पग पग माथे ढांकणोरे, शील विना ए काम ॥ जीव ॥ ११ ॥
शीलवतां सीता सती रे वसुधा मां विख्यात।
शीलन लोप्यो सुन्दरी रे, निसुणो ए अवदात ॥ जीव ॥ १२ ॥
पुष्पक नाम विमान में रे, बैठी रावण नाम।
दण्डकारण्ये आवीयो रे, बैठा दीठा श्री राम ॥ जीव ॥ १३ ॥

---

१ कलशनु फटकल्ने। २ सार। ३ गाम-तलावड़ी-गामनी तलावड़ी
नामनी जयोर टाम पण मुकी सवाय।

रामचन्द्र की सीता राणी, लेई किहां तूं जाई ॥ तत् १ ॥
देख पराक्रम अबतू मेरो, मैं तुझ छोडूं नांई।
जाय आकाशे ऊपर पडतां, खगसे खगकी लड़ाई ॥ तत्० २ ॥
रावण वर्जे पिण नहीं माने, दीनो मुकट गिराई ॥
तिम २ रोष करे पंखीडो, जीवत जावा द्यूं नांई ॥ तत्० ३ ॥

ढाल मूलगी—

वर्ज्यो तो माने नहीं रे, ताम रिसाणो राय ॥
कापी नांखी पांखडीरे, पडीयो धरती आय ॥ जीव० ३४ ॥
शंकन माने कोइ नोरे, बैठो जाय विमान।
एह मनोरथ मायरोरे, पूर्यो श्रीभगवान् ॥ जीव० ३५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अब रावण के हृदयको, हुआ पूर्ण विश्राम।
मनही मन मनमें सीयाको, उसने किया प्रणाम ॥
फिर इकके बादहु आवहही, जो होनहार दिखलाता था।
रावण के विमान में सीता थी, और वह लंका को जाता था ॥
विमान ज्यों ज्यों आगे बढता था, त्यों त्यों सीता चिल्लाती थी।
हा ! राम राम ! हा ! राम राम बस, यह आवाजें आती थी ॥
विरहाग्नी के सन्तापित तन को उस नाम के तापसे सेकती थी।
हा ! राम यह कहती जाती थीं और भूषण वस्त्र फेंकती थी ॥

ढाल मूलगी—

हा सुसरा दशरथजी रे, जनक जनक हा तात।
हा लक्ष्मण हा रामजी रे, हा भामण्डल भ्रात ॥ जीव ॥ ३६ ॥
सिचाणो जिम चिरकलो रे, वायस बलीने जेम।
ए कोई मुझने ग्रहीरे, लेई जावे एम ॥ जीव ॥ ३७ ॥
आवो कोई उतावलो रे, शूरो जे संसार।
राक्षस थी राखी लीयो रे, करती जाय पुकार ॥ जीव ॥ ३८ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-कांटो लागो रे देवरीया।

वेगो आजेरे देवरीया म्हांने, राक्षस लीयो जाय ॥ रा० ॥
म्हांने लम्पट लीयो जाय ॥ टेर ॥

लक्ष्मण संकटमे पडयोरे, नाद करे छे एह ॥ जीव ॥ २७ ॥
कन्त कहे सुण कामनीरे, हमने थारो सोच ।
अटवीमांही एकलीरे, आप गयां आलोच ॥ जीव ॥ २८ ॥
अबही जई फरी आवजोरे, करी बन्धवनी सार ।
आपो छूं इम मांभलीरे, झूझे अति झूंझार ॥ जीव ॥२९ ॥

जैनोपदेशक वैद्य सुगणा धूलचंदजी कृत
ढाल चेपक तर्ज— वेगा आवो जिनवरजी—

वेगा जावो वालमजी म्हारो देवरीयो दुःखपाय ॥ टेर ।
वाग ए विद्योधरतणो, भट प्रबलबली कहिवाय ॥ वेगा १ ॥
भोम पराई भयघणो, जीतवो मुसकिल थाय ॥ वेगा २ ॥
वेगा जावो वेगासुं, बंधवनी करोसहाय । वेगा ३ ॥
राज्य ऋद्धि सबछोरने, संग आयो लक्ष्मण भाय । वेगा ४ ॥
नेह निभावो प्रभु आपही, वारम लावोकाय ॥ वेगा ५ ॥
सोनकरो मनमायरो, इहां कहो कुण आय । वेगा ६ ॥
काटी कांबाडो देयने, मेंबैठूंला मांय । वेगा ७ ॥
प्रबल जोर भावी तणो, पुरुष करे कहो काय । वेगा ८ ॥

ढाल मूलगी—

कांइयक सीता प्रेरणारे, कांइक निसुण्योनाद ।
धनुष्य बाण सम्भाही करे, ऊठ्यो धरी अल्हाद । जीव ३० ॥
शत्रु नेतो वानोंघणोरे, चाल्यो जाय सरोप ।
नमिटेछे भवितव्यतारे, देवन देवो दोप । जीव ३१ ॥
पछे रावण आवीयोरे, रोवन्ती अपराल ।
सीताने लेई चल्योरे, दीठुं रूप रसाल । जीव ३२ ॥
नाम जटायु पंखीयोरे, जाई मिलीयो धाय ।
रोप भरीनख-अंकुशेरे, तास विलुरे काय । जीव ३३ ॥

ढाल चेपक तर्ज पहरो जैनोपदेशक वैद्य सुगणा धूलचंदजी कृत

नटनिरन आडो फिरीयोरे जटाई । टेर ॥
सुना वनमें चोर ज्युं थयोरे दुष्ट अन्याई ।

आपणपे आलोच में रे, सायर ऊपर सोई।
करे घणी ममझावणी रे, समझावाने तोई ॥ जीव ॥ ४५ ॥
भूचर खेचर राजवी रे, सयल नमें हम पाय।
अछूं त्रिखण्डनो धणी रे, ईन्द्र आप गुण गाय ॥ जीव ॥ ४६ ॥
करी थापूं पटरागीनी रे, महिमा अधिक वधाय।
रोवे मति रहै रङ्ग में रे, सुख में दुःख न खमाय ॥ जीव ॥४७॥
कर्ता कोप्यो थो घणो रे, हत्त किंस खुणसाण।
भाग्यहीण इण रामने रे, दीधी गले लगाय ॥ जीव ॥ ४८ ॥
काग गले कञ्चन तणी रे, माल भली न देखाय।
सरिखासूं सरिखो मले रे, आवे सहुने दाय ॥ जीव ॥ ४९ ॥
मानो मुझने पति पणे रे, होई रहूं तुम दास।
मुझ मान्या सहु मानसे रे, आणो तुम्हारी आश ॥ जीव॥ ५० ॥
निजर न ऊंची सा करे रे, दीन ए अपूठो जबाब।
अक्षर१ दोना ध्यानथी रे, आणी रही अति आब ॥ जीव ॥५१॥
त्रिध्यो मन्मथ२ बाणसूं रे, आरति अति मनमांहे।
ऊठीने पग लागीयो रे, विषय विहुल प्राहे ॥ जीव ॥ ५२ ॥
लम्पट ललचाणो घणूं रे, तूं क्यों न करे परयाण।
अण इच्छन्ति नारनोरे, पहिलां छे पञ्चक्खाण ॥ जीव ॥ ५३ ॥
सीता पग खेंची लीयो रे, छिव्यो नहीं शिर तास।
परपुरुषांने आ भड्यांरे, थाये शीयल विणास ॥ जीव ॥ ५४ ॥
देवलनी ध्वज सारखीरे, पतिव्रता कहिवाय।
होय अपूठी वायथीरे. आपही अलगी पुलाय ॥ जीव ॥ ५५ ॥
सीता आक्रोशे घणूरे. रे रे निर्लज्ज ! नरेश।
मुझ आण्यां थी ताहरीरे, चिणठी थान विशेष ॥ जीव ॥ ५६ ॥
सारणादिक तो घणारे. मंत्रीने सामन्त।
साम्हा आवी सादरारे. प्रभुने शोप नामन्त ॥ जीव ॥ ५७ ॥

राम। कामदेव।

प्राण वल्लभ मेरे दिलजानी, आप कही सो मैं नहीं मानी ।
जिणरा ए फल पाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ १ ॥
धावो धावो लक्ष्मण देवर, एम कही नांख्यो पगनेवर ।
ए सेनाणी थाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ २ ॥
हा हा दैव ! अबे स्यूं करसूं, आप घात करने मैं मरसूं ।
एम कही विललाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ३ ॥
हृदय विदारक सीता रोवे, गगन विहारी पंखी जोवे ।
रया मारा ही कुरलाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

अर्क जटीनो जाईयो रे, ' रत्नजटी ' खग एक ।
रोत्र सुणी सीता तणो रे, मन में करीय विवेक ॥ जीव ॥ ३९ ॥
भगिनी 'भामण्डल' तणो रे, 'रामचन्द्र' नी नार ।
'रावण' जी छलकै लयी रे, लेई चाल्यो अपहार ॥ जीव ॥ ४० ॥
'भामण्डलना' पक्षथी रे, रत्नजटी तलवार ।
सम्बाही सांमो हुवो रे, रावणजी तिणवार ॥ जीव ॥ ४१ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—चन्द्रायणा

भामण्डल की बहिन राम की नार है, रे लेजावे केमके मूढ गींवार है । देनो इणने छोड़ केण तूं मानले, नहींतर देसूं मार निश्चय ए जानले ॥ १ ॥ रावण भाखे रङ्क ! भक्त थारी थई, जा तूं थारे पन्थ मान म्हारी कही । तो पण कर करवाल के ले सामो थयो, वज्यों रावण वहोनक मानत नहीं कयो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

मुलकाणो मनमें घणुं रे, किस्यूं करे ए रङ्क ।
विद्या सबनी अपहरी रे, लांखी राय निशङ्क ॥ जीव ॥ ४२ ॥
पांख विहूणो पंखीयो रे, होवे तेमए देख ।
छोटा म्होटा मूं अंड रे, पावे दुःख विशेष ॥ जीव ॥ ४३ ॥
कम्बू द्वीप कम्बू गीरी रे, गिरतो गिरतो तेह ।
कानो अधिक ओरना रे, आयो थरती छेह ॥ जीव ॥ ४४ ॥

श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय ॥
बीकानेर ॥

॥ श्रीमच्छार्दूलसिंह जित्-गुरवे नमः ॥

अथ तृतीय खण्डं प्रारभ्यते।

दोहा-(सोरठी रागे)

वाग् देवी वरदायनी, कविजन केरी माय ।
मया करीने आपजो, शुद्ध मति सुखदाय ॥ १ ॥
राम चली ऊतावला, आया 'लक्ष्मण' पास ।
रण रङ्गे रमतो खरो. दीठो सो उल्लास ॥ २ ॥
'राम' प्रत्ये 'लक्ष्मण' कहे, तुमतो कियो अकाज ।
अटवी मांहीं एकली, 'सीता' मूकी आज ॥ ३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत क्षेपक तर्ज-सरोता कहां भूल आये ।

सीता को क्यों छोड आये, प्यारे मेरे भैया ॥ टेर ॥
दिवी भोलामण इतनी तुम्हको, सीयका जतन करैया ।
विकट भयङ्कर अटवी इसमें, निशिचर खूब फरैया ॥ सीता ॥१॥
पर्ण कूटी में सीताजी को, एकाकी छोडैया ।
विना बुलाये आये यहां क्यों, वनमें तजी भोजैया ॥ सीता ॥२॥
वार २ सिंहनाद सुनीकर, चित्त में मैं चमकैया ।
जङ्गमें जीते लक्ष्मणजी को. ऐसा कुण मा जैया ॥ सीता ॥ ३ ॥
तोरी भावज जबरन मुझको, तोके पास पठैया ।
रूप मुनि कहै रामायण में. गावो खूब गवैया ॥ सीताको ॥ ४ ॥

दोहा--राम कहै तें तेडीयो, हूं आव्यो अवधार ।
सो कहै मैं नवि तेडीयो, ए प्रपञ्च विचार ॥ ४ ॥
फरी जावो ऊतावला, मति को विणसे काम ।
पाछल थी आवीश हूं, जीतिने संग्राम ॥ ५ ॥
वेगा २ वाटे वही. राम पधार्या जाम ।
नजर न देखे जानकी. मूर्छाणा प्रभु ताम ॥ ६ ॥

यतः उतावलसूं न्याचीयो, दारण भरतो डग्ग ।
वर्ष एक नदी वीसरे, पञ्च रायरा पग्ग ॥

ढाल तेतीशमीं तर्ज—घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो ।
इत उत ढूंढत डोलत वनमें, सा नवि दीये दिखाई हो ॥ १ ॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर ॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो ।
पंख विहूणो पंखी पड़ीयो, दीठो ऊपर आई हो ॥ श्री रामे ॥ २ ॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो ।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो ॥ श्री रामे ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहुंच गये सुख धाम ।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम ! ॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची ।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बड़ी २ बाहें पहूंची ॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम-भरी ।
हे ! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी ॥
आंख खोली सामने, देखे, शोभा धाम ।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम ॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है ?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है ॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो ।
हा राम ! मंत्र है माता का, आराधना उसकी करने दो ॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम ।
भक्तराज ! देखो तुम्हें, करता राम प्रणाम ॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन ।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन ॥
(हा राम !) सिया को एक दुष्ट, (हा राम !) लेगया दक्षिण को ।
(हा राम !) लड़ता था मैं उससे, (हा राम !) छुड़ा न सका उनको ॥
(हा राम !) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो ।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहै नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधी नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे , सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे । प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणी जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो ।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो ।।श्रीरामे।।४।।
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो ।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ।। श्री रामे ।।५।।
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो ।
संचर जाणी आशा आणी. ताम रहै पस्ताई हो* ।। श्री रामे ।।६।।

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो.
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे ।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इतही कूं आयदे ।।
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे ।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दया देख अब सीय कू मिलाय दे ।।

* अरे लम्बे २ वट. तेरे माथे मोटी झट. मेरी सीया बतादे झट ।। अरे मौर. दई दिश दौर, बतादे मेरी सीय को चौर ।। अरे काग सूता क्यं है जाग, सीता गई किण माग ।। अरे सूवा जोतां घणी वार हूवा. बतादे सीता का दूहा—

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो ।
इत उत ढूंढत डोलत वन में, सा नवि दीये दिखाई हो ॥ १ ॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर ॥
सैज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो ।
पंख विहूणो पंखी पडीयो, दीठो ऊपर आई हो ॥ श्री रामे ॥ २ ॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो ।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो ॥ श्री रामे ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहुंच गये सुख धाम ।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम ! ॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची ।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बडी २ बाहें पहूंची ॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम–भरी ।
हे ! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी ॥
आंख खोली सामने, देखे, शोभा धाम ।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम ॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है ?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है ॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो ।
हा राम ! मंत्र है माता का, आराधना उसकी करने दो ॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम ।
भक्तराज ! देखो तुम्हें, करता राम प्रणाम ॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन ।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन ॥
(हा राम !) सिया को एक दुष्ट, (हा राम !) लेगया दक्षिण को ।
(हा राम !) लड़ना था मैं उससे, (हा राम !) छुड़ा न सका उनको ॥
(हा राम !) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो ।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहै नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधी नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे , सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे । प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणो जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो ।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो ॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो ।
मंगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो ।
संचर जाणी आशा आणी. ताम रहै पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो.
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे ।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कीकिल कूं वेग जाई इतही कूं आयदे ॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे ।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दया देख अब सीय कूं मिलाय दे ॥

---

* अरे लम्बे २ वट, तेरे माथे मोटी मट, मेरी सीया वतादे मट ॥ अरे मौर, दई दिश दौर, वतादे मेरी सीय को चौर ॥ अरे काग भूला क्यं है जाग, सीता गई किण माग ॥ अरे सूवा जोतां पग्गी वार हुवा, वतादे सीता का दूहा—

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो ।
इत उत ढूंढत डोलत वनमें, सा नवि दीये दिखाई हो ॥ १ ॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर ॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो ।
पंख विहूणो पंखी पडीयो, दीठो ऊपर आई हो ॥ श्री रामे ॥ २ ॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो ।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो ॥ श्री रामे ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहुंच गये सुख धाम ।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम ! ॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची ।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बडी २ बाहें पहूंची ॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम–भरी ।
हे ! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी ॥
आंख खोली सामने, देखे, शोभा धाम ।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम ॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है ?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है ॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो ।
हा राम ! मंत्र है माला का, आराधना उसकी करने दो ॥
गद्‌ २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम ।
पक्षिराज ! देखो तुम्हें, करता राम प्रणाम ॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन ।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन ॥
(हा राम !) सिया को एक दुष्ट, (हा राम !) लेगया दक्षिण को ।
(हा राम !) लड़ता था मैं उससे, (हा राम !) छुड़ा न सका उनको ॥
(हा राम !) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो ।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहै नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधो नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे, सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे। प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणी जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई मखाई हो।
संचर जाणो आशा आणी. ताम रहे पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो.
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इनही कूं आयदे॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दशा देख अब सीय कू मिलाय दे॥

* अरे लम्बे २ पट. तेरे माथे मोटी लट. मेरी सीता बतादे झट॥ अरे मौर. दई दिश दौर. बतादे मेरी सीय को ठौर॥ अरे काग नुना क्यूं है जाग. सीता गई किस भाग॥ अरे सूवा जोता क्यों काय हूवा. बतादे सीता का कूहा—

स्वामी श्री नथमलजी म. कृत ढाल चेपक तर्ज नणदल री—

अबे री मने नहीं आवड़े, सीता केरे राग हो रघुपति ।
अवर बात गमे नहीं, एक सीता री लाग हो ॥रघु०॥ अबे. ॥१॥
सूना झूपा सहु दीसे, राम पावे दुःख रास हो । रघु० ।
धनी सेज छे रावली, प्रीतवती नहीं पास हो ॥रघु०॥ अबे ॥२॥
आसन शयन विलोकतां, वेदनतो असमान हो रघुपति० ।
माजनीया१ साले नहीं, माले आई ठाण हो । रघु० ॥ अबे॥ ३ ॥

दोहा—द्रुमगहन२ सोच करता फिरे, मारे वन मझार ।
मोह गहला थया रामजी, रुदन करे अनपार ॥ १ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज—जल्लो मेरी जोड़ को

सती मेरी 'जानकी' कुण लेगयो पापी रे ॥ टेर ॥
पतिव्रताथी पदमणी रे, रहती सदा इक रङ्ग ।
वन दुःख साथे सहे रे, कुण कीयो रङ्ग में भङ्ग ॥ सीता ॥ १ ॥
दुःख दीनो मोय पापीयो रे, लेगयो सीता नार ।
'लक्ष्मण' पिण हाजर नहीं रे, कुण करसी तसवार ॥सती॥ २ ॥
क्षिण इक मूर्छा पामतो रे, क्षिण इक होय सचेत ।
अटवी मांही टलवले रे, सीता केरे हेत ॥ सीता ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

लक्ष्मण साथे, खर खेचर सो, मांडे ताम लड़ाई हो ।
'त्रिशिरा' लघु भाई खर राखी, आप करे अधिकाई हो ॥श्री॥७॥
रथ बैसी ने लक्ष्मण साथे, झूंझतणी विधि ठाई हो ।
'लक्ष्मण' वीर मार्ग नांख्यो पहेली गूढ़ वधाई हो ॥ सीता ॥८॥

ढाल चेपक तर्ज—खड़का ।

'लक्ष्मण' वीर अति धीर शूरपणे, लटन चपोट अति चोट वाहे ।

टव्वः १ [illegible] गयां साले नहीं, साले आडी ठाण ।
[illegible] गयो साले नहीं, साले पड़ीयो पिलाण ॥
२ [illegible] विलखन [illegible] में, कुण नहीं सोच कीयो ।
[illegible] हुवो [illegible], रघुपति रोय दीयो ॥

विकट रणभूमी में भट्ट झट्ट आवीया, सामी आवे जको मृत्यु चाहै ॥ ल० ॥ १ ॥ बाण सणणण वहै चोट कोई ना सहै, कहै मुख खेचरा एम वाणी । वनतणो वासीयो सहुने ए त्रासीयो, नासीया सहु जणा भ्रान्ति आणी ॥ ल० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

लङ्क पयालां केरो स्वामी, "चन्द्रोदय' सुत सोई हो ।
'वीरविराध' सबल बलसाजी, आवी सहाई होई हो ॥ श्री ॥ ९ ॥
सेवक सोई आडो आवे, काम पड़े नहीं काचो हो ।
'लक्ष्मण' साथे 'विराध' वदेरे, सेवक हूं छूं साचो हो ॥श्री॥१०॥
बाप हणीने लङ्का लीधी, रीस घणी छे आगे हो ।
स्वामी कारज वैर बापको, जगमांही जश जागेहो ॥ श्री रामे ११॥
तुम्ह आगेए कीट पतंगा, भृत्य पणूं हूं भाखूं हो ।
द्यो आदेश विशेष बतावूं, रण अखयायति राखूंहो ॥ श्री रामे १२॥
ईषत् हसि लक्ष्मणजी बोले, स्योंरे सहायज शूराहो ।
आपोबले बलवन्त कहावे, परबल नित्य अधूराहो ॥ श्री रामे १३ ॥
जेठो बन्धव राम नरेश्वर, दुःखीजन प्रति पाल्हो ।
देसे तुझने राज्य तुम्हारो, शत्रू कन्द कुदाल्हो ॥ श्री रामे १४ ॥
देखी विराध विरोधीखर, तो बोल्यो रोष प्रकाशीहो ।
शम्बूक' हणतां सहायज एहने, तूं वरीयो वनवासीहो ॥ श्रीरामे १५॥
लक्ष्मण' भाखे' खर मतभूके, नन्दन त्रिशिरा भाई हो ।
उणही पन्थेतूंही चलावूं तोरे सुमित्रा माईहो ॥ श्री रामे १६ ॥
मार्यो के मार्यो में मूरख, जीभतजी सुभटाईहो ।
करी प्रगट मोढा पक्षपाती, लाजे नाम बुलाई हो ॥ श्री १७ ॥
एम कहन्तां नट जिम नाचे, बाणे अम्बर छाई हो ।
बाण' क्षुरप्र१ खर शिरछेद्यूं अवर रमा मुग्ध माईहो ॥श्री रामे१८॥
'दूखण' दल लेईने दोड्यो, तेपिण मारी लीधो हो ।

१ पासवाने आकारे माया ।

स्वामी श्री नथमलजी म. कृत ढाल चेपक तर्ज नणदल री—

अबे री मने नहीं आवडे, सीता केरे राग हो रघुपति ।
अवर बात गमे नहीं, एक सीता री लाग हो ॥रघु०॥ अबे. ॥१॥
सूना झूपा सहुदीसे, राम पावे दुःख रास हो । रघु० ।
सूनी सेज छे गवली, प्रीतवनी नहीं पास हो ॥रघु०॥ अबे ॥२॥
आसन शयन विलोकतां, वेदनतो असमान हो रघुपति० ।
माजनीया१ माले नहीं, माले आई ठाण हो । रघु० ॥ अबे॥ ३ ॥

दोहा—इमगहन२ सोच करता फिरे, मारे वन मझार ।
मोह गहला थया रामजी, रुदन करे अनपार ॥ १ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज—जल्लो मेरी जोड़ को

सती मेरी 'जानकी' कुण लेगयो पापी रे ॥ टेर ॥
पतिव्रताथी पदमणी रे, रहती सदा इक रङ्ग ।
वन दुःख साथे सहे रे, कुण कीयो रङ्ग में भङ्ग ॥ सीता ॥ १ ॥
दुःख दीनो मोय पापीयो रे, लेगयो सीता नार ।
'लक्ष्मण' पिण हाजर नहीं रे, कुण करसी तमवार ॥सती॥ २ ॥
क्षिण इक मूर्छा पामतो रे, क्षिण इक होय सचेत ।
अटवी मांही टलवले रे, सीता केरे हेत ॥ सीता ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

लखमण साथे, खर खेचर सो, मांडे नाम लड़ाई हो ।
'त्रिशिरा' लघु भाई खर गखी, आप करे अधिकाई हो ॥श्री॥७॥
रथ बेसी ने लक्ष्मण साथे, झूंझनणी विधि ठाई हो ।
'लक्ष्मण' वीरे मारी नांख्यो पहली सह वधाई हो ॥ सीता ॥८॥

ढाल चेपक तर्ज—खड़का ।

'लक्ष्मण' वीर अति धीर शूरपणे, लड़त चपोट अति चोट वाहै ।

दश० १ मैना गयां माले नहीं. माले आई ठाण ।
पंख गये माले नहीं. माले पड़ीयो पिजाण ॥
२ दोहा: त्रिभुवन जगत में, कुण नहीं सोच कीयो ।
सीता हरण दुखी जद सटके, रघुपति रोय दीयो ॥

आपण की धो आपसमार्यो, अवरांसु जश नवि दीधो हो ॥ श्री १९
लेई साथे विगध विदीतो, उमग्यो उमग्यो आवेहो ।
एटले रामू नेत्र फरकियू, ताम असाता पावेहो ॥ श्री रामे २० ॥
अलगीथी दीठो अलवेसर१, अटवी मांही भमतो हो ।
नारी वियोगे योगीज हुओ, आरतो मांही रमतो हो ॥ श्री २१ ॥
लई विखवाद विशेप विचारे, ए तो मैंधुर जाणी हो ।
'अटवीमां एकाकी विशेषे, राम गवेषे२ राणीहो ॥ श्री २२ ॥
लक्ष्मण आगे आवी ऊभो, राम' नसांमो३ देखे हो ।
गिरह माल सरीखो साले, नभसूं वात विशेषे हो ॥ श्री रामे २३ ॥
पान पान करी वनमेंसोधो, नारी नयणे न आवीं हो ।
वन देवी तुमछोवन वासिनी, थोछो कयूंन बतावी हो ॥ श्री २४ ॥
तुम४ भरोसे नारी मूकी, मैंतो काम सीधायो हो ।
कामन की धो नारगमाई, जग अपजश बोलायो हो ॥ श्री २५ ॥
भाई भरोसे थारे मूक्यो, त्रिया रखवाली कामो हो ।
आयोथो सो एकन हुई, ओछो दीठो रामो हो ॥ श्री रामे २६ ॥
राजभार देवा नवि दीधो, धन्य! कैकयी मात हो ।
नारीन राखी शक्यो नरनिश्चे, तोकिम राज्य रखात हो ॥ श्री २७
एम कहतो राम नरेश्वर, धरणी पड्यो मूर्छाई हो ।
राम दुःखे पशु पंखी दुःखिया, ऊभां आगे आई हो ॥ श्री ।२८।
'लक्ष्मणजी' कभी ! शीतलताई बोले आवी आगेहो ।
अरे! कभी छे कार्य कि मूंए, मइं नमूह लागेहो ॥ श्री २९ ॥
भाई तुम्हारे [illegible] आयो, म्हारो कन्द निकन्दी हो ।
वचन सुधारसथूं सींचाणो, लहै संज्ञा आनन्दी हो ॥ श्री ३० ॥
देखे लक्ष्मण ऊभोआगे, उठी मिलियो धाई हो ।
आगे दोई मिल्या त्रियान रखाणी, हरखाणी उंमाई हो ॥ श्री ३१ ॥
लक्ष्मणु सौमित्री इम भाखे, प्रभु ए आरती म आणो हो ।

१–दूर–२ ढूँढे–३ आक्रन्द–४ वनदेवीके भरोसे–

नादभेद करी ने किणईके, सीता लीधी जाणोहो ॥ श्री ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मतकरजो कई प्रीत–

लिछमन मोही कहोरी, कौनहरी है सीत ॥ टेर ॥
लेगयो नार कवहून रहूंगो अवमें हूंगो अतीत ॥ ली ॥ १ ॥
तुमसा वीर प्रवल वलवन्ता, लही खेचरसूंजीत ॥ ली ॥ २ ॥
अब दो वंधव होके सामिल, दुष्ठको करो फजीत ॥ लि ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज कपिरे प्रीया साथे—

लक्ष्मण भाई' सीता को कौन हरी ॥ टेर ॥
इस मंडीया पर कागऊडत है, देखो आसूनी परी ॥ लक्ष्मण १ ॥
के कोई विद्या धर लेगयो, के कोई सिंह चरी ॥ ल ॥ २ ॥
झाड़ झाड सब वनकूढूंढे, तोही न खवरपरी ॥ ल ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

तेहना प्राण संघाते सीता, वेगे पाछी आणूं हो।
तो तो लक्ष्मण नाम हमारूं, नहींतो झूठ थपाणूं हो॥ श्री ३३ ॥
वीर विराध खरोओमिलियो, आपो वोल उदारू हो।
लंक पयाले प्रभू थिरथायो, वचन पले जिम चारू हो ॥ श्री ३४॥
सीता खवर करेवा कारण, भट मोकलिया भारी हो।
वीर' वीराध घणोजल फलीयो, अवसर सेवाप्यारीहो ॥ श्री ३५ ॥
सुभट सहु पृथिवी फिरआया, सीता खवर न पामी हो।
अधोमुखा ऊभा प्रभु आगे, वतलावे तव स्वामी हो ॥ श्री ३६ ॥

(शिखरिणी)

सियाजी रागहणा, निरखहरि नेणां जलभरे।
प्रियाजी राप्यारा, सहज गुण भाग हियधरे।
हरे चिन्ता सारी, तदपि दुःखभारी मनकरे।
विजोगीहै जोगी भगती रनभोगी सवपरे ॥ १ ॥

(चौपाई)

राम-लक्षमण! देख सियाग गेणां। ओलखलाल? निरख निजनेणां।
लक्ष्मण- मैं नेणां जगदम्बन जोई। तन-भूषण जाणू नहीं कोई।

आपण की घो आपममार्यो, अवरांसु जश नवि दीधो हो ॥ श्री १९
लेई माथे विगध विदीतो, उमग्यो उमग्यो आवेहो ।
एटले वामू नेत्र फरकियू. ताम असाता पावेहो ॥ श्री रामे २० ॥
अलगीथी दीठो अलवेसर१. अटवी मांही भमतो हो ।
नारी वियोगे योगीज हुओ, आरतो मांही रमतो हो ॥ श्री २१ ॥
लई विखवाद विशेष विचारे, ए तो मैंधुर जाणी हो ।
'अटवीमां एकाकी विशेषे, राम गवेषे२ राणीहो ॥ श्री २२ ॥
लक्ष्मण आगे आवी ऊभो, राम' नसांमो३ देखे हो ।
विरह साल मरीग्यो साले, नभमूं वात विशेषे हो ॥ श्री रामे २३ ॥
पान पान करी वनमेंसोधो, नारी नयणे न आवीं हो ।
वन देवी तुमछोवन वामिनी, द्योछो क्यूंन वतावी हो ॥ श्री २४ ॥
तुम४ भरोसे नारी मूकी. मैंतो काम मीधायो हो ।
कामन की धो नारगमाई, जग अपजश बोलायो हो ॥ श्री २५ ॥
भाई भरोसे थारे मूक्यो. त्रिया रखवाली कामो हो ।
आयोपो सो एकन हुई, ओछो दीठो रामो हो ॥ श्री रामे २६ ॥
राजभार देवा नवि दीधो, धन्य? कैकेयो मात हो ।
नारीन गमी शकयो नरनिश्चे. तोकिम राज्य रखात हो ॥ श्री २७
एम कहेतो राम नरेश्वर, धरणी पड्यो मूर्च्छाई हो ।
राम दुःखे पशु पंखी दुःखिया, ऊभां आगे आई हो ॥ श्री ।२८।
'लक्ष्मणजी' करी ! शीत कराई बोले आवी आगेहो ।
अरे ! करो छो कांय कि मूंए, महूं नेभूटु लागेहो ॥ श्री २९ ॥
भाई तुम्हारो [illegible] आयो, रावनो कन्द निकन्दी हो ।
वचन सुधारसवुं सींचायो. लहे संज्ञा आनन्दी हो ॥ श्री ३० ॥
देखे' लक्ष्मण ऊभोआगे. ऊठी मिलियां थाई हो ।
अन्तः दोई मिली विपान ग्वाणी, हरखाणी उंमाई हो ॥ श्री ३१ ॥
लक्ष्मणु सौमीत्री इन माखे. प्रभु ए आरती म आणो हो ।

१—नजर—२ शोधे—३ [illegible]—४ वनदेवीके भरोसे—

नादभेद करी ने किणईके, सीता लीधी जाणोहो ॥ श्री ३२ ॥

ढाल चेपक तर्ज मतकरजो कई प्रीत—

लिछमन मोही कहोरी, कौनहरी है सीत ॥ टेर ॥
लेगयो नार कबहून रहूंगो अबमे हूंगो अतीत ॥ ली ॥ १ ॥
तुमसा वीर प्रबल बलवन्ता, लही खेचरसूंजीत ॥ ली ॥ २ ॥
अब दो बंधव होके सामिल, दुष्टको करो फजीत ॥ लि ॥ ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज कपिरे प्रीया साथे—

लक्ष्मण भाई' सीता को कौन हरी ॥ टेर ॥
इस मंडीया पर कागऊडत है, देखो आसुनी परी ॥ लक्ष्मण १ ॥
के कोई विद्या धर लेगयो, के कोई सिंह चरी ॥ ल ॥ २ ॥
झाड झाड सब वनकूढूंढे, तोही न खबरपरी ॥ ल ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

तेहना प्राण संघाते सीता, वेगे पाछी आणूं हो ।
तो तो लक्ष्मण नाम हमारूं, नहींतो झूट थपाणूं हो ॥ श्री ३३ ॥
वीर विराध खरोओमिलियो, आपो बोल उदारू हो ।
लंक पयाले प्रभू थिरथायो, वचन पले जिम वारू हो ॥ श्री ३४ ॥
सीता खबर करेवा कारण, भट मोकलिया भारी हो ।
वीर' वीराध घणोजल फलीयो, अवसर सेवाप्यारीहो ॥ श्री ३५ ॥
सुभट सहु पृथिवी फिरआया, सीता खबर न पामी हो ।
अधोमुखा ऊभा प्रभु आगे, बतलावे तब स्वामी हो ॥ श्री ३६ ॥

(सिखरिणी)

सियाजी रागहणा, निरखहरि नेणां जलभरे ।
प्रियाजी राप्यारा, सहज गुण सागर हियधरे ।
हरे चिन्ता सारी, तदपि दुःखभारी मनकरे ।
विजोगीहै जोगी भगती रसभोगी नवपरे ॥ १ ॥

(चौपाई)

राम-लक्षमण! देवर सियाग गेणां । ओलखलाल? निरख निजनेणां ।
लक्ष्मण- मैं नेणां जगदम्बन जोई । तन-भूषण जाणूं नहीं कोई ।

ए नूपर माता राजाणूं । नित पग वन्दनसूं पहीचाणूं ।
दोषन कोई सेवक जननो, उद्यमनो अधिकारी हो ।

ढाल मूलगी

प्रभु कुदिशाए कारज न सरे, सुदिशा कार्य समारी हो ॥श्री॥३७॥
वीर 'विराध' 'प्रभो' पग लागी, अरज करे अनुरागी हो ।
थापी पयालं दोडूं दश दिशे, कारज केड़े लागी हो॥ श्री ॥३८॥
वीर विराध सबल बल साथे, रामसूं लक्ष्मण दोई हो ।
लंक पयाले चाली आया, खबर लहै सहु कोई हो ॥ श्री ॥३९॥
'खर' नो नन्दन 'शम्बूक' भाई, 'सुन्द' नरेश्वर आप हो ।
सामो आवी खेत जडावे, हाथग्रही शर चाप हो ॥श्री रामे॥४०॥
वीर विराध विशेषे लडवे, वारु वैरज वाले हो ।
कांहय हाथी कांहय पायक, लोक वचन सम्भाले हो ॥श्री॥४१॥
'राम' सु लक्ष्मण देखी रण--मुखे, शूर्पनखा सुत लेई हो ।
'रावण' पासे पधार्या पापण, घरनो चोड करेई हो ॥श्री॥ ४२ ॥
वीर विराध' तीहांस्थिर थाप्यो, आरती सघली टाले हो ।
महोटानी१ मति महोटी होवे, महोटा बोल्यू पाले हो ॥ श्री॥४३॥
राम सुलक्ष्मण खर ने महीले, वसिया आप विराजे हो ।
पुर राज पदवीगविराधज, सुन्द सरे सुखमाजे हो ॥ श्री ४४ ॥
ढाल भली ए नीगुणमी, वीर विराध वधायो है ।
केशराज ऋषिराज कहेरे, राज्य गयो वेहोडायो है ॥ श्री ॥ ४५ ॥

दोहा (नहरागे)

सनाम्यो वियासदा, हेमवंत गिरिनाय ।

नोट ॥ वीर विराध के मुकट सीता की खोज मे गयेथे- रास्तेमें मिलेहुवे गहना लेकर वापिस राम- लक्षमण को दिखलाये ॥
यथा कुण्डले नैवजानामि- नैवजानामि कंकण नूपुरमेव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥ १ ॥
१ म्होटां केरी गुण नजर, ओछां मिले लटाक ।
ज्यां पग छलकां थान, थूल, मूंगा होय मटाक ॥

साहसगति, साधीसही, तवही आयो धाय ॥ १ ॥
तारा नो अभिलासियो, आतुर थयो अपार ।
रूपधरे सुग्रीवनो नकरे कांई विचार ॥ २ ॥
पुगी किष्किन्धा आवीयो, करि सरिखो सुविलास ।
गति मति वाणि विचारवे, चीजो रचि अकाश ॥ ३ ॥
वनक्रीडा करवाभणी, गयो ताम 'सुग्रीव'।
एघरमें चलि आवियो, अवसर लही अतीव ॥ ४ ॥
तामधणी घर आवियो, रोकाणो दरबार ।
घरमें छे सुग्रीवजी, वातपड़ी सुविचार ॥ ५ ॥
दो 'सुग्रीव' विचारने, वाली तणोते पूत ।
काकीघर ताला जड़े, राखे वा घरसूत ॥ ६ ॥
चन्द्ररस्मि रलियामणो, युवराजा जयवन्त ।
वाली वीरनो जाईयो, बल प्रबल नहींअन्त ॥ ७ ॥
आवीने आडोरह्यो, कोईन आगेजाय ।
कूटी वाहर काढिया, वलियाथी इमथाय ॥ ८ ॥

ढाल चौतीशवीं तर्ज मुरली

'तारा' प्रत्यक्ष मोहनी, तारा अधिक रसाल ।
'तारा' सुग्रीव सोहनी, हो, तारा अति सुविशाल तारा ॥
तारा रूप अनूपम तारा, तारा ए मोह्यो भूप तारा ।
तारा मोहन वेली तारा, तारा कोमल केली ॥ टेर ॥ १ ॥
चौदह अक्षौहणी नो धणी, राजा श्री सुग्रीव ।
पार नहीं प्रभु तातणोहो, मारिव आपनदीव ॥ तारा ॥ २ ॥
एके डांगे मारीया, साचा झूठा दोई ।
ज्ञान विना निश्चय नहीं हो, लोकों थी शूं होई ॥ तारा ॥ ३ ॥
साचो मिलसे साचने, झूठो झूठे जोई ।
झूंठ तणी झड़ ऊपलेहो, जोमुनतारे कोई ॥ तारा ॥ ४ ॥
हंस अने बक ऊजला, लोकां एक प्रसंग ।

नीर नीर ने पारखे हो, बग बग हंस ही हंस ॥ तारा ॥ ५ ॥
काच अने मणि सारसी, लोकां एक ही वाच ।
पण पारखियां आगलेहो, मणि मणि काच ही काच ॥ तारा॥६॥
काग अने तो कोकिला, वरणे एक सुहाग ।
मास वसन्त विराजियां हो, पिक २ काग ही काग ॥ तारा ॥७॥
मंत्री ने पंचों मिली, निवेड्यो एहवो न्याय ।
सात सात अक्षौहणी हो, दोई पक्षे थाय ॥ तारा ॥ ८ ॥
दोई लडो ए आप में, साचे देव सहाय ।
झूठो नासी जाय सही हो, सहु ने आवी दाय ॥ तारा ॥ ९ ॥
सेन जुदायां मोकली, ऊभा दोई आय ।
लोक लड्या आप आपणा हो, झगड़ो तो न मिटाय ॥ तारा ॥१०॥
लोक न चाहे नारी ने, चाहे ए दो भाई ।
कोई मरो को जीवजो हो, लोकां लागे कांई ॥ तारा ॥ ११ ॥
तब दोई सुग्रीवजी, लडिया शस्त्र उपाड़ी ।
शांति न रागी खेद में हो, तोहि न मेटी राड़ी ॥ तारा ॥ १२॥
दोई तो समतोलजी दोई विद्यावन्त ।
दोई तो खेचर खग हो, दोई तो मयमन्त ॥ तारा ॥१३॥
हाथी सुं हाथी अड़े, सिंह साथे सिंह ।
सांप साप मिटे नहीं हो, शूरे शूर अबीह ॥ तारा ॥ १४ ॥
[illegible] ने सम्भारियो, हनुमन्त आयो चाली ।
[illegible] सुग्रीव रूठियो हो, न सके झगड़ो टाली ॥तारा॥१५॥
सुग्रीव चितमें चिन्तवे, सांचो एतो सोच ।
कहने तने कहने भजे हो, लोको ए आलोच१ ॥तारा॥१६॥
वाली हुतो बलवन्तजी, जग जश साचो जोर ।
सो तो हुओ संजमी हो, भट ए रहियो सोर ॥ तारा ॥ १७ ॥
'चन्द्रगर्भा' बलिया घणूं, मरदों में मरदान ।

१ पश्चात्ताप ।

खबर न लाभे एटली हो, कोण निज कोण छे आन१ ॥ १८ ॥
'दशकंधर' छे दीपतो, लम्पट मांही गणाय।
घातसुण्यो हणी दोयने हो, ताश लिये बुलाय ॥ तारा ॥ १९ ॥
एतादृश२ संकट पड़े, कामम मारण हार।
'खर' थो सो रामे हण्यो हो, करतो पर उपकार ॥ तारा ॥ २० ॥
शरण ग्रहूं श्रीरामनो, लक्ष्मण सूं अभिराम।
जेम 'विराध' निवाजिया हो, मारसे हम काम ॥ तारा ॥ २१ ॥
लंक पयालां छे मही, आज लगे ओ ईश।
बोलाव्यो जावे मही हो, कारज विश्वा वीश ॥ तारा ॥ २२ ॥
दूतज छानों मोकल्यो, वीर विराध ही पास।
बात जणावी विस्तरी हो, पायो सो उल्हास ॥ तारा ॥ २३ ॥
वेगा आवो वेगसूं आवो करो अरदास।
काम तुम्हारो मारसे हो, देसे अरिने त्रास ॥ तारा ॥ २४ ॥
सन्तोषा णो स्वामीजी, निसुणो वचन अमोल।
चलते छांटो अमितणो हो, आरति मांही सुबोल ॥ तारा ॥ २५ ॥
साहण वाहण सामटे, चाली गयो सुग्रीव।
आगे धरी विराधने हो, आरती वन्त अतीव ॥ तारा ॥ २६ ॥
चरण कमल प्रभुना नमी, भाखी मननी बात।
पर दुःख कापण ने सहीहो, विरुद्ध अछे विख्यात ॥ तारा ॥ २७ ॥
हम तुमने छे सारिखा अबला दुःख अपार।
हमारो तुम भांजसोहो, थांरो श्रीकरतार ॥ तारा ॥ २८ ॥
एह सुणन्तां बातजी, गहवरियोराजान।
पर दुःख थी दुःख आपणे हो, साले साल समान ॥ तारा ॥२९॥
दुःख हैया में सांचरी, सुग्रीव ही सन्तोष।
दीधो देव दया करी हो, कीधो सुखनो पोष ॥ तारा ॥ ३० ॥
वीर विराध कहे सही, आपांने ए काज।

---

१ दूसरा। २ जैसा यथा तैसा।

करवो छे उतावलो हो, न कियां पावो लाज ॥ तारा ॥ ३१ ॥
कपि पति भाखे कामजी, आपां करवूं एह ।
गुमनो होई सोधसूं हो, जई धरती ने छेह ॥ तारा ॥ ३२ ॥
द्वीप अने परद्वीप नी, सुधी अणावूं आप ।
तो तो साचो जाणजो हो, 'सुग्रजा' छे बाप ॥ तारा ॥ ३३ ॥
प्रभुजी चाली आविया, पुरी किष्किंधा देख ।
जाणे अलका[1] अभिनवी हो, पायो सुख विशेष ॥ तारा ॥ ३४ ॥
बीजोर[2] बोलावी लियो, ऊभो आवी खेत[3] ।
दोई लड्या नवि जाणिया हो, साच झूंठ ही हेत ॥ तारा ॥ ३५ ॥
'वज्रावर्त' नामथी, धनुष चढाव्यो देव ।
विद्यागई टंकार थी हो, प्रगट थयो ततखेव ॥ तारा ॥ ३६ ॥
लम्पट परनारी तणो, धींठा मांहीं धींठ ।
जग सघलो अवलोकतां हो, तुम सम अवर न दीठ ॥तारा॥३७॥
एक बाणसूं मारियो, 'साहस गति' सयतान[4] ।
एक चपेटे सिंहने हो, हरिण लहे अवसान[5] ॥ तारा ॥ ३८ ॥
वीर विराध तणी परे, थिर थाप्यो कपिनाथ ।
साचो करी सहु देखतां हो, आणी मेल्यो साथ ॥ तारा ॥ ३९ ॥
त्रयोदश[6] कन्या भली, राम प्रत्ये आपन्त ।
प्रीति रीति काठी करी हो, कपिपति तो थापन्त ॥ तारा ॥ ४० ॥
राम कहे कपिराजिया, तूं वाचा सम्भार[7] ।
वर्षावाली पाछली हो, पहोली सीता वार ॥ तारा ॥ ४१ ॥
ढाल भली चौतीसमीं, कपिपति काम समारी ।
केशराज ऋषिजी कहे हो, अब सोधीजे नारी ॥ तारा ॥ ४२ ॥

दोहा (गुजरी रागे)

'रत्नजटी' खेचरो, आज पड्यो अवधारी ।
'राम' नी सुणी सुणावणी, आणी मिली बहु नारी ॥ १ ॥

---

१ कुबेर भण्डारी नी नगरी (लंका उत्तर) २ बनावटी सुग्रीव । ३ रणभूमि
४ शैतान (राक्षस के तुल्य) ५ मृत्यु । ६ तेरह । ७ यादगार ।

दिवसवे चारने आंतरे, शूर्पणखाने 'सुन्द'।
लंका नगरी आविया, वरसे आंसू बुन्द ॥ २ ॥
'शूर्पनखा' सुहामणी, करती अधिक विलाप।
'रावण' ने गले लागीने, दीन वदे अति आप ॥ ३ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आईरे पनोती जरासिधने।

आंई रेपनोती रावण रायनेरे, पापिणी पाप रो मूलरे।
सासरीया सघला तणोरे, कर आई उन्मूलरे ॥ आई ॥ १ ॥
रावण नाश करायवारे, आई लंकमझाररे।
चलती जिहांजावे गाडरीरं, तिहां २ चालण हाररे ॥ आई ॥ २ ॥
आंसुडा लूया निज हाथसूंरे, चांपी चांपी हिरदामझाररे।
आस्वासन देवेघणोरे, पूछे सकल समाचाररे ॥ आई ॥ ३ ॥

दोहा– कन्त हण्यो कुंवर हण्यो, हणिया देवर दोय।
खेचर चउद हजारनो, हन्ता एकसूं जोय ॥ ४ ॥
लंक पयाले आवीयारे, हणिया अवर अगाध।
रांक जेम हम काढीया, वसियो वीर विराध ॥ ५ ॥
बंधव तुम बैठांथकां, वरते ए अन्याय।
घरती दिन दो चारमें, जातीही देखाय ॥ ६ ॥
एक सुवर्णे सामलो, बीजो पीलेवान।
वनवासी छेभीलडा, पण नहीं केहने मान ॥ ७ ॥
वसवा भाणेजा भणी, देश अनेरो हेर।
सगो सगे आवे नहीं, कोई दिनों के फेर ॥ ८ ॥
ए सघली श्रवणेसुणी, बोले वीर विवेक।
घटिना फेराघणा, घटनो तो एक ॥ ९ ॥
पखाली कीडीनणो मुआमें दिनजात।
मारी करसूं पाधरा, अवर चलावो वात ॥ १० ॥
वात नहीं वतकानहीं, नहीं राग नहीं रंग।
राज काज भावे नहीं, होई रह्यो विरंग ॥ ११ ॥

करयो छे उतावलो हो, न कियां पावों लाज ॥ तारा ॥ ३१ ॥
कपि पति भाखे कामजी, आपां करवू एह ।
सुमनो होई सोधसूं हो, जई धरती ने छेह ॥ तारा ॥ ३२ ॥
द्वीप अने परद्वीप नी, सुधी अणावूं आप ।
तो तो साचो जाणजो हो, 'सुररजा' छे बाप ॥ तारा ॥ ३३ ॥
प्रभुजी चाली आविया, पुरी किष्किंधा देख ।
जाणे अलका[१] अभिनवी हो, पायो सुख विशेष ॥ तारा ॥ ३४ ॥
बीजोर[२] बोलावी लियो, ऊभो आवी खेत[३] ।
दोई लड़ता नवि जाणिया हो, साच झूंठ ही हेत ॥ तारा ॥ ३५ ॥
'वज्रावर्तज' नामथी, धनुष चढाव्यो देव ।
सिधारई टंकार थी हो, प्रगट थयो ततखेव ॥ तारा ॥ ३६ ॥
लम्पट परनारी तणो, धीठा मांहीं धीठ ।
जग सघलो अवलोकतां हो, तुम सम अवर न दीठ ॥तारा॥३७॥
एक बाणसूं मारियो, 'साहस गति' सयतान[४] ।
एक चपेटे सिंहने हो, हरिण लहे अवसान[५] ॥ तारा ॥ ३८ ॥
वीर विराध तणी परे, थिर थाप्यो कपिनाथ ।
साचो करी सहु देखतां हो, आणी मेल्यो साथ ॥ तारा ॥ ३९ ॥
त्रयोदश[६] कन्या भली, राम प्रत्ये आपन्त ।
प्रीति रीति कांटी करी हो, कपिपति तो थापन्त ॥ तारा ॥ ४० ॥
राम कहे कपिराजिया, तूं साचा सरदार[७] ।
सरवालो पाछलो हो, पहोलो सीता वार ॥ तारा ॥ ४१ ॥
ढाल भली चौतीसमीं, कपिपति काम समारि ।
केशराज ऋषिराजी कहे हो, अब सोधीजे नारि ॥ तारा ॥ ४२ ॥

दोहा (गुजरी रागे)

'रामचंद' घर रोवणो, आज पड्यो अवधारि ।
'खचर' नी सुणी सुतावणी, आणी मिली बहु नारि ॥ १ ॥

---

१ कुबेर भण्डारी की नगरी (किस नगर) २ बनावटी सुग्रीव । ३ रणभूमि
४ शैतान (राक्षस के तुल्य) ५ मृत्यु । ६ तेरह । ७ यादगार ।

दिवसवे चारने आंतरे, शूर्पखाने 'सुन्द'।
लंका नगरी आविया, बरसे आंसू बुन्द ॥ २ ॥
'शूर्पनखा' सुहामणी, करती अधिक विलाप।
'रावण' ने गले लागीने, दीन वदे अति आप ॥ ३ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आईरे पनोती जरासिधने।

आई रेपनोती रावण रायनेरे, पापिणी पाप रो मूलरे।
सासरीया सघला तणोरे, कर आई उन्मूलरे ॥ आई ॥ १ ॥
रावण नाश करायवारे, आई लंकमझाररे।
बलती जिहांजावे गाडरीरे, तिहां २ वालण हाररे ॥ आई ॥ २ ॥
आंसुडा लूया निज हाथसूंरे, चांपी चांपी हिरदामझाररे।
आस्वासन देवेघणोरे, पूछे सकल समाचाररे ॥ आई ॥ ३ ॥

दोहा– कन्त हण्यो कुंवर हण्यो, हणिया देवर दोय।
खेचर चउद हजारनो, हन्ता एकसूं जोय ॥ ४ ॥
लंक पयाले आवीयारे, हणिया अवर अगाध।
रांक जेम हम काढीया, वसियो वीर विराध ॥ ५ ॥
बंधव तुम बैठांथकां, वरते ए अन्याय।
घाती दिन दो चारमें, जातीही देखाय ॥ ६ ॥
एक सुवर्णे सामलो, बीजो पीलेवान।
वनवासी छेभीलड़ा, पण नहीं केहने मान ॥ ७ ॥
वसवा भाणेजा भणी, देश अनेरो हेर।
सगो सगे आवे नहीं, कोई दिनों के फेर ॥ ८ ॥
ए सघली श्रवणेसुणी, बोले वीर विवेक।
घटिना फेराघणा, घटनो तो एक ॥ ९ ॥
पखाली कीड़ीतणो मुआमें दिनज्ञात।
मारी करमूं पाधरा, अवर चलायो बात ॥ १० ॥
बात नहीं वतकानहीं, नहीं राग नहीं रंग।
राज काज भावे नहीं, होई रह्यो विरंग ॥ ११ ॥

नींद नहीं लीलानहीं, फूल नहीं तम्बोल ।
भोजन पाणी पण नहीं, सुण्या न भावे बोल ॥ १२ ॥
हांसी नही गमननहीं, नहीं भोग नहीं योग ।
माणस मुआ सारीसो, होई रह्यो तस सोग ॥ १३ ॥
स्यानो हुवो खाटले, पड्यो रहै नरनाथ ।
गुंग मुंग बोले नही, आरती करे मह्न साथ ॥ १४ ॥

ढाल चोपक मूलगी–

'मंदोदरी' चिन्ते तिनवारे, नाह दिलबात नहीधारे, पूछ्यां विन नहीं सरेम्हारे आई तव रावण' पे चाली, विनय कर पूछेहै आली सत्य व्रत पाली ॥ ६० ॥

ढाल पंनीशर्वा– तर्ज मेरे मन एसी आणबनी–

थारा चित्तमें कांई बसी मंदोदरी,
मांड़ो पति देखी पूछेबात इसी ॥ टेर ॥
परवाड़ अंधारे आये, घटतो जाय शशी ।
तेज हैज प्रताप प्रक्षीणां, शोभा लाज खसी ॥ थारा ॥ १ ॥

भुवनचंदजी कृत, ढाल चोपक तर्ज महीलांमे बैठी हो राणी कमलावती-

राणी' मन्दोदरी वाणी इमकहे, सांभलजो नरनाथ ।
तीन खण्डरोहो थारे सायबी, नहीं कोई दीसे उत्पात ॥
सांभल महाराजा आज कांई लागीहो चिन्ता आपने ॥ टेर ॥ १॥
सहस अठारेहो थारे सुन्दरी, तेमांहि हूं पटनार ।
अर्जी करूंछूं साहिब आपसूं, भाखोनी बात विचार॥सांभल॥ २॥
रंग रागनो दीसेनही, और नहीं दीसे विनोद ।
आसन दूषण दीसो अतिघणा, केकोई दीखोरे प्रबोध सांभल ॥३॥
के कोई कामन कीधा आकरा, के कोई देवे कीधो दोस ।
के कोई वैरी आयो सामूहो, के कोई निजवर रो मोच सांभल ॥४॥

ढाल मूलगी-

सुन अछे तुम सुख सल्लनी, भाखो जिसी तिसी ।
आर्तीसत्न उदास थईने, मनतू जाय घसी थारा ॥ २ ॥

रावण भाखे सुण मंन्दोदरी, चित्तमें आण चुभी ।
सीता सूरति भालभलीए हैया मांही खुभी ॥ धारा ३ ॥

सवैया-३१ सा-रावण उवाच

भ्रकुटी तो भलीकबांन नेण तो समारेबांण,
त्रिया तीनलोकमें घडी न घडानी है ॥
दाडिम के दर्स जैसे रसनासे जपतराम,
अधरनकी ललीसो प्रबलीतो पुरानी है ॥
कण्ठनो अतिही झीण वासकसी वनीवीन,
मस्तकमें मोतिन की मांगही भरानी है ।
रावण' कहै मंन्दोदरी' वातमें अनोखी करी,
रघुनाथजी की रानीसो जानकी हर आनी है ॥ १ ॥

(मन्दोदरी)

अरे ! कन्त कुबुद्धि कौन पे सिखायो तो कूं,
ऐसी कुमति करी तूं करन' कुलहान की ।
रघुपति ईश जगदीश वोच जान्यो नहीं,
ताते वैर करी तूं तो विगाडी है लड़कान की ॥
जनकजी की जाया सोतो जोगमाया रूप,
सतीको हरलायो निपट करी है नादान की ।
रावणकी रानी सेणी मण्दोदरी मुख वोले वानी,
पिया जानकी न आनीए निसानी घर जानकी ॥

ढाल मूलगी

घृ मूं हूं दिन रात घणेरो, न सकूं समय करी ।
जो तूं मुझने चाहै देवी, मेलो प्रीति खरी ॥ धारा ॥ ४ ॥

ढाल दीपक मूलगी

एड़ीसे शीस चडी चौटी करूं किम बात आ खोटी, महारानी थाऊं में म्होटी । पतिव्रत पण को नीभावो, रावण कहै सीता पे आवो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ७० ॥

नींद नहीं लीलानहीं, फूल नहीं तम्बोल ।
भोजन पाणी पण नहीं, सुण्या न भावे बोल ॥ १२ ॥
हांसी नही गमननहीं, नहीं भोग नहीं योग ।
माणस मुआ सारीसो, होई रह्यो तस सोग ॥ १३ ॥
खातो हुवो खाटले, पड्यो रहै नरनाथ ।
गुंग मुंग बोले नही, आरती करे सहु साथ ॥ १४ ॥

ढाल चोपक मूलगी–

'मंदोदरी' चित्तमें निरधारं, नाह दिलवात नहींधारं, पूछ्यां बिन नहीं सरस्यारे आई तब रावण' पे चाली, विनय कर पूछेहै आली सरस वच पालो ॥ ६० ॥

ढाल पैंतीसवीं– तर्ज मेरे मन एसी आणबनी–

थारा चित्तमें कांई वसी मंदोदरी,
मांदो पति देखी पूछेवात इसी ॥ टेर ॥
परभाते अंधारे आये, घटतो जाय शशी ।
तेज हैन प्रताप प्रक्षीणा, शोभा लाज खसी ॥ थारा ॥ १ ॥

धूलचंदजी कृत, ढाल चोपक तर्ज महीलांमे बैठी हो राणी कमलावती–

राणीं' मन्दोदरी वाणी इमकहै, सांभलजो नरनाथ ।
सोन खण्डरीहो थांरे सायबी, नहीं कोई दीसे उत्पात ॥
सांभल महाराजा आज कांई लागीहो चिन्ता आपने ॥ टेर ॥ १॥
महल अटारीहो थांरे सुन्दरी, तेमांहे हूं पटनार ।
अरजी करूंहूं साहिब आपसूं, साचोनी बात विचार॥सांभल॥ २॥
रंग राग तो दीसेनहीं, और नहीं दीसे विनोद ।
आसण दूमण दीसो अतिघणा, केकोई दीसोरे प्रबोध सांभल ॥३॥
के कोई कामण कीधा आकरा, के कोई देवे कीधो दोस ।
के कोई बैरी आयो सामूहो, के कोई निजघर रो सोच सांभल ॥४॥

ढाल मूलगी–

सुन अक्षे तुझ सुझ राखनी, भाखो जिसी तिसी ।
आर्त्तावन्त उदास थईने, मनतू जाय चसी थारा ॥ २ ॥

अलगी जा आंखों आगे थी, मयली जेम मसी ॥ थारा ॥ १३ ॥
एटले 'रावण' चाली आयो, 'सीता' धमण धमी ।
शीतल वचनां सूं समझावे, आपे उपशमी ॥ थारा ॥ १४ ॥
मन्दोदरी राणी तुझ आगे किंकर मांहे गणी ।
हूं तुम दास सरीसो केतो, भाखूं अवर भणी ॥ थारा ॥ १५ ॥
नजर निहालो उत्तर वालो, टालो भात घणी ।
पालो दोव्यां हाँस नवि पूगे, ओ असवार तणी ॥ थारा ॥ १६ ॥
होई अपूठी सीता बोले, सांभल लंक धणी ।
काल दृष्टि सूं हूं देखूं छूं, जाघर टाली अणी ॥ थारा ॥ १७ ॥
धिक् धिक् ए तुझ आशा माथे, थारो कोण वणी ।
जीवित 'राम' 'लक्ष्मण' हूं छू, अहि माथे रे मणी ॥ थारा ॥१८॥
वारम्वार वचन आक्रोशे, न त्यजे राय रली ।
हांक लीयोरे हगयो होवे, श्वान न जाये टलो ॥ थारा ॥ १९ ॥
सीता की आरती तन अधि की, न शक्यो सूर्य खमी ।
आथमियो अलगो होवाने, व्यापी आण तमी ॥ थारा ॥ २० ॥
रावण ने ऊपजीये अधिको, कुमति तणी रे मती ।
उपसर्ग करावे अधिका, सीदावे रे सती ॥ थारा ॥ २१ ॥
फेहकार करतां अति फेरूं, घू घू घूक करे ।
वृक[१] विचित्र परे कुदन्ता, नीमत नरे रे डरे ॥ थारा ॥ २२ ॥
पूछया स्फोट सूं व्याघ्र[२] विशेषे, ओतू[३] अन्योन्य लड़े ।
फूंफूता फणी[४] करता परगट, मांहो मांही अडे ॥ थारा ॥ २३ ॥
भूत पिशाच वैताल विदीता, हट सूं हास्य हसे ।
डाकणी शाकणी महली देवी, काली हाथ घसे ॥ थारा ॥ २४ ॥
उललंता दूर ललित अति, यम जेम कायधरे ।
'रावण' एह विकुर्वण करिने, आगे आणी मरे ॥ थारा ॥ २५ ॥
परमेष्ठी पंचे मन ध्याती, सीता खेत खरे ।

१ वरु (वृक) । २ वाघ (सिंह) । ३ बिलका । ४ सर्प ।

ढाल मूलगी

सियनी पीड़ाए पीड़ाणी, तबही ऊठी धसी ।
देव रमण उद्याने देवी, आवी एक ससी१ ॥ थारा ॥ ५ ॥
हूं मण्डोदरी छूं रे शुभोदरी, महोटे नाम चड़ी ।
'रावण' रानीं मांहीं वखानी, वनिता मांहे वड़ी ॥ थारा ॥ ६ ॥
भोली क्यूं भरमाणी छे तूं, रावण साथे रमी ।
मानस भवनो लाहो लीजे, हूं छूं दासी समी ॥ थारा ॥ ७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–बीड़ारी

सीयाजी सूं मिलन मण्डोदरी राणी आई, सङ्ग सहेली लाई। रिम झिम करती आई बागमें, नवलख तारों की ज्योतिने छिपाई॥१॥
किणोरे घरजाई ऊपनी, किणां घर परणाई ।
के थारो प्रीतम तुझने छोडो, इहांपर नारी तूं कीयूं आई ॥ २ ॥
जनकजीरे घर जाई ऊपनी, दशरथ घर परणाई ।
कपट करी तुझ पियुड़ो लायो, तुझने रण्डापो राणी देवन आई ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

सीता तूं धन्य तूं धन्य थारे, माथे अधिक रती ।
राजा रावण रे चित्त आई, मेली अवर छती ॥ थारा ॥ ८ ॥
भूचर राम तपस्वी तेनो, सेवक मात्र सही ।
ओ पति तसो ए पति जो पामे, कर्म वतीरे कही ॥ थारा ॥ ९ ॥
मन खिचोने मौन करी थी, नीची सही न रही ।
तूं तो सतियों मांही सयाणी, एती हीन लही ॥ थारा ॥ १० ॥
किहां जम्बुक किहां सिंह मनूरो, गरूड किहां रे अही ।
किहां मुझ पति किहां तुझ पति लम्पट, लाजत नहींरे नहीं ॥११॥
नारी धन्य धन्य तुझ ठाकुर, सरखी जोड मिली ।
तूं लम्पट थारो निर्लज्ज राणी, दूनी मांही भली ॥ थारा ॥ १२ ॥
एसो मुंडो नहिं देखवूं, तुझ सूं बात किसी ।

---

१ [illegible]

केलीहरा[1] कामी तणारे, देखावे सुविशाल ॥ विभीपण ॥ ७ ॥
मन्दिर विविध प्रकारनारे, सेज तणी वर शोभ।
भद्रे! भद्रपणूं भजोरे, आणी विषय सुख लोभ ॥ विभीपण ॥ ८ ॥
लम्पट ललचावे घणीरे, केलवणी ने कोड।
करी देखावे अति घणीरे, खेत खरे नवि खोड ॥ विभीपण ॥ ९ ॥
हंस तजी ने हंसलीरे, कदही न वंछे काग।
राम तजी सीनातणोरे, नहीं अवरां सू राग ॥ विभीपण ॥ १० ॥
नाम अपूठो आवीयोरे, वृक्ष अशो के हेठ।
मूकी रावण मानिनीरे, ए पण काढी वेठ ॥ विभीपण ॥ ११ ॥
विभीपण चित्त चिन्तवे रे, होई रह्यो मयमंत।
शीयल कोई मरदहे रे, आयो दीखे अन्त ॥ विभीपण ॥ १२ ॥
मंत्रीश्वर बोलाविया रे, विभीपण ते वार।
करे मिसलत सहु मिली रे उपज्यो ए अविचार ॥ विभीपण ॥१३॥
मोहतणो मद माचीयो रे, कोई न माने कार।
हुओ हरायो हाथियो रे, केम करीजे मार ॥ विभीपण ॥ १४ ॥
आयो दीसे आमनो रे, रावण काल विनाश।
कोई उपकर्मा करी रे, कीजे लील विलास ॥ विभीपण ॥ १५ ॥
मति ऊपावे मनथकी रे ते माटे मंत्रीश।
जोरन चाले माहरो रे, कांन न मांडे ईश ॥ विभीपण ॥ १६ ॥
मिथ्या मतिनो माहिया रे जिन मतनो उपदेश।
माने नहीं प्रभु आपणूं रे, कीजे कांई कलेश ॥ विभीपण ॥ १७ ॥
'हनुमन्त' ने कपि राजिया रे, आदि मिल्या नृप आय।
धर्म पखे पखिया थया रे, मेल्यो रावण राय ॥ विभीपण ॥ १८ ॥
राम अने लक्ष्मण थकी रे, रावण नो संहार।
ज्ञानी वचन छे सही रे, चूक न पड़े लिगार ॥ विभिपण ॥ १९ ॥

---

[1] केलीगृह—क्रीड़ा करने का घर।

धड़ मस्तक दो जूदा दीठा, माताजी अकुलाणी रे॥ सीता॥ ७॥
पग अनुसारे चाली आवी. राघव सूं रींझाणी रे।
लम्पटनी लालच नवि पूगी, तस घणूं खींजाणी रे॥ सीता॥८॥
'खर' 'दूषण' त्रिशिर लेई आवी. आग घीथी सिंचाणी रे।
सिंहनाद संकेत कियोंथी, लक्ष्मण सूं मण्डाणी रे॥ सीता॥ ९॥
लंका जई 'लंकपति' आण्यो. बात कही अतिताणी रे।
सिंह नादनो भेद लगावी एहूं ईहां आणीरे॥ सीता॥ १०॥
ए दश मस्तक कापेवाने. हूं तो काती कहाणी रे।
लंका नगरी बालेवाने. हूं बल बलती छाणी रे॥ सीता॥ ११॥
तेज प्रताप पराक्रम पीलग हूं घर मांडी घाणो रे।
पगे१ आवी छू रावण केरे. एकान्ते दुःख खाणीरे॥ सीता॥१२॥
श्रवणे सुणे पण रिम न आणे, रागीनी सहिनाणी रे।
आगे२ सतेजी छे अति अधिको, जल आंगे उल्हाणीरे॥ सीता॥१३॥
एम सुणी लघु बन्धव जम्पे, भाई मति भरमाणी रे।
एको बलती गाडर घर में. घाले कौण अज्ञानी रे॥ सीता॥१४।
परनारी छे काली रे नागिणी, के विषवेली समानी रे।
जालव तांई जयतव जोवे, किहां ही नहीं ताणो रे॥ सीता॥१५॥
संपद तरुनी एह कुहाड़ी, आपद नी नीसाणी रे।
श्राप सतीनो छे दुःखदाई. मति दीजे ए रीसाणी रे॥ सीता॥१६॥
लाख कहूं के कोडी कहूं तुम. ए तो वस्तु वीराणी रे।
आज कल दिन चारां मांही. एतो बात दिखाणी रे॥ सीतां॥१७॥
हूं म्हारो ओलम्भो टालूं. राखो कीर्ति पुराणी रे।
लोक कहेशे काई न हुतो. 'रावण' आगे पाणी३ रे॥ सीता १८॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दोई पलोया, अनम्याने ही नमाणी रे।
सीता ने हूं देई आवूं. जेम रहे प्रीत धपाणी रे॥ सीता॥ १९॥
ढाल भली ए छत्रीसमीं. राखे एक न मानी रे।

---

१ पनोती। २ आगे-आनी ए तेज प्रजूं छे पर ते जल आगे-घटे खोलाय छे। ३ पाणीयो, बहिक।

के जिन के पियू करती, 'रावण' सामो पग न भरे ॥ थारा ॥ २६ ॥
रावण तो पच्चक्खाण न भांगे, 'सीता' सत्य न चले ।
पारकींने नहीं भूत पराभव, काचां ने रे छले ॥ थारा ॥ २७ ॥
ढाल भली ए पच्चीशमी, धन्य जे टेक ग्रहे ।
'केशराज' ग्रहीतो साची, सीता ज्युं नीर वहे ॥ थारा ॥ २८ ॥

दोहा (मालवी गौड़ी रागे)

विभीषण निशिनीचरी, निसुणी लोकां मांहे ।
सीता पासे आवियो, करण दिलासा प्राहे ॥ १ ॥
महोदर समझावरा, वात सुणावे वीर ।
छे परनारी पराङ्मुख, साहसवन्त सधीर ॥ २ ॥
वाईजी तुम कौण छो, किहांथी आव्या चाली ।
कौण तुमे आण्या इहां, भाखो शङ्का टाली ॥ ३ ॥
घूंघट खेंची अधोमुखी, जाणी पुरुष प्रवीण ।
सत्यवती साची सती, वाणी वदे अदीन ॥ ४ ॥

ढाल छत्तीशवी तर्ज–एक दिवस रुकमण हरि साथे ॥

'सीता' नाम निशंक पणे रे, भाखे चारु वाणी रे ।
'विभीषण' कुलकेरो भूषण, निसुणे अमृत जाणी रे ॥ सीता ॥ १ ॥
'जनक' पिता 'भामण्डल' भाई, राम-त्रिया हूं वखाणी रे ।
'दशरथ' ना कुल वहू वदिती, सतियों में अधिकानी रे ॥ २ ॥
राम नरेश्वर 'लक्ष्मण' देवर, वीर्जा नो हूं राणी रे ।
दण्डकारण्य मांहे आवी, वास तणी स्थिती ठाणी रे ॥ सीता ॥ ३ ॥
'सूर्यहास' असी तरु-टाले, देख्यो अधिको पाणी रे ।
'लक्ष्मण' जी लीलाए लीधो, ज्योंना वणी प्रगटाणी रे ॥ ४ ॥
करन परीक्षा वेग वाही, वंशजाल कपाणी रे ।
सम्बूकनो तब सिर छेदाणो, मनमें अति पस्ताणो रे ॥ सीता ॥ ५ ॥
त्यांहे देखी रावण माल्ये, ते न करो मति आणोरे ।
चिन्ह मारन विन अपराधे, मार्यो ते ए प्राणी रे ॥ सीता ॥ ६ ॥
पाछे दूजा भोजन रागी, आगीने चमकाणी रे ।

के जिन के पिय करती, 'रावण' सामो पग न भरे ॥थारा॥२६॥
रावण तो पच्चक्खाण न भांगे, 'सीता' सत्य न चले ।
पाकांने नहीं भूत पराभव, काचां ने रे छले ॥ थारा ॥ २७ ॥
ढाल भली ए पच्चीशमी, धन्य जे टेक ग्रहे ।
'केशराज' ग्रहीतो साची, सीता ज्यूं नीर वहे ॥ थारा ॥ २८ ॥

दोहा (मालवी गौड़ी रागे)

विभीषण निशिनीचरी, निसुणी लोकां मांहे ।
सीता पासे आवियो, करण दिलासा प्राहे ॥ १ ॥
महोदर समझावरा, वात सुणावे वीर ।
छै परनारी परांङ्मुख, साहसवन्त सधीर ॥ २ ॥
बाईजी तुम कौण छो, किहांथी आव्या चाली ।
कौण तुमे आण्या इहां, भाखो शङ्का टाली ॥ ३ ॥
घूंघट खेंची अधोमुखी, जाणी पुरुष प्रवीण ।
सत्यवती साची सती, वाणी वदे अदीन ॥ ४ ॥

ढाल छत्तीशवी तर्ज—एक दिवस रुकमण हरि साथे ॥

'सीता' नाम निशंक पणे रे, भाखे चारु वाणी रे ।
'विभीषण' कुलकेरो भूषण, निसुणे अमृत जाणी रे ॥ सीता ॥१॥
'जनक' पिता 'भामण्डल' भाई, राम-त्रिया हूं वखाणी रे ।
'दशरथ' ना कुल वहु वंदिता, सतियों मे अधिकानी रे ॥ २ ॥
राम नरेश्वर 'लक्ष्मण' देवर, श्रीजी नो हूं राणी रे ।
दण्डकारण्य माहे आवी, धाम तणी स्थिती ठाणी रे ॥सीता ॥३॥
'सुर्यहास' असी नभ-टाले, देख्यो अधिको पाणी रे ।
'लक्ष्मण' जी लोल्याण लीधो, ज्योंनी वणी प्रगटाणी रे ॥ ४ ॥
करन परीक्षा वेगे वाही, वंशजाल कृपाणो रे ।
शम्बूकनो तब शिर छेदाणो, मनमें अति पस्ताणो रे ॥सीता ॥५॥
खोटी केसी रावण भाखे, ते न करो मति शाणी रे ।
विद्या साधन जिन अवसरे, मार्यो ते ए प्राणी रे ॥ सीता ॥ ६ ॥
पाछे दूजा लोचन पार्यो, आणीने चमकाणी रे ।

'केशराज' ऋषि रावण केरी, वेला आवी जणाणी रे ॥ सीता ॥२०॥

दोहा (धन्या श्री रागे)

रावण होई रातडो, चढे विभीषण वीर ।
ग्रही वस्तु किम मेलिये, जब लग रहे शरीर ॥ १ ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' भीलड़ा, वन मांही है वास ।
साहण वाहण को नहीं, आप ही फरे उदास ॥ २ ॥
साहण वाहण माहरे, विद्यानो अति जोर ।
ए सूं करसे बापडा, कांई मचावे शोर ॥ ३ ॥
आज नहीं तो काल हीं, काल नहीं तो मास ।
मास नहीं तो वरस में, आपही करसे आश ॥ ४ ॥
एटले मांही आमना, ओ आवे मे चाली ।
छलबल कोई केलवी, देसु परहा टाली ॥ ५ ॥

ढाल सत्तावीशमी तर्ज—जगत गुरु त्रशला नन्दन वीर

पहोली थी में सांभली रे, राम-त्रियाथी घात ।
होसे रावणनी सही रे, आण मिलीछे वात ॥
विभीषण वात विचारे एह, सत्य वचन ज्ञानी तणां रे,
कोई नहीं सन्देह ॥ विभीषण ॥ टेर ॥ १ ॥
में तो कीधा था घणा रे, आछो ही उपकर्म ।
दशरथ जीवतो ऊगर्यो रे, धीरो छे जगधर्म ॥ विभीषण ॥ २ ॥
ज्ञानीनो वच छे घणो रे, न टले कोडि प्रकार ।
स्नाने ततनां थका रे, पलगे लोकान्यार ॥ विभीषण ॥ ३ ॥
सूतनो हीर सुरो नहीं रे, विभीषण नो वाच ।
देखो तो देखे नहीं रे, कामी एतो साच ॥ विभीषण ॥ ४ ॥
'पुष्पक' नाम विमानमें रे, 'सीता' लेई आप ।
क्रीडा करवा चालियो रे, टाल्यो नटके पाप ॥ विभीषण ॥ ५ ॥
देखावे अतिरूपता रे, रतनमयी गिरि राज ।
नन्दन वननी ओरमा रे, देखावे वन माज ॥ विभीषण ॥ ६ ॥
नदनी तट कर सोहनी रे, हंसा केरा ख्याल ।

जैनो पहीलो मोचियोरं, तो कांई सुख थाय ।
मन्दिर लागे बारथीरे, काढ्यां कांईयन जाय ॥ विभी० ॥ २० ॥
भयतो ऊपजसे महीरे, मांगो नहीं है लगार ।
जेहनी आणी कामनीरे, ते तो आवण हार ॥ विभीषण ॥ २१
जे नृतरीयो प्राहुणोरं, तेतो जोवे वाट ।
गोट्टं नाणूं आपनोंरं, कीया कांई उचाट ॥ विभीषण ॥ २२ ॥
लङ्का नगरी अति मजीरे, ढीलन कीधी रंच ।
अन्न पाण लेई घणांरे, मेल्यो बहुलो संच ॥ विभीषण ॥ २३
कोट ओटना कांगूरारे, पोल अने प्राकार ।
सवलाही समरावियारे, गोला यंत्र अपार ॥ विभीषण ॥ २४

भूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज–भजो तुम सार मंत्र नवकार

करो कोई लाखें चतुराई, टले नहीं होनहार भाई ॥ टेर ॥
मंत्री कहे महाराजजी, फिर इक करो उपाय ।
दुश्मण जोर कदे नहीं लागे, लङ्का पतो न पाय ॥
आग के पाछा फिर जाई ॥ करो कोई ॥ १ ॥
यंत्र बड़ा आसाल्ीका, लङ्कागढ के बार ।
जो त्रिकुट निरखे करे, कबहुन होवे हार ॥
वैरी कोई आय सके नांई ॥ करो कोई ॥ २ ॥
यत्र कीयो गढ पे खड़ो, निर्भय रहण काज ।
यत्र मुख चौकी रखो, मजी आपणो साज ॥
स्वामी को काम करण नांई ॥ करो कोई ॥ ३ ॥
दूसर कोट असालि का, हरगिज टूटे नांय ।
होणहार जो पूरबदे, भांजेला छिन मांय ।
उसमतो चले नहीं कांई ॥ करो ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी-

विद्यानो आसालीकारे, नेहनो सबर प्राकार ।
देवदी पण्डा प्रसरंरे, कंचनतो दमकार ॥ विभीषण ॥ २५ ॥

इणविध लंकाने सजी रे, ढीलीन कीधी लीगार ।
अथभवियण तुम्है सांभलो रे, राघवनो अधिकार ॥ विभीषण २६ ॥
(आगाडी के पद्य 'भूल्यो मन भंवरा' व 'कन्त तम्बाखूपरहरो' इस तर्ज मे भी गा सकते है)
राघव विरह विजोगीया रे आरति वन्त उदास ।
अन्न पान भावे नहीं रे, लम्बा लीये निस्सास ॥ राघव विरह ॥ २७॥
लक्ष्मण साथे बोलीयो रे, ढील पड़े छे एह ।
आशा दिन दश बीशनी रे, पछीत्यजसे देह ॥ विभीषण ॥ २८ ॥
दुःखियो अधिक ऊतावलो रे, सुखियो सुसतो होई ।
तृषियो जावे सरोवरे रे, सामो न आवे सोई ॥ विभीषण ॥ २९ ॥
ढीलो वानर राजियो रे, सुखमांही दिन जात ।
पर दुःखे दुःखियो नहीं रे, वात घडी नविथात ॥विभी॥ ३० ॥
एह सुणीने ऊठियो रे, हाथे ग्रही शर चाप ।
धम धमतो अति चालियो रे, होठ डसन्तो आप॥विभी॥ ३१ ॥
कम्पावे धरती घणी रे, कम्पावे गिरि शीश ।
वृक्ष ऊखेडी नांखतो रे, कोप्यो विद्याधीश ॥ विभीषण ॥ ३२ ॥
आयो चाली दरबारमें रे, खल भलियो सुग्रीव ।
धूजन्तो पग लागीयो रे, मारे सेव अतीव ॥ विभीषण ॥ ३३ ॥
ओलम्भोदिये अति आकरो रे, शुद्ध नहीं तुझ मांही ।
तूं घरमें सुख भोगवे रे, प्रभु तरु सेवे प्राही ॥ विभीषण ॥ ३४ ॥
वासर जावे वरससो रे, छगुणी रात्री गिणाय ।
तुझमें वीनक वीतियो रे, तोहीन समझे काय ॥विभीषण॥ ३५ ॥
गुंपड़ फूटां बैधने रे, सम्भार नवि कोय ।
आरति तो अति आंधली रे, आप थकी तूं जोय ॥विभी॥ ३६ ॥
सेनत ताहरी ए भणी रे, खेचर दोई प्रकार ।
भूमि तणा तो भौमीया रे, सघले तुम पेनार ॥ विभीषण ॥ ३७ ॥
वाचा पालो आपणी रे, काम करो धरिभाय ।
नहीं तो 'साहसगति' परे रे, दउं परभव पहुंचाय ॥विभी॥३

मचल चली झंझार सचन को पीर है ॥ रावण करडे वचण बहु मुखतें कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या तिणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूवो तब बाहरू१ रे, करतो अति आक्रोश।
विद्या सघली अपहरीरे, 'रावण' कीधो रोप ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे. सीताजीना पामि।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रत्नजटी विद्याधरूरे. कण्ठ लगाई लीध।
तुम्हारे बालेसरूरे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे बातडीरे, तिम तिम ऊपजे राग।
वारम्वार विशेषिएरे. रागीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे. सांभलतां सन्तोप।
मिलवामे ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोप ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा—सब सन्नाटा छागया. सुन रावण का नाम।
सीता पाछी आणवी, करडो दीसे काम ॥ १ ॥

(ये मूलगी तर्ज के अगाडी के पद्य "ईडर आवा आंवलीरे" इस तर्ज मे भी गाये जा सकते हैं)

.... लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर।
आलसियां अलगी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानूं स्यूं पूछयोरे, पूछो रावण तेज।
आज जगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल चौथी तर्ज ....को—

सुणो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, बदे विद्याधरां एम वाणी।
'रावण' रावणो तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब बात जाणी ॥ सु० ॥ १ ॥ विकट अति कूट अखूट जलनिधि भर्यां, त्रिऊं

मबल बली अंझार सचन को पीर है ॥ रावण करडे वचण बहु मुखते कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या तिणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूवो तब वाहरू१ रे, करतो अति आक्रोश।
विद्या मबली अपहरीरे, 'रावण' कीधो रोष ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे, सीताजीना पामि।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रतनजटी विद्याधररे, कण्ठ लगाई लीध।
तू म्हारे वालेसररे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे वातडीरे, तिम तिम ऊपजे राग।
वारम्वार विशेषिणरे, रागीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे, सांभलतां सन्तोष।
सिल्यामें ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोष ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा–सब सन्नाटा छागया, सुन रावण का नाम।
सीता पाछी आणवी, करड़ो दीसे काम ॥ १ ॥

(इसी ही मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद्य " ईडर आंबा आंवलीरे " इस तर्ज में भी गाये जा सकते हैं)

राजेश्वर लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर।
अलगिरा अलगी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानूं स्यूं पूछवोरे, पूछो रावण तेज।
आज लगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल दीपक तर्ज रसड़की–

सुणो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, वदे विद्याधरां एम वाणी। 'रावण' रायको तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब बात जाणी ॥ सु० ॥ १ ॥ विकट अति कूट अकूट जलनिधि मयों, तिऊं

१ मदद करने वाला

दिशां राक्षसां छाय लीधो । नाम लेतां थकां प्राण सांसे पड़े, जाणे यमराण आवास कीधो ॥ सु० ॥ २ ॥ जगत जाहर घणों तेज रावण तणो, देव दानव पिण शंक आणे । तेहना घर तणी वात दुर्लभ घणी. अधिक डरावणी सर्व जाणे ॥ सु० ॥ ३ ॥ विषम गढ नालि गोला विषम भूमिका. वलि विषम चऊं दिसे समुद्र खाई । अभङ्ग भट अतुलबली कटक अक्षौहणी, प्रथम थी कुणशके तेथी जाई ॥ सु० ॥ ४ ॥ वीशभुज धारणो शत्रु संहारणो, शीस दश शोभित अति ही रूड़ो । वडा वडा योध अति क्रोध-कारी जिहां, स्वामी आगे कहां नहीं एक कूड़ो ॥ सु० ॥ ५ ॥ नाम लंका तणो अधिक डरावणो, जावणो आवणो केम थावे । स्वामी सन्तोष करो केण मुझ उरधरो. जीव ए सुजश दो रहावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ मांयरे शीष इक दोय भुज देह में. सहश्रबाहूं नृप आप हार्यो । इन्द्रने पकड दीयो कठ पिंजरे, वरुण कुबेर नो मान मार्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ लंक की शंक मनमांही अति मायरे, तेहसूं और अब वात कीजे । आप तो राम अलवेशर राजवी, माहरे आश दिन दोयजीजे ॥ सु० ॥ ८ ॥

(अन्य ग्रन्थकार रावण की आज्ञा मे इतनी ऋद्धि का कथन करते हैं)

सवैया

सूर्य रसोई तपे पवन अंगन बुहारे,
वीहड१ करे दासीपणो चन्द्रमा करे प्रकारे (शे)
'विश्वानर' धोवे वस्त्र झलाझल नैंजा झलके ।
नवग्रह बंधीया खाट पाय पग अति ही खलके ॥
अंगन अहि नांखे छांटा जम भैंसो नित्य पाणी भरे ।
विद्याधर कहै रामने रावण सेथी कुण अरे ॥ १ ॥
असी लाख गज बंध, कोड दशतुरी तुखारा ।
सोले सहंस सामन्त, पायदल अड्ब अटारा ॥
क्षत्री लाख पचास, बावनशत पनरे राजा ।

१ विधाता ।

सबल चली झंझार सबन को पीर है ॥ रावण करडे वयण बहु सुमने कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या निणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूतो तब बाहरू१ रे, करतो अति आक्रोश ।
विद्या सबली अपहरीरे, 'रावण' कीधो रोष ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे, सीताजीना पामि ।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रत्नजटी विद्याधररे, कण्ठ लगाई लीध ।
तें म्हारे वालेसररे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे वातडीरे, तिम तिम ऊपजे राग ।
वारम्वार विशेषिणरे, रागीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे, सांभलतां सन्तोष ।
मिलवामें ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोष ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा-सब सन्नाटा छागया, सुन रावण का नाम ।
सीता पाछी आणवी, करडो दीसे काम ॥ १ ॥
(इसके भी मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद्य " ईडर आंवा आंवलीरे " इस तर्ज मे भी गाये जा सकते हैं)
राजेश्वर लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर ।
अलगियां अलगी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानूं स्यूं पूछवोरे, पूछो रावण तेज ।
आज लगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल देशक तर्ज खड़को—

सुनो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, बदे विद्याधरां एम वाणी । 'रावण' राजको तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब वात जाणी । सु० ॥ १ ॥ विकट अति कूट अनूठ जलनिधि सयां, विऊं

१ मदद करने वाला

दिशां राक्षसां छाय लीधो। नाम लेतां थकां प्राण सांसे पड़े, जाणे यमराण आवास कीधो॥ सु०॥ २॥ जगत जाहर घणों तेज रावण तणो, देव दानव पिण शंक आणे। तेहना घर तणी वात दुर्लभ घणी, अधिक डरावणी सर्व जाणे॥ सु०॥ ३॥ विषम गढ नालि गोला विषम भूमिका, वलि विषम चऊं दिसे समुद्र खाई। अभङ्ग भट अतुलबली कटक अक्षौहणी, प्रथम थी कुणशके तेथी जाई॥ सु०॥ ४॥ वीशभुज धारणो शत्रु संहारणो, शीस दश शोभित अति ही रूड़ो। वडा वडा योध अति क्रोध-कारी जिहां, स्वामी आगे कहां नहीं एक कूड़ो॥ सु०॥ ५॥ नाम लंका तणो अधिक डरावणो, जावणो आवणो केम थावे। स्वामी सन्तोष करो केण मुझ उरधरो, जीव ए सुजश दो रहावे॥ सु०॥ ६॥ मांयरे शीष इक दोय भुज देह में, सहश्रबाहूं नृप आप हार्यो। इन्द्रने पकड़ दीयो कठ पिंजरे, वरुण कुबेर नो मान मार्यो॥ सु०॥ ७॥ लंक की शंक मनमांही अति मायरे, तेहसुं और अब वात कीजे। आप तो राम अलवेशर राजवी, माहरे आश दिन दोयजीजे॥ सु०॥ ८॥

(अन्य ग्रन्थकार रावण की आज्ञा में इतनी ऋद्धि का कथन करते हैं)

सवैया

सूर्य रसोई तपे पवन अंगन बुहारे,
वीहड१ करे दासीपणो चन्द्रमा करे प्रकारे (शो)
'विश्वानर' धोवे वस्त्र झलाझल नेजा झलके।
नवग्रह बंधीया खाट पाय पग अति ही खलके॥
अंगन अहि नांखे छांटा जम भैसो नित्य पाणी भरे।
विद्याधर कहे रामने रावण सेथी कुण अरे॥ १॥
असी लाख गज बंध, कोड दशतुरी तुखार।
सोले सहंस सामन्त, पायदल अङ्क अठार॥
क्षत्री लाख पचास, बावनशत पनरे राजा।

१ विधाता।

सबकोऊमाने शंक सुनत अमरापुरी बाजा ॥
बड़े बड़े वीर पांवे पड़े चालतो सूर्य पोते डरे ।
विद्याधर कहे रायजी रावण होड कहो कुण करे ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राम कहे कपि पति ही सुणीये, लम्पटका गुण तो नहीं थुणीये, बात कहो किण विध ही वणीये जोर कर सीताने लावां, जगतमें जश अधिको पावां ॥ सत्य ॥ ७३ ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे सो जाणीयोरे, तेज पणुं संसार ।
कायर कपट करी घणूं रे, लेई गयु मुझ नार ॥ विभी० ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण निजरां ठाहरे रे, तो गयां राजान ।
दोय दिन दो चार में रे ए घोड़ा ए मेदान ॥ विभी० ॥ ६५ ॥
लक्ष्मण भाखे खेचररे, रावण तो छे श्वान ।
सूना घरमें पेसियोरे, फिट् एहनुं अभिमान ॥ विभी० ॥ ६६ ॥
क्षत्री ने छल नाकर्योरे, क्षत्रीनूं बल खेत ।
कोई साचूं मानयूं रे, देखीजे निज नेत ॥ विभी० ॥ ६७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लक्ष्मन तब भाखी है काल, 'रावण' यो कायर कंगाल, नादको कांग्यो उन जाल। प्रभु छतां सीता नहीं लीधी, बात या अधूर्की कीधी ॥ सत्य ॥ ७४ ॥ सारतसु 'जानकी' लेसां, सुभटांकुं जबाब ही देसां, फेर श्री राम की कहसां। जाम्बवान करता है अरजी, मानजो है प्रभु की मरजी ॥ सत्य ॥ ७५ ॥

मुनि रामचन्द्रजी कृत क्षेपक तर्ज मिलोको—

सुनजो महाराजा वचन हमारो, भलो चावां छां राज तुम्हारो ।
सेन्द्र तट एको म्होटो एक ग्राम, विनयदत्त व्योपारी वसे तिण ठाम ॥
तिनके घर में सुन्दरी नारी, रूप अनूपम आके समाली ।
कदीश्वर मांड्यो पक्षी पति माथे, दूगणा चोगणा वधे हाथोजी हाथे ।
वसे सलजन्ते है तिण नहीं माने, आवे जावे ने ध्यावेजी छाने ।

एम करतां तो वीता बहु मासे, पूंजी तो खबर ही चौरांरे पासे ॥
बोले पल्लीपती सुणजो प्रकाशां, देसां मिजमानी दाम चुकासां।
करने विभूषा आजो नारीने लीधां, तिमही पालन्तां हुवो छे वीदां।४।
आव्यो पल्लीमें चौरां विचारयो, लीधी नारीने उणनेजी मार्यो।
एणी तो परे वादन कीजे, एडा माटे तो केम मरीजे ॥ ५ ॥

दोहा–पल्ली समाणी लंक है, पल्लीपति रावण जाण।
नारी समाणी सीत है, राज हो वणिक समान ॥ १ ॥
विद्याधर कन्या बहु, अपच्छरने उणीहार।
एक एकथी आगली, परणो केई हजार ॥ २ ॥
रावण लोक डरावणो, लडतां नहीं रहै लाज।
इण कारण सीता तणी, गई करो महाराज ॥ ३ ॥
लक्ष्मण सुनके कोपियो, बोले मूंछ मरोड।
लावां वेगी सीतने, दशमस्तक नें तोड़ ॥ ४ ॥

श्री राम मुनि कृत क्षेपक तर्ज–सिलोका—

सुणतां तो लिछमन सिंहज्यूं गूज्यों. विद्याधरां को हीयोजी धूज्यों।
सुणजो विद्याधर वात हमारी, सुनने तो चुपका जोवे इतकारी॥१॥
नगर कुसुमपुर धन्नो व्योपारी, जिणरा घर में जमनाछे नारी।
पांच पुत्रों में नहीं एक कमाऊं. तनमां तो रोग परदेशां जाऊं।२।
अटवीमें मिलियो पुरुष इक सिद्धो. किरपाकरीने लोह कड़ो दीधो।
इणसूं तो रोग मोटका जावे, लेई कड़ोंने रोग गमावे ॥ ३ ॥
चलियो तो आयो निजपुर बार, मूई नृप कन्या हुवो हाहाकार।
नागनो विष गयो कड़ानी करणी. नृप हुकमसूं कन्या जो परणी।४।
मात पितासूं मिलीयो हुल्लासे, भोगवे सुख लीला वीलासे।
एक दिन मज्जन मित्र गङ्गातट आयो बड़ विकट तिहां पांनोंजी छायो
॥ ५ ॥ तिणमां तो रहै गोहज लांटी. कड़ो अम्बर१ में लेईने नांटी।
चडतां तो दीठी आतम सेण. शूर सुभट नहीं कड़ोजी लेण ॥ ६ ॥

१ वस्त्र।

सचकोऊमाने शंक सुनत अमरापुरी बाजा ॥
बडे बडे वीर पांवे पडे चालतो सूर्य पोते डरे ।
विद्याधर कहे रायजी रावण होड कहो कुण करे ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राम कहे कपि पति ही सुणीये, लम्पटका गुण तो नहीं थुणीये, बात कहो किण विध ही वणीये जोर कर सीताने लावां, जगतमें जश अधिको पावां ॥ सत्य ॥ ७३ ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे सो जाणीयोरे, तेज पणूं संसार ।
कायर कपट करी घणूं रे, लेई गयू मुझ नार ॥ विभी० ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण निजरां ठाहरे रे, तो गयां राजान ।
देखे दिन दो चार में रे ए घोडा ए मेदान ॥ विभी० ॥ ६५ ॥
लक्ष्मण भाखे खेचरूरे, रावण तो छे श्वान ।
सूना घरमें पेसियोरे, फिट् एहनूं अभिमान ॥ विभी० ॥ ६६ ॥
शत्री ने छल नाकयोरे, क्षत्रीनूं बल खेत ।
मोरे मान्यूं मानवू रे, देखोजे निज नेत ॥ विभी० ॥ ६७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लक्ष्मन तब भाखी है फाल, 'रावण' वो कायर कंगाल, नादको कम्पियो उन जाल । प्रभु छतां सीता नहीं लीधी, बात या अयुक्तो कीधी ॥ सत्य ॥ ७४ ॥ मारतसु 'जानकी' लेसां, सुभटांकू जवाब ही देसां, कहे श्री राम की कहसां । जाम्बवान करता है अरजी, मानजो है प्रभु की मरजी ॥ सत्य ॥ ७५ ॥

मुनि रामचन्द्रजी कृत क्षेपक तर्ज मित्रोकी—

सुनजो महाराजा वचन हमारो, भलां चावां छां राज तुम्हारो ।
बेना तट पासे म्होटो इक ग्राम, विनयदत्त व्योपारी बसे तिण ठाम ॥
तिनके नी घरमें सुन्दरी नारी, रूप अनूपम शाके अमाली ।
दरीद्र भांजो पक्की पति मावे, दुगणा चोगणा बधे हाथोजी हावे ॥
बेने सजननें ते तिम नहीं माने, आवे जावे ने ख्यावेजी छाने ।

दूजो त्रीजो मस्तक कण्ठ लगावे हो ॥ राज० ॥ २ ॥
चौथो छाती पंचम नाभि प्रमाणे हो सुण ।
छठो कटि लग सातमो साथल आणे हो ॥ राज० ॥ ३ ॥
आठमो जानू धरती अधर ऊठावे हो । सुन ।
नवमो अंगुल चारज ऊंची लावे हो ॥ राज० ॥ ४ ॥
वामे कर सूं शीला ऊंची करता हो सुन ।
वाम चरण सूं पाछी धरती में धरता हो ॥ राज० ॥ ५ ॥
पूजि अर्ची बहु विध भक्ति करावे हो सुन ।
हरि इण क्षेत्रे सोहि शीला ऊठावे हो ॥ राज० ॥ ६ ॥
तत् क्षिण सुरवर जय जय शब्द करावे हो सुन ।
पुष्प नी वृष्टी गंधाम्बू वरसावे हो ॥ राज० ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

जेम लताए तेम ए शीलारे, देखाडी ऊपाड़ी ।
पुष्प वृष्टि हुई भलीरे, सुजश चढ्यो निलाडी ॥ विभीषण ॥ ७१ ॥
भल्ल भल्ल कहे देवतारे, प्रत्यय२ पामी जाम ।
सहु कोई आणन्दियारे, पाछा आव्या ताम ॥ विभीषण ॥ ७२ ॥
वृद्ध पुरुष परमारथीरे, वात विचारे एक ।
पहिलां दूतज मोकलोरे, जाणणहार विवेक ॥ विभीषण ॥ ७३ ॥
वातां में समजावीयोरे, पाछी आपे वाल ।
दोई घरे होय वधामणांरे, वाधे नहीं जंजाल ॥ विभीषण ॥७४॥
दूत 'महाबल' आगलोरे, मोकलिये सुप्रमाण ।
लंका तो साजी सुणीरे, कीधो अति मण्डाण ॥ विभीषण ॥ ७५ ॥
ढाल भली सेंतीशमीरे, कीधी दूतही धाप ।
केशराज ऋषिजी कहेरे, जेहनो प्रबल प्रताप ॥ विभीषण ॥ ७६ ॥

दोहा (केदारा रागे)

राक्षसकुल सायर विचे, अमृत ऊपज्यो एक ।
विभीषण मति आगलो, जाणे विनय विवेक ॥ १ ॥
दूत धूत जाए धमी, विभीषणने पास ।

आतम सेणतो कीधो उपायो, नांखी लकड़ने वड़लो फूंकायो ।
मोह मारीने कडोजी लीधो, आतम सेणरो कारज सीद्धो ॥ ७ ॥
मनमें हर्ख्यो जिम अमृत पीधो एह सिलोको राम मुनि कीधो॥८॥
दोहा-मोह रावण सीताकड़ो, आतम सेण सूं राम ।
लंकागढ़--वड चूरने, लेवां रत्न बहु दाम ॥ १ ॥
नभचर अति विस्मय भये, सुन लक्ष्मण की बात ।
कही अनूपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥
भूचर येऊं अति जोर है, एनी केहने हाथ ।
कोटि शिलाकी वात कहो, ज्यूं शंसय मिट जान ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी --

'आम्रवान' भाखे भलू रे, उपाडे भुजपाण ।
कोटी शिलाने साहसे रे, रावण हन्ता जाण ॥ विभी० ॥ ६८ ॥
सारु वचन ये सांभल्यु रे ए अति रूडी रीत ।
सहु ने शीला उपाड़ता रे उपजे अति परतीत ॥ विभी० ॥ ६९ ॥
लक्ष्मण भाखे ए भलुं रे, वैरी विमाने देव ।
विद्याधर निश्चा धरे रे, आई सरा तन सेव ॥ विभी० ॥ ७० ॥

ढाल दीपक नर्ज जलागी --

जोबन लक्ष्मी पहली एक कहावे हो, सुणज्यो महाराज ।
कोटी मुनि तिण ऊपर मोक्ष सिधावे हो राजिन्द ॥ १ ॥
प्रथम शांति नम शिर पर छत्र करावे हो सुणज्यो ।

([illegible] इसमें कोटि शिला का अधिकार और भी पाया गयाहै वह निम्नोक्त है) कोटि शिला [illegible] है भरतक्षेत्राधिष्ठाता सिन्धु देवी का भवन है । इस शिला पर [illegible] तीर्थंकरों के [illegible] पाट मोक्ष में गये हैं ।। इस चौवीसी में [illegible] की बत्तीस पाट और [illegible] करोड़ मुनि । और कुन्थुनाथजी के [illegible] पाट और [illegible] मुनि मोक्ष गये ।। अरनाथ के चौवीस पाट [illegible] । [illegible] के [illegible] पाट और मुनि छः करोड़ मुनि [illegible] पाट [illegible] मुनि मोक्ष गये ।। नमिनाथ के चार पाट और [illegible] कोटीशिला पर, और एक सौ ने छासठ पाट [illegible] मुनि [illegible] है ।।

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ॥हनु॥१०॥
बेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीप नमावेजी॥हनु॥११॥

दोहा–पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद ।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही ।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय ।
ते माटे हूं तेडीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील' ।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ॥९॥
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम ।
छेली संख्या पूरणी, मांहे म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय ।
लङ्का राक्षस द्वीपछं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढूं ईन्द्र इन्द्रासन ढारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेप को भार ऊतारूं ।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीप दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लङ्क रावण सहित दच्छिन की ऊत्तर धरूं ॥ १ ॥

दोहा–रावण लोक डरावणो, ते भाईयों सुं बांध ।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बछुं, कुल नो करूं निकन्द ।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहै साचो सहु, तारो वचन विचार ।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोडावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भली, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
देवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल चोपक तर्ज बीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे. सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल राया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
नल नील विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहस गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर और दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
फिर कोट शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न देर करी देर मे बिगार होत,
आय इन हकिकत आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी से लिखूं कहा देखत पतीजीये ।
आज एक काज भारी, रामहू की लगी तारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल चोपक तर्ज-पूर्ववत

ले पत्र ने दूत सिधायो, चलकर हड़ुमान पे आयोजी ॥ हनु ॥६॥
फिर नमीने पत्र द कर में, हड़ुमान ने हर्ष अपारजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तकी दोनो नारी, इक हर्षी इक विलखाणीजी ॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने दीलासा दीनो, झट चाल्यो दील न कीनोजी ॥ हनु ॥९॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ॥हनु॥१०॥
वेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीष नमावेजी॥हनु॥११॥
दोहा–पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय।
ते माटे हूं तेड़ीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील'।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ॥९॥
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम।
छेली संख्या पूरणी, मांहे म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय।
लङ्का राक्षस द्वीपछं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढ़ूं ईन्द्र इन्द्रासन ढारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेष को भार ऊतारूं।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीष दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लंक रावण सहित दच्छिन की ऊत्तर धरूं ॥ १ ॥
दोहा–रावण लोक डगवणो, ते भाईयों सूं बांध।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बछं, कुल नो करूं निकन्द।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहे साचो मछु, तारो वचन विचार।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोड़ावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भलो, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
देवयोगे माने नहीं, पाछी बात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज बीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे. सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल राया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहस गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर त्रीशर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
सिर कोड शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न देर कछु देर मे बिगार होत,
आप दूत हरिवल आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी से लिखूं क्या देखन पतीजीये ।
आज एक काज भारी, रामहूकी लेगो नारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—पूर्ववत

ले पत्रने दूत सिधायो, चलकर हनुमान पे आयोजी ॥ हनु ॥ ६ ॥
सिर साटी पत्र ए बाल, हनुमान ने हर्ष अपारजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तकी दोनो नारी, इक हर्षी इक बिलखाणीजी ॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने [illegible] कीनी, झट चाल्यो ढील न कीनीजी ॥ हनु ॥ ९ ॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ॥हनु॥१०॥
बेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीप नमावेजी॥हनु॥११॥
दोहा-पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद ।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही ।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय ।
ते माटे हूं तेडीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील' ।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ॥९॥
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम ।
छेली संख्या पूरणी, मांहे म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय ।
लङ्का राक्षस द्वीपसूं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढूं ईन्द्र इन्द्रासन ढारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेप को भार उतारूं ।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीप दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लङ्क रावण सहित दच्छिन की उत्तर धरूं ॥ १ ॥
दोहा-रावण लोक डरावणो, ते भाईयों सूं बांध ।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बसूं, कुल नो करूं निकन्द ।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहे साचो सहु, तारो वचन विचार ।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोड़ावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भलो, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
दैवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल चेपक तर्ज वीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे, सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल गया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहश गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर त्रीशर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
शिर कोड शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौंन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न वेर करी देर से बिगार होत,
आय इन हरिबल आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लिखनों मैं लिखूं क्या देखन पतीजीये ।
आज एक काज भारी, रामहूकी लगी तारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल चेपक तर्ज-पूर्ववत्

ले पत्रने दूत सिधायो, चलकर हनुमान पे आयोजी ॥ हनु ६॥
लिख राखी पत्र ए सारु, हनुमान ने हर्ष अपारुजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तके दोनो नारी, इक हर्षी इक विलखाणीजी ॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने दीलासा दीनी, झट चाल्यो ढीलन कीनीजी ॥ हनु ॥ ९ ॥

एक वार तो जायने, आणो खबर अबार ।
वश्य पडी छे पारके, वरते कवण प्रकार ॥ १५ ॥

ढाल अड़तालीशमीं तर्ज दधि सूत जात हो—

कपि रे ! प्रिया साथे कहे, प्राण प्रभु नो तुम पास ।
देह सुं न्यारो रहे रे, मन में थारी आश ॥ कपि ॥ १ ॥
अन्न तो मोय लागत फीको, स्वाद नहीं जलपान ।
सयनो तो नींद न आवे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ २ ॥
राम नो मन नां रमे, नां रमे गुण गान ।
हास्य ख्याल विनोद नां गमे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ३ ॥
योगने साधियां योगियो रे, भजे ज्यूं भगवान ।
काम रागे रागीयांथी, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ४ ॥
हाथियो रे कुंज वननो, आणीयो गजान ।
जेह सुमरे तेह वन ने, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ५ ॥
स्वैरणी स्वच्छा ए रमती, वंछे ही नर आन ।
अधिक तीव्र परिणाम राखे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ६ ॥
पपैयो थग पड्यों पाणी, साथ राखे मान ।
मेहना जल माथे मनसा, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ७ ॥
मूंदडी मुज हाथ केरी आणे लेई रे धरे ।
जाणी ए अहिनाणी सारे, लहे कुशल खरे ॥ कपि ॥ ८ ॥
आवतां चूडामणी रे, आणीजे रे सही ।
जेम ए सहु साच माने, वात सफल कही ॥ कपि ॥ ९ ॥
मुज वियोगे सर्व मति नूं, आर्त गाढो पंथ ।
लक्ष्मण नो लेके पति करो, शिर छे दीयो ही देश ॥ कपि ॥ १० ॥
भरत दल बल मान मगरे, सगरहीर नरेश ।
निश्चिन्त छे संकलीयो हूं, खबर करवा सुविशेष ॥ कपि ॥ ११ ॥

१ श्री राम हनुमन्त ने कहे छे के तूं म्हारी प्रीया (सीता) ने आ[illegible]
[illegible] गाथा १५ सूधी) ने अर्थ विचारणी ।

जब लगे हूं फिर न आवूं, तब लगे ए ठाम ।
छोडवूं नहीं वीनती ए, मानजो श्री राम ॥ कपि ॥ १२ ॥
राम 'लक्ष्मण' चरण प्रणमी, लेई निज परिवार ।
वीर विमाने बैसी चाल्यो, पामी हर्ष अपार ॥ कपि ॥ १३ ॥
वाट जातां गिरी महेन्द्र, पुर माहेन्द्र उदार ।
देखीयो थी रोष ऊपन्यो, आणी ए विचार ॥ कपि ॥ १४ ॥
माय माहरी वे गुन्हा थी, काढी दीधी ताम ।
रीस ए मुझ अछे अधिकी, आजे फेडूं ठाम ॥ कपि ॥ १५ ॥
एम कहतां तूर रणना, लीया राय बजाय ।
शब्द सुणी ब्रह्माण्ड फाटे, नगर नाठो जाय ॥ कपि ॥ १६ ॥

दोहा क्षेपक—

दूत भेजीयो नांनाजी ने मांने म्हारी आन ।
नहीं तर तब रहसी नहीं, थोडीसी भी शान ॥ १ ॥

१ क्षेपय तर्ज राधेश्याम—

सुन दूत वचन ज्यों भूत लगा, त्यों 'महेन्द्र' राय रीसाया है ।
काला मुख कर मार जूत शर, दूत भणी निकलाया है ॥
बस कह देना तेरे मालिक को, मैं फौरन ही आ जाता हूं ॥
मुझ को आन मनाने का मैं उसको मजा चखता हूं ।
सौ पुत्रों को साथ वीर वे दल बल ले तैयार हुवे ।
कायर नर को छोड और सब वीर पुरुष हूंसीयार हुवे ॥
रण भैरी जो वहां बजती थी, और घाव निशान लगाया है ।
महिन्द्र भूप निज सेना ले कर, नगरी बाहर आया है ॥
नानाजी के निकट आयकर, खडा वीर हनुमान हुआ ।
मानों आया सूर्य उतर कर, ऐसा ही अनुमान हुआ ॥
महेन्द्र भूप यों बोला उस को तू तो अब तक बच्चा है ।
तूं मेरे से नहीं जीतेगा, यह कहना हमारा सच्चा है ॥

१ सती अंजना से ।

एक वार तो जायने, आणो खबर अवार ।
वश्य पडी छे पारके, वरते कवण प्रकार ॥ १५ ॥

ढाल अड़तालीशमी तर्ज दधि सूत जात ही—

कपि रे ! प्रिया माथे कहै, प्राण प्रभु नो तुम पास ।
देह में न्यारो रहे रे, मन में थारी आश ॥ कपि ॥ १ ॥
अन्न तो मोय लागत फीको, स्वाद नहीं जलपान ।
सुवतो नो नींद न आवे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ २ ॥
राम नो मन नां रमे, नां रमे गुण गान ।
हास्य ख्याल विनोद नां गमे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ३ ॥
योगने साधियां योगियो रे, भजे ज्यूं भगवान ।
काम रागे राचीयांथी, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ४ ॥
हाथियो रे कुंज वननो, आणीयो गजान ।
तेह सुमरे तेह वन ने, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ५ ॥
स्वैरणी स्वच्छा ए रमती, वंच्छे ही नर आन ।
अधिक तीव्र परिणाम राखे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ६ ॥
पंथी घर पत्नी पाणी, साथ राखे मान ।
मेहना जल माथे मनमा, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ७ ॥
मुंदडी मुज हाथ केरी आगे लेई ने धरे ।
जाणी ए अहिनाणी कारे, लई कुशल खरे ॥ कपि ॥ ८ ॥
[illegible] आणीने रे सही ।
तेम ए मह साच माने, वात सफल कही ॥ कपि ॥ ९ ॥
[illegible] मान तूं, आठ माहा पग ।
[illegible] लंक पति करी, शिर छे टोगो ही देख ॥ कपि ॥ १० ॥
[illegible] सावरहोने नरेश ।
[illegible] मोकलीयो हूं, स्वर कया सुविशेष ॥ कपि ॥ ११ ॥

[illegible] हनुमान ने कहे छे के तूं म्हारी प्रीया (सीता) ने आवमरणी [illegible]) ने [illegible] ।

जब लगे हूं फिर न आवूं, तब लगे ए ठाम ।
छोडवूं नहीं वीनती ए, मानजो श्री राम ॥ कपि ॥ १२ ॥
राम 'लक्ष्मण' चरण प्रणमी, लेई निज परिवार ।
वीर विमाने वैसी चाल्यो, पामी हर्ष अपार ॥ कपि ॥ १३ ॥
वाट जातां गिरी महेन्द्र, पुर माहेन्द्र उदार ।
देखीयो थी रोष ऊपन्यो, आणी ए विचार ॥ कपि ॥ १४ ॥
माय माहरी वे गुन्हा थी, काढी दीधी ताम ।
रीस ए मुझ अछे अधिकी, आजे फेडूं ठाम ॥ कपि ॥ १५ ॥
एम कहतां तूर रणना, लीया राय वजाय ।
शब्द सुणी ब्रह्माण्ड फाटे, नगर नाठो जाय ॥ कपि ॥ १६ ॥

दोहा क्षेपक—

दूत भेजीयो नांनाजी ने मांने म्हारी आन ।
नहीं तर तब रहसी नहीं, थोड़ीसी भी शान ॥ १ ॥

[1] क्षेपय तर्ज राधेश्याम—

सुन दूत वचन ज्यों भूत लगा, त्यों 'महेन्द्र' राय रीसाया है ।
काला मुख कर मार जूत शर, दूत भणी निकलाया है ॥
बस कह देना तेरे मालिक को, मैं फौरन ही आ जाता हूं ।
मुझ को आन मनाने का मैं उसको मजा चखता हूं ।
सौ पुत्रों को साथ वीर वे दल बल ले तैयार हुवे ।
कायर नर को छोड़ और सब वीर पुरुष हुंसीयार हुवे ।
रण भेरी जो वहां बजती थी, और घाव निशान [illegible] है ।
महिन्द्र भूप निज सेना ले कर, नगरी बाहर [illegible] है ।
नानाजी के निकट आयकर, खडा वीर [illegible] ।
मानों आया सूर्य ऊतर कर, ऐसा ही [illegible] ।
महेन्द्र भूप यों बोला उन को तूं तो [illegible] है
तूं मेरे से नहीं जीतेगा, यह कहन [illegible] है ।

1 सती अंजना से ।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगी अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चल्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान मे विण छेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड ।
प्रचंड बाण उडी जाण, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन्न कीर्ति आवी लडीयो, लडे चित्त ने चाय ।
दोई वीर विशेष बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ने सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनाथो काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं मैं एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
काम प्रारम्भ्यो करूं, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ मारथी भुजबले, बांधी लीधा सोय ।
ज्यूं महेन्द्र नरेन्द्र माहीयो, शूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
चरणे लागी छोड दीधा, आप प्रगटी नाम ।
मामने दुःख दीधो थो तुम्ह, नेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
स्वामी काजे जाऊं लंका, तुम्हें प्रभुने पाम ।
जावो अवसर मामीपाथी, दामसो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
लीधो कपट कमाव नाले, दीर्घदो गिर चूर्यो ।
मात-नाना मानव्या बहु, मजन गया लूंब ॥ कपि० ॥ २५ ॥
स्नेहे नृप सुजन सूर्यावो, अंगे दीधो आज ।

आपणो आप थकी शंको, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
पाखतीही तीन कन्या, राखी मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु[१] धाय ।
उदधीनूं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहे कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो बलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम साह्यने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
विणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जबाव ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आवर ॥कपि०॥ ३३ ॥
गायतो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार ।
ए अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी विविध प्रकार ।
तात नापे वेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
ताते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कुण ! ।
धायसे ए साच भाखो, हूं अछूं[२] भल गुण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति नें, सोई भलो भरतार ।
रूपे रूड़ो नहीं कूडो, तुम्ह हूसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
केम जाण्यो जाय प्रभुजी, तेहथीए काज ।

---

१ पशुतावालो (हनुमन्त) = ए फारसी भाषानो शब्द छे । तेनो स्पर्श पाणी थाय छे ते उपरथी बरतारवा लायक । २ भलो कपट रहित ।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगी अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड़ जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होश हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान में विण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड़ ।
प्रचंड बाण उडी जाए, तृण तणांनो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन्न कांति आनी लडीयो, लडे चित्त न चाय ।
दोई वीर रिणेर वलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनानो काम चितमें, एह लगाची वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं मैं एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
[illegible] प्रारम्भ्यो करवूं, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ मारथी सुतचक्रे, बांधी लीधा सोय ।
[illegible] महेन्द्र नरेन्द्र माहीयो, सूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
[illegible] [illegible] छोट दीधा, आप प्रगटो नाम ।
[illegible] [illegible] दीयो थो तुम्ह, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] लंका, तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] [illegible] [illegible], पामसो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] नाने, दौहीत्रो शिर चूंबी ।
[illegible] [illegible] बहु, [illegible] [illegible] ॥ कपि० ॥ २५ ॥
[illegible] [illegible] सुणतां सुर्णायो, आनंद दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंकी, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
राखतीही तीन कन्या, राखो मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु[१] धाय ।
उदधीनं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहे कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो बलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम माहने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
गणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जबाब ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आव ॥कपि०॥ ३३ ॥
रायनो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार ।
अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी त्रिविध प्रकार ।
तात नापे तेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
तते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कुण ? ।
कयसे ए साच भाखो, हूं अछूं[२] भल गुण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति नें, सोई भलो भरतार ।
पि रूडो नहीं कूडो, तुम्ह हुसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
म जाण्यो जाय प्रभुजी, तेहथीए काज ।

प्रभुतावालो (हनुमन्त) २ ए फारसी भाषानो शब्द छे। तेनो अर्थ ...णी थाय छे ते उपरथी बनावेला लायक। ३ भलो कपट रहित।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगी अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'मृगेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, वान मे विण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरारे, सुभट दीधा मोट ।
प्रचंड बाण उडी जाण, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
मदन कीर्ति आवी लटीयो, लहे चित्त न चाय ।
दोई वीर विनोद चलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनानो काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं में एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
ध्यान आरम्भ्यो करवूं, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ मारथी भुजबले, बांधी लीधा मोय ।
इम महेन्द्र नरेन्द्र मारीयो, शूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
चरन लागी छोट दीधा, आप प्रगटी नाम ।
मातने दुःख दीधो थो तुम्हे, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
म्हारी काजे जाऊं लंका तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] मार्यामार्या, पामस्यो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] नाने, दोहीतो शिर चूमो ।
[illegible] मायना बहु, सज्जन ग्या लूंब ॥ कपि० ॥ २५ ॥
कानेन तुन सुजन मूर्णाको, आंग दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंकी, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
पाखतीही तीन कन्या, राखो मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु[1] धाय ।
उदधीनूं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहै कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो वलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम माह्यने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
विणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जवाब ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आव ॥ कपि० ॥ ३३ ॥
गायतो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार ।
ए अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी विविध प्रकार ।
तात नापे त्रेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
ताते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कूण ? ।
धायसे ए साच भाखो, हूं अलूंरे भल गूण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति ने, सोई भलो भरतार ।
रूपे रूडो नहीं रूडो, तुम्ह कूसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
केम जाण्यो आप प्रभुजी, तेहधीए राज ।

---

१ पवनुतावालो (हनुमान) २ ए फारसी भाषानो शब्द छे । तेनो अर्थ पाणी थाय छे ते उपरथी बलवाणया लायक । ३ भलो कपट रहित ।

दोहा (क्षेपक)

नानामाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
वजरंगी अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोर हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान मे विण छेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड ।
प्रचंड बाण उडी जाए, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन्न कीर्ति आवी लडीयो, लडे चित्त न चाय ।
दोई वीर विशेष बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनातो काम चित्तमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारा लेकं मे एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
काम प्रारम्भ्यो करवूं, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ सारथी सुतबंद, बांधी लीधा सोय ।
[illegible] महेन्द्र नरेन्द्र मारीयो, [illegible] एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
[illegible] [illegible] छोड दीधा, आप प्रगटो नाम ।
[illegible] [illegible] दीधो थो तुम्ह, नेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
[illegible] [illegible] लेवा तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] [illegible] पाछीवाळी, पासमो बहु त्रास ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] तने, दोईदावो शिर चूंपो ।
[illegible] [illegible] [illegible] बहु, [illegible] ग्या बंध ॥ कपि० ॥ २५ ॥
[illegible] [illegible] सुत मुर्नासो, आंख दीठो आज ।

वेठो। तोड तरु उच्छाली तवही, नाम निज सुनाय दीयो जब ही ॥ सत्य० ॥ ७४ ॥

दोहा मूलगा—

अभ्र[1] थकी आदित्य[2] ज्यूं, नीकलीयो वडवीर।
आलन आवे रंचही, साऐ रह्यो शरीर ॥ ५ ॥
तास कीयो प्राकारवर, नगरी लंका पास।
कर्पूरनी परे तोडके, नांखी दीयो आकाश ॥ ६ ॥
रखवालो प्राकारनो[3], वज्रमुखो तसुनाम।
मारी लीधो झूझतो, शूर समारे काम ॥ ७ ॥

ढाल गुनचालीशमीं

तर्ज—श्री महावीर स्वामी आया—(गजराकी)

हनुमन्त वीर आयो, असगाय[4] असुहायो,
सयण जने मन भायो, आग्यो जेम बुलायो ॥ टेर ॥ १ ॥
पवननो वंश कहायो, सुरतरु[5] सुहायो।
राय रायों कहायो, कुले कलश चढायो ॥ हनु० ॥ २ ॥
कदहीन थाये कायो, खले[6] जाय न खायो।
गुणी आले गीत गायो किणही नचि छायो ॥ हनु० ॥ ३ ॥
जगत में सुजश छायो, अंजनीनो रे जायो।
थिर करी पावठायो, न चले रे चलायो ॥ हनु० ॥ ४ ॥
रामने काम धायो, भलो बोल पायो।
भूपने चित्त भायो, खरी खबर लेई आयो ॥ हनु० ॥ ५ ॥
'वज्रमुखनी' कुंवारी, सा करे रोप भारी।
हनुमन्त साथे आई, मांडेरे लड़ाई ॥ हनु० ॥ ६ ॥
तेहना शस्त्र कापी, मूलगे रूप थापी।
जोर न कोई होवे, तब सम्मुख जोवे ॥ हनु० ॥ ७ ॥
मन्मथ बाणे वींधी, कहे वात सीधी।

---

१ बादला। २ सूर्य। ३ कोट। ४ शत्रु। ५ कल्पवृक्ष। ६ खल (कपटी) थी ठगाय नहीं।

कर्यां थी एटले पापी, मेलव्यो देव साज ॥ कपि० ॥ ३९ ॥
तुम समार्थाये शान्ती हुई, हुई विद्या सिद्धि ।
मारग छूटे सीजती, तुम दर्शन आज प्रसिद्धि ॥ कपि० ॥ ४० ॥
चरित्र[१] सघली कही भाखी, जाणीयो पति देव ।
कुंवरी हरखी ताम प्रभुजी, चालीयो तत खेव ॥ कपि० ॥ ४१ ॥
कुंवरीए सुख एह सांभली, मोहतो भूपाल ।
लेई दल नल रामपासे, आवीया ततकाल ॥ कपि० ॥ ४२ ॥
हालण अडनीशमींरे, करण काज वीराज ।
केशराज मुनिंद भाखे, आवीयो अति गाज ॥ कपि० ॥ ४३ ॥

दोहा (गुड़ मल्हार रागे)

उतपतिने आवीयो, लंका समीपे जाम ।
विद्याने आशालीका, दीठी 'हनुमन्त' ताम ॥ १ ॥
काली निशा होय जेहवी, तेहवा तस आकार ।
घोर सहारे डगमगी, बोले 'हनुमन्त' लार ॥ २ ॥
मति हीण ? कपी ? किहां चल्यो, करू आज आहार ।
थारही ए तनु तणु, तो तू जाणे सार ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज खडका—

हाथ झाली गदा वायू नन्दन तदा, चालीओ आवीयो दुरग पासे।
ताम अतिदुःख्याम डगवणी छे घणी, विद्या आशा लीका एम भासे
॥ हाथ ॥ १ ॥ रे मति हीण कपि तूं किहां चालीयो, सीरामणी
करूं आज तेरी । तुंही जिम मार जाण भली अटकली, जेम इहां
और नहीं आवे फेरी ॥ हाथ ॥ २ ॥

दोहा मूलगा—

ताम सुनत पसारीयो, हनुमन्त पेठो मांय ।
भीने तस मारी गदा मुकलाणी सुख मांय ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

निर्मीके मोलदी पेठो, उर्माने युद्ध करन मंडो, गदाले सिंहसमी

१. च्चरित्र वेगी ।

क्यां थी एटले पापी, मेलव्यो दव साज ॥ कपि० ॥ ३९ ॥
तुम समावीये शान्ती हुई, हुई विद्या सिद्धि ।
माग छटे सीजती, तुम दर्शन आज प्रसिद्धि ॥ कपि० ॥ ४० ॥
चरी[४] मघली कही भाखी, जाणीयो पति देव ।
कुंवरी हरखी नाम प्रभुजी, चालीयो तत खेव ॥ कपि० ॥ ४१ ॥
कुंवरीए मुख एह सांभली, सोहतो भूपाल ।
लेई दल बल रामपासे, आवीया ततकाल ॥ कपि० ॥ ४२ ॥
ढालए अडतीशमीं रे, करण काज वीराज ।
केशराज मुनिंद भाखे, आवीयो अति राज ॥ कपि० ॥ ४३ ॥

दोहा (गुड़ मल्हार रागे)

उत्पतिने आवीयो, लंका समीपे जाम ।
विद्याने आशालीका, दीठो 'हनुमन्त' ताम ॥ १ ॥
काली निशा होय जेहवी, तेहवा तस आकार ।
घोर महारे रूपमणी, बोले 'हनुमन्त' लार ॥ २ ॥
मति हीण ? कपी ? किहां चल्यो, करू आज आहार ।
थारही ए तनु तणुं, तो तू जाणे सार ॥ ३ ॥

ढाल चोपक तर्ज ख्यडका—

हाथ झाली गदा वायु नन्दन तदा, चालीओ आवीयो दुरग पासे।
तान अतिश्याम रूपवर्णी छे घणी, विद्या आशा लीका एम भासे
॥ हाथ ॥ १ ॥ रे मति हीण कपि तूं किहां चालीयो, सीगमणी
करूं आज तेरो । तुही जिम मार जाणे भली अटकली, जेम इहां
और नहीं आवे फेरी ॥ हाथ ॥ २ ॥

दोहा मूलगा—

तान मुख्न पसारीयो, हनुमन्त पेठो मांय ।
भीने तन सारी गदा मूकल्याणी मुख माय ॥ ४ ॥

ढाल चोपक मूलगी

निर्गाके सांकडा पेठो, उर्गाने युद्ध करन मंडो, गदाले सिंहसमां

१ [illegible]

वेठो। तोड तसु उच्छाली तवही, नाम निज सुनाय दीयो जब ही ॥ सत्य० ॥ ७४ ॥

दोहा मूलगा—

अभ्र[1] थकी आदित्य[2] ज्यूं, नीकलीयो वडवीर।
आलन आवे रंचही, साणे रह्यो शरीर ॥ ५ ॥
तास कीयो प्राकारवर, नगरी लंका पास।
कर्पूरनी परे तोडके, नांखी दीयो आकाश ॥ ६ ॥
रखवालो प्राकारनो[3], वज्रमुखो तसुनाम।
मारी लीधो झूझतो, शूर समारे काम ॥ ७ ॥

ढाल गुनचालीशमीं

तर्ज–श्री महावीर स्वामी आया—(गजराकी)

हनुमन्त वीर आयो, असगाय[4] असुहायो,
सयण जने मन भायो, आग्यो जेम बुलायो ॥ टेर ॥ १ ॥
पवननो वंश कहायो, सुरतरु[5] सुहायो।
राय रायों कहायो, कुले कलश चढायो ॥ हनु० ॥ २ ॥
कदहीन थाये कायो, खले[6] जाय न खायो।
गुणी आले गीत गायो किणही नवि छायो ॥ हनु० ॥ ३ ॥
जगत में सुजश छायो, अंजनीनो रे जायो।
थिर करी पावठायो, न चले रे चलायो ॥ हनु० ॥ ४ ॥
रामने काम धायो, भलो बोल पायो।
भूपने चित्त भायो, खरी खवर लेई आयो ॥ हनु० ॥ ५ ॥
'वज्रमुखनी' कुंवारी, सा करे गेप भारी।
हनुमन्त साथे आई, मांडेरे लड़ाई ॥ हनु० ॥ ६ ॥
तेहना शस्त्र कापी, मूलगे रूप थापी।
जोर न कोई होवे, तप सम्मुख जोवे ॥ हनु० ॥ ७ ॥
मन्मथ बाणे वींधी, कहे वात सीधी।

१ बादला। २ सूर्य। ३ कोट। ४ शत्रु। ५ कल्पवृक्ष। ६ खल (कपटी) भी ठगाय नहीं।

तुम रूपे राची, करूं सेव साची ॥ हनु० ॥ ८ ॥
वानरो नेर लेवा, कीया एह केवा ।
अब तुम पाय लागो, सुदशा मुझ जागी ॥ हनु० ॥ ९ ॥
हनुमन्ते ताम परणी, करी आप घरणी ।
रात्री रही जाय आगे, प्रभुने काम लागे ॥ हनु० ॥ १० ॥
लङ्कानगरी गेहे आवे, बहु सन्मान पावे ।
पाय प्रणमन्त पूरो, सहु बात में शूरो ॥ हनु० ॥ ११ ॥
आवीयो केणे कामो, कहतो अभिरामो ।
रायनी राणी आणी, करी सर्व दिशाकाणी ॥ हनु० ॥ १२ ॥
आपीये मोरे पाछी, थाए सर्व दिशा आछी ।
कीजीये रायराजो, नहीं विणससे काजो ॥ हनु० ॥ १३ ॥
बहु कहेरे जमाईरे !, समझाव्यो रे भाई ।
पापरो नाग दीजे नहीं जीव रखीजे ॥ हनु० ॥ १४ ॥
बात सुणी रीस लागी, अगड बेडो मेरे जागी ।
सहांडे रवण चल्गे, सुगोंरे में घीय ढल्गे ॥ हनु० ॥ १५ ॥

दीपक नर्ज मूलगी

वानरको कहां है फरमावो, वगीचे देवरमण जावो, कोई मत कुबुद्ध उपजावो । लङ्कका वचन मान लीधा, कपि का कारज सब सीधा । सन्त० । ७० ॥

ढाल मूलगी

वह आइया पासो, चडे वनमां है वासी ।
आवीयो देखी सीता, चमूबा सांई विदिना ॥ हनु० ॥ १६ ॥
वालवो व्यात रोवे, व्याय नींद में न सोवे ।
देवर्ने ए राणी, विहूं लोके बखाणी ॥ हनु० ॥ १७ ॥
लक्ष्मण अशोके, सीमनो जग विलोके ।
देवरे मुझे दीठी, हनुमन्ते ए दीठी ॥ हनु० ॥ १८ ॥

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] प्रमाणे रावण [illegible] [illegible] ।

अलक१ तो गाल फरसे, नयणे तो नीर वरसे ।
आगले कीच मातो, जाय अधिक ही थातो ॥ हनु० ॥ १९ ॥
वदन विलखो देखाय, हीमे जेम कमलनी थाय ।
प्रतिपदा२ चंद्र जेहवो, तनु देखीजे एहवो ॥ हनु० ॥ २० ॥
उष्णता३ श्वास वाले, अधरनी४ शोहटाले ।
ध्यायती राम नाम, नहीं अवरों सूं काम ॥ हनु० ॥ २१ ॥
मलिनछे वस्त्र वेषे, मलिन काया विशेषे ।
देवी विदेही माता, देखतां लहीये साता ॥ हनु० ॥ २२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–गवरल ईसरजी

वातां सुनके पतो लगायो, हनुमन्त नवल बागमें आयो, सीता माता की शुद्ध पायो । सीता झुले विखाके मांही कपि छिटकावे मूंदड़ी ॥ सीता माता का खोला में हनुमत डारी मूंदड़ी॥टेर॥१॥

ढाल मूलगी

विद्याए गुप्त होई, मूंदडी आणे सोई ।
मायनी गोद मूके, प्रभुनी शीख न चूके ॥ हनु० ॥ २३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–गवरल ईशरजी

सीता देखत ही पहीचानी, याहै रघुवर की सहीलाणी । यहां पर कौन जिनावर आणी । मनमें करी कल्पना लेकर कण्ठ लगाई मूंदडी ॥ सीता माता की ॥ २ ॥

पू० रेख–श्री नथमलजी म० कृत क्षेपक तर्ज–पपैया काहे मचावत शोर ।

मुंदरीया कैसे आवे इण ठाय ॥ टेर ॥
मुन्दरिया या प्रभुजी के करकी, छिण भर अलगी न थाय॥मु. ॥१॥
देख मुन्दरी प्रति सिय इनपर, बोलत मुख से वाय ॥ मु० ॥ २ ॥
अरि मुन्दरी तूंभी विछुरी, प्रभु की सगी हुई नाय ॥ मु० ॥ ३ ॥
आज थकि मैं सिय जानकी, सहु परतीत न माय ॥ मु० ॥ ४ ॥
एह मुन्दरी अलग हुई मो, प्रभु विपत के मांय ॥ मु० ॥ ५ ॥
एम कहत चित अति अकुलानी, नयनों में नीर चलाय ॥मु०॥६॥

१ चोटलो । २ एकमरो चन्द्रमा । ३ ऊना । ४ होठनो शोभा ।

ढाल क्षेपक मूलगी

[illegible]ोग प्रभुजी तो मरीया, हाय यह काम क्या करीया. वचन [illegible] दीन उच्चरीया। लायो कुण नर सुर या पंखी, जानकी [illegible]ल मांहि शंकी ॥ मत्य० ॥ ७६ ॥

जानकी मनमें बिलखानी, आपद ए आई अनजानी, करे दुःख [illegible] की रानी। वामाङ्ग फुरक्यो तिनवारी, शकुन तब थापे गुणकारी ॥ मत्य० ॥ ७७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मल्ली जिन बाल ब्रह्मचारी ॥

काग तुम यहांसे उड़जाना।
राम बसे वनवास जिन्होंकी खबर तुरत लाना ॥ टेर ॥
आगम निगम की बात जगतमें, तुमसे नहीं छांना।
काल दुकाल जोग विजोगन, बरते जे थांना ॥ काग० ॥ १ ॥
काग [illegible] शिरमन मांही, गावे पुराणा।
[illegible] भारतगीने ध्याऊ, वंछित फल पाना ॥ काग० ॥ २ ॥
आसोज मासमें आदर देवे, अधिका मनमाना।
[illegible] भावसुं तुम मन्तोषे, पीछे खाय खाना ॥ काग० ॥ ३ ॥
[illegible] कुशल हुवेतो, तजदो ठीकाण।
[illegible] जाय बैठजो, तुम्ह सम कुण स्याणा ॥ काग ॥ ४ ॥
[illegible] बातकही सीताजी, हियमे हर्षाना।
[illegible] काग उड़गनमण्डलथे, सीता मान मांना ॥ काग ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी–

[illegible] नयन निरखी, सीतामनमांहे हरखी।
[illegible] लखाई, मिलया नाथजी आई ॥ हनु ॥ २४ ॥
[illegible] आई सुनावे, लंकपति हरषावे।
[illegible] आज सुनाली, रंगमांह्यी ख्याली ॥ हनु ॥ २५ ॥
[illegible] राम लाई, तुमसुं कराई।

* [illegible] सीता के पास रही थी। इस [illegible] त्रिजटा के समझे।

मोकली फेरनारी, मानसे वात थारी ॥ हनु ॥ २६ ॥
स्वामीं नूं काम करवा, पापसूं पिण्ड भरवा ।
वनविषे पांवधारे, सुख किस्यु इन्कारे ॥ हनु ॥ २७ ॥
राजियां राय राजे, रावण राय विराजे ।
राणियां तूं ही रूडी मेलवे वात कूडी ॥ हनुमा ॥ २८ ॥
नग जड्या हेमनीका पीतले थाय फीका ।
असरखे पुरुप तीका, न लहै शोभजीका हनु ॥ २९ ॥
दैव गयो थो वगांमी जाम जोवे विमासी ।
आणी लंकेश मेली, थाय अब क्यूं न भेली ॥ हनु ॥ ३० ॥
हूं अने अवर रमणी, अछां हंसगमणी ।
ताहरी दासी थासां, ताहरूं दीधूं खासां ॥ हनु ॥ ३१ ॥
काने साद्दी रे छाली, तेहनी एहवी वाली ।
पुरुप थी न हीय अलगी, विपय आग जब सलगी ॥ हनु ॥ ३२ ॥
स्वामीजी नियम लीधा, साधुजी ए रे दीधा ।
अण इच्छन्ती दारा कीया तस परिहारा ॥ हनु ॥ ३३ ॥
तेहथी वार वारं, आवूं हूं पास थारे ।
स्वामी ने स्वामी जाणे, आवे वात सहु ठाणे ॥ हनु ॥ ३४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'रावण' ने पति पणे कीजे, काज ज्यूं वंछित ही सीजे, नर भव को लाहो ही लीजे । सती कहै बोले किण दावे, निलर्ज तुझ लाज नहीं आवे ॥ सत्य ॥ ७८ ॥

ढाल मूलगी—

आडीयो भाली देसूं, एहना प्राण लेसूं ।
एहवी वात कही वे, जाणमे शीख लहे वे ॥ हनु ॥ ३५ ॥
आवीयो राम स्वामी, अन्तरनोरे जामी ।
लक्ष्मण वीर भणीगो, नणद पति जेणे हणीयो ॥ हनु ॥ ३६ ॥
मारीयो कन्त देखे, प्रत्यक्ष एह पेखे ।
माहरो बोल ए साचो, जाणीजे जग में जाचो ॥ हनु ॥ ३७ ॥

भूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज अलगी रहनी—

ढाल निशंक सीता इम बोले, सुन मन्दोदरी वाणी ।
चूड़ागी चटकां करवाऊं, तो जाणे रघुवर राणी ॥
अलगी रहनी, तुझ दूती ने कुण छेडे ।
तूं केम पड़ी मुझ केडे ॥ अलगी रहनी ॥ १ ॥
रे पापण कुल हीणी कूड़ी, कूड़ो वात न सूजे ।
दूर रह तूं क्यूं मन्नावे, सीता इण पर गूंजे ॥ अलगी ॥ २ ॥
रीसाणी राणी अकुलाणी, किम जाणी रे बोले ।
मुट्ठी उपाडी सीता ऊपर, हनुमन्तजी तब बोले ॥ अलगी ॥३॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज मक्खि पनीरा भरन कैसे जाना ।

इम बोले हनुमन्त वानी, तूं सुनले मन्दोदरी रानी ॥ टेर ॥
'रावन' यह अकारज कीनो, विष घोल हलाहल पीनोजी ।
आखिर में होसी हानी ॥ इम बोले ॥ १ ॥
सती सीता ने हर लायो, यह कुजश मुल्क में छायोजी ।
रावन ने वस्तु बीरानी ॥ इम ॥ २ ॥
तुम घर में यह नहीं रहसी, फिट फिट सबला केसीजी ।
है ज्ञान हारनकी नीसानी, इम ॥ ३ ॥
राम प्रबल बलधारी, लक्ष्मन की छवि है न्यारीजी ।
नहीं रावन घर अगवानी ॥ इम ॥ ४ ॥

(दोहा क्षेपक)

मगराणी निज रूपमें, दीठो हनुमन्त नैण ।
मन्दोदरी मुख खिन्न है, कहया आकरा वैण ॥ १ ॥

[illegible] मुनि कृत ढाल क्षेपक तर्ज—मनवा समझले रे वीर—

मन्दोदरी कहै सुणो जमाई, आकाईं मूढी कीधी ।
[illegible] बकाई, भरी गल्लामें लीधी । म्हाने मूंडो लागेजी
[illegible] तो मेरा [illegible], [illegible] भागेजी ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] निशंकर्ण, कोई विनाशी सेवो ।
[illegible] ॥ म्हांने० ॥ २ ॥

नीच कामतो दूत पणा को, करतां लाज न आवे ।
सात पीडीमें कलंक लगायो, थो समपूत जब थावे ॥ म्हांने० ॥३॥
हनुमन्त भाखे सुणो सासुजी, मेंतो आछो कीधो ॥
छोड़ अन्यायी न्यायी झेल्यो, 'राघव' शरणो लीधो ॥
मेंतो साचू बोलूंजी, झूंठ तणो पखपात तजीने रामने झेलूंजी ॥टेर॥४॥
दूत पणा करता रयूं मेंणी, भडवा पणेछे म्हेणी ॥
तुझे भडवी कहूंके दूती, देखलीवी तुझ रेंणी ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥

स्वा० नेमीचदजी म० कृत क्षेपक-ढाल तर्ज-लावणी

पाछी जावण लागी बोल सुण अबको, उभी रहे मन्दोदर नार लेती जा लबको ॥ टेर ॥ अपर सुणो मेरी बात राम जोरूठो, थनें लांबी पहिरामी हाथ हियो क्यों फूटो। थांरो अल्प दिनोको सुख जाणजे खूटो २ ओ सतियों केरो मुख वचन नहीं हुवे झूठो ॥ जोवचनज झूठो होय जगत होय डबको ॥ उभी० ॥ १ ॥ तूं इणपे आई चलाय वचन इम बोली २ कुलनी आब गमाय लाजने खोली, तुझमें नहीं गुणमार फली ज्यो फोली ॥ सज आई सिणगार जगत की गोली जो होय सती का लछ वचन कहे ढबको ॥ उभी० ॥ २ ॥ भोग दलाली काज बनी तूं दूती, लम्पट का सुन बोल चढी किम भूति लागी इणके केड हड़कणी कुती, इण लखणो के न्याय पडे शिर झूती, कुलखणी बगडाल उट्यो क्यों भभको ॥ उभी० ॥ ३ ॥ अब आवे छे रघुनाथ रावणना जमजे, पहरी लम्बी नणदल हाथ अबे नहीं समझे । में काढा कया बोल दोषतूं खमजे, सेठा रालो नेम पियु नेदमजे, सुर्योदय की आश पडे जद झबको ॥ उभी० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

लाजनां बीज खोई, धीठी में धीठी होई ।
कां मुझने खीजावे, नाम परही फुलावे ॥ ह० ॥ २८ ॥
भूपने आवी भाखे, पेलो पाणी न्हाखे ।
बोलत कांईन राखे, ए फल तूंन चाखे ॥ ह० ॥ ३० ॥

(दोहा क्षेपक)

रानी कहै रावन भणी, हा हा थयो अकाज ।
हनुमन्त मुझ फिट फिट करी; बहु लाजी मैं आज ॥ १ ॥

भगवन्द्रजी कृत ढाल क्षेपक-तर्ज कन्दोरे फ्रंची लटके सखी तारा चलके
कहै मन्दोदरी सांभलोरे मतकीजो, ए काज महा दुःखदाय आप मानीलीजो परनारी की संगत मतकीजो, या सतियां मांय शिरोमणी रे मतकीजो ॥ मैं दूर्या- ताय तपाय मानमेरी लीजो परनारी की संगतिमतकीजो ॥ १ ॥ थाणी बदं वाआकसीरे मतकीजो, उण परवाह नहीं तिलमात नाथमानीलीजो परनारी, कोड उपाय कियां थकोरे मतकीजो, या हरगिज नावेहाथ वातमानी ॥ पर ॥ २ ॥ शट जिमहटकरजो मति मानीलीजो, ग्यो जगमे अपयश छाय मान मेरोलीजो ॥ पर ॥ एमसुणी रावन कहै रे मत कीजो । तूं महिलां में जाय । मानमेरी पर ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी-

दोई दो दिशो ताणी, दोई में कौन शाणी ।
सती नारे सनेह, शोला ऊपरे ज्ञेण ॥ हनु ॥ ४० ॥
कुटा नावने खेड़ो, खोट मां है रे खेड़ो ।
जीतने अति भारी, मा कहै मोई आवो ॥ हनु ॥ ४१ ॥
ढाल तो ए कहावी, श्रीम नवमी सुहावी ।
देवी रही शील दावे, केशगजी गावे ॥ हनु ॥ ४२ ॥

(दोहा आसावरी रागे)

हनुमन्त तब प्रगट भयो, प्रण में सीता पाय ।
राम सु लक्ष्मण कुशल है, सुख मानो तुम माय ॥ १ ॥
आप तुम्है कौन है कहा, उदधि तर्यो क्यूं एह ?
आज भले केई थान के किस्यूं करो छो नेह ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल देगजी रहेतो—

तब बैठे हनुमन्त वाणी, माता तू क्यां चिन्ता आणी, रघुवर भेजी है सेनाणी । सुन की मेला श्री रघुवर नाम तुम देखो मुंदड़ी ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिमलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजचियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कौन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[1] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, युद्ध करी बल पूर।
वृक्ष ऊपाडी किया अधोमुख, पकड़ उछाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किम्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम।
कहे सीता इतना कुण स्वामी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

1 माथ रो मोर – रत्नूर्ण

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपक— राधे श्याम रामायण में से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥
बोली-हनुमान! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छे तो हैं।
लक्ष्मण जी की क्या हालत,? भाई के साथ नीके तो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी।
मुझ दुखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे की प्यारी मुन्दरी यह, लाया हूं बतौर निशानी के।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डंका बाजेगा अब समय वह आने वाला है।
विश्वास प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होने ताव है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे।
जब अच्छा आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात।
[illegible] पावक तपे, तंव जेम तरु जात ॥ ५ ॥
[illegible] हो बाछडो, हिमंतोहा फिरन्त।
[illegible] तुम बिन हीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
[illegible] करे धनधमे, कदी ही शोगे सोच।
[illegible] स्वामीनी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
[illegible] सत्यावती, करे धर्मा निज [illegible]।
[illegible] दिन [illegible], पण आरतीय [illegible] ॥ ८ ॥
[illegible] हूं [illegible], आदि नृप सुग्रीव।
[illegible] मन्त्री, [illegible] बन्त अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झूझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[१] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

बात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड़ मतलाजे, लाजे पड्या उठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल वाग में, बुद्ध करी बल पूर।
वृक्ष उपाड़ी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रोड़ा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

१ माथ रो बोर – रत्न

माहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपकः— राधे श्याम रामायण में से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥

बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छे तो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीके तो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी
प्यारे को प्यारी मुन्दरी यह, लाया हूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे बे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
सिद्राम प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होते नाव है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अहल्या आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल पर्वत तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
प्यार विछो हो वाल्हो, हिमंतो ही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुम विछो हीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीदी क्रोधे धमधमे, कदी ही रोगे सोच ।
करता वरने स्वामीजी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
बालक पदि ममसारणो, करे घणी निज दांग ।
अन्त दिन लीने नेहथी, पण आरतीय ईश ॥ ८ ॥
कटक लिन्यो छे एकलो, आदि नृप सुग्रीव ।
[illegible] ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष ।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झुझार ।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत ।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय ।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो ।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो ।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[१] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊं ।
अवसर साध्यां आदर पामूं. नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय ।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय ।
सीता भाखेतोड़ मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल वाग में, बुद्ध करी बल पूर ।
वृक्ष ऊपाडी किया अधोमुख, पकड उछाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम ।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम ।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥५॥

१ माथ नो बोर – रमूर्त

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
थापो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपक:— राधे श्याम रामायण मे से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥

बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छेतो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीकेतो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे की प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
दिलदार प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होते नाव है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अहल्या आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देखी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल पावन तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
मास दिसो हो वाल्हो, हिमंतोही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुमविछो हीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीहीं कांपे धमधमे, कदी ही रोगे सोच ।
करुणा वचने स्वामीनी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
वाला पति मम जावणी, करे घणी निज दीन ।
राजा दिन नीवे नेहथी, पण आरतीय ईश ॥ ८ ॥
वन्दन निमें छे एकठो, आदि नृप सुग्रीव ।
मोहे मनमहल मन्हे, आरति वन्त अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झूझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्युं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[1] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भौर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, बुद्ध करी बल पूर।
वृक्ष ऊपाडी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो निज ठाम।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

---

१ माथ रो बोर – नमूनं

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपकः— राधे श्याम रामायण मे से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥
बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छे तो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीके तो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे की प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों भान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
दिराग प्रेम दिल मे धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होते ताब है क्या, जो जग अंधारी रह जावे ।
जब अटला आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल पवन तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
[illegible] विना हो वाछडो, हिंसंतोही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुम विना होयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कटोडी क्रोध धनथये, कटी ही रांगे मोघ ।
कारण जाने स्वामीना, आपनी अति आलोच ॥ ७ ॥
[illegible] पनि समकावणी, करे घणी निस दीस ।
[illegible] दिन लाँघे नेहथी, पग आरतीय ईश ॥ ८ ॥
[illegible] जिन्ती छु एकटो, आदि नृप सुग्रीव ।
[illegible] मनमन्दिर नख्यो, आगति वन्त अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झुझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीनातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो नामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायां राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कौन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[१] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भौर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल वाग में, बुद्ध करी बल पूर।
वृक्ष ऊपाड़ी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

१ माथ नो मौर – चूड़ा

भावे जिनना आप अरोगे, मैं खाऊं अपर तमाम ।
परम मोदमें कियो पारणो, भूख गमाई ताम जी ॥ इक ॥ ६ ॥
संकट टलियो धर्म प्रसादे, फली मनोरथ माल ।
देख पराक्रम राम दूतका, बोले सीता बालजी ॥ इक ॥ ७ ॥
धन्य मात जिन उदर धरीयो, रखन सगला सूत ।
चिरंजीव तूं आनन्द मांही, वाह रे अंजनी पूतजी ॥ इक ॥ ८ ॥

ढाल मूलगी

राघव प्रभुनी पामी सीता, अभिग्रह पूराणो ।
हनुमन्त हाथे दिन इक वीशमे, भोजन तो लेवाणो ॥ राजा ॥४॥
सीता भाखे चूडामणी लेओ, वेगही वेग सिधावो ।
राघव लखां थी ए पापीथी, मतिरे असाता पावो ॥ राजा ॥ ५ ॥

चौपाई ढाल तर्ज मूंदडीकी—

मैया भूखो भोजन पाऊं, देवो हुकम तोड़ फल खाऊं, दरखत तोड़ २ फल खाऊं ॥ अरथ अपना बल दिखलाऊं, इस विध लायो मूंदडो ॥ सीता माता० ॥ ९ ॥ केहवे सीता सुन हनुमान, यहां है निशिचर अति बलवान, तोड़ मार गिरावे आन ॥ फिर मैं मुश्किल के मर जाऊं, यहीं रह जावे मूंदडो ॥ सीतामाता ॥ १० ॥

ढाल मूलगी—

हनुमन्त नाम हमीने बोले, माने वतन जाणी ।
प्रभु परमादे कर्मजो देवो, बोले अधिकूं ताणी ॥ राजा० ॥ ६ ॥

दोहरा तर्ज राधेश्याम (राधेश्याम रामायणमें से)

बोली सीता तुम छोटे से पर्वत कार है निशिचारी ।
कैसे जीतोगे लड़कर के आश्चर्य है यह मुझको भारी ॥
इतना सुनते ही हनुमन्त ने, पर्वत सुमेरु सा अंग करा ।
दिखलाकर जनक दुलारी को, मनका समस्त सन्देह हरा ॥
बोले कमजोरी नहीं इसमें, कुछ नहीं तारीफ हमारी है ।
रहते है राम प्रताप प्रबल, और पूरी कृपा तुम्हारी है ॥
यह सुनके प्रसन्न भई रानी, सुन सीता ने सन्तोष किया ।
हनुमन्त तुम्हें वह सागर हो, हर्षित यह आशीर्वाद दिया ॥

ढाल मूलगी

तुझने तो खांधे बेसाड़ी, लेई जाऊं आजो ।
रावन राक्षकनां दल मोड़, तो जाणे शिर ताजो ॥ राजा ॥ ७ ॥
सीता भाखे एसब साचो, जेय कहो तेम करस्यो ।
सीता नाम धर्यों थी तो, पर पुरुष न जावे फरस्यो ॥ राजा ॥ ८ ॥
जेती ढील करो छो तेती, प्रभुने आरती थासे ।
धर्म नहीं हमने तुम कहवो, स्वामी वसे दुःख वासे ॥ राजा ॥ ९ ॥
वानर जात तणी चपलाई, रावण राक्षस देखे ।
रामचंद्र ना सेवक एहवा, मनमें भय सुविशेषे ॥ राजा ॥ १० ॥
सत्य वती कहे प्रभु सूं कहजो, नाम तणे आधारे ।
जीवी छूं हूं के मरी जाती, विरह देच तुम्हारे ॥ राजा ॥ ११ ॥

क्षेपकः— राधेश्याम

इन वृक्षांपर माता देखो, फल कैसे शोभा देते हैं ।
सुन्दरता अन्त भई सुन्दर, सुन्दर मन को हर लेते हैं ॥
दोचार तोड़ फल खालूं में, एसी तबियत में आय रही ।
आज्ञा देदो माता मुझको, तबियत मेरी लल चाय रही ॥
सीता बोली इन वृक्षांपर के, बेटा अनेक भट रखवाले हैं ।
तोड़ना फलों का दूर रहा, मारे जाते आने वाले हैं ॥

(दोहाः— क्षेपक)

खाने फल इस बागके, बेटा ! टेढी खीर ।
देख लेंय यदि निशाचर, तोडा लेंगे चीर ॥

क्षेपक राधेश्यान

इस तुच्छ निशाचर दलका क्या, मनमोच किया तुमने भारी ।
कुछ दुःख नहोवे तुमकोतो, आज्ञा दे दीजे महतारी ॥
परवाह न कुछ रखवालों की, परवाह द्वन्द मचाने की ।
परवाह फक्त मोय माता है, श्री मुखसे आज्ञा पाने की ॥
मन मुदित आज्ञा देदीजे, देखो क्या रंग दिखा ऊंगा ।
इस लंक पुरी की सेनाको, रणविद्या आज दिखा ऊंगा ॥

प्रताप तुम्हारे से जननी, रामादल आज उजागर हो ।
विजयीहो पवन पुत्र रणमें, भयभीत दुष्ट दशकन्धरहो ॥
बल बुद्धि देखकर हनुमन्त की, सीयको कुछ २ विश्वास हुवा ।
असमंजस दूर हुवा मनका, चिन्ता का तनक विनाश हुवा ॥
बोली मीठे फल खावो सुत, फल मीठे रहें नसीब तुम्हें ॥
आशिर्वाद विजयी होवे, मीठेफल हो बलसीव तुम्हें ॥

ढाल मूलगी—

लेई चूडामणीने चाल्यो, 'सीता' ने पगे लागी ।
देव रमण ये वनने भांजवा, हनुमन्तनी मति जागी ॥राजा॥ १२
'रक्ताशोक' निपजे रे निसुणो, बकुल विपय अकुलाणो ।
अकरुणा अति आम्र भांजवा, अमर्ष तो अधिकाणो ॥ राजा ॥१३॥
'चम्पक' माथे कम्पन आणे, मंद अति मन्दोर ।
निर्दय 'कदली' दल कापेवा, फली ज्यो वन मोर ॥ राजा ॥१४॥

दोहक राधेश्याम —

आंगों भरजो देखी डाली, उस तरु में वह डाली न रहीं ।
[illegible] नजर डाल जिस डाल पे, कपि वह डाल गिरी लाली न रहीं ॥
फल लाल २ चुन २ खावे, कच्चे २ नीचे डाले ।
[illegible] न पड़े फल वृक्षोंपर, जो पड़ा पवन गुनके पाले ॥
[illegible] डाली से उस डाली पर, कपि कूद २ कर जाता था ।
[illegible] तोड़ तोड़ कुछ खाता था, कुछ सागर बीच बहाता था ॥
[illegible] अशोक वाटिका की, फिर सारे वृक्ष हिला डाले ।
कुछ तोड़ जमीं पर डाल दिये, कुछ सागर बीच बहा डाले ॥

— ढाल मूलगी —

[illegible] [illegible] नक्कार, नांख्योने उपाली ।
[illegible] कोई न देखे, [illegible] ॥ राजा ॥ १५ ॥
[illegible] अति [illegible] ।
[illegible] ॥ राजा ॥ १६ ॥

घुरको करी कपि सामी अयो, जाये नाम पुलाया।
एक एक थी आगे नासे, खायारे यहां खाया ॥ राजा ॥ १७ ॥
जाई पुकार्यो राजा रावण, वानर भांजी वाडी।
मखरा तरु तो कांई न राख्यूं, वाडी सर्व ऊजाड़ी ॥ राजा ॥१८॥
कोई ना हथियार छिनाया, कोई खाधा फाडी।
कोई ना मुख कान विलूर्या, इज्जत तो अति पाड़ी ॥ राजा ॥ १९ ॥
सुभट लेई नृप-नन्दन आयो, दोई लड़िया भारी।
वानर तो बल वन्त विशेषे, सोई लीधा मारी ॥ राजा ॥ २० ॥

क्षेपक — राधेश्याम

फुर्ति से कपि मारी छलांग, दिल पर था लेश नहीं भयका।
मारी इक लात घुमा कपिने, दिया तोड़ कलेजा अक्षयका ॥
अक्षयगिरते सब सैन भगी, दौड़ लंका में आई है।
भय भीत पुकार करें भारी, लंका पति तेरी दुहाई है ॥
कुछ अंग भंग निशिचर कीने, कुछ पकड़ जमीं से मार दिये।
अध मरे भाग कुछ असुर गये, कुछ पैरों नीचे कुचल दिये ॥
मर्दन सब असुर किये पल में, थर थर थर सब थर्रा तेथे।
अब नहीं भूल यहां आवेंगे, कहते यों भागे जाते थे ॥
वा अमन पहुंच जावें गढ में, ईश्वर का ध्यान लगावेंगे।
जिन्दे जब तक रहे दुनियों में, इससे लड़ने नहीं आवेंगे ॥
उस कपि बलकारी भटने, फुलवाडी तोड़ २ डाली।
विध्वंस अशोक वाटिका की, मुतलक न रही वहां हरियाली ॥
जहां सघन लगाये भारी थे, तहां नाथ हो गया उजियाला।
क्या बयान करें हम वानर का महाराज मार हमको डाला ॥
करतूत याद कर २ उस की, दिल दहसत भारी खाता है।
गात कीट पतंग सम नाथ भई, हरजां योही दिखलाता है ॥
कर अंग भंग छोड़ा हमको, दुर्गति भी कीनी भारी है।
हम जय अशोक वाटि कामें, अब ताकत नहीं हमारी है ॥
सगत जब यादकरें उसकी, दिल चीर उठे प्रभु होलाई।

यह काल कराल प्रलय आया, या अजल कालका शौला है।
यह वानर है या आफत है, वनवीर वीर बलवां का है।
हिम्मत नहीं सन्मुख जानेकी, छुप २ पेडांसे झांका है॥
अक्षय कुमार के मरतेही फिर पैर हमारे उखड गये।
ले ज्ञान लक को भागदीये, भयभीत हुवे सबपछाड़ गये॥
अक्षय कुमार का मरनासुन, दशकंधर शोचमें छाया है।
क्या कल्पना पड़ी बडी मनको, फिर धीर हृदयमें लाया है॥

दोहा क्षेपक—

प्रबल बली दश कन्धने, सर्व बंधाया धीर।
बुलाया दरबार में, इन्द्रजीत बलवीर॥
बेटा अशोक वटिकाबीच, एक महाबली कपि आया है।
अक्षय कुमार को लातमार, जिसने सुर धाम पठाया है॥
कुछ सुभट साथमें लेजाओ, सीधे अशोक उपवन जाओ।
जिस तौर बने उगतीर पुत्र, कैदी कर कपि को ले आओ॥

सवैया—

बन्दि के विदेह नन्दनी के पद कञ्ज द्वन्द, पैठ्यो वाटिका में द्वार पालन पछार के। खाये फल भार डार तोरि के उखारे तरु, बाग [illegible] उजार्यो राम-जस को उचार केयूथप समेत भट किंकर हजारन [illegible] मारि के विकल [illegible] अक्ष को पछार के। कालसो कराल घन नादको बेहाल किनो, केशरी कुमार वीर सुभटको मारके॥१॥ दूर [illegible] घननाद को निनाद किनो, मार के समग्र सैन्य भट भट कर्यो सटाकटें। [illegible] की चोट से महान रथ घोडे चार, [illegible] भट २ कर्यो सटाकटें॥ [illegible] कर्यो कटाकटें। केसरी किसोरी [illegible] लोल [illegible] में कांटो पट २ कर्यो पटाकटें॥२॥

राग सूरती—

[illegible] इन्द्र जीत आवे।
[illegible] मन [illegible] ॥ गाना ॥ [illegible] ॥

क्षेपक राधे श्याम—

गर्जना नई अन्दाज नया, सामान नया सब साज नया।
दिन आजनया रण रागनया, रणको आया रणबाज नया॥

ढाल मूलगी—

पहिलातो बाणांसुं लड़िया, विविध परे बलवन्ता।
खडग आदे आयुद्ध छतीसे, सम्वाहे मति मंता॥ राजा॥ २२॥
इन्द्र जीतजी जेजे मूके शस्त्र महा दुःखदाई।
विचेहीथी छेदी नांखे, वानर एह बढाई॥ राजा॥ २३॥
इन्द्र जीतना भट तबधाया, जाये सघला नाठा,।
वारं अगज! अनेरा आगे, वानर थी अति ञाठा॥ राजा॥२४॥
भट भागा शस्त्र बल भागो, इन्द्रजीत नवी नाठा।
नाग पास बाणेकर वानर, बांध लीयो अति काठो॥ राजा॥२५॥
आणी मेल्यो रावण आगे, रावण हर्ष नमावे।
सेवक तूं आजन्म तणो मुझ, आज रामे चिन्त दीधो॥राजा॥२७॥
वनवासी फल शाकाहारी, मेला लूगडां लासो।
भील किम्पूं तूंशो पूरसे, थारा मननी आसो॥ राजा॥ २८॥
अबर कामनी नीठपडी थी, इहां कोई आवे।
अवतो प्राण पड्याछे सांसे, छूटेवा नविपावे॥ राजा॥ २९॥
पहीलो थो भाणेज जमाई, प्राण थकी ही प्यारो।
बन्दी वान हूवो अबवेगे, सीता लेई पधारो॥ राजा॥ ३०॥
ओनो धूता धूर्त शिरोमणी, आप चली क्यूं नागा।
अंगा रातो अति धग धगता, भलिपरे हाथ गहाया॥ राजा॥ ३१॥
सेवक वर महाराज्ञो धोरी, अबरं दूत कहायो।
ते माटे रे अवध्य अछेयण, एह विटम्ब करायो॥ राजा॥ ३२॥
हूंतो सेवक कदको थारो, कदका तुम मुझ स्वामी।
लाजन पामो झूठ कहंतां, साच न भाखे कामी॥ राजा॥ ३३॥
एक बार पवनं जय राजा, आयो थो बोलायो।
वरण तणा बन्दी खाना थी, खर खेचर छोडायो॥ राजा॥ ३४॥

यह काल कराल प्रलय आया, या अजल कालका शोला है।
यह वानरहै या आफतहै, बनवीर चोर बलवां काहै।
हिम्मत नहीं सन्मुख जानेकी, छुप २ पेडोंसे झांका है॥
अक्षय कुमार के मरतेही फिर पैर हमारे उखड गये।
लेजान लंक को भागदोये, भयभीत हुवे सबपछाड़ गये॥
अक्षय कुमार का मरनासुन, दशकंधर शोचमें छाया है।
क्या कल्पना बड़ी बडी मनको, फिर धीर हृदयमें लाया है॥

दोहा क्षेपक—

प्रबल बली दश कन्धने, सर्व बंधाया धीर।
बुलवाया दरबार में, इन्द्रजीत बलवीर॥
बेटा अशोक वटिकाबीच, एक महाबली कपि आया है।
अक्षय कुंवार को लातमार, जिसने सूर धाम पठाया है॥
कुछ सुभट साथमें लेजाओ, सीधे अशोक उपवन जाओ।
जिस तोर बने उसतोर पुत्र, केदी कर कपि को ले आओ॥

सवैया—

बन्दि के विदेह नन्दनी के पद कञ्ज द्वंद, पैठ्यो वाटिका में द्वार पालन सहार के। खाये फल भार डार तोरि के उखारे तरु, बाग को उजार्यो गय-जय को उचार के यूथप समेत भट किंकर हजारन को बांधि के विपक्ष रक्ष अक्ष को पछार के। कालसो कराल भव नादको बेहाल किनो, केशरी कुंवार वीर सुकनको मारके॥१॥
दूर किने डर घननाद को निनाद किनो, मार के समग्र सैन्य सट सट क्यों सटाकदे। लातन की चोट से महान रथ घोडे चार, सारथी संहार सट २ क्यों सटाकदे॥ विश्व विलोकी चर वैरि को विशेष कोप करी हूदी छोक छट क्यों छटाकदे। केसरी किसोरी वीर बांकुरो लरसी वीर हूक में लंगोटी पट २ क्यों पटाकदे॥२॥

चाल मुरली—

आई सूर्य कैसे चली अनि. इन्द्र जीत आवे।
निर्भीत हर्यो मन माहि. कपिवर मारने धावे॥ राजा॥ २१॥

क्षेपक राधे श्याम—

गर्जना नई अन्दाज नया, सामान नया सब साज नया।
दिन आजनया रण रागनया, रणको आया रणबाज नया॥

ढाल मूलगी—

पहिलातो बाणांसूं लडिया, विविध परे बलवन्ता।
खडग आदे आयुद्ध छतीसे, सम्बाहे मति मंता॥ राजा॥ २२॥
इन्द्र जीतजी जेजे मूके शस्त्र महा दुःखदाई।
विचेहीथी छेदी नांखे, वानर एह बढाई॥ राजा॥ २३॥
इन्द्र जीतना भट तनघाया, जाये सघला नाठा,।
वारं अगज! अनेरा आगे, वानर थी अति आठा॥ राजा॥२४॥
भट भागा शस्त्र बल भागो, इन्द्रजीत नवी नाठा।
नाग पास बाणेकर वानर, बांध लीयो अति काठो॥ राजा॥२५॥
आणी मेल्यो रावण आगे, रावण हर्ष नमावे।
सेवक तूं आजन्म तणो मुझ, आज रामे चिन्त दीधो॥राजा॥२७॥
वनवासी फल शाकाहारी, मेला लूगडां लासो।
भील किम्पूं तूंशी पूरसे, धारा मननी आसो॥ राजा॥ २८॥
अवर कामनी नीठपडी थी, इहां कोई आवे।
अवतो प्राण पल्याछे सांसे, छूटेवा नविपावे॥ राजा॥ २९॥
पहीलो थो भाणेज जमाई, प्राण थकी ही प्यारो।
बन्दी वान हूवो अववेगे, सीता लेई पधारो॥ राजा॥ ३०॥
ओतो धूना धूर्त शिरोमणी, आप चली क्यूं नाया।
अंगा रातो अति धग धगता, भलिपरे हाथ गहाया॥ राजा॥ ३१॥
सेवक पर महाराजो घोरी, अवरं दूत कहायो।
ते माटे रे अवध्य अछेयण, एह विटम्ब करायो॥ राजा॥ ३२॥
हूंतो सेवक कदको थागे, कदका तुम मुझ स्वामी।
लाजन पामो झूठ कहेतां, मान न भाखे कामी॥ राजा॥ ३३॥
एक वार पवनं जय राजा, आयो थो बोलायो।
वरुण तणा बन्दी खाना थी, नर खेचर छोडायो॥ राजा॥ ३४

एक वार हूं पण आयो थो, स्वामी नो तेडायो।
सकल गुने रणमें घेर्यो थो, तब तुम्हाने मेल्हायो॥ राजा॥ ३५॥
धर्म पक्षनो मान कराणो, पाप पक्षे नविरेणो।
लम्पट नरमें वात करन्तां, पापे पिण्ड भरेणो॥ राजा॥ ३६॥
गर्तो हूंतो कोई न देख्यूं, अनुज एकने जीती।
गमो है जे तुमने रामे, वसुधा वात विदीती॥ राजा॥३७॥

ढाल दोवक तर्ज चौकनी-स्वामी श्री नथमलजी कृत-

सुन महाराजा कटुक वचन मुखसे थी कबहुन बोलीये।
रूठे कपिराजा इण वचनों सुनो, अमल मृगव मनतो लीये॥टेर॥
रघुराय की नारी हरलायो, जगमें तुझ अपजश छायो।
थे कुलने कालो लगायो, सुन महाराजा॥ १॥
है सीता सत्यवन्ती नारी, तिनकूं तूं जाणे करूं प्यारी।
कर्यूं मौत आई, रार धारी॥ सुन॥ २॥
सुग्रीव भामण्डल मा राजा, जसु सेवे आणा शिरताजा।
तेरी करे करसी काजा॥ सुन॥ ३॥
लक्ष्मण रणमें जब आसी, क्रोडों ही सुभट तिहां मरसी।
कहो उनरो कोट कुण करसी॥ सुन॥ ४॥
है कोट शिखाने उठाई, सुरनर मिलने सुजश गाई।
[illegible] वर्ष सुखने छाई॥ सुन॥ ५॥
[illegible] वात वर्गा आगी, जे भाखीथी केवल नाणी।
[illegible] स्त्रवन्ती छ यागो॥ सुन॥ ६॥

ढाल मुलनी-

[illegible] मारो, वचन नार बहु वादे।
[illegible] करन्ता, सुग्रीवादी तूं चाहे॥ राजा॥ ३८॥
[illegible] मार्यो मुंडो, पंच शिखा शिर राख्यो।
[illegible] पाडे, [illegible] एक भाख्यो॥ राजा॥ ३९॥

ढाल [illegible]

[illegible] हनुमन्त ही [illegible] फेंके वच अभयदीये टोले, सभा ? क्यूं

---

१ [illegible]

छाती मुझ छोले । मुझे कुण मार लेवे मूंडो, ऊंणीको दीसे छे भूंडो ॥ सत्य व्रत ॥ ७९ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणी कोप्यो अति वानर, नाग पास ने तोड़े ।
कमल नाल सूं कुंजर बांध्यो, कहो कवण नर छोड़े ॥ राजा ॥ ४० ॥
विधुत पात तणी परे पड़ियो, रायनो मुकुट पाड़ी ।
खण्डो खण्ड करीने नांखे, कौण विचारी वाडी ॥ राजा ॥ ४१ ॥
ग्रहो ग्रहो रावण भाखे, रीमघणी विस्तारी ।
ताम सुलंक निशंक पणेरे, विध्वंसी निरधारी ॥ राजा ॥ ४२ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

सहश्र थम्भ मेलही पारे, लंकाको विध्वंसे ज्यारे, कोलाहल मचियो है सारे । राम को दूत ही आयो, प्रलय सो करने देखायो ॥ सत्य० ॥ ८ ॥

(वैष्णव मत की रामायण मे हनुमानजी से लंका दहन का कथन इस प्रकार है) व्याख्यान में कहना या न कहना वाचक की इच्छा पर निर्भर है (नागफास में बधे हुवे हनुमानजी को मारने के लिये रावण सुन के भटः पवन सुत के पास आये)

तर्ज मूंदड़ी की—

जबतो मारन उसको लागे, वसनहीं चलता हनुमंत आगे, निशिचर देख २ कर भागे । यूं नहीं मरु मैं हरगिज मेरे पास संजीवन मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ ११ ॥ मैं तो मौत बताऊं मेरी, लावो तेल रुई तुम गहरी, अबतो मत कर रावन देरी । पूंछको बांधके आग लगावो जल्दी मचावे मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ १२ ॥ सब लंका की रुई मंगाई उससे पूंछ बांध लपटाई, दीना ऊपर तेल गिराई । उसमें आग लगाई ईश्वर याद कर लीनी मूंदड़ी ॥ सीता-माता० ॥ १३ ॥ पहिले रावन सन्मुख जाई, बांकी दाढ़ी मूछ जलाई, पीछे लंका में फिरवाई । लंका जला दीनी हनुमान हिया विचराखी मूंदड़ी ॥ सीतामाता ॥ १४ ॥ लंका फिर २ के जल-वाई, घर एक विभीषण का नाहीं, बाकी सब घर आग लगाई

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदडी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं छूं मात ।
चरी सुनाईने चल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रंगीलो, आयो वारम लाई ।
राम नमी चूड़ामणि आप्यू, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूड़ामणि छातीसूं चांप्यो, जाणे सीता आनी ।
आज मिली वारुं वारुं, फरसे हैये लगावी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूंडेबोल—

अरज रघुवरसेरे, कही हकिकत नाथ जानकी बड़ी जिगरसेरे ।टेर।
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
लेआयो गढ़ लंक मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
राक्षसणी गहु रात कष्टदे, बडो फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड़ हनुमन्त सीया सुध, कही हकीकत हरसेरे ।
जरे निरन्तर राम आंखसे, आंसू बरसेरे ॥ अरज ॥
बात सुणी मूर्छा प्रभुका, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें तरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया—

कहे श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध अछे सियके जिय मांही ।
है सब लंक निवासी कलंक रावन की वन ही वन छांहो ॥
जीवत हैं अरु सीता सती, मरुयोन गई हमने बिछुरांही ।
रामके पद पंकजमें, मन अन्तर भोजन पावत नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

विदा हुवांथा मिल्यांथा आशी, बीचे हुवाने कामो ।
देवदत्तां प्रभुने सुणाया, भलो भलो कहे रामो ॥ राजा ॥ ४५ ॥
हाल अशोक वाटीमांसी, सीता सुद्ध लहाणी ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सद्गुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थो एक ।
सीता शुद्ध लही इहां. राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
ऊम्भवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रवल महाबलि आगलो, राखण सषलाघ्रत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो. राम सुपंण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल चेपक तर्ज जगतगुरु तृशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे. वानर लाखों कोड़ ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होडा होड़ ।
सती की वार चढे रघुविर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, वकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीयतारे, पायक रयाछे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ रा परिवारसुंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूरा रण रसमें रमेरे, मिलीया भाली वाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिधो सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं वधसी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरे. हर्ष वदन हूंमीयार ।
किष्कि धाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
वाहर ए सीता तणी, आणी महा महोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नोवत केरोनाद ।

समुद्रमें जाय बूझाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदड़ी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं छूं मात ।
सीख सुनाईने चल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रंगीलो, आयो नारम लाई ।
राम नमी चूड़ामणि आप्यु, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूड़ामणि छातीसुं चांप्यो, जाणे सीता आवी ।
आज मिली थाकं थाकं, फरसे हैये लगावी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पत्रजी मूंडबोल—

अरज गुजारसेरे, कहो हकिकत नाथ जानकी बड़ी जिगरसेरे ।टेर।
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
ले आयो गढ़ लंक मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग असोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
रात दिवस सहु राम कहंद, बड़ी फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड़ हनुमन्त सीया सुध. कही हकीकत हरसेरे ।
झरे निजर राम आंखसे, आंसु बरसेरे ॥ अरज ॥
बात पूरी की सुणी प्रभुजी, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें तरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया —

कहै श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध अंक सियके जिय मांही ।
है बहु देह [illegible] कलंक रावन को वन ही वन छांहो ॥
[illegible] है बहु सीता सती, [illegible] गई हमसे बिछुरांही ।
[illegible] पद [illegible], पन आवत भोजन पावत नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

[illegible] कांपी ।
[illegible] कहै रामी ॥ राजा ॥ ४५ ॥
[illegible], सीता सुद्ध [illegible] ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थो एक ।
सीता शुद्ध लही इहां, राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
जम्बवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रवल महाबलि आगलो, रावण सघलाभूत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो, राम सुषेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज जगतगुरु तृशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे, वानर लाखों कोड ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होडा होड़ ।
सती की वार चढे रघुबिर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, बकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीपतारे, पायक रयाछे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ रा परिवारसूंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूरा रण रसमें रमेरे, मिलीया घाली बाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिधो सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं वधसी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा सुध भलके तिहांरे, हर्ष वदन हुंसीयार ।
किष्कि धाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
वादर ए सीता तणी, आणी सही बहोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नौवत करोनाद ।

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदडी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं हूं मात ।
नमी सुनाईने चाल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रमीलो, आयो नारम लाई ।
राम नमी चूडामणि आप्यु, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूडामणि छातीमें चांप्यो, जाणे सीता आनी ।
आन मिली वारं वारं, फरसे हैये लगानी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मुंडेबोल—

अरज रघुवरसेरे, करी हकिकत नाथ जानकी पड़ी जिगरसेरे ॥टेर॥
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
ले आयो गढ लंक मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
[illegible] राम [illegible], बची फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड हनुमन्त सीया सुध, कही हकीकत हरसेरे ।
जद निरखत राम आंगने, आंसू बरसेरे ॥ अरज ॥
बात सुणीने सुगरी प्रभु का, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें तरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया—

कहै श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध [illegible] सियके जिय मांही
है [illegible] कलंक रावन की पन [illegible] ॥
[illegible] सीता सती, [illegible] हमने [illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

[illegible] आयो, [illegible] ।
[illegible] ॥ राजा ॥ ४[illegible] ॥
[illegible] सीता [illegible] ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थी एक ।
सीता शुद्ध लही इहां. राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेप ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
जम्बवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रवल महाबलि आगलो, रावण सबलाभूत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो. राम सुषेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल च्चेपक तर्ज जगतगुरु त्रशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे. वानर लाखों कोड़ ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होड़ा होड़ ।
सती की वार चढे रघुबिर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, बकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीपतारे, पायक स्याछे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ गा परिवारसुंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूरा रण रसमें रमेरे, मिलीया घाली बाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिघो सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं पधनी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरे. दर्प चंदन हूंमीयार ।
किष्किंधाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
वाहर ए सीता तणी, आवी सही सहोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नोपत केरोनाद ।

[illegible] नो गाजीरणो, सुण्यो न जाये साद ॥ ७ ॥
शुभ[illegible] वेला शुभ मुहूर्त, शुभही शकुन विचार ।
गगन पन्थ चाल्या सह, राघवजीनी लार ॥ ८ ॥

[illegible] शर्मी - तर्ज भूली मालण है सत्यगुरु—

'[illegible]' आवीगोहो, सुभट सगला शूर ।
[illegible] नीकल्योल, जेम दलनो पूर ॥ राघव० ॥ १ ॥
विविध वाहन विविध यान, विविध वेश विशेष ।
विविध [illegible] विविध [illegible], विविध रथ नरेश ॥ राघव ॥ २ ॥
विविध घोडा विविध हाथी, विविध रथ नर होई ।
विविध नो हथियार हाथे, विविध बाजा जोई ॥ राघव० ॥ ३ ॥
विविध [illegible] विविध [illegible], [illegible] अभिराम ।
विविध [illegible] चाले, विविध परिवार गाम ॥ राघव० ॥ ४ ॥
[illegible] हयांनो हिंसार ।
[illegible] अधिको, रथनणा चित्कार ॥ राघव० ॥ ५ ॥
[illegible] सुभट केरा, पडे कायर प्राण ।
[illegible] वाजे, शब्द नो नहीं प्रमाण ॥ राघव० ॥ ६ ॥
[illegible] विमाने, कोई नो गजराज ।
[illegible] चढी गगने चालिया साज ॥ राघव० ॥ ७ ॥
[illegible] गिरिवासी ।
[illegible] 'सकुट मेलु स्वामी ॥ राघव० ॥ ८ ॥
[illegible] कोई [illegible], कोई [illegible] ।
[illegible] संग्राम ॥ राघव० ॥ ९ ॥
'[illegible]' बांध्यो 'नील' ।
[illegible] कोई न करी ढील ॥ राघव० ॥ १० ॥
[illegible] थान ।
[illegible] ॥ राघव० ॥ ११ ॥
'[illegible]' [illegible] करे, [illegible] प्रधान ।

---

१ [illegible]

आणी 'लक्ष्मण' भणी दीधी, पामीने सन्मान ॥ राघव० ॥ १२ ॥
रात रही ने प्रातः चाल्या, राय 'सेतु' 'समुद्र'।
साथ लाग्या भर्म भाग्या, हुवा अधिक अक्षुद्र ॥ राघव० ॥ १३ ॥
सुवेलाद्री चाली आया, तिहां राय 'सुवेल'।
जीती लीधो साथ किधो, कान लागी वेल ॥ राघव० ॥ १४ ॥
लंका नगरी प्रत्ये चाल्या, हंस द्वीपे जाय।
'हंस रथ' नृपे जीतने तिहां, रह्या राघव राय ॥ राघव ॥ १५ ॥
आशनो आवीयो राघव, मीन रासे मन्द[1]।
संचर्यो सघलोही जाण्यो, राय रवीनो नन्द ॥ राघव ॥ १६ ॥
लंकाने ए ग्रह लाग्यो, लंकनो रे विणास।
होय शे एमही जाणो, लोक पाम्या त्रास ॥ राघव ॥ १७ ॥
युद्धने सम्वाहीये अति, होई अति हुंसीयार।
लंकपति सामन्त शूरा, महा झूंझणहार ॥ राघव ॥ १८ ॥
नामथी 'मारित्य' मोटो, 'हस्त' राय 'प्रहस्त'।
सारणादिक सहस केई, निशाचर मदमस्त ॥ राघव ॥ १९ ॥
लंकपति रणतूर ताजा, केई कोडी तैयार।
ताडिवा आदेश आवे, शोरनो नहीं पार ॥ राघव ॥ २० ॥
लंकपति सूं लहु आतो, करे ए अरदास।
कांई उतावला थाओ, शोचसे सुखवास ॥ राघव ॥ २१ ॥
अणविमास्यो काम कीधो, ते पाटो कुल लाज।
अजहुं आतुर होईयांथी, नहीं सुधरे काज ॥ राघव ॥ २२ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत, ढाल दीपक तर्ज म्हारी रुपये री कलदार—

अरज करूं मैं वारम्वार, सुनो वीर ! थे करो विचार ॥टेर॥
कहै विभीषण सुनहु रावण पाछी देदो थे परनार ॥ अरज ॥ १ ॥
या नहीं माने तूं क्यूं ताने, जाने सब जग नारि सिरदार ॥अरज॥ २
प्राण गमासी जात लजासी, मारी जोसी सब संसार ॥अरज ॥ ३ ॥

---

१ मन्द-यानि शनैश्चर मीनराशी पर, लंका मेष राशी पर लागा है।

म्हारी आंत तपावे, जिय दुखपावे, जिणसूं कहूं छूं धरकरप्यार ४
दूजो चानो थई है अरव्याता, जाता लंक ने कीधी खुवार ॥५॥
कोट शिला उठाई बड़ी है पुण्याई, त्याई करता पर उपकार ॥६॥
लोक हसासी फिर पछतासी, पासो परभव दुःख अपार॥अरज७॥
थे नहीं जाणो होसी फजीतो, बांका पुण्य है अपरम्पार ॥अरज८॥

(रावणो वाच) देशी नई लावणी की —

कहे दशकन्धर सुनो विभीषण, बात गुणोनी इकम्हारी.
राम रु लिछमन दोय भीलड़ा म्हारे रुद्धिनो नहीं पारी ॥कहे॥१॥
कुम्भ कर्ण सा वीर हमारे, प्रबल बली कहो कुन पाले।
इन्द्रजीत मेघजीते इन्द्रने, रणमे बाण कहो कुण झाले ॥ कहे २ ॥
कनक कोट समुद्रसी खाई, भाई विभीषण सुण लीजे।
सहस्र चार अक्षोहणी म्हारे, नाहक वाद नहीं कीजे ॥कहे॥३॥
सूरज देव तो तपे रसोई, पवन देवतो अंगन झारे।
इन्द्र सरीखे टहल हमारे, कहो अबहूं किणरे मारे ॥ कहे ॥ ४ ॥
वेमाता सुत दले कोदरा, ऋद्धि देख सुरपति लाजे।
[illegible] उरीस म्हारे, तीन खण्ड मैंने साजे ॥ कहे ॥ ५ ॥
देवन गिरि सम कोवर गाजे, बाजा बाजे अपार वहै।
[illegible] सीता अगनि जाले, पापको कुणपार कहे ॥ कहै ॥ ६ ॥
दर्श राम और लक्ष्मण दोई, सीता ने करसूं प्यारी।
[illegible] दल कोमो, पर्ण मांहो अधि कारी ॥ कहे ॥ ७॥

[illegible] —

[illegible] ॥
[illegible] ॥ रावण ॥ २३ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ रावण २४ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ रावण ॥ २५ ॥

इन्द्रकी श्री थकी अधिकी, ताहरी छे देव ।
कांई खोवे रंक होवे, एक करी अह मेव ॥ राघव ॥ २६ ॥
इन्द्र जीत कहन्त काका, जन्म डरपण माहि ।
दूषित कीधूं ताततूं कुल, तात सहोदर नाही ॥ राघव ॥ २७ ॥
इन्द्र जीत ए नाम म्हारो, इन्द्र जीतूं जंग ।
कौण लक्ष्मण राम राजा, रहै तूं रसरंग ॥ राघव ॥ २८ ॥

ढाल चेपक तर्ज– होगी की–सुगणा भूलचन्दजी कृत—

इन्द्रजीत कहै सुण काका, थे दूध लजाया माका ॥ टेर ॥
रावण राय नरांसुर नायक, खण्डत्रय जश जांका ।
पकड़ी टेक कबहू न छोडे, थे क्यों करो निकमा हाका ॥
जानो नहीं पराक्रम म्हांका ॥ इन्द्रजीत० ॥ १ ॥
राम रु लिछमन दोय भीलडा, वनमांही वास उनोंका ॥
दल बलको कछु जोर न जिनों के, निकमा बतावो धाका ॥
जानों नहीं तेज लंकाका ॥ इन्द्रजीत० ॥ २ ॥
वक्त पड्यां देवेला चारो, ए लक्षण है थांका ।
निर्बल शीख देवे क्षत्री कूं, धिक् २ जन्म जिनांका ॥
लेवां सही जीत पताका ॥ इन्द्रजीत० ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

पेला थे छेतर्यो रावण, भाखी झूठी बात ।
मारीयो में राय दशरथ, एह तुझ अवदात ॥ राघव० ॥ २९ ॥
इहां माहरी दाढ मांहे, आवीया छे दोय ।
चाहे छो ऊगारीयां तूं, बणो नहीं अरिहोय ॥ राघव० ॥ ३० ॥
जाणीये छे राम गिर्लीपो, वात मांही विचार ।
कूप पाणी जिस्यो होवे, तिस्यो चढस मसार ॥ राघव० ॥ ३१ ॥
लहु भाखे पुत्र सांभल, नहीं अरिसुं नेह ।
जिसो देवूं तिसो भाखूं आवीयो तुम छेह ॥ राघव० ॥ ३२ ॥
पुत्र नहीं तूं शत्रु सरिसो, करण कुलनो छेद ।
दूधनो मूंडो भागो, कांई जाणे भेद ॥ राघव० ॥ ३३ ॥

स्वामी कामी पणे पिता तव, अंध मांही गिणाय।
जन्म अंध समान तेहनो, आज थकी कहिवाय ॥ राघव० ॥ ३४ ॥
पुत्र अने चारित्र ताहरे, भलो पणो न देखाय।
भाईजी हुं किसुं भाखे, लंक तो न रहाय ॥ राघव० ॥ ३५ ॥

दोपक सवैया

लंकमें दुग्ग तेरे, संग कुम्भकर्ण जैसे।
भटे बंडे बांके योध कहीये कृपानकी ॥
पाणीमें फराग कीनो, चन्द्रनिशा निवास लीनो।
रवि है रसोया और, कहा करी है बखान की ॥
राणी है मन्दोदरी सिधानी, रूप रम्भा जैसी।
गाजे गज गज द्वार, टोटणा खजान की ॥
कहत विभीषण तूं तो, जानकी फेर देवो।
जानकी न लायो है, निशानी घर जानकी ॥
गरजे जो सुभट भट, निकट बजरंग जैसे।
कैसे रे कीना काम, थांरे कहा ज्ञानकी ॥
बाग के उजाग्यों, इन्द्रजीत के पछार्यो।
लंका प्रजाल्यो है, सब मिकान की ॥
आवे अब राम तुम भाग के छिपोगे कहां।
पापड़ूपे आग काल, लागी तप वानकी ॥
कहत विभीषण तूंतो, जानकीको फेर देवो।
जानकी न लायो है निशानी घर जानकी ॥

ढाल देशक सूरती—

वचन सुन कोपको धरतो, अगिको प्रशंसा करतो, बोले यूं मुख कैर करतो। रावण खड्ग विभीषणने मारे, पछे हूं वंछित ही सारूं। कन्द प्रत पालो ॥ ८१ ॥

ढाल सूरती—

एम सुणने सत मदन कोपियो अम्रगाल।
तलवार काढी मारवा, उठियो तत्काल ॥ राघव० ॥ ३६ ॥

विभीषण ऊठीयो सामो, सामो लाग्या वीर ।
कुम्भकर्ण ने 'इन्द्रजीत' ज, धाई आया धीर ॥ राघव० ॥ ३७ ॥
विचे पडीने कीया अलगा, हाथीया जेम सोई ।
चित्त फाट्यो रायजीनो, मेलवे नहीं कोई ॥ राघव० ॥ ३८ ॥
मत रहो मुझ नगरमांहै, अलग जाजे दूर ।
उणही ने भेलो होई, रहै राम हजूर ॥ राघव० ॥ ३९ ॥
मारीचे छे सांच बोलो, झूठे जगपती आय ।
विभीषण सो भलो भाई, नावीयो नृपदाय ॥ राघव० ॥ ४० ॥
रायने पगे लागी चाल्यो, लेई निज परिवार ।
तीश अक्षौहणी लसकर, लागीयो तसु लार ॥ राघव० ॥ ४१ ॥
हंस द्वीपे चाली आयो, रामने दरबार ।
सुग्रीवादिक ताम राजा, करे शौच अपार ॥ राघव० ॥ ४२ ॥
वैरियों विश्वास न होवे, तेहीमें ए रक्ष ।
स्वामीजीना अति जतन करवा, कहै प्रभु प्रत्यक्ष ॥राघव० ॥४३॥
मोकल्यो जन राम पासे, खबर करवा हेत ।
रामजी 'सुग्रीव' सामा, मांडीरया नेत ॥ राघव० ॥ ४४ ॥
कहै कपिपती राक्षमानो, न ऊपजे विश्वास ।
भेद लेही मांहीलो हूं, भाखिमसो उल्लास ॥ राघव० ॥ ४५ ॥
ताम एक 'विशाल' खेचर, भाग्यही सुविशाल ।
धर्मपक्षे धर्मात्माए, धर्मनो प्रतिपाल ॥ राघव० ॥ ४६ ॥
सती सीता तणी करतां, वीनती नृप साथ ।
खीजीयो अति राय रावण, काढियो ग्रही हाथ ॥ रावण० ॥४७॥
चोरने चांनणो ना गमे, झूठ न गमे साच ।
लम्पटांने शील न गमे, गृह मांची वात ॥ राघव० ॥४८॥
जाई आगे हाथ साही, राम आणे मांहीं ।
पाय पडतां लेई ऊंचो, मिल्या प्रभु गले बांही ॥ राघव० ॥४९॥

चौपाई तुलसीकृत रामायण में से

पहुँरी रामङ बिधाम बिलोकी, रहो टटकि इकटक पग रोकी

भुज प्रलम्ब कंजारुण लोचन, श्याम लगात प्रणत भय मोचन ॥
सिर कन्ध आसन उर सोहा, आनन अमित मदन मनमोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता, मनधरि धीर कही मृदुबाता ॥

ढाल मूलगी-

कुशल पूछे नाग नागरी, पूज्य तुम गुणगाय ।
आज धन्य दिन माहरो रे, देख दर्शन पाय ॥ राघव० ॥ ५० ॥

दीपक दोहा-

श्रवण सुगढ गुनी आरऊ, प्रभु भंजन भयभीर ।
धारि २ आरति हरण, शरण सुगद रघुबीर ॥

अनुज सहित मिल ढिग बैठारी, बोले बचन भक्त भयहारी ।
कह लंकेश सहित परिवारा, कुशल कुठाहर बास तुम्हारा ॥

ढाल मूलगी

आवो हवो आवो वेगो आज उपज्यो प्रेम ।
नाथ पूछे हांसी सोली, कुशलाछो केम ॥ राघव० ॥ ५१ ॥
आ विधि ने घणा दिवसे, पहुवा भला बोल ।
दिसे आज दिनां जाता, मानसी निर्मोल ॥ राघव० ॥ ५२ ॥
वचन ना रस पंक छूटो, भाईजी भल भूप ।
जनम में रस राम मेल्यो, वचन रूप विरूप ॥ राघव० ॥ ५३ ॥
निर्भरण कहं रामजी थे, भाईजी ने छोड़ि ।
आवियो शुभराज जेम तेम, जाणीयो ममजोड़ी ॥ राघव० ॥ ५४ ॥
मन वचन तन साच भाखे, करि ए नमलीम ।
लकडी नगरीं मन तुमने, दियूं हूवो हीम ॥ राघव० ॥ ५५ ॥
राज हवा टालसी, लंक आपी ईस ।
'किसनदास' कहत अरचन, आपीया बगसीस ॥ राघव० ॥ ५६ ॥

दोहा (किधार गते)

'हंसदीन' दिन अब रहो, अंग आवे नाम ।
सर्व दोष मोचन, मिटे जगावे नाम ॥ १ ॥
हंसि सीके समाज्ये, सर्व धर्म समान ।

लांब पणे चवड़ा पणे, जोजन वीश प्रमाण ॥ २ ॥
वेला साधी वेगसुं, कीधो कटक पडाव ।
राक्षस दल देखण तणो, आणे चित्त में चाव ॥ ३ ॥
ध्वनी शब्द सायर तणो, राम कटकनो साद ।
लंकातो वहिरी हुई, कोला हलनो नाद ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

मन्दोदरी 'रावण' समझावे, वार ए पुनरपि नहीं आवे, कन्ता? क्यूं दिलमें नहीं लावे । रामको तेज है भारी, प्रशंसे सारा नरनारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ८२ ॥

क्षेपक सवैया—

जेठ सुरापति जोय, एम आसाढज आणी,
श्रवन न-चले सोस, जन्तु भाद्रवा वस जाणी ।
अममन है आसोज, कन्त कुल काती वेसी,
मिगसिर दीनो माग पोह माह आयां पेसी ॥
नगराज भणे फागुन निकट, चेत २ कहै सावरी,
वैशाख एम वनिता वेद रखो सीत मती रामरी ॥

दोहा क्षेपक—

घर सीया रो आवीयो, ऊनालो घन जान ।
घर सायत में जावसी, राज ऋद्धि सन्मान ॥
वीराणी रहसी नहीं, रहसी सुथारी ।
सोनारी जासी परी, करै भाभी कुम्भारी ॥

धूलचंदजी कृत,

ढाल क्षेपक तर्ज सावण आयो हो म्हारा सोजतिया सरदार ।

रघु पतिआयो हो म्हारा छठमीना भरतार, लंकेश्वर रघु०
म्हारो जिय दुःख पायोहो, म्हारी अरजी लो अवधार ॥ लं० ॥१॥
थेतो काढ्यो भाई हो, थांरे कांई आई मन मांय ॥ लंके० ॥
थेतो कुबुद्धि कमाई हो, कीधो काम अन्याय ॥ लं० ॥ २ ॥
जो कुशल चावो हो, थेतो सूंपो पाछी सीत ॥ लं० ॥

राग मन मांही लावो हो. थे क्यों होवे फोगट फजीत लं० ॥३॥
आनो कामन आसी हो. थांरे करनां ही कोड उपाय ॥ लं० ॥
थांरी लंका जासीहो. थेनो मांनो म्हारी माय ॥ लं० ॥ ४ ॥

मुनि श्री रतनमलजी कृत ढाल चोपक-तर्ज-सीता माता की-

म्हारे मन्दोदरी महाराज ? सुंपदो सीता सुन्दरी (टेर)
थांरे नारी सहस अठार, प्यारे रागो तिनसे प्यार ।
मानो इन्द्राणी अवतार, रूपमें देवो पुरन्दरी ॥ म्हारे० ॥ १ ॥
करना अजहून बिगड्यो काज, जो तुम्ह मान लेवो महाराज ।
नहींतर जासी थांरो राज, पिछे पिछतासो पिया आप राय ज्यूं
प्रदी सुन्दरी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तट के बोल्यो रावण ताम, तेरी
नाठी अकल तमाम, अब नहीं म्हारे बोलण को काम, परी जाय
सांरे भीड़ मिट जाय, क्यों लप २ करे लपुन्दरी ॥ म्हारे ॥ ३ ॥

श्री रामगुनि कृत ढाल चोपक तर्ज-सगांजी ने पेड़ा भावे ।

थे किम मूला राजवी, आचर आवण रा चाल, मन्दोदरी यूं समझावे । मदन मोहनी मायवा, वो युध करसी तुम साथ ॥ मन्दोदरी । हां पियूने यूं समझावे ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] मायका, थे किम रोवो राज ॥ मन्दो० ॥
[illegible] राजा बदलीयो, और रघुवर आयो साथ ॥ मन्दो० ॥ २ ॥
[illegible] आप क्यूं कियो सीता त्याग ॥ मन्दो० ॥
[illegible] देखी [illegible] सब लंका दीधी है चुनाय ॥ मन्दो० ॥ ३ ॥
[illegible] नम् कहेंजे, सो कामी कौन हवाल ॥ मन्दो ॥
[illegible] बिन नारिकं, कुण छोड़े आपनी नार ॥ मन्दो ॥ ४ ॥
[illegible] कुल कमल विनास ॥ मन्दो ॥
[illegible] अकेलो रघुवर पास ॥ मन्दो ॥ ५ ॥
[illegible] निशाचर मेरू ॥ मन्दो ॥
[illegible] नजरेरू ॥ मन्दो ॥ ६ ॥

[illegible]

[illegible] नहीं इक आपगीनांने, मेरानूं [illegible]

नहीं जाने । कुणहै राम मुझआगे, देखत शिखी सर्प ही भागे ॥ सत्य ॥ ८३ ॥

दोहा मूलगा—

सम्बाहे शूरतणा, पहिरे बकतर टोप ।
प्रहस्तादिक सामन्ता. ओपे आछे ओप ॥ ५ ॥
कोई तो हाथी चढ्या, कोई हय असवार ।
कोई सिंहां ऊपरे, चढि मिम्या तेवार ॥ ६ ॥
कोई खर रथ बेसीया, कोई पलाणे महीप ।
कोई महिषीये वेसीया, कोई विमान विशेष ॥ ७ ॥
आप आपणा साथमूं. आप आपणो जोर ।
महेलो देई स्वामीने, ऊभा बांधी कोर ॥ ८ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी

रावण को हुकमहीपावे, मिलण मिम निज २ घरआवे, सुभट स हुमनमे ऊमावे । मात कहे सुनहु पुत्र प्यारा. लजाजे दूधमत म्हारा ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ कायर की माता इमभाखे, शूर को मनमें डरराखे, आयां वेग म्हाल परोताके। आपांणे सुजश नहीं चहीजे सुखे घर आयने रहीजे॥ सत्य ॥ ८५ ॥

स्वामी श्री चौथमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज हांक मनिकर गर्व दिवाना—

हांपिया१ पांतर मति जाईजो, ज्यूं त्यूं कर थे पाछा आईजो ।
नाहक देणोंजीव नाम थे मति मंडाई जोरे ॥ पिया ॥ १ ॥
मियां बीबी दोनोंको राजी, कांई करे झकमारे काजी ।
जराक अर्जी मान मचलसे थे गम खाईजोरे ॥ पिया ॥ २ ॥
पटा पुत्तोरी गर्ज है किनकू. दायपडे तो दीजो उनकू ।
गुप चुप सेरोनाक घणीरी निजर चुराईजो जी ॥ पिया ३ ॥
बाल पणामें टाबर म्हारे. उनको तुम्ह बिन कुण रखवाले ।
होसी कोण हवाल पिया. इम मनमें लाईजोजी ॥ पिया ४ ॥
ऊपर काम झगडा को कहवे. मुस्किल पाछो आवन देवे ।
जोग मायारी महर पिया थे मत घबराईजोजी ॥ पिया ॥ ५ ॥

जग मन मांही लागो हो. थे क्यों होवे फोगट फजीत लं० ॥३॥
[illegible] कामन आर्गा हो. थांरे करतां ही कोड उपाय ॥ लं० ॥
थांरी लंका जासीहो. थेनो मानो म्हारी माय ॥ लं० ॥ ४ ॥

मुनि श्री [illegible] कृत ढाल दीपक–तर्ज–सीता माता की–

म्हांरा मन्दोदरी महाराज ? सोंपदो सीता सुन्दरी (टेर)
थांरे नारी सहस अठार, प्यारे सागे तिनसे प्यार ।
मानो इन्द्राणी अवतार, रूपमें देवी सुन्दरी ॥ म्हांरा० ॥ १ ॥
[illegible] शकुन बिगड्यो काज, जो तुम्ह मान लेवो महाराज ।
[illegible] जासी दीसे राज, पिछे पिछतासो पिया आप साप ज्यूं [illegible] सुन्दरी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तद के बोल्यो रावण ताम. तेरी [illegible] सकल तमाम. अब नहीं थारो बोलण को काम, परी जाय [illegible] मिट जाय, क्यों [illegible] सुन्दरी ॥ म्हांरा ॥ ३ ॥

[illegible] कृत ढाल [illegible]–रामाजी ने [illegible] भावे ।

[illegible] किम बूझा रावणा, आवर [illegible] रा [illegible], मन्दोदरी यूं समझावे । [illegible] सीता सामयां, तो सुध [illegible] तुम मान ॥ मन्दोदरी । [illegible] पियूने यूं समझावे ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] माला, थे किम [illegible] राज ॥ मन्दो० ॥
[illegible] बसावा. और रघुवर आसी साज ॥ मन्दो० ॥ २ ॥
[illegible] थारे मन सूं [illegible] किसो सीता लाय ॥ मन्दो० ॥
[illegible] दीसे है बुझाय ॥ मन्दो० ॥ ३ ॥
[illegible] सब देखे, सो [illegible] कौन हवाल ॥ मन्दो ॥
[illegible] नांखिके. कुण छोड़े आपनो नार ॥ मन्दो ॥ ४ ॥
[illegible] और सब कुल करस्य विनाश ॥ मन्दो ॥
[illegible] आसेगो रघुवर पास ॥ मन्दो ॥ ५ ॥
[illegible] निश्चय [illegible] ॥ मन्दो ॥
[illegible] और [illegible] ॥ मन्दो ॥ ६ ॥

[illegible]

[illegible]

नहीं जाने । कुणहै राम मुझआगे, देखत शिखी सर्प ही भागे ॥ सत्य ॥ ८३ ॥

दोहा मूलगा—

सम्थाहै शूरातणा, पहिरे चकतर टोप ।
प्रहस्तादिक सामन्ता, ओपे आछे ओप ॥ ५ ॥
कोई तो हाथी चल्या, कोई हय असवार ।
कोई सिंहां ऊपरे, चढि सिव्या तेवार ॥ ६ ॥
कोई खर रथ बेसीया, कोई पलाणे महीप ।
कोई महिषीये बेसीया, कोई विमान विशेष ॥ ७ ॥
आप आपणा साथसूं, आप आपणो जोर ।
महेलो देई स्वामीने, ऊभा बांधी कौर ॥ ८ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी

रावण को हुकमहीपावे, मिलण मिस निज २ घरआवे, सुभट स हुमनसे ऊमावे । मात कहै सुनहु पुत्र प्यारा, लजाजे दूधमत म्हारा ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ कायर की माता इमभाखे, शूर को मनमें डरराखे, आयां जंग ख्याल परोनाके । आपांणे सुजश नहीं चहीजे सुखे घर आयने रहीजे ॥ सत्य ॥ ८५ ॥

स्वामी श्री चौथमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज हांक मनिकर गर्ज दिवाना—

हांपिया ! पांतर मति जाईजो, ज्यूं त्यूं का थे पाछा आईजो ।
नाहक देणोंजीव नाम थे मति मंडाई जोरे ॥ पिया ॥ १ ॥
मियां बीबी दोनोंही राजी, कांई करे झकमारे काजी ।
जराक अर्जी मान सबलसे थे राम ख्याईजोरे ॥ पिया ॥ २ ॥
पटा पुलीरी गर्ज है जिनके, दावपडे तो दीजो उनके ।
चुप चुप सेरीनार घणीरी निजर चुराइजो रा ॥ पिया ३ ॥
बाल पणामें टाबर लारे, उनको तुम्ह विन कुण रखवाले ।
होसी कौण हवाल पिया, इम मनमें लाईजोजी ॥ पिया ४ ॥
ऊपर काम झगडा को कहवे, मुश्किल पाछो आवन देवे ।
जोग मायारी महर पिया थे मन पकराईजोजी ॥ पिया ॥ ५ ॥

सागर की नारी इमबोली, हूं लारे चाली भोली ।
चौथमल कहै सुभटांने, नथमाल मनाई जोजी ॥ पिया ॥ ६ ॥

(वीराङ्गना का निज पतिसे कथन)

स्वामी श्री चौथमलजी कृत चोपक ढाल तर्ज गांधणजीरी—

कलिंगांरी राणी लवेहो नरवरजी. थे राठोडी रजपूत भागमत आईजोहो नरवरजी उनके कुम्भ स्थल भान जोहो नर० हाथी हन्दा मजबूत अजगर मति लाई जोहो ॥ नर ॥ १ ॥ दपट झपट रिपु दाबजोहो नर० म्हारे लाजो मोतियन कीमाल, भूलमत आईजो हो नर । सगरूरी करजोमति हो नरवरजी अहंकार निगुण आगार । प्रभु गुन गाई जोहो. नर०॥२॥ मारी छतियां झघड़जो हो नर० थांरो नाम अमर रणधीर ॥ अरज महाराजसुं हो नर०। कायरता करजो मतिहो नर० ज्यां लगे कलेजे तीर ॥ वीर वधु राजसुं हो नर । ३॥ मनरजो अपच्छर भर्णीहो नर० थे जगके कीजो देर ॥ लेर मे आगे हो नर० सोय मिथ्याचो मिद्र करो हो नर० बांधु कई हो तोर नाथ सुक ध्यासुं हो नर० ॥ ४ ॥

दोहा मूलगी

गिरकर्ण अति गाजरो, झगांना मुल्तान ।
[illegible] कर्ण तुरगो, रथ बैठो गजान ॥ ९ ॥
[illegible], [illegible] मन गिरकर्ण, कुम्भकर्ण [illegible] ।
[illegible] नांव ध्रडा, आयो अति मग मन्त ॥ १० ॥
[illegible], [illegible], [illegible] जोय ।
'[illegible],' [illegible], कोई [illegible] होय ॥ ११ ॥
[illegible] 'मय' 'मुन्दादि' अनेक ।
'[illegible]' '[illegible]' [illegible], [illegible] ॥ १२ ॥
[illegible] कोई ।

[illegible]

रावण सामो आवही, हुंसियारी में होई ॥ १३ ॥

धूलचन्दजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज हांरे कायथड़ा रंगरो रसियो महिलां में

हांरेक ललना ' रावण ' लड़वा आवीयो, हां-होईने हुंसीयारो रे ललना गजरथ ऊपर वेसने हांरेक–धरतो अंग अंहकारोरे ललना॥ जगत्रय तृण सम जाणतो, हांरे–रावणजी तिणवारोरे ललना।रा०।१।

हांरे-विविध परे कर बीस में, हां ? आयुध धरतो आपोरे ललना। थर हरावे मेदनी, हां-धरतो अति सन्तापोरे ॥ ललना ॥ रा०।२।

हां-वांका जोध सुभट जीके, हां-पोरुष धरता पूरोरे ललना। एक २ थी आगला, हां-शूरां मांही शूरोरे ललना ॥ रावण ॥ ३ ॥

हां-अक्षोहणी चउ सहस ले, हां-चालण लागो जामोरे ललना ॥ लंका बारे नीकलतां, हां-शुकनथया निःकामोरे ॥ ललना॥ रा० ।४।

हां-विष ढाया खर जीमणा, हां-सामो वाजे वायोरे ललना। बीली बोवाडा करे, हां-दिशा राती देखायोरे ललना ॥ रावण ।।५॥

हां-शकुन वारन्ता चालीयो, हां- वरजे लोक अपारोरे ललना। अभिमानी मांनेनहीं, हां-नहीं मिटे होवण हारोरे ललना॥रा०।६।

ढाल चया लीशमी—

तर्ज खड़को– (झूलणा छन्दमेंभी गासकतेहैं)

आवीयो रावण लोक डरावणो, रावण रावलो पार नावे। छाईयो अम्बर कटक आडम्बरे, रयपर निज परतणी कोन पावे॥आ॥१

कोई हरिकेतु[१] कोई रे अष्टापद, केतु कोई गजराज केतु। मोर मंजार अहि कुर्कुट[२] केतुने, सुभट स्वामीतणा अधिक हेतु।आ. २।

दण्ड कोई ग्रहै खड्ग कोई संग्रहै, कोई निज मुष्टिए सेल[३] साहै। कोई मुद्गर परिघाघे[४] कुठारीका[५] शूल नाही मनमें उमाहै।आ. ३।

बीश योजन लगे राम दल विस्तरे, अपर पचास जोजन प्रमाणे। सुभट पोलावता धैर्य डोलावता, एकथी एकनो अधिक ताणे ।आ. ४।

आप स्वामी तणी श्लाघ्यता[६] अति घणी करत निन्दा पर स्वामी केरी।

१ सिंहका चिन्हवाली ध्वजा (केतु ध्वजा)। २ कूकड़ा। ३ पत्थर। ४ भोगल। ५ कुहाड़ी। ६ प्रशंसा (तारीफ)

[illegible] की नारी इमबोली, हूं लारे वाली भोली।
चौथमल कहै मुनटांने, नथमाल मनाई जोजी ॥ पिया ॥ ६ ॥

(वीराङ्गना का निज पतिसे कथन)

स्वामी श्री चौथमलजी कृत चोपक ढाल तर्ज गांधणजीरी—

[illegible] लवे हो नरवरजी. थे राठोडी रजपूत भागमत आईजो हो नरवरजी उचाक कुम्भ स्थल भान जोहो नर० हाथी [illegible] अगम मनि [illegible] जोहो ॥ नर ॥ १ ॥ दपट झपट रिपु [illegible] नर० म्हारे लाजो मोतियन कीमाल, भूलमत आईजो हो नर। [illegible] हो नरवरजी अहंकार निगुण आगार। [illegible] गुन गाईं जोहो. नर०॥२॥ मामी छतियां झगड़जो हो नर० [illegible] नाम अमर रणधीर ॥ अरज महाराजगं हो नर०। कायरता [illegible] नर० ज्यां लगे कलेजेनीर ॥ वीर वधु [illegible] हो नर। ३॥ [illegible] नर० थे जगाक [illegible] देर ॥ [illegible] हो नर० [illegible] मिथ्यो मिद्र करो हो नर० चौथु कहै हो [illegible] गुरु ध्यावं हो नर० ॥ ४ ॥

दोहा [illegible]--

[illegible], [illegible] मुल्तान।
[illegible] बैठो [illegible] ॥ ९ ॥
[illegible] कुम्भकर्ण [illegible]।
[illegible], आयो अनि मग [illegible] ॥ १० ॥
[illegible], [illegible] इन्द्र [illegible]।
[illegible] ॥ ११ ॥
[illegible], 'मय' 'मन्दादि' अनेक।
[illegible] ॥ १२ ॥
[illegible], [illegible] कोई।

[illegible]

'विघ्न' मारीलीयो, 'दुरिते' 'शुक' मारी जमगेह वास्यो ॥आ०१२। 'सिंहजघन्ये' हण्यो 'पृथितवर' वानरे, एटले सूर्य पण अस्तपामे। दोनों दल हव्या जे मुआते घव्या, प्रातः फरी मांडीया सुयश कामे ॥ आ० । १३ ॥ कपि सुभट मध्ये गजरथ वैमी नृप, आवीयो विविध आयुद्ध धारी । रामसैना प्रते प्रवल बल धारके, माचीयो एह संग्राम भारी ॥ आ० ॥१४॥ 'रावण' राय हुंकार करवे करी, राक्षस चरण रण त्रिवय रोपी रहीयो । वानरा पग खस्या जाय पाछा धस्या, अवसर ताम 'सुग्रीव' लहीयो ॥ आ० ॥१५॥ सलह सन्नाह करी धनुष्य वर कर धरी, राक्षसांने मुखे जाम आवे। ताम 'हनुमन्त' भाखन्त 'सुग्रीव' सूं, देव ! अब तुम रहो आप दावे ॥ आ० ॥ १६ ॥

क्षेपक सवैया—

वानर ईश बढे रणमेंजद, पौनके पूत पुकार करीहै ।
तिष्टरहो तुमपृष्ट रखोमुझ सृष्टिको नष्ट करीके करीहै ॥
मानत ना तल त्रानहूमें बलको बचले हमसे झघरीहै ।
योंकह मान लयो सबपे, रथ पौनसे वेग सवारी करीहै ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

चढ्यो 'हनुमन्त' दुर्दन्त दलने दले, राक्षसोंनुं मुख आवी रोके। ताम वावो[१] धनुष्य बाण सम्भाल के, 'हनुमन्त' वीर ने आवी रोके ॥ आ० ॥ १७ ॥ 'हनुमन्ते' अस्त्रघन छेदी वावा तणां, कहै रे बूढा तूं तो कांई चाहै। पंच परमेष्ठी गुण परभव साधणो, बापजी लोटवो हेरे लाहै ॥आ०॥१८॥ एम सुणी ताम 'वज्रोदर' आवीयो, कहै रे अज्ञानमें तूं कांई बोले । आव उरहो बलीजेरे अतुलीबली, हम तुम जोड छे एक तोले ॥ आ० ॥१९॥ केसरीनी परे शब्द हियड़े धरी, आवीयो वीर 'हनुमन्त' हाकी। नोई मारी लीयो वज्रनो तृण कीयो, पाछले कांई राखीन बाकी ॥आ०॥२०॥ जम्बूमाली[२] नृप नन्दन आवीयो, मोई ऊपाडी के नांन्यो दीनो ॥

१ माली राक्षस । २ रावणपुत्र ।

नं तूं मारे अछे तूं कुणरे अछे, आपसमें रे भाखे घणेरी। आ० ५।
[illegible] [illegible] तिष्ठ रे तिष्ठ रे, मत डरे आयुद्ध अलग नांखी।
नहीं नर [illegible] आयुद्ध सम्भालीले, आवी उरहो सजाव चोट चाखी॥६॥
बाण नें [illegible] विविध भातितणा. चक्र परिधा गदा फरसी खांडा।
[illegible] मुद्गर करी चोट करवे भारी, राक्षसा वांनर लडता चांडा॥७॥
वानर गाजता जेम तरु भाजता तेम राक्षसा तब जाय भागा।
हस्त प्रहस्त उठकर बल्लतल्ल अति, वानरा माथेतब आयलागा। आ।८।

ढाल चोपक—तर्ज हांरे कायथडा—

हांरे लल्ना 'हस्त' प्रहस्तज आवीया. हांरे-मामा 'नल' ने 'नीलो' रे लल्ना विविध प्रकारे युद्ध थयो, हांरे-अंझे चारुही वीरोरे लल्ना मारग लड़ता आवीयो॥ टेर॥ ६॥

हांरे-हस्त [illegible] अगनीनो, हां नल ऊपर मेलन्तो रे लल्ना।
[illegible] करने टलीयोरे, हां-मनमें रोप धारन्तोरे लल्ना रा० ॥७॥
हांरे-रोष भर्या रण आफल्या, हां-कमरन राखी कायोरे लल्ना।
दिन आथमतां मारीया, हां-राक्षसने दोनूं मायोरे॥ लल्ना रा० ।८।

ढाल मूलगी

'हस्त' 'नले' मारीयो 'नील' 'प्रहस्त' ने, अम्बर पुष्पनी वृष्टि हुई।
'[illegible]' मारीयो सह दल लारीयो, प्रातः नृप मोकले फौज जुई। आ० ॥९॥ रावण 'मारीच' 'शुक्र' 'सारण' 'सिंहरथ' 'अश्वरथ' '[illegible]' '[illegible]' ने 'उद्दामा'। 'मकर' 'ज्वर' 'भूप' 'कामाक्ष' '[illegible]' 'विघ्नवदन' 'विभीषणच' 'शम्भु' सकामा॥ आ० ॥१०॥ '[illegible]' 'अङ्गद' 'सन्ताप' 'शशिन' नामथी, 'आक्रोश' 'पुष्पास्त्र' '[illegible]' [illegible]। 'दुर्गति' 'नन्दन' 'कृत प्रीति' 'सुदृढ' वानरा [illegible] [illegible] [illegible]॥ आ० ॥ ११॥ राम 'मारीच' 'सन्ताप' [illegible] [illegible], 'नन्दन' वानरे 'ज्वर' विगारयो। राक्ष 'उद्दाम' कपि

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] गाथा में [illegible] राजाओं का नाम है वे सब [illegible] [illegible] [illegible] हैं। ४ [illegible] गाथा में जो राजाओं के [illegible] [illegible] [illegible] हैं वे सब के सब राम सेना की तरफ के सुभट हैं।

'विघ्न' मारीलीयो, 'दुरिते' 'शुक' मारी जमगेह वास्यो ॥आ०१२॥ 'सिंहजघन्ये' हण्यो 'पृथितवर' वानरे, एटले सूर्य पण अस्तपामे । दोनों दल हठ्या जे मुआते घठ्या, प्रातः फरी मांडीया सुयश कामे ॥ आ० । १३ ॥ कपि सुभट मध्ये गजरथ बैसी नृप, आवीयो विविध आयुद्ध धारी । रामसैना प्रते प्रबल बल धारके, माचीयो एह संग्राम भारी ॥ आ० ॥१४॥ 'रावण' राय हुंकार करवे करी, राक्षस चरण रण त्रिवग रोपी रहीयो । वानरा पग खस्या जाय पाछा धस्या, अवसर नाम 'सुग्रीव' लहीयो ॥ आ० ॥१५॥ सलह सन्नाह करी धनुष्य वर कर धरी, राक्षसांने मुखे जाम आवे । ताम 'हनुमन्त' भाखन्त 'सुग्रीव' सूं, देव ! अब तुम रहो आप दावे ॥ आ० ॥ १६ ॥

क्षेपक सवैया—

वानर ईश वडे रणमेंजद, पौनके पूत पुकार करीहै ।
तिष्टरहो तुमपृष्ट रखोमुझ सृष्टिको नष्ट करीके करीहै ॥
मावत ना तल त्रानहूमें बलको बचले हमसे झघरीहै ।
योंकह मान लयो समपे, रथ पौंनसे वेग सवारी करीहै ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

चढ्यो 'हनुमन्त' दुर्दन्त दलने दले, राक्षसोंनू मुख आवी रोके । ताम मावो१ धनुष्य बाण सम्भाल के, 'हनुमन्त' वीर ने आवी रोके ॥ आ० ॥ १७ ॥ 'हनुमन्ते' अतघन छेदी बाबा तणां, कहे रे मूढा तूं तो कांई चाहे । पंच परमेष्टी गुण परभव साधजो, बापजी लोटवो केरे लाहे ॥आ०॥१८॥ एम सुणी नाम 'वज्रोदर' आवीयो, कहे रे अज्ञानमें तूं कांई बोले । आर उरहो चलीजेरे अतुलीबली, हम तुम जोड छे एक तोले ॥ आ० ॥१९॥ केसरीनी परे शब्द किगडे धरी, आवीयो वीर 'हनुमन्त' हाकी । मोर्ड मारी लीयो वज्रनो तृण कांगी, पाछले कांई राखीन बाकी ॥आ०॥२०॥ जम्बूमाली२ नृप नन्दन आवीयो, मोर्ड उखाडी के नांखी दीनो ॥

१ माली राजन । २ मेघपुत्र ।

गयाग 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ।।आ०।।२१।। कोई तो भुज विषे कोई तो मुख विषे, कोई तो पग विषे कोई लागी । कोई तो कुखे कीया सयल मारी लीया, हनुमन्त जोरनी गीम तागी ।। आ० ।। २२ ।।

चोपक सवैया

बान चढे कपिके करने कुल्टा चल तामस ना चपलाई।
ना इगर्गी जस्ता जल में, मनकी चपलासुत पौनसीं नांई ॥
तान संधानक पंचिनो छुटियो टीकन ग्रानकी बाजी जीताई।
मोहन हैं पग्वाइनीके रंगहे रंगहे रंगहे इनके पितु माई ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

सागर बीच वडवानल[1] शोभतो, राक्षसां बीच ए वीर सोहै।
भांजीया सयल ही उगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहै॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज नर आप धायो । देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ।। आ० ।। २४ ।। कोई पाये हण्या कोई कर्पूर हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक आण्या । कोई मुद्गुर हण्या कोई त्रिशूले हण्या कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी कटकनर 'सुग्रीवजी' धाईया, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो'। धाईया 'कुमुद' 'अंगद' प्रमु शालक [2], धाईया सटही महोटा मंगदो। आ०।२६।। एम सट भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े अमरां देव देखे तमासा। विविध पर बाणनो मेह वरसाव तो, गोगिर्णी आपमें ज्ञान हाथो ।। आ० ।।२७।। नींद बाणं कर्ण नींद विकर्षणा, राक्षस नीदबल सचन कीना । जागृत थया सुं नाम सुग्रीवजी, नेर सयलाई ल्याई कीना । आ० ।। २८ ।। 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने रवागयो, मुगर ते रथे नर मोजी गाजतो । मुद्गर कारडी कपिपति ऊपरे, चूर्णीयो सैं रथी टांकी डालतो ।आ०।।२९।। अंगने वायरे वानरा निर्गढे ग्लान महजोरे जेम वृक्षो। मुद्गरां माजके नाम टुकडा

[1] समुद्र की अग्नि । [2] [illegible] । [3] [illegible] ।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी । रावणानुज१ तणे शिरही पाड़े । मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सूजेनहीं. लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल बाणने मूकवे. रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति गक्षमां ऊपरे. रोपसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तबकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। बीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूंतो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुबेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो । ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊखलो कूटवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो. दूरथी देखजो काम म्हांरो । बापडा वानरा पान पाने करुं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे । किहांरे सुग्रीव हंनुमन्न किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक टाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा ।
पडी खलबली पेटमेंसरे है, प्राण पड़न की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां मरे लेकर बिलकी ओट ।
बिल बाहीर झट आउरोमरे. चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, क्यो कहां रघुनाथ ।
रण भूमीमें रंग सूंमरे, बेग बताद्द हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल पूर्वली—

त्रासीया वानरा नाथ इम बोलीयो. नांखी हथियार तुमअल्गा होवो । अणरे तु सान्तांने मारवा नियमगुरु. थेरे थांराज्ई नींद

१ कुम्भकर्ण।

राक्षस 'महोदर' प्रमुख बहूला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ॥आ०॥२१॥ कोई तो भुज ग्रहे कोई तो मुख ग्रहे, कोई तो पग विषे कोई छाती। कोई तो कूपे कीया मगरू मारी लीया, हनुमन्त वीरनी रीस तांतीं ॥ आ० ॥ २२ ॥

दोपक सवैया

वान चले कपिके करते कुलटा चल लाभल ना चपलाई।
ना झखरी जवता जल में, मनकी चपलासुन पांनमीं नांई ॥
चान संधानरु गुंचिवो छुटिवो टीकन ध्यानकी चाजी जीताई।
बोलत हैं परवाहनीके रंगहे रंगहै रंगहै इनके पितु माई ॥ १ ॥

ढाल पूरवली—

सायर बीच वडवानल१ शोभतो, राक्षसां बीच ए वीर सोहै। भांजीया सयल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहै॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भंग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज तब आप धायो। देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ॥ आ० ॥ २४ ॥ कोई पाये हण्या कोई कर्पुर२ हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक त्रास्या। कोई मुद्गर हण्या कोई त्रिशूले हण्या, कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी बलवन्त 'सुग्रीवजी' धाईयो, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो'। धाईया 'कुमुन्द' 'अंगद' 'प्रभु शालक'३, धाईया सटही म्होटा नरेन्दो ॥आ०॥२६॥ ए खट भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े अम्बरे देव देखे तमासो। विविध पर बाणनो मेह वरसावतो, योगिणी आपमें करत हासो ॥ आ० ॥२७॥ नींद बाणे करी नींद विकूर्वणा, राक्षसे नींदवल शयन कीना। जागृत बाण सुं ताम सुग्रीवजी, तेरे सघलाई ऊठाई लीना ॥आ०॥ २८ ॥ 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने स्वारथी, सुग्रीव राये तब भांजी राल्यो। मुद्गर करग्रही कपिपति ऊपरे, आवीयो सो नहीं टलेही टाल्यो ॥आ०॥२९॥ अंगने वायरे वानरा गिरिपड़े, गयवर स्फर्शथी जेम वृक्षो। मुद्गरे भाजके ताम टुकडा

---

१ समुद्र की अग्नी। २ खूणी। ३ भामण्डल।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी । रावणानुज[१] तणे शिरही पाड़े । मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सुजेनहीं. लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल चाणने मूकवे. रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति राक्षमां ऊपरे. रोपसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तबकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। वीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूंनो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुबेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो । ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊखलो कूटवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो, दूरथी देखजो काम म्हांरो । बापडा वानरा पान पाने करुं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे । किहांरे सुग्रीव हंनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा ।
पडी खलबली पेटमेसरे है, प्राण पडन की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां सरे लेकर बिलकी ओट ।
बिल बाहीर झट आउरोमरे, चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, रयो कहां रघुनाथ ।
रण भूमीमें रंग संसरे, वेग बताउ हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

त्रासीया वानरा ताप इम बोलीयो, नांखी रुधिपार तुमअन्त होवो । अणरे सु सन्ताने मारया नियममुज, घेरे थांगीजई नींद

१ कुम्भकर्ण ।

राक्षस 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ॥आ०॥२१॥ कोई तो भुज विषे कोई तो मुख विषे, कोई तो पग विषे कोई छाती । कोई तो कुषे कीया गगल मार्गा लोथा, हनुमन्त वीरनी रीस ताती ॥ आ० ॥ २२ ॥

चोपक सवैया

बान चले कपिके करते कुलटा जन तामस ना चपलाई ।
ना झखरी जबता जल में, मनकी चपलागुन पौनगीं नाई ॥
बान संधानरु गेंचिवो छुटिवो टीकन पानकी बाजी जीनाई ।
बोलत है परवाहनीके रंगहे रंगहे रंगहे इनके पितु भाई ॥ १ ॥

ढाल पूर्वनी —

सायर बीच वडवानल१ शोभतो, राक्षसां बीच ए वीर सोहे । भांजीया सयल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहे ॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भंग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज तब आप धायो । देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ॥ आ० ॥ २४ ॥ कोई पाये हण्या कोई क्रपुर२ हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक त्रास्या । कोई मुद्गुर हण्या कोई त्रिशूले हण्या, कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी बलवन्त 'सुग्रीवजी' धाईयो, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो' । धाईया 'कुमुन्द' 'अंगद' 'प्रभु शालक'३, धाईया सटही म्होटा नरेन्दो ॥आ०॥२६॥ एखर भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े अम्बरे देव देखे तमासो । विविध पर बाणनो मेह वरसावतो, योगिणी आपमें करत हासो ॥ आ० ॥२७॥ नींद बाणे करी नींद विकूर्वणा, राक्षसे नींदवल शयन कीना ॥ जागृत बाण सूं ताम सुग्रीवजी, तेरे सघलाई ऊठाई लीना ॥आ०॥ २८ ॥ 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने स्वारथी, सुग्रीव राये तब भांजी राल्यो । मुद्गर करग्रही कपिपति ऊपरे, आवीयो सो नहीं टलेही टाल्यो ॥आ०॥२९॥ अंगने वायरे वानरा गिरिपड़े, गयवर स्फर्शथी जेम वृक्षो। मुद्गरे भाजके ताम टुकडा

१ समुद्र की अग्नी । २ खूणी । ३ भामण्डल ।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी । रावणानुज[१] तणे शिरही पाड़े । मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे, रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सूजेनहीं, लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल बाणने मूकवे, रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति राक्षसां ऊपरे, रोपसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं, मूर्च्छियो तवकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। वीनवे बापने छोड सन्तापने, कवण आगे तूंतो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुवेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो । ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊखलो कूटवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो, दूरथी देखजो काम म्हांरो । वापडा वानरा पान पाने करूं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे । किहांरे सुग्रीव हनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा।
पड़ी खलबली पेटमेसरे है, प्राण पड़न की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां मरे लेकर बिलकी औट ।
बिल बाहीर झट आउरोमरे, चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, प्यो कहां रघुनाथ।
रण भूमीमें रंग रूंमरे, वेग बताय हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल मूलकी—

त्रासीया वानरा नाथ इम बोलीयो, नाशो हथियार तुमअलग होवो । अपरे सु इन्द्राने मागया नियमसुम, धरे धारीजई नींद

[१] कुम्भकर्ण।

गांगो ॥ आ ॥ ३८ ॥ जीम फरवे किण्यूं आव मूल गाजुंदो, मान
द्दी राम मन आणी अड़ियां । मेघनाद रावण ने आणन्द, अरु
मन्दी मड़ी अधिक लड़ियां ॥ आ ३९ ॥

देशी. सुभट रे बीच घमसाण

हाँ रे कहना इन्द्रजीत आयो अड़ीयो, हाँ लक्ष्मण लंके नामीरे
कहना अयु घाव अति घाल्यो, हाँ हम ढेपो न हालो रे कहना
रावण कह्यो आयो पड़ियो १ ॥ हाँ रे कहना इन्द्रजीत मेघना-
दजी हाँ मुझ धाय फलांरे कहना ॥ लक्ष्मण नीचे सेहने, हाँ
वाहूं जीवने हाथेरे ॥ रावण ॥ १ ॥

ढाल पूरवी

प्रिय (प्रि)आदेशे हाथीया जेहना, तेहना धारदां मद होते ।
हुंगरो भवीन वृद्ध हन दवृयोगहो, आगो कुमके अधिक वंगे ॥आ॥ ४०

देशी. ढाल नो पूर्वलो

हाँ रे कहना पेहुं वीणय मन विचारे, हाँ आगा अति गणहणारे
कहना । महाजन वयोगो आणणो, हाँ धीजे के हिवयाणोरे कहना
॥ रावण ॥ ११ ॥ हाँ इन्द्रजीत अति पागलो, हाँ मुझ धाय लिगा
वेरे कहना । राम 'सुग्रीव' ने बांधीयो, हाँ भामण्डल (ने) मेघ
कुंभारेरे कहना ॥ रावण ॥ १२ ॥ हाँ कठाई बणांधियन, हाँ नाकना
तेह लिगारेरे कहना । हेमत भोली वालीया, हाँ जेज न कीधी
लिगारोरे कहना ॥ रावण ॥ १३ ॥

ढाल पूरवी—

'इन्द्रजीत' 'मेघनाद' अतिबलवंतो, अरु मुझे न सूझे रे कोई ।
राम 'सुग्रीव' 'भामण्डल' बांधीया, नामतो और न कहना कोई ॥
आ० ॥ ४१ ॥ पवन उपगार महा तेहुं कहीयां, देख फलो अति
नयणां । बीर हनुमन्त मागो माहा पालहु, मुक्तिको तब सदै
रणी घरणां ॥ आ० ॥ ४२ ॥ साथ उत्साय के धारयां बांधीयां,
कुम ' हनुमन्त ' लीधे । मुक्तो पुर अधिका वाही दायीया,

लटकतो जाय तेहनो शरीरो ॥आ०॥४३॥ लहु कहै रामसुं रावला बलविषे, प्रबल बल धारका एह दोई। आनन१ अधिक ऊपर अछे तोही पण, सोह पावन्त ए नयन दोई ॥ आ० ॥ ४४ ॥ बांधीया एह दो रायने नन्दने, लंक मांही जब लगे न जाई। तब लगे उद्यम कीजीये आकरो, पामीये सुजश अति एह छोड़ाई ॥ आ० ॥४५॥ 'कुम्भकर्णें' 'हनुमन्त' जी काखमें, चांपियो एह विपरीत मांही। विना 'सुग्रीव' 'हनुमन्त' 'भामण्डल', सैन सघलो अछे शून्यग्राही ॥ आ० ॥ ४६ ॥

मुनि श्री रावतमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज–ख्याल की

कोई अकल उपावोरे, बन्धन छुडवावो जावो वेग सुं ॥ टेर ॥

सुनो श्री 'रघुनाथ' तिहारे, सैना के शिरमोड़।
अधिपति अपनी फौजका सरे, ताजा फल लीया तोडजी ॥कोई॥१॥
तीनों विनां तिहारी सेना, सघली दीसे सूनी।
रसवती नव २ भांतकीसरे, एक कसर अलूनी ॥ कोई ॥ २ ॥
सुन्दर वर्ण शरीर श्यामजी, जिणमें रयो न जीव।
काम नगारी कामिनियों का, पहूंतो परभव पीवजी ॥कोई॥ ३ ॥
कहै 'अंगद' कर जोडने सरे, राम! गरीब निवाज?
हुक्म हुवे हनुमन्त वीर को, लाऊं छुडाई आजजी ॥ कोई ॥४॥
हुकम हुवां सूं 'अंगद' चाल्यो, बालक 'रूप' बनाय।
कुम्भकर्ण के लारे लारे, रोतो रोतो जायजी ॥ कोई ॥ ५ ॥
बाबा बाबा बापजी सरे, आऊं तुम्हारे साथ।
रणमांही यहां कुण तुम लायो, यों कही पकड़ीयो हाथजी ॥ ६ ॥
कृपाल कान्नां धोती खोलने, बालकनो गयो नास।
धोती पकड़तो है कर ढीला, हनुमन्त उड्यो आकाशजी* ॥कोई॥७

१ विभीषणने कहा कि भामण्डल और सुग्रीव यह दोनों युद्ध के लिये नेत्र के समान है। * अपर ग्रन्थ में अंगद ने बालक का रूप बनाकर हनुमान को छुड़ाया ऐसा लिखा है। और मूल रामायण में कुम्भकर्ण के साथ अङ्गद ने संग्रामकर हनुमान को छुड़ाया।

ढाल मूलगी

एहज वात करतां थकां अंगद, सुभट शूंझत प्रभु साथ काठो।
क्रोधवस धनुष्य ग्रही बाण नांखे तिसे, पामी अवकाश हनुमन्त
नाठो ॥ आ० ॥ ४७ ॥

चोपक सवैया

धनुको नमात नमादीये भूपन को,
पौनपूत तीजे घोस काहून निमारगो ।
माथे पृथ्वि नाथन के फेने तोर डारे,
ताकी सुन्दर स्त्रीयाकी देखो चूंदड़ी उतारगो ॥
मूंछपे ठहगते नींबू ऐसे महामानी भूप,
एकना अनेक हूको मानुनो बिगाड़गो ॥
पायके ओसान हनुकूद गोफलागमार,
कुम्भकर्णहुते छूट डेरा में पधारगो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

कुम्भकर्णानुज[1] सलह साजी करी, भाइ सुत आगले आवी मण्डे ।
राय सुग्रीव 'भामण्डल' भूपना, बन्धन छोडाववा अधिक तण्डे ॥
आ० ॥ ४८ ॥ इन्द्रजीत 'मेघवाहन' चित्त चिन्तवे. एहतो माहरे
तात तोले । युद्ध जुगतो नहीं जाई टलवूं भलं. एहतो शास्त्र
सिद्धान्त बोले ॥ आ० ४९ ॥ नाग पासे करी बांधीया एह छे
भूख तरसे रे सहजेही मरसे । मेलीए ए इहां लेई जासूं किहां,
परवशे होई नर कांई करसे ॥आ०॥ ५० ॥ मुंह टाली गया पांचों
में परिलह्या. कुम्भकर्णानुज राय पासे । आवीने अटकले कोई बल
नविचले, बन्धन छोड़वा मति विमासे ॥ आ० ॥ ५१ ॥ आरती
आणेघणी बन्धन छोडन भणी, राम रु लक्ष्मण दोई भाई । ताम
चित्त सांभली देव वाचा करी, सुमरिये आज थाए सहाई ॥आ०
५२ ॥ देव महालोचन वचन सूधो घणूं. चिन्तव्यों आवीयो
ततखेवा । सिंह निनाद विद्या रथ मूसल, हल देई साचवी राम

१ विभीषण ।

सेवा ॥ आ० ॥ ५३ ॥ वीजली जेम चले नाश अरिनो करे, समरे साची गदा देवे दीधी । सार विद्यामहा गारुडी स्यन्दन१, आपी लक्ष्मण तणी सेव कीधी ॥ आ० ॥ ५४ ॥ वारुणाग्नेय वायव्य आदेकरी, दोई भाई भणी अस्त्र आपे । जाणीयो खिदमत दारछूं सेवक, थिर करी प्रेमनो भाव थापे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण वाहन भूत गरुड तदा, पेखवे पन्नग परहा पुलाया । राय सुग्रीव भामण्डल मोकला, ताम हुवा सहु आवी मिलाया ॥आ०॥५६॥ ढाल चालीश ने दोयमी एह छे, जय जयकार जग में जणाणो । 'केशराज' पुण्यवन्त श्री रामनो, सुजश साचो सहुमें सुणाणो ॥ ५७ ॥

दोहा क्षेपक—

रावण कटकमें सांभल्यो, छूटा वन्दर वीर ।
दे ओलम्भो आकरो, आछा हुवा अधीर ॥

क्षेपकः- (राधेश्याम)

धिक्कार तुम्हारे शास्त्रों पर, लम्बे चौडे आकारों पर ।
जो दश दश वीश वीश वानर, करजायें काम हजारों पर ॥
आराम पसन्दो ! आलसियों ! क्यो दूध लजातेहो हो अपना ।
लंका विदेशीयों को देकर, अस्तित्व मिटाते हो अपना ॥
जो जान लडाकर रखना है, इस जन्म भूमिकी इज्जत को ।
मुझसे भी बढी चढी समझो, लंका नगरी की अजमत को ॥
तुम वह हो जिनसे दुनियों को, इस दश कन्धर ने जीता है ।
तुम वह हो यह लंका धीश्वर, जिनकी ताकत से जीता है ॥
जिनका राजा हो स्वर्ग जीत, कैलाश उठाने वाला है ।
जिसके नृपने बन्दी गृहमें यमसी, ताकत को डाला है ॥
उसकी सैयन उसके वर्ग, वनरों से पटे जमाने में, ।
तो मच मुच लाख लाख लानत, मर्दानी कोन कहाने में ॥

दोहा (नाटू गाने)

अस्त हुवो रवनींद पति, सुभट लहै विश्राम ।

---

१ रथ = २ सूर्य ।

प्रात हूवां आवी मिल्या, माचविया संग्राम ॥ १ ॥
राक्षस अति क्रोधे चढ्या, वानर सैन्य मथन्त ।
मध्य दहाडे शूकरा१, जिम सरवर डोलन्त ॥ २ ॥
देखी सेना भांजती, सुग्रीवादिक शूर ।
करी घणी उठावणी राक्षस नाठा दूर ॥ ३ ॥
राक्षस भंग देखी करी, 'रावण' चढ्यो आप ।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप ॥ ४ ॥
दावा नल ने आगले, तरुवर जेम दहाय ।
तेम रावण ने आगले, वानरतो न रहाय ॥ ५ ॥
रावण दीठो आवीयो, आप चढन्ता राम ।
'विभीषण' वर्जी प्रभु, आपण चढियो नाम ॥ ६ ॥

ढाल तयांलीशमीं तर्ज श्याम कल्याण—

भजो नर राम, राम का दिन रूडा ।
रावण कीरे दशा कुदशाणी, जेही करे सोई कूडा ॥ भजो० ॥ १ ॥
रावण उदधि पूर ज्यूं, आवही दल ठेल ।
साहामो हुवो वीर धीर, दोई हुवा मुह मेल ॥ भजो० ॥ २ ॥
रे रे मूढ ! वीर देखी, वस्तु केरी वानी ।
अवर राखी तूं दीयोरे, माहरे मुख आनी ॥ भजो० ॥ ३ ॥
जेम आहेडी खेलन्तो, आगे राखे श्वान ।
तेम रामे तूं कीयो, राखवा निज प्राण ॥ भजो० ॥ ४ ॥
नेह न तूटे तुम्ह उपरे, जारे अपूठो होई ।
'राम' 'लक्ष्मण' सैन्य मूं, आज हणीया हूं जोई ॥ भजो० ॥ ५ ॥
एह मांहे आवसे तूं, डररे करूं छू एह ।
आव थानक मूलगे, मूलगो मुझ नेह ॥ भजो० ॥ ६ ॥
भाई असुहाई, शुद्ध सरल होई ।
ी कहै करे तैसो, कपट नाहीं कोई ॥ भजो० ॥ ७ ॥
राम आपही चढ्योथो, मेंही वरजीयो राखियो ।

१ भण्डशूरा ।

छते सेवक स्वामी काम, करत ना भल भाखीयो ॥ भजो ॥ ८ ॥
स्वामीजीसुं काम जाणी, युद्ध तणी मिस ठाणी ।
आवीयो छूं देव ! आज, सोई सुणो मुजवाणी ॥ भजो ॥ ९ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—मुनि श्री रामचन्द्रजी कृत,

विभीषण की वात सुनो वड़भाई, थे राम थकी करोमेल वखत है आई ॥ टेर ॥ श्री राम दयाल कृपाल साल दुसमनका, कुनझेले जोर महाराज उसी लिछमनका । महें चढसां महाराज मुझे फुरमायो पिन हटकर अरज मनाय मिलन मिस आयो ॥ हस्त प्रहस्त से, जोधकटे छिनमांई, विभीषण ॥ १ ॥ धर रर धरा धसकाय पाय जव धरसी सर रर चलसी वाण वहुत नर मरसी । अर रर करसी लोक एक नहीं अरसी, थरर्र हियो थर राय जव परसी । ऐसे लिछमन का जंग होसी रणमांई ॥ विभीषण ॥ २ ॥ मैं हितकी बोलूं वात इसोमे मोचो, माथे पड़ियो पेच वखतछे पोचो । 'भामण्डल सुग्रीव वंधेथेपासे, छिनमें छूटातेह हजून विमासे ॥ उलटी परे सव वात सीता तव आई ॥ विभीषण ॥ ३ ॥ गरुड़ाधिप सुर राय सहाय थयो भारी, वह दीधी अमोलक चीज हुवे नफु त्यारी ॥ दोय वंधव शुद्ध गीत दीसे अवतारी, पर रमणी के भ्रात वडे उपगारी । अजेल विगरी वात देखो फुर माई ॥ विभीषण ॥ ४ ॥ कर विछालो वात ठिकाने लाऊं, थे सर्व वातका जाण कांई समझाऊं । अवके विगरी वात लगे नहीं कारी, नो वातां की वात मानो इक म्हारी ॥ रत्नश्रवाजी तात केकसी माई ॥ विभीषण ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सती आपो रती भागो, वात छेहले आवी ।
मानो बोल एह अमोल, नहीं तर रुना भावी ॥ भजो० ॥ १० ॥
मरण थी मैं ना डरूं रे, राज्य तणो नहीं कामी ।
लोक मुखे अपवाद सुनन्तां, मैं दुःख पाऊं स्वामी ॥ भजो० ॥ ११ ॥
एह अपवाद मेटियां थी, सेवक हुं छूं थारो ।
कवण राम कवण हुं, मानो वचन हमारो ॥ भजो० ॥ १२ ॥

चेपक ढाल तर्ज पूर्ववत—

तड़क भड़कला रीस पीस दोनों ने, तूं लंकाने धोयो मुख खबर म्हांने । पिन देख जमीं के छेह काटूं सागंने. वनवासी ने मार सेऊं सीताने ॥ मुनि राम कहे सत्य बात ढले नहीं आई ॥ विभीपण की ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

खिजीयो अतिशय रावण, अजहूं एहिज बात ।
कोढीया थारो कोढीया पण, न गयो रे रे कुपात ॥ भजो० ॥ १३ ॥
भाई हत्या थी डरुं. लीयोथो तूंही बुलाय ।
रावण 'रूप' मूलगेरे, लीधो धनुष्य चढाय ॥ भजो० ॥ १४ ॥
भाई वडो बाप थानके. तेहथी ए अरदास ।
करूं छू हूं वेगे आवी, पहूंचाड्डु जम पास ॥ भजो० ॥ १५ ॥
दोई भाई की लड़ाई तब घणी अधिकाणी ।
मांहां मांही ना टलाए शुद्ध मतेरे मण्डाणी ॥ भजो० ॥ १६ ॥
'कुम्भकर्ण' इन्द्रजीत, अवर राक्षस धाया ।
'राम' 'रामानुज' अपर, रायजी चली आया ॥ भजो० ॥ १७ ॥

चेपक (राधेश्याम)

दोहा–अबतो निशिचर सैन्य सब, आई करके जोर ।
वर्षामें जैसे घिरे. उँमड धुँमड घन घोर ॥
आंधी की नाई बढे, वानर भी ततकाल ।
एक एक से भीड़ गये, कर किल्कार कराल ॥
डफ ढोल और शंखों के स्वर, धरती दहलाये देते थे ।
बलवानों के गर्जन तर्जन आकाश हिलाये देते थे ॥
'झन झन' ध्वनियो से एक ओर, खड्गादिक शस्त्र उच्छतते थे ।
दूसरी ओर खट-खट स्वर से गिरी-खण्ड मुष्ठिसे चलते थे ॥
रण-रङ्ग स्थल में मतवाले, रजनीचर कीश नाच उट्ठे ।
लाशों पर लाशों लोट ऊठी, शीशों पर शीश नाच ऊठे ॥
आशा से अधिक लडे वानर, उनरजनीचर बलवन्तो से ।

शस्त्रों की धारें हार गई, मुष्टिकों नखों और दन्तोंसे ॥
कट कट कर जब निशिचर-सेना, उस काल समरमें मरती थी।
अन्याय न्याय का तब निर्णय, पृथ्वीकी लाली करती थी।
छोटे २ वनरों द्वारा, होगई पराजय खल-दल की।
जगने अधर्म की छाती पर, अवलोंकी जीत 'धर्म' बलकी ॥

दोहा-'अवनी-अकम्पन' आदि भट, झूंझ गए जब जाय।
जोये जब रण भूमि में, 'वज्रदन्त' अतिकाय ॥
तब लंका के नाथसे, ले आज्ञा वरदान।
चला समरके वास्ते, इन्द्[1] जीत बलवान ॥
लंकामें सचमुच बढी हुई, ताकत इस इन्द्रजीत की थी।
यह सेनाका सञ्चलकथ, युवराज की इसको पदवी थी ॥
जीता था इसने इन्द्रलोक, यह इन्द्रजीत कह लाताहै।
यह ही सबसे प्यारा बेटा, दशमुख का समजाता है ॥

दोहा-उसी समय संग्राममें, आ पहुंचा घन नाद।
वानर सेनामे तभी, व्यापा विषम विषाद।
छलसे बलसे और कौशलसे, लड़ताथा वह योद्धा रणमें।
छुपजाता कभी प्रगट होता, दिन करता कभी निशा रणमें ॥
आकाश मार्ग पर जा जा कर, हड्डियों धूरी बरसाता था।
तक २ कर वीर वानरों पे, नाना विधि बाण चलाता था ॥
लड़ते २ जब चूर हुई, तब डोल उठी वानर सेना।
'रघुकुल के नाथ दुहाई है,' यह बोल उठी वानर सेना ॥
देखा जब रण भूमी में, वानर हैं लाचार।
अज्ञा ले 'रघुनाथ' की हुवे 'लक्ष्मण' तैयार ॥
आते ही बलवीरने, रण में किया प्रकाश।
एक बाण में असुर की, माया करदी नाश ॥
इन्द्रजीत कहने लगा, सन्मुख इन्हें निहार।

---

१ इसर नाम मेघनाद।

ओहो ! बच्चों भी हुए, अब रण को तैयार ॥
यह युद्ध स्थल वीरों का है, बच्चों का है खिलवाड़ नहीं ।
धारें हैं यहां कृपानों की, मिष्टान्नों का बाजार नहीं ॥
जिन दांतों का सूखा न दूध, दुःख होता उन्हें तोड़ने में ।
इसलिए लौट जाओ घर को, खुश है घननाद छोड़ने में ॥
लखण लाल कहने लगा, करके कड़ी निगाह ।
बुरा चोर की बात को, नहीं मानते शाह ॥
लंका पर रघुकुल की कमान, इसकारण आकर कड़की है ।
सत्यवती सीताजी की विरह ज्वाला, बदला लेने को भिड़की है ॥
इसलिये सम्भलजा इन्द्रजीत, यह इन्द्रिय जीत चढ़ रहा है ।
क्षत्री के काल जीत धनुपे, शायक जगजीत चढ़ रहा ॥
वह नहीं कहीं दब सकता है, जो बल रखता है मुष्टों का ।
रघुवंश आन का पूरा है, कर देगा चूरा दुष्टों का ॥
लखणलाल के वैन सुन, हुआ इन्द्रजीत लाल ।
आपस में अब भिड़ गये, दोनों वीर विशाल ॥
खांडों पर खांडे खड़क उठे, बाणों पर बाण बोल उठे ।
वीरों का बांका युद्ध देख पृथ्वी आकाश डोल उठे ॥
छोडा जब रिपुने मेघ बाण, तब इधर समीर बाण छोडा ।
वह लगा छोड़ने अग्नि-बाण, लक्ष्मण ने नीर बाण छोडा ॥
नाना प्रकार की चतुराई, दश-कन्धर तनय दिखाता था ।
कौशल-किशोर के कौशल से, बेकार वार होजाता था ॥
हर तरह युद्धमें इन्द्रजीत, जब हार गया बेजान हुआ ।
लक्ष्मण के हाथके बाणों से, गश खा खा के हैरान हुआ ॥
तब लगा सोचने 'क्या करीए' यहतो सामान प्रलय काहै ।
लक्ष्मण साधारण मनुज नहीं, सचमुच अवतार विजय काहै ॥

ढाल मूलगी—

राम 'कुम्भकर्ण' लड़े, इन्द्रजीत'' जाम ।
लक्ष्मण सूरे आवी अड़ियो, एह वडो संग्राम ॥ भजो ॥ १८ ॥

'नील' "सिहजघन्य" 'दुर्मुख", 'घटोदर" सूं देख ।
'स्वयम्भू' जई दुरमति' सूं, नल 'सम्भू' सुविशेष ॥ भजो ॥ १९ ॥
'अंगद' ने 'मयनेमय' 'वीर विराध' 'सुग्रीव' ।
'स्कन्द' 'चन्द्रनख' निरूपम, माची रही अति रीव ॥ भजो ॥२०॥
'श्रीदत्त' ज, 'जम्बूमाली', 'भामण्डल,' जी 'केतु' ।
'हनुमन्त' 'कुम्भकर्णसुत' लाग्या रोष समेतु ॥ भजो ॥ २१ ॥
'कुन्द' ने 'धूमाक्षी' दाखी, 'किष्किन्धेश' 'सुमाली' ।
'चन्द्ररशिम' 'सारण' साथे, माचियो युद्ध कराली ॥ भजो ॥२२॥
'लक्ष्मण' ऊपरे 'इन्द्रजीत' मेले तमाम बाण ।
'लक्ष्मण' टाले प्रगट पणे, शूरों को सुलतान ॥ भजो ॥ २३ ॥
इन्द्रजीत पे अनुज[१] मेले, नाग पास अस्त्र ।
तांतणिये गज तेम बांध्यो, कोई फुरियो नहीं शस्त्र ॥ भजो ॥२४॥
रथ में घाली ततकाल, 'चन्द्रोदर' ले जावे ।
कटक मांही अति उच्छाए, राख्यो थानक ठावे ॥ भजो ॥ २५ ॥
'कुम्भकर्ण' ने नाग पासे, रामे बांधी लीयो ।
'भामण्डल' हाथे देई, ते पहोंचाय दीयो ॥ भजो ॥ २६ ॥
अवर राक्षसों सूं आवी अड़ीया, वानरा भई आप ।
ते ते बांधी आंणीया, राम तणे परताप ॥ भजो ॥ २७ ॥
मेघ वाहने बांधीयों, सांधिया शर नांही ।
दिवस फिरे देखो वैरी, जोर चले नहीं थांही ॥ भजो ॥ २८ ॥
देखी नयन अति कुचयन, पामीया तब राय ।
वीर ऊपर शूल मेले, किंयूं ही ए मरिजाय ॥ भजो ॥ २९ ॥
शूल अन्तगल नाम, छेदीयो जेम केली ।
लक्ष्मण नो लीला मेरे, सुदिन वेरी मेली ॥ भजो ३० ॥
श्री धरणेन्द्र दत्त शक्ती, विजय नामे अमोघा ।
निरय हेते नवय गय, ऊपाडी मन्लोघा ॥ भजो ॥ ३१ ॥

---

१ लक्ष्मण ।

धग धगन्ती जलती चलती, तड तडन्ती नादे ।
अन्त मेघ तडित लेखा, फैरवी अन्हादे ॥ भजो ॥ ३२ ॥
देव पाछा ओसरे, लोक न मेले नयन ।
देखतां थिरता मिटे, ऊपजेरे कुवयन ॥ भजो ॥ ३३ ॥
राम कहै सौमित्री ने, विभीषण नी लाज ।
आपने छे राखि ले ओ, मारे गक्षक गज ॥ भजो ॥ ३४ ॥
शरणे आयों राखणो, नहीं सहाय करय ।
अवाल्ह नदियों तणी देखवा नटी जाय ॥ भजो ॥ ३५ ॥
सौमित्री आगे हुओ, गरुड नो असवार ।
रावणानुज पूठ दोयो, एह खरो व्यवहार ॥ भजो ॥ ३६ ॥
लक्ष्मण साथे कहै राय, आघो पाछो थाय ।
पर मरणे तूं कांमरे, जो तुझ आवी दाय ॥ भजो ॥ ३७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अबतक में खेल खिलाना था, अब खा जाने की बारी है ।
इस शक्ती बाण की सूरत में आ पहुंचो मौत तुम्हारी है ॥
इसका मारा बचता ही नहीं, दिन उगते प्राण गवांता है ।
ज्यों ही यह तन पर पड़ती है तन मृतक तुल्य हो जाजा है ॥
इसलिए सम्भल ओ रघुवंशी, तूं आज न बचने पायेगा ।
कहै रावण ललकार अबे हम, लखण जीत कहलायेगा ॥
हंस कर लक्ष्मण ने कहा, इस मद पर धिक्कार ।
बाण गये मुद्गर गये, गई खड्ग तल्वार ॥
जो भी हथीयार तुम्हारे थे, उन सब ने हारी मानी है ।
जब शस्त्र युद्ध में हार गये तो देव शक्ति को ठानी है ॥

ढाल मूलगी

भ्रमावी अति ही भ्रमावी, लक्ष्मण ऊपर तेह ।
रावण मूके रोपसंू रे, ताम हुवो अन्देह ॥ भजो ॥ ३८ ॥
सा आवन्ती देखी पेखी, सौमित्री सुग्रीव ।
'भामण्डल' 'नल' ने 'विराध,' हनुमन्त शूर अतीव ॥ भजो ॥३९॥

अस्त्रों सूं वलवन्त वारे, ताडे ताम अपार।
अंकुश खोटो हाथीयो, जेम न माने कार ॥ भजो ॥ ४० ॥
उरस्थले आवी पड़ी, मूर्च्छाणो नरनाथ।
हाहा कार हुओ घणो, शोचकरे सहु साथ ॥ भजो ॥ ४१ ॥
कोपी राम आवे ताम, वैसी रथ रसाल।
राय तणो रथ रोपसूंरे, तोड़ियो ततकाल ॥ भजो ॥ ४२ ॥
वीजो त्रीजो चउथो पंचमां रथ देखी।
तृण तणो पर तोडी नांखे, राघव रोप विशेपी ॥ भजो ॥ ४३ ॥
रावण चिन्तसूं चिन्तवे, भाई तणों दुःख भूरी।
एतो हुवो आंधलो, रहीये एथी दूरी ॥ भजो ॥ ४४ ॥
लंकामें नृप आवीयो, आथमीयो दिनकार।
दुःखन जावे देखीयो, आणी एह विचार ॥ भजो ॥ ४५ ॥
रावण भागो जाणीयो, फिरीया राम तेवार।
लक्ष्मण पड़ियों देखतोंरे. न रहीं शुद्ध लिगार ॥ भजो ॥ ४६ ॥
मूर्च्छाए धरती पडया. करी शीतल उपचार।
उठाई बैठा किया, बोले लक्ष्मण लार ॥ भजो ॥ ४७ ॥
वत्स! तुमे क्यो फोडीया, क्योन प्रकाशो वयण।
शक्ती नहींजो वयणनी, कांई वतावो सयन ॥ भजो ॥ ४८ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज कव्वाली प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० कृत---

लगाजो तीर लिछमन के. पड़े गश ग्वाके भूमिपर।
कहे तब राम आंसू भर, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ १ ॥
सीया रावण के कबजेमें. अरे तुमने करी पेनी।
मेरा इस वनमे बेली कौन, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ २ ॥
अरे रणवीच सेनाको. सिवा तेरे हटावो कौन।
गिरगया क्यों धनुष्य तेने. उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ३ ॥
तेरी हिम्मत पैही बन्धु, चलाई फौजो लंकापे।
वधाजो धीर अवतमको, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ४ ॥

अगर नफरत हो लड़नेसेतो, फिर वनको चले वापस ।
कुछ भीतो कहो भाई, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

ए मुख देखे ताहरो, सुग्रीवादि नरेश ।
बोलन आपो छो तुमें, आणे आरती अशेस ॥ भजो० ॥ ४९ ॥
रावण तो गयो ज़ीवतो, ए थारे चित्त रोप ।
रावण मारे तो सही, आणो चित्त सन्तोप ॥ भजो० ॥ ५० ॥
तिष्ट तिष्ट तूं कहां गयो, म्हारो भाई मारी ।
धनुष्य बान लेई चल्या, हनुमन्त कहे हाकारी ॥ भजो० ५१ ॥
किहां चाल्या प्रभुजी तुमें, वैर विशोधन भाई ।
रावण तो लंकामें गयो, ताम करयो पिछताई ॥ भजो० ॥ ५२ ॥
नारी हरी भाई हण्यो, एह अवस्था आपी ।
मैं आयों नासी गयो, फिटरे रावण पापी ॥ भजो० ॥ ५३ ॥
लक्ष्मण देखी मारीयोरे, प्रभुने वेदन मारी ।
ए कामन होवे कायरों, देखो क्यूंन विचारी ॥ भजो० ॥ ५४ ॥

सुरदासजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज पदरी—

छोटारे मेरा भैया बोलना इकवार ॥ टेर ॥
मातारे वचनों नीकस्यारे, पिता केरे उपदेश ।
अयोध्यारे पुरीरा मानवीरे आंपां, आय वस्या परदेश ॥छोटा० ॥१॥
आवन्तड़ा दोय आवीयोरे, जाऊंगो मैं एक ।
माता सुमित्रा बूजसीरे कांई बताऊं देख ॥ छोटा० ॥ २ ॥
जाईजो रे सीता जाई जोतो, लंका जाईजो रावण को राज ।
आंधा केरी लाकडी म्हारी, छिटक पडीछे आज ॥ छोटा० ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम—

गिरे लखण की देह पर, मूर्च्छा खाकर राम ।
वानर मण्डल में मचा, मातम और कोह राम ॥
कहते थे वडे २ वानरहा ! विधना क्या उत्पात हुआ ।
रघुकुल पर उल्का पात हुआ कपिदल पर वज्राघात हुआ ।

जब लखण नहीं तो राम कहां ! जब राम नहीं तो विजय कहां ।
जब विजय नहीं तो सीया कहां, जब सीया नहीं शुभ समय कहां ॥
उनका तो रण सीता पर था, लंका पर था उद्देश पे था ।
अपना रण परमारथ पर था, साहस पर था आदेश पेथा ।
था उनसे ज्यादा पक्षहमें लंका पर जय पाजाने का ॥
जब सहायता को साथ हुवे, तो पूरा कार्य करानेका ॥
संसार कहेगा-बनरोंने, बनमे बहकाये रघु वंशी ।
बनरेतो बनको भाग गये, सबकुछ खो बैठेरघु वंशी ॥
लानतहै ऐसेजीनेपर, जो नाम धराये अपना हम ।
बेहतरहै डूबके सागरमें, अस्तित्व मिटाये अपना हम ।

ढाल मूलगी—

जाय घटन्ती जामनी, कीजे कोड उपकर्म ॥
प्रभु जीव्यों सहुजीवसे, म्होटो छे ए मर्म ॥ भजो० ॥ ५५ ॥
एतो नयां लीशमीं, ढाल भली कहीवाय ।
केशराज गृह देखो, पुण्ये पाप पुलाय ॥ भजो० ।। ५६ ॥

दोहा (सिन्धु रागे—)

सुन 'सुग्रीव' 'विराध' 'नल', भामण्डल हनुमन्त ।
देव करो ए एहवी, तुम घर जावो तुरन्त ॥ १ ॥
नारोहरण बंधव मरण, दुःख रह्यो ए दूरी ।
लंका न दीधी विभीषणा, ए दुःख मान्हे भूरी ॥ २ ॥

क्षेपक सवैया

मात को मोहन द्रोह दुमात को मोच न तात को मान दहे को ।
राजको लोभन प्राण को थोभन बंधु विछोहन अन्तर हेको ॥
नेकन चिन्तमें आवत केसव, सोचन लंकमें सीन रहेको ।
तारण भूमिमें राम कहै, मुख सोच विभीषण भूप कहेको ॥

दोहा मूलगी—

प्रातः हुवां रावणहणी, दई विभीषण राज ।
लक्ष्मण साथे लारथे, सीताने नहीं काज ॥

क्षेपक ढाल तर्ज बाछु चली खडा० श्रीराम मुनि कृत—
अबहूं नहीं रहूंरे अटक्को, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ टेर ॥
जानीथी क्या हुयआई, बंधव धरा पटक्यो ॥ अबहूं ॥ १ ॥
.यातो दुस्मन घर बैठी, धिक २ जीवत घटक्यो ॥ अबहूं ॥ २ ॥
मुझ संगे मुझ बंधव नीकस्यो, मुझ संगे वनमें भटक्यो ॥अबहूं॥३
राम बंधवनो होतही विरहो, फिट हीयाक्यूं नहीं फटक्यो ॥अबहूं॥४
क्षेपक ढाल तर्ज धूसोवाजेरे—धूलचंदजी कृत,
लक्ष्मण के रे बाणलग्यो शगती, रे लक्ष्मणके ॥ टेर ॥
रम कहै रे सुनो सब प्यारे, आजकरोरे ऐसी भगती ॥ लक्ष्मण॥१
लक्ष्मण वीरने जोरे जीवाड़े, देऊं म्होटोरराज सवाई धरती ।ल॥२
पुण्य फले जो दशरथ केरो, केरं जीवाडे सीत सती ॥ ल० ॥४॥
नहीं भूलूमें ऊपकार तुम्हारो, लक्ष्मण जिवणको कहो जुगती ।ल० ।४
दोहा मूलगा—
कहै विभीपण स्वामीजी, धीरज धरो अपार ।
कायर होईन थरहरो, उद्यम नो अधिकार ॥ ४ ॥
सक्ती हण्यां जीवे सही, ज्योंन ऊगे दिनकार ।
जब लग वरते जामनी, करलीजे उपचार । ५ ॥
तंत्र मंत्र औषध जडी, कोईयक दाय उपाय ।
रात्री मांही कीजीये, जिम प्रभु सारो थाय ॥ ६ ॥
ढाल चमालीशमीं तर्ज पथीडा वात कहो—
जीवे हो जीवे वीरो बाल होरे, कोई करो तुम कामरे ।
वीजोरे काज सहु असुहामणोरे, ताम कहै श्रीरामरे ॥ जीवे० ॥१
ढाल क्षेपक मूलगी—
लिछमन को यहां से ले लीजे, लहु कहै अरजी सुन लीजे, इणी में जेज नहीं कीजे । ऊठाई निजकट के लाया, जापता इण विध करवाया ॥ सत्य० ॥ ८६ ॥
ढाल मूलगी—
सातज रे सात कोट किया भलारे, चारकिया दरबार रे ।
राजारें राजा रखवाले रह्यारे, होईने हूंसीयार रे ॥ जीवे० ॥ २ ॥

पूरब रे पूरब दिशिने वारणेरे, कपिपति ने हनुमन्त रे।
'दधिमुख'रे'दधिमुख''स्कन्द''गंवाक्ष' सूरं, तार गवय गुणवन्तरे॥३
उत्तर रे उत्तर दिशे विहंगमारे, 'अंगद' 'कूरम' अंगरे।
महेन्द्रजरे महेन्द्र सुषेणजीरे, चन्द्ररश्मि सुचंग रे॥ जीवे०॥ ४॥
पश्चिम रे पश्चिम दिशे दुर्द्धर जयेरे, समर शील मन्मथ रे॥
'नीलजरे' नील विजयने सम्भूवरे ए साते समर थरे॥ जीवे०॥५॥
दक्षिण रे दक्षिण दिशे भामण्डलूरे, वीर 'विराधज' मेद रे॥
गजनलरे गजलनने विभीपणूरे, भुवनजीत सुभेदरे॥ जीवे०॥६॥
मांहेरे मांहे राघव राखीयोरे, सुग्रीवादिक ताम रे।
जागे रे जागे योद्धा महावलीरे, मति को विणसे कामरे॥ जीवे०॥७॥

(वाका से व्याख्यान में यदि शक्ति जाने का अधिकार पूर्ण न बच सके तो निम्नोक्त गाथाएं कहकर लक्ष्मणजी के शरीर में से शक्ति निकाल देनी चाहीये)

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रातः हुवां शक्ति ही जावे, विमल्या तनने फरसावे, प्रभुजी सुख साता पावे, लक्ष्मणजी पूछे है त्यारे, कोट ए एस्यो रखवारे॥ मत्य॥ ८७॥ रघु पतिवान केहण लागो, शक्तिदे रावण नो भागो तुमेंयहां आण्या धर रागो। कोटका जापता कीना, रात को सब पोहरा दीना॥ मत्य०॥ ८८॥

ढाल मूलगी—

सीतारे सीता ए हिज सों मलीरे, लक्ष्मण शक्ति प्रहाररे।
प्रातः रे प्रातः प्राण प्रभुजी तजेरे, भाईसूं अति प्यार रे॥जीवे०॥८॥
मूर्च्छारे मूर्च्छा आवी अति घणीरे, धरणी पड़ी ततकाल रे।
करी रे करी शीतलता शरीरे, ऊठाई साबालरे॥ जीवे०॥ ९॥
करुणज रे करुण स्वरे रोवे घणी रे, करती अधिक विलाप रे।
धम्मेरे धम्मे तनु विद्याधरीरे, देह पछाडे आपरे॥जीवे०॥१०॥
हावच्छ? रेहा वच्छ! लक्ष्मण कहां गयो रे, प्रभुनी छोड़ी आजरे।
तुझ विन रे तुम विन प्राण जीवे नहीं रे, करसे मही अकाज रे॥जीवे॥११
हा धिक् रेहा धिक् अधिक अभागणी रे, मढा रे कीधे दूरज रे।

क्षेपक ढाल तर्ज बाहु बली म्हा० श्रीराम मुनि कृत—

अबहूं नहीं रहूंरे अटक्को, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ टेर॥
क्या जानीथी क्या हुयआई, बंधव धरा पटक्यो ॥ अबहूं ॥ १ ॥
सीयातो दुसमन घर बैठी, धिक २ जीवत घटक्यो ॥ अबहूं ॥ २ ॥
मुझ संगे मुझ बंधव नीकस्यो, मुझ संग वनमें भटक्यो ॥अबहूं॥३
राम बंधवनो होतही विरहो, फिट हीयाक्यूं नहीं फटक्यो ॥अबहूं॥४

क्षेपक ढाल तर्ज धूसोवाजेरे—धूलचंददी कृत,

लक्ष्मण के रे बाणलग्यो शगती, रे लक्ष्मणके ॥ टेर ॥
रम कहै रे सुनो सब प्यारे, आजकरोरे ऐसी भगती ॥ लक्ष्मण॥१
लक्ष्मण वीरने जोरे जीवाड़े, देऊं म्होटोरराज सवाई धरती ॥ल॥२
पुण्य फले जो दशरथ केरो, केरं जीवाडे सीत मती ॥ ल० ॥३॥
नहीं भूलूमें ऊपकार तुम्हारो, लक्ष्मण जिवणको कहो जुगती ।ल० ।४

दोहा मूलगा—

कहै विभीषण स्वामीजी, धीरज धरो अपार ।
कायर होईन थरहरो, उद्यम नो अधिकार ॥ ४ ॥
शक्ती हण्यां जीवे सही, ज्यों न ऊगे दिनकार ।
जब लग वरते जामनी, करलीजे उपचार । ५ ॥
तंत्र मंत्र औषध जड़ी, कोईयक दाय उपाय ।
रात्री मांही कीजीये, जिम प्रभु सारो थाय ॥ ६ ॥

ढाल चमालीशमीं तर्ज पथीड़ा वात कहो—

जीवे हो जीवे वीरो बाल होरे, कोई करो तुम कामरे ।
वीजोरे काज सहु असुहामणोरे, ताम कहै श्रीरामरे ॥ जीवे० ॥१॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लिछमन को यहां से ले लीजे, लहु कहै अरजी सुन लीजे, इणी में जेज नहीं कीजे । ऊठाई निजकट के लाया, जापता इण विध करवाया ॥ सत्य० ॥ ८६ ॥

ढाल मूलगी—

सातज रे सात कोट किया भलारे, चारकिया दरबार रे ।
राजारे राजा रखवाले रह्यारे, होईने हूंसीयार रे ॥ जीवे० ॥ २ ॥

दीठोरे दीठोहूं तवखेचरारे, सहश्र विजय तसनामरे ।
वयरजरे वयरज मैथुनने कारणेरे, मांड्यो नव संग्राम रे ॥जीवे॥२६
शक्तिज रे शक्तिज चन्द्रवा तणी रे, कीधो ताम प्रहार रे।
आव्यो रे आव्यो हूं चली भूतलेरे, नलहूं शुद्ध लगार रे ॥जीवे॥२७
कौशल्य[१] रे कौशल्य पुर उद्यानमेंरे, पड़ियो पामूं दुःख रे ।
ओछो रे ओछो जले जेम माछलोरे, रंचन पामूं सुख रे ॥ २८ ॥
भूपतिरे भूपति श्री भरतेश्वररे आई गयो अभिरामरे ।
करुणारे करुणा अधिकी ऊपनी रे, कोमल छे परिणाम रे ॥ २९ ॥
आणी रे, आणी गन्धाम्बूतदारे[२], सींच्यो अंग सजोर रे, ।
नाशी रे नाशी शक्ति गई सही रे, जेम जाग्यो थी चौररे ॥ ३० ॥
हुओ रे हुओ ताम समाधीयोरे, अचरीज अधिको पामरे ।
महीमारे महीमा गन्धाम्बू तणी रे, पूछीयो में शिर नाम रे ॥३१॥
भाई रे भाई तुम्हारो तव भणे रे, सारथ वाहज एकरे ।
'गजपुर' रे गजपुर थी इहां आवीयो रे, साथे महीप[३] अनेकरे॥३२॥
तूटयो रे तूटयो भैसो एकजी रे, पड़ियो मारग बीच रे ।
माथे रे माथे पग दई चले रे, लोक जीके छे नीच रे ॥ ३३ ॥
म्होटो रे म्होटो उपद्रवे मुओ रे, 'सेतंकर' पूरि देखरे ।
पवनजरे 'पवनज पुत्र' नामे भलो रे, देव हुओ रे मनेखरे ॥ ३४ ॥
अवधजरे अवधि ज्ञान सूं देखीयो रे, पूर्व भवान्तर जामरे ।
व्याधिजरे व्याधि विकुर्वी देश में रे, पुर २ गाम ही गाम रे ॥३५॥
द्रोणजरे द्रोण मेघना देश में रे, नहीं व्याधी पेसाररे ।
मामो रे मामोजी में पूछीयुंरे, एछे कवण विचार रे ॥ ३६ ॥
पुष्वी रे पृथ्वी सघली माहरी रे, अन्तर गृह कारे ।
जिमछेरे जीमछे तिम नानू कहो रे, इठ कायां दुःख थाप रे ॥३७॥
बोले रे बोले सोप्रभु सांभलो रे, प्रियंकरा सुत नारे रे ।
रोगे रे रोगे पीडी श्री घणी रे, गर्भे नणो आधार रे ॥ ३८ ॥

---

१ अयोध्या । २ सुगन्धी पाणी । ३ राजा ।

स्वामी रे स्वामीने देवर भलो रे, पीडाए सुविशेष रे ॥ जीवे०॥१२॥
मुझने रे मुझने विवर वसुधारा रे, दीये अब देवी आप रे ।
मांहे रे मांहे हूं पेशुं सही रे, ऊपरे वाले छाप रे ॥ जीवे० ॥१३॥
एटले रे एटले एक विद्या धरू रे करुणा अति दाखन्त रे ।
विद्या रे विद्या वर अव लोक नी रे, अवलोकी भाखन्त रे ॥जीवे०॥१४॥
वाई रे वाई आरति मतिकरो रे, लक्ष्मण लीला मांहे रे ।
प्रातः रे प्रातः ए उठसे सही रे, मिलसे राम उच्छाहे रे ॥जीवे०॥१५॥
सुमती रे सुमती हुईसा सुन्दरी रे, कदी होवे परभात रे ।
वारु रे वारु वर्तिका सांभल्यो रे, दुःख देशान्तर जात रे ॥ १६ ॥
रावण रे रावण अति रस रंगमां रे, लक्ष्मण मरियो जाणी रे ।
भाई रे भाई सुत नृप वांधीया रे, सुणी रोवे दुःखी आणी रे ॥१७॥
हा वत्स! रे हा वत्स! कुम्भकर्णजी रे, हा वत्स! नन्द निरूप रे।
इन्द्रज रे इन्द्रजीत घनवाहनू रे, 'जम्बू माली' अनूप रे ॥ १८ ॥
अवरज रे अवर अनेरा राजीया रे, वन्धाणी तुम देह रे ।
मुझने रे मुझने जीवतां थकां रे, अजब तमाशो एह रे ॥ १९ ॥
सुमरी रे सुमरी गुण सुत भाई ना रे, वारम्वार पडन्त रे ।
वैठो रे वैठो कीजे फिरी फिरी रे, रमणी जेम रडन्त रे ॥ २० ॥
एकज रे एकज विद्या धर भलो रे, एटले आवे चाल रे ।
पूर्वज रे पूर्व दिशीने वारणे रे, भामण्डल ने निहाल रे ॥ २१ ॥
भाखे रे भाखे वाणी अमीसमी रे, मेलवो राघव राय रे ।
लक्ष्मण रे लक्ष्मण जी जीवातणो रे, दाखूं हूं उपाय रे ॥ जीवे ॥ २२
भामण्डल रे भामण्डल, कर साहीयो रे, आण्यो प्रभुने पास रे ।
चरणे रे चरणे लागी वीनवे रे, आणीने उल्हास रे ॥ जीवे ॥ २३॥
पुर वर रे पुरवर छे सगीत जी रे, शशि मण्डल भूपाल रे ।
राणी रे राणी राजे सुप्रभा रे, नन्दन हूं सुविशाल रे ॥ जीवे ॥२४
नामे रे नामे छू प्रति चन्द जी रे, वैसी विमाने जाऊं रे ।
क्रीडा रे क्रीडा करवा कारणे रे सुन्दरी सूं शोभाऊं रे ॥ जीवे॥२५

स्नानोदक लावोसही, कोई म लावो वार ॥ २ ॥
आज लगे सेवक हुता, आगे तुम मुझ भ्रात।
भाई भिक्षा आपवे, राखो जग आख्यात ॥ ३ ॥
जिहां लगे जग जीवसूं, तिहां लगे उपकार।
विसरसूं नहीं तुम अछो, प्राण तणा दातार ॥ ४ ॥

ढाल पेंतालीशमीं तर्ज चढ़ो २ लाडा चार म लावो—

सोई समाणो अवसर साधे, अवसर साधे स्वामी आराधे ॥ टेर ॥
वैसी विमाने ते तव चलिया, विद्याधर विद्या बले बलिया।
पुरी अयोध्या चाली आया, भरत नरेश्वर सोवत पाया ॥ १ ॥
ऊपर भूमि ए मयज[1] सुहाली, गलती राते नींद रसाली।
अम्बरे रह्या राग आलापी, नाद-बले लीयो राय जगावी ॥ २ ॥
जाग्यो भूप हूवो हूंसियारो, दश दिशे जोवे नजर पसारी।
आगे ऊभा दीठा सोई, पूछे प्रभु कहो कारण कोई ॥ ३ ॥
'भामण्डल' भाखे सब वातां, भरत हीया में दुःख न समातो।
ऊठी तब ही हुओ आगे, वैसी विमाने मारग लागे ॥ ४ ॥
कौतुक मंगल आया चाली, सोवन्ती[2] रे जगावी बाली।
'द्रोण मेघ' नृप पासे जाची, सब गुण लक्षणवन्ती साची ॥५॥
कन्या सहश्र तणो परिवारो, ते सघली लागी तस लारो।
प्रतिज्ञा छे सहुनी सरखी, एकज पति करवाने हरखी ॥ ६ ॥
'भरत' अयोध्या ए पहोंचायो, भामण्डलजी आयो भायो।
विशल्या सघलीसुं लीधी, चाल्या तब ही ढील न कीधी ॥७॥
जल द्वीपे ऊजालो देखी, रविऊग्यांनो भर्म विशेषी।
अतिही वेगे विमान चलावे, वात करंतो प्रभुरे आवे ॥ सोई ॥ ८
सहु कोई आरतीया होता, कद आवे यो वाटज जोता।
सूर्य उदय पंकज विकसावे, देखी विशल्या सहु सुखपावे॥ सोई ९
विशल्या प्रभुनो तन फरसे जागे दूधे जलधर वरसे।

धूलचंदजी टन दीपक ढाल तर्ज म्हारा गुरुजी गुणवन्ता—(नटाय की)

म्हारा महाराजारो अंग फरस रही रे २ आहर्ष म्हारे ॥ टेर ॥

---

[1] शय्या = [2] सोतीहुई—

हुई रे हुई सही निरोगणी रे, पुत्री पण परधान रे ।
प्रसवी रे प्रसवी सुख समाधिमें रे, विशल्या अभीधान रे ॥ ३९ ॥
थारो रे थारो जेम तेम माहरो रे, देश हुतो समभाय रे ।
पुत्री रे पुत्री स्नान जले करी रे, सीच्योंथी सुखथाय रे ॥ ४० ॥
पूछयो रे पूछयो मुनिवर एकदा रे, सत्य भूती सुख दाय रे ।
एछे रे एछे कौण विशेपथी रे, ज्ञाने भेद लहाय रे ॥ जीवे ॥ ४१
द्राक्ष रे द्रक्ष थकी घणो रे, मीठी वाणी विशेप रे ।
पूरव रे पूरव भवना तपतणो रे, एफलछे सुविशेप रे ॥ जीवे ॥ ४२
घाव१ज रे घावने सराहणूं रे, शल्य तणो अपाहर रे ।
व्याधिज व्याधि सहुनी क्षयकरे रे, लक्ष्मणजी भरतार रे ॥ ४३ ॥
ए गुण रे एगुणनो किरतारछे रे, स्नान तणो जलमार रे ।
अमृत रे अमृत हीथी गुण घणा रे, सुर गुरु न लहे पार रे ॥४४॥
मुनिवर रे मुनिवरनी वाणी थकी रे, प्रत्यय लही प्रत्यक्ष रे ।
जलनो रे जलनो प्रगट प्रभावजो रे, प्रगट्यो लोक समक्ष रे ॥४५॥
एमज रे एम कहीने मुझ भणी रे, स्नानतणूं जल दीध रे ।
छोंटां छोंटां नाख्यो देशमां रे, देश निरोगी कीध रे ॥ ४६ ॥
ओहिज रे ओहिज जल सूं सींचियो रे, में तुझ इण ही वार रे ।
शक्तिज रे शक्ति शल्य गयो घावही रे, रुझ्यो क्षण ही मझार रे ॥४७॥
भरतज रे भरतज ने में देखियो रे, जलनो प्रगट प्रभाव रे ।
आणो रे आणो अति ऊतावलू रे, छोडो अवर उपाव रे ॥ ४८ ॥
ढालज रे ढालज चम्मालीशमी रे, राम महा सुख पाय रे ।
जेहवी रे जेहवी तो भवतिव्यता रे, तेहवी मिलेही नहाय रे ॥४९॥

दोहा—वेलावल रागे

'भामण्डल' हनुमन्तजी, अंगद सुभट सलील ।
राम कहै बोलाय के, कामतणी नहीं ढील ॥ १ ॥
पहेला जाजो भरतपे, भरतभणी लेई लार ।

१ विशल्या के स्नान जल से घाव का संरोहण, शल्य का अपहार और व्याधिका क्षय होगा, और इसका पति लक्ष्मण होगा ।

स्नानोदक लावोसही, कोई म लावो वार ॥ २ ॥
आज लगे सेवक हुता, आगे तुम मुझ भ्रात।
भाई भिक्षा आपवे, राखो जग आख्यात ॥ ३ ॥
जिहां लगे जग जीवसूं, तिहां लगे उपकार।
विसरसूं नहीं तुम अछो, प्राण तणा दातार ॥ ४ ॥

ढाल पेंतालीशमीं तर्ज चड़ो २ लाडा वार म लावो—

सोई समाणो अवसर साधे, अवसर साधे स्वामी आराधे ॥ टेर ॥
बैसी विमाने ते तब चलिया, विद्याधर विद्या बले बलिया।
पुरी अयोध्या चालो आया, भरत नरेश्वर सोवत पाया ॥ १ ॥
ऊपर भूमि ए सयज[1] सुहाली, गलती राते नींद रसाली।
अम्बरे रह्या राग आलापी, नाद-बले लीयो राय जगावी ॥ २ ॥
जाग्यो भूप हुवो हूंसियारी, दश दिशे जोवे नजर पसारी।
आगे ऊभा दीठा सोई, पूछे प्रभु कहो कारण कोई ॥ ३ ॥
'भामण्डल' भाखे सब वातां, भरत हीया में दुःख न समातो।
ऊठी तब ही हुओ आगे, बैसी विमाने मारग लागे ॥ ४ ॥
कौतुक मंगल आया चाली, सोवन्ती[2] रे जगावी चाली।
'द्रोण मेघ' नृप पासे जाची, सब गुण लक्षणवन्ती साची ॥५॥
कन्या सहस्र तणो परिवारो, ते सघली लागी तस लारो।
प्रतिज्ञा छे सहुनी सरखी, एकज पति करवाने हरखी ॥ ६ ॥
'भरत' अयोध्या ए पहोंचायो, भामण्डलजी आयो भायो।
विशल्या सघलीयं लीधी, चाल्या तब ही ढील न कीधी ॥७॥
जल द्वीपे ऊजालो देखी, रविऊग्यांनो भर्म विशेषी।
अतिही वेगे विमान चलावे, थान करांनो प्रभुपे आवे ॥ सोई ॥ ८
सहु कोई आरतीया होता, कद आवे वो वाटज जोता।
सूर्य उदय पंकज विकसावे, देखी विशल्या सहु सुखपावे॥ सोई ९
विशल्या प्रभुनो तन फरसे आणंद हुवे उत्सव सरसे।
धूलचंदजी कृत देशी ढाल तर्ज म्हारा गुरुजी गुणवन्ता—(नाटक की)
म्हारा महाराजाजी अंग फरस रही रे २ आइये म्हारे ॥ टेर ॥

[1] शय्या = [2] सोती हुई—

कर सेथी तन फरसनलागी, जिम जिम साता थावे ।
दावानलके ऊपर जाणे.अमृत मेह वरसावे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
इण पापण ने यो कुण लायो, शक्ति एम विचारे ।
इणआगेहूं किमकर ठहरूं. लारे लागो म्हारे ॥ म्हारा ॥ २ ॥
थरहर थरहर धूजन लागी, आतो वेरण म्हारी ।
फिट फिट फिट फिट दुनियोंकरसी, लाज गमासी मारी ॥ ३ ॥
सारंग नाठे सिंहनी आगल, गरुड़ थकी जिम सापो ।
रविना आगे तमतिम नासे. पुण्य थकी जिम पापो ॥ म्हरा ॥ ४ ॥
मन मुरझायो होगई विरुखी. शक्ति परी पुलाई ।
दांत पीसती नाठी देवी, जोर न चाले कोई ॥ म्हारा ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

शक्ति महु देखन्तां नाठी, जेम नागणी मार्याथी लाठी ॥ सोई॥१०
सा जाती हनुमन्ते झाली, तब सान सके हिंडी हाली ।
जेम चीड़ी सिंचाणे साही, पूछन्तां बोलन्त उच्छाही ॥ ११ ॥
प्रज्ञप्तीनी हूं लघु भगिनी. देवी रूपेछू शुभ लगिनी ।
केड़ पडी फेरूं तसठामो, महा शक्तीछे महारूं नामो ॥सोई॥१२
धरणेन्द्रे रावण ने आपी, रावणे पणहूं थिरकरी थापी ।
कामसर्यो थो रावण केरो, पण लक्ष्मणनो भाग भलेरो ॥ १३ ॥
पूर्व भवना तपनो जोरो, विशल्या देख्यों मनमोरो ॥
थरहर थरहर करी धूजाणी, तेह भणी प्रभुमें नरहाणी ॥ १४ ॥
फिरी नवि आवूं साथ तुम्हारे, अब ए निश्चे उचित हमारे ।
अबके जो जीवेवा लहीसूं, छानी मानो होई रहीसू ॥ १५ ॥
सघले दीधो तब फिटकारो, लज्जा पामी ने हारी जमारो ।
दांतां साथे लीधोजूती, दुष्टि अगोचर हुई भूती ॥ सोई ॥ १६ ॥
विसल्या तनु फरसेफेरी, तिम तिम साता थाय घणेरी ।
बावना चन्दन लेपकराया, व्रण रुंजाणू अति सुखपाया ॥सोई १७
आलस्य मोड़ी ऊठ्यो स्वामी, सर्वप्रकारे साता पामी ।

देखे आंसू न्हांखेरामो, लक्ष्मण पूछे प्रभुने तामो ॥ सोई ॥ १८॥
ए स्यां कोट किसा रखवाला, ऐसी बाला रूपरसाला।
एस्यों आवे छेरे वधावा, एस्यों लोकों नारे मेलावा ॥ सोई ॥१९॥
रामसहु विरतन्त सुनावे, विशल्या नी वात जणावे।
कन्या सहस्र साथे सुहावे, विशल्या प्रभु विवाह करावे ॥ सोई ॥२०॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज धनबाली धन सुन्दरी

सुखकारी म्हारे आंगणीये ऊगीयोजी सह्यां अविचल सूर्य प्रकाश ॥टेर॥
गावे वधावे गोरडीजी कांई, झांणेस्वर सुखकार।
लक्ष्मण जी जिवित ऊवर्योजी म्हारे हुओहै आनन्द अपार ॥सु १
लिछमन ने वींद वणावीयोजी कांई, सहस बनी परिवार।
इन्द्राणीसम ओपतीजी कांई, विशल्या पठनार ॥ सु० ॥ २ ॥
दान नेपुण्य किया घणाजी कांई, कियोहै उच्छव अपार।
धर्म प्रसादे सहु मिट्योजी कांई, एह म्होटो जंजाल ॥ सु० ॥३॥

ढाल मूलगी

सोलह हजारां नारीमांही, विशल्या पटराणी थाही।
जेम राघव ने 'सीता' राणी, तेम 'लक्ष्मण' ने एह वखाणी ॥२१॥
विद्याधर ने वानर मिलीयां, आपण मांही कीजे रलियां।
जन्मोच्छव जेम ओच्छव होवे, देवी देव तमासो जोवे ॥ २२ ॥
निशाणे तव पड़ियो घावो, आनन्दीयोरे अयोध्या गावो।
साजन जनने अधिक उल्हासो, दुर्जन जन घरे पड़ीयो त्रासो ॥२३॥
'सौमित्री' जीवन्तो सुणीयो, 'रावण' आगतिवन्तो धुणियो।
सामन्त मंत्री ने बोलावी, करे मतो उणवारे आवी ॥ सोई ॥२४॥

क्षेपक सवैया

आनी थी मौत में प्रीत के काज छिनै तिनको मन दृढ शील गहा है।
वन्दर वीरनूं अंग महोदधि देखत ही गढ लंक दहा है ॥
राम रु लिछमन जोर बली मन गाजन यूं पिछताय रहा हूं।
नेह की नाह कुदाह लगी नर ए रे महाह! मन्दाह कहा हैं ॥ १ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल च्तेपक तर्ज हांक मतिकर गर्व दिवाना

रावण वचन मुनीने भाखे, नीति वचन मंत्री मिल दाखे ।
अरज करां करजोर और दिलमांय विचारो रे ॥
मान प्रभु वचन हमारो(टेर)वचन हमारो मान आन हिरदामें धारोरे १
रामचन्द्र की सीता नारी, जिन्हकूं चाहो करनी प्यारी ।
यह सत्यवन्ती नार प्यार नहीं वंछे थारो रे मान ॥ २ ॥
मानधरी ने सीता लाया, कुलने म्होटा कलंक चढाया ।
अपयश फेल्यो अपार नार कुल करण संहारोरं ॥ मान ॥ ३ ॥
भाई पिण गयो तेहने पासे, प्रभुजी अब तूं क्यूं न विमासे ।
भाई सुत सामन्त तंतु बंधन को धारो रे ॥ मान ॥ ४ ॥
आयो दूत जो लंका धूजाई, रघुवर की है प्रबल पुण्याई ।
शक्ति गई महाराज काज, यह कैसे सारो रे ॥ मान ॥ ५ ॥
सीता दीजे ढील न कीजे, राम राय मनमां ही रीजे ।
सीजे सारो काम जाण ए मूंपां नारोरं ॥ मान० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

सौ मित्री में शक्ति ए ताड्यो, जाण्यो थो ए मारी पाड्यो ।
रामजी मरसे हुआ प्रातो, नहीं जीवे त्रिण लिछमन भ्रातो ॥सोई०।२५
वानरड़ा सवि जासे भाजि, धणियों विन नवि लडसे पाजी ।
वाए वादल जासे फाटी विण औपधए व्याधिज काटी ॥सोई०।२६।
भाई सुतसुं सहु छूटसे, नाग फासना बन्धन त्रूट से ।
महेजेही सहु आवी मिलसे, दूध मांहीए शाकर भलसे ॥सोई०।२७।
एती मांहीं कोई न हुई दैव तणी कारणी छे जूई ।
स्वप्नानो हुवो विवाहो, भाई सुतनी आरती अगाहो ॥सोई० ।२८।
मंत्री भाखे सीता छूटे- भाई सुतना बंधन त्रूटे ।
एजा प्रभुजी तुम नहीं करसों, मूआ केडे तुमही मरसो ॥सोई०।२९।
एह अनुनय[1] आघो राखो, भूंडूं कीधानों फल चाखो ।

---

१ शर्त ॥ सीता वापिस देने से राम, रावण के भाई व पुत्रों को छोड़ सकते हैं ।

आप दुःखे परने दुःख जाणो, तुम आगेही आगे ताणो ॥सोई०।३०।
रावण मंत्रीश्वर अब गणिया, दूत बोलावोने इम भणीया ।
राजा राघव पासे जाई, वात कहोजो में कहिवाई ॥ सोई० ॥३१॥
आयोते राघव दरबारे, पोले रोख्यो ते प्रतिहारे ।
प्रभु आदेशे आघो आयो, सभा देखन्तो अचरज पायो ॥सोई०।३२।
इन्द्र सभा तेहवो ए दीसे, प्रभुजी इन्द्रज बिश्वा बीसे ।
सामानिक सुरजे नृप पासे, पगे लागीने वचन प्रकाशे ॥सोई० ।३३।

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रभु ने नमस्कार कीधो, वचन यो बोले है सीधो, पत्र कर पद्म के दीधो । रावण जो वात कही मुझने, सुणाऊं वात सोही तुमने ॥ सत्य० ॥ ८९ ॥

ढाल मूलगी—

रावण भाखे तुम्ह गुण सिन्धु, मेलो म्हारा ए सुत बन्धु ।
सीता टाली लियो मुझ राजो, अर्थ लेईने सारो काजो ॥सोई०॥३४॥
कन्या तीन हजारज आपूं, आगे सारी प्रीतिज थापूं ।
इमही करतां नावे दाई, तो तुम सारू नहींछे कांई ॥सोई० ॥३५॥
राम कहे तूं कहजे तेहने, राज्य-अर्थी ते चाहे एहने ।
प्रमदा चाहूंन फेर अनेरी, वात मन कहीजो एहवी फेरी ॥सोई०॥३६
पूजी अर्ची ने ओ सीता, जो तुम द्यो विश्व विदिता ।
तो हूं मेलूं एहनो एहो, भाई सुत ने आणी सनेहो ॥ सोई ॥३७॥
दूत कहे तुम स्वामी सयाणा, वचन कहो छो अधिक अयाणा ।
त्रिया हेते हारो छो प्राणो, रावण रूठ्यो नहीं को त्राणो ।सोई॥३८॥
सोमित्री तुम्ह जीवित जाण्यो, तेहथी तो तुम सुदिन पिछाण्यो ।
अबके सोमित्री कपि आपो, तुम्ह मरसोए निश्चय थापो ॥सोई॥३९
एक ही रावण विश्वहीजेता, रावण नो बल भाखूं केता ।
सूर्य उदय थी जावे नाशी, अन्धकार बहू देखी विमासी ॥सोई॥४०
सोमित्री कहे छे तूं दूतो, प्रभु अनुसारे हुई आहूतो ।
फहम विना तूं बोले बोल्यो, देखाय छे फूल्यो डोल्यो ॥ सोई ॥ ४१ ॥

फिट रावण नूं जीव्यूं आजो, बोलन्तां नविपामे लाजो ।
जेहना वाल्हा नन्दन भाई, बंधो थकी न शके छोड़ाई ॥सोई॥४२
जारे कहे तुम्ह स्वामीसाथे, एह कहीछे रघुवर नाथे ।
उन्दर बिलतज आवीखेते, साचकरं रे भाव्वी जेने ॥सोई ॥४३॥
लक्ष्मणनी एतातीवाणी, सांभलता वानरडां जाणी ।
कण्ठे साही बाहीर कीधो, दूतगयो प्रभुपासे सीधो ॥ सोई ॥४४॥
पांच अने एतो चालीशे. ढाल सफली सयस जगीसे ।
'केशराज' ऋषि राय विचारे, साचो जीते झूट्ठ हारे ॥सोई०॥४५॥

दोहा (केदारा रागे)

दूत कही श्रवणे सुणी, फरि तेड्या मंत्रीश ।
कहो मतो कीजे किस्यो, आरति वन्ता ईश ॥ १ ॥
मंत्री दाखे देवजी, सो वातों की एक ।
कही सुणावों स्वामीने, स्वामी तजेजो टेक ॥ २ ॥
सीता दीधां रामने, सरे सहु तुम काम ।
भाई सुत आवे घरे, रहे सहुनी माम ॥ ३ ॥
एह सुणीने भीतरे, आणे अधिकी रीस ।
कोईन सूधो सरदहै, किस्यूं करे मंत्रीश ॥ ४ ॥

ढाल छंमालीसमीं । तर्ज श्रेणिक रायहूंरे अनाथी निर्ग्रन्थ

रावण राय आशा अधिकी थाय. तेतोछोडीरे क्युं हीन जाय ॥टेर॥
दशकन्धर एमचिन्तवे, हिवकीजे कांई उपाय ।
कवण उपाये जीतवू, एतो राम लक्ष्मण राय ॥ रावण ॥ १ ॥
आरती अधिकी ऊपनी भाई सुतनी अगाध ।
वश पडया छे पारके, ते छूट्या न दीसे आज ॥ रावण० ॥ २ ॥
अमोघ विजय शक्ती थी. कांईयन सर्यो काज ।
लक्ष्मण जीवतो, ऊगर्यो, केम रहेसे म्हारी लाज ॥ रावण० ॥ ३ ॥
अस्त्र शस्त्र बले करी, जीती न सकूं राम ।
कोई उपायथी वश करी, सारु वंछित काम ॥ रावण० ॥ ४ ॥

विद्या सहस्त्र साधी जीके. ते सहुने अब लोय ।
जेह थकी कारज सरे, तेतो आजन दीसे कोय ।। रावण० ।। ५ ।।
एकान्तिक विचारणा, कीधी नृपे ते सोई ।
विद्याजे बहु रूपिणी, ते साध्यों कारज होई ।। रावण० ।। ६ ।।
ए विद्या ने साधवारे, उद्यमी थयो ईश ।
एहथी मुझ थायसे. कारज विश्वा वीश ।। रावण० ।। ७ ।।
एम विमासो आवीयो, पोषध शाला मांही ।
मणि पीठिका ऊपरे, जाई बैठो रे ज्यांही ।। रावण० ।। ८ ।।
मन थिर राखी आपणूं, विद्याने समरन्त ।
प्रकट हुवे त्यों सुधी, लंक पति नियम धरन्त ।। रावण० ।। ९ ।।
मिटतो अण मेलतो, आसन पदम ठावन्त ।
जप माला ने कर ग्रही, विधिसुं जाप जपन्त ।। रावण० ।। १० ।।
कहै देवी मण्डोदरी, तव पोलीया 'यम दण्ड' ।
दिवसतो, आठों लगे, करोरे धर्म प्रचण्ड ।। रावण० ।। ११ ।।
आंबिल ने नीवी करो, करो तप उपवास ।
दान द्यो शुद्ध भावसुं. करिये शील अभ्यास ।। रावण० ।। १२ ।।
पडहो दीधो पुर विषे. सहु कोई करजो धर्म ।
नहीं करेतो मारवो, भाखीरे वाणी मर्म ।। रावण० ।। १३ ।।
खेचरे आवी सुग्रीवसुं, एह जणावी वात ।
विद्या तो बहु रूपिणी. साधे विश्व विख्यात ।। रावण० ।। १४ ।।
कपि पति भाखे रामसुं. कीजे कोई उपाय ।
सिंह अने वलि पांजर्यों, लीधोरे क्यूं छिन जाय ।। रावण० ।।१५।।
एह विद्या साधवा, नदिजावे सो आज ।
एकही नीभो नविपडे, बहुलारे विणसे काज ।। रावण ।। १६ ।।
रामकहै थिरतापणे, पूरोमोटे ध्यान ।
अन्तराय कोई मतिकरो, होई रे आतुर अज्ञान । रावण ।। १७ ।।
आप ए सुग्रीवनी, करिमोरे उपकर्म ।
मूलही थी छेदवा, आतुर होई मर्म ।. रावण ।। १८ ।।

फिट रावण नूं जीव्यूं आजो, बोलन्तां नवि पामे लाजो ।
जेहना वाल्हा नन्दन भाई, बंधो थकी न शके छोडाई ॥सोई॥४२
जारे कहे तुम्ह स्वामीसाथे, एह कहीछे रघुवर नाथे ।
उन्दर विलतज आवीखेते, साचकरं रे भाग्रो जेते ॥सोई ॥४३॥
लक्ष्मणनी एतातीवाणी, सांभलता वानरडां जाणी ।
कण्ठे साही बाहीर कीधो, दूतगयो प्रभुपासे सीधो ॥ सोई ॥४४॥
पांच अने एतो चालीशे. ढाल सफली सयस जगीसे ।
'केशराज' ऋषि राय विचारे, साचो जीते झूंट्ठ हारे ॥सोई०॥४५॥

दोहा (केदारा रागे)

दूत कही श्रवणे सुणी, फरि तेड्या मंत्रीश ।
कहो मतो कीजे किस्यो, आरति वन्ता ईश ॥ १ ॥
मंत्री दाखे देवजी, सो वातों की एक ।
कहो सुणावों स्वामीने, स्वामी तजेजो टेक ॥ २ ॥
सीता दीधां रामने, सरे सहु तुम काम ।
भाई सुत आवे घरे, रहै सहुनी माम ॥ ३ ॥
एह सुणीने भीतरे, आणे अधिकी रीस ।
कोईन सूधो सरदहै, किस्यूं करे मंत्रीश ॥ ४ ॥

ढाल छंमालीसमीं । तर्ज श्रेणिक रायहूंरे अनाथी निर्ग्रन्थ

रावण राय आशा अधिकी थाय. तेतोछोडीरे क्यूं हीन जाय ॥टेर॥
दशकन्धर एमचिन्तवे, हिवकीजे कांई उपाय ।
कवण उपाये जीतवू, एतो राम लक्ष्मण राय ॥ रावण ॥ १ ॥
आरती अधिकी ऊपनी भाई सुतनी अगाध ।
वश पडया छे पारके, ते छूट्या न दीसे आज ॥ रावण० ॥ २ ॥
अमोघ विजय शक्ती थी. कांईयन सर्यो काज ।
लक्ष्मण जीवतो, ऊगर्यो, केम रहेसे म्हारी लाज ॥ रावण० ॥ ३ ॥
अस्त्र शस्त्र बले करी, जीती न सकूं राम ।
कोई उपायथी वश करी, सारु वंछित काम ॥ रावण० ॥ ४ ॥

अंगदादिक आवीया, पामवा प्रशंस।
गुप्त रावण पारखती, कर वारे विद्या भ्रंम ॥ रावण ॥ १९ ॥
उपसर्ग अति आकरा, कीधा विविध प्रकार।
ध्यान थी दश कंधरु, नहीं चल्यो लगार ॥ रावण ॥ २० ॥
कहै अंगद रायसूं राम तेज अखण्ड।
जाणीयो ते तेहथी, मांड्यो रे एह पाखण्ड ॥ रावण ॥ २१ ॥
तेहहरी सीता सती, परोक्षे परपंच।
देखतां मण्डोदरी, हूं लई जाऊं रे खंच ॥ रावण ॥ २२ ॥
साही लीधी सुन्दरी, जेहवी होय अनाथ।
नजर आगे रे रोवती, लेई चाल्यो कपि साथ ॥ रावण ॥ २३ ॥
निभ्रं छे वचने करी, अकट विकट अपार।
विल २ शब्द करे घणूं, मण्दोदरी तिण वार ॥ रावण ॥ २४ ॥

धूलचन्दजी कृत चेपक ढाल तर्ज धर्म करोरे म्हारा वेलियां—

प्रीतम ! पलने, खोल रे, कपि ए ले जावे कर जोर रे ॥ टेर ॥
रोवे पोटे रानी अनाथज्यूं, सबल करन्ती शौर रे ॥ प्री० ॥ १ ॥
ओ ध्यान कहो कांइ आडोरे आसी, प्रीतम पकड़ोंनी योने दौररे ॥२॥
इज्जत गमावे देखो वानर म्हारी, नायक एह निटोलरे ॥ प्री ॥३॥
वार वार विललाट करन्ती, पियु बोल बोल तूं बोल रे ॥ प्री ॥४॥

ढाल मूलगी

एह उपसर्ग आकरा, कीधा रावण पास।
मण्दोदरी राणी तणा राय न देखे नयणे तास ॥ रावण ॥ २५ ॥
ध्यान सूं लग्न लीनता निहाले नहीं निजनार।
जाणी निश्चक आकरो, विद्या सिधी तिणवार ॥ रावण ॥ २६ ॥
गगन ने उद्योतती, धरे रूप रसाल।
शीघ्र सूं रावण आगे, आवी विद्या ततकाल ॥ रावण ॥ २७ ॥
अन्तरीक्ष रही सन्मुखे, कहै विद्या ताम।
ताहरो मननो वंछियो, मैं करूं सघलो काम ॥ रावण ॥ २८ ॥
विश्वने वश आणवा, अछूं हूं समर्थ।

कोण लक्ष्मण रामजी, अवरसहु छे व्यर्थ ॥ रावण ॥ २९ ॥
विद्या वायक सांभली. पाम्यो हर्ष अपार ।
काज सर्यो अब माहरो, गई चिन्ता रे अपार ॥ रावण ॥ ३० ॥
कहे रावण रायजी, तू कहे ते सहु साच ।
समय सम्भालेसही, अविचल रहे तुम वाच । रावण ॥ ३१ ॥
विसर्जी विद्यातदा, जाई पहोंची निज ठाम ।
वानरा पण रामने, करे आवी परणाम ॥ रावण ॥ ३२ ॥
देवी मण्डोदरी अंगद तणो, निसुणी एह उदन्त ।
करतो हू हू कार अधिको, आवेरे घरही तुरन्त ॥ रावण ॥ ३३ ॥
स्नान भोजन करी रावण, गर्व पुरित गात ।
विद्यानीतो सहाय पामी, करसुं सहुनो घात ॥ रावण ॥ ३४ ॥

धूलचंदजी कृत–चौपक ढाल तर्ज पचंगसीयारी

म्हारा प्राणपति अभिमानी ने समझावण चालोरे ॥ टेर ॥
मण्डोदरी रानी कहै वानी सुनलो वहनों सारीरे ।
प्रियतम ने समझावा काजे, चालो मेरी लारीरे ।
सोकड़ सहु हालोरे ॥ म्हारा० ॥ १ ॥
सब सिणगार उतार्यो तनको, मनको हर्ष मिटायो रे ।
सादा पुराणा वस्तर लेकर, वनिता वेष बनायो रे ॥
देखेसी व्हालोरे ॥ म्हारा० ॥ २ ॥
इणपर रूप विरूप करीने, रावणपे चली आई रे ॥
आंख मांहीसूं आंसू वरसे, करे घणी नरमाई रे ॥
म्हारी अरजी झालोरे ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥

॥ चौपक छंद छप्पर ॥

आज है वार आदित्य वदे इम महिला वानी ।
दूजो सोमज देख राज रहसी नहीं रानी ॥
मंगल चाउंमन्द कन्त किम युद्ध कहावो,
निरपखिने करनश जोर व करजे ण्यावो ॥

आज गया थावर इता कहे मन्दोदर कूकवे,
लंक डाण जांण आणीलग्या मानी हट नहीं मूकवे ।१।

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी श्री रामगुनि कृत—

कहे मन्दोदरी वात नाथ मुझ मांनो छोडो सीता की गैल आघी मत तां नां। रघुवर को महातेज जगत नहीं छांनो, घर फूटो महाराज भाई लियो कांनों ॥ नोकर सब इनठौर दौर गये भाजी ॥ दिन बदले महाराज लडत है पाजी ॥ तुमकूं को सिखवत नहीं कोई स्यांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ १ ॥

कुनजानी हस्त प्रहस्त सभी घटजासी, कुनजानी रणवीच गक्षस हटजासी । कुनजानी जम्बूमाली नंदकट जासी, कुनजानी सुग्रीव आदि छुटजासी । कुनजानी कपि रींछ जंगे अडजासी, कुनजानी गढलंक वंक धुडजासी ।
अठा आगे क्याहोसी जांने भगवांनो, कहे मण्डोदरी ॥ २ ॥

कुन जानीथी शक्ति खाली चलजासी, कुन जानी इन्द्रजीत जोधा वंधजासी । कुनजानी लिछमन वीर सहस परणेसी, कुनजानी वैरी फौज घेरो आय देसी । नन्दन वन्धनवीच देवर पिण जांना ॥ कोई— कहसी ऐसी वात नहींथी दांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ ३ ॥

॥ क्षेपक ढाल तर्ज हो पिऊ पथिड़ा ॥

होपिउ मतवाला हजेयन समझो कांयजो, भाईअरु नन्दन सघला बांधी यारेलो । होपिउ मतवाला सहुथाका समझायजो, शक्तिरे परमुख शस्त्र शरनहीं सांधीयारेलो ॥ १ ॥ होपिउ मतवाला पवन देवगयो आजजो, धूवां फूका पिण कीधा हमे हाथमूंरे लो । होपिउ मतवाला दुर्गापिण गई भाजजो, आरतिनहीं हुईछे आज प्रभातमूंरेलो ॥ २ ॥ होपिउ मतवाला सूर्यदेव गयो रूठजो, वेमाता पिण कोद्रव आज नां दलेरेलो । होपिउ मतवाला पुण्य पिणदीवी पूठजो, दिन२ निजदल राम अरिदलसे मिलेरेलो ॥ ३ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज गैरोजी फूल गुलाबरो ।

थे मांनोजी सीखसुहामणी थेतो मांनो मांनो नणदीरा वीर म्हारा

साहिया में निरखी परखी इक बातमें शील रखने रखे शरीरा ॥ म्हारा सा-थे मांनो ॥ १ ॥ ए रामचद्र की भारजा आतो सति योमे शिरताज ॥ म्हारा ॥ केवली आगे भाखीयो, कांई भूलगया महाराज । म्हारा ॥ थे मांनो ॥ २ ॥ थे जानकी लाया घरजानकी आतो प्रानकी लेवनहारा ॥ म्हारा थे मांनो ॥ ३ ॥ कुमी नहीं किणवातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हारा ॥ वलि जोवोनी वक्त विचारने, रही थोडीसी घणीगई लारा ॥ म्हारा थेमांनो ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

कहे मण्डोदरी सुन पिया रावण, आज सूतीमें महिलां ।
होई उदासी नींद निवारी, मैं भूली सगलो सहिलांजी ॥
सीता ने लेई रामसुं मिलो मांनो मांनो पियाजी, म्हारी सीख
सीताने लेने रामसुं मिलो ॥ टेर ॥ १ ॥
इम करतां मुझ निद्रा आई, सुपनो एकज दीठो ।
कांई सुणाऊ तुझने आगे, पिण नांहघणो छे धीटोजी ॥ सीता ॥२
राम चन्द्रजी की सेनाआई, फिर गई लंका दोली ।
लंकामांही आग लगाई घर २ मांही होलीजी ॥ सीता ॥ ३ ॥
मांही घाल्यो तेल घिरतने, रघु पतिने आई रीसो ।
वीश हाथतो तूटा देख्या, तूटा देख्या दश शीसोजी ॥ सीता ४
ओ सुपनो देखीने जागी, नयनो डार्यो नीर ।
अबहूं आई अरज करणने, मानों नणदीरा वीरजी ॥ सीता ॥ ५
रत्नश्रवाजी तात तुम्हारा, माता केकसी रानी ।
थे छोपोता सुमाली केरा, सघलोंने मन देवो पाणीजी ॥ सीता६
वैश्रमन थी लंका लीधी, त्रिखण्डाधिप कहाजो ।
रामचन्द्र को दुःखदेवतो, क्यूं थे लंक गम वोजी ॥ सीता ॥ ७ ॥
राम राजा छे वह महाबलिया, जिणने थे शरज कीधा ।
पिण सीताने लाया उठाई, छानांमे धमेड़ा लीधाजी ॥ सीता ॥८
म्होटी राण्यां सहस अठादश, थे छो म्हांरा नाथ ।

आज गया थावर इता कहे मन्दोदर कूकवे,
लंक डाण जांण आणीलग्या मानी हट नहीं मूकवे ।१।
च्चेपक ढाल तर्ज लावणी श्री रामसुनि कृत—
कहे मन्दोदरी बात नाथ मुझ मांनो छोडो सीता की गैल आबी मत तां नां। रघुबर को महातेज जगत नहीं छांनो, घर फूटो महाराज भाई लियो कांनां ॥ नौकर सब इनठौर दौर गये भाजी ॥ दिन बदले महाराज लडत है पाजी ॥ तुमकूं को सिखवत नहीं कोई स्यांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ १ ॥
कुनजानी हस्त प्रहस्त सभी घटजासी, कुनजानी रणबीच राक्षस हटजासी । कुनजानी जम्बूमाली नंदकट जासी, कुनजानी सुग्रीव आदि छुटजासी । कुनजानी कपि रींछ जंगे अडजासी, कुनजानी गढलंक वंक बुडजासी ।
अठा आगे क्याहोसी जांने भगवांनो, कहे मण्डोदरी ॥ २ ॥
कुन जानीथी शक्ति खाली चलजासी, कुन जानी इन्द्रजीत जोधा बंधजासी । कुनजानी लिछमन वीर सहस परणेसी, कुनजानी वैरी फौज घेरो आय देसी । नन्दन बन्धनबीच देवर पिण जांना ॥ कोई— कहसी ऐसी बात नहींथो दांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ ३ ॥
॥ च्चेपक ढाल तर्ज हो पिऊ पथिड़ा ॥
होपिउ मतवाला हजेयन समझो कांयजो, भाईअरु नन्दन सघला बांधी यारेलो । होपिउ मतवाला सहुथाका समझायजो, शक्तिरे परमुख शस्त्र शरनहीं सांधीयारेलो ॥ १ ॥ होपिउ मतवाला पवन देवगयो आजजो, धूवां फूका पिण कीधा हमे हाथमूंरे लो । होपिउ मतवाला दुर्गापिण गई भाजजो, आरतिनहीं हुईछे आज प्रभातमूंरेलो ॥ २ ॥ होपिउ मतवाला सूर्यदेव गयो रूठजो, बेमाता पिण कोद्रव आज नां दलेरेलो । होपिउ मतवाला पुण्य पिणदीवी पूठजो, दिन२ निजदल राम अरिदलसे मिलेरेलो ॥ ३ ॥
च्चेपक ढाल तर्ज गैरोजी फूल गुलाबरो ।
थे मांनोजी सीखसुहामणी थेतो मांनो मांनो नणदीरा वीर म्हारा

साहिबा में निरखी परखी इक बातमें शील रखने रखे शरीरा ॥ म्हारा सा-थे मांनो ॥ १ ॥ ए रामचद्र की भारजा आतो सति योमे शिरताज ॥ म्हारा ॥ केवली आगे भाखीयो, कांई भूलगया महाराज । म्हारा ॥ थे मांनो ॥ २ ॥ थे जानकी लाया घरज्ञानकी आतो प्रानकी लेवनहारा ॥ म्हारा थे मांनो ॥ ३ ॥ कुमी नहीं किणबातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हारा ॥ वलि जोवोनी वक्त विचारने, रही थोडीसी घणीगई लारा ॥ म्हारा थेमांनो ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

कहे मण्डोदरी सुन पिया रावण, आज सुतीमें महिलां ।
होई उदासी नींद निवारी, मैं भूली सगली सहिलांजी ॥
सीता ने लेई रामसूं मिलो मांनो मांनो पियाजी, म्हारी सीख
सीताने लेने रामसूं मिलो ॥ टेर ॥ १ ॥
इम करतां मुझ निद्रा आई, सुपनो एकज दीठो ।
कांई सुणाऊ तुझने आगे, पिण नांहघणो छे धीठोजी ॥ सीता ॥ २
राम चन्द्रजी की सेनाआई, फिर गई लंका दोली ।
लंकामांही आग लगाई घर २ मांही होलीजी ॥ सीता ॥ ३ ॥
मांही घाल्यो तेल घिरतने, रघु पतिने आई रीसो ।
वीश हाथतो तूटा देख्या, तूटा देख्या दश शीसोजी ॥ सीता ४
ओ सुपनो देखीने जागी, नयनो डार्यो नीर ।
अबहूं आई अरज करणने, मानों नणदीरा वीरजी ॥ सीता ॥ ५ ॥
रत्नश्रवाजी तात तुम्हारा, माता केकसी रानी ।
थे छोपोता सुमाली केरा, सयलोने गत देवो पाणीजी ॥ सीता ६
वैश्रमन थी लंका लीधी, त्रिखण्डाधिप कहावो ।
रामचन्द्र को दुःखदेनगो, क्युं थे लंक गमावोजी ॥ सीता ॥ ७ ॥
राम राजा छे यह महाबलिया, जिणने थे बेरज कीधा ।
पिण सीताने लाया ऊठाई, छानीमें थमेड़ा लीधाजी ॥ सीता ॥ ८
म्होटी राण्यां सहस अठारह, थे छो म्हांरा नाथ ।

जो सीता थे पाछी नसूंपो, तो खालीकरास्यो पिउ म्हांराहाथजी॥९
इतरा दिन तक राज्य करन्तां, दिन२ क्रान्ति सवाई।
सुखसातामें बैठापिऊजी, आकांई कुमति कमाईजी॥ सीता॥१०
झर२ नेणां पाणी न्हांखे, पिन रावन वम नहीं आयो।
बाकी रानीसो इमभाखे, थांरी माता जणनेस्यूं खायोजी॥ ११॥

क्षेपक ढाल तर्ज अरजी सुन नेमहमारी—

पिया मेरी एक नमानी, हरलायोतू नार बिरानी॥ टेर॥
रामचन्द्र की सीता लायो, गर्वधरी अधिकानी।
या नारी तुझ कथन नमांने, क्यों तुम अकल भ्रमानी॥
छोड प्रभु अवतो गुमानी.॥ पिया॥ १॥
इन्द्र सरीसो राज तुम्हारे, समुद्रसी खाई भरानी।
सोवन कोट ओट लंकाके, जिनमेंही लाय लगानी॥
वखत अपनी नपिछानी॥ पिया॥ २॥
थे कहता मुभ सैन्य अपर बली सोतो पास बंधानी।
कुलको कन्दन क्यों करे पियुडा, तूटेला अतितानी॥
रामके पुण्य प्रधानी॥ पिया॥ ३॥
दोहा- सुनली वातां नारकी, उत्तर कुछ नहीं देह।
शिक्षा सब खालीगई, ज्यों पत्थर पर मेह॥ १॥

ढाल मूलगी—

आप जणवा कारणे, आवे ते उद्यान।
सती साथे बोलीयो, तव मनसाने अनुमान॥ रावण॥ ३५॥
नियम भंग तणोरे भय अती. भांजी हणवा देख।
मारी देवर स्वामी थारो, सेवूं तुझ सुवि शेप॥ रावण॥ ३६॥
ए अवसरे रायजीनो, व्रत भंज्योरे भाव।
ते अवसरे अधो गतिने, नृप वांध्यो चौथी नो आय॥रावण॥३७
एह सुणन्तां कटुक वाणि, रायनी दुःखदाय।
तास असाता थी धरती, पड़ीरे मूर्च्छाखाय॥ रावण॥ ३८॥

करी शीतलता ऊठाई, अभिग्रह कीधो सार।
राम लक्ष्मण मूवां पीछे, त्यजवा चारे आहार॥ रावण ॥३९॥

❀ क्षेपक राधेश्याम ❀

रावन कहे सुन सुन्दर मुखी, चपल चतुर चित्तचोर।
एक वार अनुराग से देखले मेरी ओर॥
मँझधार में मेरी नौका है सो पार लगादे ए सीता।
जिसराह में सच्ची राहत है, वह राह बतादे ए सीता॥
कर कृपा दृष्टि मेरे ऊपर किञ्चित् मुसका दे ए सीता।
बसयही अर्ज है हे सीता, दीदार दिखादे ए सीता॥
हर तरह प्रार्थना करता था, हर तरह प्रीति दिखलाता था।
फिर साम दाम और दण्ड भेद, चारो प्रकार समझाताथा॥
देख असुर की ढीठता, लगी हृदयमें चोट।
बोली नीची दृष्टिसे, कर तिनकेकी ओट॥
हे मूर्ख याद रख यहतेरे, पिछले पापोंका साया है।
जो छलने वनमे तूंमुझ को, इसजगह चुराकर लाया है॥
नो हजार जुगनू रोशनहों, लेकिन न कमलिनी खिलती है।
सूरज जिस समय निकलतेहैं, वह उन्हींको देख चटकती है॥
मेरी यह आंख कमलिनी है, सूरज समान श्री रघुवर है।
तेरी यह मदमातीबाते, एक जुगनू सेभी कमतर है॥
मेरी और उनकी शानशोकत्, निशिचर कुछ पहचानता है।
उन खरे करारे बाणोंकी, क्यों नहीं तू ताकत जानता है॥
अफ़सोस जो अभि सन्मुख होते, तो अभी तुझे बतलादेते।
दमभर में शानो शोकत को, मट्टी में तेरी मिलादेते॥
गर आज नहीं तो कल ही मर्हा, नज़्दीक वो दिन आता है।
हे अभिमानी ! हे हठधर्मी ! करनी का फल तू पाता है॥
क्रोधवश दशशीश को, सुनकर यह गुमार।
आगे अपनी ढालकी, और खैंची तलवार॥

बस खबरदार हो ए सीता, चलती है जुबां बहुत तेरी ।
क्या कानसे तूने सुनी नहीं, ताक़त मेरी जुर्रत मेरी ॥
बस जल्द मानले हुक्म मेरा, वर्ना तेरा शर काटूंगा ।
यह गुस्ताखी तेजी तेरी, दमभर में अभी भुला दूंगा ॥

क्षेपक ढाल तर्ज रगत नाटक—

अरे रावण तूं धमकी दिखताकिसे, मुझे मरनेका खौफ खतरही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी खेरमना, तुझे होनेकी अपने खबरही नहीं ॥ टेर ॥ १ ॥ क्यातूं सोनेकी लंक कामानकरे, मेरे आगे यह मिट्टी काघर ही नहीं । तेरी हस्तीहै क्या सिवा राम पिया, मेरी नजरीमें कोई बशरही नहीं ॥ २ ॥ क्यूं नहीं जीततू स्वयम्वर लायामुझे, मेरी चाहजो तेरे दिलमेंबसा । थातू कौन शहर मुझे देनी बता, क्या स्वयम्बरकी पहोंची खबरही नहीं ॥ ३ ॥ आवे इन्द्र नरेन्द्र जोमिलके सभी, क्या मजाल जो मेरा शीलहने । मेरे मनका सुमेरु हिलेगानहीं, मेरे मनमें किसोका डरही नहीं ॥ ४ ॥ चाहे चन्द्र गरम हो यदि सूर्यभी शीतल, समुद्र मर्यादा भंगकरे । अनहोनी जोवातहुवे जोकभी, तोमनमेरु हमारा हिलेगानहीं ॥ ५ ॥ तूंने सहस अठारा जो रानीवरी हाय उन्हपरभी तुझको सबरही नहीं। परतिरिया में तूं ने जो ध्यान किया, क्या निगोद नरक का खतर हीं नही ॥ ६ ॥ हुआसोतो हुआ अबमानकहा, मुझे राम पेजल्दी से देतू पठा । कहे न्यामत बगरना देखेगे यह, तोरे शरकी कसम तेरा शरही नहीं ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

बोली चलरे पातकी, क्यों करता बकवाद ।
मैनेजो पहीले कही, करले उसकूं याद ॥
तू योद्धानहीं चौरहै अब, इसलिए तुझेधिक्कारतीहूं ॥
तेरी सोनेकी लंकापर, नफरत की ठोकर मारतीहूं ।
सच्ची सतवन्ती नारीका, सत् आसमान पर रहताहै ॥
व्रत पतिव्रता क्षत्रियाणीका; हरवक्त प्रान पर रहताहै ।

तूमुझे अकेली देखआज, सीनाजोरी दिखलाताहै ॥
पिंजरेमें फँसी सिंहनीको, नंगी तल्वार दिखाताहै।
तल्वार मुझे मेरे तनको, हरगिज भी काटनहीं सकती ॥
मेरा पवित्र और पाकलहूं, नापाक यह चाट नहीं सकती।
मेंवडी खुशीसे कहतीहूं, मुझपर तल्वार चलादे तू ॥
अहसान तेरा होगा मुझपर, जो दुःखसे मुझे छुडादेतू।
परयाद रहे वेकसका खूं, रोयेगा तेरे दामन पर ॥
यह ही तल्वार लालहोकर, आयेगी तेरी गर्दनपर।
हसरत की निगाह है तारोंमें, और आसमान सब तकताहै।
मुझ बेगुनाह मुझ बेकसका, यह खून कहीं छिपसकताहै ॥
सन सना रहीहै हवाजोयह, सोमेरेलिए शहादतहै।
'दोझख की आग भभकतीहै, वह तेरेलिये कयामतहै ॥

ढाल मूलगी—

काया-ममता छोडीने, तजी जीवीतव्य आश।
शील समकित राखवाने, बैठी रे आगले तास ॥ रावण ॥४०॥
धीरज अवलम्बी करी, जाणी कर्म नो दोष।
सती लंक पति ऊपरे, नहीं आण्यो रंचक रोष ॥ रावण ॥४१॥
एह सांभली राय चिन्ते, राम सुं छे अतिप्यार।
हूं विपास करूं शुं वले ! न मिले एहनो उतार ॥ रावण ॥४२॥
शक्ति ने हीना होवेरे, थले पंकज जेम।
माछलो तलफीमरे, जलने न उपजे प्रेम ॥ रावण ॥ ४३ ॥
जिन धर्म नो मर्म जाणी काम-अंधो होई।
एह अन्याय अधिक महोटो, में कीधो छेरे सोई ॥रावण॥४४॥
अण जुक्तो में कियो, विभीषण नो बोल।
मान्यो नहीं मानने वश्य, माले रे शर सम तोल ॥रावण ॥४५॥

सेपक ढाल तर्ज लावणी-रामसुनि कृत

नहीं मान्यो विभीषण बोल हिवे पिछतायो, मनी भणी दियो दुःख हाथ नहीं आयो ॥ भाई बेटा बंधावाय परे हूं आयो।

बस खबरदार हो ए सीता, चलती है जुवां बहुत तेरी।
क्या कानसे तूने सुनी नहीं, ताक़त मेरी जुरत मेरी॥
बस जल्द मानले हुक्म मेरा, वर्ना तेरा शर काटूंगा।
यह गुस्ताखी तेजी तेरी, दमभर में अभी भुला दूंगा॥

क्षेपक ढाल तर्ज रंगत नाटक—

अरे रावण तूं धमकी दिखताकिसे, मुझे मरनेका खौफ खतरही नहीं। मुझे मारेगा क्या अपनी खैरमना, तुझे होनेकी अपने खबरही नहीं ॥ टेर ॥ १ ॥ क्यातूं सोनेकी लंक कामानकरे, मेरे आगे यह मिट्टी काघर ही नहीं। तेरी हस्तीहै क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रीमें कोई बशरही नहीं ॥ २ ॥ क्युं नहीं जीततू स्वयम्वर लायामुझे, मेरी चाहजो तेरे दिलमेंवसी। थातू कौन शहर मुझे देनी वता, क्या स्वयम्बरकी पहोंची खबरही नहीं ॥ ३ ॥ आवे इन्द्र नरेन्द्र जोमिलके सभी, क्या मजाल जो मेरा शीलहने। मेरे मनका सुमेरु हिलेगानहीं, मेरे मनमें किसीका डरही नहीं ॥ ४ ॥ चाहे चन्द्र गरम हो यदि सूर्यभी शीतल, समुद्र मर्यादा भंगकरे। अनहोनी जोवात हुवे जोकभी, तोमनमेरु हमारा हिलेगानहीं ॥ ५ ॥ तूंने सहस अठारा जो रानीवरी हाय उन्हपरभी तुझको सवरही नहीं। परतिरिया में तूं ने जो ध्यान किया, क्या निगोद नरक का खतर ही नही ॥ ६ ॥ हुआसोतो हुआ अवमानकहा, मुझे राम पेजल्दी से देतू पठा। कहे न्यामत वगरना देखेंगे यह, तोरे शरकी कसम तेरा शरही नहीं ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

बोली चलरे पातकी, क्यों करता बकवाद।
मैंनेजो पहीले कही, करले उसकूं याद॥
तू योद्धानहीं चौरहै अब, इसलिए तुझेधिक्कारतीहूं॥
तेरी सोनेकी लंकापर, नफरत की ठोकर मारतीहूं।
सच्ची सतवन्ती नारीका, सत् आसमान पर रहताहै॥
व्रत पतिव्रता क्षत्रियाणीका, हरवक्त प्रान पर रहताहै।

तूमुझे अकेली देखआज, सीनाजोरी दिखलाताहै ॥
पिंजरेमें फँसी सिंहनीको, नंगी तल्वार दिखाताहै।
तल्वार मुझे मेरे तनको, हरगिज भी काटनहीं सकती ॥
मेरा पवित्र और पाकलहूं, नापाक यह चाट नहीं सकती।
मैंवड़ी खुशीसे कहतीहूं, मुझपर तल्वार चलादे तू ॥
अहसान तेरा होगा मुझपर, जो दुःखसे मुझे छुडादेतू।
परयाद रहे वेरुसका खूं, रोवेगा तेरे दामन पर ॥
यह ही तल्वार लालहोकर, आयेगी तेरी गर्दनपर।
हसरत की निगाह है तारोंमें, और आसमान सब तकताहै।
मुझ वेगुनाह मुझ वेकसका, यह खून कहां छिपसकताहै ॥
सन सना रहीहै हवाजोयह, सोमेरलिए शहादतहै।
'दोझख की आग भभकतीहै, वह तेरेलिये कयामतहै ॥

ढाल मूलगी—

काया-ममता छोडीने, तजी जीवीतव्य आश।
शील समकित राखवाने, बैठी रे आगले तास ॥ रावण ॥४०॥
धीरज अवलम्बी करी, जाणी कर्म नो दोष।
सती लंक पति उपरे, नहीं आण्यो रंचक रोष ॥ रावण ॥४१॥
एह सांभली राय चिन्ते, राम सुं छे अतिप्यार।
हूं विपास करूं शुं बले! न मिले एहनो उतार ॥ रावण ॥४२॥
शक्ति ने हीना ढोरेरे, थले पंकज जेम।
माछलो तलफीमरे, जलने न उपजे प्रेम ॥ रावण ॥ ४३ ॥
जिन धर्म नो मर्म जाणी काम-अंधो होई।
एह अन्याय अधिक मझोटो, में कीधो छेरे सोई ॥रावण॥४४॥
अण जुक्तो में कियो, विभीषण नो बोल।
मान्यो नहीं मानने वस्य, मालं रे हार सम तोल ॥रावण॥४५॥

सेपक ढाल गज़ल लावणी—रामभुनि कृत

नहीं मान्यो विभीषण बोल हिये पिछतायो, मनी भणी दियो दुःख हाथ नहीं आयो ॥ भाई बेटा बंधाबाय घरे हूं आयो।

मुझ लगी कुमति की संग यूं ही भरमायो ॥ मैं कियो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो। नहीं मांन्यो ॥ १ ॥ लंका सो मुझ राज काज नहीं सुधर्यो, गुरु ज्ञानी का वचन जानत हूं विसर्यो ॥ निमित्तीक बोल अमोल जावे किमखाली, सह्व संपदा को खोय आपदा घाली ॥ आंख मींच होय अन्ध सती हर लायो ॥ सती हर० ॥ नहीं ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी वात हाथसे खोई, म्हां जैसो कोई नीच भयो नहीं कोई ॥ मण्डोदरी को स्वप्न साच दरसावे. इणपर रावण राय घणो पिछतावे ॥ शूर्पनखा मुझ बहिन मुझे भरमायो ॥ मुझे० ॥ नहीं ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

कर लडाई रामसे, कटे भटन के शीश।
लगा सोचने हृदय में, तब लंका के ईश ॥
भाई को वैरी करने का क्या फल है देख लिया में ने।
बदला मिलगया मुझे उसका, जो उसपर जुल्म किया में ने ॥
मैं भी कैसा मतवाला था, यों भाई को त्यागा मैंने।
भाई भाई ही था आखिर, क्यों भाई को त्यागा मैंने ॥
उसके मत पर में चलता तो. यश मिलता और भलाई थी।
हा ? मैंने उलटे उसके हो, दर्बार में लात लगाई थी ॥

ढाल मूलगी—

परधानें परगट पणे, हूं वार्यो बहुवार।
सो न मान्यो आज जाण्यो, मुखे पड़ी मुज छार ॥ रावण ॥४६॥
कुल कलंक्यो मैं आपणो, मैं काज न सार्यो कोय।
हाथ घसेजे शोच करे वे, न लहेरे वेला सोय ॥ रावण ॥ ४७॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—

कछू न विगर्यो हाल सीता जो सौंपूं ॥ सब सुधरे मनका काज झण्ड जश रोपूं ॥ घाल विमान के मांय सेना के बारे। सती जावे राम के पास हुवे जशसारे। रावण एम विमास सती संग आयो ॥ सती० ॥ नहीं मांन्यो ॥ ४ ॥ हे सीता ! चल

लार रामने देऊं। अब अश्लील वचन मुख मांय तुझे नहीं केऊं॥ इम कही सीता लेई गयो दिल गाढ़े, पिण शूर्पनखा तो वैर पूर्वलो काढे ॥ मुनि राम कहे संग नीच तणी दुःख दायो॥ तणी० ॥ नहीं ॥ ५ ॥

डाल मूलगी—

मन अपूठो वालीयो, माठी जाणी परनार ।
भोग थकी विरक्त थयो, पाछी देवा कियो विचार॥ रावण॥४८॥

डाल क्षेपक मूलगी—

भूप तब मनमें आलोची, वातमें एह करी पोची, आखिर में उमर है ओछी। काम अब करणो है ऐसो, जगतितल जश फैले जैसो ॥ सत्य० ॥ ९० ॥ लेई तब सीता ने चाले, कहो कुण होत मने टाले, शूर्पनखा रावण कूं पाले॥ बालकनो रूप धर्यो जाम, रुदन को शब्द करे ताम ॥ सत्य० ॥ ९१ ॥

दोहा क्षेपक

रावण आयो गिरिगुहा, देखे मांही बाल ।
क्यो रोवे आक्रन्द करे, कहीये थारो व्हाल॥

राम मुनि कृत क्षेपक डाल तर्ज किणमार्यो म्हारो मोर बताव पापी कि०

किम धार्यो बिन पोंछ मुझ प्यारारे किम धार्यो रे, तीन लोक अवलोक करीने मैंतो चरण ग्रह्या थांरारे ॥ ग्रह्यां थांरारे ॥ ग्रह्या० ॥ किम ॥ १ ॥
मोहमहि पतितात हमारो, मो मानभणी जाणेसारा जाणे ॥ २ ॥
मुझकुं रावण विरलाजगमें, मोय छोडसे जातेहै जगवारारे॥ ३॥

क्षेपक डाल तर्ज निहालदेरी—

मानी निर्मानी थयाजी कांई, शोभा नहीं गुलतान ।
पणी उनयों पछेजी, जीवन मत्यु समान ॥
॥ अवमानन छोडो महिपतीजी ॥ टेर ॥ १ ॥
अनम नमावन आपकोजी कांई, विरुध पड्यो राजान ।
आप पोने परने नमोजी कांई, हारी थयो हेरान ॥ अव ॥ २ ॥

मुझ लगी कुमति की संग यूं ही भरमायो ॥ मैं कियो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो। नहीं मान्यो ॥ १ ॥ लंका सो मुझ राज काज नहीं सुधर्यो, गुरु ज्ञानी का वचन जानत हूं विसर्यो ॥ निमित्तीक बोल अमोल जावे किमखाली, सह संपदा को खोय आपदा घाली ॥ आंख मींच होय अन्ध सती हर लायो ॥ मती हर० ॥ नहीं ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी बात हाथसे खोई, २॥ म्हां जैसो कोई नीच भयो नहीं कोई ॥ मण्डोदरी को स्वप्न साच दरसावे. इणपर रावण राय घणो पिछतावे ॥ शूर्पनखा मुझ बहिन मुझे भरमायो ॥ मुझे० ॥ नहीं ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

कर लडाई रामसे, कटे भटन के शीश ।
लगा सोचने हृदय में, तब लंका के ईश ॥
भाई को वैरी करने का क्या फल है देख लिया मैं ने ।
बदला मिलगया मुझे उसका, जो उसपर जुल्म किया मैं ने ॥
मैं भी कैसा मतवाला था, यों भाई को त्यागा मैंने ।
भाई भाई ही था आखिर, क्यों भाई को त्यागा मैंने ॥
उसके मत पर मैं चलता तो. यश मिलता और भलाई थी ।
हा ? मैंने उलटे उसके ही, दर्बार में लात लगाई थी ॥

ढाल मूलगी—

परधानें परगट पणे, हूं वार्यो बहुवार ।
सो न मान्यो आज जाण्यो. मुखे पड़ी मुज छार ॥ रावण ॥४६॥
कुल कलंक्यो मैं आपणो, मैं काज न सार्यो कोय ।
हाथ घसेजे शोच करे वे, न लहेर वेला सोय ॥ रावण ॥ ४७ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—

कछू न विगर्यो हाल सीता जो सौंपूं ॥ सब सुधरे मनका काज झण्ड जश रोपूं ॥ घाल विमान के मांय सेना के बारे। सती जावे राम के पास हुवे जशमारे। रावण एम विमास सती संग आयो ॥ सती० ॥ नहीं मान्यो ॥ ४ ॥ हे सीता ! चल

लार रामने देऊं। अब अश्लील वचन मुख मांय तुझे नहीं केऊं॥ इम कही सीता लेई गयो दिल गाढ़े, पिण शूर्पनखा तो वैर पूर्वलो काढे॥ मुनि राम कहे संग नीच तणी दुःख दायो॥ तणी० ॥ नहीं ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

मन अपूठो वालीयो, माठी जाणी परनार।
भोग थकी विरक्त थयो, पाछी देवा कियो विचार॥ रावण ॥४८॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूप तब मनमें आलोची, बातमें एह करी पोची, आखिर में उमर है ओछी। काम अब करणो है ऐसो, जगतितल जश फेले जैसो ॥ सत्य० ॥ ९० ॥ लेई तब सीता ने चाले, कहो कुण होत वने टाले, शूर्पनखा रावण कूं पाले॥ बालकनो रूप धर्यो जाम, रुदन को शब्द करे ताम ॥ सत्य० ॥ ९१ ॥

दोहा क्षेपक

रावण आयो गिरिगुहा, देखे मांही बाल।
क्यो रोवे आक्रन्द करे, कहीये थारो ह्वाल॥

राम मुनि कृत क्षेपक ढाल तर्ज किणमार्यो म्हारो मोर वताय पापी कि०

किम धार्यो विन पोंछ मुझे प्यारारे किम धार्यो रे, तीन लोक अवलोक करीने मेंतो चरण ग्रह्यां थांरारे ॥ ग्रह्यां थांरारे ॥ ग्रह्या० ॥ किम ॥ १ ॥
मोहमहि पतिनाम हमारो, मो माननणी जाणेसारा जाणे ॥ २ ॥
मुझकुं रावण विरलाजगमें, मोप छोंडिछे आतेहैं ज्ञमचारारे॥ ३॥

क्षेपक ढाल तर्ज निहालदेरी—

मानी निमानी थयाजी कांई, शोभा नहीं सुलतान।
पणी ऊनवों पछेजी, जीवन मन्यु समान॥
॥ अवमानन छोडो महिपतीजी ॥ टेर ॥ १ ॥
अनम नमावन आपकोजी कांई, विरुद पड्यो राजान।
आप पोने परने ननोनी कांई, हारी थयो हैरान ॥ अब ॥ २

पहिला ए कारज किमकियाजी कांई, पहूंच विना परतीय ।
आणी अनरथ कियाघणाजी, अव मतदो पाछी सीय ॥ अव ॥ ३ ॥
अव देतां ए योपिताजी कांई, शिर रहतां गयो नाक ।
नाक विना स्योंजीव वोजी कांई, दवमें वलियो ढाक ॥ अ ॥ ४ ॥
मानगयां महातम गयोजी कांई, विनमहातम जीवे सोय ।
दिवटथयां दीवातणोजी कांई, महिमा नकरे कोय ॥ अव ॥ ५ ॥
स्यों जीवचो हार्यां तणोंजी कांई, दिनमें चन्दा जेम ।
मूल नमाने महितलेजी कांई अगनी जैसे हेम ॥ अव ॥ ६ ॥
मान राखनो मानलोजी कांई मतद्यो पाछी सीत ।
'काने सुनसो सवमुखेजी कांई, रावन थयो फजीत ॥ अव ॥ ७ ॥
सम्वाहो वल आपणोजी कांई देखी नचूकोदाव ।
'थांने जीते जंगमेंजी कांई, ऐसो कुणछे राव ॥ अव ॥ ८ ॥
दिनफिरणे मनफिरेजी कांई, गाढो कियो मान ।
मुझ आगे एकवणछेजी कांई, जाने सकल जहान ॥ अव ॥ ९ ॥

क्षेपक सवैया—

परकी तीय आणीघरे सुन, राजन मानकरी दलवलजोरे ।
वीर भिडे नर राजजुडे रुनिशाण धरे, विद्याघन फोरे ॥
रामकी तेग विशेपभई अव हारिके, हासिल देतही लोरे ।
धिकहै नरनाथ निशाचर! टेकग्रही फिर टेककू छोरे ॥ १ ॥
अकज मित्रजेमूढ अकज सुतविनय विहीणो, अकज अंगविन नयण अकज महतो मतिहीणो । अकजमुनि जे अपढ अकजनिस नेही नारी, टेक विना नर अकज अकज गुण गोठ गिमारी ॥ अकज दास उद्यम विना. अकज कुलच्छन भूपना, कविगद कहे हो राय हर अकज कि हांने ऊपना ॥ २ ॥ कर्म प्रमाण नृप तीको सुत मोह महिपति को पुत्र मांन मुझे, मेरी जगमें वडाई है । स्वर्ग लोक इन्द्र तिके मानत हमारी मोज, शुभ्र लोक दानव करे देवों सूं लड़ाई है । मृत्यु लोक मांहि कोई नहीं देख्यो आपसो,

ढूंढी सब ठौर मैंतो याही ठौर पाई है। अबमो बतावो ठौर ताकी लागूं पीठ दौर मानकी तजत मरोर कोडी जातकूं लजाई है ३॥
मान खोयो इन्द्र ज्यों ने दियो तुम्है काठ मांही, मान खोयो धनद जिनेन्द्र व्रत धारी है। मान खोयो वाली जिन्है चिऊं दिशि तुम्हे फेर्यो, फरके तपस्वाभये वडे ब्रह्म चारीहै।
मानहार्यो चन्द्र सूर्य करत प्रकाश रसवती, मानहारी दुर्गा जिणे आरती उतारीहै। मृत्यु लोकमांही मुझे आप एक खरो धार्यो आजहु विसार्यो ताते लानत धिकारीहै ॥ ४॥

क्षेपक कुण्डलिया—

मत रोवे मुझ तन बसे मही न देमूं सीन, मान मिटावे माहरो एह कहां की रीत–एह कहां को रीत, ले सीया निज घर आयो, बैठी रहे निश्चिन्त मान बल बध्यो सवायो। छूटे पुत्र ने बंधवा एहवो करूं उपाय, करिये तो सघला घरां सहु आवे सुखदाय ॥१।

क्षेपक ढाल मूलगी—

वचन सुन रावन महाराजा, धिक् ए चिन्तवीयो काजा, मानगयां मृत्यु का साजा। सीता ने पाछी ले आवे, मूलगे थानक बिठवावे ॥ सत्य० ॥ ९२ ॥

ढाल मूलगी–

आज देवी नविवने, लोकोंमां अपवाद।
हारी दीधी एम सहु कहसे, मिटियो नृप उन्माद ॥रावण ॥४९॥
सीता ने तो कारणे, मैं कीधो संग्राम।
काजन सीधो अपजश लीधो, लोक में कीधो कुनाम ॥रावण ॥५०॥
राम लक्ष्मण इहां आणी, मान मखलो मारि।
धर्म नो जश बोल रावण, देवुं अछूती नारी ॥ रावण ॥ ५१ ॥
अजश अधोगति बंध थी मानि, भय्यो न ऊपजे कोई।
विवेक सघलो वीसरी, गति तेहवी मति होई ॥ रावण ॥ ५२ ॥
रात विषे नृप चिन्तवे, कब होवे पर भात ।

राम लक्ष्मण जीतीने, पाछी आपूं हाथ ॥ रावण ॥ ५३ ॥
एम चिन्तववां चित्त सूं, गई रात विहाय।
प्रातः प्रभुजी सुणी वार्ता, खेतज रे मांडयो आय ॥रावण ॥५४॥
युद्ध सजीने जीपवा, चालण लाग्यो राय।
दर्पण मुख नवि देखीयो, राणी वारे मत जाय ॥ रावण ॥५५॥

क्षेपक ढाल तर्ज नेमकी जानवनी भारी—

रावण कूं समझावत रानी, सीख नहीं मानत अभिमानी—
रामकी नारी ले आयो, करूंगो मेरे दिलचायो ॥
नारि वा कह्यो नहीं माने, वात दोई आपरी तांने।
रामका पुण्य है भारी, दशा घर नहीं है प्रभु थांरी ॥
दोहा—आयो राम महाबली, लंका लीधी घेर।
वानर गर्जे अतिघणास यह, अबतो कन्था हेर ॥
फेर नहीं वात बने आनी ॥ रावण कूं ॥ १ ॥
रम्भासी रानी है थांरे, सुरा सुर फिरत है लारे।
सबी को कहन ही कीजे, सीता ने पाछी ही दीजे।
जीव अरु राज ही रेवे, लोक सहु धन्य धन्य केवे ॥
पीयातूं दिलमें नहीं सोचे. वखत ने क्योंनहीं आलोचे।
दोहा- घर फूटो महाराजजी' नहीं कोई तुमचो सेण ॥
गई वखत फिर नावहीसरे, मान हमारो केण।
चैन यह आखिरकोजानी ॥ रावन ॥ २ ॥
रावण कहे मन्दोदरी सेती, नारीकी तुच्छ बुद्धि एती ॥
विद्या बहु रूपिनी साधी, हमारी शक्ति बहु वाधी।
राम रु लिछमन ने मारू, वंछित मुझकाज ही सारू ॥
दोहा- लाऊं सबछोडाय ने मारूं, वानर राय।
सीतासूं सुखभोगवूसरे, जब हम तुम सुखथाय।
वाय कहूं प्रगट नहींछांनी, ॥ रावन ॥ ३ ॥
दोहा-- हठी हठसे नाहटे, मूके नहीं निजमान।
समर करनने सज्जथयो, करझाली करपान ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

हाथथी खडग पड्यो, मान रह्यो कर सोय ।
चालन्तां शिरमुकट पड्यो, शकुन अशुद्धज होय ॥ रावण ॥ ५६ ॥
विनाश काले आसनू, आवियोंथी कुचयन ।
देखी मंत्री बहु वारे, राय न माने कयण ॥ रावण ५७ ॥
चालियो अडम्बर घणुं, मत्सर धरन्तो आप ।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप ॥ रावण ॥ ५८ ॥
राक्षस अति आनन्दीया, शूरो देखी ईश ।
आडम्बर अति आकरो. जीतसे विश्वा वीश ॥ रावण ॥ ५९ ॥

क्षेपक छन्द त्रिभगी—

रावनकी फोजां वधती मोजां, चलती दरोजां कंकाली ।
गयवर गाजन्ता तूरवजन्ता, शूर लजन्ता तव चाली ॥
हयवर हणणाटां वहतां घाटां, खुरां संघाटां भूहाली ।
रथ चणणाटां घणण घणाटां, तूटेचटां मतवाली ॥ १ ॥
राक्षस वलवन्ता जोर वहन्ता, मूछ गजन्ता तिहां आवे ।
वाजित्र वजन्ता पीसे दन्ता, केई हसन्ता विनभावे ॥
मुद्गर उछरन्ता हाक करन्ता, होई भय भ्रांता केई गावे ।
माने मदमन्ता होयकर तत्ता. माने गत्ता धूनावे ॥ २ ॥
मानी मछराला रणे रसाला, पेट भूधाला मतवाला ।
सिन्दूर सुण्डाला हाथीकाला, जवने वाला झूंझाला ॥
वकतर गाला पडे हलाला, निरुप नराला मछराला ।
क्रोधे करकाला लंकावाला. दानवसाग केई पाला ॥ ३ ॥
आपसमें दोडे होड़ा होड़े,मूछ मरोड़े वलगाले ।
कमनाहु तोडे खरासजोरं. लम्बे घोडे नरी चाले ।
वानरजा दोडे खालीघोटे. गोडा फोडे फिर चाले ॥
भूचर भखभोरं शीन वहोरं, एढतं तोरे हुनपाले ॥ ४ ॥
राक्षस गण देखीमान विशेषी. परनी सखी नहिआयो ।
रणभूमि धसेनी लानांदखी. कपिविशेषो सरपायो ॥

वानर चढेसी आज्ञालेसी, रामनरेशी मनभायो ।
लक्ष्मन शुभकेशी पीत सुवेशी, फतेकरेसी माजायो ॥ ५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावन कहे सुभटांप्रति, हृदय करो बलवांन ।
युद्ध स्थलमेंदो मचा, जाकरके घमसान ॥
तेगे परशे तोमर मुद्गर, शर धन्वा भाले ले लोतुम ।
अस्त्रों शस्त्रों से सज्जितहो, रणमें आगे बढ खोलो तुम ॥
मैंभी चलताहूं साथ साथ, धावा आंधीसा करनाहै ।
या विजयी होकर जीनाहै, या वीर भूमि पे मरनाहै ।
इस प्रकार सजकरचला, निशिचर कटक विशाल ॥
पृथ्वि थर्रानेलगी, दहलगए दिगपाल ।
आंधीऔर बादलके समा, उठ उठ कर बढता जाताथा ॥
निशिसी करदो निशिचर दलने, दिनमें दिनकरन दिखाताथा ।
रावण दल साथमें रावणके, जब रामादलमें जापहूंचा ॥
तोजय कोशनाधीश की कहकर, कपि कटक मुकाबिल आपहूंचा ॥
यह कोपा हुआ कटक क्षणमें खलभलकर, खलदल दलने लगा ।
रावण की आंखांके आगे, रावण दल पीछे चलनेलगा ॥
निजदल पीछे भागता, देखाजब दशभाल ।
तब तेवर तिरछेतने, तीर तके ततूकाल ॥
तीखे तीरोंने किया, जातेही यह काम ।
काईसा फटने लगा, वानर कटक तमाम ॥
देखीजब सौमित्रीने, त्रस्त हुई कपि सैन ।
तभी अरुण मार्तण्डके, तुल्य होगये नैन ॥

ढाल मूलगी—

चाली रणमुख आवीयो, जीति करवाहेत ।
केशरी नीपरे गाजतो, पुण्य बीत्यो चित्त न देत ॥रावण ॥६०॥
ताम नरपति आप भाखे, कियां नृपति चोर ।
राम लक्ष्मण रक्षा करन्त, आवि देखूं बलजार ॥रावण॥ ६१ ॥

ताम सन्मुख होई भाखे, सुमित्रानो नन्द ।
आत्र लंकपति गर्व तजी मुख, आंपा लड़स्यूं आनन्द ॥ रावण ॥६२॥

क्षेपक राधेश्याम

सन्मुख लक्ष्मण को निरख, रावण कहे कर नाद ।
अरे ! आज फिर आगया ! रहीन पिछली याद ॥
उसवार भाग्य ने बचादिया, इसवार बचने न पायेगा ।
पहले मूर्च्छा ही आई थी, पर अबके प्राण गंवायेगा ॥
मैं वह सागर हूं चढ़ा अगर तो प्रलय–काल दिखलायेगा ।
वह ज्वाला मुखी शैल हूं मैं, फूटा तो जग जल जायेगा ॥
लक्ष्मण बोले 'गर्वयह', यह घमण्ड दे त्याग ।
मैं मैं का अच्छा नहीं, होता ज्यादा राग ॥
है वही शक्ति शाली जगमें, जो नम्रभाव दिखलाता है ।
फलवाला जब तरु फलता है, नीचे को झुकता जाता है ॥
मैंना जो मैं–मैं कहती है, वह सबके मनको भाती है ।
बकरी जो मैं, मैं, कहती है वह गले छूरी फिरवाती है ॥
बात काट कर बीच में, बोला रावण राय ।
बच्चे ! यह रणभूमि है, राज–प्रासाद है नांय ।
साहस और स्वाभिमान हीतो, रणवीरों का आभूषण है ।
नाहर सा गर्जन तर्जन ही, सच्चे योद्धा के लक्षण है ॥
मैंना जो मैं–ना कहती है, पिंजरे में जन्म बिताती है ।
बकरी गर्दन कटवाती है, लेकिन मैं कभी न जाती है ॥
जाती है बोले लखण, उसकी भी यह टेक ।
मैं बालीके लियेभी, आताहै दिन एक ॥
हड्डी और मांस अलगहटाकर, जब आंत निकाली जातीहै ।
उस आंतकी औजारों सेफिर, जब तांत बनाली जातीहै ॥
वह तांत किसी धुनकोयाके, हाथोंमें निस दिन जातीहै ।
धुनियां जब रूई धुनताहै, तब तुंही तुंही गातीहै॥

वचन युद्ध किया प्रबल, दोनों युक्तिके जान ।
उत दशशिर इतहै लखण, छोडे निजस्थान ॥

ढाल मूलगी—

युद्ध मण्यो राम रावण, लड़े सुभट अपार ।
बाण लक्ष्मण तणा बरसे, जाणे वर्षे जल धार ॥ रावण ॥ ६३ ॥

छेदक छन्द त्रिभंगी--

वानर अतिसोसे, भरियारोसे, होट मसोसे चलिआया ।
सुग्रीव भरोसे सबसन्तोषे, भरियाजोसे वरदाया ॥
राक्षसने खोसे शतीसदोपे, लंक मसोसे रे भया ।
स्वामीने तोपे सदानिदोपे, रावन खोसे रघुजाया ॥ ६ ॥
वानर डेमण्डी वडा उमण्डी, रणना चण्डी आफरिया ।
शिर शिला प्रचण्डी राक्षस खण्डी, मारे अफण्डी लातरिया ॥
गुरजां झुण्डो मण्डो घणाघमण्डी, देखे चण्डी पाखरीया ।
एहवो पाखण्डी करदेमण्डी, देदे छण्डी परतिरिया ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

अस्त्र शस्त्र लडवेकरी, हूंसन राखी कोई ।
लंकपति सो रामानुज, विविध परे झूंझाणादोई ॥ रावण ॥ ६४ ॥
देखीबल लक्ष्मण तणोरे, शंकियो भूपाल ।
विद्या तब बहूरूपणी, समरे नृप तत् काल ॥ रावण ॥ ६५ ॥
विद्या आई अति ऊमाई, मांगे ए आदेश ।
हुक्म चाहूं स्वामी थारो, करूं कारज अशेष ॥ रावण ॥ ६६ ॥
ताम नृपति देई आदर, विद्या ने भाखन्त ।
एह अवसर विद्या थारो, कारज करी दाखन्त ॥ रावण० ॥ ६७ ॥
राय रावण करे आपण, रूपनो विस्तार ।
भूमी गगने पूठिपासे, दीसे, रौद्र अकार ॥ रावण ॥ ६८ ॥
देखी रावण रूप अधिका, सुग्रीवादिक भूर ।
शौच ऊपनो अधिक मनमें, रायदीसे पाणीनू पूर ॥ रावण ॥ ६९ ॥
ताम लक्ष्मण अधिक बलियो, गरुडनो असवार ।
जेमनट्टुओ फिरे नाचत, रावण केरीरे लार ॥ रावण ॥ ७० ॥

क्षेपक त्रिभंगी-

लक्ष्मन शरवाहे वडे ऊमाहे, चित्तने चाहे रोषभरी।
सणणणखुसावे साम्हांजा, भ्रणगमावे चोट करी॥
रावण मनमांहे रोषभराहे, वाणहे जोर करी।
मनमें उच्छाहे कपिदलडाहे, भरता आहे प्राणहरी॥

ढाल मूलगी—

अरुणा वर्तज धनुष्य लीधो, वज्रमुखो तेवाण।
रावणने सन्मुख आवे, लक्ष्मण शूरां रो सुलतान॥ रावण॥७१॥
एक बाणेरे सो गुणोधावे, सोमांहीथी सहश्र।
सहश्रथी लखक्रोड प्रगटे, पुण्य प्रभावे अस्त्र॥ रावण॥ ७२॥

ॐ क्षेपक राधेश्याम ॐ

प्रथिवीपर पड़नेलगे कट कट कट वज्रवान।
मुर्दोंकी वस्तीवना, लंका का मैदान॥
रघुकुल नायक केवाणों, रघुकुल कीशान दिखाहीदी।
उसप्रलय कालके धन्वाने, रणमें एक प्रलय मचाहीदी॥
जोवाण धनुष्यसे चलताथा, उससे लाखोंवन जातेथे।
इसतरह लक्ष्मणके कालवाण, लाखों को क्षणमें खातेथे॥
ज्यों आतिशबाजीका अंगार, लाखोंचिन गारियों काघरहै।
त्यों लक्ष्मणका एक वाण, अगणित वाणोंका सागरहै॥
विज्ञानकी पदवी ऊंचीहै, विज्ञान वेत्ता जानतेहैं।
जोवात असम्भवहो उसको, विज्ञानी सम्भव मानतेहैं॥
अवभी नित नये नयेदेखो, करताहै आविष्कार जगत।
परउस त्रेतावाले युगमेंथा, वैज्ञानिक भण्डार जगत॥
इतनाहीं कि एकतीर, लाखों शरीर धर आताथा।
सुनते तो यह हैं एक तीर लाखों शरीर पर आता था॥
थी यह उन्नत विज्ञान-कला, मन्त्रों की शक्ति थी यह।
जो भी हो प्रभु के वाणों में, ताकत थी यह खूबी थी यह॥
इस प्रकार को दण्ड से, शर जब चले अखण्ड।
युद्ध भूमि में रक्त की, सरिता बहि प्रचण्ड॥
मानों दोनों मदमाते दल, सरिता के तट दिखलाते हैं।

गज अश्व सिपाही–मरे हुए, जल जन्तु समान सुहाते हैं॥
पड–रहे भंवर थे पहियों के तैरेथे, कछु ए ढालों के।
पत्ते थे टुकड़े खालों के, छाये सिंवार थे बालों के॥
मे दसके झाग दीखते थे, लहरें थी टूटे तीरों की।
ढायें गिरती थी आर पार, कट कट कर मृत शरीरों की॥
बढ बढ लड़ते थे मुख्य सुभट, क्षण भरभी नहीं बैठते थे।
वे मानों रणकी सरितामें, अच्छे तैराक तैरते थे॥

असुरों का होने लगा, जब ज्यादा संहार।
तब तो मानों मृत्यु का, गर्म हुआ बाजार॥
लाशों पर लाशें पटीं, रण बनगया मसान।
दृश्य भयंकर होगया, लंका के दरम्यान॥

गीधों के झुण्ड 'गोठ' करने, लाशों के पास जुड रहे थे।
काकों के वृन्द चोंच फैला मुर्दों के निकट उडरहे थे॥
श्वानोंकी टुकडी चीरफाड मृतकोंके थकड़े करतीथी।
मज्जा अस्थियोंके हिस्सेपर, आपुसमें झगड़े करतीथी॥
वैतालियोंका तीर्थबना, संग्राम भूमिका दरियावह।
प्रेतनियोंका पकवान हुआ, मुरदार मांस और मज्जावह॥
योगनियों उसविरियां आकर, खप्पर को खूब सजातीथो।
चामुण्डाकेलिये खोपरियोंको, उनकी करताल बजातीथी॥

इस प्रकारसेही हुआ, घोर घना संग्राम।
लखण बाणसे रावण विद्या, आहत हुई तमाम॥

ढाल मूलगी—

जिहां देखे तिहां मारे, बाणसूं ते रूप।
एहि बन्ध कुबन्ध हुओ, चक्रज समेरे भूप॥ रावण॥ ७२॥

क्षेपक ढल मूलगी—

लक्ष्मण यह कितराहो मारे, रावण तब जोयोहै लारे अदश्येहो विद्यागई त्यारे। रावण जबहुवो बलहीनो, चक्रने याद करलीनो॥ सत्य॥ ९३॥

नाम सुदर्शन तेहनूं, आयुधनूं शिरदार ।
आयुद्ध शालाथी नीकली, राय पासे आवे तिणवार ॥रावण ॥७४॥
धसि आयो मन सुहायो, फेरवे ते चक्र ।
हरी लीयो अतिहोड़ मारे, न लिखेरे वेला चक्र ॥रावण ॥७५॥
चक्र लेई फेरियो रे मेलियो तिणवार ।
आकाश मार्गे चालीयो, आयो लक्ष्मणनी लार ॥ रावण ॥ ७६ ॥
राम सुभट कपि अति, चक्र आवन्तो देख ।
शोर मचियो कटके अधिको, शूं कीजे उपकर्म विशेष ॥रावण॥७७॥
आवीया प्रदिक्षिणा देई, वासु१देव विनाण ।
तेजे करी रविसारिसो, बैठोरे दक्षिण पाण२ ॥ रावण ७८॥
राय चिन्तवे वचन मुनिनो, साचही देखाय ।
भाई मंत्री कथन जेतां, ते सहुरे आज मिलाय ॥ रावण ॥७९॥
लक्ष्मण भाखे चक्र बांधव, अवसर तुम परिवार ।
वश्य थया सहु महागरे, राय ज्युंरे अवर उपचार ॥ रावण ॥८०॥
राम भाखे लंक पतिसूं, नहीं चक्रसूं काज ।
आपो सीता जाऊं पाछो, करो तुम्हे सुखे राज ॥ रावण ॥ ८१ ॥
देखी आरतिमांही बंधव, विभीषण बोलन्त ।
आप सीता राखी जीववूं, मेलि ओ तन्तो तन्त ॥ रावण ॥८२॥

धूलचंदजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज काना प्रीत लागीहो ।

लंका सरिसी सायबी, समुद्रसी खाई हो ।
एतो सुखने छोडने, मत जावो भाई हो ॥
बन्धव ! बोलमांनो हो ॥ टेर ॥ १ ॥
आंत नपीजे आगरी, कालेजो फलकेहो ।
अरजी छेली मागरी, नेणां जल ढलकेहो ॥ बन्धव ॥२॥

राम मुनि कृत क्षेपक ढाल तर्ज भजो सच्चो गुरु रेजन करीये ।

विभीषण की बात सुनीजे, मतलब नहीं छे आनेकी ।
सीतादीजे ढील न कीजे, बात नहीं छे छानेकी ॥ वि० ॥१॥

१ लक्ष्मण । २ हाथ ।

शक्तिगई गई सबविद्या, सुत बन्धु बन्ध बानेकी।
पैंच नहीं भई सब जग केसी, म्हेणी देसी नृप रानेकी ॥वि० ॥२॥
राज्य धानी सब रानी हारी, नहीं मानी कोई दानेकी।
चक्र गयो तुझ दुस्मन हाथे, वखत आई जिय जानेकी ॥वि० ॥३॥
वार २ यह अरजी साहिब, किम रहे वस्तु बिराने की।
सीता सूपूं बलिसब रखूं, दो आज्ञा पहूंचाने की ॥ वि० ॥४॥
हूं चाकर तू ठाकुर मेरो. मोझ करो लंक थाने की।
श्री रघुवरजी नेक कहत है, वखत नहीं बहु तानेकी ॥ वि० ॥५॥
गुन्हमाफ कियो सबतांने, मन चूको अवमाने की।
लक्ष्मन भाखे ओछन राखे, राम कहै परमाने की ॥ वि० ॥६॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

रावन कहै भोले क्यूं भूले, दीसे है थारो स्यूं सूने, उखारूं सब को जरामूले। जठे तठे आडो तूंही आवे, क नकटा लाज नहीं लावे ॥ सत्य० ॥ ९४ ॥

ढाल मूलगी—

कोपीने तब कहे रावण, कहो किस्यो कहाव।
चक्र लक्ष्मण ने मारूं, मेली मुष्ठिनो घाव ॥ रावण ॥ ८३ ॥
एमकहतां राय लक्ष्मण, ऊपन्यो अतिरोप।
फेंकियो तब रावण ऊपर, चक्र सुदर्शन घोप ॥रावण ॥ ८४॥

स्वा० नेमीचदजी कृत क्षेपक तर्ज खड़को—

लक्ष्मण कलकल्यो, कोपमे पर जल्यो कड कड़ी भीड ने चक्र बावे। आकाशे भमावीयो सन नन चलावीयो, जारे वैरीनो शीश छेद लावे। हरि को पावीयो चक्र-चलावीयो ॥ टेर ॥ १ ॥
रघु-सेना में जावतो, सुख वरतावतो, रत्न-सुवर्ण ने पुष्प जुई। महीमावस्तर तणी केसर सुगन्ध घणी, ए पंच प्रकारनी वृष्ठि हुई ॥ ह०॥ २ ॥ राक्षस सेना मेंही चक्र आयो वही, तामघोर तो अन्ध कार हुवो। बावल विहामणी महा डरावणी, खार थकी अधिकोरे धूंवो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वर्षा हुई अगन पत्थर तणी, धूल

कांकर ने फूस कांटो। रंज उठीजती आंख बूरीजती उल्का-पातने शाल कांटो ॥ ह० ॥४॥ हड़ड़ड़ ताम हड़ड़ाट हुवो घणो, सड़ड़ड़ सो अगन रा बाण छूटे। धड़ड़ड़ धरती सहु धूजे घणी, तड़ड़ड़ करती नाड़तूटे ॥ ह० ॥ ५ ॥ झणणण ताम झणणाट हुवो घणो, घणणणजिम मृग राज गाजे। फणणण जेम फुंकार करत है अति, सणणण चक्र नो शब्द वाजे ॥ ह० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

आवन्तां चक्र देखीयो तब, वीर रस भूपाल।
चक्र मुष्ठि प्रहार दीधो, एहधीरे बहु विशाल ॥ रावण ॥ ८५ ॥
वेहूं ने वे हाथे हणतां, हूआं वेनो चार।
पुण्य विना रायजी ए, नहीं कर्यो कांई विचार ॥ रावण ॥ ८६ ॥
चक्रमांहिथी चक्र निकलो, मस्तक छेद्योताम।
जेठ कृष्णा एकादशी, दिवसे पश्चिम जाम ॥ रावण ॥ ८७ ॥
महन चतुर्दश आयु भोगवी, अशुभ कर्म उपाय।
ठामे चौथे जई ऊपन्यो किधांना फलपाय ॥ रावण ॥ ८८ ॥
कुसुम केरी वृष्टि हुई, देव दीवे आशीष।
जगत में जयकार अधिको, जीवो कोडी वरीश ॥ रावण ॥ ८९ ॥
ढाल पट् चालीशमीरे, जीतिया श्री राम।
केशराज मुनीन्द्र भाखे, मनवांछित काम ॥ रावण ॥ ९० ॥

ढाल सेवक मूलगी—

अष्टम यह 'वासु' 'बल' देव जानो, त्रिखण्डा धिप ही पहिचानो, मानजो सबला ही आनो। हरि प्रति हरि ने तो मारे, यों शास्त्र पूकारे ॥ सन्त० ॥ ९५ ॥

[illegible]—

राक्षस नासे दस दिशे, भय आणी मनमांय।
[illegible] दिवे [illegible] नाशनां, [illegible] साय ॥ १ ॥
जाति पतीजे [illegible], [illegible] विश्वास।
[illegible] [illegible] पान

शक्तिगई गई सबविद्या, सुत बन्धु बन्ध घानेकी।
पांच नहीं भई सब जग केसी, म्हेणी देसी नृप रानेकी ॥वि० ॥२॥
राज्य धानी सब रानी हारी, नहीं मानी कोई दानेकी।
चक्र गयो तुझ दुस्मन हाथे, वखत आई जिय जानेकी ॥वि० ॥३॥
वार २ यह अरजी साहिब, किम रहे वस्तु विराने की।
सीता सूपूं बलिसब रखूं, दो आज्ञा पहूंचाने की ॥ वि० ॥४॥
हूं चाकर तू ठाकुर मेरो. मोझ करो लंक थाने की।
श्री रघुवरजी नेक कहत है, वखत नहीं बहु तानेकी ॥ वि० ॥५॥
गुन्हमाफ कियो सबतांने, मत चूको अवमाने की।
लक्ष्मन भाखे ओछन राखे, राम कहै परमाने की ॥ वि० ॥६॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

रावन कहै भोले क्यूं भूले, दीसे है थारो स्यूं सूने, उखारूं सब को जरामूले। जठे तठे आडो तूंही आवे, क नकटा लाज नहीं लावे ॥ सत्य० ॥ ९४ ॥

ढाल मूलगी—

कोपीने तब कहे रावण, कहो किस्यो कहाव।
चक्र लक्ष्मण ने मारूं, मेली मुष्ठिनो घाव ॥ रावण ॥ ८३ ॥
एमकहतां राय लक्ष्मण, ऊपन्यो अतिरोप।
फेंकियो तब रावण ऊपर, चक्र सुदर्शन घोप ॥रावण ॥ ८४ ॥

स्वा० नेमीचदजी कृत क्षेपक तर्ज खड़को—

लक्ष्मण कलकल्यो, कोपमें पर जल्यो कड कड़ी भीड ने चक्र वावे। आकाशे भमावीयो सन नन चलावीयो, जारे वैरीनो शीश छेद लावे। हरि को पावीयो चक्र-चलावीयो ॥ टेर ॥ १ ॥ रघु-सेना में जावतो, सुख वरतावतो. रत्न-सुवर्ण ने पुष्प जुई। महीमावस्तर तणी केसर सुगन्ध घणी, ए पंच प्रकारनी वृष्टि हुई ॥ ह०॥ २ ॥ राक्षस सेना मेंही चक्र आयो वही, तामघोर तो अन्ध कार हुवो। बावल विहामणी महा डरावणी, खार थकी अधिकोरे धूंवो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वर्षा हुई अगन पत्थर तणी, धूल

कांकर ने फूंस कांटो। रंज उठीजती आंख चूरीजती उल्का-
पातने शाल कांटो ॥ ह० ॥४॥ हड्डड़ ताम हड्डाट हुवो घणो,
सड्ड़ड़ सो अगन रा बाण छूटे। धड्डड़ धरती सहु धूजे घणी,
तड्डड़ करती नाड़तूटे ॥ ह० ॥ ५ ॥ झणणण ताम झणणाट
हुवो घणो, घणणणजिम मृग राज गाजे। फणणण जेम फुंकार
करत है अति, सणणण चक्र नो शब्द बाजे ॥ ह० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

आवन्तां चक्र देखीयो तब, वीर रस भूपाल।
चक्र मुष्टि प्रहार दीधो, एहथारे बहु विशाल ॥ रावण ॥ ८५ ॥
बेहूं ने बे हाथे हणतां, हूआं बेनो चार।
पुण्य विना रायजी ए, नहीं कर्यो कांई विचार ॥ रावण ॥ ८६ ॥
चक्रमांहिथी चक्र निकलो, मस्तक छेदयोताम।
जेठ कृष्णा एकादशी, दिवसे पश्चिम जाम ॥ रावण ॥ ८७ ॥
सहम चतुर्दश आयु भोगवी, अशुभ कर्म उपाय।
ठामे चौथे जई ऊपन्यो किधांना फलपाय ॥ रावण ॥ ८८ ॥
कुसुम केरी वृष्टि हुई, देव दीये आशीष।
जगत में जयकार अधिको, जीवो कोडी बरीश ॥ रावण ॥ ८९ ॥
ढाल पट् चालीशमीरे, जीतिया श्री राम।
केशराज मुनीन्द्र भाखे, सर्या वंछित काम ॥ रावण ॥ ९० ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अष्टम यह 'वासु' 'बल' देव जानो, त्रिखण्डा धिप ही पहिचानो,
मानजो सघला ही आनो। हरि प्रति हरि ने तो मारे, वात या
शास्त्र पूकारे ॥ सत्य० ॥ ९५ ॥

दोहा सार राम—

राक्षस नासे दश दिशे, भय आणी मनमाय।
धीरे दिये छे राक्षसां, नृप विभीषण साय ॥ १ ॥
जाति पतीजे जानिने, जाति तणो विश्वास।
आवि मिलिया एकठा, राम विभीषण पास ॥ २ ॥

आयां प्रभुजी पाखती, प्रणमें प्रभुनापाय।
दीलासो दोधोघणो, स्वमुख रावन राय॥ ३॥
रावण पड़ियो देखनें, विभीशण तिणवार।
मूर्छाए धरणी ढल्यो, नरही शुद्ध लगार।

क्षेपक ढाल तर्ज धूसारी—

मुख बोलोनी बन्धव! अभिमानी॥ टेर॥
किम सूता रणभौमि विचमें, कहां गईतेरी ठकुरानी॥ मुख॥ १॥
वीरहोय खण्डत्रय जीता, तोआज्ञा चलाई मनमानी॥ मुख॥ २॥
व्यताकोभय नहीं मनआण्यो, जनकसुता लेघर आनी॥ ३॥
निश्चय भावटरे नहींटारी, तो एह सदा केवल वानी॥ मुख॥ ४॥
मैं म्हारो ओलम्भो टार्यो, कहीं नहीं कोई हो अगवानी॥ ५॥
परतीय खातिर प्रणगंवाया, जबर हठी बनकरी हानी॥ मुख॥ ६॥
हेबन्धव तूंमुझसे रूठो, नही बोलेतोकर शानी॥ मुख॥ ७॥

क्षेपक राधेश्याम—

जबहोसहु आंतो विल्लाया यहमैंने क्या करवायाहै।
हा! भाई होकर भाईका, रणमें संहार करायाहै।
वहबड़ा भ्रातथा डरक्याथा, जोउसने लात लगाईथी॥
पर मैंने इतने परही हा! उससेली ठान लड़ाईथी।
अपमान लातसे जब समझा, तबकहां धीरता रहीमेरी॥
सज्जनता शान्ति शील छोडातो, कब गम्भीरता रहीमेरी।
मैंतुच्छ संकुचित चित्तकाथा, यहगलती हुई मुझीसेथी॥
भाईथा बडासभी गुणमे, लंकाकी शान उसीसेथी।

दोहा मूलगा—

विभीषण निज भाईनो. शोक करे अतिस्वाम।
पेटेछूरी मारतां. हाथ ग्रह्या श्री राम॥ ४॥
मन्दोदरी आदिसहु, शोक करन्ती नार।
रावण प्रियने रोवती, झूरेमनही मझार॥ ५॥

क्षेपक ढाल तर्ज—हो पियु पंखीड़ा—

होपिउ अभिमानी नहींमांन्यो मुझबोलजो, दाखीरे मैंभाखीवात

थांने घणीरेलो ॥टेर॥ होपिउ अभीमानी नहींदाखी दिलखोलजो आणीरे घरराणी तिणदिन रघुवर तणीरेलो ॥ १ ॥ होपिउ अभिमानी कहांरही रामातेहजो, राज ऋद्धि त्यागी परभवथे गयारेलो । हो पिउ अभिमानी कहांरयो तुझनेहजो, क्षणमांही तो परवश प्रभुजी तुमथ पारेलो ॥ २ ॥

होपिउ अभिमानी क्यों पोढ्या रणभूमिजो, तुम विनरे अकुलावे जियड़ो मायरोरेलो होपिउ अभिमानी नहीं छोड्यो मानने तुमजो निजकृत कमाई संगासिधाई थायरेरोलो ॥ ३ ॥ होपिउ अभिमानी इसकेतीदेती ओलम्भजो, इसकेती देती ओलम्भजो रोतीरे मूर्च्छा ती भामन अति दुःख कररेलो ॥

क्षेपक राधेश्याम—

इनपरही मन्दोदरी, मुखसे करती हाय ।
पतिप्यारे की लाशपे, गिरी पछाड़े खाय ॥

आंखे पसारकर दुःखियाने प्राणेश्वरके तनको देखा ।
लोहुसे लथपथ छिन्न भिन्न अपने जीवन धनकोदेखा ॥
चिल्लाईहाय सुहाग गया, शृंगार गया साम्राज्य गया ।
घरके राजाके साथ साथ, घरकी रानी का राज्य गया ॥

ईस प्रकार घण्टों तलक, रोई दुःखिया नार ।
चुडिऐ तोडो हाथकी, बिछुए दिये उतार ॥

जोशब्दथे उसटूटे दिलके, वह लिखनेमें तेही नहीं ।
उस दुखियामनके पछतावे, सम्पूर्ण कहे जानेही नहीं ॥
आंसु ओंकी इतनी धारबही, सारा शरीर आंसु भरगया ।
एक नया समुद्र नहोजाए, लंकामें बस यहही भयथ ॥

प्रभुने मन्दोदरीकी, दशा निहारी दीन ।
उधर विभीषण भूपको, देखा निपट मलीन ॥

रहन शके आगे बडे, दिए बहुत उपदेश ।
दने वियोगी मनोंने, तब वियोगके क्लेश ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

वीर ए शूरपणे मूओ रावन सम राय नहीं हूओ, जगत अखियात एहु ओ। आस्वासन प्रभुजी दिलवावे, करोमत शोच समझावे। सत्य०९६।

दोहा मूलगा—

रामकरे समझावणी, कां रोवो सहु कोय ।
रावण रायां रावथो, अमरां अधिको जोय ॥ ६ ॥
वीर वृत्ति मांही मूओ, न मूओ कायर होय ।
शोकन करवो तेहथो, देखो चित्त अवलोय ॥ ७ ॥
संस्कार कायातणो, करो मत लावो वार ।
होती आवी थांहरे. सोई करो प्रकार ॥ ८ ॥
कुम्भकर्ण ने शत्रुजीत, घनवाहन ने आन ।
बन्धन छोडी मोकला, किया सहु राजान ॥ ९ ॥
सहू कुधुम्ब हुओ एकठो, आवि मिलीयो ताम ।
रोयां रीखियां खीजीयां, करे मृत्यु को काम ॥ १० ॥
परवाली पावन करी, पूजी अग्ची काय ।
करी रत्नमय पिंजरो, लेई चाल्या ते गाय ॥ ११ ॥
बावना चन्दन नी चिता, अगर घणो घनसार ।
दहन कर्म विधि साचवी, पक्ष्म अने परिवार ॥ १२ ॥
पद्म सरोवर नाहिया. पछे जलांजली दीध ।
प्रेत–कार्य रावण तणो, एटलो सघलो कीध ॥ १३ ॥
दिन केताने आंतरे. मिटे शोक सुजाण ।
कथा रही रावण तणी, आगे सुणो वखाण ॥ १४ ॥

ढाल सेतालीशमीं तर्ज यदुपति जीत्यो रे—

रघुपति जीत्यो रे. दशरथ नन्दन धीर ॥ रघु० ॥
लक्ष्मणनो वड़ वीर ॥ रघु ॥ सत्यवतीनो कन्थ ॥ रघु० ॥
गिरु ओनो गुणवन्त ॥ रघु० ॥ टेर ॥
नोबत केरा नादमूं, अम्बर रहियो गाजी ।
इन्द्र न आवे आसनेहो, सौर रह्यो अति लाजी ॥ रघु० ॥ १ ॥

घरघर रंग वधामणा, घर घर मंगलाचार ।
घर घर गुडी उछलेहो, मुख मुख जय जयकार ॥ रघु० ॥ २ ॥
जीत तणा कडखा घणा, गावे गुणिय अपार ।
धन्य सीता धन्य रामजीहो, धन्य लक्ष्मण अवतार ॥ रघु० ॥ ३ ॥
हाथ पडी रावण तणे, तोये न खण्ड्यो शील ।
सीता धन्य ते कारणे हो. निर्मल गंग सलील ॥ रघु० ॥ ४ ॥
हठीसूं हठ लेई रयो, मिलियो कटक अपार ।
राम धन्य ते कारणेहो, न तजी त्रियानी लार ॥ रघु० ॥ ५ ॥
कांटो गयो तिहूं लोकनो, न तजे थो अभिमान ।
लक्ष्मण धन्य ते कारणेहो, मार्यो रावण मान ॥ रघु० ॥ ६ ॥
रामअने लक्ष्मण वदे, वाणि अमिय समान ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. निसुणो सहु राजान ॥ रघु० ॥ ७ ॥
राज्य करो आप आपणां. पहीलां जेम थो तेम ।
आण वहो लक्ष्मण तणोहो, होसे तुमने खेम ॥ रघु ० ॥ ८ ॥
एम सुणीने राजीया, आंसूं नांखे ताम ।
गद् गद् वाणि बोलिया हो, निसुणो श्रीरघुराम ॥ रघु० ॥ ९ ॥
काज नहीं राही तणूं. अमारे एक लिगार ।
संजम लेई साधसांहो. अम हम मोक्ष दुवार । रघु ॥ १० ॥
'कुसुमायुध' उद्यान में, 'अप्रमेय बल' नाम ।
चार ज्ञान श्रूं शोभना हो, आया मुनि अभिराम ॥ रघु० ॥ ११ ॥
साधु हुआने केवली, तिणही रात्री मझार ।
केवल ओछव कारणेहो. आये देव उदार ॥ रघु० ॥ १२ ॥
प्रातः हुआ श्रीरामजी. सौमित्री सूं साथ ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. चाल्या ते नर नाथ ॥ रघु० ॥ १३ ॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया, साधु सदा सुखकार ।
आगे बेठी सांभलेहो. धर्म तणो सुविचार ॥ रघु० ॥ १४ ॥
'इन्द्रजीत' 'घनवाहन्', पूर्व भवान्तर जान ।

पूछे भाखे केवलीहो, निसुणो ए अवदात ॥ रघु० ॥ १५ ॥
'कौशम्बी' नगरी विषे निर्धन भाई दोय ।
प्रथम 'पश्चिम' नामथीहो, साधु समीपे सोय ॥ रघु० ॥ १६ ॥
धर्म सुणी व्रत आदरी, महियल करी विहार ।
'कौशम्बी' नगरी फिरीहो, आया ते अणगार ॥ रघु० ॥ १७ ॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, 'इन्द्रमुखी' तसुनार ।
क्रिडा करत वसन्तनी हो, दीठो नयन पसार ॥ रघु० ॥ १८ ॥
'पश्चिम' नियाणुं करे, ए तप तणे प्रकार ।
एहवी क्रीड़ा कारीहो, इणही घरे अवतार ॥ रघु० ॥ १९ ॥
वर्ज्यो पण माने नहीं, निन्दे नहीं निदान ।
काल करीने उपन्योहो राय घरे सन्तान ॥ रघु० ॥ २० ॥
'रति वर्धन' नामे भलो, यौवन नो वयपाय ।
राज्य लही रामत करेहो, तप करणी फल दाय ॥ रघु० ॥ २१ ॥
प्रथम साधू मरी ऊपन्यो पंचम कल्पे देव ।
भाई राजा देखीयोहो, आयो सुग्तत् खेव ॥ रघु० ॥ २२ ॥
भेखधरी मुनिवर तणो, रति वर्धन नृप पास ।
पूर्व चरित्र सुणावतां हो, जाति स्मरण तास ॥ रघु० ॥ २३ ॥
संजम लीधो सादरो, पंचम स्वर्गे जाय ।
दोय देव शचि करीहो, क्षेत्र विदेहे आय ॥ रघु० ॥ २४ ॥
'विबुध नगरे ऊपन्या, दोई भाई भूप ।
संयम पामी वारमोहो, पाम्या स्वर्ग अनूप ॥ रघु० ॥ २५ ॥
तिहां थकी चवि आवीया, राजा रावण-गेह ।
'इन्द्रजीत' धनवाहनू हो, भाई थया ससनेह ॥ रघु० ॥ २६ ॥
इन्द्रमुखी पट रागिनी, रति वर्धननी माय ।
ए राणी मण्डोदरी हो, थांरी माय कहाय ॥ रघु० ॥ २७ ॥
इन्द्रजीत घनवाहनू, कुम्भकर्ण भूपाल ।
अवरही बहु व्रतआदरे हो, पट् कापिक प्रतिपाल ॥ रघु० ॥ २८ ॥
राणीजी मण्डोदरी, आदि नारी अनेक ।

संजम सूधो आदरेहो, चारु एह विवेक ॥ रघु० ॥ २९ ॥

धूलचंदजी कृत—क्षेपक ढाल तर्ज
जीरे मुनियों रो मेलो पुण्य पसायथी—

जीरे,-समता धारीने संजम आदर्यो, जीरे-दीवी संमार्यो ने पूठो, कर्मा पर काडी मूठो । मुगतीना लोभी, वारा जाऊंहो तोपे वारणा ॥ १ ॥ जीरे-प्यारा छ कायोंना न्यारा पापसूं, जीरे-तपकर आतम ने तारी, माया ममता ने मारी, टाली हो कुमती कुनार ने ॥ २ ॥ जीरे-घन जिम शे गाजो, वाजो शूरमा, जीरे-आप मुगतीना रसीया, म्हारे हिरदा में वसिया, कसिया हो तम्चूड़ा शिवपुर जाणरा ॥ ३ ॥ जीरे-गुणगनो आगर सागर ज्ञानरा, जीरे-त्यागी वैरागी भरपूरो सत्य वन्ता-शूरो, आशाये पूरो भव्य जीवोंरी ॥ ४ ॥ जीरे-वाणि अनमोलो तोली नहीं तुले जीरे-अमृत ना प्यालापाओ । भाव विध २ रलाओ, घणाही सुहावो नर ना रने ॥ ५ ॥ जीरे-सागई मुनिवर माला रतनोंकी, जीरे-भगवन्त वचनोंमें चालो । उलटा ज्ञानांने पालो, मालोहो मुनिर महियंल ऊपरे ॥ ६ ॥ जीरे-पोपाड़ निवासी प्यासी ज्ञानरो, जीरे धूलचंद मुनि गुणगावे । मस्तक चरणोंमें नावे,तिरण तारण मुनिराजरे ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

साधु नमी श्री रामजी, सौमित्री कपिनाथ ।
विभीषण आदिकरीहो, लारही लिया बहु साथ ॥ रघु ॥ ३० ॥
शणगारी लंकापुरी, ओछवनो अधिकार ।
विद्या धरीए कीजियोहो, मंगलनो विस्तार ॥ रघु ॥ ३१ ॥
बेत्रण वाट बतावतां, लंका मांही प्रवेश ।
शुभ वेला शुभ मुहूर्तमेंहो, कीधो राम नरेश ॥ रघु ॥ ३२ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज ख्यालकी, राम मुनि कृत—

गढ़ लंका मांयने, आईरे असवारी राजा रामकी ॥ टेर ॥
राम लक्ष्मण तो दोये अधिका, हाथी होदे बैठा ।
सारा लोक लुगाई देखे, नगरी मांही पैठा ॥

दर्वाजामें वड़तां ऊचां, मोती झुम्बक देठारे ॥ गढ़ ॥ १ ॥
सावामण को मोती शोभे, वाजू सोहे और ।
राम चन्द्रजी दिलमें सोचे, इसो नहूजी ठौर ।
अयोध्या में शोभे ओतो, लेवां इसकूं तोररे ॥ गढ़ ॥ २ ॥
मनोगत भाव जाण कविवरने, बोले समस्या बोल ।
वमी चीजको वंछेन उत्तम, यह क्या और अमोल ॥
एक एकसे अधिका धिकहै, देखो आगली पोलरे ॥ गढ़ ॥ ३ ॥
सुनकर राम विचारे दिलमें, साचकहेछे एह ।
ए सब चीज विरानी इनसे, भूलन करना नेह ॥
अजब तरह की वस्तु देखत, कहतां न आवे छेहरे ॥ गढ़ ॥ ४ ॥
लोक तणेमुख शोभा सुनने, सीता पास पधारे ।
सीता देखन की अभिलाषा, सोजाणे करतारे ॥
पग २ लाख पसावज देते, इनपर राम पधारे रे ॥ गढ़ ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

पुष्य गिरिने मस्तके, बैठीथी उद्यान ।
जाई जोई जानकीहो, जेहवी कही हनुमान ॥ रघु ॥ ३३ ॥
बांहि साई सुन्दरी, राघव लीधी गोद ॥
जीवितव्यए नवू थयूंहो, प्रगट पणे प्रमोद ॥ रघु ॥ ३४ ॥
पिंजरने ए प्रणियो, हुओ एकठो आज ।
राघवजी अब जाणीयोहो, हूंरे अछुं महाराज ॥ रघु ॥ ३५ ॥
महासती म्होटी सती, देव कहे आकाश ।
स्वर्ग मृत्यु पातालमें हो, पामी अति शाबास ॥ रघु ॥ ३६
आंसूं सूं पगधोवतां, आवी करे प्रणाम ।
सौमित्री सोल्हास[1]सूं, आज सर्या सहु काम ॥ रघु ॥ ३७ ॥
मस्तक चूंबी सादरो[2], सीता दिये आशीष ।
चिरानन्दे[3] चिरजी वजेहो, सफली सयल जगीश ॥ रघु ॥ ३८ ॥
भामण्डल प्रणमेंघणूं, बहिनी कहै चिरंजीव ।

---

१ स-उल्हास-आनन्द सहित, २ आदर सहित, ३चिर-लांबो-आनन्द

म्हारीए आशीस थीहो, वाधो आयु अतीव ॥ रघु ॥ ३९ ॥
विभीषण सुग्रीव जी, हनुमन्त अंगद आया ।
चरण नमें सीता तणाहो, भूपतीजी भल भाय ॥ रघु ॥ ४०
'कुमुदिनी विकसे घणूं, देखी पूनम चन्द ।
सीता तेम प्रभु देखवेहो, पामी परमानन्द ॥ रघू ॥ ४१ ॥
'भुवना लंकृत हाथीए, चल्या सजोड़े राम ।
लक्ष्मण हाथी आगलेहो, जोड़ बनी अभिराम ॥ रघु ॥ ४२ ॥
आया रावण मन्दिरे, पेख्यो प्रवर प्रासाद ।
सहस थम्भनो शोभतोहो, करे गगनसुं वाद ॥ रघु ॥ ४३ ॥
लहु कहे घर माहरे, पूज्य पधारो आप ।
सहू कोई जाणेमहीहो, प्रीत तणी ए थाप ॥ रघु ॥ ४४ ॥
राय तणूं मन राखवा, आवे घर प्रभुतास ।
भोजन भक्ति भली करीहो, उपजाव्यो उल्हास ॥ रघु ॥ ४५ ॥
पहिरावो परिवारसुं, पोषी परिमल प्रेम ।
कर जोडीने वीनवेहो, राय विभीषण एम ॥ रघु ॥ ४६ ॥
ए घोडा एहाथीया, अरथ गरथ भण्डार ।
हेम रत्नपट कुलशूंहो, वस्तु अमोलक सार ॥ रघु ॥ ४७ ॥
ए लंका लीलावती, करो अपाणो ईश ।
ठकुरायत रावण तणोहो, छेलो विश्वा वीश ॥ रघु ॥ ४८ ॥
लंका राज्य तणो करो, प्रभुजीने अभि शेष ।
ताम राम बोल्या हसीहो, बोल हमारो एक ॥ रघु ॥ ४९ ॥
लंका दीधी तुम्ह भणी, पहीलीहो हम देख ।
आज तिलक सवी ताहरेहो, जाणी कीयो सुविशेष ॥ रघु ॥ ५० ॥
इन्द्र भवनमें इन्द्रजिम, राम भवन में स्वामी ।
परिवरियो परिवारसुं हो, आयो आनन्द पामी ॥ रघु ॥ ५१ ॥
सिंहोदर आदिकरी, नाम सहु नर नाह ।
दीधी थोजो कन्यकाहो, आणे परिग उच्छाह ॥ रघू ॥ ५२ ॥

को लक्ष्मण को रामने, परणावी ते बाल ।
सर्व सुलक्षण गुणवतीहो, रमणी रूप रसाल ॥ रघु ॥ ५३॥
इन्द्र तणा सुख भोगवे. क्षण मांही दिन जात ।
छ वर्षतो वोलिगयाहो, अब मिलवा मात ॥ रघु ॥ ५४ ॥
ढालज सेता लीशमी. रंग विनोद विलाम ।
'केशराज श्री रामनेहो, पूर्व पुण्य प्रकाश ॥ रघु ॥ ५५ ॥

दोहा नह रागे—

इन्द्रजीत घनवाहन्, मरुस्थे लीमें जाय ।
महामुनि मुगतेगया, तीर्थ मेघरथ थाय ॥ १ ॥
'कुम्भ कर्ण शिव गतिलही. नदी नदी नर्मदा मांय ।
'पृष्ट रक्षित नामे भलूं, तीर्थ प्रवर्त्यो त्यांय ॥ २ ॥
अब माता 'अपराजिता' सुमित्रा सूं दोय ।
पुत्रोनी आरति करे. खबर न पावे कोह ॥ ३ ॥
खण्ड धातकीथी चली, आई गयो ऋषि देव² ।
पगे लागतां पूछही, माता सुण तनखेव ॥ ४ ॥
कां तुम अति आरति करो, कां तुम दुबले देह ।
आंसू नांखी मायजी, उत्तर आये तेह ॥ ५ ॥
तात तणा आदेशथी, वत्स गया वनवास ।
सीता पण साथे हुई, पतिव्रता व्रत तास ॥ ६ ॥
सीता रावण अपहरी, करी घणो परपच ।
नन्दन हुआ वाहरू, मेली कढकनो संच ॥ ७ ॥
राम अने रावण तणा, सुभटोंमे संग्राम ।
होतो रावण खीजियो, शक्ति चलावी ताम ॥ ८ ॥
लागी लक्ष्मणने हैये, पड़ियो मूर्च्छा खाय ।
विशल्या आदि आवीने, लेईगया खगराय ॥ ९ ॥
खबरन पामी आगली, ए अम आरतिहोय ।

१ विंध्यस्थली =२ नारद ऋषि =

के जीवन्तो ऊगर्यो, केवत्स मुओ सोय ॥ १० ॥
नारद भाखे मतिकरो, आरती एह लगार ।
लक्ष्मण मार्यो नविमरे, जो रूठे करतार ॥ ११ ॥
जाऊं छूं लंकापुरी, लाऊं सक्ष्मण राम ।
आरती भांजू ताहरी, तोमुझ नारद नाम ॥ १२ ॥
एम कहीने आवीयो, राघवजीने पास ।
माय मनोरथ पूरवा, एम करे अरदास ॥ १३ ॥

ढाल अड़ताली शमीं तर्ज रसोयानी (तथा *अलगी रहनी—

सुमित्रा अपराजीतारे, जोवे प्रभुजी नीवाट ।
लक्ष्मणजी ना धावनो, आणे अति उचाट हो सुणस्वामी ॥ १ ॥
खवर न कोई पायहो सुण स्वामी, झूरी पिंजर थायहो सुण स्वामी ॥ टेर —
रयणी छमासी जायह सुण स्वामी रही घणूं लीधो लायहो ॥सु०॥२॥
पुत्रों ऊपर मायनोरे, होवे नेह अपार ।
सुरभी नी परे देखीयो रे, चित्त रहे वतस लार हो ॥सु०॥३॥
फिरे कुदन्ती वानरीरे, सुतने कण्ठ लगाय ।
माले सेवे पंखणीरे, लिये सुतनेरे वधाय हो ॥सु० ॥ ४ ॥
गर्भ धरे वे पोखवेरे, पाले वे अभिराम ।
प्राण आपणा आपवेरे, सारे सुतनो काम हो ॥ सु०॥५॥
माता गंगा सारखीरे, माता तीर्थ रूप ।
माता महियल मोटकीरे, मांने म्होटा भूप हो ॥ सु०॥६॥
पणमुकी गणपति वादमेरे, अभिकाणी अतिभाग ।
साजो हुओ गणपतीरे, रहरे कीर्ती न्याय हो ॥ सु० ॥७॥
वीर स्वामी मांने घणुं रे, जनहुता गर्भ मांहे ।
माताने दुःख देई नेरे, संयम नहीं लीधो प्राह हो ॥सु०॥८॥
वणूं किम कहिए दाखिएरे, माताने सुख देत ।
सुख दीधो संसारने रे, एह धर्म नो हेत हो ॥ सु० ॥९॥

* यह कविता रूपक है ।

रूड़ा भाखे रामजीरे, नारद सूं सुखपाय।
लंकपति बोलाईके रे, भाखे प्रभु अकुलाय हो ॥सु० ॥१०॥
भूप! तिहारी भक्तिथीरे, विसर्या हम माय।
आगेही खेंच्यां थकीरे, माताजी मरिजाय हो ॥सु० ॥११॥
अबही जाई उतावलारे, मिलिये मातने आज।
तो तो ए साचो पड़े रे, कीधो सघलो काज हो ॥सु०॥१२॥
कहे विभीषण रायजीरे, मांग्या श्रो दिन सोल।
ज्यूं एती त्यूं एटली रे, मांनो हमारो बोल हो ॥सु०॥१३॥
इन्द्रपूरीनी ओपमारे, आछी भांत अनूप।
अयोध्या समरावसूंरे, कहे लंकनो भूप हो ॥ सु० ॥ १४॥
विसर्ज्यो ऋषिरायजीरे, मातापासे आय।
वात कही सन्तोषनीरे, हर्ष हिये न समाय हो ॥ सु० ॥१५॥
कारीगर लंकातणारे, सुघड़ोंना सिरदार।
अयोध्याए आवीयारे, कांई न लागी वार हो ॥ सु० ॥१६॥
जेम कह्यू तिमही कर्यूं रे, चतुर पणे चित्त लावी।
के देखो हरीनी पुरीरे, के देखो ए आवी हो ॥ सु० ॥१७॥
दहाड़े अब सत्तरमेंरे, पुष्पक नामे विमान।
वैसी 'लक्ष्मण' रामजीरे, सोहम[1] ने ईशान हो ॥सु० ॥१८॥
सीता विशल्या वलीरे, रामसुता सुकुमाल।
सघली बैठी सन्मुखेरे, विद्याधरी सुविशाल हो ॥ सु०॥१९॥
'विभीषण' सुग्रीवजी रे, भामण्डल हनुमान।
अंगद सूं दक्षिण दिशे रे, बैठा पुरुष प्रधान हो ॥सु० ॥२०॥
वाम दिशे विशेषथी रे, बैठा राक्षस राय।
पूठे सेवक सामटारे, लीयो विमान चलाय हो ॥ सु० ॥२१॥
अयोध्याने आसना रे, आया जाण्या जाम।
भरत भूप लघु भाईसूंरे, साहमा आवे ताम हो ॥ सु०॥२२॥

१ शाक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र एकत्रित हुवे जैसे—

ऊतरीया हाथी थकीरे, नजरे आया ईश ।
ईश विमाने ऊतर्यारे, आणी अधिक जगीश हो ।।सु० ।।२३।।

क्षेपक राधेश्याम—

राम-दरस के हेतु जब, अवध चला उमड़ाय ।
भरत भूप के सहितसब, हुए उपस्थित आय ।।
इतनेमें नेत्र भरतजी के, आकाश के ऊपर जाते हैं ।
उस समय अचानक निकल पडा, रघुराज हमारे आते हैं ।।
इतनेमें वह पुष्पक विमान, कुछ और समीप नजर आया ।
आखिर को सबने क्या देखा, नभसे भूमण्डल पर आया ।
अब तीन गुणोंयुत तीन व्यक्ती, उसके अन्दरसे प्रकट हुए ।
साथही साथ आगे पीछे, जाहिर सब साथी सुभट हुए ।।
उस राम लक्ष्मण पे दृष्टिजमी, आगेको भरत झपटते हैं ।
मेरे भइया, मेरे, भइया, कहकर चरणों में पड़ते हैं ।।
श्री रामचन्द्रजी भी गद् गद् थे, हाथों पे उठा लिया बढ़कर ।
प्राणों से प्यारे भाई को, छातिसे लगालिया पढ़कर ।।

ढाल मूलनी—

भरत भूप भल भावसूंरे, रख्यो चरण शिर नांय ।
ऊठाई ऊंचों करीरे, लीधो कण्ठ लगाय हो ।। सु० ।।२४।।
मस्तक चूंबे रामजीरे, वारम्बार विशेष ।
शत्रुघ्न पग लागतांरे, दिये सन्मान नरेशहो ।।सु० ।।२५।।
शत्रुघ्न ने भरतजीरे, लक्ष्मण ने परणाम ।
करतां लक्ष्मणजी कर्यूरे, जेम कीधुं श्रीराम हो ।।सु०।।२६।।
ताम विमाने एक ठांरे, बैठा बन्धव चार ।
दान शील तपभावसूंरे, पामे शोभ अपार हो ।। सु ।। २७ ।।
पहे लाही प्रगट पणेरे, आयोध्या नगरा ।
मेलीधी प्रभु आवतांरे, पुनरपि फिरी अयोध्याहो ।। सु० ।। २८ ।।

क्षेपक राधेश्याम—

पातेही इसप्रकारके, आनंद श्री राम ।

अवध पूरी बनगईहै, एक अलौकिक धाम ॥
जो नगरी सीता रामविना, एक ख्वार दिखाई देतीथी।
वह आज खुशोसे फूलागई गुल्जार दिखाई देतीथी ॥
जो कली कभी मुरझाईथी, वह आज खुलपड़ी खिल आई।
जहां अन्धकार का वासाथा, वहां आज धूपसी खिल आई ॥
जो वृक्षकभी पतझाड़मेंथे, वेफिर बाहरमे आयेहैं।
मालीको आता हुआजान, गुलफिर गुल्जारमें आयेहैं ॥
सरजू की लहरें उठ उठकर, स्वागत की उमंग जतातीहै।
वृक्षोंकी लता लहलहा कर, फूलोंका फर्श बिछातीहै ॥
कूपोंमें होगयाहै, अमृत जैसा नीर।
तालावोंमें भरगया, मानों आके क्षीर ॥

ढाल मूलगी—

छांटी थोड़े पाणिएरे, रज सघली दपसावी।
करी सुगन्धी धूपणेरे, फूलही फूल बिछायी हो ॥ सु० ॥ २९ ॥
तोरण नी रचना करीरे, गलिए गलिए देखी।
घर घर गुडी उछलेरे, घर घर हर्ष विशेषो हो ॥ सु० ॥ ३० ॥
वाजा विविध प्रकारनारे, भूमिअने आकाश।
वाजे नीका नादसूंरे, होई रह्यो उल्लासहो ॥ सु० ॥ ३१ ॥
नगरी मांही आवीयारे, माधव देखो मोर।
ऊंची नजर विलोकवेरे, लोक करे चकोर हो ॥ सु० ॥ ३२ ॥

धूलचदजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

अयोध्या फूलरहीरे, घर आयाहै लक्ष्मण राम ॥ टेर ॥
घर २ मांही रंगवधावो, गोरी मंगल गावे।
सब सिणगार सजीने सारी, रघुपति सामी जावे ॥ अ० ॥ १ ॥
आज आंगणिये सुरतरु फलियो, अमृत मेह वरसाया।
मुंह मांग्या तो ढलगया पासा, इन्द्र चली घरआया ॥ अ० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी—

कनक तणे कुसुमे करीरे, भरि भरि मोती थाल।

वधावे वनिता वलीरे, गावे गीत रसाल हो ॥ सु० ॥ ३३ ॥
वधावे चारु वलीरे, कामनी कलश उदार ।
दाने जल धर वरसतां रे, आया नृप दरबार हो ॥ सु० ॥ ३४ ॥
उतरी ताम विमानथी रे, राम- सुमित्रा नन्द ।
महिल मांही मन रंगसुं रे, आवे धरी आनन्दहो ॥ सु० ॥ ३५ ॥
पहेला कौशल्या तणा रे, चरणे नामे शीश ।
पाछे अवर माता भणी रे, माता दिये आशीश हो ॥ सु० ॥ ३६ ॥

सवैयो–

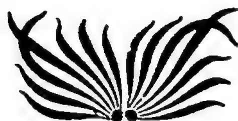
मात को मोह सत्थ सीता को मैंभी लयो महानम मेरो ।
भरत की भक्ति सेव लक्ष्मण की, पोरम लयो पवन-सुत केरो ॥
रावण राय त्रिकूट गढ़ खाई, लंका मार कियो घन घेरो ।
ए सब पूर्व लेखहे मन, अवर प्रतापहे कैकेयी तेरो ॥ १ ॥
सीता विशल्या सतीरे, कौशल्या पगेलागी ।
पिछे सासु अवरनीरे, लहे आशीश सुहागी हो ॥ सु० ॥ ३७ ॥
जिसा सुतहम जन्मीयारे, तैमाही समतोल ।
तुमपण नन्दन जन्मजोरे, मानी हमारो बोल हो ॥ सु० ॥ ३८ ॥
फिरी फिरीमा आपरा जितारे, लक्ष्मण केरो अंग ।
करसुं फरसे शिरधणुरे, चुंबी कहे मन रंग हो ॥ सु० ॥ ३९ ॥
वत्स तुम्हारो आज मैंरे, हुओ जाण्यो जन्म ।
नयणे निरख्यो आपणोरे, धन्य करतानी करन हो ॥ सु० ॥ ४० ॥
कष्ट वणुं वनवासनुंरे, सीताने रघुदेव ।
तेनो आघुं काढियुंरे,-जोते कीधा सेव हो ॥ सु० ॥ ४१ ॥
तातनणी पर रामजी रे, सीताए ने जेम ।
कहे लक्ष्मण रनवासमेंरे हुंतो राख्यो एम हो ॥ सु० ॥ ४२ ॥
माताजी उद्धत पणेरे, में कीधो अविवेक ।
सीता-रामवियोगनोरे, हेतु हुओ हूं एक ॥ हो सु० ॥ ४३ ॥
पण थारा आशीस थीरे, बारे बादल फाटी ।

गयु सही आखी अणीरे, आया अरि निरघाटी हो ॥सु० ॥४४॥
ढालज अड़ तालीशमीं रे, गई वहोड़ी नार ।
केशराज ऋपि राजजीरें, पुण्य वडो संसार हो ॥ सु० ॥ ४५ ॥

❋ इति श्री जैन पद्य रामायणे ❋

१ रामविलापः,	"	१० युद्ध वर्णनम् ।
२ वीर विराधाय राज्य प्रदानम्	"	११ लक्ष्मणोपरि शक्तिप्रहारः ।
३ सुग्रीवस्य संकट मोचनम्,	"	१२ मन्दोदरी शीक्षा ।
४ असालिकया लंकारक्षणम्,	"	१३ बहुरूपिन्या विद्याऽधिकारः
५ विद्याधराणां रामेण सह-वार्ता लापः ।	"	१४ रावण मृत्युः ।
	"	१५ विभीपणाय राज्य प्रदानम् ।
६ कोटि शिलाया अधिकार ।	"	१६ अयोध्यायां रामस्य-प्रत्यागमनम् ।
७ अंजनी सुतस्य लंकाप्रस्थानत्	"	
८ सेनयासह रामस्य-लंकाप्रस्थानम् ।	"	१७ भरत मेलनम् ।
	"	इत्यादि विविध विषयकंम.
९ विभीपणस्य शरणागतिः,	"	

॥ तृतीय खण्डम् सम्पूर्ण ॥



श्री वीत रागाय नमः

श्री जैनपद्य रामायण

का

चतुर्थ खण्ड



दोहा

सुगुरु वडो संसारमें, ज्ञान दान दातार ।
शिष्य सुगुरु सेव्यांलहे, विद्यानो विस्तार ॥ १ ॥
'राम सुलक्ष्मण आवीया, माता हर्ष अपार ।
तेमन जाणे आपणो, केजाणे किरतार ॥ २ ॥
'भरत सुभक्ति करेभली, अवसर जाणी सार ।
उत्सव मण्डावे घणा, घर घर मंगलाचार ॥ ३ ॥
सेवक होई माचेव, स्वामी तणी अतिसेव ।
भूपतिनी पदवी तणो, नकरे को अहमेव ॥ ४ ॥
संयम लही स्वामीसूं, भरतभणे सुविचार ।
राज्यग्रहो प्रभु आपणूं, हूंलेऊं संयमभार ॥ ५ ॥
संजम तोहूं सादरो, लेलो राजामाथ ।
शईत शक्ति सूंपीगया, नृप-पद केरी आथ ॥ ६ ॥
आज लगे में राखीयो, एह तुम्हारो राज ।
दादाजी रे दयाकरो, सारूं आतम काज ॥ ७ ॥

ढाल गुणपचासी तर्ज नथनी (तथा उमसेन की ललोरे)

क्षणगईरे मेरी क्षणगई, लाखीणी मेरी क्षणगई ॥ कोडिनो मेरी क्षणगई, क्षणगई फिरी नावे सोई, अंजलीनूं रेजल जानूं जोई

॥ टेर ॥ १ ॥

समय समय मरन्तो जीव, वीतरागना वचन सदीव ॥ क्षण ॥

तनु साथे डोलन्ती छांय, कालरहे एपूरी ग्रांह ॥ क्षण ॥ २ ॥
कालरुं औषध नहीं है विनाण, जम रूठ्यां नहीं राखे प्राण ॥ क्षण ॥
जातक१ ने जम खाई जाय, अण जातक सामूं नदिखाय ॥ क्षण ३ ॥
काले खाधोहु संसार, कालन खाधो जाय लगार ॥ क्षण ॥
.... ॥ क्षण ॥ ४ ॥
जरान पीड़े न ऊपजे रोग, नघटे इन्द्रीना बलयोग ॥ क्षण ॥
जबलग आवीन पूगेआव, तबलक करीजे धर्म की चाव ॥ क्षण ॥ ५ ॥
जेनरा जरा जमथी नडराय, तेतोढीलो करेरे न्याय ॥ क्षण ॥
मन्दिर द्वारे लागा लाय, तबतो काईहोन कढाय ॥ क्षण ॥ ६ ॥
सागर पल्लने आयु छेह, कौण विचारे गिणती एह ॥ क्षण ॥
जेदव वाले परवत प्राहे, क्योनबले खडतेदवमांहे ॥ क्षण ॥ ७ ॥
जग में भाख्यो सयल उपाय, घडी घटे क्षणहीना रहाय ॥ क्षण ॥
चावण१ चावी पन्थी पुलाय, पन्थीं पन्थे न रहेवा पाय ॥ क्षण ॥८॥
एह सयाण पणूं मुझ आज, जेम तेम सारूं आतमकाज ॥ क्षण ॥
घर वालीने कीर्ति करन्त, मूर्ख शिरोमणी नामधरन्त ॥ क्षण ॥९॥
आली२ ऑखे कहे श्रीराम, वत्स ! रहे वादे संयम काम ॥ क्षण ॥
राज्य करो तुम्ह पहिला जेम, जोमुझ साथे राखोप्रेम ॥क्षण ॥१०॥
आज्ञा कारी तुम अभिधान, तेतो जाणे सयल जिहान ॥ क्षण ॥
पहीली जेम तुम्ह मानी आण, अबही करोमुझ बोलप्रमाण ॥क्षण॥११
भरत भूप करीने जुहार, ऊठी चाल्यो लोपी-कार३ ॥ क्षण ॥
लक्ष्मण दोडी साह्यो हाथ, आणी वेसाड्यो नरनाथ ॥ क्षण ॥ १२ ॥
'सीता' ने 'विशल्या' आद, राणी सहु आवी प्रल्हाद ॥ क्षण ॥
देवरने समझावे तेह, सुन्दरी वचन वदे ससनेह ॥ क्षण ॥ १३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत च्तेपक ढाल तर्ज कमली वालेने—

नृप वनिता यों समझाय रही, मत संयम लेवो देवरजी ।
सुन संयमकी छतियां धरकी, फिर मुखसे न केवो देवरजी ॥टेर॥

---

१ पथिक पन्थ मे खाद्य खाकर विश्राम नहीं करता है। पाणी दीने को आतुर होता है ॥ २ आंसू सहित ॥

हिय हेज धरी इम कहत सीया, सुन संयम की अकुलात जीया ॥
इतना दिन वनवास लीया, हम आये जावो ! देवरजी ॥ नृप०१॥
संयम का मारग बहुत कठिन, चलनाहै खड्ग की धार तच्छिण ॥
मत करिये हठ तुम्ह होके दच्छिन, अनतो गम खावो देवरजी ॥नृप२॥
हो सुकुमार फूल ज्यूं गौर वदन, वहां करना है कर्मों का कदन ॥
बड बन्धवकी अहो गुणके सदन!, आणामें वेवो देवरजी ॥नृप॥३॥
कहे लोक आयेघर राम सीया, जब भरतको संयम दिलायदिया ॥
यह अपयश हमसे नजाय सया, घर रूप! रहोहो देवरजी ॥नृप॥४॥

ढाल मूलगी—

म्होटो भाई तात समान, क्यूं न विचारे तूं राजान ॥ क्षण ॥
सायर केम तजे मर्याद, एतो निश्चय विधि वाद ॥ क्षण ॥ १४ ॥
विसारण संयम नी वात, जल क्रीडा कर वाने जात ॥ क्षण ॥
देवर साथे घाले बाथ, तुम्हसूं खेलण कीअभिलाप ॥क्षण ॥१५॥
भाभियोंनो मन राखण हेत; चाल्यो भूपति महिल समेत ॥क्षण॥
घठिका दोई करी जल ख्याल, जल काठे ऊभो भूपाल ॥क्षण१६॥
एटले गज 'भुवना लंकार', थम्भो ऊखेडे रोष अपार ॥ क्षण ॥
आगो देखो तीयपरिवार, शोर मच्यो पडियो गजलार ॥क्षण१७॥
थर हर धूजण लागी बाल, देखी हाथी अति विकराल ॥ क्षण ॥
पूठे राखी सघली देवी, आयो नृप आगे नतखेरी ॥ क्षण ॥ १८ ॥
मदकरी आंधो तेरे गयेन्द, नयणं दीठो नम्त नरेन्द्र ॥ क्षण ॥
मद उतरियो तेणीवार, शान्त हूओ गज छाडी विकार ॥क्षण॥१९॥
गज दर्शन देखी अभिराम, भूपति पण पायो सुख नाम ॥ क्षण ॥
काने नाही छाली जेम, भूपति आगे हाथी तेम ॥ क्षण ॥ २० ॥
वात सुणी ने आवे धाय, राम सु लक्ष्मण सुभट सुहाय ॥ क्षण ॥
करी उपाय अनेक आण, महावत गज आण्योठाण ॥क्षण ॥२१॥
कुलभूषण ने भूषण देश, नमो नगरी स्वामिगत्र निशेष ॥ क्षण ॥
पदम सौमित्री भरत नरेश, वन्दन आवे लोक अशेष ॥क्षण॥२२॥

पूछे पद्म कहो ऋषिराय, भरत देखी गज निर्मद थाय ॥ क्षण ॥
देश सुभूषण केवल धार, भाखे भूपा सुणो सुविचार ॥क्षण॥२३॥
ऋषभे१ लीधो संयम भार, साथे हुआ नृप चार हजार ॥ क्षण ॥
एषणा समिती न लह्यो आहार, तापस हुआ ते तेहीवार ॥क्षण॥२४
प्रल्हादन सुप्रभ नृप-नन्द, ताप सना व्रतपाली अमन्द ॥ क्षण ॥
चन्दोदय सूर्योदय देख, भवमांहि भमिया सुविशेष ॥क्षण ॥२५॥
चन्द्रोदय गजपुर में आय, हरिमति भूपति नन्द कहाय ॥ क्षण ॥
चन्द्रलेखा सुउदर उत्पन्न, कुलंकर नामे वित्पन्न ॥ क्षण ॥ २६ ॥
'सूर्योदय' पणते पुरमांहे, विश्व भूतिनो नन्दन प्राहे ॥ क्षण ॥
अग्नि कुण्डा उदर अवतार, श्रुतिरति नामे कुल आधार ॥क्षण॥२७॥
'कुलंकर' नृप पद पावन्त, तापस वनमें पग ठावन्त ॥ क्षण ॥
विचेमिल्यो ज्ञानीअणगार, अभिनन्दन भाखे सुखकार ॥क्षण२८॥
तापस पंचाग्नी साधन्त, जीवघणानो आणे अन्त ॥ क्षण ॥
लाकड अग्नि लगाव्यो आप, तेमां है बलेछे साप ॥ क्षण ॥ २९ ॥
सो अहि पर भवनो तुम्ह बाप, क्षेमकर नामे लहे ताप ॥ क्षण ॥
फाडी लाकड़ काढ्यो नाग, जीव ऊगार्यो तेसो भाग ॥क्षण ॥३०॥
लाकड़ फाड्यो माहे भुजंग, दीठो राजा हुओ विरंग ॥ क्षण ॥
दीक्षा ऊपर आणे भाव, 'श्रुतिरति' ताम कहन्त कहाव ॥क्षण॥३१॥
वय पाके दीक्षाल्य हेज, करवो काया आजश तेज ॥ क्षण ॥
एम सुणी भांग्यो उत्साह, लचिपचि मांही रह्यो नरनाह ॥क्षण॥३२॥
'श्रीदामा' राणी छे तास, 'श्रुतिरति' साथे छे सुविलास ॥ क्षण ॥
शक्या आयां पामी भेद, राजाजी करसे शिर छेद ॥ क्षण ॥३३॥
विषदेही मार्यो भरतार, वेगोही मूओते जार ॥ क्षण ॥
पापतणा फल एहिज जूरी, ए दोई भव भमिया भूरी ॥क्षण ॥३४॥

---

१ ऋषभदेव निराहारपणे मौनकर विचरने लगे, पीछे शेष मुनि निर्दोषआहार नमिलनेसे तापसहुए । उन्होंमेसे प्रल्हादन, और सुप्रभ राजाना पुत्रों अधिक भवकर तेहुए चन्द्रोदय-और सूर्योदय हुए ॥-

'राजगृह' नगर में विप्र, 'कपिल' घरे आयाते क्षिप्र ।' क्षण ॥
'सावित्री' उदर 'नामे' विनोद, बीजो 'रमण' करन्त प्रमोद ॥क्षण॥३५
रमण गयो भणवाने वेद, देशान्तर भणियो करी खेद ॥ क्षण ॥
घर आवे निशी हूई जाम, यक्ष मन्दिरे लीधो विश्राम ॥क्षण॥३६॥
वडा बंधवनी 'शाखा' नारी दत्तविप्रसु प्रेम प्रकारी ॥ क्षण ॥
यक्ष मन्दिर में करी संकेत, सा आवी मेलण नेत ॥क्षण ॥ ३७ ॥
पूठे आयो छे तसकन्त, दत्त न आयो ताम तुरन्त ॥ क्षण ॥
रमण ऊठावी माणे भोग, नारी न वंछे धन्य ते लोग ॥क्षण॥३८॥
काढी खड्ग करन्त प्रहार, भेद न जाणे कांई गमार ॥ क्षण ॥
रमण[1] देखी सुपडियो तन्त, शाखाए निज हण्यो कन्त ॥क्षण॥३९॥
भवमें भमी 'धन' माण प्रसिद्ध, इभ्य पुत्र हुओरे समृद्ध ॥ क्षण ॥
रमण हुओ सुत तेहनो जाण, लक्ष्मी उदरे भूषण सु वखाण ॥क्षण ॥४०
परणावी कन्या बत्रीश, सुखमाणेते विश्वावीश ॥ क्षण ॥
ऊपर भूमि बैठा स्वामी, रजनी केरे पश्चिम जाम ॥ क्षण ॥४१॥
'श्रीधर' ऋषिने केवल ज्ञान, ऊपजीयूं छे अधिक प्रधान ॥ क्षण ॥
केवल ओछव करवा देव, देखी धर्म तणो लहे भेव ॥क्षण॥४२ ॥
ऊपर थकी ऊतारियोनन्द, ऋषि चन्दन भरे आनन्द ॥ क्षण ॥
वाटे जातां सापे खाध, शुभ परिणामेंशुभ गति लाध ॥ क्षण ॥४३॥
भला भलातो भवने लेत, भला भलातो वितरण देत ॥ क्षण ॥
भला भलाही पावे ठाम, भला भला गावत गुणग्राम ॥ क्षण ॥ ४४
जम्बू द्वीप अपर विदेह, रत्नपुरी नगरी गुणगेह ॥ क्षण ॥
अचल नामाछे चक्रीश, पूरण हरिणी माय जगीश ॥ क्षण॥४५॥
'प्रिय दर्शन' नाम वरपुत्र, जाण्यूं सायण घरनो सूत्र ॥ क्षण ॥
बाल पणे राखे वैराग धारे नहीं परणेते लाग ॥ क्षण ॥ ४६ ॥
मात पितानुं राखण हेत, कुंवर ज्व मान्यो परणेत ॥ क्षण ॥

[1] रमण को दत्त समझकर शाखा-च्वी, उसके साथ भोग करने लगी। विनोद ने, रमण को न पहिचान कर खड्ग से मार डाला। और शाखा अपने पति विनोद को मार दिया।

कन्या मेली हजारज तीन, परणायो कुंवर प्रवीण ॥ क्षण ॥४७॥
साठ[१] सहश्र वर्ष ग्रहीगृह वास, बहुला कीधा तप उपवास ॥क्षण॥
अन्त समय आणी शुभ ध्यान, पाम्यो पंचम अमर विमान ॥क्षण॥४८
धन[२] नो जीव करीने काल, भवमांही भमियो अमराल ॥क्षण॥
पोतनपुरमें ब्राह्मणवंश, शकुनाज्ञीमुख वंश वतंस ॥ क्षण ॥ ४९ ॥
मृदुमति नामे जन्मज लीध, भूंडोजाणी काढी दीध ॥ क्षण ॥
धूर्त सीख्यो माया जाल, आपाने ऊपायो साल ॥ क्षण ॥ ५० ॥
घर आण्यो न तजे परपंच, वेश्या सरीसो मांड्यो संच ॥ क्षण ॥
पीछे संयम व्रत प्रतिपाल, पंचम कल्प गयोते चाल ॥ क्षण ॥५१॥
गज भव कीधो माया भेली, गतितिर्यंच लहीए मेली ॥ क्षण ॥
गिरि वैताढ्य महामदमन्त, हाथी हुओए बलवन्त ॥ क्षण ॥५२॥
'प्रिय दर्शन' नो जीव जिकेव, भूपति भरत हुओरे तिकेव ॥क्षण॥।
भरत[३]-तनु गजेन्द्र दीठो दर्श, जातिस्मरण पाम्यो सरस ॥ क्षण॥५३॥
भाई पुत्र पणानी प्रीति, क्यूं अबमें थाए विपरीती ॥ क्षण ॥
मति दुःख पामे म्हारे त्रास, गजमद छोड्यो एम विमास ॥क्षण॥५४॥
एह सुणी भरतेश्वरभूप, संजम आदर्यू रे अनूप ॥ क्षण ॥
साथ हुआ एक सहश्र नरेन्द्र, महियल विचरे भरत मुनीन्द्र ॥क्षण५५
आतम गुण आराधन कीध, समर समेरे सुधारस पीध ॥ क्षण ॥
शत्रु जय साधी संथार, पाम्यो भव सायरनो पार ॥ क्षण ॥५६॥
हाथी नानाविध तपकार, अनशन आराधी अतिसार ॥
पाम्यो प्रत्यक्ष पंचम कल्प, सुख साता तिहां छेरे अनल्प[४] ॥क्षण ५७
कैकेयी लियो संयम शुद्ध, पाल्यो टाली कर्म अशुद्ध ॥ क्षण ॥
माताजी गई मोक्ष मझार, जेहने नामे सदा जयकार ॥ क्षण॥५८॥

---

१ चौसठ हजार (जैन रामायण) २ धन मरके योतनपुर नगर मे शकुनाज्ञी मुखनामक ब्राह्मण की स्त्री ब्रह्मपत्नि के उदर में मृदुमति नामक पुत्र पैदा हुआ। ३ भरत को देखने से हाथी को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। ४ अन+अल्प-अल्प नहीं अर्थात् विशेष—

एतो भाखी रूड़ी ढाल, ए गुण पचासमीय विशाल ॥ क्षण ॥
केअराज कर शिरही चोड़ी, दोई भरतनमें करजोड़ी ॥ क्षण ५९ ॥

दोहा मल्हार रागे

भरतभूप दीक्षा ग्रही, राज्य तणो रे विवेक।
वासुदेव बलदेवनो, पदवीनो अभिषेक ॥ १ ॥
कीजे चित्त मूं चिन्तवी, भूचर खेचर नरेश ।
आवी पूछे रामने, रामदियो आदेश ॥ २ ॥
मण्डप रचायो मोकलो, मांड्या बहु मण्डाण।
विधि सब लीही साचवी, माजन मिल्या सुजाण ॥३॥
प्रथम कलश लक्ष्मण भणी, ढोलेते भूपाल ।
पछी कलश श्री रामने, ढोलेते सुविशाल ॥ ४ ॥
वासुदेव ए आठमो, ए अष्टम बलदेव ।
राज्य करो सुविशेषथी, सुरनर सारे सेव ॥ ५ ॥
वासु देवने देवता सेवे आठ हजार ।
चार हजारे सेवीये, श्री बलदेव उदार ॥ ६ ॥
सोलह हजारों देशमें, जेहनी वरते आण ।
राजा सोलह हजारही, आणकरे सुप्रमाण ॥ ७ ॥
हयवर गयवर रथवरु, लाखज बेयालीश ।
पाला प्रौढ प्रतापसु, क्रोडज अड़तालीश ॥ ८ ॥
खेचर खरी खिजमत करे, भूचर आण अखण्ड ।
माने-सुर सेवा करू, पारेले राज्य प्रचण्ड ॥ ९ ॥

ढाल पचासमी—
तर्ज हिंडोलणानी—

है उस रघुपति के धर्म सूं राजे, सघला सुखिया लोक।टेर।
अधिक नेहा अधिक मेहा, अधिक निपजण होई।
अधिक सुरभी दूध आपे, अधिक फल तरु जोई ॥
अधिक लाभ लहन्त वणजे, अधिक चाकर मान ।

अधिक पुत्र कलत्र कमला, अधिक पूरे आश ॥ है उस ॥१॥
अधिक दान सुशील अधिका, अधिक तपही प्रकार ।
अधिक भावन पुज्य पावन, अधिक करणी सार ॥
अधिक पोषह ने सामायिक, अधिकहीं आचार ।
अधिक अधिकूं सर्वतो, अधिकाई नो अधिकार ॥ हैं ॥ २ ॥
नहीं हिंसा नहीं झूठज, नहीं कोई चौर ।
नहीं लम्पट नहीं लोभी, नहीं भूडा भोर ॥
नहीं क्रोधी नहींमानी, नहीं द्वेष लिगार ।
नहीं वाद विवाद विकथा, नहीं को कलिकार ॥ हैं ॥ ३ ॥
नहीं आल कराल काल, पिशुनको जंजाल ।
नहीं को परपंच रंचही, कोन केहनो साल ॥
नहीं झार जूगार धूरत, नहीं दुखियो कोई ।
जेहनी उपमान जगमें, आपहीं प्रभुहो सोई ॥ हैं ॥ ४ ॥
राम आपे विभीषणने, राक्षसनो द्वीप ।
कपिपतिने द्वीप कपीनो, अछेजेही सदीप ॥
हनुमन्तने प्रवर श्रीपुर, श्री पति आपन्त ।
कुलक्रमेंजे चाली आया, ते तिहां थापन्त ॥ हैं ॥ ५ ॥
लंकनो पायालां प्रगटो, लहै वीर विराध ।
'नीलने दे ऋक्षपुर, प्रतिसूर्य हनुपुर लाध ॥
रत्नजटी देवोपगीत, चन्द्रगति सुत देखी ।
'रथनू पुर नगर रूपाचले, ए लहेज विशेषी ॥ हैं ॥ ६ ॥
यथायोग्य जेही जाण्या, तिसो तेहने देश ।
देईने सन्तो पीया, श्री राम सकल नरेश ॥
गांव वाले गांव पायो, खेत वाले खेत ।
विमुखतो नर को नरहीयो, पद्म पृथिवी देत ॥ हैं ॥ ७ ॥
'शत्रुघ्न सूं रामभाखे, देश जेही सुहाय ।
सोई मांगों ताम मथुरा, आपही तस दाय ॥

राम भाखे वत्स ! मथुरा, पूरी अधिक दुसाधी[१] ।
जाणी बूजी आपणे गले, कौन बांधे व्याधी ॥ हैं ॥ ८ ॥
'मधु नृपने चमरे[२] आप्यो अछे पहेलां शूल[३] ।
अरिहणी तस हाथ आवे, प्रगट छे प्रतिकूल ॥
शत्रुघ्न कहे तुम्हे हणियो, राक्षस नाथ निशंक ।
हूंही थारो भाई हूंतो कौणे यह मधु रंक ॥ हैं ॥ ९ ॥
दियो मंथुरा ए तमासो, देखखुं हूं जाय ।
राम आपी ताम मथुरा, एह शीक सुणाय ॥
शूलवर्जे होई गाफल, छले करजो काम ।
बल अरु जोर नहीं को चलसे, सीखदे श्रीराम ॥ हैं १० ॥
रामे भाथा अक्षह सायक, आपीया तसु दोई ।
सारथी जमवदन[४] नामा, साथे दीधो सोई ॥
धनुष्यदियो अर्णवावर्त, अग्निमुख शर सार ।
लक्ष्मणे आप्यांथी हर्षे, गाई नो जयकार ॥ हैं ॥ ११ ॥
शत्रुघ्नतव चालीयोरे, करत शीघ्र प्रयाण ।
साथे दलबल सामटोरे, वाजही निशाण ॥
नदी तटे विश्राम लीधो, खबर दीधी राय ।
वनकुबेरे[५] नारी सहित, मधुकेली कराय ॥ हैं ॥ १२ ॥
अस्त्रना आगार मांहे, शूलनूं रे निवेस ।
शत्रुघ्न छल देई राते, करे पूरीय प्रवेश ॥
वात सांभली मधु दोड़ीयो, आवही पुरमांहे ।
शत्रुघ्न ना सुभट बलिया, रोकियो ते प्राहे ॥ हैं ॥ १३ ॥
मधुनन्दन लवण कुंवरे, मांडियो संग्राम ।
लड़त अधिको युद्धने मुख, मारी लीधो नाम ॥
रामना पुत्र आदिमां जेम, नारीपणे[६] उर मांही ॥

१ दुसाध्य, २ = चमरेन्द्र = ३ = त्रिशूल =
४ जम = कृतान्तना = वदन = ५ = कुबेर नामक वन = ६ लक्ष्मण =

जीतना घुरही बजाय, तेम एहने संहारी ॥ हैं ॥ १४ ॥
पुत्रनो वध सुणीने मधु, कोपियोरे कराल ।
शत्रुघ्न सूं आवी अडियो, लड़े ताम भूपाल ॥
अस्त्र शस्त्रे चोट करवे, अधिक शूरातेह ।
देव असुरों जेममाचे, तेम माची एह ॥ हैं ॥ १५ ॥
धनुष्य तो तब अर्णवा वर्त, अग्निमुख तेबाण ।
सुमरियां सानिध्यकारी४, हरण अरिका प्राण ॥
मरियो मधु जेम लुब्धक५, मारही मृगराज६ ।
घाव साल्यां मधु चिन्ते, हुओ एह अकाज ॥ हैं ॥ १६ ॥
शूल नायो ना हणायो, सुप्रभा ७ नो नन्द ।
जन्म हार्यो कोन सार्यों, काजहूं मतिमन्द ॥
सेविया नहीं देव जिनवर, न किया तप प्रकाश ।
पात्र जाणी दान नदियो, आणी चित्त उल्हास ॥ हैं ॥ १७ ॥
एह भावना भावतांरे, राखी शुद्ध परिणाम ।
लही दीक्षा प्राण छोड्या, हुओ सुर अभिराम ॥
स्वर्ग त्रीजे देव देवी, सारही तम सेव ।
देह ऊपर कुसुम वरस्यां, जयो जयो मधु देव ॥ हैं ॥ १८ ॥
देव रूपेशूले जयकरी, चमरसू एवात ।
शत्रुघ्ने छल बले कीधो, मधु नृपनो घात ॥
मित्रमार्यो सुणी खीज्यो, तातश्री चमरेन्द्र ।
शत्रुघ्न ने आजमारूं, एम कहे एसुरेन्द्र ॥ हैं ॥ १९ ॥
चलियो तब वेणुदारी, देव पूछे तास ।
किहां चाल्या मित्रहन्ता, तणो करवा नाश ॥
वेणुदारी फिरी भाखे, तेहनों अधिकार ।
अर्द्ध चक्री पुण्यपूरो, अधिक वर्ते वार ॥ हैं ॥ २० ॥
धरणेन्द्र पासे लही रावण, शक्ति जीती जेण ।

४ सहायकारी—५ पारधी—६ सिंह—७भरत—

तीन लोक तणां कोंठो, हण्यो रावण तेण ॥
कौण मधु तस पति सरिसो, प्रभु तणो बल पामी ।
शत्रुघ्ने मधु (ने) मारीयो छे, शान्ती हुओ स्वामी ॥ हैं ॥ २१ ॥
चमर भाखे शक्ति जीति, विशल्या सुपसाई ।
नारायण तो ना वखाणो, एहमें बल कांई ॥
तास अब्रह्म चारिणी नूं, सर्वयोग प्रभाव ।
तेहथी जई शत्रुघ्ननो, करूं ओछो आव ॥ हैं ॥ २२ ॥
एम कहीने चमर मथुरा, आवीयो ततकाल ।
लोक सुखिया देश नीको, देखीयो सुविशाल ॥
प्रथम तोए प्रजा पीडूं, पछी पीडूं ईश ।
एम चिन्ती रोग पीड़ा, करे विश्वाधीश ॥ हैं ॥ २३ ॥
रोगना उपचार कीधा, ताम विविध प्रकार ।
सन्नीपाती ने जेम मिश्री, तेम ए उपचार ॥
ताम नृप कुल देवी समरी, सा कहे सुविचार ।
मधु मार्या चमर कोप्यो, तेहना ए सुविकार ॥ हैं ॥ २४ ॥
लोक दुखिया देखी राजा, करे अरती अपार ।
छींकनो मूर्छायो माणस, जोवेहो दिन कार ॥
शत्रुघ्न तव चालो आयो, राम-लक्ष्मण पास ।
चमर कोप्यो केम कीजे करे ए अरदास ॥ हैं ॥ २५ ॥
देश भूषण कुलभूषण, आविया मुनि दोई ।
राम-लक्ष्मण-शत्रुघ्न सूं, वन्देवी बहु कोई ॥
शत्रुघ्न ने जो ग्रही मथुरा, कहो प्रभु कोण हेत ।
देश भूषण राम सुं कहे, पूर्व भव संकेत ॥ हैं ॥ २६ ॥
शत्रुघ्न नो जीव मथुरा, उपन्यो बहु वार ।
नामे श्रीधर विप्र हुतो, कामनो अवतार ।
राज पत्नि लीधो तेहो करवा भोग विलास ॥
जाणतुआं चोर मारयो, पामीयो ने त्रास ॥ हैं ॥ २७ ॥
हुक्म नृपने वधन भूमिये, आणीयोने क्षिप्र ।

एक दिवसे नट नाचे, देख हीं सो भूप ।
राये पुरुष पिछानियो, सोई अंक अनूप ॥
पासे तेड़ी करी दिलासा, जन्म भूमि दीध ।
अचले अंक सुमित्र थाप्यो, चिन्दु सिन्धु कीध ॥ हैं ॥ ३५ ॥
समुद्राचार्य नी पासे, लेई संयम भार ।
स्वर्ग पांचमें होई आया, मनुष्य लोक सक्षार ॥
शत्रुघ्न ए अचल हुओ, हेत मथुरा लार ।
अंक जीव कृतान्त आनन, सारथी तुम्ह सार ॥ हैं ॥ ३६ ॥
श्री प्रभापुर नगर नीको, श्री 'नन्दन' राय ।
धारणी उदर ऊपना सुत, सातही सुखदाय ॥
सुरनन्द श्रीनन्द श्री तिलक नामे जयन्त ।
सर्व सुन्दर चमर अने, जयमित्रजी गुणवन्त ॥ हैं ॥ ३७ ॥
श्री नन्दन रायसाथे, पुत्रसूं वैराग ।
मास१ जातक पाट थाये, साधवा शिव माग ॥
प्रीतिकर गुरु पासे संयम, आदर्यो ततखेव ।
लही केवल मोक्ष पहूतो, रायजी ऋषिदेव ॥ हैं ॥ ३८ ॥
भाई साते शुद्ध संजम, पालता विहरन्त ।
लब्धी जंघा चारणीरे, तपबले उपजन्त ॥
पुरी मथुरा आवी रहीया, तामते चौमास ।
छठ अट्ठम दश द्वादश, करे तप उपवास ॥ हैं ॥ ३९ ॥
पारणो जई अवर नगरे, करी आवे साध ।
तास तप आचार करणी, तणो अतिशय लाध ॥
चमरे कीधा रोग मिटिया, हुओ नगर निरोग ।
अधिक ओछव रंग घर घर, नहीं सुपने शोग ॥ ४० ॥
नीतिलपुर-परिखद ने मेल, धूरुने नय केत ।
एहतो औषधी प्राहे, साधु ना सुपिरोष ॥

१ एक मास वाले पुत्र को राज्या भिषेक कर अपर पुत्रों सहित दीक्षित बना । = २ पेराव (गुः) = २ घर संघ =

वायरो तनु फरसी आवे, जले पग धोवाय ।
वाय पाणी फरसियोंथी, रोग सघला जाय ॥ हूँ ॥ ४१ ॥
अयोध्या ए आवीयाते, पारणाने काम ।
अर्हदत्त सेठ गृह आंगणे, आवी ऊभा स्वाम ॥
भाव विन वंदना कीधी सेठे, संजम वन्त ।
साधु स्यां चोमासा मांहे, विहरन्ता विचरन्त ॥ हूँ ॥ ४२ ॥
शेठ जाणे पूछियेरे, किस्यो तुम आचार ।
भेख दीसे साधुनोरे, फिरो छांड्या कार ॥
एम चिन्तवतोही रहियो, दियो नहुए आहार ।
लेई ऊपासरे आया, जिहाँ छे अणगार ॥ हूँ ॥ ४३ ॥
आचार्य श्रीनमी धुतिवर, कियो उठी प्रणाम ।
अवर साधु नकरे वन्दन, जाणी शंका ठाम ॥
अशन कीधां पछि पूछयो, आचार्य ऋषि राज ।
पूज्य किहांथी पधारीया, किहां जासो आज! ॥ हूँ ॥ ४४ ॥
पुरी मथुरा थकी आया, जायस्यूं पण तत्र ।
एमकही ऋषि पांगूर्या, आविया था यत्र ॥
रूडा ऋषि संयमी शुद्धा, क्रयाने पालन्त ।
गगने आवे गगने जावे, दोष सहु टालन्त ॥ हूँ ॥ ४५ ॥
शिष्य पूछे सुगुरु पासे, कोणए निर्ग्रन्थ ! ।
सुगुरु भाखे साधु साचा, साधेही शिवपन्थ ।
लब्धि वन्त महन्त मुनिवर, मांहे को नवि दोष ॥
एह सुणतां शिष्य मनमें, करे अति अफसोस ॥ हूँ ॥ ४६ ॥
एह सांभली सोई श्रावक, करे पश्चात्ताप ।
मास कार्तिक सुदि-सातम, चाली आया आप ॥
करी वन्दना वीनवे तुम, गुणां भरीत आगाध ।
पाय लागीने खमाऊं, खमो मुझ अपराध ॥ हूँ ॥ ४७ ॥
सप्त ऋषि सुप्रसादथीरे, शान्ति सघले देश ।

सुणी कार्तिक पूणिमें, आवियोरे नरेश ॥
पाय नमी कहे साधुजीने, आहार लेवो मुझगेह ।
राज्य पिण्ड न ऋषि नेकल्पे, कहे मुनिवर तेह ॥ हूँ ॥ ४८ ॥
शत्रुघ्न तत्रफिरी भाखे, धन्य २ ताहरो धर्म ।
देव कृत यह रोग मिटियो, कर्या विन उपकर्म ॥
कोई दिन तुम्ह इहां ठहरो, अवर ठाम विहार ।
मतिकरो अवतार ताहरो, करन जग उद्धार ॥ हूँ ॥ ४९ ॥
सप्तऋषि कहे राय १नकरे, साधु ममता भाव
चालसूं नविरह्या खिणहीं, चरण गुणसूं चाव ॥
देव अरिहन्त नेजधारो, साधु सेवा साधी ।
शील समकित शुद्ध पालो, जेम न उपजे व्याधी ॥ हूँ ॥ ५० ॥
ढाल ए पचासमींरे, साधुनो उपकार ।
अछे महोटा नहीं छोटा, गगन ने विस्तार ॥
'केशराज कहे साधु गुणज्यूं, गरुड़ आयां साप ।
नाशही तिम साधु आयां, पापने सन्ताप ॥ हूँ ॥ ५१ ॥

दोहा—(सारंग रागे)

गिरि वैताढ्य विशेषथी, दक्षिण श्रेणी देख ।
'रत्नरथ राजाभलो, रत्नपुरं सुविशेष ॥ १ ॥
चन्द्रमुखी उदर ऊपनी, मनोरमा सुकुमारी ।
एके ने परणावसूं, राय पत्यो सुविचारी ॥ २ ॥
'नारद लक्ष्मण स्तवो, सब गुण लक्षण वन्न ।
भाग्यवती ए भामिनी, जो थाए ओ कन्न ॥ ३ ॥
'रत्नरथ राजानणा, कोप्या नाम कुँवार ।
गोत्रज वैर सिनारके अमर्ष चढ़े अपार ॥ ४ ॥
कथुं मतो ए कूटिने, नारद नाशी जाय ।
पुरी अयोध्या आवीयो, लक्ष्मण लाग्यो पाय ॥ ५ ॥
मनोरमानूं रूप पट, लियो लिखी देखाय ।

लक्ष्मण थयो अनुरागियो रूपे राच्यो राय ॥ ६ ॥
लक्ष्मण तबही चालियो, साथे हुआ श्री राम ।
राक्षस-खेचर सैन्यसूं, आई गया अभिराम ॥ ७ ॥
रत्नरथ निज पुत्रसूं, आवीकरी संग्राम ।
लक्ष्मण ते जीती लिया, वाज्या सुयश दुदाम ॥ ८ ॥
'मनोरमा लक्ष्मण भणी, पुत्री देई प्रधान ।
'श्री दामा श्री रामने, रींजया राजान ॥ ९ ॥
साधी दक्षिण श्रेणीसहु, साध्या खग भूपाल ।
पुरी अयोध्या आवीया, राज्य करे सुविशाल ॥ १० ॥
लक्ष्मण ने अन्ते ऊरी, सोहे सोलह हजार ।
आठ अछे पट रागणी, इन्द्रणी अवतार ॥ ११ ॥
विशल्या आदिकरी, रूपवती वनमाल ।
'कल्याणमाला हतुर्थी, रत्नमाला सुखमाल ॥ १२ ॥
'जीतपद्मा प्रगटीमहा, अभयवती अवधार ।
'मनोरमा मनमोहनी, ए आठे पटनार ॥ १३ ॥
अढीसो नन्दन हुआ, शूर महा शृंझार ।
जाया अग्र महेपियां, ए आठे सुत सार ॥ १४ ॥
विशल्या नो श्रीधरु, रूपवती नो एह ।
'पृथ्वी तिलक सुहामणो, गुणमणि केरो गेह ॥ १५ ॥
वनमाला नो अर्जुन, उपमा अधिकी जास ।
जीतपद्मा नो जाणीये, श्री केशी सो उल्हास ॥ १६ ॥
'कल्याणमाला नोकह्यो, मंगल नाम अमन्द ।
'सुपार्श्व कीर्ती कल्पतरु, मनोरमा नो नन्द ॥ १७ ॥
रत्नमाला नों विमलजी, विमलसो नाम परिमाण ।
'अभयवती नो एसही, सत्यकीर्ति सुनाम ॥ १८ ॥
चार कही श्री राम ने, सीता सती सरेख ।
'प्रभावती ने रतिनिभा, श्रीदामा सुविशेष ॥ १९ ॥

गर्भधरं सीता सती, भलो सुपन अविलोय।
आवेचवी विमानथी शरभ सजोडे दोय ॥ २० ॥
करेप्रवेश निज आनने, चीनचीयो भरतार।
पुत्र युगल तुम्ह प्रसवसो, नहीं सन्देह लगार ॥ २१ ॥
शरभ विमान थकीचव्या, सुत मुझ अनुसदाय।
होसे ए जाणोसही, कहे अयोध्या राय ॥ २२ ॥
सीताकहे स्वामीसुणो, एशी आरती ईश।
काम सकलही पाधरो करसे थी जगदीश ॥ २३ ॥
प्रीतघणी पहेलीअछे, प्रभुनी सीता साथ।
अत्र ओधान धर्यांपछी, अति सन्मानी नाथ ॥ २४ ॥
शौक्य बलेमनमें घणूं, अमर्ष महोन जाय।
पणचलको चालेनहीं, ताम करे उपाय ॥ २५ ॥

ढाल एकावनमीं—

तर्ज हे रुक्मणी त तोसाची श्राविका—

शूलीथी अति आकरी, शूली शौक्य जोय। हो रघु पति।
शौक्य सरीसी शूलीका, अवरनदीसे कोय। हो रघुपति ॥ १ ॥
शौक कहोक्यू-नाकरं॥टेर॥ मुई दुःखदाईहो।।रघु।। पूठन छण्डे पापणी
फिट फिट एह सगाई हो रघुपति ॥ शोक ॥ २ ॥
शस्त्र थकी तीखो खरो तास तीखो प्रताप हो रघु० ।
शस्त्र छिप्यो रहे म्यान में, लिपां उठे आपहो र० ॥ शो०॥३॥
सापणी ही थी सापणी, सापणी शोक कहायहो र० ।
सापणी मंत्रे खीलीये शोक न क्यूं ही खिलाय हो र. शो० ॥४॥
आग थकी ऊनी खरी, ऊनी शोक ज होय हो ॥ र. ॥
कोऊ१ बन्हे जिम तीनरी, तेम ए बल्ती जोय हो ॥ र० ॥शो० ॥५॥
तबलग दूधज सावतो, जबलग कांजी दूरहो ॥ र. ॥
फाटे कांजी मेलव्ये, ए दृष्टान्त हजूर हो ॥ र. शो० ॥ ६ ॥
अभयं कमाईया घणा, दंगाम था भेद हो ॥ र. ॥
प्रबल बापने रावने, फाटी गया मन भेद हो ॥ र. शो० ॥७॥

आटो आछो तो घणो, कोलहे तूटे ग्राकडो ॥ र. ॥
माणस फेरविया फिरे, जेम फिरन्तो चाक हो ॥ र. ॥शो०॥८॥
बाहिर२ मिलणे मिलीरही, मांहे कटका तीन हो ॥ र. ॥
काकड़ीया में तेवसी, लेगो देखी प्रवीन हो ॥ र. ॥शो० ॥९॥
पारो३ चानी सूं मिल्यो, हींगलू कहिवाय हो ॥ र. ॥
सोहगीना संयोगथी, छटकी अलगी जाय हो ॥ र. ॥शो॥१०॥
ंबा जांबू आंवली, चोथो जूओ बोरहो ॥ र. ॥
ापर कोमलता घणी, मांही अधिक कठोर हो ॥ र. शो० ॥११॥
त्यवती साची सती, वसुधा मांही विख्यात हो ॥ र. ॥
ाक्यां सा हलूई करो, अवरां केई वातहो ॥ र. ॥ शो० ॥१२॥
ाक्यां कहे सीता तणी, म्हारे तूं सिरदार हो ॥ र. ॥
ाभे अमृत केलवे, काती हृदय मझार हो ॥ र. ॥ शो० ॥१३॥
क दिवस रसरंग में, पूछे चित्तमें चावहो ॥ र. ॥
ावण-रूप सोहामणूं, हमने लिखी देखाव हो ॥ र. शो० ॥१४॥
ाता कहे सूं जाणीये, केहवो थो तस रूपहो ॥ र. ॥
तो कदहिन देखीयो, देखिया पांव अनूपहो ॥ र. शो० ॥१५॥
ा भाखे सुन सुन्दरी, सोई लिखो थे पांव हो ॥ र. ॥
ती धूर्तपणो करे, सीता सरल स्वभाव हो ॥ र. ॥शो० ॥१६॥
ाता खिलि देखाड़िया, रावण पाय उदारहो ॥ र. ॥
ाक्यां ढांकी राखिया, पांव तणा आकार हो ॥ शु० ॥१७॥
ोष्ठी विसर्जी वेवसूं, निज निज स्थानक जातहो ॥ र. ॥
ाता ओछी पाड़वा, केवो घाले घाठ हो ॥ र. ॥ शो० ॥१८॥
ग-आकार देखाविया, जब आया श्री राम हो ॥ र. ॥
छयां ए उत्तर दियो, व्हाली त्रियाना कामहो ॥र.॥शो० ॥१९॥
तो पावज पूजिये, जो तस साथे नेह हो । र. ॥
ात न मानी रामजी, शोक्य पलेखा एह हो॥ र. ॥शो० ॥२०॥
ाप आपणी दासीने, तेड़ीने ते नार हो ॥ र. ॥

गली गली बाजार में, सारी पूरी मझार हो ॥ र. शो० ॥ २१ ॥
सीता चित्त रावण वसे, सघले पाडे साद हो ॥ र. ॥
साल सरिसो सालसे, लोक मुखे अपवाद हो ॥र. ॥शो० ॥२२॥
मास वसन्त विराजियो, प्रभु तिय साथ कहन्त हो ॥ र. ॥
गर्भ ही खेद निवारवे, आयो एह वसन्त हो ॥र.॥शो० ॥२३॥
'महेन्द्रोदय' नामथी, आछोछे उद्यान हो ॥ र. ॥
विविध प्रकार विनोद नो, मांहे म्होटो थान हो ॥र.॥ शो०॥२४॥
क्रीडा करवा कारणे, चाल्यो जावा आज हो ॥ र. ॥
सीता कहे मुझ दोहलो, ऊपन्यो श्री महाराज हो ॥र.॥ शो० ।२५।
तबही राम मंगावीया, बाग तणा वर फूलहो ॥ र. ॥
सीता दोहल पूरवा, रचिया मण्डप अमूल हो ॥र.॥ शो० ॥२६॥
पछे पटरानी सूं प्रभु, वनमें आया चाल हो ॥ र. ॥
विविध वसन्त विनोदमें, रचि रह्या छे ख्याल हो ॥र.॥शो० ॥२७॥
एटले सीता जीतणुं, फरक्यूं दक्षिण नयन हो ॥ र. ॥
शंकी मन मांही घणी, लहिये कोई कुवयन हो ॥ र. शो०॥२८॥
सीता प्रभुजी सूं कह्यो, करे विचार नरेश हो ॥ र. ॥
एतो एहवूं देखीये, उपजे कोई क्लेश हो ॥ र. ॥ शो० ॥२९॥
राक्षस ने हाथे चढी, दीठो राक्षस देश हो ॥ र. ॥
देव नतो राजी थयो, सन्तापनां विशेष हो ॥र.॥ शो० ॥ ३० ॥
दिल गयो वर्ष वरोवरे, आरती मांहे उदास हो ॥ र. ॥
पार न पामे केवली, गणेतां दुःख नाम हो ॥र.॥शो० ॥३१॥
प्रभुजी दे आसासना, एम कहन्त महन्त हो ॥ र० ॥

---

१ गाडामें अति रुकोंटो = इन गाथा में कविजन शोकको गाडा अथवा तुरा की उपमा देते हैं। यह बात समझ में तब "गाडामां में" इस ठिकाने "गारडिया में" ऐसा होना चाहिये। कारण कि ग्वाल गाड़ा होता है। २ रावरका [illegible] से पार नहिं मनमाहे। इसमें [illegible] गाड़ा [illegible] पार नहीं हो सकता है। इसलीये शोक को गाड़ा की उपमा देते हैं। (वाणी-भेद पाठान्तर)

सुख दुःख आपद सम्पदा, लागीलार रहन्त हो ॥र०॥शो० ॥३२॥
राम कहे घर जाई ने, कर कोई उपकर्म हो ॥ र० ॥
दान शीयल तप भावना, साचवे श्रीजिन धर्महो ॥र०॥शो० ।३३।
जिन धर्म नी सेवा करे, भाव विशुद्ध त्रिकाल हो ॥ र० ॥
आंबिल एकज धान्यनो, करत मिटे जंजालहो ॥र०॥शो० ॥३४॥
सीता आवी मन्दिरे, रहती सम्बर मांहि हो ॥ र० ॥
दानादिक विधि साचवे, आदरसूं उच्छाहिहो ॥ र० ॥ शो० ३५।
यलकर्या जगमें जिके, कोयन राखी खन्तहो ॥ र० ॥
एजिन वचने जाणजो, भावीहोवे ते अन्त हो ॥र०॥ शो० ॥३६॥
विजयसूर सुरदेवजी, पिंगल ने मधुमानहो ॥ र० ॥
कालक्षेप काश्यप कह्यो, शूल सुधर अभिधानहो ॥र०॥शो० ३७॥
ए साते अधिकारीया, म्होटा मेरु समान हो ॥ र० ॥
खबरदार करी थापीया, पुरुष महा परधानहो ॥ र० ॥ शो०३८॥
राघव आगे आवीया, ऊभाकरिय प्रणामहो ॥ र० ॥
थर हर लागा धूजवा, न सहाय प्रभु घामहो ॥ र० ॥ शोक॥ ३९

क्षेपक राधेश्याम रामायणमें से--

राज सभा का दूतथा, विजय नामी एक ।
लाताथा वह सभामें, पुर-सम्वाद अनेक ॥
एक रोज ऐसी खबर, लायाथा बुद्धिवान ।
जिसने उसके लिएभी, कर डाला हैरान ॥
सोचेथा खड़ा खड़ा विजय, कैसे यह खबर सुनाऊँमैं ?
कुछनहीं समझमें आताहै, क्योंकर यह वज्र गिराऊँ मैं?
मुंह जभी खोलता हूं अपना, तो हृदय मना कर देता है ।
रखता हूं मुखको बन्द अगर, कर्तव्य खबर तब लेता है ॥
अच्छा नौकरी प्रणाम तुझे, आगे यह काम न करना है ।
अबतो नौकर जिस बात का हूं, वह बात सभामें धरना है ॥
छाती तू पत्थर की होजा, तब बोलूं मैं उन बोलोंको ।

वाणि तूं घोर घटा बनजा, तब बरसाऊँ उन ओलों को ॥
माता तुम्ह मुझे क्षमा करना, अपना मत नहीं सुनाता हूं।
तुम जैसे सतपर कायम हो, वैसेही फर्ज चुकाता हूं ॥
इस तरह हृदय को दृढ़ करके, दर्बार में अनुचर बोल उठा।
राजेश्वर! बस इतना ही कहा, फिर कांपा फिर कुछ डोल उठा ॥
फिर कहा आज यह खबरें हैं, इस वक्त क्षमा कीजिये मुझे।
एकान्त समय में अर्ज करूं, ऐसी आज्ञा दीजिये मुझे।

वस इतनाही कहसका, विजयचन्द्र का मुख वैन।
आगे फिर वाणिरुकी, भरे नीरसे नैन ॥
दशा देखकर दूतकी, बोल उठे श्री राम।
कह डालो क्या बात है, रुकने का क्या काम ॥

तुमतो हो सभा-दूत भाई, नितकी खबरें लाने वाले।
एकान्त समयके फिकरे हैं, सबको भ्रम पहुंचाने वाले ॥
यह सत्य है कोई बात आज, ज्वाला होकरके भड़की है।
कारण इस समय अचानकही, मेरी भी छाती धड़की है ॥
वामांग फड़कते हैं मेरे, व्याकुलता बढ़ती जाती है।
होता है विदित मेरे तनसे, आत्मा सी खिंचती जाती है ॥
फिरभी मैं आज्ञा देता हूं, जो कुछहो प्रगट जरूर करो।
एकान्त समय में राम सुनें, इस भेद-भावको दूर करो ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे भो भाइयो !, कां तुम्ह आरति वन्त हो ॥ र. ॥
कां कम्पो तरुपातज्यूं, भाखे विजय मदन्तहो ॥र.॥ शो० ॥४०॥
प्रभुजीने इक वीनती, पण मोते न कहिवाय हो ॥ र. ॥
सांभलतां अमुहा मणी, छे प्रभु ने दुःखदाय हो ॥र.॥शो० ॥४१॥
अण कहियां लागे सही, स्वामी द्रोह नुं पाप हो ॥ र. ॥
दुनहीने पड़ियो अछूं, ग्रही व्याघ्र दुन्दशी माप हो ॥ र. ॥ शो०॥४२
राम कहे अभय मानजो, जीव तणूं तो दान हो ॥ र. ॥
तुमने मैं दीधूं सही, भाखे लही प्रभु मानहो ॥र.॥ शो० ॥ ४३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रोते रोते दूत तब, लगा सुनाने हाल ।
क्षीर-सिन्धुमें शेष नें, दिया जहर को डाल ॥
बोला-पुरवासियोंमें, उठा प्रश्न महान ।
जिसका श्री महाराज से, हैं सम्बन्ध प्रधान ॥

ढाल मूलगी—

देव ! सुणों देवी तणा, अति अपवाद प्रसिद्ध हो ॥ र. ॥
जण जण ने मुख आकरो, कान न जाये दीध हो ॥र.॥ शो ४४॥
सु सवादो फल देखीने, कहो कौण न खाय हो ! ॥ र. ॥
फूल सुगन्धों पेखके, सूंघ्यां विन न रहाय हो ॥शो०॥ ॥ ४५ ॥
लेखण ने लिखि देखिये, घटिका जेम घसाय हो ॥ र० ॥
न रहै त्रिया विण भोगव्यां, नरए निरतो न्यायहो ॥र०। शो० ।४६
मांसाहारी मानवी, न त्यजे पायो मांस हो ॥ र० ॥
लम्पट नारी पामिके, नत्यजे सोबत तास हो । र०॥शो ॥ ४७ ॥
भूखो भोजन पाय के, न रहे तेह लिगारहो ॥ र० ॥
नरहे तेम त्रिय पामके, नरजे विषय विकारहो ॥र०॥शो ॥ ४८ ॥
अम्बर थी तूटे घणा, पंखी पंखणी पेखिहो ॥ र० ॥
क्यों वचे ओ पंखियो, आगे ऊभी देखि हो ॥र०॥ शो ॥ ४९ ॥
सांभली जे छे एहवी, लोकां केरी वाचहो ॥ र० ॥
ज्ञाण पणे सुविचारतां, देखाये पण साच हो ॥ र. ॥ शो० ॥५०॥
लेई गयो पण्र एकली, एकाकी ही आयहो ॥ र. ॥
काल घणो घर तेहनें, रही पण देखाय हो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५१ ॥
रावण तो विण भोगव्यां, रहियो होसे केम हो ॥ र. ॥
जाण्यो करसूं आपणो, छोतो सूंधूं एमहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५२ ॥
छोती न लागे छे सही, म्होटा भांडा जेम हो ॥ र. ॥
जगमें जश अपयश पणूं, न विचारे छे प्रेम हो ॥र.॥शो० ॥५३॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावण के कारण माताजी, थोड़े दिन रहीजो लङ्कामें ।

बस इसी बातको दोष समझ, कुछ लोग पड़े हैं शङ्कामें ॥
कहते हैं–धर्म नीति रक्षक जब, रघुकुल मणिकी गद्दी है।
तो पर–घर रह आनेवाली, नारी क्यों घरमें रक्खी है ? ॥
रैय्यत के पहिले वाजिब है, अपने पर राज करे राजा।
निर्दोष रहे जिसनें शासन, वैसाही काम करे राजा ॥
शङ्कित दलना का यह आन्दोलन, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
राजा का इसमें चुप रहना, दलका बल और बढ़ाता हैं ॥

डाल मूलगी—

अपजश एतो ए बड़ो, जाम अमे न समाय हो ॥ र. ॥
प्रभु ने आवी जणावीयो. कीजे ज्यूंही सुहाय हो ॥र.॥ शो०॥५४॥
नाहना मुखथी महोटिका, बोले छे ए बोल हो ॥ र. ॥
सो वातों की एक है, जगमें जशही अमोल हो ॥र.॥ शो० ॥५५॥
आदि नाथ आदि करी, आज लगे ए वंश हो ॥ र. ॥
कोई न लागी कालिमा, पृथ्वी माहें प्रशंस हो ॥र.॥ शो० ॥५६॥
कीर्ति तो आजन्मनी, मतिहारो रघुनाथहो ॥ र० ॥
सीताहुई नाहुई, बहुलो छे तिय साथहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५७ ॥
वज्राहत होई रह्या. एतो बात सुणन्त हो ॥ र. ॥
सीता साथे कालजो. काढे बो एकन्त हो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५८ ॥
भीरज आदरी बालीया, महत्तरा[१] धे लाभ हो ॥ र. ॥
भली जणावी वातए, करसुं जशनो काम हो ॥र.॥ शो० ॥ ५९ ॥
नहीं दिऊं जश जायवा, त्रियातो कौण मातहो ॥ र. ॥
विसर्ज्यां ने वेगसुं, दुःख हैं ये न समान हो ॥र.॥ शो० ॥ ६० ॥
एकावनमी ढालमें. सकल मिल्या शुभ साज हो ॥ र. ॥
केशराज सीता तणो, शोकये कीधां काजहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ६१ ॥

दोहा धन्या श्री रागे—

सांझ पधार्या रामजी. गुप्तपणे काजे नाद ।
जिहां जावे तिहां सांभले, जण जण मुख अपवाद ॥१॥
रावणजी लेई गयो, तिहां रह्या चिरकाल ।

जाणी सती आणी सही, राम अपूठी चाल ॥ २ ॥
वानी देखी वस्तुनी, सौजन करे आहार ।
नारी रूप विलोकवे, ए जगनो व्यवहार ॥ ३ ॥
लेई गयो झख मारवा, झख मारणो गमार ।
तिहांते झख मारी हसे. इहां किस्यो विचार ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज समझ नर पाणी पतासा—धूलचंदजी सुराणा कृत—

समझ नर भावी बल भारी, चेत नर। इस पर जोर चले नहीं किसका सुनजो नर नारी ॥ टेर ॥ फिरता २ धोबीपाड़े, रघुवरजी आवे, २, जिन २ मुख की वातां सुनतां दिलड़ो दुःख पावे। धोबी द्वारे धोवण ऊभी आडो खड़कावे, खोल किवाडी पियुडा म्हारा जिवडा घबरावे। रजक रीस में आकर कहता वात सुणों म्हारी. ॥ इस पर० ॥ १ ॥ रात अंधेरी अर्ध निशी में बाहिर क्यों भटके ॥ २ ॥ कुमति–कुलछणनार–कलेशण मुझ उर में अटके ॥ जा जा जा तूं धोबी बोले घरमें नहीं राखूं ॥ ७ ॥ राम सरीसो मैं नहीं रण्डी घात सची भाखूं। विगरी सीता पाछी लायो सुनी वात खारी। रामजी सुनी बात खारी। इस पर० ॥ २ ॥

(दोहा)

एम सुणीघर आवीया. राम न लाई वार ।
चरचे चौखा चौकसी, भेज्या नगरी मझार ॥ ५ ॥
ओही कथानो केहवो ओही जन समुदाय ।
आवी सुणावे रामने. तुरत फिरियो नहीं वाय ॥ ६ ॥
जेहतणे तो कारणे, रावणनो क्षय कीध ।
फिट विधि? तें सीताभणी, कौण अवस्था दीध ॥ ७ ॥
लक्ष्मणजी पण सांभली. लोक मुखे ए वात ।
जाणे पड्यो आकाशथी, वज्र तणो निर्घात ॥ ८ ॥

ढाल बावनमी तर्ज रेजीव! जिन धर्म कीजीये—

लक्ष्मणजी तो एम वीनवेहो, राघवसूं कर जोडी ।

कांकीजे तोड़ा तोडी, नहीं सीता मांही खोड़ी ॥
ल्योसाच कढाईन्होडी ॥ ल ॥ १ ॥

पाणीमें पत्थर तरे. पश्चिमदि शेदिनकार।
उगन्तो सही जाणीए, सीतान लोपे कार ॥ ल० ॥ २ ॥
वैश्वानर शीलोपड़े, अमृत मारणहार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ३ ॥
सायरना जल भीतरे, उडे रेणु अपार।
तोए सहीकर जाणजो सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ४ ॥
पंकज पत्थर ऊपरे, पावे अतिविस्तार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ५ ॥
सूर्य आथमियां थकी, चेते, वासर चार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ६ ॥
मापतणे मुख ऊपजे, अमिय तणो रस मार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ७ ॥
साधु नाम ससारमें, जो पामे कलिकार।
तोए सही कर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ८ ॥
ताल कूट विप खाइयां, आपुनणो अधिकार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ९ ॥
अंधकार सूरज करे, चन्द्रझरे अंगार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १० ॥
निर्दय धर्म लहेपणो, अन्यायी जगधार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ११ ॥
काव्य कला नांछेपणो, मजानो१ परिहार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १२ ॥
क्षमा दया विण पांचही, तपही तपा प्रकार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १३ ॥
अन्यमति श्रुत सायरू, अवगाहिये निसार।

१ निर्बुद्धि।

तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १४ ॥
आंख विहूणो वांछही, देखूं सब संसार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १५ ॥
चंचल चिन्तनो मानवी, ध्यान धरे सुखकार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १६ ॥
प्रभु तुम्हने नवि बूजिए, अबलानूं अतिरोष ।
सदोषही नवि छांडिये, एतोछे निर्दोष ॥ ल० ॥ १७ ॥
राम कहे महत्तर२ नगं, लाधी मुझही सुणाय ।
मैंपणकांने सांभली, हेरा३पण कही आय ॥ ल० ॥ १८ ॥
वातकाए अपजशतणी, मुझतो सही नजाय ।
सीता काढूं घरथकी, जेमए कहण मिटाय ॥ ल० ॥ १९ ॥
दांतांदेई आंगुली, तबभाखे लघु भ्रात ।
संसअछे तुम्ह माहरो, फिरिमत काढो वात ॥ ल० ॥ २० ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

लक्ष्मण बोला किसतरह, हैयहठीक उपाय ।
जांच लंकामें होचुकी, फिरभी त्यागी जाय ॥

हेदीनानाथ दयाकरिये, छाती छलनी होजातीहै ।
शब्दों की नहीं लड़ीहै, यह कोंटोंकी लडी दिखातीहै ॥
निर्दोपिनी नारीदण्डपाए, क्यायह अधर्म का काम नहीं ।
ऐसेकामों को करकेक्या, रघु कुलहोगा बदनाम नहीं ।
अबला अर्द्धांगिनी महासती, बेखता निकाली जातीहै ॥
पृथ्वी आकाश देखतेहो, ! कोशलपुर कैसाधातीहैं ॥
धिक्‌है उसप्रजाकी रक्षापै, जोयुं शिरपर चढजाय प्रजा ।
सन्तोष-पूर्ण शासनपरभी, पूरा सन्तोषन पाये प्रजा ॥
हम तरह तरह की शाक्षीसे, सन्तोषित करदेंगे सबको ।
मातामें कोई दोषनहीं, यह साबित करदेंगे सबको ॥

---

१ राज कर्मचारी २ जासूस (भेद)

'दबजाना ऐसे अवसरपर, अपनी भीरुता बताता है।
सच्चा चुपरहे समयपरतो, झूठा सच्चाहो जाताहै॥
फिरनहीं हाथ यहआयेगा, जोहाथांसे खोजायेगा।
गृह लक्ष्मीकोयदि त्यागेंगे, तो गृह उजड़हो जायेगा॥

रोषधरी लक्ष्मणकहे, हमकोतोहै क्रोध।
चलो प्रजाके सामने, डटकर करे विरोध॥
प्रभुफिर बोलेधैर्यधर, सोचो छोटे राम।
नहीं खिलौनाहै कोई, है शासन का काम॥

शासन जबतलक नहींहोगा, अपनी इच्छाओंपर मनपर।
तबतलक प्रभाव पड़ेगाक्या, पुर परिजन और पराजन पर॥
रैय्यत पर भेंट चढ़ादेंगा गृह को गृह लक्ष्मी को तनको।
पर रैय्यत के होकर खिलाफ, कर सकता राम न शासनको॥
जिस जगह देवों से जांच हुई, आन्दोलन वहां न उठा है।
कपि-निश्चर-दल विश्वास सहित, सीता पर श्रद्धा रखता है॥
शंकित है अवध इसलिये, मैं सीता का त्याग न करता हूं।
मन से तो हो सकता ही नहीं, तनसे यह साधन करता हूं॥

ढाल मूलगी—

पड़ह फिरायो शहरमें, मुंह जोड़से जे केई।
ध्वंस करूं श्रीरामनुं, मैं मारें वो नेई॥ ल० ॥ २१ ॥
लोक वचन सीता सती, क्यूं छोडे नरेश।
उतावल अब छे घणी, पाछे हाथ घसेत॥ ल० ॥ २२ ॥
मून्ये मूंगी छै घणी, मूढंगी नहीं लगार।
सीतानो संसार में, भाख्यो धन्य अवतार॥ ल० ॥ २३ ॥
ओ दिन क्युं न विचार्यो ही, जो दिन पड्यो वियोग।
माणस मुओं थी घणो, करता था अति शोग॥ ल० ॥ २४ ॥
छाती फाटीनी थी घणी, आंसू नो झड़ लाग।
बरसनो ज्यूं भाद्रवो, सीता पांछे राग॥ ल० ॥ २५ ॥

आज हुई अलखामणी, सुणी लोक ना बोल ।
मति रे विमासो भाईजी, सीताछे निर्मोल ॥ ल० ॥ २६ ॥
क्षण रूसे तूसे क्षणे, भेद न कोई लहाय ।
बाहिज दृष्टि भासीया, लोक नहीं समझाय ॥ ल० ॥ २७ ॥
राम कहै ए साचछे, परघर भंजन लोग ।
आविमिल्यो ए एहवो, दैव तणे संयोग ॥ ल० ॥ २८ ॥
जब लग नयणे न निरखही, कही न कहणी कोई ।
कही कहीणी घावली पडे, अधिक असाता होई ॥ ल० ॥ २९ ॥
सज्जन तो कोपे नहीं, कोपि न भजे विकार ।
सज्जननो गुण ए वडो, वाल्यो वले ते वार ॥ ल० ॥ ३० ॥
सायर सायरता भजे, न हुए गांव–तालाव ।
सायर शरनो आंतरो, एम भाखे जिनराव ॥ ल० ॥ ३१ ॥
एक नरा एकज घरा, एकज पुरी प्रसिद्ध ।
दूर किया महु जगत में, अपजश पडहो दीध ॥ ल० ॥ ३२ ॥
नारी सीता तुम्ह छांहड़ी, सुख दुःख लागी लार ।
छोडावी छूटे नहीं, कीधां कोटि प्रकार ॥ ल० ॥ ३३ ॥
कहे विभीषण रायजी, सीतानी दऊं साख ।
राजा रावण आगलही, आपण आपो राख ॥ ल० ॥ ३४ ॥
उपद्रव अति आकरा, करी डरावी एह ।
दिलासा देई ने करी, तेही प्रभु दीधो छेह ॥ ल० ॥ ३५ ॥
जब आई मण्दोदरी, तब कीधी अतिभांड ।
बोलावी दूती कहे, मूंडे पड़ावी खांड ॥ ल० ॥ ३६ ॥
रावण साथ लडो घणूं, काणी सकलही चोर ।
फिट फिट कही भतलावीयो, एकही शील सजोर ॥ ल० ॥ ३७ ॥
पूज्य प्रसाद तुम्हारड़े, करी न कोई परवाह ।
कणावड़ी जे को हुवे, तो भय धरे अगाह ॥ ल० ॥ ३८ ॥
सूंस करूं एहनीवती, जो भाखो तुम्ह ईश ।

सतियों मांही शिरोमणि, सीता विश्वावीश ॥ ल० ॥ ३९ ॥
लक्ष्मणजी भाखी रह्यो, भाखी रह्यो लंकेश ।
राम न मानी एकही, दिन तुझने आदेश । ल० ॥ ४० ॥
सीता थी विरचे नहीं, कोडी प्रकारे राम ।
वात कहन्तां विरचियो, जब सांभल्यो कुनाम ॥ ल० ॥ ४१ ॥
सासु सुसरा सब फिर्या, मात पिताने भ्रात ।
एह कुनाम थकी फिरी, हनुमन्त केरी मात ॥ ल० ॥ ४२ ॥
ए बावनमी ढालमें, जेही जेम कीधां कर्म ।
'केशराज' तेम भोगवे, ए जिन मतनो मर्म ॥ ल० ॥ ४३ ॥

दोहा वैराडी रागे—

कृतान्त मुख सेनापति, साथे कहे श्रीराम ।
सीता काढो घरथकी, वेग करो ए काम ॥
अटवी मांहे मेलजो, जिहां न कोई नी आश ।
आपणही मरि जायसे, पामी ने अतित्रास ॥ २ ॥
पगे लागीने रोवतां, करतो अधिक विखास१ ।
लक्ष्मण भाखे राम सुं, स्वामी सुणो अरदास ॥ ३ ॥
घर बाहिर किम काढीये, सीता सरीसी नार ।
गर्भवती सुविशेष थी, देखो वात विचार ॥ ४ ॥
मति बोलो मुझ आगले, बोल्यां में नहीं सार ।
काल रूप प्रभु होई रह्यो, अहि अहि कर्म विकार ॥५॥
रोवन्तो घर आवीयो, कोई न चाले सान ।
वात विचार पड़ी घणुं, माई बाप समान ॥ ६ ॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायण में से—

लक्ष्मण रोते रहगया, गया हृदयगी डोल ।
ऊंगे ढालने पर वहां, चली न दासम टोल ॥
आज्ञा दे रघुवर उठे, किया न और विचार ।
उस लक्ष्मणसे उसदिवस, हुआ नहीं आहार ॥

१ दुःख=

अपने मन्दिर के निकट, सर पृथिवीपर टेक ।
मनही मन चिन्ता लखण, करन लगे अनेक ॥
किसभांति आज्ञा का पालन, कर डाले आज्ञाकारी यह ।
किसतरह विसर्जन देवीका, मन्दिरसे करे पूजारी यह ॥
है एक ओर आज्ञा-पालन. दूसरी ओर संकट अतिहै ।
उगले न वने खाये न वने, वह साप छछुन्दरकी गतिहै ॥
हे विधना! साध्वी सीतापर. क्या वज्राघात किया तूने ।
जोमंगल-आश दिनोंसेथी. उसमें उत्पात कियातूने ॥
गृहीणीकापद जिसनेपाया, वह त्याज्य आजयों अतिशयहै।
न्यायाधीश्वर यहन्यायहैतो, न्यायालय अन्यायालयहै ॥
पूछे कोई उसके दिलसे. जिसपर यह आफत आतीहै ।
पति-सेवाकरती हुई सती, पति-द्वारा त्यागी जातीहै ॥
मैं खूबजानताहूं सीता. निर्दोषिनी निष्कलंकिनीहै ।
गुणखानीहै क्षत्राणीहै, विदुषीहैं जनक नन्दनीहैं ॥
इन्ही खयालोंमें लखण. पड़े एकदम रोय ।
मुखसे यह निकला प्रगट, विधना कैसी होय ॥

दोहा मूलगा—

गिरिसमेतनी जातनो, दोहलोकरो प्रमाण ।
आज्ञा प्रभुनी छेकहै, सेनापति रे सुजाण ॥ ७ ॥
भद्रपणे साभामिनी, ऊठी चालो जाम ।
शकुन वर्जना अवगुणी, चाली जाये ताम ॥ ८ ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

कौशलके राज-मार्गसेजब, वहरथ जंगलको जाताथा ।
पीछेहटताथा अन्धकार, आगे प्रकाश दिखलाताथा ॥
सचमुच उसदिन का वह तड़का, दुःख सुखसे मिला सवेराथा ।
कोशलके लिये अंधेराथा, जंगलके लिये उजेराथा ॥
आकाशके तारे फीकेथे, चन्द्रमा उदासहो रहाथा ।
कणनहीं ओसके गिरतेथे, पृथ्वीपर व्योम रो रहाथा ॥

दूसरी ओर लालिमालिये, सूरज रुक रुक कर उगताथा।
उनमोती जैसी बूदांको, अति शीघ्र हंस सम चुगताथा॥
जबसाफ होगया सबमतला, तबनाची डाली हिलमिल कर।
अवलोक प्रकृतिका यह रहस्य, सबकली हंसपड़ी खिल खिल कर।
पुष्पोंके केदल वृक्षोंको तज रथ-पथ परआय बिखरतेथे।
पक्षीअपने मीठे स्वरसे, माताका स्वागत करतेथे॥

दोहा मूलगा—

पवन गतिए प्रेरीदियो, सारथी ए रथसार।
गंगासागर ऊतरी, पहूंतो पेलेपार॥ ९॥
'सिंहनी नाद' अरण्यथी, आगेन चले सोई।
आंखे आंसु नांखतो, सीता सामो जोई॥ १०॥
कह्योन जाये कांईहीं, आवेहै योभराय।
फिटफिट जन्म सेवकतणो, काम दिया नटलाय॥ ११॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायणमेंसे—

कहताहूंतो खुलतीनजुबां, चुपरहनेमें दम घुटताहै।
वह गाफिल कर्ज दारहूंमें, जोभीतर भीतर लुटताहै॥
आज्ञाका बच्छीं रुप मीने, माराहै मुझ हतभागीके।
यह अत्याचार धर्मकाहै, जो शिरपरहै अनुरागीके॥
बस इतनाही कहसके, नयनों वर्षे नीर।
धीरहृदय पलमात्रमें, फिरहोगया अधीर॥
निकले सिंहनी गुफासेज्यों, अपने शिशुका रोदन सुनकर।
रथसे उतरी त्यों सीता मात, सारथीका रूदन-कथन सुनकर॥
बोलीं-स्वामीकी आज्ञाको, पहिचान भूलहोहै।
दासीकोनो यह्राभी, मामूली छोटी-भूलहोहै॥
वेमेरे और तुम्हारेक्या, सारेही जगके हितकरहै।
सूरज वंशी राजेश्वरहै, रघुकुलके गौरव रघुवरहै॥
वेवहां फैसलेछोडेंगे, जबराहि विश्वके प्रेमकाहै।
तुम्ह धीरज भरकर यह कहदो, दासीको भ्रमआज्ञाहोहै॥

अपने मन्दिर के निकट, सर पृथिवीपर टेक ।
मनही मन चिन्ता लखण, करन लगे अनेक ॥
किसभांति आज्ञा का पालन, कर डाले आज्ञाकारी यह ।
किसतरह विसर्जन देवीका, मन्दिरसे करे पूजारी यह ॥
है एक और आज्ञा-पालन, दूसरी और संकट अतिहै ।
उगले न बने खाये न बने, वह साप छछुन्दरकी गतिहै ॥
हे विधना! साध्वी सीतापर, क्या वज्राघात किया तूने ।
जोमंगल-आश दिनोंसेथी, उसमें उत्पात कियातूने ॥
गृहीणीकापद जिसनेपाया, वह त्याज्य आजयों अतिशयहै।
न्यायाधीश्वर यहन्यायहैतो, न्यायालय अन्यायालयहै ॥
पूछे कोई उसके दिलसे, जिसपर यह आफत आनीहै ।
पति-सेवाकरती हुई सती, पति-द्वारा त्यागी जातीहै ॥
मैं खुबजानताहूं सीता, निर्दोषिनी निष्कलंकिनीहै ।
गुणखानीहै क्षत्राणीहै, विदुषीहैं जनक नन्दनीहैं ॥
इन्हीं खयालोंमें लखण, पड़े एकदम रोय ।
मुखसे यह निकला प्रगट, विधना कैसी होय ॥

दोहा मूलगा—

गिरिसमेतनी जातनो, दोहलोकरो प्रमाण ।
आज्ञा प्रभुनी छेकहै, सेनापति रे सुजाण ॥ ७ ॥
भद्रपणे साभामिनी, ऊठी चालो जाम ।
शकुन वर्जना अवगुणी, चाली जाये ताम ॥ ८ ॥

क्षेपक राधेश्याम—रायायणमेंसे—

कौशलके राज-मार्गसेजब, वहरथ जंगलको जाताथा ।
पीछेहटताथा अन्धकार, आगे प्रकाश दिखलाताथा ॥
सचमुच उसदिन का वह तड़का, दुःख सुखसे मिला सवेराथा ।
कौशलके लिये अंधेराथा, जंगलके लिये उजेराथा ॥
आकाशके तारे फीकेथे, चन्द्रमा उदासहो रहाथा ।
कणनहीं ओसके गिरतेथे, पृथ्वीपर व्योम रो रहाथा ॥

दूसरी और लालिमालिये, सूरज रुक रुक कर उगताथा।
उनमोती जैसी बूदांको, अति शीघ्र हंस सम चुगताथा ॥
जबसाफ होगया सबमतला, तबनाची डाली हिलमिल कर।
अवलोक प्रकृतिका यह रहस्य, सबकली हंसपड़ी खिल खिल कर।
पुष्पोंके केदल वृक्षोंको तज रथ-पथ परआय बिखरतेथे।
पक्षीअपने मीठे स्वरसे, माताका स्वागत करतेथे ॥

दोहा मूलगा—

पवन गतिए प्रेरीदियो, सारथी ए रथसार।
गंगासागर ऊतरी, पहूंतो पेलेपार ॥ ९ ॥
'सिंहनी नाद' अरण्यथी, आगेन चले सोई।
आंखे आंसू नांखतो, सीता सामो जोई ॥ १० ॥
कह्योन जाये कांईहां, आवेहै योभराय।
फिटफिट जन्म सेवकतणो, काम दिया नटलाय ॥ ११ ॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायणमेंसे—

कहताहूंतो खुलतीनजुबां, चुपरहनेमें दम घुटताहै।
वह गाफिल कर्ज दारहूंमें, जोभीतर भीतर लुटताहै ॥
आज्ञाका चर्च्छा रूर मीने, माराहै मुझ हतभागीके।
यह अत्याचार धर्मकाहै, जो शिरपरहै अनुरागीके ॥
बस इतनाही कहसके, नयनों वर्षे नीर।
धीरहृदय पलमात्रमें, फिरहोगया अधीर ॥
निकले सिंहनी गुफासेज्यों, अपने शिशुका रोदन सुनकर।
रथसे उतरी त्यों सीता मात, सारथीका करुण-कथन सुनकर ॥
बोलीं-स्वामीकी आज्ञाको, वहीपहचान भूलकोहै।
दासीकोतो वज्रआभी, मामूली ऊही-फुन्सीहै ॥
वेमेरे और तुम्हारेक्या, सारेही जगके हितकाहै।
सूरज वंशी राजेश्वरहैं, रघुकुलके गौरव रघुवरहैं ॥
वेचाहें कुलसेतोडेंगे, जबचाहे दिलके प्रेमकोहैं।
तुम धीरज धरकर यह कहदो, दासीको क्या आज्ञाहै ॥

इन शब्दों से जब खिची, सकुचाहट की फांस ।
तबस्वारथी कहनेलगा, लेकर गहरी सांस ॥
हेमाता उमारमाहो तुम, मन-मन्दिरकी प्रतिमाहो तुम ।
महिमाहो तुम सुषमाहोतुम, अणिमा होतुम गरिमाहो तुम ॥
लंकामें डंकावजालिया, परअवध वध किए देताहै ।
वस वास अशोक वटिकाका सारे शोकोंका नेताहै ॥
भारत की ऊँची नारीका, तुमनेतो चरित दिखायाहै ।
पर नगर वासियोंने इकको, अत्यन्त बूरा बतलायाहै ॥
वेकहतेहैं परवशतामें, जबप्रण गंवा देतीं माता ।
तबसच्ची पतिव्रता ओंकी, पदवीको पालेतीं माता ॥
यह नहीं समझतीहै, दुनियों आचार्य्य परीक्षादी तुमने ।
पतिकेहित एकही निजप्राणोंकोरख, पतिप्राणकी रक्षाकी तुमने॥
बस इसी एकही कारणसे, प्रभुने मुझे पढायाहै ।
बेटेके हाथों हीउसकी, माताका त्याग करायाहै ॥

दोहा मूलगा—

लेईगयो लंकाधणी, चित्तमें आणी चाव ।
लोकोंने मुख आकरो, निसुणी एह कहाव ॥ १२ ॥
राज तजयांछे रामजी, मेला यांही रान ।
लक्ष्मण केरी वीनतीं, राम सुनी नहीं कान ॥ १३ ॥
ए वनश्वपद संभर्यो, जेहवूं जमनूं गेह ।
मुझ मूकीकेम जीवसे, प्रथम परिक्षण एह ॥ १४ ॥
एम सुणी मूर्छालही, रथथी ताम पडन्त ।
जाणे मूई सेनापति, आपण अधिक रडन्त ॥ १५ ॥
चेतलहे वन वायरे, फिरी फिरी मूर्च्छन्त ।
सुसती होईनेसती, तस साथे पूछन्त ॥ १६ ॥
दूरेकेट लीसापूरी, किहांअछे प्रभुआप ।
झगडं जेछेड़ो ग्रही, कां दियो मुझ सन्ताप ॥ १७ ॥

वतलायो जायेनहीं, एहि अवसर श्री राम ॥ १८ ॥
सा सेनापति सूंकहे, मुझ भाख्यो ए एम ।
तूं कहजेश्री रामने, नकहेतो मुझनेम ॥ १९ ॥

ढाल तेपनमीं—तर्ज विलवे राणी रुकमणी—

सीताजी दे उलम्भडो, सुण ससनेहीं राम ।
तुमथी एम केम चूजियूं, तुमे आशा विश्राम ॥ सीताजी
फौजबांधी लडतीनहीं, नाकरती तुम्ह त्रास ।
युद्धकरी मुझ काढतां, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी
धरणेपण नविबेसती, नाकरती उपवास ।
लोकोंने नवि मेलती, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी
कूवे पण पड़ती नहीं, नालेती गलपास ।
पेटे छूरी न विमारती, कीधां केरे विसास ॥ सीताजी
कन्त भणी नवि क्रोध थी, नवि खाती विषग्रास
शाप न देती स्वामी ने, कीधां कांरे विसास ॥ सीता
होई ने अति आकुती, मेली लाकड़ पास ।
जुहर[1] पण करती नहीं, कीधां कांरे विसास ॥ सीत
पर्वत थी पड़ती नहीं, मरती रोकी न श्वास ।
छेहड़ो पकड़ नवि झघड़ती, कीधां कांरे विसास ॥सी
जाणती थी सुत जन्म से, पहोंचसे सब आश ।
साज न मिलसे आंगणे, कीधां कांरे विसास ॥ सी
सहीर सुहामणी आवसे, पहिराव सुं वस्त्र तास
देसे अमृत आशिष का, कीधां कांरे विसास ॥ सी
गुरु गोत्र जमनायसूं, आर्णाने उल्लास ।
तिणी सघली ही करसूं सही, कीधां कांरे विसास ॥स
नाना सुं नेकी परे, करसूं रंग विलास ।
एक न आवी पाधरी, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी

हूं जाणती थी माहरो, पूरो पुण्य प्रकाश ।
धणी भलो देवर भलो, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥ १२ ॥
अवरां ने अंधारड़ो माहरं छे उजास ।
दैव न शक्यो ओ साखही कीधां कांरे विसास ॥सीताजी॥१३॥
ऊंची नींची होवतां लांबा लेई निसास ।
दुःख आणी अति रोवती, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी॥१४॥
किहां सीता कुसुमालिका, किहां वननो वास ।
एती करी न विचारणा, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥ १५ ॥
गुप्तपणे घर भीतरे, कां न कर्यो शिर नास ।
भांड करी सब लोकमें, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी ॥१६॥
देखाये अति चगचगो, रंग कुसुम्ब पतंग ।
उतरियो ही देखियो, राम तणो तिम रंग ॥सीताजी ॥ १७ ॥
नगरां[1] केरा वालिया, ओछां केरो नेह ।
प्रहर घडी दिन आंतरे, रीतो देखे तेह ॥सीताजी ॥ १८ ॥
पहिला प्रहरनी छांहडी, घटती जाये जेम ।
राजचन्द्रनी प्रीतड़ी, मुझ सूं होई एम ॥ सीताजी ॥ १९ ॥
विन्दु तणां करे सायरु, उत्तम माणस जेह ।
सायरनो तो विंदुओ, राम कियोरे एह ॥ सीताजी ॥ २० ॥
कोईयक गुणतो चित्त भरी, लेतो मुझने राख ।
राक्षस राक्षसणी कन्हे, पूछी लेतो साख॥सीताजी ॥२१॥
लम्पट जे नर लालची, तेह तणी सुणी वात ।
मन चोर्यो तुम मुझभणी, हो लक्ष्मण जीना भ्रात ॥सीताजी॥२२॥
आपणये अंगी करूं, केम करीजे दूर ।

---

१ नगर का मालिक (राजा) और नीच (ओछा) मनुष्य का प्रेम अल्प समय मे ही कम होजाता है ॥ (रीतो-रिक्त=मुकायलो) इस सम्बन्धमे ऐसा कहा है ।यथा-डगर केरा वालिया, ओछा केरानेह । वहता वहे ऊतावला, छटक दिखावे छेह ॥"

शंकर ज्यूं विष आदर्यो, राख्यो रहे हजूर ॥ सीताजी ॥ २३॥
वडवांनल सायर तणू, बाले जल नित्य ऊठ।
सायर उल्हावे नहीं, राखी रह्यो तसु पूठ ॥ ॥सीताजी॥ २४ ॥
जो प्रभुने सन्देह थो, कांरे न लीधो साच।
साचवडो संसारमें, साचतणी वडवाच ॥ सीताजी ॥ २५ ॥
भोगवी सुकृत आपणूं, वनही मांही वसन्त।
प्रभु ए कारज केम करे, जेह थी लोक हसन्त ॥सीताजी ॥२६॥
राजा राच्या ही भला. विराच्यां नहीं काज।
राम न हुओ माहरो, अवरोंने सीं लाज ? ॥ सीताजी ॥ २७ ॥
हूंस न राखी माननी. अपमाने नहीं पार।
दोई पक्ष पूरो वह्यो, हो म्हारा भरतार ॥ सीताजी ॥ २८ ॥
खीर नीरनो नेहलो, चन्द्र समुद्रां प्यार।
आंपांने ए ओपमा, कियो किसो करतार ॥ सीताजी ॥ २९ ॥
पंचही आश्रव सेवियां, सेव्यां पाप अढार।
शरणा चारे नविकर्यां, धर्म ही चार प्रकार ॥सीताजी ॥ ३० ॥
त्रि करण शुद्ध न राखियां, मद आठे सें कीध।
इन्द्रिय पांचे पोखियां, वस्प घतांवी न लीध ॥सीताजी ॥३१॥
विकथा चारे समाचरी, सेव्यां कुव्यसन सात।
कीधा चार कषायजी, पांच पदे विख्यात ॥ सीताजी ॥ ३२ ॥
ते फल ए हूं भोगवुं, दोष न प्रभु लवलेश।
कर्म लिख्यो फल पामिए, ए जिननो उपदेश ॥सीताजी ॥३३॥
रवि उग्यो देखेसहु, घुवड़ ने अंधकार।
घन वरसे जवासीओ. सूकयो जाय गमार ॥सीताजी ॥ ३४ ॥
मास वसन्ते फाड़े, पान तणुं नहीं पोष।
राज भेद समत्तनो. कोई न दीसे दोष ॥ सीताजी ॥ ३५ ॥
रामचन्द्र ना राजमां, सुखिया सहु लोक।
हूं नन मांहे रडवडुं, ए कृत्य कर्मो योग ॥सीताजी ॥ ३६ ॥

अई अई कर्मगति वांकड़ी, नहींछे केहने मान।
तीर्थंकर चक्रीसहु, नडियां एही जान ॥ २ ॥
रंककरी राजाकरे, राजाछे पणरंक।
करेसही नवि मेटियां, जाये विधिना अंक ॥ ३ ॥
अघट्यो घाट घड़ेघणूं, घड़ियाने भाजन्त।
माथेए तिहूं लोकने, दैवसदा गाजन्त ॥ ४ ॥
फरि फरि रोवेघणी, पग पग चलत थकाय।
दर्भांकुर कण्टक करी, पांव घणूं विंधाय ॥ ५ ॥

क्षेपक-राधेश्याम-रामायणमेंसे—

विरह घटा छारहीथी, घुमड़ घुमड़ जबघोर।
बोलेथा तबइस तरह, विरहिनका मन मोर ॥
तुम्हे तुम्हारी प्रजाको, दोषनहीं सुखधाम।
दो सौतोंकाहो रहा, था भीषण संग्राम ॥
गृह लक्ष्मी ने स्वामी के संग, चौदह बरसों बनवास किया।
उस राजलक्ष्मीके मदका, अपमान कराया इस किया ॥
अवडाह निकालायुं उसने, जोबनमें मुझे पढ़ायाहै।
सम्पूर्ण रूपसे रानीवन: जीवन-धनको भरमायाहै ॥
दुनियोंमें मुझसो दुःखी, औरन दूजीकोय।
जिसने सारी आयुही, संकटमेंही खोय ॥
कुमारीसे व्याही करनेमें, किसदर पिताको त्रासहुआ।
फिरज्योंही श्वसुरालय आयी, त्योंही पतिको बनवास हुआ।
रानीहोने जोगिनीहुई, पायाझोंपड़ा महल-बदले।
तिसपरभी नहीं निभालाके, कालेकाले बदल बदले ॥
लक्ष्मणका सहायकहो योंभेजा, रघुको कठिन बचन कहकर।
खुदभी स्वामीका विरहसहा, उस लंका नगरीमें रहकर ॥
मेरेही कारण प्राणनाथ, गमगीन रहे कितनेही दिन।
मेरेही खातिर मूर्नोके, शरिमाउलहे कितनेही दिन ॥

खल खंचने हूं परिहरी, कोन विचारी मर्म ।
मिथ्यात्वी उपदेश थी, मतिरे तजो जिनधर्म । सीताजी ॥३७॥
एम कही मूर्छा पड़ी, करी शीतल उपचार ।
करी सचेतन सुन्दरी, वचन वदे सुविचार ॥ सीताजी ॥ ३८ ॥
राम विनाहूं दुःख लहूं, तिमही मुझ विण स्वाम ।
लेसे आरती आकरी, विविध परे दुःख पाम ॥ सीताजी ॥ ३९ ॥
हूंतो हुई नाहुई, मुझ जैसी बहुलीदास ।
यत्नकरीजो आपणूं, प्रभु एमुझ अरदास ॥ सीताजी ॥ ४० ॥
जेहना घरमें जोवड़ो, लीजे ते प्रतिपाल ।
नाभि विना आराकरी, कहन नशके चाल ॥ सीताजी ॥ ४१ ॥
सूर्यवंशे दीवड़ो, तूं शशिहर तूं भाण ।
तूं सुरतरु तूं जलहरूं, महिमा मेरु समान ॥ सीताजी ॥ ४२ ॥
तूं प्रभु सायर सारिसो, गुणे भरियो भरपूर ।
धणी पणे मैं पामीयो, पूर्व पुण्य अंकूर ॥ सीताजी ॥ ४३ ॥
कायम रहे तुझ साहिबी, कायम तू राजान ।
सयल कुटुम्बोंसे होईजो, प्रभु तुम्हने कल्याण ॥ सीताजी ॥ ४४ ॥
संभलावे मुझ मुखतणा, स्वामीने ए बोल ।
बोल सहुने सुहामणा, आछा अत्तेरे अमोल ॥ सीताजी ॥ ४५ ॥
लक्ष्मणसूं ए माहरी, केजे तूं आशीश ।
सेवाकरजो प्रभुतणी, प्रभु थारे जगदीश ॥ सीताजी ॥ ४६ ॥
पन्थे शिघ्र होजोतुने, रेवत्स! विश्वावीश ।
विदाय कियो सेनापति, जाई मिल्यो निज ईश ॥ सीताजी ॥ ४७ ॥
त्रेपन मीं ए ढालमें, सीतासूं प्रभु कोप ।
'केशराज सोने वधे, ताव्यांथी अति ओप ॥ सीताजी ॥ ४८ ॥

(दोहा जयतश्री रागे)

सत्यव्रती सांचीसती, फरे घणूं वनमांहे ।
यूथ भ्रष्ट जिम हरणली, आपे निन्दे प्राहे ॥ १ ॥

कलेश अशेश ढल्यो, सीता भाग्य अपार ॥सु० ॥ १ ॥
कवण अछो तुम्ह आप, आपणो नाम प्रकाशो ।
एह अरण्ये किसी तुम्हे, ए वडो तमासो ॥
निर्दयी थी निर्दय घणो. जेणे कीधो ए काम ।
चौर अन्यायी आकरोहो, तेह तणूं ए काम ॥ सु० ॥ २ ॥
आशंका सव छोडी. जोड़िने कर दोई ।
पूछूं हूं तुझ पास, अधिक हूं अर्थी होई ॥
तुझ पीडाए पीडयो, दया वसी दिल मांही ।
वीतक वीत्यूजे अछेहो, ते तुम्ह भाखा प्राही ॥ सु० ॥३॥
सुमति नाम प्रधान. ताम तस पासे आवी ।
कोमल वाणी प्रकाशी, वात तस कहे सुहावी ॥
'पुण्डरीक' पुरनो धणी, 'गजवाहन' पूत ।
'वन्धुदेवी' जाइयो हो, रावण पर घर सूत ॥ सु० ४ ॥
वज्रजंघ जी राय, परम ए श्रावक कहियो ।
देव गुरु धर्म तत्वतणो, जेणे निश्चय लहियो ॥
महोदर परनारीनो, विरुध वहन्त अपार ।
परदुःख कापण छे घणोहो. जगमांही जशगार ॥सु० ॥५॥
हाथी लेवा काज, आजेही अटवी आयो ।
हाथी चढिया हाथ, ताम मन घरही चलायो ॥
रोज मुणीने ताहरू आयो इहां नरेश ।
भाई भणी अव भाखिये हो. वात विशेष अशेष ॥ सु० ॥६॥

मुनि श्री लवचन्दजी कृत सेपक नर्ज मेरे जापनेरं मुल्को
वालभरो पन्नाया ।

कहदे मांडनेरं क नाले निती जिगरी वात ॥ टेर ॥
रूप अनूपम अकल निराले, वडाभगी की जाई ।
दुःख दाई इन घोर जंगलमें, कहो किन कारन आई । कहदे ॥१॥
अथवा दानव देव विद्याधर, अवहर तुझे बिठाई ॥

इतनेपरभी उसविधनाने, सुखसे नमुझे बिठलायाहै ।
इन्तहा कष्टकी यहकरदी. जोअब वनमें भिजवायाहै ॥
जिसने अपने जीवन भरमें, आरामन देखा भाला हो ।
माङ्गलिक समय मेंस्वामीने, महलोंसे जिसे निकालाहो ॥
ऐसी दुखियारी नारीको, हेवृक्षो?कहींभी देखाहै ।
इतने कष्टों की मारीको, हे जीवो? कहींभी देखा है ॥
सीता रह कसती नहीं, यों वियोग आधीन ।
नीर बिना संसार में. कहीं रही है मीन ॥
इन्हीं विचारों में हुई, जब अत्यन्त अधीर ।
मूर्छाखा चेतन हुई, जब चलता शीत समीर ॥

दोहा मूलगा—

भाग्यवन्त माणस जिके, तेतो नवि सीदाय ।
दीठी सेना सामठी, आगे ऊभी आय ॥ ६ ॥
जीवत ने मरवातणूं, भय नवि आणे कोय ।
नमोकार नाध्यान में, लोगां दीठी सोय ॥ ७ ॥
लोक तदाचित्त चिन्तवे. ए कोई वनदेवी ।
कारण कोई विचारवे, प्रगट थई ततखेवी ॥ ८ ॥
रोज सुणी सीता तणूं, स्वरनो जानन हार ।
नायक तो सेनातणू, चित्त सूं करे विचार ॥९॥
गर्भवती साची सती, सीदाती अतिजाण ।
चाली आयो पाखती, सती तदा भय आण ॥१०॥
अलंकार सहु अंगना ऊतारी ने ताम ।
राजा आगे मेलिया. राखेवा निज माम ॥ ११ ॥
बहिन !-न बिये मुझथकी, राजा भाखे रंग ।
अलंकार एतादरा, अखे रहो तुझ अंग ॥ १२ ॥

ढाल चौपनमीं—
तर्ज-नेमन माने कह्यो—

सू भूपति आय मिलियो, वज्र सुजंघ उदार ।

कलेश अशेष टल्यो, सीता भाग्य अपार ॥सु० ॥ १ ॥
कवण अछो तुम्ह आप, आपणो नाम प्रकाशो ।
एह अरण्ये किसी तुम्हे, ए वडो तमासो ॥
निर्दयी थी निर्दय घणो, जेणे कीधो ए काम ।
चौर अन्यायी आकरोहो, तेह तणूं ए काम ॥ सु० ॥ २ ॥
आशंका सब छोडी, जोड़िने कर दोई ।
पूछूं हूं तुझ पास, अधिक हूं अर्थी होई ॥
तुझ पीडाए पीडयो, दया वसी दिल मांही ।
वीतक वीत्यूजे अछेहो, ते तुम्ह भाखा प्राही ॥ सु० ॥३॥
सुमति नाम प्रधान, ताम तस पासे आवी ।
कोमल वाणी प्रकाशी, वात तस कहे सुहावी ॥
'पुण्डरीक' पुरनो धणी, 'गजवाहन' पूत ।
'बन्धुदेवी' जाइयो हो, रावण पर घर सूत ॥ सु० ४ ॥
वज्रजंघ जी राय, परम ए श्रावक कहियो ।
देव गुरु धर्म तत्वतणो, जेणे निश्चय लहियो ॥
महोदर परनारीनो, विरुध पहन्त अपार ।
परदुःख कापण छे घणोहो, जगमांही जशसार ॥सु० ॥५॥
हाथी लेवा काज, आजेही अटवी आयो ।
हाथी चढ़िया हाथ, ताम मन परही चलायो ॥
रोज सुणीने ताहरूं आयो इहां नरेश ।
भाई भगी अरु भानिजे हो, तात वियोग अशेष ॥ सु० ॥६॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत दीपक लवजी मेरे साजनेरे मुजरो
चालपरो परलाया ।

कहदे मांडनेरे क नांमें तिनी जिनगी रात ॥ टेर ॥
रूप अनूपम अपल विराजे, वणापगों की आई ।
दुःख दाई इन घोर जंगलमें, कहो किन कारन आई ॥ कहदे ॥१॥
अपरा दानव देव विद्याधर, ... तुझे दिखाई ॥

इतनेपरभी उसविधनाने, सुखसे नमुझे चिठलायाहै ।
इन्तहा कष्टकी यहकरदी. जोअब वनमें भिजवायाहै ॥
जिसने अपने जीवन भरमें, आरामन देखा भाला हो ।
माङ्गलिक समय मेंस्वामीने, महलोंसे जिसे निकालाहो ॥
ऐसी दुखियारी नारीको, हेवृक्षो?कहींभी देखाहै ।
इतने कष्टों की मारीको, हे जीवो? कहींभी देखा है ॥

सीता रह कसती नहीं, यों वियोग आधीन ।
नीर विना संसार में. कहीं रही है मीन ॥
इन्हीं विचारों में हुई, जब अत्यन्त अधीर ।
मूर्छाखा चेतन हुई, जब चलता शीत समीर ॥

दोहा मूलगा—

भाग्यवन्त माणस जिके, तेतो नवि सीदाय ।
दीठी सेना सामठी, आगे ऊभी आय ॥ ६ ॥
जीवत ने मरवातणूं, भय नवि आणे कोय ।
नमोकार नाध्यान में. लोगां दीठी सोय ॥ ७ ॥
लोक तदाचित्त चिन्तवे. ए कोई वनदेवी ।
कारण कोई विचारवे, प्रगट-थई ततखेवी ॥ ८ ॥
रोज सुणी सीता तणूं, स्वरनो जानन हार ।
नायक तो सेनातणू, चित्त सूं करे विचार ॥९॥
गर्भवती साची सती, सीदाती अतिजाण ।
चाली आयो पाखती, मती तदा भय आण ॥१०॥
अलंकार महु अंगना ऊतारी ने ताम ।
राजा आगे मेलिया. राखेवा निज माम ॥ ११ ॥
बहिन !-न बिये मुझथकी, राजा भाखे रंग ।
अलंकार एताहरा, अखे रहो तुझ अंग ॥ १२ ॥

ढाल चौपनमीं—

तर्ज—नेमन माने कह्यो—

सू भूपति आय मिलियो, वज्र सुजंघ उदार ।

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेने अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमें मूकी देवी ।
वातसूणी रथथी पडीहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
ततवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार नाम, गाही दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
सभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसुं वात, वातावी भाग्वी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये गणूंहो, तेमरचित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सवलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोपतो महायरे, ए अति उपज्यो रोप ।
सोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोडी ।
बालपणा की प्रीत, तृणजेम ताणी त्रोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातवणी विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, रागोजो कुलरीत ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पड्या, रघुनाथ नेवार ।
लक्ष्मण करी उपचार घणा, मूर्च्छाही निवार ॥
उठाई ऊभाकिया, वेदनतो असमान ।
किहांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥
-राम-सीता-रामायण- [illegible] --

एकाकी अबला को वनमें, नर कोई तजी अन्यायी ॥कहदे ॥२॥
कहूं मैं मांडनेरे क मां में वीती जितरी वात ॥ टेर ॥
दशरथ नृपनी पुत्र वधु में, रामचन्द्र घर नारी ।
भामण्डल की भगिनी हूं मैं, जनक विदेह दुलारी ॥ कहूंमैं ॥३॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां सचिव, राय परतीत सूं राखी ।
धुरथी छेह लगे मांडी, वाततो सघली भाखी ॥
रोवन्ती राखी वही, मंत्रीने भूपाल ।
पीली माटी पाणिये हो, गिवली हुवे ततकाल ॥सु० ॥७॥
निष्कपट थी अति प्रगट पणे, भाखे तवते भूप ।
आज थकी तूं वेहनो, बन्धु अछूं अनूप ॥
एक धर्म जेही करे, तेही सगो संसार ।
सगपण तोछे कारमोहो, स्वामी तजी क्यूं नार ॥ सु० ॥८॥
भामण्डल जेहवो जाणी, राज ! मुझ घरे पधारो ।
होई खिजमतदार. करूंछूं सफल जन्मारो ॥
अवधारो अरदास, ए सोचतणूं नहीं काम ।
वारम्वार विशेष थीहो, रायभणे अभिराम ॥ सु० ९ ॥
पीयरिए धसि जायए, सासरे जो दुःखपावे ।
एहवात समरथ, त्रियाने कांईयन आवे ॥
सूधी वाटां चालतां, जोकांटा भाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
तोही दुश्मन लोकमें हो, नारी नवि लाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
लोक वचनथी राम, कामए कियो देखो ।
उतरियां थीरोप, तुम्ह सरिसो पेखो ॥
गवेषण करसेवणी, सुखनहीं लहे लगार ।
चक्रवाक जिम एकलोहो, आणे आरति अपार सु० ॥ ११ ॥
शिविकाए वेसाडी, ताम सीताघर आणी ।
आवी राय वियोगे, तिहां रहे राघव-राणी ॥

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेते अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमे मूकी देवी ।
वातसुणी रथथी पड़ीहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
पनवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार ताम, गाढो दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
स्वभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसं वात, वातावी भाखी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये घणूंहो, तेमरनित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सबलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोषनो महायरे, ए अति उपन्यो रोष ।
मोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोडी ।
बालपणा की प्रीत, तृणजेम नाणी तोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातघणी विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, रागोओ कुलरीत ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पत्या, रघुनाथ तेवार ।
लक्ष्मण करी उपचार घणा, मूर्च्छाही निवार ॥
उठाई उनाछिया, चेदनतो अनमान ।
फिरोगई सीता सतीहो, स्वामी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥
ढाल—जिनेन्द्रनन्दना नामनी

एकाकी अबला को वनमें, नर कोई तजी अन्यायी ॥कहदे ॥२॥
कहूं मैं मांडनेरे क मां में बीती जितरी बात ॥ टेर ॥
दशरथ नृपनी पुत्र वधु मैं, रामचन्द्र घर नारी ।
भामण्डल की भगिनी हूं मैं, जनक विदेह दुलारी ॥ कहूंमैं ॥३ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां सचिव, राय परतीत सूं राखी ।
धुरथी छेह लगे मांडी, वाततो सघली भाखी ॥
रोवन्ती राखी वही, मंत्रीने भूपाल ।
पीली माटी पाणिये हो, गिवली हुवे ततकाल ॥सु० ॥७॥
निष्कपट थी अति प्रगट पणे, भाखे तबते भूप ।
आज थकी तूं बेहनो, बन्धु अछूं अनूप ॥
एक धर्म जेही करे, तेही सगो संसार ।
सगपण तोछे कारमोहो, स्वामी तजी क्यूं नार ॥ सु० ॥८॥
भामण्डल जेहवो जाणी, राज ! मुझ घरे पधारो ।
होई खिजमतदार, करूंछूं सफल जन्मारो ॥
अवधारो अरदास, ए सोचतणूं नहीं काम ।
वारम्बार विशेप थीहो, रायभणे अभिराम ॥ सु० ९ ॥
पीयरिए धसि जायए, सासरे जो दुःखपावे ।
एहवात समरथ, त्रियाने कांईयन आवे ॥
सूधी वाटां चालतां, जोकांटा भाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
तोही दुश्मन लोकमें हो, नारी नवि लाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
लोक वचनथी राम, कामए कियो देखो ।
उतरियां थीरोप, तुम्ह सरिसो पेखो ॥
गवेपण करसेवणी, सुखनहीं लहे लगार ।
चक्रवाक जिम एकलोहो, आणे आरति अपार सु० ॥ ११ ॥
शिविकाए बेसाड़ो, ताम सीताघर आणी ।
आवी राय वियोगे, तिहां रहे राघव-राणी ॥

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही ढाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेते अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमें मूकी देवी ।
वातसुणी रथथी पडीहो, मूर्च्छाणी तनखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
वनवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार नाम, गाढो दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
सभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसूं वात, वातावी भाखी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये गणूंहो, तेमरनित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सघलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
माग्य दोषतो महापरे, ए अति उपज्यो रोप ।
सोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोटी ।
बालपणा की प्रीत, तूणजेम नाणी जोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातघणी विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, गम्योजो कुदरीन ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पड्या, रघुनाथ नेराग ।
लक्ष्मण करी उपचार घणा, मूर्च्छांही निवार ॥
उठाई ऊभाकिया, वैदनको सनमान ।
फिहांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥
--जैन-रामायण-खण्ड-चतुर्थ--

लखण! अततुम सखातुम, प्रियतुम, तुमहृदयेश ।
आजहृदय की कहेगा तुमसे यह अवधेश ॥
थेमिलेहुए दोफूल. एक डालीके ऊपर खिलेहुए ।
जालिम हाथोंसे दोनोंहीटूटे, और दममें जुदेहुए ॥
एकही वायुके झोंकेने, करडाले तितर-बितर दोनों ।
रस्ता निहारतेहैं अपना, होकरके इधर-उधर दोनों ॥

ढाल मूलगी—

लोकवचन विषव्याप, हुवोथो नृपने भारी ।
सीता वचन गारुडमंत्रे, लीधो उतारी ॥
घर आयानृप आपणे, तामकरे सम्भाल ।
महियलमे म्होटी सतीहो, वादिही दिएजन आल ॥ सु० ॥ १९ ॥
लोक वोक जगमांही, एतो न्याय कहाणा ।
परघर भंजन लोक, ए आज जणाणा ॥
रूडोदेखो नाशके, भूंडेराते[1] भोर[2] ।
भोरोंनो वाह्यो[3] बहुहो, कीधो काम कठोर ॥ सु० ॥ २० ॥
बहेरी[4] विकथा वात, पुरुष पुर देखण आंधो ।
मूंगी कहेण कुबोल, कहे पणन लिये सांधी ॥
परघर फरवा पांगुली, लूली परधन लेण ।
एह गुणोंनो धारणीहो, कहेणी कही कहो केण ॥ सु० ॥ २१ ॥
मतो देण मंत्रीशसूं, काम समारण दासी ।
प्रीतवती प्रिय साथ, महासुख भोग विलासी ॥
पुण्यवती प्रगटी खरी, क्षमावती संसार ।
होईनहीं होसी नहींहो, सीता सरिसी नार ॥ सु० ॥ २२ ॥

---

१ खुशहोना=२ मूर्ख=३ ठगायाहुवा=४— २० —पा० २१मीं गाथा ओंका अर्थ वधिर केशिर वात श्रवण करनेका, आंधीकेशिर पुरुष देखनेका, गूंगीके शिर कुवचन कहनेका, पांगली शिरपर-धर फिरनेका, और —ीके शिरपर-धन हरण करनेका कथनआवे, वैसा सीता के शिर यह न (झंठाआल) आया हुवाहै ।

चन्द्र कमल शुक भृंग, नागणी अठाम शशिहर।
विमद्रु पंकज-नाली, कलस जख केसरी वर ॥
कुरमंत्र चकने फले, कोयल अने मराल।
ए शब्दो केरी उपमाहो, सीताने सुविशाल ॥ सु० ॥ २३ ॥
देवी कहीते दूरी, इद्रनी नारी अलगी।
अमरी नहीं आसनी, आपणे कामे वलगी ॥
देवीशची अमरी थकी, सीता रूप रसाल।
दैवे दीधीथी खरीहो, मैंन रखाणो वाल ॥ सु० ॥ २४ ॥

मुनिश्री रूपचन्द्र कृत क्षेपक—तर्ज नवीनरसीया—

अनुचित करडाला यह कार्य, सीयाको भेजदिवी वनमें ॥ टेर ॥
जद सीयको लंकसे साथ करीथो, तदवहां सुरगण माख भरीथी।
होगया वहां विश्वास पूर्णतया, दोषनहीं इसमें ॥ अनु ॥ १ ॥
सौतोंने मिल कार्य कियायह, जिससे जशकुम्भ फूट गया वह।
कैसे रकखू गृहवीच वातया, फैली पुरजनमें ॥ अनु ॥ २ ॥
लक्ष्मण लहु आकर समझाया, कथन उन्होंका दायन आया।
कर नादानी प्रति पुरानी, तोड़ दिवी छिनमें ॥ अनु ॥ ३ ॥
कठिन-कष्टअब कैसे सहेगी, किन तिरसी किनभूखी रहेगी।
खुद मरजासी वनचर खासी, सोचत रघु मनमें ॥ अनु ॥ ४ ॥

ढाल नूलगी—

लक्ष्मण भाखे ताम, रामजी अवधारो।
माणसनो एमदन, वात विगड्योही विचारो ॥
मरेन हजही वाहगे, ते रूसदिये काय।
जेहन मानी चोनतीहो, कांईकुरे पस्ताय ॥ सु० ॥ २५ ॥
गई निकी थो जाय, स्वामी अरहीनस्भालो।
पछी वरस्यांमेह, कहिये नुपरे वरनालो ॥
स्वप्रभावे स्वामीनी, औरत्नी अवगाई।
हीसे सहो एन जागजोहो, पाछुकी आगे ॥ सु० ॥ २६ ॥
जाणो स्वमी तुम्ह आप, करीने पण दिलासा।

लखण! अततुम सखातुम, प्रियतुम, तुमहृदयेश ।
आजहृदय की कहेगा तुमसे यह अवधेश ॥
थेमिलेहुए दोफूल. एक डालीके ऊपर खिलेहुए ।
जालिम हाथोंसे दोनोंहीटूटे, और दममें जुदेहुए ॥
एकही वायुके झोंकेने, करडाले तितर-बितर दोनों ।
रस्ता निहारतेहैं अपना, होकरके इधर-उधर दोनों ॥

ढाल मूलगी—

लोकवचन विषव्याप, हुवोथो नृपने भारी ।
सीता वचन गारुडमंत्रे, लीधो उतारी ॥
घर आयानृप आपणे, तामकरे सम्भाल ।
महियलमें म्होटी सतीहो, वादिही दिएजन आल ॥ सु० ॥ १९ ॥
लोक वोक जगमांही, एतो न्याय कहाणा ।
परघर भंजन लोक, ए आज जणाणा ॥
रूड़ोदेखो नाशके. भूंडेराते[1] - भोर[2] ।
भोरोंनो वाह्यो[3] वहुहो, कीधो काम कठोर ॥ सु० ॥ २० ॥
बहेरी[4] विकथा वात, पुरुप पुर देखण आंधो ।
मूंगी कहेण कुबोल, कहे पणन लिये सांधी ॥
परघर फरवा पांगुली, लूली परधन लेण ।
एह गुणोंनो धारणीहो, कहेणी कही कहो केण ॥ सु० ॥ २१ ॥
मतो देण मंत्रीशमुं, काम समारण दासी ।
प्रीतवती प्रिय साथ, महासुख भोग विलासी ॥
पुण्यवती प्रगटी खरी, क्षमावती संसार ।
होईनहीं होसी नहींहो, सीता सरिसी नार ॥ सु० ॥ २२ ॥

---

१ खुशहोना—२ मूर्ख—३ ठगायाहुवा—४— २० —पा० २१मीं गाथा ओंका अर्थ वधिर केशिर वात श्रवण करनेका, आंधीकेशिर पुरुष देखनेका, गूंगीके शिर कुवचन कहनेका, पांगली शिरपर-घर फिरनेका, और लुलीके शिरपर-धन हरण करनेका कथनआवे, वैसा सीता के शिर यह कथन (झठाआल) आया हुवाहै ।

सीताही भल्ठ पावसेहो. नहीं अवरोंसूं लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चैश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि१' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'२ पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन३ पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु४ एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमी—

तर्ज बाबू गोरड़िया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेनो युगल पणे सुखदाया।
तब आनन्द अधिका पाया, तब गोरड़िए गुणगाया ॥
तब सुहिर निसाण गुड़ाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया, बंधीवान छुडाया।
सुत जायां जेम कीजिये, त्युंही सब कराया ॥ सीता ॥ २ ॥
बारसमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण सुहामणो, मदनांकुश कहवाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धायकरी पालीया, सामलियां मनभाया।
हाथो हाथ मेलावते अमर नचीते आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

१ समुद्र=२ नमुक्कार मंत्र=३ मेरु=४ कल्पवृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अरदासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
वयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[१] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद–अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८ ॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[२] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसु प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरी सिंह खाधी ।
कयेरे गिली अजगरे, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसु ढाली बाहुल्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकग्ता शोगो ।
माहारूं घर घाल्युं[१] हों, अहो पुरवासी लोगो ? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त ।
अबदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥
प्रेत कामश्रीगम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपसहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोक्योंनूं नसपूं काम, फोकहे मांडी फांमी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य ।

---

१ सेनापति (कप्तान) २रिक्त–खाली

सीताही भलं पावसेहो. नहीं अवरोंमूं लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चैश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि१' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'२ पण एकछे, मंत्र वणा गुणवन्त।
सुदर्शन३ पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु४ एकछे, अवर घणा दे दान ।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंवलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाप ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमीं—

तर्ज बाबू गोदड़िया सुखकारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेतो युगल पणे सुखदाया।
तव आनन्द अधिका पाया, तव गोगड़िए गुणगाया ॥
तव सुहिर निसाण गुड़ाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया, बंधीवान छुडाया।
सुत आयां जेम कोकिले, त्यूंही गाय रूगाया ॥ सीता ॥ २ ॥
बारसमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण सुहामणो, मदनांकुश कहवाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धावकरी पालीया, भामनियां मनभाया।
हाथो हाथ संचारते अमर नयोंने आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

१ समुद्र=२ नमुक्कार मंत्र=३ मेरु=४ कल्प वृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अरदासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
बयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[१] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद-अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[२] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसूं प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरो सिंह खाधी ।
कयेरे गिलो अजगरे, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसू ढाली बाहुड्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकरता शोगो ।
माहारूं घर घाल्यूं[१] हों, अहो पुरवासी लोगो ? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त ।
अबदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१॥
प्रेत कामश्रीराम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपमहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोकयोंनूं नसपूं काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य ।

१ सेनापति (कप्तान) २रिक्त-खाली

सीताही भलं पावसेहो, नहीं अवरोंसूं लाग॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चेश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि[१]' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'[२] पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन[३] पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु[४] एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमी—

तर्ज बान्नू गोदड़िया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेनो युगल पणे सुखदाया।
नव आनन्द अधिका पाया, नर नारिए गुणगाया॥
नर गुहिर निशाण गुडाया॥ सीता॥ १ ॥
ओच्छव अधिक मंडाया, बंधीवान छुडाया।
सुत जायां जेम कीजिये, त्युंही राम कराया॥ सीता॥ २ ॥
बारमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण' सुहामणो, मदनांकुश कहाया॥ सीता॥ ३ ॥
पांच धायकी पालीता, भामनिमां मनभाया।
हाथो हाथ संचारते अमर पर्वीने आया॥ सीता॥ ४ ॥

---

१ समुद्र=२ नमुक्कार मंत्र=३ मेरु=४ देवता वृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अग्दासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
वयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[१] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद–अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[२] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसूं प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरी सिंह खाधी ।
कयेरे गिलो अजगरे, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसू ढाली बाहुड्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकग्ता शोगो ।
माहारूं घर घाल्युं[१] हों, अहो पुरवासो लोगो ? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त ।
अबदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥
प्रेत कामश्रीगम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपसहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोकयोंनूं नसपूं काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य ।

१ सेनापति (कप्तान) २रिक्त–खाली

भव्यजीव जाण्या खरा, पात्र शिरोमणि पात्रो ।
जीतीतो कोई नासके होई माणम मात्रो ॥ सीता ॥ १८ ॥
विद्या विविध प्रकारनी, बहुतरे विज्ञानो ।
सिद्ध किया सिद्धारथे, म्होटा पुरुष प्रधानो ॥ सीता ॥ १९ ॥
वज्रजंघनी पुत्रिका, शशिचूला तस नामो ।
उदर लक्ष्मी रेवती तणे, उपजीछे अभिरामो ॥ सीता ॥ २० ॥
कन्यावर बत्रीशसूं, वज्रजंघजी तामो ।
अनंगलवण परणावीयो, कीधां उत्तम कामो ॥ सीता ॥ २१ ॥
पृथिवीपुर पति परगड़ो, पृथु नामा भूपाला ।
पटराणी अमृतवती, कन्या कनकमाला ॥ सीता ॥ २२ ॥
मदनांकुश ने मांगतां, नाये ते राजानो ।
वंश अजाणे क्युं हुवे, कन्या केरो दानो ॥ सीता० ॥ २३ ॥
एम सुणी चढी चालीयो, वज्रजंघ शर सांधी ।
व्याघ्ररथ पृथु सहायजी, जीती आण्यो बांधी ॥ सीता० ॥ २४ ॥
पृथु भूपति ए तेडियो, पोतन पुर पति धाई ।
वार न लागी आवीयो, कष्टे मित्र सहाई ॥ सीता० ॥ २५ ॥
वज्र जंघे सुत तेडिया, चाले अति मण्डाणे ।
लवणांकुश तो चालिया, वर्ज्या पण नवि माने ॥ सीता० ॥ २६ ॥
दोई पखे भट सामटा, मांड्यो अति संग्रामो ।
पृथु-बल आगे भाजीया, वज्र जंघ भट जामो ॥ सीता० ॥ २७ ॥
मातुल-सेना भांजती, लवणांकुश देखन्ता ।
कर्गी उठावणी आकरी, चाल्या पृथु पेखन्ता ॥ सीता० ॥ २८ ॥

चाल दोधक मूलगी—

उभय दल आपस में भिड़िया, नाना विध आयुध सो लड़िया, केई नर भूमिपर पडिया । भाजती फौज देखी जाम, पृथु ने दीन आई ताम ॥ भव्यजनपालो ॥ ९७ ॥ पृथु कहे सुनिये अति जोर, आगे क्यों भागते मोर । नन्द दिल जीता जो चाहो, नमन कर या फिर जावो ॥ भव्य० ॥ ९८ ॥

चन्द्रकला जेम वाधही, बालपणे बालाय ।
शृग शरभ तणीपरे, राजाजी रींझाया ॥ सीता ॥ ५ ॥
सासूजी पगे लागतां, दीधीथी आशीषो ।
हम सरखा सुतजन्मजो, कीधो सफल जगीसो ॥ सीता ॥ ६ ॥
कौशल्या इक जाईयो, सीता दोई विदिता ।
कौशल्या थीतोघणो, अधिकाणी ए सीता ॥ सीता ॥ ७ ॥
सिद्ध पुत्रछे अणुव्रती, सिद्धारथ[1] अभिधानो ।
विद्यावल ऋद्धिकरी. सबविधि जाण सुजाणो ॥ सीता ॥ ८ ॥
विदेह अदि क्षेत्रविषे, स्वेच्छा विहारे ।
गगनगति सोताघरे, भिक्षाने पधारे ॥ सोता ॥ ९ ॥
चारु भोजन पानसूं, दीधो तसु अहारो ।
सुखपूछे सीताघणूं, उत्तर दिएते सारो ॥ सोता ॥ १० ॥
देव सुगुरु प्रसादथी, महारे वोतेही खेमो ।
दर्शन करूंजिन साधुनां, शुद्ध धरूं व्रत नेमो ॥ सीता ॥ ११ ॥
सो पूछे सीतासती, कोण अवस्था थारी ।
चरित्र सुणावो आपणो; धुरथीछेह लगेभारी ॥ सीता ॥ १२ ॥
छाती भरी आवीघणी, भाईजाणी तासो ।
सो वानां राजाकरें, अतितो परघर वासो ॥ सीता ॥ १३ ॥
कहे अष्टांग निमित्तियो, करुणानी मति आणी ।
सुत लवणांकुश सारिसा, शी आरती तुझ राणी ॥ सीता ॥ १४ ॥
शुभ लक्ष्मण करी शोभता, जेम लक्ष्मण रामो ।
'लवणांकुश छे तेहवा. शा आरतिना ठामो ॥ सीता ॥ १५ ॥
देईअति आसासना, सीता सुसती कीध ।
आश वड़ी संसारमें, आशाए लंका लीध ॥ सीता ॥ १६ ॥
प्रार्थना कीधी घणी, पुत्र पढावो भाई ।
वी मानी सिद्धारथे. हरखी सीता माई ॥ सीता ॥ १७ ॥

१ इस नाम वाले मुनि,

भव्यजीव जाण्या खरा, पात्र शिरोमणि पात्रो ।
जीतीतो कोई नासके होई माणम मात्रो ॥ सीता ॥ १८ ॥
विद्या विविध प्रकारनी, बहुतरे विज्ञानो ।
सिद्ध किया सिद्धारथे, म्होटा पुरुष प्रधानो ॥ सीता ॥ १९ ॥
वज्रजंघनी पुत्रिका, शशिचूला तम नामो ।
उदर लक्ष्मी रेवती तणे, उपजीछे अभिरामो ॥ सीता ॥ २० ॥
कन्यावर बत्रीशसूं, वज्रजंघजी तामो ।
अनंगलवण परणावीयो, कीधां उत्तम कामो ॥ सीता ॥ २१ ॥
पृथिवीपुर पति परगड़ो, पृथु नामा भूपाला ।
पटराणी अमृतवती, कन्या कनकमाला ॥ सीता ॥ २२ ॥
मदनांकुश ने मांगतां, नाये ते राजानो ।
वंश अजाणे क्यूं हुवे, कन्या केरो दानो ॥ सीता० ॥ २३ ॥
एम सुणी चढी चालीयो, वज्रजंघ शर सांधी ।
व्याघ्ररथ पृथु सहायजी, जीती आण्यो बांधी ॥ सीता० ॥ २४ ॥
पृथु भूपति ए तेडियो, पोतन पुर पति धाई ।
वार न लागी आवीयो, कष्टे मित्र सहाई ॥ सीता० ॥ २५ ॥
वज्र जंघे सुत तेडिया, चाले अति मण्डाणे ।
लवणांकुश तो चालिया, वर्ज्यां पण नवि माने ॥ सीता० ॥ २६ ॥
दोई पखे भट सामटा, मांड्यो अति संग्रामो ।
पृथु-बल आगे भाजीया, वज्र जंघ भट नामो ॥ सीता० ॥ २७ ॥
मातुल-सेना भांजती, लवणांकुश देखन्ना ।
करी उठावणी आकरी, चाल्या पृथु पेखन्ना ॥ सीता० ॥ २८ ॥

ढाल रोपक मूलगी—

उभय दल आपस में भिड़िया, नाना विध आयुध से लड़िया, के नर भूमिपर पडिया । भाजती फौज देखी जाम, पृथु ने राम आ ताम ॥ सत्यमनपालो ॥ ९७ ॥ पृथु कहे सुनिये अवि छोरे, आं क्यों भागने मोरे । चन्द दिन डोला डो चारो, समन कर फिर जारो ॥ सत्य० ॥ ९८ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज कांईरे जबाब करूं रसिया-

कांईरे मिजाज करे झूठो, झूठोजी झूठो साफ है झूठो, तो पर आज सीयासुत रूठो ॥ टेर ॥ मिजाज करे क्यूं इतरो मन में, ओ सब साज उडेगो छिन में ॥ कां० ॥ १ ॥ थोथा चणा जिम अधिको वाजे, मो आगे भाजतां तव कुल लाजे ॥ कां ॥ ॥ २ ॥ निज बलमें क्यों भूले भोले ! तुने पकड़ पछाडूं एक ही ठोले ॥ कां० ॥ ३ ॥ काहे करो ओख्यों काढ़ डरावे, क्या मझाल तूं हमको जीत के जावे ॥ कां० ॥ ४ ॥ आंटीले भूप आये भगती में, तो सम ढोर किसी गिनती में ॥ कां० ॥ ५ ॥ क्यों लड़ने को सन्मुख आवो, मर मम हाथों क्यों पाप लगावो ॥कां० ॥ ६ ॥ कीडी पर कटकी नहीं करते, तो निर्बल वृद्ध से कबहु न लरते ॥ कां ॥ ७ ॥ वृद्ध पणे झगड़ो नहीं कीजे, श्री शार्दूल शिष्य कहे समता ही लीजे ॥ कां० ॥ ८ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

छोरा ए बोलीरां वेड़ा, देख्या नहीं एबदार एडा, भागो मत आवो अब नेड़ा । मच्यो तव द्वन्द युद्ध भारी, बांध लियो पृथु ने तिणवारी ॥ सत्य० ॥ ९९ ॥

ढाल मूलगी—

लवणांकुश हसि बोलिया, ए अण जाण्यो वंशो ।
तसु आगे क्यूं भांजता, पामी वंश प्रशंसो ॥ सीता० ॥ २९ ॥
पृथु भाखे कुंवर सुणो, वंश जणाणो आजो ।
पराक्रम वंश न सही सके, अष्टापद घन गाजो ॥ सीता० ॥३०॥
'वज्रजंघ' सू 'पृथु' कहे, अंकुशनें मैं दीधी ।
कनक मालिका बालिका, परणावो पर सिद्धि ॥ सीता० ॥ ३१ ॥
रंगहुओ दोई नृप में, कीधो कटक पड़ावो ।
एटले चाली आवियो, नारदजी ऋषि रावो ॥ सीता० ॥ ३२
रंग रली दोई दलां. देखी पूछे साधो ।
दीसो छो रस रंगमें, कहो किस्यो तुम्ह लाधो ! ॥सीता ॥ ३३

कन्या पृथु राजा तणी, 'अंकुश सुं परणेतो ।
कीजे छे ते जाणवो, हर्ष तणो संवेतो ॥ सीता० ॥ ३४ ॥
सबलानो ए जोहरो, तेरे गुदिनो पावो ।
वंश कहो कुंवरां तणां, जेम वधे चित्त चावो ॥ सीता० ॥३५॥
नारद भाखे नयणछे, तेतो देखे भानो ।
ए आंधाने पूछवो, किस्यो अछे रवि छानो ॥ सीता० ॥३६॥
आदि हुआ आदीश्वरु, आदि नाथ जगदीशो ।
भरत हुओ सुत तेहनो, ते पण धुरं चक्रीशो ॥ सीता० ॥ ३७ ॥
पुरुष पनोता होवता, इणही वंश विख्यातो ।
पुरी अयोध्या प्रगटिया, राम सु लक्ष्मण भ्रातो ॥ सीता० ॥३८॥
गर्भ विषे जब ए हुता, लोक-वचन ने त्रासो ।
पामी राम दिवाड़ियो, सीता ने वन वासो ॥ सीता० ॥ ३९ ॥
रामचन्द्र ना नन्द छे, सीता उदर उत्पन्न ।
वंश इक्ष्वांकु ना विषे, म्होटा पुरुष रतन्न ॥ सीता० ॥ ४० ॥
अंकुश कहे ऋषि रायजी, भलोन कीधो एहो ।
कारण अति अबला भणी, क्युं देवाए छेहो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
लवण कहे ऋषिशा पुरी, कहो छे केतिक दूर ? ।
साठ अने शत योजन, दीसे एह हजूर ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
वज्र जंघ कहे कुंवरां, अब चालो निज थानो ।
लक्ष्मण राम देखाड़स्युं, शूरपणे मन मानो । सीता० ॥ ४३ ॥
मानी वात विशेषथी वज्रजंघजी भाग्यी ।
कनक माला परणाविपो, अंकुश रवि-शशि-साखी ॥ सीता० ॥४४॥
पंचाननमी ढाल में, शूर तणो ने शूरो ।
केशराजजी तो कहे, जो पूर्व पुण्य अंकूरो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥

दोहा सोरठ राग—

'वज्रजंघ पृथु रायजी, लवणांकुश सीलार ।
चाल्या दलबल साम्हटे, साधनरे देश अपार ॥ १ ॥

१ स्वाधीन करनेको ॥

पहेलीतो लोकाक्षपुरी, लवणांकुश आवन्त ।
'कुबेरकन्त जी रायजी, जीती जश पावन्त ॥ २ ॥
रायकर्ण लंकाकपति, जीती लीधो जेह ।
भ्रातृशत विजयस्थली, आण मनाव्या एह ॥ ३ ॥
उतरिया गंगानदी, जिहांछे गिरि कैलाश ।
तिहांथी उत्तर नेदिशे, आयाधरी उल्हास ॥ ४ ॥
नन्दनचारु देशबहु, जीती लीधा स्वामी ।
सिंहल कुन्तल ए, जीत्याछे जश पामी ॥ ५ ॥
'भूतरवादि कालाम्बु, नन्दी नन्दन देश ।
'भीम शूल शलभातल, साधीलिया सुविशेष ॥ ६ ॥
साधीलिया सुखमेंसहु, सिंधुना[1] परकूल ।
अनारज[2] ने आरजा, कीधो सघलो सूल ॥ ७ ॥

देशबहु साधिवन्या, साथेघणा भूपाल ।
पुण्डरीक पुरी आवीया, लवणांकुश सुविशाल ॥ ८ ॥
'वज्रजंघ धन्य रायजी, जेहता ए भाणेज ।
एम सुणतां घर आवीया, माय मिलणनूं हेज ॥ ९ ॥
'लवणांकुश बहु रायसूं, प्रणमे माता पाय ।
मातादे आशीपड़ी, वधजो अधिको आय ॥ १० ॥
नन्दननें नीकीपरे, करजे तूं करतार ।
राम-लक्ष्मण सारिसा, भूमितणा भरतार ॥ ११ ॥
वज्रजंघने कहे कुंवरां, एहछे अवसर सार ।
पुरी अयोध्या जायके, कीजे तात जुहार ॥ १२ ॥
'लम्पाक कालाम्बू लंका, और सुकन्तल चूल ।
'सरभानल ओदघणा, साथे हुआ अनुकूल ॥ १३ ॥
प्रयाणनी भम्भाभली, देवाड़े अभिराम ।
साहण वाहण सामटे, कुंवर चाल्या ताम ॥ १४ ॥

---

१ सिंधुनदीके पर नादेश २अनार्य—और आर्य

ढाल छपनमीं तर्जकडवरांनी—

आवेरे दोई लवणांकुश सजी, साजी तात प्रत्ये।
आपो देखावण करी विधिसाजा,चाल्या करी अधिक दिवाजा॥ १ ॥
रोवन्ती माताजी बोले, किस्यूं करो तुम एहो।
युद्धतणी विधि सजी चाल्या, मुझमन एह अन्देहो॥ आ० ॥ २ ॥
पिता१ पितृव्य२ तुम्ह दुर्जय३, पहूंची सकेनहीं देव।
तीन लोकनो कण्टक रावण, मारी लियो ततखेव॥ आ० ॥ ३ ॥
ठूंठतिके नवि वायेहाले, मेरु नविगाये कम्पे।
म्होटासूं लड़वूं नविगोवा, पुत्रांसू मा-जम्पे॥ आ० ॥ ४ ॥
जलधर केरी गाजसुणीने, अष्टापद अति कोपे।
कूदी कूदी निज गोड़ा तोड़े, पण घननें नवि लोपे॥ आ० ॥ ५ ॥
विनय करेवा जोतुम्ह जावो, तो तुम्ह वेगाहोवो।
पूज्य पूज्यां पीड़ प्राजे, एह विमासी जोवो॥ आ० ॥ ६ ॥
पतिविनमें तुम्हसूं मन बांध्यू, तुम्हविन सी गतिम्हारी।
रांकतणा छोरुआछो येतो, मनहीं चलोमें वारी॥ आ० ॥ ७ ॥
पुत्रकहे माजी तुम्ह साचा, जेम कियारा काजो।
तेहि साथे न मिले मन मोती, तूट्यां मेघ आकाशो॥ आ० ॥८॥
माताजी कहे पुत्रनिसुणो, ए रहिवायो कामो।
कानणहारी तारतणीपरे, जोड़ही अभिरामो॥ आ० ॥ ९ ॥
पुत्र तुम्हारा हमछों एहवो, किम रहिराये वानो।
छोहरा ए छोडन्ती केरा, इमही कहसे तातो॥ आ० ॥ १० ॥
आनन्द कारी नानईले, युद्ध तणूंनो नामो।
कुल दोईनो उज्वल, सुन्दरछे संग्रामो॥ आ० ॥ ११ ॥
एमकईले चल्या कुंवर, रोनी मेली मावी।
उत्साहवन्त महन्त कटकसूं, रेणुरही नभ छावी॥ आ० ॥ १२ ॥
कुठार कुद्दालतणा सम्वाहण, द्वारा दमही ह्वाणो।

१ पिता (राम)–२ काका (लक्ष्मण)–३ कोई भी जीत सके नहीं।

पन्थतणा तरु छेदी सूधो, कीधो पन्थ अपारो ॥ आ० ॥ १३ ॥

ढाल चेपक मूलगी—

अनुक्रम अवधपुरी आया, डेरा पुरबाहिर लगवाया, सैन्यसे पुरसब घेराया । दूतने खबर आयदीनो, राम रुलिछमन सुनलीनी ।

व्रत पालो १०० । सेनापति सेना ललकारो युद्धकी खूनकरी यारी, भुजास्फोठ सुभटकरे भारी । सैन्यद्वय आपसमें मिलिया, समर रा सौखी महाबलिया ॥ सत्य ॥ १०१ ॥

ढाल मूलगी—

सेनानीसूं अवी अडिया, अतिबलवन्ता दोई ।
नहीं सेनानी कब्रूरे सारे, एहसुणे प्रभु सोई ॥ आ० ॥ १४ ॥
सौमित्री कहे एरे पतंगा, आतुर अति देखाता ।
आरति पराक्रम पावक मांही, करवा झंपापाता ॥ आ० ॥ १५ ॥
एमकहीने राम-सुलक्ष्मण, सुग्रीवादिक लारो ।
युद्धभणी चाली सहामीआया, कोईन लाई वारो ॥ आ० ॥ १६ ॥
एटले नारद नेमुख सांभली, भामण्डलजी भाई ।
गोवन्तीकहे भाई! मुझसूं प्रभुजीतो ए कीधी ।
खुणस करीने तुम्ह भाणेजा, लडवानी मति लीधी ॥ आ० ॥ १८ ॥
'भामण्डल कहे रामे करियो, जेमतूं त्यागी बिगाड़ो ।
अणजाण्यांए दोई हणवा, करसे नहीं विचारो ॥ आ० ॥ १९ ॥
जबलगे विणसे एनहीं कारज, तबलग दौडीजावा ।
करूं निवेडो वात जणाची, रामहीं रोप सिटावा ॥ आ० ॥ २० ॥
एमसुणी सीता भामण्डल, बैसी विमाने आवे ।
,लवणांकुश धसी माताजीने, चरणे शीश नमावे ॥ आ० ॥ २१ ॥
'सीता कहे भामण्डल भाई, थांरो मामो साचो ।
माताने भाणेजा मांहे, नेह जणाणो जाचो ॥ आ० ॥ २२ ॥
[illegible] उठाई ऊंचा, लीधा कण्ठ लगाई ।
[illegible] र चुम्बी खोले बेसाडी, मामोकहे सुखदाई ॥ आ० ॥ २३ ॥

वीरतणी पत्नी नी कीर्ति, पहिलीथी जगमांई ।
वीर प्रसूनी कीर्ति बीजी, ए पामीते प्राही ॥ आ० ॥ २४ ॥
वीरतणासुत वीर अछोतुम्ह, कामकरोरे विमासी ।
पितृ वंशों माथे लडतां, होसे जगमां हासी ॥ आ० ॥ २५ ॥
जेहने रणमां राजा रावण, आपणपे रे मराणो ।
प्रगटपणे एतोरे पवाड़ो, सघलेही रे गवाणो ॥ आ० ॥ २६ ॥
लवणांकुश कहे मामाजी तुम, वात करो ए फीकी ।
आवी मिल्यां उसरिया अलगां, वात न लागे नीकी ॥ आ०॥२७॥
एम कहन्तां दोई पक्षना, शूर अति गम्भाया ।
स्वामी तणो ए काम समारण, अधिकपणे उमाया ॥ आ० ॥२८॥
सुग्रीवादिक खगही खेचर, भूचर भटने डरावे ।
भामण्डल खेचर साथे, लण्डे सरिये दावे ॥ आ० ॥ २९ ॥
लवणांकुश अंकुश सरिसा नांग्वा, शूर शिरोमणि शूर ।
राम तणा भट उपर आवे, जेम आवे जल पूर ॥ आ० ॥ ३० ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायण में से—

इसी समय सेना-सहित, आ पहुंचे कपिराज ।
बोले-हे लघु बालकों ! संभलो रण में आज ॥
अच्छा तो यह है- धनुष बाण, धरती पर धरो लड़ाई में ।
सुग्रीव देखकर डरता है, आजाय न मौत लड़ाई में ॥
लंका विजयी दल के आगे, मत यह प्रलयस्थायें फेरो ।
अपने सदन में जाकर के सुखों रमो सुख शिशुपन फेरो ॥
कुश बोले क्या तुम वही हो, वानर-पति सुग्रीव ।
वानर हमारे तुल्य सबे, इनके पल्ले सीव ॥
सब भाग साहसगति से तुमने फिर राम-लखन को बुलाया था ।
वह हृदय मुबारक है जिससे, उस योद्धा को मरवाया था ॥
बालक नहीं पर बुद्ध रहे थे, इधर के वीर ।
सौंप दिया सुग्रीव का, उनमें सुखन शरीर ॥

बोले-बस बस मुंह बंध करो, क्यों विष टपकाये जाते हो।
मट्टी के ढेले होकर तुम, गिरि-शिखरों से टकराते हो॥
ऐसा कह कर कुश के उपर, दौडे सुग्रीव मिटाने को।
धाता है राहु दिवाकर पै, जिस तरह ग्रास कर जाने को॥
लेकिन रास्तेही में कुश ने, सम्पूर्ण वीरता हरडाली।
बाणों से नयनों के आगे, बस चका चौंधसी कर डाली॥
लड़ते लडते सुग्रीव थके, पर बालक का तन छुआ नहीं।
कुश वैसेही मुसकाते थे, मानों अब तक कुछ हुआ नहीं॥

बोल उठे कुश--कर चुके, पूरा तुम अरमान।
अब बच्चों का बाणभी, स्वीकारें श्रीमान्॥

जैसेही कुशके धन्वासे छोटासा शर कुश का पहूंचा।
सुग्रीव मूर्च्छावन्त हुवे, माथा घूमा कांपा पहूंचा॥
अङ्गद दौडा ज्यूं ही उसने, कपिपति को गिरजाते देखा।
आगया उबाल नेत्रों में, जब लव को मुसकाते देखा॥
बादल की नाई आकर के-गर्जे-बच्चे ! क्यों हंसता है !।
ऐसा होता ही आया है, दो लड़ते हैं एक गिरता है।
राजा के गिरजाने का बदला, अङ्गद युवराज चुकायेगा।
हो सावधान हंसने वाले, यह नाहर तुझे रुलायेगा॥

लव बोले क्यों व्यर्थ ही, बकता ओ बाचाल।
नाहर तूं कबसे हुआ, ! विदित हमें सब हाल॥

जबसे स्वामी घातीके पगमें, यह अपना शीष झुकाया है।
तब से ही इस दुनियों में, नाहर पन तूने पाया है।
अच्छा नाहरजी घर जाओ, क्यों प्राण गँवाने आये हो।
यह रावण का दरबार नहीं, जो पैर जमाने आये हो॥

कैसे सह सकता भला, अंगद 'लव' के बैन।
बाल-भास्कर की तरह, अरुण होगये नैन॥

गम्भीर गर्जे के साथ साथ बस गदा चलादी बच्चों पर।

लेकिन सबने देखा वह थी, 'कुश' के बाणों की नोकों पर ॥
इतनेमें लवने शरछोड़ा, शिर घूमा जिससे अंगद का ।
पृथ्वी पर गिरतो गया किन्तु, तन लाल था रीस अंगद का ॥

ढाल मूलगी—

सुग्रीवादिक 'भामण्डल' सूं, पूछे ए कुण होई ? ।
'भामण्डल' कहे सीता जाया, राम तणा सुत दोई ॥आ० ॥ ३१ ॥
आवी सीता चरणे लाग्या, खेचर बैठा आगे ।
'लवणांकुश' उठावणी आगे, राम तणा भट भागे ॥ आ० ॥३२॥
जिहां तिहां रण रंगही खेले, हरि जेम मृग-वन मांही ।
रथ सारथी नेरे निखेदी, एक न कोई साही ॥ आ० ॥ ३३ ॥
राम सु लक्ष्मण सामा आया, देखी सुन्दर ताई ।
कोई शूर ऊपन्या आई, जोई रह्या लोभाई ॥ आ० ॥ ३४ ॥
नयणे नेह जणावे निजवं, परवं पोखे द्वेषो ।
नयणोंना निन्गाती भाख्या, लिरो लई मयल विशेषो ॥आ०॥३५॥
मनतो मिलवाने उमाहे, वलती तामस जागे ।
एही अवसर छे कांई ज्ञानी, न रहे संशय तग आगे ॥आ०॥३६॥
लवण कहे रघुपति सूं रूडी, अङ्कुश लक्ष्मण साथे ।
चोर सहस्र अक्षौहणीनो पति, तुम हण्यो निज हाथे ॥आ० ॥३७॥
मोरे हम तुम साथे अड़िया, सुजश दियो जग नाथे ।
अस्त्र शस्त्र सुं अति लड़िसुं, नहीं तब पड़िसुं पाथे ॥ आ० ॥३८॥
रावण सूं लड़तां न थाक्या, सो अब लड़ो हम सेती ।
हमतो आदि थकी अब लड़सां, धर्मानी ए खेती ॥ आ० ॥३९॥
एमसुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणांकुश दो वीर ।
धनुष्य चढ़ावी सन्मुख आवे, मेरु तणी पर धीर ॥ आ० ॥४०॥

श्रीपरू राधेश्याम रामायण में से—

देखी जब निज साथियों की, सब दिशी में हार ।
लक्ष्मण तत्क्षण होगये, लड़ने को तैयार ॥

सोचा-जगविजयी सेना का, इस तरह भागना लज्जा है।
बच्चों से रघुकुल का दबना, सचमुच कलङ्क का टीका है॥
परबच्चे यह बच्चेक्याहै, बेजोड दिलेर जहांकेहैं।
शायद ब्रह्माने प्रथमबार, सिरजे यहबच्चे वहांकेहैं॥
अस्तु शीघ्रतासे वहां, पहुंचे यह बलवान।
जहां बालके खड़ेथे, तानेहुए कमान॥
देखा-कितनेही योद्धागण, पृथिवीपर शयनकर रहेहैं।
बातिनमें सबमें साँसेहैं, जाहिरमें सभी मर रहेहैं॥
हतको देखातो आहतथा, आहत हतसा दिखाताथा।
कितने हतथे कितने आहत, यहजोड नजोडा जाताथा॥
वहशान्त विपिनकी तपो भूमि, उसओर लालहो दमकीहै।
उसलाली-मेंकुन्दन जैसो, शस्त्रोंकी ढेरी चमकीहै॥
मनों विपिन स्थलिने ओढा, यह सुर्ख दुपट्टा तारो का।
या लाल प्रभाने पहना है, यह गहना मुक्ताहारों का॥
दूसरी ओर यह भी देखा-दो बच्चे धनुष-चढाये हैं।
उस अवधपुरी के शासन-पर, अपना अधिकार जमाये हैं॥
बोले-सुकुमारों ? धन्य तुम्हें, सचमुच अद्भुत बल पाया है।
किष्किन्धा के गर्वीलोंको , रणमे नीचा दिखलाया है॥
लेकिन रघुवर को-रघुकुल को, ब्रह्मा भी हरा नहीं सकता।
सागर कितनाही बढे मगर, सूरज को डुबा नहीं सकता॥
इसलिए फौज को लौटादे, तुमसे रन करना ठीक नहीं।
बच्चोंकोमार बाल-हत्या का, अघ निजशिर पर लेना ठीक नहीं॥
कुश बोले यह ठीक है, कहते जो श्रीमान्।
किन्तु हमारी भी विनय, सुनिये धर कर ध्यान॥
ईश्वर-भक्तों का प्रथम कर्म, ईश्वर की भक्ति करना है।
फिर ईश्वर भक्तों ही की, इस जग में वृद्धि करना है॥
ईश्वर-भक्तों की वृद्धी को, धर्मी राजा आवश्यक है।

सङ्गीत जमाने की खातिर, सुन्दर बाजा आवश्यक है ॥
हम खूब जानते हैं-रघुपति, रैय्यत का पालन हारा है।
लेकिन वह त्रिभुवन विजयी नर, नारी के द्वारा हारा है ॥
सीता साध्वी के कष्टों ने, करदिया नष्ट उसके बल को।
अब नहीं बड़ाई जग देता, लङ्का किष्किन्धा कौशल को ॥
इस लिए जगत का धर्म हुआ, उससे सिंहासन ले लेना।
जो व्यक्ति योग्य हो शासन के, उसको ही शासनदे देना ॥
अतएव देश के नाते से, हम को यह धर्म चुकाना है।
उस मद से भरे महिपतिका, मद सब विध्वंस कराना है ॥
अच्छा ये बातें जाने दो, अब योद्धा पन की बात करो।
याती वापिस घर को जाओ, या आओ रन की बात करो ॥
लक्ष्मण बोले क्षत्री के प्रति, ऐसा कटु वाक्य न अच्छा है।
क्षत्रीतो फिरने के बदले, रनमें कट जाना सीखा है ॥
जिसने रावन को संहारा है, उसको तुम भीरु समझते हो।
ठहरो इन बाणों से बिधकर, क्षण यम लोक पहूंचते हो ॥

अब क्या था दोनों तरफ, खिंचे धनुष और बान।
क्षण भर में होने लगा, युद्ध घोर घमसान ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणांकुश दो वीर।
धनुष्य चढ़ावी सन्मुख आवे, मेरु तणी पर धीर ॥ [illegible]
रामतणा रथनो सारथियो, सेनापतिजे सुहावे।
वज्रजंघजी लवण तणोरथ, खेडने जय पावे ॥ [illegible]
वीरविराध लक्ष्मण रथआगे, पृथु अंकुश रथ[illegible]।
रथ सारथिया चारही सरवरा, एक एकने [illegible] ॥ [illegible] ॥
पितृ पितृव्य जाणीजाणी, कुंवरजीतो [illegible]।
अंकुशीपुरो-नंदन जाणे, चोट करन निः[illegible] ॥ [illegible] ॥
विविधायुध निजिनपरे[illegible], [illegible] [illegible]।
रामकुं [illegible] रथहांकी, [illegible] ॥ [illegible]

कहे सारथी हंयनहीं हाले, पीड़ाणा शरघावे ।
कर्या घावसूं ताडतांही, पाछाही पगठावे ॥ आ० ॥ ४५ ॥
रथ प्रभुजीनो सिथिलहुओअति. वयरिये अति ताड्यो ।
करी सिथिलता खेंचत रश्मी, अरि तोही न नमाड्यो ॥ आ०॥
राम कहे न पड्या कर ढीला, कोई काम इण सारे ।
सो कर ढीला आज पड्याछे, सांसो कोण निवारे? ॥ आ ॥ ४
वज्रा वर्ता धनुप धणीनूं, सघलू काम समारे ।
सोही मुंडो फेरी रहीयो, वातपड़ी अविचारे ॥ आ० ॥ ४८
मूसल–रत्न दलन वल अरिनूं, सो पण ढीलो पड़ियो ।
अरिगंजन अंकुश स हल ए, एही अहिसूं न चिअड़ियो ॥ आ०
जक्ष हजारे से वितछे रे, हल मूसल ए स कामा ।
कोई अवस्था केरे केडे, हुआ आज निकामा ॥ आ० ॥ ५०
राघवनां जेम जेम लक्ष्मण नां, सघलाही उप कर्मो ।
जेकीधा तेसाम्रां नायां, जग जागन्तो धर्मो ॥ आ० ॥ ५१ ॥

क्षेपक राधे श्याम रामायण में से

लक्ष्मण जिस समय अग्नि-शर से, सर्वत्र अग्नि फैलाते थे।
कुशल तभी बाण से जल वरसा, तत्क्षण उसे वुझाते थे॥
फिर लक्ष्मण अपना बाण छोडा, जब जल को घीसा करते थे
कुश तभी बाण से रेते के, घी को मट्टी सा करते थे ॥
धीरे धीरे बढ़ चला, वैज्ञानिक संग्राम ।
घटा जभी छाई इधर, उधर खिलगई घाम ॥
बाणों ही बाणों के द्वारा, नाना प्रकार के ज्वर आये ।
बाणों ही बाणों के द्वारा, सब नष्ट हुवे सब खिल गाये ॥
माया की सेनायें बनकर, लड़ती थी मरती जाती थीं ।
धोखे की शक्लें धाती थीं, बनती थीं मिटती जाती थीं ॥
जब वैज्ञानिक युद्ध का, होने आया अन्त ।
तन्त्र शक्तियों की बनी, वह रण भूमि तुरन्त ॥

उच्चाटन-मारण-वशीकरण-, सम्मोहन आदि तन्त्र आये ।
इन तन्त्रों ने इन मन्त्रों ने, कितने ही कौतुक दिखलाये ॥
लड़ते थे कभी प्रगट होकर, और कभी गुप्त हो जाते थे ।
नाना प्रकार की लीला से, वीरता वीर दिखलाते थे ॥

डाल मूलगी—

एटले अंकुश बाणे हणीयो, हैये लक्ष्मण काको ।
मूर्च्छाए पड़ियो रथमांहीं, अंकुश कीधो शाको ॥ आ० ॥ ५२ ॥
मूर्च्छाए पड्यो प्रभु पेखी, रथतो घरने चलायो ।
वीर विराध विचारी वारु, स्वामी संज्ञापायो ॥ आ० ॥ ५३ ॥
वीर विराध सूं प्रभु बोलियो, अनुचित कार्य तें कीधो ।
राम लड़े रस रंगे रणमें, मुझ रथ घरने लीधो ॥ आ० ॥ ५४ ॥
लेई रथ रणमें अरिने हणीयूं, चक्र छेदी शीशो ।
लक्ष्मणजी फरि रणमें आयो, उपजी छे अति रीसो ॥आ०॥५५॥
रे ! अंकुश कुंवरा तृण जेम तोड़ूं, कोई न लावूं वारो ।
चक्र चलावे अरिने दावे, अंकुश सुतनी लारो ॥ आ० ॥ ५६ ॥
देई प्रदक्षिणा पाछो वलियो, लक्ष्मण ने करे बेठो ।
जेम तरु पंखी उडी अपूठो, आवी माले पेठो ॥ आ० ॥ ५७ ॥
फिरी मुकीयो मो फिरी आयो, पण्डित ताम विचारे ।
गोतीने पहुंचे ए गुण गिरुओ, तो गुंही क्यूं मारे ॥ आ० ॥
राम-सु लक्ष्मण आरनी आणे, वासु देव बल देवा ।
ए दोई भाई ऊपजीया, पदवी ए हम लेवा ॥ आ० ॥
एह छपनमी ढाले कुंवरां, फिरती अधिक [illegible]
केशराज जग जेता जेथी, ते आगे जश पाया ॥ आ० ॥ ५९ ॥

दोहा [illegible]—

'सिद्धारथ साथेकरी, नारद ऋषि [illegible]
सिमिमूं करता वन्दना, गाढो [illegible]
दुश्चिन्ता देखी रामने, नारदजी [illegible]

कोण कारण आरतितणूं, राघव कहे तुरन्त ॥ २ ॥
फोड़ादाधां ऊपरे, कांपीड़ो ऋषिदेव ।
भूमि पराई थापछे, आवे ए अहमेव ॥ ३ ॥
एआया बलियामहा, नहीं हमारो ताल ।
कारण ए आरतितणूं, ऋषिभाखे सुविशाल ॥ ४ ॥
हर्ष-थान विषवादयह, कांईकरो रघुनाथ ।
एह सुबोल सुहामणा निसुणो सघलो साथ ॥ ५ ॥
ए जाया सीतातणा, युगलपणे अभिराम ।
लवणांकुश अभिधानथी, पुत्र तुम्हारा राम ॥ ६ ॥
त्याग तणोदिन थुरथकी, युद्धतणो दिनअन्त ।
सम्भलायो श्री रामने, सीतानो विरतन्त ॥ ७ ॥
प्रभुजीने मिलवाभणी, आया आणीस्नेह ।
आप जणावण कारणे, करी देखावी एह ॥ ८ ॥
एहनीए अहिनाणिका, मनसूं करो विचार ।
चक्र अपूठोतो फर्यो, जो सगपण व्यवहार ॥ ९ ॥
अदिनाथनां पुत्रनी, निसुणी होसे वात ।
'वाहुवल भाईतणी,चक्रेन कीधोघात ॥ १० ॥
तुमढालीने तुमतणी, अवरां शिर केमहोय ।
हाथीजाया हाथीया, साथे लडन्तो जोय ॥ ११ ॥
विस्मय पीड़ा खेदनो, हर्षहैये नसमाय ।
मूर्च्छाखाई धरणी पड्या, लीधा ताम उठाय ॥ १२ ॥
आंखेआंसू नांखता, लक्ष्मण लीयालार ।
पुत्रोंने मिलवा चल्या, कोईन लायावार ॥ १३ ॥
स्वरथ[1]थी तव ऊतर्या, आवन्ता प्रभुदेख ।
'लवणांकुश सकुमारजी, विनयकरे सुविशेष ॥ १४ ॥
हाथांथी हथियारजे, अलगा नांख्या ताम ।

१ स्पन्दनथी-इति पाठान्तरे (अपने रथसे)

राम-अने लक्ष्मण तणे, चरणकरे प्रणाम ॥ १५ ॥

ढाल सत्तावनमी—तर्ज वृद्धा थाडा डोकरा रे मोहना—

चन्दन शशीजल छांयड़ीरे नन्दना, शीतलहोई अपाररे नन्दन ॥ ते नवि पूजीहीरे नन्दना नन्दन वडो संसार रे ॥ नन्दन परम पियारे ॥ टेर ॥ १ ॥ नन्दना रे नन्दन थी आनन्दरे, नन्दन है सुख कन्दरे ॥ नन्दन पूनमचन्द रे, उल्लासे वंश समुन्दरे ॥ नन्दन परम ॥२॥ सुत पाछे सुख सयलजीरे, नन्दना, पहेलू सुखतो पूतरे ॥ स्थितिनो थोभण पूतजीरे, नन्दना, पुत्र थकी घरसूतरे ॥ नन्दन ॥ ३ ॥ उठाई उंचा करीरे ॥नन्दना ॥ लीधा कण्ठलगायरे हलधरनेहरिजीतणेरे ॥नन्दना । हैज हैये नसमायरे ॥ नन्दन ॥ ४॥

क्षेपक राधेश्याम—

ज्यूं ही नारद से सुना, वैदेही-वृत्तान्त ।
वीर-भूमि पैवस तभी, परम उठा रस शान्त ॥
क्षमा मांगने को बढे, लव-कुश दोनों भाय ।
आगे बढ़ रघुनाथ ने, छाती लिया लगाय ॥
पुत्रों का और पिता का, यह प्रिय-मिलन निहार ॥
सुर-पुरसे बरसे सुमन, जगने की जयकार ।
लखन लाल ने जब लखे, युगल स्वरूप अनूप ।
कहा-अमंगल रण हुआ, आज सुमंगल रूप ॥
आशीर्वाद के लिए आज, प्रत्येक हृदय उमड़ाना है ।
अभिवादन करने को तन का, हर रोम रोम हर्षाना है ॥
यह हार नहीं है जीत हुई, अपयश के भीतर यश पाके ।
कोशलने खुद पर जय पाई, परिपूर्ण पराजय में आके ॥
इस रणका निर्णय कौन करे, किसने यह युद्धस्थल जीता ।
कोशल ने यह दोनों जीते, इन दोनों ने कोशल जीता ॥

ढाल पूर्वली—

खोले लीधा बालुडां रे, नन्दना ॥ चूंबे शिर सोयार रे ॥ नहराते नयनो दरेरे नन्दना । पोखे प्रेम अपार रे ॥ नन्दना० ॥ ५ ॥

शत्रुघ्न पगे लागतारे ।।नन्दना।। आलिंगिन अधिकार रे ।। लवणांकुश पाय नमेरे, ।।नन्दना।। ताम सहु परिवाररे ।। नन्दन० ।।६।।
दोई पक्षना राजीयारे, ।।नन्दना।। मांहोमांहे उच्छाहरे ।। होवे रंग विनोदजीरे । नन्दना।। जाणे मांड्यो विवाह रे ।। नन्दन० ।। ७ ।।
पराक्रम दीठो पुत्रोंनांरे, ।। नन्दना ।। पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो वचन आगोचरूरे, ।।नन्दना।। दूधे साकर भेलरे ।। नन्दन० ।।८।।
निरखी हरखी जानकीरे ।।नन्दना।। वात पडी सहु ठाम रे । बाहुड़ी गई निज थानकेरे, ।।नन्दना।। बैसी विमाने तामरे ।। नन्दन० ।। ९ ।। सरखा पुत्र शोभियारे, ।।नन्दना।। थी लक्ष्मणजी राम रे । इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ।।नन्दना।। जयन्तक अभिराम रे ।। नन्दन० ।। १० ।। सरखा सुत छे कोई नारे ।।नन्दना।। असरखारे अनेक रे । गाली देघाडण हारजीरे ।।नन्दना।। जश बाला को एकरे ।। नन्दन० ।। ११ ।। भामण्डलजी भाखीयूंरे ।।नन्दना।। ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ।।नन्दना।। सु सन्मान्यो रायरे ।। नन्दन० ।। १२ ।। भामण्डल जेम वाल्होरे ।।नन्दना।। महारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ।।नन्दना।। नृप सूं प्रभुने प्रेम रे ।। नन्दन० ।। १३ ।। बेसी विमाने विराजता रे नन्दना ।। लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ।। नन्दना० ।। १४ ।। ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ।।नन्दना।। मिलीया ख्याले आयरे ।। मुख मुख जय उच्चरेरे ।। नन्दना ।। धन्य धन्य राघव रायरे ।। नन्दन ।। १५ ।। उतरिया विमानथीरे ।।नन्दना।। आवीने दरबाररे ।। ओच्छव मांड्यो अति घणोरे । नन्दना ।। घर घर मंगलाचाररे ।। नन्दन० ।। १६ ।। नोबत वाजे नाद सूरे ।।नन्दना।। नाचे पात्र अपाररे ।। जड मंडिने वरसिया रे ।। नन्दना।। वरस्या कंचन धाररे ।। नन्दन० ।। १७ ।। लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ।।नन्दना।। विभीषण हनुमान रे ।। अंगद आदि सहु मिली रे ।।नन्दना।। विनविंयो राजानरे ।। नन्दन० ।। १८ ।। राज-वियोगे पुत्र

सूरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मानरे ॥ परदेशोंमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जानरे ॥ नन्दन ॥ १९ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे साटल धलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेषरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथकन होगा राम।
किन्तु करेगा वहनहीं, प्रजा विरोधी काम ॥
संसार सहस्रों रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
ब्रह्माभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता ॥
मेरा इसमें कुछ्रापनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै ॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त ॥
मेरीतो सम्मतियही, करोन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलको बदनाम ॥
बहुमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होरहीहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं ॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जावेगा।
जिम दर्पणमें धुंधलापनहै, उनको चमकाया जावेगा ॥
इतनेमेंहो सिद्धवत्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ठ विचार ॥
मैं शपथ पूर्वक कहताहूं कह कुवादोंको मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने कन्धेपे पहुंचाऊंगा।

शत्रुघ्न पगे लागतारे ॥नन्दना॥ आलिंगिन अधिकार रे ॥ लवणां-
कुश पाय नमेरे, ॥नन्दना॥ ताम सहु परिवाररे ॥ नन्दन० ॥६॥
दोई पक्षना राजीयारे, ॥नन्दना॥ मांहोमांहे उच्छाहरे ॥ होवे रंग
विनोदजीरे । नन्दना॥ जाणे मांड्यो विवाह रे ॥ नन्दन० ॥ ७ ॥
पराक्रम दीठो पुत्रोंनांरे, ॥ नन्दना ॥ पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो
वचन आगोचरूरे, ॥नन्दना॥ दूधे साकर भेलरे ॥ नन्दन० ॥८॥
निरखी हरखी जानकीरे ॥नन्दना॥ वात पडी सहु ठाम रे । बा
हुड़ी गई निज थानकेरे, ॥नन्दना॥ वैसी विमाने तामरे ॥ नन्दन०
॥ ९ ॥ सरखा पुत्र शोभियारे, ॥नन्दना॥ थी लक्ष्मणजी राम रे।
इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ॥नन्दना॥ जयन्तक अभिराम रे ॥ नन्द-
न० ॥ १० ॥ सरखा सुत छे कोई नारे ॥नन्दना॥ असरखारे अ-
नेक रे । गाली देवाडण हारजीरे ॥नन्दना॥ जश बाला को एकरे
॥ नन्दन० ॥ ११ ॥ भामण्डलजी भाखीयूंरे ॥नन्दना॥ ए नृपने
सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ॥नन्दना॥ सु सन्मान्यो रायरे
॥ नन्दन० ॥ १२ ॥ भामण्डल जेम वाल्होरे ॥नन्दना॥ महारो
तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ॥नन्दना॥ नृप सं प्रभुने
प्रेम रे ॥ नन्दन० ॥ १३ ॥ वेसी विमाने विराजता रे नन्दना ॥
लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी
मांहीरे ॥ नन्दना० ॥ १४ ॥ ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ॥नन्दना॥
मिलीया ख्याले आयरे ॥ मुख मुख जय उच्चरेरे ॥ नन्दना ॥ धन्य
धन्य राघव रायरे ॥ नन्दन ॥ १५॥ उतरिया विमानथीरे ॥नन्द-
ना॥ आवीने दरबाररे ॥ ओच्छव मांड्यो अति घणोरे। नन्दना॥
घर घर मंगलाचाररे ॥ नन्दन० ॥ १६ ॥ नोबत वाजे नाद स्वरे
॥नन्दना॥ नाचे पात्र अपाररे ॥ जड़ मंडिने वरसिया रे ॥ नन्दना॥
वरस्या कंचन धाररे ॥ नन्दन० ॥ १७ ॥ लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे
॥नन्दना॥ विभीषण हनुमान रे ॥ अंगद आदि सहु मिली रे ॥न-
न्दना॥ विनवियो राजानरे ॥ नन्दन० ॥ १८ ॥ राज-वियोगे पुत्र

झूरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मातरे ॥ परदेशांमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जातरे ॥ नन्दन ॥ १९ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे फाटल चलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेषरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथकन होगा राम।
किन्तु करेगा यहनहीं, प्रजा विरोधी काम ॥
संसार सहस्रो रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
ब्रह्माभी चाहेंतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता ॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै ॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त ॥
मेरीतो सम्मतियही, कौन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलको बदनाम ॥
यहमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होरहीहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं ॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जावेगा।
जिस दर्पणमें धुंधलापनहै, उसको चमकाया जावेगा ॥
इतनेमेंही सिंहसम्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ठ विचार ॥
मैं शपथ पूर्वक कहताहूं कह झगड़ोंको मिटा दूंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने रथमें पहुंचाऊंगा।

शत्रुघ्न पगे लागतारे ।।नन्दना।। आलिंगिन अधिकार रे ।। लवणांकुश पाय नमेरे, ।।नन्दना।। ताम सहु परिवाररे ।। नन्दन० ।।६।। दोई पक्षना राजीयारे, ।।नन्दना।। मांहोमांहे उच्छाहरे ।। होवे रंग विनोदजीरे । नन्दना।। जाणे मांड्यो विवाह रे ।। नन्दन० ।। ७ ।। पराक्रम दीठो पुत्रोंनारे, ।। नन्दना ।। पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो वचन आगोचरूरे, ।।नन्दना।। दूधे साकर भेलरे ।। नन्दन० ।।८।। निरखी हरखी जानकीरे ।।नन्दना।। वात पडी सहु ठाम रे । बाहुडी गई निज थानकेरे, ।।नन्दना।। बैसी विमाने तामरे ।। नन्दन० ।। ९ ।। सरखा पुत्र शोभियारे, ।।नन्दना।। थी लक्ष्मणजी राम रे । इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ।।नन्दना।। जयन्तक अभिराम रे ।। नन्दन० ।। १० ।। सरखा सुत छे कोई नारे ।।नन्दना।। असरखारे अनेक रे । गाली देयाडण हारजीरे ।।नन्दना।। जश बाला को एकरे ।। नन्दन० ।। ११ ।। भामण्डलजी भाखीयूंरे ।।नन्दना।। ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ।।नन्दना।। सु सन्मान्यो रायरे ।। नन्दन० ।। १२ ।। भामण्डल जेम वाल्होरे ।।नन्दना।। महारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ।।नन्दना।। नृप सूं प्रभुने प्रेम रे ।। नन्दन० ।। १३ ।। वेसी विमाने विराजता रे नन्दना ।। लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ।। नन्दना० ।। १४ ।। ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ।।नन्दना।। मिलीया ख्याले आयरे ।। मुख मुख जय उच्चरेरे ।। नन्दना ।। धन्य धन्य राघव रायरे ।। नन्दन ।। १५ ।। उतरिया विमानथीरे ।।नन्दना।। आवीने दरबाररे ।। ओच्छव मांड्यो अति घणोरे। नन्दना।। घर घर मंगलाचाररे ।। नन्दन० ।। १६ ।। नोबत वाजे नाद सूंरे ।।नन्दना।। नाचे पात्र अपाररे ।। जड मंडिने वरसिया रे ।। नन्दना।। वरस्या कंचन धाररे ।। नन्दन० ।। १७ ।। लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ।।नन्दना।। विभीषण हनुमान रे ।। अंगद आदि सहु मिली रे ।।नन्दना।। विनवियो राजानरे ।। नन्दन० ।। १८ ।। राज-वियोगे पुत्र

सूंरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाब्याथा मातरे ॥ परदेशोंमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जानरे ॥ नन्दन ॥ १६ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे साटल वलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेपरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथक न होगा राम।
किन्तु करेगा वहनहीं, प्रजा विरोधी काम ॥
संसार सहस्त्रो रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
प्रजाभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता ॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै ॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त ॥
मेरीतो सम्मतियही, कौन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलको बदनाम ॥
बहुमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
अबप्रजा खिलाफ होगईहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं ॥
अच्छा अब शपथ प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जावेगा।
जिस दर्पणमें धुंधलापनहै, उसको चमकाया जायेगा ॥
इतनेमेंही सिंहवत्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ट विचार ॥
मैं शपथ पूर्वक कहताहूं कर दूंगा दोष मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने सन्मुख पहुंचाऊंगा।

कानोंकी सुनी नहीं, आँखोंकी देखीहुई सुनाऊंगा।
उस सोतीहुई अयोध्याको, सीताका ज्ञान कराऊंगा॥
फिरभी विश्वास न होगा तो, रैयतसे रनठन जायेगा।
यह सहन शक्तिवाला हनुमत्, बस रुद्र-रूप बनजायेगा॥
पृथ्वी आकाश विलोकेंगे, उस समय कर्म इस सेवकका।
ब्रह्मा और शंकर देखेंगे, उस समय धर्म इस सेवकका॥
तामसी प्रकृतिका दुनियां से, अस्तित्व मिटाया जायेगा।
सद्गुण की सामग्रीसे फिर, संसार वसाया जायेगा॥
यह जीवन सुफल तभीहोगा. यहआँखें सुखी तभी होंगी।
जब सीतापति की वामांगी, कोशलकी साम्राज्ञी होंगी॥
वचनों से वजरंगके, दहल उठा संसार।
हुआ तामसी प्रकृतीमें, भीषण हाहा कार॥
सुन वजरंगी का यह प्रण. वीरोंके हृदय फड़क उट्ठे॥
अनुमोदन को बच्चों के भी, तर्कश मे तीर कडक उट्ठे।
सीयापति की इतने पर भी, वह दिव्य मूर्ति मुसकाती थी।
घटनाकी घटा वरसतीथी, सूरज पर वूंद न आतीथी॥

ढाल मूलगी—

भाखे राघव राजीयोरे॥ नन्दना॥ बोलावीजे केमरे॥ जन-अपवाद मिथ्योनहींरे! ॥ नन्दना॥ तुमपण जाणोएमरे ॥नन्दन॥ २२॥ हूंजाणूं सीता सतीरे॥ नन्दना॥ सापण जाणे आपरे। दिव्य कियां सघलों मिटे रे॥ नन्दना॥ लोक-वचन सन्ताप रे॥ नन्दन॥ २३॥ सर्व लोकनी साखसूंरे॥ नन्दना॥ दिव्य कराऊं देवरे। मुंहडो फिर से लोकनोरे॥ नन्दना॥ साच लह्यां ततखेव रे॥ नन्दन॥२४॥ भलूं २ भूपे भण्यूंरे॥ नन्दना॥ नगरी बाहिर जायरे। मण्डप मांड्यों मोटकोरे, ॥नन्दना॥ मंचक बहु मण्डायरे ॥ नन्दन॥ २५॥ आवी बैठा राजीयारे ॥नन्दना॥ विभीपण सुग्रीव रे। भूचरने खेचर सहुरे॥ नन्दना॥

आया जंगम जीवरे ॥ नन्दन ॥ २६ ॥ पुरी अयोध्या ए सहुरे ॥ नन्दना ॥ ते डाव्या सहु लोकरे । साच दियां लोगां खरूंरे ॥ नन्दना ॥ ज्यूं फिरी नवि करे खोकरे ॥ नन्दन ॥ २७ ॥ प्रभु आदेशे चालीयोरे ॥ नन्दना ॥ कपिपति लेवा तास रे । पुण्डरीक पुरी आवीयोरे ॥ नन्दना ॥ आणी अति उल्हास रें ॥ नन्दन ॥ ॥ २८ ॥ पग प्रणमी सीता तणारे ॥ नन्दना ॥ तेम करे अरदास रे पुरी अयोध्या आयकेरे ॥ नन्दना ॥ सफल करो हम आशरे ॥ नन्दन ॥ २९ ॥ पुष्पक नामे विमान ए रे ॥ नन्दना ॥ मोकल्यो रघुनाथ रे । मतूं करीने मोकलयो रे ॥ नन्दना ॥ एहुं मघले साथ रे ॥ नन्दन ॥ ३० ॥ आज लगे सभियुत थोरे ॥ नन्दना ॥ अरण्ये तज्यानुं दुःख रे । वलि किस्यू करसे प्रभु रे ॥ नन्दना ॥ सयूँ स्वामीनूं सुखरे ॥ नन्दन ॥ ३१ ॥

मुनि श्रीरूपचन्द्रजी कृत टाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूंडे योल।

माता जलदी चाल, चाल चाल वनिता का वासी वाट उडीकेहो ॥टेर॥
जन अपवाद थकी प्रभु थोने, काढ दिया घर बारे हो।
तो पिण अनुपम प्रेम केम, रघुनाथ विसारे हो ॥ माता० ॥ १ ॥
विरह तुम्हारे कृश तन वोर, कारे मुख प्रभु लेगा हो।
थां विन तजसी प्राण जानमत, होनो भोगा हो ॥ माता० ॥ २ ॥
थांरी याद में लक्ष्मणजी को, मुख पंकज कुमलाणो हो।
दर्शन प्यासी नित रहे उदासी, करूणा आणो हो ॥ माता० ॥३॥
साच कहूं माजीसा थां विन, दिसे अयोध्या सूनी हो।
आप आने सूं रंगरली होसी, नित दूनी हो ॥ माता० ॥ ४ ॥
कपिपति कहे कर जोड़ सिया से, रघुपति मुझने भेज्यो हो।
अजयपुरी चालन नाकारो, मत थे देज्यो हो ॥ माता० ॥ ५ ॥

ढाल मूलकी—

पुनरपि कपिपति बोलवेरे, ॥ नन्दना ॥ बुद्धिकरे या छाजरे। बुलाव्या छ तुम प्रभुरे ॥ नन्दना ॥ गेमरनारो गाजरे ॥ ३२ ॥ एम सुणी हरखी घणीरे ॥ नन्दना ॥ सांजणी प्रसारे।

बैसोने विमानमेंरे ॥ नन्दना ॥ आगेगई तबमातरे ॥ नन्दन ॥ ॥ ३३ ॥ माहेन्द्रोदय वागमेंरे ॥ नन्दना ॥ उतारीयु विमानरे । लक्ष्मण जई पगे लागीयोरे ॥ नन्दना ॥ पगेलाग्या नृप आनरे ॥ नन्दन ॥ ३४ ॥ आगेवैसी विनवेरे ॥ नन्दना ॥ घेर पधारो आजरे । ए घरएपुर थाहरोरे ॥ नन्दना ॥ एथारोसहु राजरे ॥ नन्दन ॥ ॥ ३५ ॥ सतीकहे वत्स? साचएरे ॥ नन्दना ॥ पहिली करिसुं शुद्धिरे । पाछे जाणे केवलीरे ॥ नन्दना ॥ जेउपजसे बुद्धिरे ॥ नन्दन ॥ ३६ ॥ ए सघलूं सम्भलाव्युरे ॥ नन्दना ॥ राघवजीने आपरे ॥ सतीकने प्रभु आयकेरे ॥ नन्दना ॥ बोलेसीधा न्यायरे ॥ नन्दन ॥ ३७ ॥ रावण साथे रागनो रे ॥ नन्दना ॥ न हुवो छे लवलेश रे । धीज करो धृति आदगी रे ॥ नन्दना ॥ देखे लोग अशेष रे ॥ नन्दन ॥ ३८ ॥ हसी बोली तब जानकी रे ॥नन्दना ॥ प्राण नाथ ? अवधार रे । तुम्ह थी शाणो कौण छे रे ॥ नन्दना ॥ न करो काम विचार रे । नन्दन॥३९॥ वात कहन्तां विरचिया रे ॥ नन्दना ॥ लवणांकुश ना तात रे ॥ ओछोतो ओछी कररे ॥ नन्दना ॥ पूरा पूरी वात रे ॥ नन्दन ॥ ४० ॥ झूठी जाणो छो मने रे, ॥ नन्दना ॥ तो पहेलां द्यो दण्ड रे । पाछे करसुं हूं सही रे, ॥ नन्दना ॥ धीज तणी पगमण्ड रे ॥ नन्दन ॥ ४१ ॥ राम कहे भद्रे ? सुणो रे ॥ नन्दना ॥ मैं नवि जाणी खोड रे ॥ अवही जाणूं छूं नहीं रे ॥ नन्दना ॥ लोक करे मुखमोड रे ॥ नन्दन ॥ ४२ ॥ तेहथी ए मुझ ऊपनी रे ॥ नन्दना ॥ उतारवा तुझ भार रे ॥ दिव्य करो सहू देखतां रे, ॥ नन्दना ॥ साचे सहुनो प्यार रे ॥ नन्दन ॥ ४३ ॥ युक्तिवात कहे जानकी रे, ॥नन्दना॥ दिव्य[1] करूं हूं पंचरे । अग्नि में डाकी पडूं रे ॥ नन्दना ॥ न

१ दिव्य-दिव्यज-अर्थात् धीज, मनुष्य अपराधी है निरपराधी-इसकी परीक्षा के लिए पांच उपाय हैं । १ तुला= २ अग्नि= ३ जल= ४ विप= ५ कोश=

करूं को खल संचरे ॥ नन्दन ॥ ४४ ॥ चावल१ ने चावूं मही रे ॥ नन्दना ॥ पिऊं२ तातो कोश रे । जीभे३ साहूं फालीया रे । नन्दना ॥ चढूं४ तुला ए सरोस रे । नन्दन ॥ ४५ ॥ इणमें जो तुमने गमे रे ॥ नन्दना ॥ सोई करो पर साद रे । शंका कोई मति आणजो रे ॥ नन्दना ॥ मुझने एह अल्हाद रे ॥ नन्दन ॥ ४६ ॥ सिद्धारथ ऋषि रायजीरे ॥ नन्दना ॥ अन्तरिक्ष भागवन्तरे । मतिरे वरांसो रामजीरे ॥ नन्दना ॥ दवावी दागवन्तरे ॥ नन्दन ॥४७॥ लोक सहु प्रभु आगलेरे ॥ नन्दना ॥ करे विनती आवीरे । सीताजी म्होटी सतीरे ॥ नन्दना ॥ शील तणे सुप्रभावीरे ॥नन्दन॥ ४८ ॥ कह्यो तेही कीधो सहीरे ॥नन्दना ॥ जगमें एही कहायरे ॥ रहे वाध्यो ए कामनेरे ॥ नन्दना ॥ समजी राघव रायरे ॥ नन्दन ॥ ४९ ॥ हूंतो समजूं छूं सहीरे ॥ नन्दना ॥ सीता छे निर्दोष रे ॥ दोष चढाव्यू छो तुम्हेरे ॥ नन्दना ॥ मुझने ए अफसोसरे ॥नन्दन॥५०॥ मीठा मुखड़ा आगलेरे ॥ नन्दना ॥ कड़वा तुम पर पूठरे । पंचों में परमेश्वर [illegible] नन्दना ॥ वात पड़ी ए झूठरे ॥ नन्दन ॥ ५१ ॥ कूर्म५ जिह्वानी परेरे ॥ नन्दना ॥ एह तुम्हारी जीहरे । खिण मांही खिण वाहीररे ॥ नन्दना ॥ आतुर बहु अबीहरे ॥ नन्दन ॥ ५२ ॥ काल फरी तुम भाखसोरे, ॥ नन्दना ॥ सीता छे सकलंकरे । [illegible] मन राख्यू स्वामीनें रे ॥ नन्दना ॥ किहां गयूं छे शंकरे ॥ नन्दन ॥ ५३ [illegible] कराव्यो आकरो रे ॥ नन्दना ॥ आज करूं सहु साचरे । [illegible] बड़ो संसार मांरे नन्दना ॥ मणि नवि थावे काचरे । नन्दन॥५४॥ हाव नीसरोनो खणीरे ॥ नन्दना ॥ [illegible] [illegible] [illegible] । पुरुष हाई [illegible] [illegible] [illegible] ॥ नन्दना ॥ [illegible] नन्दन [illegible] ॥ नन्दन ॥ ५५ ॥

१ [illegible] चाबज = २ तपा हुवा कोश (सोगन) को पीना = ३ [illegible] हुवा लोह [illegible] [illegible] को हाथ में [illegible] जीभसे [illegible] = ४ [illegible] [illegible]
५ [illegible] [illegible] जीभ्भा परे ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

सत्तावनमीं ढालमेंरे ॥ नन्दना ॥ राघव थाप्यो थीजरे ॥ केशराज
सत्य-शीलथीरे, ॥ नन्दना ॥ साच साचनूं बीजरे ॥ नन्दन ॥५६॥

दोहा केदाररागेः—

गिरि वैताढ्ये जाणिये, उत्तर श्रेणि मझार।
हरि विक्रम वड राजवी, जय भूषण सुतसार ॥ १ ॥
अठोत्तर शत कुंवरी, परणावी राजान।
सुख भोगवतां आवीयो, मोह तणो अवसान ॥ २ ॥
मातुल-नंदन "हेमशिखर", किरण मण्डला नार ॥
वे मरजोद विलोकतां, वात पड़ी सुविचार ॥ ३ ॥
काटी दिधी कामिनी, आपण संयम धार।
'विद्युत् दृष्ठा' नाम थी, राक्षसणी थै ते नार ॥ ४ ॥
अयोध्याना उद्यानमां, ऋषि प्रतिमा प्रतिपन्न।
राक्षसणी उपसर्ग थी, निश्चल राख्यो मन्न ॥ ५ ॥
साधु हुओ ते केवली, ओच्छव करवा काज।
इन्द्रादिक बहु देवता, आवी अधिक विराज ॥ ६ ॥
अवसर देखी थीजनो, देव दया पर ग्राही।
हरीजी साथे वीनवे, जोर वहे जग मांही ॥ ७ ॥
ज्ञानीजी निश्चल लहे, सीता सती अपार।
दग्धे छे अवलाभणी, मूर्ख लोक गंवार ॥ ८ ॥
सीता सानीध्य[1] कारणे, अनीक[2] पति अभिराम।
मूकी हरि[3] आपण करे, केवल ओछव काम ॥ ९ ॥

---

[1] सहायता, [2] सेनापति, [3] इन्द्र

दोहा के पहीली गाथा से लेकर नवमी गाथा तक का स्फटार्थ यह है-कि हरि विक्रम राजा का पुत्र जय भूषण की किरणमंडला नामक स्त्री अपने मामा का पुत्र हेमशिखर के साथ आसक्त थी। इस वात की जयभूषण को मालूम पड़ते ही अपनी स्त्री (किरणमंडला) को देश निकाला दे दिया। वह स्त्री मर कर विद्युद्दष्ठा नाम की राक्षसणी हुई। और जयभूषण दीक्षा लेकर फिरते २ इस समय मे अयोध्या के उपवन

रामतणा आदेश थी, दीधां काष्ट धगाय ।
मिली रही ज्वाला वली, देख्यां ही न खिजाय ॥ १० ॥
सीता-पावक१ पारवती, आवी एम भाखन्त ।
वीत राग अज साधु सुर, आप साखी राखन्त ॥ ११ ॥
लोक पाल सहु सांभलो, सूर्य चन्द्र बड़ देव ।
दिवस निशाना साखिया, तुम जाणो सहु भेव ॥ १२ ॥
मने करी वचने करी, काया ए करी जोय ।
जागत ने सोवत विषे, राम टाली नर कोय ॥ १३ ॥
जोको में वांछ्यो हुवे, बाली करो मुझ छार ।
वैश्वानर जग साखीया, एह अछो तुमचार ॥ १४ ॥
नहीं तर तूं पाणी हुजे, एम कही ततकाल ।
श्री नमोकारही सुमरती, डाके पड़िसा बाल ॥ १५ ॥
पड़तांही पहीली थई, अग्नि फिटी बाव ।
निर्मल पाणीसुं भरी, शील तणे सुप्रभाव ॥ १६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—अलबेल्यानीः—

झल झलती मिलती घणीरे लाल, झालो झाल अपाररे । सुजाण सीता । जाणे केसू फूलीया रे लाल, गला खेर अंगाररे ॥ सुजाण सीता ॥ १ ॥ धीज करे म्होटी सतीरे लाल ॥ टेर ॥ शील तणे परमाणरे ॥ सुजाण सीता ॥ लक्ष्मण राम निहां खड़ारे लाल, गिलीया राणो राण रे ॥ सु० ॥ धीज ॥ २ ॥ स्नान करो निर्मल जलेरे लाल, पावक पासे आयरे । सुजाण सीता । ऊभी जाणे देवांगनारे लाल, तिमणो रूप दिखायरे ॥ सु० धीज ॥ ३ ॥ नर

में आकर कायोत्सर्ग किया । यह राजकुमारी आकर मुनि को बहुत उपसर्ग दिया । मुनि स्थिर रहे । अनिन्द्य भावना भाते पूर्ण केवल ज्ञान की प्राप्ती हुई । ज्ञानोत्सव के लिये इन्द्रादिक [illegible] आया, [illegible] के आग्रह से इन्द्र ने अपने सेनापति को सीता की सहायार्थ भेजकर आप केवल ज्ञान का उत्सव किया ।

१ अग्नि ।

नारी मिलिया घणारे लाल, ऊभा बहु अकुलायरे ।।सुजाणसीता।। भस्म होसी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्यायरे ।। सु० ।। धीज ।। ४ ।। राघव विन वंछ्यो हुवेरे लाल, सुपना में नर कोपरे । सुजाण सीता । तो मुझ अग्नि प्रजालजोरे लाल, नहीं तर पाणी होयरे ।। सु० धीज ।। ५ ।। इम कही बैठी आगमेंरे लाल, तुरत थयो अग्नि नीररे ।। सुजाण सीता ।। जाणे द्रह जल से भर्यो रे लाल, झूले मन धर धीर रे ।। सु० ।। धीज ।। ६ ।

ढाल मूलगी क्षेपक

अग्नि मिट पानी जद होवे, लोक सब दश दिश ही जोवे, कलंक को बीज ही खोवे । कहो अब किणरो हे मूंडो, करेगो सीता को भूंडो ।। सत्यव्रत पालो ।। १०२ ।। प्रथमतो वातां जे ऊठी, वेतो सब आज हुई झूठी, इन्हीं पर शोकोंही रूठी । सीता है बिलकुल ही साची, सत्य अरु शील माही राची ।। सत्य० ।। १०३ ।।

ढाल अठावनमीं—तर्ज नायकानी

सिंहासन जल ऊपरेरे, ते उपर सा जायरे ।। सीता ।।
हंसी ज्यूं पंकज उपरेरे, बैठी शोभा पाय रे ।। सीता ।। १ ।।
सत्यवती साची सतीरे लाल ।।टेर।। साचो जेहनो शीलरे ।।सीता।।
सुरवर सानिध्यकारीयारे लाल, शीलथकी अति लीलरे।।सीता।।२।।
अग्नि सूं ज्वाला आकरी रे, धग धगता अंगाररे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे, सलिल हुआते साररे ।।सीता ।।सत्य०।।३।।
अर्णवावर्त नामथीरे, चोखूं छे ते चापरे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे, राम चढ़ोड़्यूं आपरे सीता।।सत्य०।।४।।
हनुमन्त उदधि उलंघियोरे, भंजिओ वर उद्यान रे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे ।। सीजायो राजानरे ।। सीता ।।सत्य०।।५।।
पत्थर पाणी ऊपरेरे । तारचिया श्रीरामरे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे, सरिया वंछित कामरे ।।सीता।। सत्य० ।।६।।
शक्ति प्रहारें ना मूओरे, सौमित्रीजी सोईरे ।। सीता ।।

देवेने वलि दानवे रे, रावण तो न मराय रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, मारि लियो सोई राय रे ॥ सीता ॥ स० ॥८॥
त्रिकोटी लंका पुरी रे, किहांहीन लगाव रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, लिधी विन उपाव रे ॥ सीता ॥ स० ॥९॥
राम तजाई अरण्यमें रे, जिहां न आशा कोई रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, रान विलावल होईरे ॥ सीता ॥ सत्य १० ॥
पुत्र पनोता ऊपना रे, दोई ते सम तोल रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, निका ते निरमोल रे ॥ सीता ॥ सत्य ११ ॥
लक्ष्मणसूं जाई अड्या रे, तो नहीं पाम्या हार रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करीरे, सुराख्या संसार रे ॥ सीता ॥ सत्य १२ ॥
पियरियो ने सासरियो रे, उज्वाल्या कुल दोई रे ॥ सीता ॥
उज्वाल्या पियु रामजी रे, अपकीर्ति मल धोई रे ॥ सीता ॥ स० १३ ॥
गुल २ शब्द सुहामणा रे, कोई करे हूंकार रे ॥ सीता ॥
कोई भम्भाएभला रे, कोई जय २ कार रे ॥ सीता ॥ सत्य १४ ॥
कोई खल २ खांतसुंरे, कोई दिल २ देवरे ॥ सीता ॥
विविध प्रकारे चेष्टाए रे, देव करे ततखेव रे ॥ सीता ॥ सत्य १५ ॥
धों २ नादसुंरे, वाजे मधुर मृदंग रे ॥ सीता ॥
ताल स्वर उपांगसुंरे, होई रह्यो रसरंग रे ॥ सीता ॥ सत्य १६ ॥
कोई वजावे वांसली रे, कोई वजावे वीण रे ॥ सीता ॥
तान रु मान अनुमानसुंरे, होई रह्या लय लीन रे ॥ सीता ॥ स० १७ ॥
कोई अलापे रागने रे, कोई सुरती धरन्नेरे ॥ सीता ॥
नाचे नान वारांगनारे, वे २ शब्द करन्तरे । सीता ॥ सत्य १८ ॥
वापी नूं जल वाधियो रे, जेम सायर कल्लोलरे ॥ सीता ॥
पसर्‍यूं दिशा चारसां रे, करतो अधिक कल्लोलरे ॥ सीता ॥ स० १९ ॥
मांचा नाग नणावरा रे, लाग्या नाठा लोग रे ॥ सीता ॥
अनेसाता आकला रे, लागा करतो जोगरे ॥ सीता ॥ सत्य २० ॥
विद्याधर ने वेगसुंरे, गाम गया न नाशरे ॥ सीता ॥
पाणीनो भय पामके रे, ऊना अति आकाशरे ॥ सीता ॥ स० २१ ॥



अटवी मांहे मेलतांरे, सम्भल्यो नहीं सोचरे ॥सीता०॥सत्य०॥३४॥
सुप्रभावथी सुधर्यारे, ताहरा सघला काजरे ॥ सीता ॥
छेल्ह दुःखए मेंदियूरे, आगतणूंता आजरे ॥सीता॥ सत्य ॥ ३५ ॥
इत्यादिक एतूंखमेंरे, म्हाराअति अपराधरे ॥ सीता ॥
आपसुधारी आपणीरे, धन्य मानच भवलाधरे॥ सीता॥स०॥३६
सीता भाखेस्वामीजीरे, कांईकरो विखादरे ॥ सीता ॥
जेहीभलो जगजाणवोरे. तेसहु तुम्ह प्रसादरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ३७॥
जन-अपवाद निवारवारे, नांखी आगमझाररे ॥ सीता ॥
हुंजीवती ऊगरीरे, नामतणे आधाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ३८ ॥
भूमण्डलनी रेणुथीरे, सूर्यझांखो थायरे ॥ सीता ॥
एगुणवाय तणूं घणूरे, रेणूनो नकहायरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ३९॥
सापही माथे मींडकोरे, नाजन्तो देखायरे ॥ सीता ॥
एगुण मंत्रतणो घणोरे, मिंडकनो नकहायरे ॥सीता॥स०॥ ४०
चैत्रहीमासे कोकिलारे, कूहूशब्द करायरे ॥ सीता ॥
एगुण आंबानोघणोरे, कोकिलनो नकहिवायरे ॥ सीता ॥स०॥४१
नगर तणातो खालनांरे, पाणीजे पूजायरे ॥ सीता ॥
एगुण गंगाजी तणोरे, पाणीनो नणीनो नकहायरे ॥ सीता॥स०४२
पारस फरस्यां लोहनूंरे. कुंचन नाम धरायरे ॥ सीता ॥
एगुण पारसनो घणोरे, लोहतणूं नकहायरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४३॥
विवाहतणा दिन आदियीरे, आजतणा दिनछेहरे ॥ सीता ॥
नेकीते मन स्वामीनोरे, वड़ी लगीछे देहरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४४
दुःखहिवें राखियोरे प्रभुजी थांरो नामरे ॥ सीता ॥
नेमुरामेंनारि राखियांरे, एहपटन्तर ग्रामरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४५ ॥
माहरो ताहरो लोकनोरे, कोईन दीसे दोषरे ॥ सीता ॥
दोषजाए कृत कर्मनोरे, कर्यो वागल रोषरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४६ ॥
घरे पधारो आपणेरे, पूरो सुखभोगरे ॥ सीता ॥
भोगाविण भन्न मानदूंरे, दुःखनों संयोगरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४७

ढाल क्षेपक तर्ज–नवकार ही मन्त्र वड़ा है।

घर चलना तुम्हें जरूरी, कहे राघवजी धर प्यार के ॥टेर॥
वीती जो वात विसारो, चित्तकी मम चिन्ता टारो,
प्रियमान कयोहि व म्हारो, गुण सज्ज नभाव निहार के,
मम करो कामना पूरी ॥ घर० ॥ १ ॥
धरलिया जनम धन तेरा, सत्य शील दृढाया गहरा,
मन मुदित होगया मेरा, दो झट पट वैन उच्चार के,
नहीं पूरी अयोध्या दूरी ॥ घर० ॥ २ ॥
होगई वात जो हूर्गी प्रिय ! याद प्रीत कर जूनी,
तुम विना अयोध्या सूनी, मेरे अवगुण दूर निवार के,
मैं कहू छोड़ मगरूरी ॥ घर० ॥ ३ ॥
सव सम्पद सुख को भोगो, झट पट अव चलो ओरोगो,
मिटजाय मोर मन शोगो, (शुभ उदय मिल्यो संयोगो)
अव कथन मेरो अवधार के करदो सव माफ कसूरी ॥ घर० ॥४॥
रघुपति कसर नहीं राखी, कही भिन भिन रखीन वाकी,
मुनि भयरव इण पर भाखी, आपरगट मध्य पीपार के,
धन्य सत्य शील में पूरी ॥ घर० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सीता भाखे स्वामीजीरे, सरियु तुम्ह सन्मानरे ॥ सीता ॥
सांयम लेसूंसादरोरे, नरजन्म सुख आनरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४८ ॥
एमकहीं ऊपाड़ीयारे, स्वहाथे शिरकेशरे ॥ सीता ॥
प्रभुजीने पकड़ावीयारे, जिन नाजेम सुरेशरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४९
प्रभुजी तव मूर्च्छित पड्यारे, नरही शुद्धलगाररे ॥ सीता ॥
'जयभूपण श्रीगुरुमुखेरे, लीधो संयम धाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५६
सुव्रता गुरुणीकनेरे, सीखे विविध विशालरे ॥ सीता ॥
परम महासुख पामीयूरे मत्यो सहु जंजालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५१
अट्ठाव नमी ढालमेंरे, पट्कायिक प्रतिपालरे ॥ सीता ॥
केशराज धन्य एसतीरे, नमिये चरण त्रिकालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५२

दोहा (धन्या श्री रागे)

चन्दनसूं सिच्योप्रभु, थयो सचेतन जाम।
किहांगई सीता सती, राम कहे अभिराम ॥ १ ॥
भोभोभूचर खेचरो, भक्त महाछो भूर।
लुंचित-केशा कामिनी, मेलोआणी हजूर ॥ २ ॥
रे लक्ष्मण ! तेनासुणी, ए सघला ही लोक।
हांसीकरे छे हर्षसूं, देखी म्हारो शोक ॥ ३ ॥
धनुष्यग्रहे रोषे भर्यो, लक्ष्मण भाखे ताम।
ए सहु सेवक स्वामिना, कोण हांसीनो ठाम ॥ ४ ॥
प्रभुजीजेम सीता तजी, दोषतणो डरआण।
तेमसीता संसारए, तज्यो भवभय आण ॥ ५ ॥
प्रभु आगल शिर लोचियूं, जग भूषण गुरु पास।
संयमलीधो सादरो, ममतासूं वनवास ॥ ६ ॥
जयभूषण प्रभु केवली, आज हुवाछे देव।
आपजई ओछवकरो, चरण कमलनी सेव ॥ ७ ॥
तिहां अछे सीता सती, बैठी सतियां मांहि।
दर्शन कीजे देवीनूं आपण पे उच्छाहि ॥ ८ ॥
सहजपणा में आवीया, राम करे सुविचार।
शुभ गुरु पे संयम लियो, धन्य २ सीता नार ॥ ९ ॥
एम कही परिवार सूं, जयभूषण गुरु संग।
आवी पाय प्रणमी करी, देशना सुणी सुचंग ॥ १० ॥
देशना अन्ते पूछियूं, हूं छूं भव्य अभव्य।
तुमने नहीं अभव्यता, भद्र ! जाणो तुम भव्य ॥ ११ ॥
एहिज भवे शिव पांमशो, पामी केवल ज्ञान।
जनम जरा भय टालशो, तुम छो पुरुष प्रधान ॥ १२ ॥
संयम विन शिवगति नहीं, ते तो मैं न लेवाय।
लक्ष्मन साथे मोहिनी, मैं क्यूं छिं न सकाय ॥ १३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—नवकार ही मन्त्र बड़ा है।

घर चलना तुम्हें जरूरी, कहे राघवजी धर प्यार के ॥टेर॥
बीती जो बात विसारो, चित्तकी मम चिन्ता टारो,
प्रियमान कयोहि व म्हारो, गुण सज्ञ नभाव निहार के,
मम करो कामना पूरी ॥ घर० ॥ १ ॥
धरलिया जनम धन तेरा, सत्य शील दृढाया गहरा,
मन मुदित होगया मेरा, दो झट पट वैन उचार के,
नहीं पूरी अयोध्या दूरी ॥ घर० ॥ २ ॥
होगई बात जो हूणी प्रिय ! याद प्रीत कर जूनी,
तुम विना अयोध्या सूनी. मेरे अवगुण दूर निवार के,
मैं कहू छोड़ मगरूरी ॥ घर० ॥ ३ ॥
सब सम्पद सुख को भोगो, झट पट अब चलो ओरोगो,
मिटजाय मोर मन शोगो, (शुभ उदय मिल्यो संयोगो)
अब कथन मेरो अवधार के करदो सब माफ कसूरी ॥ घर० ॥४॥
रघुपति कसर नहीं राखी, कही भिन भिन रखीन बाकी,
मुनि भयरव इण पर भाखी. आपरगट मध्य पीपार के,
धन्य सत्य शील में पूरी ॥ घर० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सीता भाखे स्वामीजीरे, सरियु तुम्ह सन्मानरे ॥ सीता ॥
सांयम लेस्यूंसादरोरे, नरजन्म सुख आनरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४८॥
एमकहीं ऊपाड़ीयारे. स्वहाथे शिरकेशरे ॥ सीता ॥
प्रभुजीने पकड़ावीयारे, जिन नाजेम सुरेशरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४९
प्रभुजी तब मूर्च्छित पड्यारे, नरही शुद्धलगाररे ॥ सीता ॥
'जयभूषण श्रीगुरुमुखेरे, लीधो संयम धाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५६
सुव्रता गुरुणीकनेरे, सीखे विविध विशालरे ॥ सीता ॥
परम महासुख पामीयूरे मट्यो सहु जंजालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५१
अद्वाव नमी ढालमेंरे, पट्कायिक प्रतिपालरे ॥ सीता ॥
केशराज धन्य एसतीरे, नमिये चरण त्रिकालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५२

दोहा (धन्या श्री रागे)

चन्दनसूं सिंच्योप्रभु, थयो सचेतन जाम ।
किहांगई सीता सती, राम कहे अभिराम ॥ १ ॥
भोभोभूचर खेचरो,भक्त महाछो भूर ।
लुंचित-केशा कामिनी, मेलोआणी हजूर ॥ २ ॥
रे लक्ष्मण ! तेनासुणी, ए सघला ही लोक ।
हांसीकरे छे हर्षसूं, देखी म्हारो शोक ॥ ३ ॥
धनुष्यग्रहे रोषे भर्यो, लक्ष्मण भाखे ताम ।
ए सहु सेवक स्वामिना, कोण हांसीनो ठाम ॥ ४ ॥
प्रभुजीजेम सीता तजी, दोषतणो डरआण ।
तेमसीता संसारए, तज्यो भवभय आण ॥ ५ ॥
प्रभु आगल शिर लोचियूं, जग भूषण गुरु पास ।
संयमलीधो सादरो, समतासूं वनवास ॥ ६ ॥
जयभूषण प्रभु केवली, आज हूवाछे देव ।
आपजई ओछवकरो, चरण कमलनी सेव ॥ ७ ॥
तिहां अछे सीता सती, बैठी मतिगां मांहि ।
दर्शन कीजे देवीनूं आपण पे उच्छांह ॥ ८ ॥
सहजपणा में आवीया, राम करे सुविचार ।
शुभ गुरु पे संयम लियो, धन्य २ सीता नार ॥ ९ ॥
एम कही परिवार सूं, जयभूषण गुरु संग ।
आवी पाय प्रणमी करी, देशना सुणी सुचंग ॥ १० ॥
देशना अन्ते पूछियूं, हूं छूं भव्य अभव्य ।
तुमने नहीं अभव्यता, भद्र ! अछो तुम भव्य ॥ ११ ॥
एहिज भवे शिव पांमसो, पामी केवल ज्ञान ।
जन्म जरा भय टाल सो, तुम छो पुण्य प्रधान ॥ १२ ॥
संयम विन शिवप्राप्ति नहीं, ते तो मैं न लेवाय ।
लक्ष्मण सायें मोहिनी, मैं क्यूं हिं न त्यजाय ॥ १३ ॥

ऋषि भाखे चिन्ता नहीं, भोगवी पद वलदेव।
आपहीं प्रति बूजसो, जिनमतनूं ए भेव ॥ १४ ॥
बिभीषण भाखे भलू, सीता रावणे लीध।
किण कर्मे लक्ष्मण हण्यो, रावण पणे प्रसिद्ध ॥ १५ ॥
भामण्डल सुग्रीव हूं, लवणांकुश ए दोय।
किसे कर्मे करी ऊपन्या, प्रभु भक्ता सहु कोय ॥ १६ ॥

ढाल एगुणसाठमीं तर्ज- मईड़ा दानी वे।

स्वामी भाखे सयल विचार, दक्षिण भरत अछे भलो !
भाखे स्वामी वे खेमपुरे, नयदत्त वणिक वसे गुण आगलो भा०१
सुनन्दा उदर दोई, नन्दन धुर धनदत्त छे।
भाखे०वसुदत्त विशेष, याज्ञवल्क्य सुमित्तछे ॥ भा० ॥ २ ॥
तिणही नगर मझार, सागरदत्त वसे सही।
भाखे गुणधर नामे नन्द, गुणवती कन्याकही ॥ भा० ॥ ३ ॥
'सागर दत्ते दीध, धनदत्त ने सा सुन्दरी।
भाखे जाणी सरखी जोड, लालचतो कोनाधरी ॥ भा० ॥ ४ ॥
रत्नप्रभा तसमात, अर्थ तणेलोभेकरी।
भाखे शेठअछे श्रीकान्त, तेहने दीधी दीकरी ॥ भा० ॥ ५ ॥
याज्ञवल्क्ये जाणी, जणावी मित्रोंभणी।
भाखे वसुदत्ते निशिजाई, हर्ण्यो श्रीकान्त ने हणी ॥भा० ॥ ६ ॥
श्री कान्ते पणतेह, मारीलियो तत्र नासतां।
भाखे एसुश्रो व्यवहार, विणसे परही विनामतां भा० ॥ ७ ॥
'विन्ध्या वनमेंआय, मृगहुआते दोयवे।
भाखे गुणवंती नोजीव, हुई हिरणली सोयवे ॥ भा० ॥ ८ ॥
हरणी केरेहेत, मुआदोई कुरंगवे ॥ भाखे० ॥
रुलिया काल अपार, जगमें करतां जंगवे ॥ भाखे ॥ ९ ॥
सो धनदत्त तेवार, भाई मूओते सांभली।
भाखे हुओ अधिक उदास, वरथी चाल्यो नीकली ॥ भा० ॥१०॥

रातें लागीभूख, ताम मुनीश्वर देखीया ।
भाखे० भोजन केरंकाम, चारूवचन विशेषीया ॥ भाखे ॥ ११ ॥
संग्रह नकरेसाधु, दिनहींतो रात्रे किस्यूं ।
भाखे० तुम्ह सरिसाने रात्री, भोजनकयो मनमें वस्यूं ॥ भा० ॥१२
प्रतिबोधाणो सोई, श्रावक हुआ साचलो ।
भाखे०स्वर्ग सुधर्मे देव, आगेकी अब सांभलो ॥ भा० ॥ १३ ॥
महापुर नगर मझार, मेरु सेठ प्रिया धारणी ।
भाखे० पद्मरूचि सुत सार, श्रावक मतिसुख कारणी ॥भा०॥१४॥
एकदिन गोकुल जात, पड़ियो वृषभ विलोकीयो ।
भाखे० दयातणो मतिआणो, मंत्र राज तेहने दियो ॥ भा०॥१५॥
छत्र छाय नरेन्द्र, श्रीदत्ता उदर ऊपन्यो ।
भाखे वृषभध्वज अभिधान, नन्द निरूपम नीपन्यो ॥भा०॥१६॥
कुंवर करतो केली, आयोहिथाने चालो ।
भाखे० जिहां मूओछेबेल, देखी ऊपज्यूं मनरली ॥ भा० ॥१७॥
जातिस्मरण पामी, ताम करावे देहरो ।
भाखे० उपकारीनेहित, कुंवर कुंवर सेहरो ॥ भा० ॥ १८ ॥
भींतेआलेख्यूं रूप, वृद्ध वृषभनो तामवे ।
भाखे० सेठही रूपअनूप, जेमहुओ थोकामवे ॥ भा० ॥ १९ ॥
पलाणीयो हयएक, तेनेपासे राखीयो ।
आरक्ष नरने एह, भूपतिने सुन भाखीयो ॥ भ० ॥ २० ॥
एहना रूपनो जाण, महारी पासे आणवो ।
भाखे करमूं तस उपकार, किणोगुणनो मानवो ॥ भा० ॥ २१ ॥
एमकही घरेजाय, एटले सेठ पधारीयो ।
भाखे०गोकुल मांहीजान, पद्मरूची डाकारीयो ॥ भा० ॥ २२ ॥
भींते आलेख्यू ने चित्र, देखी विस्मय पामीयो ।
भाखे आरक्षर्या लही सुद्ध, आरव आव्यो चामीयो ॥ भाखे ॥२३॥
पूछे भाखे सेठ, म्हारा कीधा कामवे ।

भाखे० कुंवर करे परणाम, आप प्रकाशो नामवे ॥ भा० ॥ २४ ॥
प्रभुजी तुम्ह सुपसाय, पायो पद अभिरामवे ।
भाखे० तूं मेरा गुरुदेव, तुझकूं करूं सलामवे ॥ भा० ॥ २५ ॥
भोगविए ए राज्य, तुम्हारो आपीयो ।
भाखे० पुरमांही वडवीर, आपसमो कर थापीयो ॥ भा० ॥ २६ ॥
सेठ अने सुकुमार, श्रावक ना व्रत पालवे ।
भाखे० स्वर्ग दूसरे देव, विलसे सुख चिरंकालवे ॥ भा० ॥ २७ ॥
गिरि वैताढ्य विख्यात, नगरी नन्दावर्तवे ।
भाखे नन्दीश्वर अभिधान, राजा राज्य करन्तवे ॥ भा० ॥ २८ ॥
पद्मरूचि सो देव, करतो अति आनन्द वे ।
भाखे० कनक प्रभानी कूख, नन्दन नयनानंदवे ॥ भा० ॥ २९ ॥
राज्य करी व्रत लीध, स्वर्ग पंचमें जायवे ।
भाखे० पूर्व विदेह मझार, क्षेमा नगरी आयवे ॥ भा० ॥ ३० ॥
विपुला वाहन राय, नारी पौमावे उदरे ।
भाखे० श्री चन्द्र नरेन्द्र, राज्य तणी पदवी वरे ॥ भा० ॥ ३१ ॥
गुप्ति समाधी समीप, संयम लीधो सादरो ।
भाखे० ब्रह्मलोकनो देव, होई आयो पाधरो ॥ भा० ॥ ३२ ॥
ए अष्टम बलदेव, देवे सेव्या सदैव वे ।
भाखे० वृषभ ध्वजनो जीव, राजाए सुग्रीववे ॥ भा० ॥ ३३ ॥
जे हुतो श्रीकान्त, भव में भमियो भूरीवे ।
भाखे० पाटणकन्द मृणाल, होई पुण्य अंकूरवे ॥ भा० ॥ ३४ ॥
वज्र सुकण्ठ नरेश, हेमवती नो जाईयो ।
० शम्भू नाम लहन्त, साजन मन भाईयो ॥ भा० ॥ ३५ ॥
हुतो वसुदत्त, हुओ शम्भू भूपनो ।
भाखे० विजय पुरोहित नारी, नलचूड़ा अनूपजो ॥ भा० ॥ ३६ ॥
नामे तो श्रीभूति, नन्दन नीको जाणीयो ।
भाखे० गुणवती भवमांहे, भूपति ठाणे आणीयो ॥ भा० ॥ ३७ ॥

श्रीभूति ने घरनार, नाम प्रणामें सरस्वती ।
भाखे० वेगवती सुकुमारी, ऊपजी अधिक कलावती ।।भा० ।।३८।।
सा यौवन वयपाय, एक दिन गई उद्यानवे ।
भाखे० एकध्याने प्रतिपन्न, साधु रह्यो शुभ ध्यानवे ।। भा० ।।३९
लोक करन्तासेव, एहवोदेखी साधुवे ।
भाखे० आणीद्वेष अतीव, साभाखे अपराधवे ।। भा० ।। ४० ।।
नारीसाथे एह, भोगवतो वरभोगवे ।
भाखे० मैंदीठो एआज, तामफिर्या सहुलोगवे ।। भ० ।। ४१ ।।
ऋषिकरे काउसग्ग, प्रगट पणेतो एमकही ।
भखे० उत्तरसे एदोष, तोमैं पारेवो सही ।। भ० ।। ४२ ।।
सुरेकरी सानिध्य, वेगवती मुख सीवेवे ।
भाखे० आकुल व्याकुल थाय, पावेदःख अतिवचे ।। भा० ।। ४३ ।।
एह सुणीने वात, मावित्रो त्रासी घणी ।
भाखे० भयमानी मनमांहे, भाखे अवगुण आपणूं ।। भा० ।। ४४ ।।
'सुदर्शन मुनिपास, आविलोक घणामिल्या ।
भाखे० खमजो मुझ अपराध, तुम तपस्वी तेमांभल्या ।। भा० ।। ४५
सांमी नांख्यों खेह, सूर्य झांखोनापड्यो ।
भाखे० तुमने देखी निर्दोप, किस्यूंवके नर वापडो ।।भा० ।। ४६ ।।
तुझ रूठ्यां जगमांही, कोईनर्हीनो राखिले ।
भाखे० क्षमाकरो ऋषिराय, धाऊंमुखो एम भाखोले ।। भा० ।। ४७
एम सुणन्तांलोक, पुनरपि सेवा साचवे ।
भाखे० श्रावक धर्मसाध, वेगवती मनरावे ।। भा० ।। ४८ ।।
राजा देखीरूप, वेगवतीनुं मागीयो ।
भाखे० कन्याकेरे काज, पुरोहित नव आनियो ।। भा० ।। ४९ ।।
मिथ्यादृष्टि जाणी, कन्या नापे तातवे ।
भाखे० जोरे लोधीबाल, जनक हणीकरी घातवे ।। भा० ।। ५० ।।
विप्रकियोरे नियाण, राजाने दुःखदायवे ।
भाखे० होजो वचन प्रमाण, भव एह उपायवे ।। भा० ।। ५१ ।।

भाखे० कुंवर करे परणाम, आप प्रकाशो नामवे ॥ भा० ॥ २४ ॥
प्रभुजी तुम्ह सुपसाय, पायो पद अभिरामवे ।
भाखे० तूं मेरा गुरुदेव, तुझकूं करूं सलामवे ॥ भा० ॥ २५ ॥
भोगविए ए राज्य, तुम्हारो आपीयो ।
भाखे० पुरमांही वडवीर, आपसमो कर-थापीयो ॥ भा० ॥ २६ ॥
सेठ अने सुकुमार, श्रावक ना व्रत पालवे ।
भाखे० स्वर्ग दूसरे देव, विलसे सुख चिरंकालवे ॥ भा० ॥ २७ ॥
गिरि वैताढ्य विख्यात, नगरी नन्दावर्तवे ।
भाखे नन्दीश्वर अभिधान, राजा राज्य करन्तवे ॥ भा० ॥ २८ ॥
पद्मरूचि सो देव, करतो अति आनन्द वे ।
भाखे० कनक प्रभानी कूख, नन्दन नयनानंदवे ॥ भा० ॥ २९ ॥
राज्य करी व्रत लीध, स्वर्ग पंचमें जायवे ।
भाखे० पूर्व विदेह मझार, क्षेमा नगरी आयवे ॥ भा० ॥ ३० ॥
विपुला वाहन राय, नारी पौमावे उदरे ।
भाखे० श्री चन्द्र नरेन्द्र, राज्य तणी पदवी वरे ॥ भा० ॥ ३१ ॥
गुप्ति समाधी समीप, संयम लीधो सादरो ।
भाखे० ब्रह्मलोकनो देव, होई आयो पाधरो ॥ भा० ॥ ३२ ॥
ए अष्टम बलदेव, देवे सेव्या सदैव वे ।
भाखे० वृषभ ध्वजनो जीव, राजाए सुग्रीववे ॥ भा० ॥ ३३ ॥
जे हुतो श्रीकान्त, भव में भमियो भूरीवे ।
भाखे० पाटणकन्द मृणाल, होई पुण्य अंकूरवे ॥ भा० ॥ ३४ ॥
वज्र सुकण्ठ नरेश, हेमवती नो जाईयो ।
भाखे० शम्भू नाम लहन्त, साजन मन भाईयो ॥ भा० ॥ ३५ ॥
जे हुतो वसुदत्त, हुओ शम्भू भूपनो ।
भाखे० विजय पुरोहित नारी, नलचूडा अनूपजो ॥ भा० ॥ ३६ ॥
नामे तो श्रीभूति, नन्दन नीको जाणीयो ।
भाखे० गुणवती भवमांहे, भूपति ठाणे आणीयो ॥ भा० ॥ ३७ ॥

श्रीभूति ने घरनार, नाम प्रणामें सरस्वती ।
भाखे० वेगवती सुकुमारी, ऊपजी अधिक कलावती ॥भा० ॥३८॥
सा यौवन वयपाय, एक दिन गई उद्यानवे ।
भाखे० एकध्याने प्रतिपन्न, साधु रह्यो शुभ ध्यानवे ॥ भा० ॥३९
लोक करन्तासेव, एहवोदेखी साधुवे ।
भाखे० आणीद्वेष अतीव, साभाखे अपराधवे ॥ भा० ॥ ४० ॥
नारीसाथे एह, भोगवतो वरभोगवे ।
भाखे० मैंदीठो एआज, तामफिर्या सहुलोगवे ॥ भा० ॥ ४१ ॥
ऋषिकरे काउसगा, प्रगट पणेतो एमकही ।
भखे० उत्तरसे एदोष, तोमैं पारेवो सही ॥ भ० ॥ ४२ ॥
सुरेकरी सानिध्य, वेगवती मुख सीवेवे ।
भाखे० आकुल व्याकुल थाय, पावेदुःख अतिवने ॥ भा० ॥ ४३ ॥
एह सुणीने वात, मावित्रों त्रासी घणी ।
भाखे० भयमानी मनमांहे, भाखे अवगुण आपणूं ॥ भा० ॥ ४४ ॥
'सुदर्शन मुनिपास, आविलोक घणामिल्या ।
भाखे० खमजो मुझ अपराध, तुम तपस्वी तेमांभल्या ॥ भा० ॥४५
सांमी नांख्यों खेह, सूर्य झांखोनापड्यो ।
भाखे० तुमने देखी निर्दोष, किस्यूंबके नर वापडो ॥भा० ॥ ४६ ॥
तुझ रूठ्यां जगमांही, कोईनहींजो राखिले ।
भाखे० क्षमाकरो ऋषिराय, थाऊंसुखी एम भाखोले ॥ भा० ॥ ४७
एम सुणन्तांलोक, पुनरपि सेवा सानवे ।
भाखे० श्रावक धर्मसाध, वेगवती मनरानवे ॥ भा० ॥ ४८ ॥
राजा देखीरूप, वेगवतीसूं राचीयो ।
भाखे० कन्याकेरे काज, पुरोहित नव जाचियो ॥ भा० ॥ ४९ ॥
मिथ्यादृष्टि जाणी, कन्या नापे मानवे ।
भाखे० जोरे लीधीवाल, अनेक नवीकरी मानवे ॥ भा० ॥ ५० ॥
विप्रकियोरे नियाण, राजाने दुःखदायवे ।
भाखे० होजो वचन प्रमाण, मेंह एह उपायवे ॥ भा० ॥ ५१ ॥

दिन थोडाघर राख, छोडी दीधी ब्राह्मणो।
भाखे० आरजिका अभिराम, हरिकान्ता पासेभणी ॥ भा० ॥५२॥
मरण तणेहूंहेतु, होजो शम्भूनेहणी।
भाखे० ग्रहीसंयम सुरलोक, पामीगति पंचम तणी ॥भा०॥ ५३॥
जनक तणेघरआय, सीताजीए ऊपनी।
भाखे० वयर विलय नविजाय, जेमभाखी तेम नीपनी॥भा०॥५४
मुनिवर जी ने जेह, झूठो आल चढावीयो।
भाखे० झूठो आलज एह, लोकांमांही पावीयो ॥ भा० ॥ ५५॥
भवमें भमत अपार, शम्भु जीव सुहामणो।
भाखे० कुशध्वज छे विप्र, रूडो ने रलियामणो ॥ भा० ॥ ५६॥
सावित्री तम नारी, उदरे लियो अवतारवे।
भाखे० नन्दन नामे प्रभास, सुन्दर ने सुखकारवे ॥ भा० ॥ ५७॥
विजयसिंह नी पास, संयम लीधो सादरा।
भाखे० दुक्कर तप जय कार, सहे परिषह आकरा ॥ भा० ॥ ५८॥
गिरी समेते जात, कनकप्रभ विद्याधरूं।
भाखे० ऋद्धि तणो विस्तार, देखी भोग पुरन्दरू ॥ भा० ॥ ५९॥
ए तप तणोही प्रकार, म्हारे ऋद्धिज एहवी।
भाखे० होजोकरेही निपाण, जेहवी गति मति तेहवी ॥भाखे॥६०
जईतीजे सुरलोक, देवतणा सुखभोगवी।
भाखे० आयुकर्म नेअन्त, आयोते सुरवरच्चवी ॥ भा० ॥ ६१॥
हुओ रावण राय. भाई तुम्हारो ए वडो।
भाखे० महुरायां शिरताज, वसुधामांहे वांकडो ॥ भा०॥ ६२॥
याज्ञवल्क्य नो जीव, भमतोए भवसिन्धुवे।
भाखे० एतूं उपज्यो आय. रावण नो लघुबन्धुवे ॥ भा० ॥ ६३॥
श्रीभूति हण्योजे राय, पृथिवी एपहीली गयो।
भाखे० पुर भले सुप्रतिष्ठ, पुनर्वसु खेचर थयो ॥ भा० ॥ ६४॥
क्षेत्र विदेह मझार, पुण्डरिकीणी छे विजय।

भाखे० नामे त्रिभुवनानन्द, चक्री भगवंतही भजय ॥ भा०६५ ॥
अनंग सुन्दरी तास, पुत्री अमरी अवतरी ।
भाखे० पुनर्वसु तसदेखी, लेईचाल्यो तस अपहरी ॥ भा० ॥ ६६
चक्री सुभटे आय, पन्थे रोक्यो पापीया ।
भाखे० अकुलाणो झुझन्त, सुभटअति सन्तापीया ॥ भा० ॥ ६७॥
अनंगसुन्दरी बाल, यान थकी डाकी खरी ।
कोई निकुंझमझार. आवीपडीसा सुन्दरी ॥ भा० ॥ ६८ ॥
पुनर्वसु लेईदिक्ष, आगे सुखियो थायजो ।
भाखे० कीधो एह निदान, ए सुन्दरीई पायजो ॥ भा० ॥ ६९ ॥
भोगवो सुरपद सार, विविधप्रकारे झूझियो ।
भाखे० दशरथ घर अवतार, ए प्रभु लक्ष्मणजी हुओ ।।भा०७०॥
वसती वनहर मझार, राज-सुता अनिरुधवे ।
भाखे० तपतो उग्र अपार. करतीभाव विशुद्धवे ॥ भाखे ॥७१ ॥
अन्त समय आराधी. मन्थारे सूतीसती ।
भाखे० अजगर आवा गलन्त. आगतिने नपडी रती ॥ भा०॥७२
बीजे कल्पे वमाय, हुई विशल्या एहवे ।
भाखे० लक्ष्मण नेसुखदाय, दिन२ वधतो नेहवे ॥ भा० ॥७३॥
गुणवतो नोभ्रात, गुणधर नाम धरायवे ।
भाखे० संमारतो नर्व असार. कुण्डल मण्डित थायवे ।'भा०॥७४॥
श्रावक व्रत प्रतिपाल, कीधो धर्म त्रिकालवे ।
सीता महोदर एह, भामण्डल भूपालवे । भा० ॥ ७५ ॥
काकन्दी पुरमांही, नाम देव ना पुत्रवे ।
भाखे० श्यामा उदर अवतार. गमन पम्ना तूरवे ॥ भा०॥७६॥
'सुनन्द' वसुनन्द अन्न. हुओ स्वकारवे ।
भाखे० प्रतिलाभ्यो मुनिएक मान नमगने पारवे ।।भा०॥७७
उत्तर कुरु भरतेई, सुधर्मे सुर लोकवे ।
भाखे० काकन्दी गजान, रतिवर्द्धन आलोकवे ॥ भा० ॥ ७८ ॥

दिन थोडाघर राख, छोडी दीधी ब्राह्मणो।
भाखे० आरजिका अभिराम, हरिकान्ता पासेभणी ॥ भा० ॥५२॥
मरण तणेहूंहेतु, होजो शम्भूनेहणी।
भाखे० ग्रहीसंयम सुरलोक, पामीगति पंचम तणी ॥भा०॥ ५३॥
जनक तणेघरआय, सोताजीए ऊपनी।
भाखे० वयर विलय नविजाय, जेमभाखी तेम नीपनी॥भा०॥५४
मुनिवर जी ने जेह, झूठो आल चढावीयो।
भाखे० झूठो आलज एह, लोकांमांही पावीयो ॥ भा० ॥ ५५॥
भवमें भमत अपार, शम्भु जीव सुहामणो।
भाखे० कुशध्वज छे विप्र, रूड़ो ने रलियामणो ॥ भा० ॥ ५६॥
सावित्री तम नारी, उदरे लियो अवतारवे।
भाखे० नन्दन नामे प्रभास, सुन्दर ने सुखकारवे ॥ भा० ॥ ५७॥
विजयसिंह नी पास, संयम लीधो सादरा।
भाखे० दुक्कर तप जय कार, सहे परिषह आकरा ॥ भा० ॥ ५८॥
गिरी समेते जात, कनकप्रभ विद्याधरू।
भाखे० ऋद्धि तणो विस्तार, देखी भोग पुरन्दरू ॥ भा० ॥ ५९॥
ए तप तणोही प्रकार, म्हारे ऋद्धिज एहवी।
भाखे० होजोकरेही निपाण, जेहवी गति मति तेहवी ॥भाखे॥६०
जईतीजे सुरलोक, देवतणा सुखभोगवी।
भाखे० आयुकर्म नेअन्त, आयोते सुरवरचवी ॥ भा० ॥ ६१॥
हुओ रावण राय, भाई तुम्हारो ए वडो।
भाखे० महुरायां शिरताज, वसुधामांहे वांकड़ो ॥ भा०॥ ६२॥
'याज्ञवल्क्य नो जीव, भमतोए भवसिन्धुवे।
भाखे० एतूं उपज्यो आय, रावण नो लघुबन्धुवे ॥ भा० ॥ ६३॥
श्रीभूति हण्योजे राय, पृथिवी एपहीली गयो।
भाखे० पुर भले सुप्रतिष्ठ, पुनर्वसु खेचर थयो ॥ भा० ॥ ६४॥
क्षेत्र विदेह मझार, पुण्डरिकीणी छे विजय।

भाखे० नामे त्रिभुवनानन्द, चक्री भगवंतही भजय ॥ भा०६५ ॥
अनंग सुन्दरी तास, पुत्री अमरी अवतरी ।
भाखे० पुनर्वसु तसदेखी, लेईचाल्यो तस अपहरी ॥ भा० ॥ ६६
चक्री सुभटे आय, पन्थे रोक्यो पापीया ।
भाखे० अकुलाणो झुझन्त, सुभटअति सन्तापीया ॥ भा० ॥ ६७॥
अनंगसुन्दरी बाल, यान थकी डाकी खरी ।
कोई निकुंझमझार, आवीपडीसा सुन्दरी ॥ भा० ॥ ६८ ॥
पुनर्वसु लेईदिक्ष, आगे सुखियो थायजो ।
भाखे० कीधो एह निदान, ए सुन्दरीहुं पायजो ॥ भा० ॥ ६९ ॥
भोगवी सुरपद सार, विविधप्रकारे गूंझियो ।
भाखे० दशरथ घर अवतार, ए प्रभु लक्ष्मणजी हुओ ।भा०७०॥
वसती वनहर मझार, राज-सुता अनिरुधवे ।
भाखे० तपतो उग्र अपार, कन्तीभाव विशुद्धवे ॥ भाखे ॥ ७१ ॥
अन्त समय आराधी, सन्थारे सूतीसती ।
भाखे० अजगर आवो गलन्त, आगतिमें नपटो रती ॥ भा०॥७२
बीजे कल्पे वसाय, हुई विशल्या एहवे ।
भाखे० लक्ष्मण नेसुखदाय, दिन२ वधतो नेहवे ॥ भा० ॥ ७३ ॥
गुणवतो नोभ्रात, गुणधर नाम धरायवे ।
भाखे० संसारतो सर्व असार, कुण्डल मण्डित थायवे ।भा०॥७४॥
श्रावक व्रत प्रतिपाल, कीधो धर्म त्रिकालवे ।
सीता सहोदर एह, भामण्डल भूपालवे । भा० ॥ ७५ ॥
काकन्दी पुरमांही, राम देव ना पुत्रवे ।
भाखे० श्यामा उदर अवतार, लक्षण धरता गुरवे ॥ भा०॥७६॥
'सुनन्द' पनुनन्द अन्य, हुओ स्वकारणे ।
भाखे० प्रतिलाभ्यो मुनिएक नाम गगनशने पारणे ॥भा॥०।७७
उत्तर कुरु भवलेई, सुधर्मे सुर लोकवे ।
भाखे० काकन्दी राजान, रतिवर्द्धन आलोकवे ॥ भा० ॥ ७८ ॥

सुदर्शनाजी मांय, दोई सुतउदर धारीया।
भाखे० प्रियंकर प्रसिद्ध, शुभंकर शुभकारीया ॥ भा० ॥ ७९ ॥
राज्यकरी व्रतपाली, देवहुआ ग्रैव्येकवे।
भाखे० लवणांकुश एदोई, सीता सुत सुविवेकवे ॥ भा० ॥ ८० ॥
सुदर्शनाजी माय, भवान्तर नी जेहवे।
भाखे० सिद्धारथ साथाय, जेही पढाया एहवे ॥ भा० ॥ ८१ ॥
ए मुनि वचन सुणन्त, बहुजनने वैराग्यवे।
भाखे० ग्रही संयम पावन्त, सेनानी सौभाग्यवे ॥ भा० ॥ ८२ ॥
राम नमी ऋषिपाय, पायाअति सन्तोष वे।
भाखे० आरति गईसुखथाय, प्रीती तणा अति पोषवे ॥ भा० ॥८३
एगुण साठमी ढाल, भवान्तर अवदातवे।
भाखे० केशराज ऋषिराजमें, वारुकही एवातवे ॥ भा० ॥ ८४ ॥

दोहा (सारंग सोरठी रागे)—

सीता पासे चालिके, तबआया श्री राम।
सुकुमालांगी स्वामिनी, कठण घणूं एकाम ॥ १ ॥
शीत तापना क्लेशअति, क्षुधा तृपानी व्याय।
रहेवो मेलेलूगड़े, जिनमत नीए छाय ॥ २ ॥
भारथकी ए भारअति, म्होटो संयम भार।
क्यूंनिवर्तसे एभणी, सांसो एह अपार ॥ ३ ॥
राजा रावण-आगले, राखी रही निजटेक।
राखजे संयम विषय, साचीटेक अनेक ॥ ४ ॥
एम विमासी वन्दना, किधी राघव राय।
लक्ष्मण आदे प्रणमीया, सीताजीना पाय ॥ ५ ॥
स परिवारे रामजी, अयोध्या आवन्त।
गुण गातां सीता तणा, गाढो सुख पावन्त ॥ ६ ॥

ढाल साठमी–

तर्ज–ओभूनी–अथवा–खेमावन्त सुण भगवन्तनोजी–

सतियों में सीता साचीजी, सुरवर दीधी साखी (टेर)
भलि २ मुख भाखी ॥ स० ॥
श्री मुखे भाखी रामजी जी, शील सहाय राखीयां जी ॥स०॥१॥
तीरथ में साचो सुहीजी, तीरथ चारु ही देखी ।
मंत्रों में साचो सुणोजी, श्री नमोकार विशेषी ॥ स० ॥ २ ॥
दानों में साचो कह्योजी, जीवतणूं जगदान ।
व्रतों में साचो कह्योजी, साचो शील प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥
नियमों में साचो भण्योजी, नियम बडो सन्तोष ।
साचो तप तपियां तणोजी, समता रसनो पोष ॥स०॥ ४ ॥
दुक्कर तप तपने करीजी, सेनापतिजी सोई ।
स्वर्गे पहूंच्यो पांचमेजी, परम महा सुखहोई ॥ स० ॥ ५ ॥
साठ वर्ष लगे स्वामीनीजी, विविध परे तप कीध ।
काया कीधो दूबलीजी, नरभवनूं फल लीध ॥ स० ॥ ६ ॥
अहोनिशा तेतीशनोजी, अनशन अंते आराधी ।
दश विध आराधन करीजी, समरस नो रस साधी ॥ स० ॥ ७ ॥
सागरतो बावीशनोजी, पायो पूरो आव ।
अच्युत इन्द्र पद भोगवेजी, सीता पुण्य प्रभाव ॥ स० ॥ ८ ॥
गिरि वैताढ्ये जाणीयेजी, कंचन पुर परसिद्ध ।
कनकरथ राजा भलोजी, राज्य करे समृद्ध ॥ स० ॥ ९ ॥
मन्दाकिनी सुभानुनीजी, चन्द्रमुखी उल्लास ।
पुत्री दोई पालताजी, स्वयम्वर मण्डप ताम ॥ स० ॥ १० ॥
राम सु लक्ष्मण नेडियाजी, पुत्रने परिवार ।
आया आडम्बर घणेजी, कर्यो जग उपकार ॥ स० ॥ ११ ॥
लवन 'वरे' मन्दाकिनीजी, चन्द्रमुखी सउमाल ।
'अकुश' नेआगे धनीजी, परिणवे सुखमाल ॥ स० ॥ १२ ॥

सुदर्शनाजी मांय, दोई सुतउदर धारीया।
भाखे० प्रियंकर प्रसिद्ध, शुभंकर शुभकारीया ॥ भा० ॥ ७९ ॥
राज्यकरी व्रतपाली, देवहुआ ग्रैव्येकवे।
भाखे० लवणांकुश एदोई, सीता सुत सुविवेकवे ॥ भा० ॥ ८० ॥
सुदर्शनाजी माय, भवान्तर नी जेहवे।
भाखे० सिद्धारथ साथाय, जेही पढाया एहवे ॥ भा० ॥ ८१ ॥
ए मुनि वचन सुणन्त, बहुजनने वैराग्यवे।
भाखे० ग्रही संयम पावन्त, सेनानी सौभाग्यवे ॥ भा० ॥ ८२ ॥
राम नमी ऋषिपाय, पायाअति सन्तोष वे।
भाखे० आरति गईसुखथाय, प्रीती तणा अति पोषवे ॥ भा० ॥८३
एगुण साठमी ढाल, भवान्तर अवदातवे।
भाखे० केशराज ऋषिराजमें, वारुकही एवातवे ॥ भा० ॥ ८४ ॥

दोहा (सारंग सोरठी रागे)—

सीता पासे चालिके, तबआया श्री राम।
सुकुमालांगी स्वामिनी, कठण घणूं एकाम ॥ १ ॥
शीत तापना क्लेशअति, क्षुधा तृषानी व्याय।
रहेवो मेलेल्लूगड़े, जिनमत नीए छाय ॥ २ ॥
भारथकी ए भारअति, म्होटो संयम भार।
क्युंनिवर्तसे एभणी, सांसो एह अपार ॥ ३ ॥
राजा रावण-आगले, राखी रही निजटेक।
राखजे संयम विषय, साचीटेक अनेक ॥ ४ ॥
एम विमासी वन्दना, किधी राघव राय।
लक्ष्मण आदे प्रणमीया, सीताजीना पाय ॥ ५ ॥
स परिवारे रामजी, अयोध्या आवन्त।
गुण गातां सीता तणा, गाढो सुख पावन्त ॥ ६ ॥

ढाल साठमीं—

तर्ज—ओंभूली—अथवा—खेमावन्त सुण भगवन्तनोजी—

सतियों में सीता साचीजी, सुरवर दीधी साखी (टेर)
भलि २ मुख भाखी ॥ स० ॥
श्री मुखे भाखी रामजी जी, शील सहाय राखीयां जी ॥स०॥१॥
तीरथ में साचो मुहोजी, तीरथ चारु ही देखी।
मंत्रों में साचो सुणोजी, श्री नमोकार विशेषी ॥ स० ॥ २ ॥
दानों में साचो कह्योजी, जीवतणूं अभयदान।
व्रतों में साचो कह्योजी, साचो शील प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥
नियमों में साचो भण्योजी, नियम बडो सन्तोष।
साचो तप तपियां तणोजी, समता रसनो पोष ॥स०॥ ४ ॥
दुक्कर तप तपने करीजी, सेनापतिजी सोई।
स्वर्गे पहूंच्यो पांचमेजी, परम महा सुखहोई ॥ स० ॥ ५ ॥
साठ वर्ष लगे स्वामीनीजी, विविध परे तप कीध।
काया कीधो दुर्बलीजी, नरभवनूं फल लीध ॥ स० ॥ ६ ॥
अहोनिशा तेतीशनोजी, अनशन अति आराधी।
दश विध आराधन करीजी, समरस नो रस साधी ॥ स० ॥ ७ ॥
सागरतो बावीशनोजी, पायो पूरो आय।
अच्युत इन्द्र पद भोगवेजी, सीता पुण्य प्रभाव ॥ स० ॥ ८ ॥
गिरि वैताढ्ये जाणीयेजी, कंचन पुर प्रसिद्ध।
कनकरथ राजा भलोजी, राज्य करे समृद्ध ॥ स० ॥ ९ ॥
मन्दाकिनी सुभानुनीजी, चन्द्रमुखी उद्दाम।
पुत्री दोई परणवाजी, स्वयम्वर मण्डप नाम ॥ स० ॥ १० ॥
राम नु लक्ष्मण तेडियाजी, पुत्रने परिवार।
आया आडम्बर घणेजी, पाम्यों अग चमत्कार ॥ स० ॥ ११ ॥
लवन 'वरे' मन्दाकिनीजी, चन्द्रमुखी सउल्लास।
'अङ्कुश' ने आगे भलीजी, पहिराने वरमाल ॥ स० ॥ १२ ॥

लक्ष्मण कुंवर कोपियाजी. अढाईसो वरसार।
लवणांकुश ने आगलेजी, मांडवे युद्ध अपार ॥ स० ॥ १३ ॥
लवणांकुश भाखे भलीजी, काकोजी ते बाप।
श्रीतपनोतो छेघणोंजी. सूंकरवो सन्ताप ॥ स० ॥ १४ ॥
अवध्यछे भाई भणीजी, तेहथी वध नविथाय।
गज केसरीने आगलेजी, बोलन्तां नलजाय ॥ स० ॥ १५ ॥
शर्माणा सुमता थयाजी, वैराग्ये वन वास।
अनुमति मांगी बापनीजी, आया मुनिवर पास ॥ स० ॥ १६ ॥
अढाईसो एकठाजी, कुंवर एकही वार।
'महाबल मुनि श्रीमुखेजी, लीधो संयम भार ॥ स० ॥ १७ ॥
लवणांकुश कुंवर तणोजी, कीधो तब विवाह।
स्वामी अयोध्या आवीयाजी. हुओघणो उत्साह ॥ स० ॥ १८ ॥
'भामण्डल भूपालनेजी, उपर भूमिआय।
बहुविध भावे भावनाजी, चित्तने लिये समझाय ॥ स० ॥ १९ ॥
वशकरी श्रेणीदोईनेजी, वर्तावी जय आण।
अबजो दीक्षा लीजियेजी, तो सघलोसु प्रमाण ॥ स० ॥ २० ॥
एम चिन्तवतां तेहनेजी, माथे विद्युत् पात।
देवकुरु एजई ऊपन्याजी, सुखमांही दिनजात ॥ स० ॥ २१ ॥
एक दिवस हनुमन्तजी जी, मेरु गिरिपे जाय।
चैत्रमासे क्रीडा करीजी, मन रलियापत थाय ॥ स० ॥ २२ ॥
वाटे आवन्तां थकांजी, रवि आथमतो देख।
एह स्वरूप संसारनूंजी, चित्त चिन्ते सुविशेष ॥ स० ॥ २३ ॥
दिनने आदे ऊगीयोजी, वध्यो मध्य दिन ताय।
वध्योदिन घटवे करीजी, माणस एम गणाय ॥ स० ॥ २४ ॥
पुत्र पनोतो पाटवीजी, राज भार थापन्त।
दीक्षा महोत्सव मांडियोजी, दानघणूं आपन्त ॥ स० ॥ २५ ॥
'धर्मरत्न गुरु पासतीजी, लीधो संयम भार।

सुन्दरी साडी सातसेजी, लागीप्रभुने लार ॥ स० ॥ २६ ॥
खावे पीवे पहिरवेजी, करवे भोग विलास ।
प्रेम करावे पद्मनीजी, मांडी एप्रियसूं आश ॥ स० ॥ २७ ॥
अलूणी सीला चाढवेजी, प्रिय साथे वैराग्य ।
करेतिका धन्य कामनीजी, माथे शिरनूं भाग ॥ स० ॥ २८ ॥
आर्जिका लक्ष्मीवतीजी, प्रवर्तिनी कहिवाय ।
साथेरहे ए साधवीजी, पढेगुणे गुनपाय ॥ स० ॥ २९ ॥
साचो संयम पालवेजी, कर्मतणो क्षयकार ।
हनुमन्त हुआ केवलीजी, पाम्या भवनो पार ॥ स० ॥ ३० ॥
हनुमन्त-दीक्षा सांभलीजी, चित चिंते श्री राम ।
कष्टग्रहू दीक्षातणोजी, छांडो विपय सुखठाम ॥ स० ॥ ३१ ॥
सौधर्म-हरि अवधि एकरीजी जाणीएह परणाम ।
विपय महागति कर्मकीजी, कहे समाए नाम ॥ स० ॥ ३२ ॥
चर्मशरीरी-रामजीरे, करे धर्मनी हांसी ।
वखाणे विपया घणीजी, न वदे वचन विमासी ॥ स० ॥ ३३ ॥
हाहागें जाण्योसहीजी, लक्ष्मण-राम-सनेह ।
वचन् अगोचर छेघणोंजी, कोईन पावेछेह ॥ स० ॥ ३४ ॥
नाम चल्या दो देवताजी, पुरी अयोध्या आय ।
नेह परिक्षा कारणेजी, मांडि एह उपाय ॥ स० ॥ ३५ ॥
लक्ष्मणने माया करीजी, देखारे नेदेव ।
अन्तेउर सहु रोवतोजी, कल्पान्तरे ततखेव ॥ स० ॥ ३६ ॥
पद्म? पद्म? हा? पद्मनयनजी, पदिनी अधिक पुकार ।
रोवेमरण अकालनूंजी, कीधीहिम्यूं किरतार! । स० ॥ ३७ ॥
वक्षस्थल कूटेघणोंजी, माथेकूटा केश ।
मेलीनेनें मानुनीजी, करती अधिक कलेश । स० ॥ ३८ ॥
विलोकी विषवाद संजी, भाते लक्ष्मण भूप ।
जीवितनूं जीवितपणूंजी, भाई भूप अनूप । स० ॥ ३९ ॥

लक्ष्मण कुंवर कोपियाजी. अढाईसो वरसार।
लवणांकुश ने आगलेजी, मांडवे युद्ध अपार ॥ स० ॥ १३ ॥
लवणांकुश भाखे भलीजी, काकोजी ते बाप।
प्रीतपनोतो छेघणोंजी. सूंकरवो सन्ताप ॥ स० ॥ १४ ॥
अवध्यछे भाई भणीजी, तेहथी वध नविथाय।
गज केसरीने आगलेजी, बोलन्तां नलजाय ॥ स० ॥ १५ ॥
शर्माणा सुमता थयाजी, वैराग्ये वन वास।
अनुमति मांगी बापनीजी. आया मुनिवर पास ॥ स० ॥ १६ ॥
अढाईसो एकठाजी, कुंवर एकही वार।
'महाबल मुनि श्रीमुखेजी, लीधो संयम भार ॥ स० ॥ १७ ॥
लवणांकुश कुंवर तणोजी, कीधो तब विवाह।
स्वामी अयोध्या आवीयाजी. हूओघणो उत्साह ॥ स० ॥ १८ ॥
'भामण्डल भूपालनेजी, उपर भूमिआय।
बहुविध भावे भावनाजी, चित्तने लिये समझाय ॥ स० ॥ १९ ॥
वशकरी श्रेणीदोईनेजी, वर्तावी जय आण।
अबजो दीक्षा लीजियेजी, तो सघलोसु प्रमाण ॥ स० ॥ २० ॥
एम चिन्तवतां तेहनेजी, माथे विद्युत् पात।
देवकुरु एजई ऊपन्याजी, सुखमांही दिनजात ॥ स० ॥ २१ ॥
एक दिवस हनुमन्तजी जी, मेरु गिरिपे जाय।
चैत्रमासे क्रीडा करीजी, मन रलियापत थाय ॥ स० ॥ २२ ॥
वाटे आवन्तां थकांजी, रवि आथमतो देख।
एह स्वरूप संसारनूंजी, चित्त चिन्ते सुविशेष ॥ स० ॥ २३ ॥
दिनने आदे ऊगीयोजी, वध्यो मध्य दिन ताय।
घट्योदिन घटवे करीजी, माणस एम गणाय ॥ स० ॥ २४ ॥
पुत्र पनोतो पाटवीजी, राज भार थापन्त।
दीक्षा महोत्सव मांडियोजी, दानघणूं आपन्त ॥ स० ॥ २५ ॥
'धर्मरत्न गुरु पाखतीजी, लीधो संयम भार।

सुन्दरी साडी सातसेजी, लागीप्रभुने लार ॥ स० ॥ २६ ॥
खावे पीवे पहिरवेजी, करवे भोग विलास ।
प्रेम करावे पद्मनीजी, मांडी एप्रियसूं आश ॥ स० ॥ २७ ॥
रूणी सीला चाढवेजी, प्रिय साधे वैराग्य ।
रेतिका धन्य कामनीजी, साधे शिवनूं माग ॥ स० ॥ २८ ॥
ार्जिका लक्ष्मीवतीजी, प्रवर्तिनी कहिवाय ।
ाथेरहे ए साधवीजी, पढेगुणे सुखपाय ॥ स० ॥ २९ ॥
ाचो संगम पालवेजी, कर्मतणो क्षयकार ।
हनुमन्त हूआ केवलीजी, पाम्या भवनो पार ॥ स० ॥ ३० ॥
हनुमन्त-दीक्षा सांभलीजी, चित्त चित्ते श्री राम ।
कष्टग्रह्यू दीक्षातणोजी, छांडी विषय सुखठाम ॥ स० ॥ ३१ ॥
सौधर्म-हरि अवधि एकरीजी जाणीएह परणाम ।
विषय महागति कर्मकीजी, कहे सभाए ताम ॥ स० ॥ ३२ ॥
चर्मशरीरी-रामजीरे, करे धर्मनी हांसी ।
वखाणे विषया घणीजी, न वदे वचन विमासी ॥ स० ॥ ३३ ॥
हाहामें जाण्योसहीजी, लक्ष्मण-राम-सनेह ।
वचन अगोचर छेघणोजी, कोईन पावेछेह ॥ स० ॥ ३४ ॥
नाम चल्या दो देवताजी, पुरी अयोध्या आय ।
नेह परिक्षा कारणेजी, मांडे एह उपाय ॥ स० ॥ ३५ ॥
लक्ष्मणने माया करीजी, देखाने तेदेव ।
अन्तेउर सहु रोवतोजी, लक्ष्मणरे ततखेव ॥ स० ॥ ३६ ॥
पद्म? पद्म? हा? पद्मनयनईजी, पाडतीं अधिक पुकार ।
रोदेमरण अकालनूंजी, कर्यूं किम्यूं किरतार! । स० ॥ ३७ ॥
वक्षस्थल कूटेपणीजी, मांगेछूटा केश ।
मेलीनेते मानुनीजी, करती अधिक कलेश ॥ स० ॥ ३८ ॥
विलोकी विषवाद यूंजी, भाने लक्ष्मण भूप ।
जीवितनूं जीवितपणूंजी, भाई भूप अनूप ॥ स० ॥ ३९ ॥

ात कहन्तां मरिगयोजी, फिटरे पापी काल ।
तरियो छलवट करीजी, रघुपतिस्यों भूपाल ॥ स० ॥ ४० ॥
ह कहन्त स्वमीनोजी, वचनां साथे जीव ।
नकलीगयो ततक्षण तदाजी, आतुर पणे अतीव ॥ स० ॥ ४१ ॥
सिंहासन बैठा थकाजी, हेमथम्भ अवथम्भि ॥
आंख पसार्योंही रह्योजी, लेप विम्ब निरदम्भि ॥ स० ॥ ४२ ॥
क्ष्मण मूओ जाणिकेजी, देवकरं विखवाद ।
ास्यथकी अनरथ हुओजी, वहोगयो परसाद ॥ स० ॥ ४३ ॥
विश्वाधार विशेषथीजी, ओंयों हणियो एह ।
श्चात्ताप करी घणोजी, स्वर्ग गया सुरतेह ॥ स० ॥ ४४ ॥
न्तः पुरिनी पद्मनीजी, मूओ जाणी कन्त ।
कूटे पीटे आवटेजी, रोवे अति विलवन्त ॥ स० ॥ ४५ ॥
शोक वचन श्रवणे सुणीजी, राघव धसि आवन्त ।
अमंगल अजाणीयाजी, मण्डे किस्यो तुरन्त ॥ स० ॥ ४६ ॥
जीवेछे मुझभाईजीजी, एमसूं केम मरन्त ? ।
मूर्च्छियो कोई प्रकारथीजी, तव उपचार करन्त ॥ स० ॥ ४७ ॥
वैद्य वुलाया वेगसूंजी, पूछ्यूं ज्योतिष जाण।
तंत्र मंत्र उपकर्म अतिजी, कीधा आप प्रमाण ॥ स० ॥ ४८ ॥
कोइयन आयो पाधरोजी, ताम प्रभु मूर्च्छाय ।
संज्ञापामी ने खरोजी, करुण स्वरे विललाय ॥ स० ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजीजी, विभीषण लंकेश ।
दुःखे अधिकूं आरड़ेजी, रोवे राय अशेष ॥ स० ॥ ५० ॥
कौशल्यादिक मायजीजी, नयणे नांखे नीर ।
छोडिने वडवीर नेजी, गया विललाई वीर ॥ स० ॥ ५१ ॥
मार्ग मार्ग पन्थमेंजी, घर घर हाटे हाट ।
शोकमय सहुको हुआजी, पड़ी अचिन्ती वाट ॥ स० ॥ ५२ ॥
लवणांकुश प्रभुने नमीजी, अनुमति मांगे आप ।

ए संसार असारछेजी, यमनो प्रबल प्रताप ॥ स० ॥ ५३ ॥
अमृतघोष मुनिशपेजी, पामी उत्तम दिक्ख।
मोक्ष गया मुनिवर सहीजी, आराधी गुरु शिक्ख ॥ स० ॥ ५४ ॥
भाईने पुत्रों तणोजी पामी घणो वियोग।
फिरी फिरी मूर्च्छाए प्रभुजी, वधतो जाये शोग ॥ स० ॥ ५५ ॥
भाईजीए तुम्ह विनाजी, पुत्रां दीधी पूठ।
हजु किस्यूं आगे हुसीजी, तिहांथी वेगो उठ ॥ स० ॥ ५६ ॥
मोहे मूर्च्छाणो घणोजी, जाण्यो राम नरेश।
विभीषणादिक रायजीजी, समझावे सुविशेष ॥ स० ॥ ५७ ॥
धीरा मांही धीरतुजी, वीरों को शिरताज।
लज्जा कारी लोकमेंजी, अधिर पणुं तजि आज ॥ स० ॥ ५८ ॥
एह सुणी अति कोपियोजी, होठ डसी बोलन्त।
प्रबल वायने वाजवेगी, डुंगर नवि डोलन्त ॥ स० ॥ ५९ ॥
जीवेछे मुझ भाईजीजी, मुआ तुम्हारा भ्रात।
देवोतुम्हे दाग उतावलोजी, अवसर वहियोजात ॥ स० ॥ ६१ ॥
चलि चलितूं भाईजीजी, कांई लगावे वार।
छिद्रलई करसे घगूंजी, दुर्जन एह पेसार ॥ स० ॥ ६२ ॥
अथवा दुर्जन देखगांजी, कोपेनहीं राजान।
एमकही खांधे धरीजी, चाल्यो अनेरे थान ॥ स० ॥ ६३ ॥
स्नान करावे हाथसुंजी, अंगूछीने अंग।
विलेपन विधि आचरीजी, राम करे अतिरंग ॥ स० ॥ ६४ ॥
थालभरी भोजन तणोजी, मूके आगे आण।
भाईजी आरोगोयेजी, बोके मांठी वाण ॥ स० ॥ ६५ ॥
कदही अंकार रोपिकेजी, चूंबे वार अनेक।
मस्तक चालकनी परेजी, गुणगावे विवेक ॥ स० ॥ ६६ ॥
पोढाणी ने पालकेजी, आपही चम्पे पांव।

१ गोशीर्ष [illegible] ॥

वात कहन्तां मरिगयोजी, फिटरे पापी काल ।
छेतरियो छलवट करीजी, रघुपतिस्यों भूपाल ॥ स० ॥ ४० ॥
एह कहन्त स्वमीनोजी, वचनां साथे जीव ।
निकलीगयो ततक्षण तदाजी, आतुर पणे अतीव ॥ स० ॥ ४१ ॥
सिंहासन बैठा थकाजी, हेमथम्भ अवथम्भि ॥
आंख पसार्योंही रह्योजी, लेप बिम्ब निरदम्भि ॥ स० ॥ ४२ ॥
लक्ष्मण मूओ जाणिकेजी, देवकरं विखवाद ।
हास्यथकी अनरथ हुओजी, वहोगयो परसाद ॥ स० ॥ ४३ ॥
विश्वाधार विशेपथीजी, ओंयों हणियो एह ।
पश्चात्ताप करी घणोजी, स्वर्ग गया सुरतेह ॥ स० ॥ ४४ ॥
अन्तः पुरिनी पद्मनीजी, मूओ जाणी कन्त ।
कूटे पीटे आवटेजी, रोवे अति विलवन्त ॥ स० ॥ ४५ ॥
शोक वचन श्रवणे सुणीजो, राघव भसि आवन्त ।
अमंगल अजाणीयाजी, मण्डे किस्यो तुरन्त ॥ स० ॥ ४६ ॥
जीवेछे मुझभाईजीजी, एमर्खुं केम मरन्त ? ।
मूर्च्छियो कोई प्रकारथीजी, तव उपचार करन्त ॥ स० ॥ ४७ ॥
वैद्य बुलाया वेगसूंजी, पूछ्यूं ज्योतिष जाण ।
तंत्र मंत्र उपकर्म अनिजी, कीधा आप प्रमाण ॥ स० ॥ ४८ ॥
कोइयन आयो पाधरोजी, ताम प्रभु मूर्च्छाय ।
संज्ञापामी ने खरोजी, करुण स्वरे विललाय ॥ स० ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजीजी. विभीपण लंकेश ।
दुःखे अधिकूं आरडेजी. रोवे राय अशेष ॥ स० ॥ ५० ॥
कौशल्यादिक मायजीजी, नयणे नांखे नीर ।
छोडिने वडवीर नेजी, गया विललाई वीर ॥ स० ॥ ५१ ॥
मार्ग मार्ग पन्थमेंजी, घर घर हाटे हाट ।
शोकमय सहुको हुआजी, पड़ी अचिन्ती वाट ॥ स० ॥ ५२ ॥
लवणांकुश प्रभुने नमीजी, अनुमति मांगे आप ।

ए संसार असारछेजी, यमनो प्रबल प्रताप ॥ स० ॥ ५३ ॥
अमृतघोष मुनिशपेजी, पामी उत्तम दिक्ख ।
मोक्ष गया मुनिवर सहीजी, आराधी गुरु शिक्ख ॥ स० ॥ ५४ ॥
भाईने पुत्रां तणोजी पामी घणो वियोग ।
फिरी फिरी मूर्च्छाए प्रभुजी, वधतो जाये शोग ॥ स० ॥ ५५ ॥
भाईजीए तुम्ह विनाजी, पुत्रों दीधी पूठ ।
हजु किस्यूं आगे हुसीजी, तिहांथी वेगो ऊठ ॥ स० ॥ ५६ ॥
मोहे मूर्च्छाणो घणोजी, जाण्यो राम नरेश ।
विभीषणादिक रायजीजी, समझावे सुविशेष ॥ स० ॥ ५७ ॥
धीरा मांही धीरतुजी, वीरों को शिरताज ।
लज्जा कारी लोकमेंजी, अधिर पणूं तजि आज ॥ स० ॥ ५८ ॥
एह सुणी अति कोपियोजी, होठ डसी बोलन्त ।
प्रबल वायने वाजवेगी, डूंगर नवि डोलन्त ॥ स० ॥ ५९ ॥
जीवेछे मुझ भाईजीजी, मुआ तुम्हारा भ्रात ।
देवोतुम्हे दाग उतावलोजी, अवसर वहियोजात ॥ स० ॥ ६१ ॥
वलि वलितूं भाईजीजी, कांई लगावे वार ।
छिद्रलई करसे वगूंजी, दुर्जन एह पेसार ॥ स० ॥ ६२ ॥
अथवा दुर्जन देखनांजी, कोपेनहीं राजान ।
एमकही खांधे धरीजी, चल्यो अनेरे थान ॥ स० ॥ ६३ ॥
स्नान करावे हाथसूंजी, अंगूछेने अंग ।
विलेपन विधि साचवीजो, राम करे अतिरंग ॥ स० ॥ ६४ ॥
थालभरी भोजन तणोजी, मूके आगे आन ।
भाईजी आरोगोवेजी, बोले मीठी वाण ॥ स० ॥ ६५ ॥
इमकहीं अंकार गोपिकेजी, चूंबे वार अनेक ।
मस्तक पालकनी परेजी, एमनहिं विवेक ॥ स० ॥ ६६ ॥
पोढावी ने पालकेजी, आपही बसे पोर ।

कानेलागी वात करेजी, कहिर घाले वाय ॥ स० ॥ ६७ ॥
ए विध पोषे मोहिनीजी, न लहे शुद्ध लगार।
वोली[1]गया खट्मास जबजी, वैरीकरे विकार ॥ स० ॥ ६८ ॥
इन्द्रजीत ने सुंदनाजी, नन्दन महामय वन्त।
अपरही वयरी घणाजी, निसुणो ए विरतन्त ॥ स० ॥ ६९ ॥
'अयोध्या ए आवीयाजी, गुप्तपणे ततकाल।
सूनी जाणीने गुफाजी, जेम आवन्त सीयाल ॥ स० ॥ ७० ॥
खवर लेई श्री रामजीजी, अंकारोयो बन्धु।
धनुष्य वाणने करग्रहीजी, गाजन्तां जेम सिन्धु ॥ स० ॥ ७१ ॥
आसन कम्पे अवधिसूंजी, आवे देव जटायु।
देवघणासूं परिवर्योजी, करवा राम सहायु[2] ॥ स० ॥ ७२ ॥
सुरवर सानिध्य साचवेजी, तेनहीं केहने पाडी।
विभीषणादिक खेचराजी, अलगाकिया तेताड़ी ॥ स० ॥ ७३ ॥
लज्जाणा संयम ग्रह्योजी, भेट्यो गुरु अतिवेग।
तेग फूरीनहीं राजनींजी, तामग्रही व्रत वेग ॥ स० ॥ ७४ ॥
ढाल भणीए साठमीजी, जेहनां चरम शरीर।
'केशराज वश मोहनेजी, हुआ अधिक अधीर ॥ स० ॥ ७५ ॥

दोहा (गोडी रागे)

देव जटायु रामने, देखावे दृष्टान्त।
समझावा ने कारणे, आव्यो छे एकान्त ॥ १ ॥
पंकज रोपे शील उपरे, सींचे सूको वृक्ष।
उखर खेते अकालहीं, वावे वीज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
घाणी पीले रेतनी, ताम कहे श्रीराम।
किस्यूं करेरे मानवी, मूढ़ पणानों काम ? ॥ ३ ॥
पंकज[3] ऊगे पाणिए, पाणी विण न उगन्त।
जलसूं सींच्ये मूसलूं, क्यूंही नवि फूलन्त ॥ ४ ॥

---

१ पूरेहुवे= २ सहाय= ३ कमल=

बीज न ऊगे जल विना, उखर खेत विशेष ।
वेलू पिल्यां घाणिए, मूर्ख तेल मत देख ॥ ५ ॥
तब बोल्यो हसि देवता, एजो एमज होय ।
मूओ फरी जीवे नहीं, स्वामी विमासी जोय ॥ ६ ॥
एम कह्यां कोप्या घणूं, आलंगीने१ देह ।
कहे दूरजा दृष्टिथी, आणूं छूं तुझ छेह ॥ ७ ॥
सेनापति२ सुर लोकथी, जटायु नो उपाय ।
देखे जब लागे नहीं, मोहमें रहै रघुराय ॥ ८ ॥
आप उपायज केलवे, मूई नारी एक ।
खांधे धरीने आवीयो, राम वदे सुविशेष ॥ ९ ॥
एकां मूर्ख धीट नर, मूई नारी खांध ।
लेई फरे लेशे नहीं, मूओ आयुखो सांध ॥ १० ॥
स्वामी ? अमंगल कहां कहो, ए मुझ व्हाली नार ।
हैया थकी नवि ऊतरे, राम कहे सुविचार ॥ ११ ॥
व्हाला थी व्हालो हुवे, मूओ फरि नानन्त ।
मूआ गयाते शोचतां, शोभ न को पावन्त ॥ १२ ॥
पर उपदेशी जग घणो, आप न समझे कोई ।
राम मोह मोही रहा, ताम कहे सुर सोई ॥ १३ ॥
डुंगर बलतो देखीए, पग तले नवि देखन्त ।
छिद्र पराया पेखिए, पोताना न पेखन्त ॥ १४ ॥
ए वचने प्रति बूझियो, प्रभुजी आयो ठाम ।
लक्ष्मण भाईजी नहीं, मूओ जाणे ए राम ॥ १५ ॥
तवने दोई देवता, आपणो देखाय ।
पगेलागी प्रभुजीनवे, मार्गे पहेला जाय ॥ १६ ॥
संस्कार कायानवो, राम कियो ने सार ।
आपकृपा ऊभासता, लेवा संयम भार ॥ १७ ॥

१ राम लक्ष्मण के शरीरसे आलिंगनकर = २ कृतान्तवदन

कानेलागी वात करेजी, कहि२ घाले वाय ॥ स० ॥ ६७ ॥
ए विध पोपे मोहिनीजी, न लहे शुद्ध लगार ।
वोली१गया खट्‌मास जवजी, वैरीकरे विकार ॥ स० ॥ ६८ ॥
इन्द्रजीत ने सुंदनाजी, नन्दन महामय वन्त।
अपरही वयरी घणाजी, निसुणी ए विग्तन्त ॥ स० ॥ ६९ ॥
'अयोध्या ए आवीयाजी, गुप्तपणे ततकाल ।
सूनी जाणीने गुफ़ाजी, जेम आवन्त सीयाल ॥ स० ॥ ७० ॥
खबर लेई श्री रामजीजी, अंकारोयो बन्धु ।
धनुष्य बाणने करग्रहीजी, गाजन्तां जेम सिन्धु ॥ स० ॥ ७१ ॥
आसन कम्पे अवधिसूंजी, आवे देव जटायु ।
देवघणासूं परिवर्योजी, करवा राम सहायु२ ॥ स०॥ ७२ ॥
सुरवर सानिध्य साचवेजी, तेनहीं केहने पाडी ।
विभीषणादिक खेचराजी, अलगाकिया तेताड़ी ॥ स० ॥ ७३ ॥
लज्जाणा संयम ग्रह्योजी, भेट्यो गुरु अतिवेग ।
तेग फूरीनहीं राजनींजी, तामग्रही व्रत वेग ॥ स० ॥ ७४ ॥
ढाल भणीए साठमीजी, जेहनां चरम शरीर ।
'केशराज वश मोहनेजी, हुआ अधिक अधीर ॥ स० ॥ ७५ ॥

दोहा (गोडी रागे)

देव जटायु रामने, देखावे दृष्टान्त ।
समझावा ने कारणे, आव्यो छे एकान्त ॥ १ ॥
पंकज रोपे शील उपरे, सींचे सूको वृक्ष ।
उखर खेते अकालहीं, वावे बीज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
घाणी पीले रेतनी, ताम कहे श्रीराम ।
किस्यूं करेरे मानवी, मूढ पणानों काम ? ॥ ३ ॥
पंकज३ ऊगे पाणिए, पाणी विण न उगन्त ।
जलसूं सींच्ये मूसलूं, क्यूंही नवि फूलन्त ॥ ४ ॥

१ पूरेहुवे= २ सहाय= ३ कमल=

बीज न ऊगे जल विना, उखर खेत विशेष ।
वेलू पिल्यां घाणिए, मूर्ख तेल मत देख ॥ ५ ॥
तब बोल्यो हसि देवता, एजो एमज होय ।
मूओ फरी जीवे नहीं, स्वामी विमासी जोय ॥ ६ ॥
एम कह्यां कोप्या घणूं, आलंगीने१ देह ।
कहे दूरजा दृष्टिथी, आणूं छूं तुझ छेह ॥ ७ ॥
सेनापति२ सुर लोकथी, जटायु नो उपाय ।
देखे जब लागे नहीं, मोहमें रहै रघुराय ॥ ८ ॥
आप उपायज केलवे, मूई नारी एक ।
खांधे धरीने आवीयो, राम वदे सुविशेष ॥ ९ ॥
एकां मूर्ख धीट नर, मुई नारी खांध ।
लेई फरे लेशे नहीं, मूओ आयुखो सांध ॥ १० ॥
स्वामी ! अमंगल कहां कहो, ए मुझ व्हाली नार ।
हैया थकी नवि ऊतरे, राम कहे सुविचार ॥ ११ ॥
व्हाला थी व्हालो हुवे, मूओ फरि नावन्त ।
मूआ सगाते शोचतां, शोभ न को पावन्त ॥ १२ ॥
पर उपदेशो जग घणो, आप न समझे कोई ।
राम मोहे मोही रह्या, ताम कहे सुर सोई ॥ १३ ॥
डुंगर बलतो देखीए, पग तले नवि देखन्त ।
छिद्र पराया पेखिए, पोताना न पेखन्त ॥ १४ ॥
ए वचने प्रति बूझियो, प्रभुजी आयो ठाम ।
लक्ष्मण भाईजी मरी, मूओ जाणे ए राम ॥ १५ ॥
तरते दोई देवता, आपणो देखाय ।
पगेलागी प्रभुजीतणे, स्वर्गे पहुंता जाय ॥ १६ ॥
संस्कार करावतो, राम किजो सेवार ।
आपतुरा उजावता, सेवा मंगल सार ॥ १७ ॥

१ राम लक्ष्मण के शरीरसे चारों लिपट कर २ कृतान्तवदन

शत्रुघ्न ने राजनी, पदवी आये ईश ।
शत्रुघ्न इच्छेनहीं, संयम साथे जगीश ॥ १८ ॥
लवण-तणो अंगजअछे, अनंगदेव उदार ।
राज-भार तस अर्पियो, ओछवकरी अपार ॥ १९ ॥

ढाल इकसठमीं—तर्ज हामेरे पूज्यजी हा मेरे गुरुजी

धन्य प्रभु रामजी धन्य परिणामजी, पृथ्वीमें प्रशंसत्रे ।
धन्य तुम्ह तातजी धन्यतुझ मातजी. धन्यतेरा कुलवंशत्रे ॥धन्य॥१
मुनिसुव्रतने तीर्थे वर्ते, सुव्रतजी गणधारत्रे ।
अर्हद्दासे चताव्यो सद्गुरु, भवजल तारण हारत्रे ॥ धन्य ॥ २ ॥
शत्रुघ्न-सुग्रीव-विभीषण, वीर विराध उदारत्रे ।
सोलेहजार नरेश्वर साथे, रामहुवा व्रतधारत्रे ॥ धन्य ॥ ३ ॥
वरनारी संयमव्रत लीधो, सहम तदा सेतीशत्रे ।
श्रीमती आरजिका केरी, सेवकरे निश दीसत्रे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥
पंचाचारी शुद्धाहारी, समितीगुप्ति प्रतिपालत्रे ।
शीलसुधारी परउपगारी. षट्कायिक रखवालत्रे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
छट्ठअट्ठम आदि तपकीजे, विविध अभिग्रह वन्तत्रे ।
कंचन नीपरे काय कसीजे, गुरु गिरुवा गुण वन्तत्रे ॥ धन्य ॥ ६ ॥
चवदेपूर्व अंग इग्यारे. पढ्या बुद्धि प्रमाणत्रे ।
पण्डित राज शिरोमणीसाचा, सवविधि जाण सुजाणत्रे ॥धन्य॥७॥
आसेवन नेग्रहण शिक्षा, दो सिक्या गुरुने संगत्रे ।
गुरुकुलवासे साठवर्ष लगे, रहिया मनने रंगत्रे ॥ धन्य ॥ ८ ॥
गुरु आदेशे उग्रविहारी, एकाकी विचरन्तत्रे ।
तीनदा रात्रे ध्यान तणेबल, अवधि अति उपजन्त्रे ॥ धन्य ॥ ९ ॥
चउद रज्जात्मक लोकविलोके, जेमतो फलका मांहीत्रे ।
अनुज अधिक वेदन अनुभवतो, दीठो नरके मांहीत्रे ॥धन्य॥१०॥
प्रभुजी चिन्ते जव हूं हूतो, नामे श्री धनदत्तत्रे ।
लक्ष्मणजी हूतो लघुभाई, वसुदत्त सुदत्तत्रे ॥ धन्य ॥ ११ ॥

उहांपण मुझेकाजे मूओ, भवमें भमतो भूरीवे।
इहांपण लक्ष्मण मुझसाथे, रह्योनित्य हजुरीवे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥
वरस सो कुँवर पणेरे, मण्लीक शयतीनवे।
दिग्विजय चालीस वर्षलगे, पदवीधर प्रवीनवे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥
इग्यारे हजार पांचमे ऊपर, वरस विदिता माठ वे।
सर्वायु तस चार महश्रनूं, दीसे ग्रन्थ ही पाठ वे ॥धन्य०॥१४॥
अविरतीने वलि नर्के पहूंत्यो, कृत कर्मोंनो जोरवे।
जैसो कीजे तैसो लहिये, कांई करो नर शोर वे ॥ धन्य० ॥१५॥
एमचिन्तवतां राम ऋषीश्वर, कर्म हणेवा हेतवे।
तपजप अधिका अधिका कीजे, ममता भाव समेतवे ॥धन्य०॥१६॥
दो[1] उपवास किया दिनतीजे, लेना काज आहारवे।
'स्यन्दनस्थल[2] नगरे पउधारे, जयणानी गतिमारवे॥धन्य०॥१७॥
चन्द्रही जेम चकोरादेखे, तेम पुरना सहु लोकवे।
सन्मुखआया प्रणमेपाया, ए शुभनो संयोगवे ॥ धन्य० ॥ १८ ॥
आप आपणा घरनेद्वारे, भोजन केरा थालवे।
आगेमूके भक्तिन चूके, आणीभाव रसालवे ॥ धन्य० ॥ १९ ॥
लोक शब्द थी शोरमच्यो अति, हाथीभंजे थम्भ वे।
ऊंचाकान करे अतिघोड़ा, हुओ अधिक अचम्भवे ॥धन्य० ॥ २०
ओआहारन लीधोरामे, चलिआया नृपगेहवे।
'प्रतिनन्दी भूपेप्रतिलाभ्या, आणीधर्म सनेहवे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥
प्रभुजीनो पारणो पहूंत्यो, उपजो अति उल्लासवे।
पंचसुदिव्य प्रसिद्धाहूआ, उद्घोषण आकाशवे ॥ धन्य० ॥ २२ ॥
प्रभुजी वननेंजाई चितचिन्ते, पुरमांही नविजाऊवे।
क्षोभघणो लोगोंने उपज्यो, कुण्डाई नवि थाऊंवे ॥धन्य० ॥ २३
अब सूझतो वननें [illegible], मिलस्या आहार ही आववे।
नहींतर [illegible] अभिग्रहलीधो, [illegible] उपवासवे ॥ धन्य० ॥ २४॥

[illegible]

1 [illegible] श्री [illegible]

शत्रुघ्न ने राजनी, पदवी आये ईश।
शत्रुघ्न इच्छेनहीं, संयम साथे जगीश ॥ १८ ॥
लवण-तणो अंगजअछे, अनंगदेव उदार।
राज-भार तस अर्पियो, ओछवकरी अपार ॥ १९ ॥

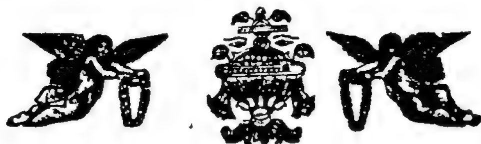
ढाल इकसठमी—तर्ज हामेरे पूज्यजी हा मेरे गुरुजी

धन्य प्रभु रामजी धन्य परिणामजी, पृथ्वीमें प्रशंसवे।
धन्य तुम्ह तातजी धन्यतुझ मातजी. धन्यतेरा कुलवंशवे ॥धन्य॥ १
मुनिसुव्रतने तीर्थे वर्ते, सुव्रतजी गणधारवे।
अर्हद्दासे वताव्यो सद्गुरु, भवजल तारण हारवे ॥ धन्य ॥ २ ॥
शत्रुघ्न-सुग्रीव-विभीषण, वीर विराध उदारवे।
सोलेहजार नरेश्वर साथे, रामहुवा व्रतधारवे ॥ धन्य ॥ ३ ॥
वरनारी संयमव्रत लीधो, सहम तदा सतीशवे।
श्रीमती आरजिका केरी, सेवकरे निश दीसवे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥
पंचाचारी शुद्धाहारी, समितीगुप्ति प्रतिपालवे।
शीलसुधारी परउपगारी. पट्कायिक रखवालवे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
छट्ठअट्ठम आदि तपकीजे, विविध अभिग्रह वन्तवे।
कंचन नीपरे काय कसीजे, गुरु गिरुवा गुण वन्तवे ॥ धन्य ॥ ६ ॥
चवदेपूर्व अंग इग्यारे. पढ्या बुद्धि प्रमाणवे।
पण्डित राज शिरोमणीसाचा, सबविधि जाण सुजाणवे ॥धन्य॥ ७ ॥
आसेवन नेग्रहण शिक्षा, दो सिक्या गुरुने संगवे।
गुरुकुलवासे साठवर्ष लगे, रहिया मनने रंगवे ॥ धन्य ॥ ८ ॥
गुरु आदेशे उग्रविहारी, एकाकी विचरन्तवे।
तीनहो रात्रे ध्यान तणेवल, अवधि अति उपजन्तवे ॥ धन्य ॥ ९ ॥
चउद रज्जात्मक लोकविलोके, जेमतो फलकर मांहीवे।
अनुज अधिक वेदन अनुभवतो, दीठो नरके प्राहीवे ॥धन्य॥ १० ॥
प्रभुजी चिन्ते जब हुं हूतो, नामे श्री धनदत्तवे।
लक्ष्मणजी हूतो लघुभाई, वसुदत्त सुदत्तवे ॥ धन्य ॥ ११ ॥

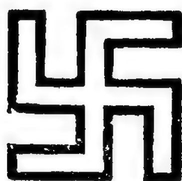
उहांपण मुझेकाजे मूओ, भवमें भमतो भूरीवे।
इहांपण लक्ष्मण मुझसाथे, रह्योनित्य हजूरीवे॥ धन्य० ॥ १२ ॥
वरस सो कुंवर पणेरे, मण्डलीक शयतीनवे।
दिग्विजय चालीस वर्षलगे, पदवीधर प्रवीनवे॥ धन्य० ॥ १३ ॥
इग्यारे हजार पांचसे ऊपर, वरस विदिता साठ वे।
सर्वायु तस बार सहश्रनूं, दीसे ग्रन्थ ही पाठ वे ॥धन्य०॥१४॥
अविरतीने चलि नर्के पहूंत्यो, कृत कर्मांनो जोरवे।
जैसो कीजे तैसो लहिये, कांई करो नर शौर वे॥ धन्य० ॥१५॥
एमचिन्तवतां राम ऋषीश्वर, कर्म हणेवा हेतवे।
तपजप अधिका अधिका कीजे, समता भाव समेतवे ॥धन्य०॥ १६॥
दो[1] उपवास किया दिनतीजे, लेवा काज आहारवे।
'स्यन्दनस्थल[2] नगरे पउधारे, जयणानी गतिसारवे॥धन्य०॥१७॥
चन्द्रही जेम चकोरदेखे, तेम पुरना सहु लोकवे।
सन्मुखआया प्रणमेपाया, ए शुभनो संयोगवे॥ धन्य० ॥ १८ ॥
आप आपणा घरनेद्वारे, भोजन केरा थालवे।
आगेमूके भक्तिन चूके, आणीभाव रसालवे॥ धन्य० ॥ १९ ॥
लोक शब्द थी शोरमच्यो अति, हाथीभंजे थम्भ वे।
ऊंचाकान करे अतिघोडा, हुओ अधिक अचम्भवे ॥धन्य० ॥ २०
ओआहारन लीधोरामे, चलिआया नृपगेहवे।
'प्रतिनन्दी भूपेप्रतिलाभ्या, आणीघने सनेहवे॥ धन्य० ॥ २१ ॥
प्रभुजीनो पारणो पहूंत्यो, उपन्यो अति उच्छाहवे।
पंचसुदिव्य प्रसिद्धाहुआ, उद्घोषण आकाशवे॥ धन्य० ॥ २२ ॥
प्रभुजी वननेंउठ चितचिन्ते, पुरमांहीं नांवि ताउवे।
क्षोभपणो लोगोंने उपज्यो, दुःखदाई स्यां[?] ठांउवे ॥धन्य० ॥ २३
अव सूजतो घनमें विचरे, जिम्या आहारथी आजवे।
नहींतर एह अभिग्रहकीधो, करया तप उपासवे॥ धन्य० ॥ २४॥

१ छट्टेमके उपवास की समाप्ति, २ स्यन्दनस्थल नगरमें आ[illegible]

-(कलश)-



राम-लक्ष्मण अने रावण, सती सीतानी चरी।
कही भाखी चरित्र साखी, वचन रचनाए करी ॥ १ ॥
संघ रंग विनोद वक्ता, अने श्रोता सुख भणी।
केशराज मुनिंद जम्पे. सदा हर्ष वधामणी ॥ २ ॥



इति श्री जैनपद्य रामायणे-भरत दीक्षाग्रहणं-मधुमरणं—शत्रुघ्नराज्य प्रदानं-सीतोपरिकलंकं-सीता वनवासं-लवणांकुशयो-जन्मं-विद्यापठन-लवणांकुश पाणिपीडनं-राम-लक्ष्मण सार्ध-युद्धं-सीताग्निप्रवेशं-सीता दीक्षा ग्रहणं-देवमाया-लक्ष्मण मरणं-रामदीक्षा-मोक्षप्राप्ति-पूर्वभव वर्णनमादि-विषयकं चतुर्थ-खण्डं समाप्ति मफणीत—

इति श्री जैनपद्य-रामायणं सम्पूर्णम्

शुभं भूयात्— कल्याण मस्तु-
इत्यर्हम्— इत्यर्हम् इत्यर्हम

लिखितं श्री शार्दूलशिष्य मुनि रूपेन्दुना

मुद्रकः—

राम-श्याम प्रिन्टिङ्ग प्रेस

कटला बाजार, जोधपुर.

अर्हम्

परिशिष्ट (१)

गीत [१] तर्ज—सहेल्यां हे आंबो मोरियो

राज कंवर रलियावणा, नयणांरा हे धन जीवन जेह के,
हरखावण हिवड़ां तणा, वरसावण हे आनन्दरस मेह के,
रघुनन्दन मन मोहियो [टेर]

एतो किसा हे नगररा राजवी ? अवनीपत हे किण घर अवतार ? के,
किण विध इण पुर आविया, हिवड़ां रा हे हरखेवण हार के,
रघुनन्दन मन मोहियो [२]

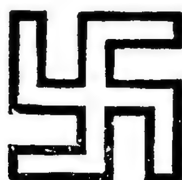
एतो अवध नगर रा है राजवी, रघुकुल रा है जाणूं सूरज चंद के,
सीय-सुयम्वर निरखवा अठे आया है एतो आनन्द कन्द के,
रघुनन्दन मन मोहियो [३]

एतो नेह नगर रा है राजवी, आनन्द रा है दरसे आपाण के,
नयण-निवाजण आविया, जग जीवण है प्राणां रा ही प्राण के,
रघुनन्दन मन मोहियो [४]

-(कलश)-



राम-लक्ष्मण अने रावण, सती सीतानी चरी।
कही भाखी चरित्र साखी, वचन रचनाए करी ॥ १ ॥
संघ रंग विनोद वक्ता, अने श्रोता सुख भणी।
केशराज मुनिंद जम्पे, सदा हर्ष वधामणी ॥ २ ॥



इति श्री जैनपद्य रामायणे-भरत दीक्षाग्रहणं-मधुमरणं—शत्रुघ्नराज्य प्रदानं—सीतोपरिकलंकं—सीता वनवासं—लवणांकुशयो—जन्मं—विद्यापठनं—लवणांकुश पाणिपीडनं—राम—लक्ष्मण सार्ध—युद्धं—सीताग्निप्रवेशं—सीता दीक्षा ग्रहणं—देवमाया—लक्ष्मण मरणं—रामदीक्षा—मोक्षप्राप्ति—पूर्वभव वर्णनमादि—विषयकं चतुर्थ—खण्डं समाप्ति मफणीत—

इति श्री जैनपद्य—रामायणं सम्पूर्णम्

शुभं भूयात्— कल्याण मस्तु—
इत्यर्हम्— इत्यर्हम् इत्यर्हम्

लिखितं श्री शार्दूलशिष्य मुनि रूपेन्दुना

मुद्रकः—

राम—श्याम प्रिन्टिङ्ग प्रेस

कटला बाजार, जोधपुर.

सीताजी तथा सखियां री सलाह

गीत [३] तर्ज—बालम छोटो रे

ओ धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो रे,
कमल जिसो तन राम रो,
ओ धनुष वजर सो जाण, रघु० ॥१॥
बड़ो कठण पण पिता कियो,
कोई रंच न कियो विचार, रघु० ॥२॥
धनुष चढ़ो कै मत चढ़ो,
म्हारो राम भंवर भरतार रघु० ॥ ३ ॥
छोटो छोटो मत कहो,
ओ पूरण ब्रह्म परेस रघु० ॥४॥
सूरज छोटो सो लगे,
कोई जग में करे प्रकाश, रघु० ॥ ५ ॥
रघुवर चाप चढावसी,
कोई इणमें फेर न फार, रघु० ॥६॥

बरात चढे है

गीत [४] तर्ज—घूंसरी

रघुवर री बरात बणी भारी रे, सिंगार री ॥ टेर ॥
मुंडाला सुमेर सा सजिया अमर-विमाणसी अम्बारी रे, रघु०
चंचल हय चित चाल चुकावत नाचे मोर मनोहारी रे, रघु०
रंग रसीला बाजा बाजे, शब्द हुवे आनन्दकारी रे, रघु०
देव सकल भूपव मिल आया, छाजे छवा छत्तर धारी रे, रघु०

गीत [२] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो उदयापुर मालहे हे

कंवर दशरथ तणा, कोई जादू कीनो है।
भंवर मन भावणा, म्हारो मन हर लीनो है ॥ टेर ॥

म्हे थाने आली ! बरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय।
सुखरी सीख सुणी नहीं जद,
बैठी तन मन खोय ॥ कंवर ॥१॥

रघुवर-रुख लागो नहीं हे सखी !, तो तन मन किण काम,
वे हिज तन मन सफल हे सखी,
ज्यां रचियो रंग राम, ॥ कं० ॥२॥

जे नयणा छाकां छई, सखी राम-रूप-रस चाख,
दूजी दिस नहिं देखसी वांने,
लोभ दिखावो लाख ॥ कंवर ॥३॥

दया दीठ जिण दिस हुई, जाणूं दुनिया रा चूका दाम,
कोड़ काम करणा मदा यांरी,
एक अदा रो काम, ॥ कंवर ॥४॥

श्रवण वयण सुख ना सुणे, सखी ! नारद सारद वीण,
लज तज लारे लग रया हे,
अली वडा २ परवीण ॥ कंवर ॥५॥

सुर तरु तो सूको लगे है, अली ! अमरत फीको होय,
लूखो जग तिणने लगे अली,
जिण लीना ए जोय ॥ कंवर ॥६॥

ए सूरज सूरज तणा हे, सखी ! ए चंदारा ही चन्द,
ए मनमथ मनमथ तणा हे अली,
ए इन्दर रा ही इन्द ॥ कंवर ॥७॥

सीताजी तथा सखियां री सलाह

गीत [३] तर्ज—बालम छोटो रे

ओ धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो रे,
कमल जिसो तन राम रो,
ओ धनुष बजर सो जाण, रघु० ॥१॥
बड़ो कठण पण पिता कियो,
कोई रंच न कियो विचार, रघु० ॥२॥

धनुष चढ़ो कै मत चढ़ो,
म्हारो राम भंवर भरतार रघु० ॥ ३ ॥
छोटो छोटो मत कहो,
ओ पूरण ब्रह्म परेस रघु० ॥४॥

सूरज छोटो सो लगे,
कोई जग में करे प्रकाश, रघु० ॥ ५ ॥
रघुवर चाप चढावसी,
कोई इणमें फेर न फार, रघु० ॥६॥

बरात चढे है

गीत [४] तर्ज—हूंसाटी

रघुवर री बरात बणी भारी रे, सियावर री ॥ टेर ॥
मुंडाला सुमेर सा सजिया अमर-विमाणसी असवारी रे, रघु०
चंचल हय जिण चाल सुकावण नाचे मोर मनोहारी रे, रघु०
रंग रंगीला बाजा बाजे, शब्द हुवे आनन्दकारी रे, रघु०
देव सकल भूपत मिल आया, छाने पड़ा छतर भारी रे, रघु०

गीत [५] तर्ज—बामण का

सांवरिया ! तूं जीवन री है जड़ी, राम प्यारा रे !
तूं हिवडा रो है हार ॥ १ ॥
रघुवर प्यारा रे, हांरे राम प्यारा रे ! हांरे गोविन्द प्यारा रे,
नेह लग्यो सो निभायले रे ॥ टेर ॥
सांवरिया ! तूं सरवर में हंसला, राम प्यारा रे !
म्हे चातक तूं मेह ॥ २ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे भंवरा तूं कुंज है, राम प्यारा रे !
म्हे चकोर तूं चन्द ॥ ३ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे जलचर तूं नीर है, राम प्यारा रे !
म्हे काया तूं जीव ॥ ४ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे

श्री सीताजीरो पति-प्रेम

गीत [६] तर्ज—कांई रे जवाब करूं रसिया

कांई रे जवाब करूं हरि सूं ?
जवाब करूंगी, जवाब करूंगी,
रामैयारा चरणां में लपट रहूंगी ।
सांवरियारा चरणां रो ध्यान धरूंगी
कांई रे जवाब करूं हरिसूं ॥ टेर ॥
पलकां रे ऊपर पग धर आजो,
ो हिवड़ारे आसण आप विराजो, कांईरे० ॥१॥

कहोजी ! प्रभूजी ! थांने किण विलमाया ?
तो दासी रे महलां विलम्ब सूं आया, कांईरे० ॥२॥
आप, विना म्हारो भवन अलूनो,
तो आप विना सब ही जग सूनो, कांईरे० ॥३॥
आप मिल्यां सबही सुख मानूं,
तो आप मिल्यां धन जीवन जानूं, कांईरे० ॥४॥
ले पग धूर मधुर मन मांडूं,
तो ओ अंजन म्हारा नयणां में आंजूं, कांईरे० ॥५॥
नेहरे नीर चरण जुग धोसूं,
तो प्रेम पदारथ भोग परोसूं कांईरे० ॥६॥
चरण पियूख प्रेम सूं पीऊं,
तो इण रामैया ने जोयां ही जीऊं, कांईरे० ॥७॥
प्रेम पलंग पर प्रभु पोढाऊं,
तो पाय पलोट परम सुख पाऊं, कांईरे० ॥८॥

श्रीरामजी सीताजी ने समझावे

गीत [७] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

पिता-वचन पालण वन जावां
वचन पाल आवां प्यारी !
प्राण-प्रियाजी थे भवन बिराजो हो!
आ आज्ञा मानो म्हारी ।
सास ससुर री सेवा करीजो,
मन मांहे धीरज धारी,
दिन आवां कोई दिन जावे हो!
आय मिलां पाछा प्यारी !

ऊगे भाण हजार प्रभूजी जे ऊगे भाण०
हंजी तो ही आप बिना छे अंधार, प्रभूजी० ।।६।।
नेह निहावण हार प्रभूजी थेतो नेह निहावण हार०
हांजी म्हारा भव भवरा भरतार, प्रभूजी० ।।७।।

सीताजी श्रीरामचन्द्रजीरो हुकम पायो अब सासूजी सूं विदा मांगे

गीत [११] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

हुकम हुवो सुसराजी सा रो, बरस चतुरदस बन-चारी,
प्राण प्रियाजी म्हारा वन में पधारे हो पति-सेवा ही सुखकारी
चित्त लागो पीतमरे चरणां, भवन रहण रुचि नहीं म्हांरी,
हुकम करो तो सासू ! पिव संग जाऊंसा ! पति-सेवा ही सुखकारी
सीख सुणी म्हे मात पितारी, पति परमेसर तनुधारी,
पति विन गति पतनी ने नाहीं हो, पति-सेवा ही सुखकारी
धन धन है थांरा पिता सियाजी, धन धन है माता थांरी,
ज्यांने थांने लाड़ी ! लाड लाडाया है, पति-सेवा ही सुखकारी,

कौशल्याजीरो उपदेश

गीत [१२] तर्ज—पणिहारी

परम धरम पतिव्रत कहयो, सुण सीताजी,
ओ सारांरो सार सीताजी !
पति जग में परकाश है, सुण सीताजी,
पति बिन घोर अंधार सीताजी !

जग पूजे पति पूजतां, सुण सीताजी !
सुर सेवे पति-सेव, सीताजी !

पति परमेसर सारिखो, सुण सीताजी !
पति देवांरो देव, सीताजी !

पति भजतां जग जीतजे, सुण सीताजी !
कदे न होवे हार, सीताजी !

पति सेयां सुख संपजे, सुण सीताजी !
पति पूज्यां भवपार, सीताजी !

पति नयणांरी पूतली, सुण सीताजी !
पति हिवडारो हार, सीताजी !

पति जीवणरी है जडी, सुण सीताजी !
पति आतम आधार, सीताजी !

पतिव्रता री प्रशंसा

गीत [१३] तर्ज—हां सखीजी ने पड़ा भावे

हां पतिव्रत-पालनहारी, धन्य धन्य धरती पर नारी ॥टेर॥

धन्य वंश जिणमें वा जाई, धन सुसराल जठे परणाई।
धन्य पुरुष जिणने वा ब्याही,
धन्य धन्य धरणी जठे वा आप पधारी रे, पति० ॥ १ ॥

पति के प्रेम रहे नित राती, मात पिता मन मोद रटाती।
सास ससुर ने सुख उपजाती,
प्रम चन्द्र चन्द्रिका, शील-सूरज उजियारी रे, पति० ॥ २ ॥

स्त्रियां रो राम-विरह वर्णन

गीत [१४] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो

सनेही सांवरो बणगो बन-वासी हे !
रसीलो रामजी अब कद घर आसी हे ! ॥ टेर ॥

नयणां रो अंजन सांवरो, म्हारे हिवडा रो रंजनहार ।
गंजन दुःख परजातणो, ओतो भव-भंजन भरतार,
सनेही० ॥ १ ॥

जिण वन रघुनन्दन बसे हे सखी ! सो नन्दन वन जाण,
चरण धरण हरि जिण धरे, हूं तो पल पल वारूं प्राण,
सनेही० ॥ २ ॥

सुर नर रो तन जे हुवो हे सखी! तो आवे किण काम,
वनरा पशु पन्छी भला है, वे तो नयन निहारे राम,
सनेही० ॥ ३ ॥

राम बसे जिण जंगलां हे सखी! सो हिज सुरग निवास,
राम-विहूणो सुरग ही सखी ! तन उपजावे त्रास,
सनेही० ॥ ४ ॥

वन तो वडभागी वड़ो, सखी रमे जठे रघुराज ।
राम प्रभू त्यागी तिका, आतो अवध अभागी आज,
सनेही० ॥ ५ ॥

अवध प्रजा म्हांने करी, दिया रघुवंशी भरतार ।
राम-विछोहो क्युं कियो, ओतो कांई भूलो करतार,
सनेही० ॥ ६ ॥

गीत [१५] तर्ज—

राम बिना तो म्हांरे सुख ही सूल ।
राम बिना तो म्हांरे धान ही धूल ॥
राम बिना तो म्हांरे हार ही सांप ।
राम बिना तो म्हांरो पुन्न ही पाप ॥

राम बिना तो म्हांरे पीत ही रार ।
राम बिना तो म्हांरे जीत ही हार ॥
राम बिना तो म्हांरे हरख ही सोग ।
राम बिना तो म्हांरे भोग ही रोग ॥

गीत [१६] तर्ज—तोरण दो गिणगोर

किण विध विसर्यो जाय,
रामैयो म्हांसूं किण विध विसर्यो जाय ।
ओजी म्हांरो दशरथ राजकुंवार,
ओजी म्हांरो जनक सुता भरतार,
सांवरियो म्हासूं पलक न विसर्यो जाय ॥ टेर ॥

हरि हिवडे रो हार,
अली है ! म्हारो प्राणां रो प्राण आधार ।
हां हे म्हांरो जनम सुधारण हार,
हां हे म्हांरो मरण मिटावण हार,
सांवरियो० ॥ १ ॥

आनन्द रो आगार,
आली ह म्हांरे नुपड़ां रो सरदार,
हां हे ओ तो निराधारां आधार,

स्त्रियां रो राम-विरह वर्णन

गीत [१४] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो

सनेही सांवरो बणगो वन-वासी हे !
रसीलो रामजी अब कद घर आसी हे ! ॥ टेर ॥

नयणां रो अंजन सांवरो, म्हारे हिवडा रो रंजनहार ।
गंजन दुःख परजातणो, ओतो भव-भंजन भरतार,
सनेही० ॥ १ ॥

जिण वन रघुनन्दन बसे हे सखी ! सो नन्दन वन जाण,
चरण धरण हरि जिण धरे, हूं तो पल पल वारूं प्राण,
सनेही० ॥ २ ॥

सुर नर रो तन जे हुवो हे सखी! तो आवे किण काम,
वनरा पशु पन्छी भला है, वे तो नयन निहारे राम,
सनेही० ॥ ३ ॥

राम वसे जिण जंगलां हे सखी! सो हिज सुरग निवास,
राम-विहूणो सुरग ही सखी ! तन उपजावे त्राम,
सनेही० ॥ ४ ॥

वन तो वडभागी बड़ो, सखी रमे जठे रघुराज ।
राम प्रभू त्यागी तिका, आतो अवध अभागी आज,
सनेही० ॥ ५ ॥

अवध प्रजा म्हांने करी, दिया रघुवंशी भरतार ।
राम-विछोहो क्युं कियो, ओतो कांई भूलो करतार,
सनेही० ॥ ६ ॥

हां हे ओतो निरधन रो धन सार
सांवरियो० ॥ २ ॥
प्रेम रो पारावार,
अली हे ओतो सारां रो ततसार।
हां हे हरि नेह निभावण हार,
हां हे प्रभु पार लगावण हार,
सांवरियो० ॥ ३ ॥
जोवे न कुल आचार,
अली हे ओतो नहिं गुण रूप अपार।
हां हे हरि रीझे नेह निहार,
हां हे ओतो भगती-वस भरतार,
सांवरियो० ॥ ४ ॥
देखो भूल अपार,
अली हे वांने भूल रह्यो संसार।
हां हे तो ही वो नहिं भूलण हार,
हां हे हरि सबरी करण संभार,
सांवरियो० ॥ ५ ॥

भरतजी आदि पाछा अयोध्या जावता

श्रीरामजी ने विनती करे।

गीत [१७] तर्ज—समदण जावांला थारी बलिहारी है

रघुवर ! दरसण देवणने वेगा आइजो।
प्यारा प्रभू ! प्रेमरा प्यासां ने मत तरसाईजो॥
वचन पिता रा पालो,
सतपथ चालो, धरम संभालो स्वामी !
ज्यूं निज वचन निभाईजो ॥ रघु० ॥ १ ॥

चवदा वरस वितावो,
उणरे दूजे ही दिन आवो, स्वामी !
आगे मत विलम्ब लगाईजो ॥ रघु० ॥ २ ॥
आप दया मय नामी,
अन्तरजामी, सुख रा सागर स्वामी !
जिवड़ारी जलन मिटाइजो ॥ रघु० ॥ ३ ॥

सूर्पनखां आई

गीत [१८] तर्ज—पनजी मून्डे बोल

बोल बोल हिवडारा जिवडा !
कांइ थांरी मरजी रे ? वालम ! मून्डे बोल ॥ टेर ॥
सुन्दर रूप अनूपम जोवन, सो वन किण विध आया रे ?
भोग भोगवा जोग, जोग किम लीनो काया रे, वालम० ॥१॥
थांरे जिसो नहीं नर सुन्दर, म्हारे जिसी न नारी रे ॥
आ जोड़ी जग मांय, विधाता एक उतारी रे, वालम० ॥२॥
तीन लोक रो राजा रावण, सो है म्हारो भाई रे ।
म्हासूं नेह निभाय, पाय पूरण प्रभुताई रे, वालम० ॥ ३ ॥

प्रभुरो उत्तर

गीत [१९] तर्ज—बालम छोटो रे

बन्धव छोटो हे ! तूं भावज कर भरतार बन्धव० ॥ टेर ॥
म्हांसूं छोटो बन्धवो, कोई सुन्दर रूप अपार, बंधव० ॥१॥
श्याम वरण पण है नहीं, ओ गौर वरण दीदार, बन्धव० ॥२॥
म्हारे तो संग सुन्दरी, ईरे नहीं उणरे संग नार, बन्धव० ॥३॥

सूर्पनखां लछमणजी ने कहे है

गीत [२०] तर्ज—झरोखां झालो देजा है भांगडली

म्हारे सूं मोह करलो हो साजन जी ! थांरी मूरत मो मन मोह्यो,
हिरदा सूं मोने वरलो हो साजन जी !

श्रीराम वचन (प्रभु विरहलीला करे)

गीत [२१] तर्ज—रुण झुणियो ले

हे सरिता रा हंसलां ! थे महर करो ।
सीता ने वेग बताय, ओ उपकार करो ॥
ऊजल थांरी जात है, थे महर करो ।
कोई ऊजल खान र पान, ओ उपकार करो ॥
हे सूवा ! हे सारिका ! थे महर करो ।
सीता रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
हे आरणरा हेरणां ! थे महर करो ।
सीतारी बात सुणाय, ओ उपकार करो ॥
बनवासी पशु पंछियां, थे महर करो ।
म्हांरी सारा ही करो सहाय, ओ उपकार करो ॥
हे तरुवर ! हे वेलड़ी ! थे महर करो ।
प्यारी रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
पर-हित कारण प्रगटिया, थे महर करो ।
म्हांरा जीवरी जलन मिटाय, ओ उपकार करो ॥
हे सूरज ! हे चन्द्रमा ! थे महर करो ।
म्हांने बिछड़ी प्रिया मिलाय, ओ उपकार करो ॥
जीवजड़ी म्हांसूं बीछड़ी, थे कृपा करो ।
म्हांसू उण बिन जियो न जाय, ओ उपकार करो ॥

परिशिष्ट (२)

भामंडल और सीता का पूर्वभव का सम्बन्ध और उनका जन्म

भरतक्षेत्र में दारुग्राम था। उसमें वसुभूति नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम अनुकोशा था। इनके पुत्र का नाम अतिभूति था। अतिभूति की स्त्री सरसा एक कयान नामक ब्राह्मण पर आसक्त होगई और वह ब्राह्मण उसे साथ लेकर भाग गया। कहा है "जो काम से आतुर होते हैं उन्हें न भय होता है, न लज्जा होती है"।

अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करने के लिए भूत की भांति भूतल पर भटकने लगा। जब यह बात उसके मात पिता को मालूम हुई तो वे भी अपने पुत्र और पुत्रवधू को ढूंढने के लिए परदेश को चल पड़े। घूमते घूमते, किसी समय उन्हें एक साधु मिले। साधु को भक्ति भाव से नमस्कार करके वे उनका धर्मोपदेश सुनने के लिए बैठ गये। धर्मोपदेश सुनने से उन्हें संसार से वैराग्य होगया और वसुभूति तथा अनुकोशा दोनों पति-पत्नी ने साधु के समीप दीक्षा लेली। इसके बाद गुरु की आज्ञा लेकर अनुकोशा, कमलश्री नामक आर्या के पास जाकर रहने लगी। चारित्र का पालन करते करते कुछ समय के पश्चात् दोनों ने शरीर का त्याग किया और दोनों सौधर्म स्वर्ग में जन्मे। वहां से चव कर वसुभूति का जीव वैताढ्य पर्वत पर रथनुपुर नगर का चन्द्रगति नामक राजा हुआ और अनुकोशा भी देवलोक से चवकर इसी राजा की पुष्पवती नाम की रानी हुई।

अतिभूति की स्त्री सरसा ने भी जिसे कयान लेकर चला गया था, संसार को असार समझकर एक साध्वी के पास

दीक्षा लेली और वह काल करके ईशान देवलोक में देवी रूप से उत्पन्न हुई। अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करता करता कुछ समय के अनन्तर मर गया और चिरकाल तक संसार में भटक कर एक वार हंस का वालक हुआ। उसे सेन नामक पक्षी लेकर खाने लगा, पर दैवयोग से वह किसी प्रकार उससे छूट गया और जैसे तैसे उड़ता उड़ता एक साधु के पास आकर गिर पड़ा। उस समय उसके प्राण सिर्फ कण्ठ में शेष रह गये थे। इस प्रसंग पर महा करुणासागर उन मुनि ने उसे नवकार मन्त्र सुनाया। मन्त्र के प्रभाव से वह हंस वालक आयु समाप्त होने पर किन्नर लोक में दस हजार वर्ष की आयु वाला देव हुआ। वहां से चल कर वह विदग्ध नामक नगर के राजा प्रकाशसिंह की प्रवरा रानी के उदर से कुण्डलमण्डित नामक पुत्र हुआ।

भोगोपभोग में आसक्त कयान, मृत्यु का ग्रास बन कर भवाटवी में भटकता भटकता चक्रपुर नगर के राजा चक्रध्वज के उपाध्याय धूम्रकेतु की स्वाहा नामक स्त्री के उदर से पुत्र हुआ। उसका नाम पिंग रक्खा गया। राजा चक्रध्वज की कन्या अति-सुन्दरी तथा पिंग एक ही गुरु के पास विद्याभ्यास करते थे। वहां दोनों का आपस में प्रेम होगया। मौका पाकर पिंग ने अति सुन्दरी का हरण किया और वहां से भाग कर विदग्ध नामक नगर में जाकर रहने लगा। वहां वह घास तथा लकड़ियां बेच कर किसी प्रकार अपना निर्वाह करने लगा, क्योंकि गुणहीन पुरुषों का पेट ऐसे कार्य किये विना भरता ही नहीं है।

एक वार उस नगर के राजकुमार कुण्डलमण्डित की [illegible] अतिसुन्दरी पर पड़ गई। चार आंखें होते ही दोनों की [illegible]पर में प्रीति बँध गई। इसके बाद अपने पिता के डर से कुन्डलमंडित गुप्त रूप से अतिसुन्दरी को साथ लेकर वहां से निकल भागा और किसी पर्वत पर जाकर वहां मकान बना कर रहने लगा। अतिसुन्दरी के वियोग से व्याकुल होकर पिंग पागल की तरह इधर उधर फिरने लगा। उसे किसी समय गुप्ताचार्य नामके आचार्य के दर्शन होगये। उनसे धर्मोपदेश सुन कर उसने दीक्षा धारण करली पर अतिसुन्दरी का अनुराग उसके अन्तःकरण

नामक नगर में धन्य नामक व्यापारी की स्त्री सुन्दरी के उदर से तुम्हारा जीव वरुण नाम से पुत्र रूप में जन्मा। वह अत्यन्त उदार था। उस भव में अपने उदार स्वभाव के कारण वह साधुओं को इच्छा से भी अधिक दान देता था। वहां से काल करके तुम देवलोक में देव हुए। फिर वहां से भी चल कर तुम पुष्कला नामक नगरी में नन्दिघोस राजा की रानी पृथ्वी देवी की कूंख से नन्दिवर्धन नामक पुत्र हुए। राजा नन्दिघोस तुम्हें राज सिंहासन पर बिठा कर यशोधर नामक मुनि के समीप दीक्षित होगये। वे आयु पूर्ण करके ग्रैवेयक देवलोक में देव हुए, और तुम श्रावक-धर्म का पालन करके आयु समाप्त होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर तुम्हारा जीव पूर्व महाविदेह क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत की उत्तर दिशा की तरफ शशिपुर नामक नगर में विद्याधरो के स्वामी रत्नमाली की स्त्री विद्युल्लता के उदर से महापराक्रमी सूर्यजय नामक पुत्र हुआ। एक बार रत्नमाली राजा ने विद्याधरों के अत्यन्त अभिमानी राजा वज्रनयन को जीतने के लिए सिंहपुर नगर में आकर, बाल, वृद्ध, स्त्री, पशु तथा उपवन सहित नगर को जलाना आरंभ किया। उस समय एक पूर्वजन्म में उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उसका जीव सहस्त्रार स्वर्ग में देव हुआ था। वह वहां से आकर रत्नमाली से कहने लगा—'हे रत्नमाली! यह घोर पातक मत कर। पूर्वजन्म में तूँ भूरिनन्दन नामक राजा था। उस समय तूंने मांस-भक्षण न करने की प्रतिज्ञा की थी। पर तूंने उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया। इस कारण कितनेक भवों में भटक कर किसी पुण्य के प्रताप से तूं रत्नमाली राजा हुआ है। अतएव अनेक भवों में भ्रमण कराने वाला ऐसा घोर कृत्य मत कर। देव के इस प्रकार के वचन सुन कर रत्नमाली चुपचाप बैठा रहा। देव इसके बाद पूर्वभव का वृत्तान्त कहने लगा—"हे राजन्! पहले मैं उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उस समय स्कन्द नामक पुरुष ने मुझे मार डाला था। मर कर मै हाथी हुआ। हाथी को पकड़ कर भूरिनन्दन राजा अपने घर ले आया। कुछ समय वहां रहने के बाद एक बार संग्राम में जाने से मेरी मृत्यु होगई। मृत्यु के पश्चात् उसी भूरिनन्दन राजा की रानी गधारा के उदर से मेरा जीव अरिसूदन नामक पुत्र हुआ। उस भव में मुझे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न

करता था। उसके एक दूत का नाम अमृतस्वर था। अमृतस्वर की स्त्री उपयोगा के उदर से उदित तथा मुदित नाम के दो पुत्र थे। अमृतस्वर का वसुभूति नामक एक ब्राह्मण मित्र था। उसके साथ उपयोगा का प्रेम-सम्बन्ध होगया। वह अपने प्रेमी से कहने लगी—"अगर तुम मेरे पति (अमृतस्वर) को मार डालो तो हम लोग निर्भय होजायेंगे।" वसुभूति ने उपयोगा की बात स्वीकार करली और वह अमृतस्वर को मार डालने का अवसर खोजने लगा। कहा भी है—'कामी पुरुष कौन-सा कुकृत्य नहीं कर डालता है?' कुछ दिनो बाद अमृतस्वर और वसुभूति, राजा के काम से विदेश जाने के लिए निकले। मौका पाकर वसुभूति ने राह में ही अमृतस्वर का काम तमाम कर दिया और स्वयं नगर में आकर लोगों से कहने लगा-'अमृतस्वर स्वयं परदेश चला गया है और एक विशेष प्रयोजन से मुझे पीछे लौटा दिया है।' उसने उपयोगा से कहा—'लो, हमारे तुम्हारे सम्भोग में विघ्न डालने वाले अमृतस्वर को, तुम्हारे कथनानुसार मैंने यमलोक भेज दिया है।' उपयोगा ने कहा—'बहुत अच्छा किया' पर जब तक मेरे ये दोनों पुत्र जीवित हैं तब तक हम लोग मनचाही मौज नहीं लूट सकते। अगर ये दोनों मर जायँ तो बस, फिर कोई अड़चन नहीं रह जायगी। वसुभूति बोला 'तुम चिंता न करो। मैं इन्हें भी मार डालूंगा।' दैवयोग से इनकी इस गुप्त मन्त्रणा का हाल वसुभूति की स्त्री को मालूम होगया। उसके हृदय में ईर्षा की आग भड़क उठी और उसने उपयोगा के पुत्र उदित और मुदित को यह सारी घटना कह सुनाई। यह सुनते ही उदित के क्रोध का पार न रहा। उसने अवसर पाकर वसुभूति की जीवन-लीला समाप्त करदी। वसुभूति मर कर नलपल्ली में म्लेच्छ हुआ। तदन्तर किसी समय विजयपर्वत राजा ने मतिवर्धन नामक मुनि से धर्मदेशना सुन कर दीक्षा धारण की। और उदित तथा मुदित दोनो भाईयो ने भी दीक्षा ग्रहण की। ये दोनो साधु साथ साथ विहार करते हुए कर्मयोग से वे रास्ता भूल जाने के कारण नलपल्ली नामक उसी म्लेच्छ वस्ती में पहुँच गये। वही वसुभूति का जीव म्लेच्छ हुआ था। इन दोनों साधुओ को देखते ही उसे जाति स्मरण ज्ञान होगया। पूर्वभव की घटना स्मरण हो आने से पूर्व वैर का स्मरण करके वह मुनियों को मारने दौड़ा पर म्लेच्छों के राजा ने उनकी रक्षा की।

म्लेच्छ राजा और इन मुनियों का पूर्वभव का सम्बन्ध यह था— म्लेच्छ राजा पूर्वजन्म में एक मृग था। उसे एक शिकारी ने मारा था उदित और मुदित मुनियों के जीव वहां किसान रूप में थे, उस समय मृग को शिकारी से बचाया था। इसी कारण म्लेच्छ राजा ने इनकी रक्षा की। आखिर वहां से विहार करके दोनों मुनि धर्म-कृत्य करके अन्त में अनशन धारण कर काल करके महाशुक्र नामक स्वर्ग में सुन्दर और सुकेश नामक दो देव हुए। वसुभूति का जीव म्लेच्छ योनि भोग कर मरने के बाद चिरकाल तक अनेकानेक योनियों में घोर वेदनाएं सहन करता हुआ, एक बार किसी शुभ कर्म के योग से, अत्यन्त कठिनाई से मनुष्य रूप में उत्पन्न हुआ। उस जन्म में तापस होकर मरने के पश्चात् ज्योतिष्क देवलोक में यह धूमकेतु नामक देव हुआ। तदनन्तर उदित तथा मुदित के जीव महाशुक्र स्वर्ग से च्यवकर भरत-क्षेत्र में अरिष्ट नगर के राजा प्रियवद की रानी पद्मावती के उदर से रत्नरथ और चित्ररथ नाम के दो पुत्र हुए। ज्योतिष्क देवलोक से च्युत होकर धूमकेतु भी उसी राजा की कनका नामक दूसरी रानी के उदर से अनुद्धर नामक पुत्र हुआ। वह रत्नरथ और चित्ररथ के साथ वैर करने लगा, पर इन दोनों ने उसके प्रति कभी भी द्वेष नहीं किया। कुछ समय के बाद राजा प्रियंवद ने रत्नरथ को राज सिंहासन पर बिठा कर, शेष दो पुत्रों को युवराज-पद दिया और आप छह दिन का अनशन करके, काल कर देवलोक में देव होगया। राजा रत्नरथ राज्य का संचालन करने लगा।

एक समय की बात है। युवराज अनुद्धर ने किसी राजा की कन्या की मँगनी की। राजा ने वह कन्या अनुद्धर को न ब्याह कर राजा रत्नरथ को ब्याह दी। इससे अनुद्धर आग बबूला होगया और राज्य में लूटमार मचाने लगा। शत्रु ने पकड़ कर उसको नृप मरुस्थल की ओर उसे छोड़ दिया। तब वह तापस होगया। वहां किसी स्त्री के साथ समागम होगया और उसकी तपस्या निष्फल होगई। इस कारण मृत्यु के बाद चिरकाल तक भव-भ्रमण करते करते किसी कर्म के उदय से फिर मनुष्य भव की प्राप्ति होगई। इस भव में भी उसने तापस दीक्षा अंगीकार करके अज्ञान-तप किया। इससे मरने के बाद वह ज्योतिष्क नामक देवलोक में अनलप्रभ

नामक देव हुआ। रत्नरथ और चित्ररथ नामक दोनों भाई धर्म लाभ करके, जिन-दीक्षा अंगीकार करके, अन्त में अच्युत कल्प नामक स्वर्ग में अतिबल और महाबल नामक महर्द्धिक देव हुए। वहां से चल कर सिद्धार्थ नगर में क्षेमंकर राजा की रानी विमला देवी की कूंख से कुलभूषण और देवभूषण नाम से हम दोनों भाई पुत्र रूप में जन्मे। हम क्रमशः बडे हुए तो हमारे पिताजी ने घोष नामक उपाध्याय के पास अध्ययन करने के लिए हमें भेज दिया। बारह वर्ष तक उपाध्याय के घर रह कर हम दोनो ने विद्याभ्यास किया। तेहरवां वर्ष लगने पर हम समस्त कलाओ में कुशल होगये। तब घोष उपाध्याय हमें राजमन्दिर में ले आये। वहां राजमहल की खिड़की में बैठी हुई एक राजकन्या को देख कर, उसके लावण्य के कारण हमारे अन्तःकरण में काम विकार जागृत होगया। अज्ञानवश हमारी दृष्टि उसके सम्बन्ध में विकृत होगई।

हम राजा के पास आये। हमने सीखी हुई सब कलाएँ उन्हें बताईं। महाराज ने प्रसन्न होकर उपाध्याय को अच्छी सीख (विदाई) देकर विदा किया। हम पिताजी की आज्ञा लेकर अपनी माता को नमस्कार करने के लिए अन्त पुर में गये। वहां वह कुमारी माता के पास बैठी दिखलाई दी। उस समय हमारी माता ने हमसे कहा—'यह कनकप्रभा तुम्हारी बहिन है। जब तुम दोनों भाई उपाध्याय के यहां पढने चले गये तब इसका जन्म हुआ था। यह बात तुम्हें अब तक मालूम नहीं है।' माता के मुख से यह वृत्तान्त सुन कर हम लज्जित हुए। अज्ञानवश अपनी बहिन के साथ काम-भोग भोगने की इच्छा होने के लिए हमें धिक्कार है। ऐसा समझ कर वैराग्य होआने से हम तत्काल वहां से निकल पडे और गुरु के पास पहुँच कर दीक्षित होगये।

कुछ दिनो बाद हम शरीर से निरपेक्ष होकर और अहंकार का परिहार कर इस पर्वत पर आकरके कायोत्सर्ग ध्यान में रहे। हमारे पिता क्षेमंकर राजा हमारे वियोग से अनशन व्रत लेकर काल करने के बाद गरुड़ देवलोक में महालोचन देव हुए। एक बार अपने अंग के कम्पन से उन्होंने समझा कि हमारे ऊपर कोई उपसर्ग

उदर से पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ। उसका नाम रतिवर्द्धन रक्खा गया, क्रमशः वह यौवन अवस्था में आया और राजगद्दी पर आरूढ हुआ। इसके बाद वह अपने पिता की तरह अपनी पत्नी के साथ क्रीडा करने लगा, प्रथम नामक दूसरे मुनि कालधर्म पाकर तपस्या के योग से पंचम कल्प देवलोक में एक महान् ऋद्धि-धारी देव हुए। देव ने अवधिज्ञान द्वारा अपने पूर्वजन्म के भाई की उत्पत्ति जानी और उसे बोध देने के उद्देश्य से वह मुनि का वेष धारण कर उसके पास आया। राजा रतिवर्द्धन ने विनयपूर्वक वन्दना करके उसे आसन पर बिठलाया। इसके बाद मुनि-वेषधारी देव ने बन्धु-प्रेम से प्रेरित होकर अपना और उसका पूर्वभव कह सुनाया। पूर्वभव सुनने से रतिवर्द्धन राजा को जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन्न होगया और उसने विरक्त होकर दीक्षा अंगीकार करली। वहां से काल करके तुम दोनों भाई विदेह क्षेत्र में विबुद्ध नगर के राजा हुए। वहां तुम दोनों ने धर्म-देशना सुन कर दीक्षा धारण की और अन्त में देह त्याग कर अच्युत देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर इन्द्रजीत तथा मेघवाहन नाम से तुम दोनो भाई प्रतिवासुदेव रावण के पुत्र हुए हो रतिवर्द्धन की माता इन्दुमुखी वहां से काल करके अनेक भव करने के बाद तुम्हारी माता मन्दोदरी हुई है।

राजा भरत और भुवनालंकार हाथी का पूर्वभव-संबंध

श्री ऋषभदेव स्वामी के साथ चार हजार राजाओं ने दीक्षा ग्रहण की थी। उनमें से श्रीऋषभदेव भगवान आहार का त्याग करके और मौन धारण करके विचरने लगे। अतएव उनके साथ दीक्षा लेने वाले सब तापस आहार के बिना दुःखी होने लगे। इन तापसो में चन्द्रोदय तथा सूर्योदय नामक दो तापस प्रह्लादन सुप्रभ राजा के पुत्र थे। काल करके अनेक भवों में चिरकाल तक भटकने के बाद, उनमें से चन्द्रोदय गजपुर के राजा हरमति की रानी चन्द्र-लेखा की कुक्ष से कुलंकर नामक पुत्र हुआ। सूरोदय भी उसी नगर में विश्वभूति ब्राह्मण की अग्निकुण्डा पत्नी के उदर से श्रुतिरति नामक पुत्र हुआ। राजकुमार कुलंकर यौवन अवस्था प्राप्त होने पर सिंहासन पर आसीन हुआ। एक बार वह तापसो के आश्रम में गया

था। यहां अभिनन्दन नामक अवधिज्ञानी साधु ने उससे कहा-इस आश्रम में पञ्चाग्नि साधन करने वाला एक तपस्वी जलाने के लिए लक्कड़ लाया है। उसमें एक सांप है। वह तुम्हारे पूर्वजन्मों में से एक जन्म का क्षेमकर नामक पितामह है। अतएव उस लक्कड़ को चीर कर उसकी रक्षा करो। मुनि का कथन सुन कर राजा कुलकर दुःखी हुए और तत्काल ही उन्होंने लक्कड़ चिरवाया। उसमें से एक सांप निकला। यह देख कर राजा कुलकर को वैराग्य हो आया और उन्होंने दीक्षा लेने का विचार किया। इतने श्रुतिरति ब्राह्मण राजा से कहने लगा—हे राजन्! इस धर्म का नाम क्या है? अगर आपकी इच्छा हो ही तो वृद्धावस्था में उसे अंगीकार करना। इस समय क्यों दुःख भोगना चाहिये? ब्राह्मण का यह कथन सुन कर कुलकर ने दीक्षा लेने का आग्रह त्याग दिया। राजा की पत्नी श्रीदामा का इस उपाध्याय (श्रुतिरति) का अनुचित सम्बन्ध था। एक बार उसने सोचा अगर हमारे कार्य की खबर राजा को लग गई तो वह हमें मार डालेगा। अतएव मैं ही राजा को मार डालूं तो झंझट मिटेगी। ऐसा विचार करके श्रीदामा ने उपाध्याय की सलाह से अपने पति कुलकर राजा को विष देकर मार डाला। इसके बाद कुछ दिनों में श्रुतिरति ब्राह्मण भी मर गया। ये दोनों दीर्घ काल तक नाना प्रकार की योनियों में भटकते फिरे। उसके बाद किसी समय राजगृह नगर में कपिल ब्राह्मण की स्त्री सावित्री के उदर से विनोद और रमण नामक दो युगल पुत्र जन्मे। उनमें से रमण वेदाध्ययन करने के लिए परदेश गया था। कुछ समय बाद वेद का अध्ययन करके वह अपने घर लौट रहा था। जब वह राजगृह नगर के नजदीक आ पहुंचा तब रात्रि हो जाने के कारण वहीं एक यक्ष के मन्दिर में सो गया। उसी समय उसके भाई विनोद की स्त्री शाखा, दत्त नामक एक ब्राह्मण के साथ संकेत करके रात्रि के समय वहीं आई। उसके पीछे पीछे विनोद भी आया। शाखा रमण को ही दत्त समझ कर उसके साथ बातें करने के लिए उतावली हो गई। इधर विनोद ने अपने भाई को पहचान न सकने के कारण तलवार के घाट उतार दिया। तब रमण की इच्छा रखने वाली शाखा ने विनोद को भी मार डाला। विनोद दीर्घ काल तक भव भ्रमण करके किसी दिन धन नाम से पुत्र हुआ। रमण भी अनादि भवों में भटकता

भटकता उसकी स्त्री लक्ष्मी के पेट से भूषण नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर पिता की आज्ञा से बत्तीस कन्याओ के साथ उसका विवाह हुआ। एक बार रात के समय स्त्रियो के साथ क्रीडा करता हुआ वह बैठा था। उसी पिछली रात्रि में श्रीधर नामक एक मुनि को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ। देवताओ ने केवलज्ञान का महोत्सव किया। यह देख कर धर्म के प्रति उसकी रुचि जागृत हुई। अतएव वह उसी समय उठ कर उन साधुओ को वन्दना करने के लिए चल पड़ा। रास्ते में जाते समय उसे एक सांप ने काट खाया। उस समय उसके परिणाम शुभ थे, अतएव काल करके उसने शुभ गति पाई। तदनन्तर जम्बू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र में, हनुपुर नगर में, अचल चक्रवर्ती राजा की महारानी हरिणी की कुक्षी से वह प्रियदर्शन नामक धर्मतत्पर पुत्र हुआ। वहां उसने दीक्षा लेने की इच्छा की, पर अपने पिता की आज्ञा से तीन हजार कन्याओ के साथ उसने विवाह किया, फिर भी उसका अन्तःकरण वैराग्यमय ही बना रहा। गृहवास में रहते हुए भी चौसठ हजार वर्ष उत्तम तप करके वह ब्रह्मलोक स्वर्ग में देव हुआ।

धन सेठ मर कर लम्बे समय तक संसार में परिभ्रमण करता हुआ पोतनपुर नगर में शकुनाग्निमुख ब्राह्मण की पत्नी ब्रह्म-पत्नी के उदर से मृदुमति नामक पुत्र हुआ। वह पुत्र अविनयी था। अतएव उसके पिता ने उसे बाहर निकाल दिया। परन्तु कुछ समय बाद समस्त कलाएँ सीख कर वह घर लौट आया। घर आकर वह रात दिन जुआ खेलने लगा। उसे जीतने में कोई भी समर्थ न हो सका, अतएव उसने बहुत सा धन कमा लिया। फिर उसी नगर में रहने वाली वसन्तसेना नामक वैश्या के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध होगया और उसने खूब भोग भोगे। अन्त में वैराग्य होने से उस[illegible] दीक्षा धारण करली। शक्ति के अनुसार चारित्र का पालन कर व[illegible] भी ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुआ। वहां से चल कर पूर्वजन्म [illegible] माया दोष के कारण वह वैताढ्य पर्वत पर भुवनालंकार नामक हाथ[illegible] हुआ है। प्रियदर्शन का जीव भी ब्रह्म देवलोक से चलकर तुम्हा[illegible] यह महाभुज भाई भरत हुआ है। इनका दर्शन होते ही हाथी [illegible] जाति-स्मरण ज्ञान हुआ है और वह मद-रहित होगया है। क[illegible] है—'विचार करने से रौद्र भय नहीं रहता।'

शत्रुघ्न के पूर्वभव का वृत्तान्त

शत्रुघ्न का जीव एक बार मथुरा नगरी में उत्पन्न हुआ। वह किसी समय साधुओं की सेवा करने वाला श्रीधर नामक ब्राह्मण हुआ, वह बहुत रूपवान था। एक बार वह रास्ते में जा रहा था तब वहां के राजा की रानी ललिता की नजर उस पर पड़ गई। रानी उस पर मोहित होगई। कामभोग भोगने की इच्छा से रानी ने उसे अपने पास बुलाया। श्रीधर के आने पर राजा भी अचानक वहां आ पहुँचा। इससे ललिता बहुत घबराई। श्रीधर को देखकर राजा चिल्लाया—'चोर है चोर इसे पकड़ लो।' राजा के कर्मचारी तत्काल दौड़े और श्रीधर को पकड़ कर बांध लिया। राजा की आज्ञा पाकर कर्मचारी उसे सूली पर चढ़ाने के लिए ले गये। उस समय कल्याण नामक एक साधु ने श्रीधर को देखा। उसे देखकर मुनि ने जान लिया कि यह ब्राह्मण साधु सेवक है। अतएव मुनि ने उसे छोड़ देने के लिए राजा को समझाया। राजा ने उसे छोड़ दिया और तत्काल ही दीक्षा लेली। दीक्षा पालन कर शरीर का अन्त होने पर वह स्वर्ग चला गया।

स्वर्ग से चल कर वह मथुरा के राजा चन्द्रप्रभ की स्त्री कांचनप्रभा के उदर से अचल नामक पुत्र हुआ। अचल, राजा चन्द्रप्रभ को बहुत प्यारा था, अतएव उसी को राज्य मिलेगा, यह सोच कर उसके भानुप्रभ आदि आठ सौतेले भाइयों को बड़ी डाह हुई और वे उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगे। प्रधानमन्त्री को यह रहस्य मालूम होगया और उसने अचल को सावधान कर दिया। अचल वहां से भाग गया। रास्ते में एक जंगल आया और जंगल में कांटा चुभने के कारण वह रोने लगा। वहां होकर कौशाम्बी नगरी का निवासी, अपने पिता द्वारा बाहर निकाला हुआ, अंक नामक एक पुरुष लकड़ियों का भारा लिये आ रहा था। उसने अचल को रोते देख भारा नीचे उतारा और अचल के पैर में से कांटा निकाल दिया। कांटा निकल जाने पर वेदना कम होजाने से अचल ने कहा—'तुमने बहुत अच्छा किया है। जब तुम सुनो कि मथुरा में अचल राजा हुआ है, तब यहां आना। तुम मेरे महान् उपकारक हो।'

अचल वहां से रवाना होकर कौशाम्बी नगरी पहुँचा। वहां उसने सिंहगुरु नामक आचार्य के समीप अनुर्विद्या का अभ्यास करने वाले राजा इन्द्रदत्त को देखा। अचल ने भी उसे अपना धनुष चलाना बताया। इससे प्रसन्न होकर राजा इन्द्रदत्त ने पृथ्वी अपनी कन्या उसे प्रदान करदी। अचल ने बलवान होकर अंग आदि देश जीत लिये। इसके बाद उसने मथुरा नगरी पर चढाई करदी और भानुप्रभ आदि आठो सौतेले भाईयो को कैद कर लिया। तब उसके पिता चन्द्रप्रभ ने, अपने पुत्रों को छुड़ाने के लिए अपने प्रधान मन्त्री को उसके पास भेजा। अचल के पास आकर प्रधानमन्त्री ने भानुप्रभ आदि को छोड़ने की प्रार्थना की। उस समय अचल ने अपना संपूर्ण पूर्व वृत्तान्त कह कर उसे विदा किया। प्रधानमन्त्री ने सारा वृत्तान्त राजा चन्द्रप्रभ से निवेदन किया। राजा चन्द्रप्रभ अचल के ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और यद्यपि अचल सबसे छोटा था फिर भी मथुरा में लाकर उसका राज्यभिषेक कर दिया। अचल पर ईर्षा रखने वाले भानुप्रभ आदि आठो पुत्रों को देश-निकाला देदिया। पर अचल ने उन्हें वापिस बुलाकर अदृष्ट सेवक बना लिया। इसके बाद एक बार अचल राजा ने नाट्यगृह में, अपने पेर का कांटा निकालने वाले अंक को देखा। उसने उसी समय सेवको को भेज कर अंक को अपने पास बुला लिया और उसकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरी का राज्य उसे दे दिया। दोनो एकता पूर्वक राज्य करने लगे। कुछ समय बीत जाने के बाद अचल और अंक ने विरक्त होकर समुद्रगुप्ताचार्य के समीप दीक्षा धारण करली। दोनो दीक्षा पालन करक अन्त में ब्रह्म देवलोक में जन्म ग्रहण किया। अचल का जीव वहां से चल कर यह तुम्हारा छोटा शत्रुघ्न हुआ है। पूर्वजन्म के मोह के कारण उसे मथुरा नगरी का राज्य लेने की इच्छा हुई। अंक का जीव ब्रह्म देवलोक से आकर तुम्हारा यह कृतान्तवदन नामक सेनापति हुआ है।

राम, लक्ष्मण, सीता विभीषण, रावण, सुग्रीव लवणांकुश आदि का पूर्वभव वृत्तान्त

प्राचीन काल में दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में क्षेमपुर नामक

एक नगर था। वहां नयदत्त नामक एक वाणिक् निवास करता था। उसकी सुनन्दा नामक स्त्री के उदर से धनदत्त और वसुदत्त नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। याज्ञवल्क्य नामक एक ब्राह्मण के साथ उसकी मित्रता थी। उसी नगर में एक सागरदत्त नामक दूसरा वाणिक भी रहता था। उसकी पत्नी रत्नप्रभा के पेट से उत्पन्न गुणधर नामक पुत्र और गुणवती कन्या थी। सागरदत्त ने अपनी कन्या गुणवती नयदत्त के पुत्र धनदत्त को देदी और उसकी पत्नी ने द्रव्य के लोभ से उसी नगर में रहने वाले श्रीकान्त नामक सेठ को देदी। याज्ञवल्क्य को यह समाचार मालूम हुआ तो उसने धनदत्त तथा वसुदत्त से कह दिया। क्रोध से आग बबूला होकर वसुदत्त श्रीकान्त को मार डालने के लिए रात में रवाना हुआ। वहां उसने श्रीकान्त को मारा और श्रीकान्त ने तलवार से वसुदत्त को मार डाला। मरने के बाद दोनो विन्ध्याटवी में मृग हुए। गुणवती भी अविवाहित अवस्था में ही मर कर उसी अटवी में मृग के रूप में जन्मी। उसके लिए फिर दोनों मृग आपस में लडे और दोनो की मृत्यु होगई। पारस्परिक वैर के कारण वे दोनो अनेक भवो मे भटकते फिरे।

इधर धनदत्त अपने भाई वसुदत्त की मृत्यु से दुःखी हुआ रात में भटक रहा था, तब उसे भूख लगी। उसी समय उसकी दृष्टि कुछ साधुओ पर जा पड़ी। उसने उनसे खाना मांगा। मुनियों में से एक ने कहा—'साधु तो दिन में भी अन्नपानी नहीं रखते, ऐसा होते हुए भी तुम्हें रात में भोजन मांग कर खाने की इच्छा क्यों हुई? ऐसे अंधकार में अन्न को कौन देख सकता है?' इस प्रकार बोध देकर उसके कानो में बोध रूपी अमृत डालकर मुनि वहां से चले गये। तत्पश्चात् काल करके धनदत्त सौधर्म देवलोक में देव हुआ। देवभव की आयु पूर्ण करके वह महापुर नगर में मेरु नामक श्रेष्ठी की धारिणी स्त्री की कुक्ष से पद्मरुचि नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर किसी समय वह अपनी इच्छा से घोड़े पर सवार होकर गोकुल की ओर गया। रास्ते में उसने मरणासन्न पड़े हुए बैल देखे। उसके दिल में दया उमड़ पड़ी अतएव वह घोड़े से नीचे उतरा, बैलों के पास गया और उनके कान में पंचपरमेष्ठी (नवकार) मन्त्र सुनाया। उनमें का एक बूढ़ा बैल देह त्यागने के बाद नवकार-

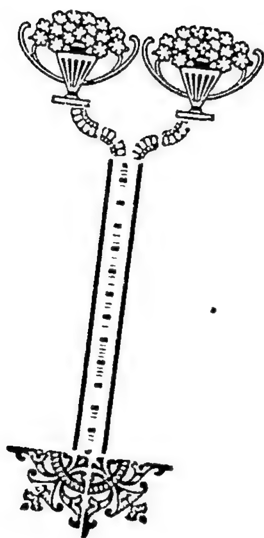
मन्त्र के प्रताप से, उसी नगर में, छत्रछाय राजा की रानी श्रीदत्ता के उदर से वृषभध्वज नामक पुत्र हुआ। वह बड़ा होकर इच्छानुसार इधर उधर डोलता फिरता था। एक बार वह बैलो के पहले वाले स्थान पर आया। पूर्वजन्म के दर्शन से उसे वहां जातिस्मरण ज्ञान होगया। उसने उस स्थान पर एक मकान बनवाया और उसकी दीवाल पर मरणासन्न बैलो के चित्र बनवाये। साथ ही बैलों के कान में नवकारमन्त्र सुनाने वाले पुरुष को चित्रित किया। इसके बाद उसने वहां पहरेदार नियत कर दिये और उन्हें हिदायत करदी कि इन चित्रो को जो मनुष्य यथार्थ-साक्षात् की तरह देखे, उसकी खातरी करके उसी समय मेरे पास आकर निवेदन करना। इस प्रकार व्यवस्था करके वृषभध्वज कुमार अपने महल को चला गया।

इसके बाद कुछ दिन व्यतीत होजाने पर वह पद्मरुचि सेठ वहां आया और उसने दीवाल पर चित्र देखे। चित्र देख कर वह चकित सा रह गया और कहने लगा—यह सब मुझे लक्ष्य करके चित्रित किया गया है। यह बात पहरेदारो ने वृषभध्वज के पास जाकर निवेदन की। वृषभध्वज वहां आया और पद्मरुचि से पूछने लगा—इन चित्रो का आप क्या वृत्तान्त जानते हैं? तब पद्मरुचि ने कहा—पहले मरते हुए इन बैलों को मैंने नवकारमन्त्र सुनाया था। इस बात को जानने वाले किसी पुरुष ने यहां मेरा चित्र अंकित किया है। इतना सुनते ही वृषभध्वज ने उसे नमस्कार किया और कहा-यह जो वृद्ध बैल अंकित है, वह मैं हूं। आपके द्वारा सुनाये गये नवकारमन्त्र के प्रभाव से मैं राजपुत्र हुआ हूं। इस तिर्यञ्च योनि में कृपा करके आपने मुझे नवकारमन्त्र न सुनाया होता तो फिर मुझे वैसी ही योनि मिलती। यह आपका ही प्रताप है। अतएव आप मेरे स्वामी, गुरु तथा देव हैं। यह राज्य भी मुझे आपके ही प्रताप से मिला है अतएव उसे आप ही स्वीकार कीजीये और उसका उपभोग कीजिये।

इसके बाद पद्मरुचि तथा वृषभध्वज श्रावक के व्रतों का पालन करते हुए दिन बिताने लगे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत होजाने पर दोनों आयु का अन्त होने के बाद ईशान देवलोक में महान् ऋद्धिधारी देव हुए। उनमें से पद्मरुचि का जीव स्वर्ग से चल

कर मेरु की पश्चिम दिशा में, वैताढ्य पर्वत पर नन्दावर्त नगर में राजा नन्दीश्वर की स्त्री कनकमाली की कुंख से नयनानन्द नामक पुत्र हुआ। बहुत समय राज्य का सुख भोग कर, अन्त में दीक्षा ग्रहण करके, काल करके माहेन्द्र देवलोक में देव हुआ। वहां से चल कर पूर्व महाविदेह क्षेत्र में क्षेमा नगरी के नरपाल विपुलवाहन की रानी पद्मावती के उदर से श्रीचन्द्र नामक पुत्र हुआ। वह फिर बहुत समय तक राजभोग भोग कर समाधिगुप्त मुनि के समीप दीक्षा ग्रहण करके, आयु पूर्ण होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक का इन्द्र हुआ। वहां से चलकर पद्म नामक बलवान राजा राम हुआ, और वृषभध्वज ईशान स्वर्ग से चल कर, कितनेक भव करके यह सुग्रीव हुआ है।

श्रीकान्त का जीव मृग भव के पश्चात् अनेक पर्यायों में भ्रमण करता हुआ मृणालकन्द पत्तन में वज्रजम्बू नामक राजा की स्त्री हेमवती के उदर से शम्भु नामक पुत्र हुआ। वसुदत्त का जीव भी इसी प्रकार अनेक भवों में भटकने के बाद शंभु राजा के उपाध्याय विजय की पत्नी रत्नचूड़ा की कुंख से श्रीभूति नामक पुत्र हुआ। गुणवती भी भव-भ्रमण करके श्रीभूति की स्त्री शारदवती के उदर से वेगवती नामकी कन्या हुई। वेगवती जब यौवन अवस्था में आई तब उसने एक बार मानव-समूह द्वारा वन्दनीय सुदर्शन नामक प्रतिमाधारी साधु को देख कर उनका उपहास किया। वह बोली– 'ओ हो ! आज यह साधु दिखाई पड़ा है। पहले तो यह औरतों के साथ क्रीड़ा करता फिरता था। उन स्त्रियों को इसने और कहीं भेज रक्खी है। न मालूम क्यों ऐसों को लोग वन्दना करते हैं ? वेगवती के इस प्रकार कहने से जनता की श्रद्धा उन मुनि पर नहीं रही और लोगों ने उन पर दोषारोपण करके उनके साधुपन को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। यह अवस्था देख मुनि ने प्रतिज्ञा की– 'जब तक मुझ पर लगाया हुआ कलंक न मिट जायगा तब तक मैं पारणा नहीं करूंगा।' इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने पर देवता के कोप से वेगवती के मुख पर सूजन चढ़ गई। वेगवती के पिता ने सोचा साधु के माथे मिथ्या कलंक मढ़ने का ही यह भयानक फल है। अतएव उसने वेगवती का खूब तिरस्कार किया। इसके पश्चात् वह घोर वेदना से पीड़ित और पिता के भय से भीत वेगवती सुदर्शन मुनि के पास



अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अशामतो	अशातो	२७	२
मयरनी	भयरवनी	२७	२२
रांघत	रांघत ही	३०	२३
त्रट्यां	त्रूट्यां	३०	२५
योगणोए	योगणीए	३२	२७
हूत	दूत	३४	१२
सहथ	सहथ्र	३४	२०
हूंसियार	हूंसीयारी	३४	२४
रावती	रोवती	४४	१३
महियर	सहियर	४६	५
साहा	साही	४८	२५
प्राती	प्रीती	७३	८
अजया	अजपा	७५	३
कहूं	करूं	८१	१
गुप	गुप्ती	१०६	६
सजम	संयम	१०७	१४
वालावी	बोलावी	१०८	१६
उघम	उद्यम	११२	१८
शात्ता	शिक्षा	१३७	१५
भांतो	भांति	१४०	२८
विविकए	विवेकए	१४४	२०
राघवजी	राघवजी	१४६	६
पतिन	पतित	१४६	१७
राघव	राघव	१४७	११
राज	राजा	१५१	२३
तृष्णा	तृपा	१५६	२३
जुऊआंजी	जुआजुआ	१६०	२
आचायो	आवीयो	१७७	११
आय	आप	१७९	२०
[illegible] ए	कहे	१८२	२६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कोशनाधीश	कोशलाधीश	३१६	१५
ततूकाल	तत्काल	३१६	१६
आभूपण	आभूषण	३१७	१८
पुक्ती के	युक्ति	३१८	१
भया	भाया	३१८	६
जा	जावे	३१९	३
ववि	चली	३१९	३०
अदश्ये	अदृश्य	३२०	२६
हानो	हीनो	३२०	२७
थपा	थया	३२५	५
इस	इम	३२५	६
धंटां	घटां	३२५	१८
में तेही	में आते ही	३२५	२०
पदम	पद्म	३२६	१८
कापोना	कायोना	३२९	६
वणि	वाणि	३२९	१२
भाय	भाया	३३१	३
थाय	थाप	३३१	११
पहिरावी	पधरावी	३३१	१४
आये	आपे	३३२	१७
नाराद	नारद	३३४	१
त्रिक्लट	त्रिकूट	३३७	११
आपराजिता	अपराजिता	३३७	१७
पदम	पद्म	३४१	२७
ऋपमे	ऋषभे	३४२	३
शंक्या	शका	३४२	२२
द्रप	द्रव्य	३४३	११
शत्रुंजय	शेत्रुंजय	३४४	१६
क	करे	३४५	२१
पारेले	पाले	३४५	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
ढाली	टाली	३६८	१८
वीलवे	वीनवे	४०३	२५
आप	आय	४०४	६
इन्द्रदिक	इन्द्रादिक	४०६	१४
सीताने शीले करीरे	युद्धे जीत्यो जोईरे	४०६	१
वात	व्रत	४३०	१७
काये	कापे	४३०	२२
चढको	चटको	४३२	३
मोग	भोग	४३२	२३
ढाले	ढोले	४३३	७

ब्रह्मचर्य रक्षा में

तबि	नवि		

परिशिष्ट (४)

धन्यवाद

जिन महानुभावों ने मेरे उत्साह की वृद्धि करने के लिए ग्राहक श्रेणि में पहिले ही से अपना नाम लिखाकर उदारता प्रकट की है अतः उन सज्जनों को मैं हृदय से धन्यवाद दे रहा हूं और भविष्य में भी मेरे कार्य में सहयोग देते रहें, यही प्रार्थना करता हुआ उनके नाम नीचे लिख देता हूं।

श्री सेठ विजयलालजी चंपालालजी गुलेच्छा पुस्तक नग ५१ खींचन
" लाधुरामजी अगरचन्दजी " " १५ "
" रतनलालजी मानमलजी " " ११ "
श्री सेठ शिम्भुरामजी गंगारामजी फर्म के मालिक
सेठ दुगरमलजी मूथा पु० नग २५ मु० कनुन्दा
" असराजजी कालूरामजी मूथा " १५ रायपुर
" कनकमलजी बोहरा " ५ अमृतसर
" अभयराजजी पेमरचन्दजी संकलेचा " १० "
" सेठ लिखमीचन्दजी पुखराजजी गुलेच्छा ५ कपड़ा बाजार जोधपुर
" सेठ किशोरमलजी किस्तूरचन्दजी मोदी ५ मोदियों की गली जोधपुर
" पुन्नीबाईजी मोदी की धर्मपत्नी १२ जोधपुर
" सेठ पन्नालालजी बहुकली ६ नागौर
" केसरीमलजी सेठिया की धर्मपत्नी ५ नागौर
श्री व्यास नथमलजी मूलचन्दजी १५ नागौर
" चन्दनमलजी [illegible] ५ कुचेरा

स्थानकवासी संघ	५	बालोतरा
,, मूलचन्दजी आसारामजी	५	गढ सीवाणा
,, छोगमलजी मूलचन्दजी जिनाणी	५	गढ सिवाणा
,, जैन स्थानकवासी ज्ञान मुनि मण्डल पुतस्कालय	५	जालौर
,, जैन वर्धमान सभा	५	घूघाड़ा
,, मगनीरामजी कपूरचन्दजी बोरा	५	पाली
,, उम्मेदमलजी सिरदारमलजी नाहर	५	देवलो (आऊवा)
जैन श्री संघ करमावस मालियों की	५	करमावस
जैन श्री संघ बिरांटियां (मेला का)	५	बिरांटिया
,, अमरचन्दजी गजराजजी समदड़िया	६	नानणा
,, नानक पुस्तकालय	१५	विजयनगर
,, किस्तूरचदजी मुणोत की धर्मपत्नी गंगाबाई	५	पीपाड़
,, सूरजमलजी मिश्रीमलजी मुणोयत	५	पीपाड़
,, मोतीलालजी सोनराजजी बोरा	५	पीपाड़
,, हरखचन्दजी मोतीलालजी कोठारी	५	पीपाड़
,, जुगराजजी जवन्तराजजी खिंवसरा	५	पीपाड़
,, पेमराजजी वोहरा	५	पिपलिया
,, किसनलालजी लूनिया	५	पिपलिया
,, नथमलजी मूलचन्दजी	११	सादड़ी
श्री संघ	५	भूटा

—जो महाशय कम से कम पांच पुस्तकों के ग्राहक बने हैं उन महानुभावों के नाम अंकित किये गये हैं।

भवदीयः—
जैनोपदशेक वैद्य,
धूलचन्द सुराणा
पीपाड़ सीटी.

